CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१८

सामान्य मनोविज्ञान

(General Psychology)

(विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए)

AOIX DE

लेखक—
रामबाबू गुप्त
एम० ए० (मनोविज्ञान, दर्शन, समाज शास्त्र, राजनीति)

प्रकाशक :
न्यू पब्लिशिंग हाउस,
चौक, कानपुर।

तृतीय संस्करण
१९७३-७४

मूल्य
९·००

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मोडर्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४४९३

आंशिक आरक्षित (१४९)

TRIBHUVAN UNIVERSITY KATHMANDU NEPAL

वाल्मीकि पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५५९३

सामान्य मनोविज्ञान

[General Psychology]

(विभिन्न भारतीय विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए)

लेखक

रामबाबू गुप्त

एम० ए० (समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन, राजनीति, और इतिहास)

समाजशास्त्र की रूपरेखा: प्रथम एवं द्वितीय भाग, समाजशास्त्र के मूलतत्व प्रथम एवं द्वितीय भाग, भारत में समाज कल्याण और सुरक्षा, प्रारम्भिक मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, भारतीय सामाजिक संगठन, शिक्षा मनोविज्ञान, समान्यमनोविज्ञान, बाल-मनोविज्ञान, व्यावहारिक मनोविज्ञान, शिक्षण कला, शिक्षा के सिद्धान्त, शिक्षाशास्त्र आदि पुस्तकों के रचयिता

NEPAL SANSKRIT UNIVERSITY KATHMANDU

प्रकाशक

न्यू पब्लिशिंग हाउस,

१३/३८४ सी परमट, कानपुर

मूल्य ९·००

तृतीय संस्करण—१९७३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशक * न्यू पब्लिशिंग हाउस, कानपुर
आवरण शिल्पी * शिल्प निकेतन, कानपुर
ब्लाक निर्माता * कलाकृति, कानपुर

मूल्य * ६-००
तृतीय आवृत्ति * २०००
प्रकाशन काल * १९७३-७४

आवरण मुद्रक * लल्लन प्रिन्टर्स, कानपुर
जिल्द साज * निर्मल बुक बाईन्डिग, हाउस, इलाहाबाद
मुद्रक * बीना प्रिंटिंग प्रेस, इलाहाबाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परम पूज्य गुरुवर

प्रोफेसर श्री शीतलाचरण श्रीवास्तव

अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग

डी० ए० वी० कालेज, कानपुर

को

सादर समर्पित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तृतीय संस्करण की भूमिका

'सामान्य मनोविज्ञान' के तृतीय संस्करण को पूर्ण रूपेण संशोधित एवं परिवर्धित रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुये मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। पुस्तक का प्रथम संस्करण अनेक अध्ययनशील विद्यार्थियों, शिक्षक बन्धुओं और विद्वानों के द्वारा स्वीकृत एवं प्रशंसित हुआ। अनेक श्रेष्ठ विद्वानों, गुरुजनों, विशेषज्ञों, विद्यार्थियों एवं विषय के प्रेमी शिक्षकों से पुस्तक के सम्बन्ध में अनेक प्रशंसा व बधाई के पत्र भी प्राप्त हुए। कुछ मनोविज्ञानिकों एवं विशेषज्ञों द्वारा पुस्तक को और अधिक उपयोगी एवं प्रमाणित बनाने के लिए समितियाँ एवं सुझाव भी प्राप्त हुए। इसके लिए मैं उन सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों, सहयोगी बन्धुओं और मित्रों का हृदय से अत्यन्त आभारी हूँ।

प्रस्तुत संस्करण पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित कर दिया गया है। पिछली बार मुद्रण में शीघ्रता के कारण जो अशुद्धियाँ रह गई थीं उनका इस संस्करण में निराकरण कर दिया गया है। इस संस्करण के मुद्रण पर विशेष ध्यान दिया गया है जिससे अध्ययन एवं अध्यापन दोनों में सुविधा होगी। मुझे अत्यधिक दुःख है कि पुस्तक की बढ़ती हुई मांग को ठीक समय में पूरा न किया जा सका इसीलिए अध्ययनशील विद्यार्थियों को इस संस्करण के प्रकाशन की तीव्र प्रतीक्षा करनी पड़ी, इसके लिए मैं उनसे क्षमा प्रार्थी हूँ।

मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार अध्ययनशील विद्यार्थियों एवं विज्ञ–शिक्षकों से पुस्तक के पूर्व संस्करण को सम्मान प्राप्त हुआ है उसी प्रकार इस संस्करण को भी प्राप्त होगा। यदि ऐसा हुआ तो लेखक अपने परिश्रम को सार्थक समझेगा।

भाटिया बिल्डिंग
खलासी लाइन्स, कानपुर।

—रामबाबू गुप्त

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथम संस्कणर की भूमिका

प्रस्तुत पुस्तक 'सामान्य मनोविज्ञान' कानपुर, आगरा, मेरठ, लखनऊ, गोरखपुर बनारस, इलाहाबाद, अलीगढ़, विक्रम, दिल्ली, पंजाब, बम्बई, पूना, बड़ौदा, नागपुर, कलकत्ता, राजस्थान, जबलपुर, सागर इत्यादि विश्वविद्यालयों के मनोविज्ञान तथा दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने वाले बी० ए० के विद्यार्थियों के लिये लिखी गई है। इसके अतिरिक्त वह एम० ए० के विद्यार्थियों के लिये भी अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी गत वर्ष मैंने अपनी पुस्तक 'शिक्षा मनोविज्ञान' में इस पुस्तक के प्रकाशन के सम्बन्ध में सूचना दे दी थी, किन्तु कुछ विशेष परिस्थियों के कारण यह पुस्तक पाठकों के समक्ष न आ सकी। इसी बीच देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के अनेक पत्र आये, जिनमें पुस्तक को शीघ्र से शीघ्र प्रकाशित करने का अनुरोध किया गया। पुस्तक का लेखन कार्य तो चल ही रहा था किन्तु उन लोगों की प्रेरणा से मुझे निश्चय ही अपूर्व बल तथा उत्साह प्राप्त हुआ। इसके परिणाम स्वरूप, उपयुक्त विवेच्य सामग्री सहज ही उपलब्ध न होने और अनेक कठिनाइयाँ आने पर भी यह पुस्तक हमारे पाठकों के हाँथ में पहुँच सकी।

पुस्तक को विभिन्न दृष्टिकोणों से अधिकाधिक उपयोगी तथा प्रमाणित बनाने की भरसक चेस्टा की गयी है। पाठकों की रुचियों, आवश्यकताओं, दृष्टिकोणों और कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुये पुस्तक को सरल, सुबोध तथा रोचक भाषा में लिखने का प्रयास किया गया है। विषय – सामग्री को स्पष्ट करने तथा वाह्य बनाने के लिये पुस्तक में अनेक चार्ट, तालिकायें तथा चित्र दिये गये हैं। सम्पूर्ण विषय का विवेचन भारतीय समाज की परिस्थितिग्रों को ध्यान रखकर किया गया है। मेरे इस प्रयास में कोई मौलिकता भले ही न हो किन्तु विवेच्य–सामग्री को जिस ढंग से मैंने अपनी स्वाभाविक शैली में प्रस्तुत किया है वह शायद अन्यत्र दुर्लभ है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार विद्यार्थियों ने मेरी पूर्व पुस्तकों को पसन्द किया है और लाभ उठाया है उसी प्रकार वे इस पुस्तक को भी अपनावेंगे।

पुस्तक लेखन में जिन विद्वानों की अमूल्य कृतियों तथा विचारों से सहायता ली गई है उनके प्रति मैं हृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। पुस्तक को विभिन्न दृष्टि–कोण से उपयोगी तथा प्रमाणित बनाने में जो सहायता, परामर्श तथा सुझाव श्रद्धेय श्री शीतलाचरण श्रीवास्तव (अध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग डी०ए०बी० कालेज कानपुर) तथा डा० मिथलेस वर्मा (अध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग, आचार्य नरेन्द्रदेव महापालिका महिला डिग्री कालेज, कानपुर) से प्राप्त हुआ है उसके लिये में उनका बहुत ऋणी हूँ। विवेच्य–सामग्री को प्राप्त करने में जो सहायता श्री आर० सी० गुप्त (पुस्तकालयाध्यक्ष, डी० ए० वी० कालेज कानपुर) से प्राप्त हुयी है उसके लिये मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। पुस्तक के प्रकाशक ठा० अंशुमान सिंह ने प्रकाशन कार्य में जो उत्साह दिखलाया है उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ।

—राम बाबू गुप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विषय-सूची

१. मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा

(Meaning and Definition of Psychology) १—१५

भूमिका, मनोविज्ञान का अर्थ–[अ] मनोविज्ञान का सामान्य अर्थ, [ब] मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ, [स] मनोविज्ञान का वास्तविक अर्थ, [द] मनोविज्ञान का विश्लेषणात्मक अर्थ मनोविज्ञान की परिभाषा–[अ] मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है, (ब) मनोविज्ञान मन का विज्ञान है, (स) मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है, (द) मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है (य) मनोविज्ञान अनुभव और व्यवहार का विधायक विज्ञान है; उपसंहार।

२. मनोविज्ञान की समस्यायें और क्षेत्र १६–२५

(Problems and Scope of Psychology)

भूमिका; मनोविज्ञान की समस्यायें -- (१) मानव अनुभव तथा व्यवहार को समझना, (२) मानव अनुभव एवं व्यवहार की भविष्यवाणी करना तथा (३) मानव अनुभव तथा व्यवहार को नियन्त्रित करना; मनोविज्ञान का क्षेत्र व विषय-सामग्री–(१) मानव क्रियाओं का अध्ययन, (२) शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन, (३) संवेगात्मक क्रियाओं का अध्ययन (४) पशु व्यवहार का अध्ययन (५) शारीरिक बनावट और उसकी क्रियाओं का अध्ययन (६) व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन ७) चेतना के विभिन्न स्तरों का अध्ययन (८) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन (९) वंशानुक्रम एवं वातावरण का अध्ययन (१०) वाह्य उत्तेजनाओं या वस्तुओं का अध्ययन (११) जन्मजात एवं अर्जित प्रेरकों का अध्ययन (१२) असामान्य व्यवहार का अध्ययन (१३) विभिन्न प्रकार के साहित्य का अध्ययन (१४) सीखने तथा स्मृति की क्रियाओं का अध्ययन (१५) सामूहिक मन और सामाजिक व्यवहार का अध्ययन (१६) लोक व्यवहार का अध्ययन(१७) व्यक्ति तथा जाति की उत्पत्ति तथा विकास का अध्ययन (१८) मापन सम्बन्धी अध्ययन (१९) अलौकिक व्यवहार का अध्ययन तथा (२०)व्यावहारिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन; उपसंहार।

३. मानव जीवन में मनोविज्ञान का महत्व २६–३४

(Importance of Psychology in Human Life)

भूमिका मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान का महत्व, (१) बाल विकास में मनोविज्ञान का प्रयोग (२) शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग (३) मानसिक स्वास्थ्य में मनोविज्ञान का उपयोग। (४) मनो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विज्ञान का अपराध–निरोध और न्याय में प्रयोग, (५) मनोविज्ञान का उद्योग और व्यापार में उपयोग (६) सामाजिक जीवन में मनोविज्ञान का प्रयोग (७) राजनैतिक जीवन में मनोविज्ञान का उपयोग (८) सैन्य कार्य–कलापों में मनोविज्ञान का उपयोग, (९) विश्वशान्ति की स्थापना में मनोविज्ञान का उपयोग तथा (१०) अन्य क्षेत्रों में मनोविज्ञान का उपयोग, उपसंहार।

४. **मनोविज्ञान की शाखायें** (Branches of Psychology) — ३५–४६

भूमिका; मनोविज्ञान की विभिन्न शाखायें–[अ] सैद्धान्तिक मनोविज्ञान–(१) मामान्य मनोविज्ञान, (२) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, (३) पशु मनोविज्ञान, तुलनात्मक मनोविज्ञान, (४) शारीरिक मनोविज्ञान, (५) बाल मनोविज्ञान, (६) ब्यक्ति या वैभिन्य मनोविज्ञान, (७) समाज मनोविज्ञान (८) असामान्य मनोविज्ञान, (९) मनोविश्लेषण विज्ञान, (१०) मनो-भौतिक विज्ञान, (११) विकासात्मक मनोविज्ञान, (१२) लोक मनो-विज्ञान, (१३) विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान, (१४) किशोर मनोविज्ञान तथा (१५) परा मनोविज्ञान, [ब] व्यावहारिक मनोविज्ञान,—(१) शिक्षा मनोविज्ञान, (२) औद्योगिक मनोविज्ञान, (३) व्यापार मनोविज्ञान (४) कानूनी मनोविज्ञान, (५) चिकित्सा मनोविज्ञान, (६) रोगोपचारी मनोविज्ञान, (७) सैन्य मनोविज्ञान तथा (८) निर्देशन मनोविज्ञान, उपसंहार।

५. **मनोविज्ञान एक विज्ञान है** (Psychology is a Science) ४७–५४

भूमिका; वैज्ञानिक पद्धति क्या है ? [अ] वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ, [ब] वैज्ञानिक पद्धति के प्रमुख स्तर, [स] वैज्ञानिक प्रवृत्ति अथवा धारणा विज्ञान के आवश्यक तत्व; मनोविज्ञान एक विज्ञान है–(१) मनोविज्ञान वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता है, (२) मनोविज्ञान तथ्यात्मक है 'अर्थात् क्या है' का वर्णन करता है, (३) मनोविज्ञान के नियम एवं सिद्धान्त सार्वभौमिक होते हैं, (४) मनोविज्ञान के नियम तथा सिद्धान्त प्रमाणिक होते हैं, (५) मनोविज्ञान कार्य–कारण सम्बन्धों की व्याख्या करता है तथा (६) मनोविज्ञान भबिष्यवाणी करता है; उपसंहार।

६. **मनोविज्ञान की पद्धतियाँ** (Methods of the Study of Psychology) ५५–७३

भूमिका; मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धतियाँ—[अ] आत्मगत पद्धतियाँ–(१) अन्तदर्शन, (२) अन्तरानुभावों का संचय [ब] वस्तुगत पद्धतियाँ–(१)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

निरीक्षण पद्धति, (२) प्रयोगात्मक पद्धति, (३) तुलनात्मक पद्धति, (४) विकासात्मक पद्धति, (५) व्यक्ति इतिहास पद्धति, (६) मनोविज्ञानात्मक पद्धति, (७) साँख्यिकी पद्धति, (८) परीक्षणात्मक पद्धति तथा (९) प्रश्नावली पद्धति, उपसंहार ।

७. मनोविज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध ७४–८८
(Relation of Psychology with other Sciences)
भूमिका; विज्ञानों का वर्गीकरण, मनोविज्ञान और शरीर-विज्ञान, मनोविज्ञान और जीवविज्ञान, मनोविज्ञान समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और मानवशास्त्र, मनोविज्ञान और दर्शन, मनोविज्ञान और नीतिशास्त्र, मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र, उपसंहार ।

८. बहुक्रिया यन्त्र स्नायु–मण्डल ८९–१०४
(Response Mechanism-Nervous System)
भूमिका; प्रतिक्रिया यन्त्र का अर्थ, ग्राहक, स्नायु-मण्डल, स्नायुमण्डल के विभाग, स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल, प्रभावक–(१) मांसपेशियाँ तथा (२) ग्रन्थियाँ, उपसंहार ।

९. केन्द्रीय स्नायु-मण्डल (Central Nervous System) १०५–१२२
भूमिका; केन्द्रीय स्नायु–मण्डल के विभाग, सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु, मस्तिष्क–(१) सुषुम्ना शीर्ष (२) अनुमस्तिष्क (३) मध्य मस्तिष्क, (४) अन्तर मस्तिष्क तथा (५) मस्तिष्क खण्ड, वृहत मस्तिष्क, वृहत्मस्तिष्कीय बल्क में क्रियाओं का स्थान–निरूपण, उपसंहार ।

१०. वंशानुक्रम एवं वातावरण का तुलनात्मक महत्व १२३–१४१
(Relative Importance of Heredity and Environment)
भूमिका, वंशानुक्रम का स्वरूप, उत्पत्ति विधि के सिद्धान्त, वंशानुक्रम के नियम, पर्यावरण का स्वरूप, वंशानुक्रम एवं पर्यावरण के प्रभाव पर विभिन्न परीक्षण–[अ] अनियन्त्रित परीक्षण, [न] नियन्त्रित परीक्षण, वंशानुक्रम एवं पर्यावरण के महत्व के सम्बन्ध में अन्तिम निष्कर्ष, उपसंहार ।

११. मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts) १४२–१५५
भूमिका; मूल प्रवृत्तियों का स्वरूप, (१) मूल प्रवृत्तियों की विशेषतायें, मूल प्रवृत्तियों के प्रकार, मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति के सिद्धान्त की आलोचना, प्रतिक्षेप क्रिया का स्वरूप, प्रतिक्षेप क्रियाओं की विशेषतायें, मूल प्रवृत्तियों एवं प्रतिक्षेप क्रियाओं में अन्तर, उपसंहार ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२. प्रेरणा (Motivation) १५६–१७१
भूमिका, प्रेरक का स्वरूप, आवश्यकता, चालक एवं उद्दीपन, प्रेरकों के प्रकार–[अ] जन्मजात प्रेरक–(१) भूख, (२) प्यास, (३) काम, (४) नींद, (५) प्रेम, (६) क्रोध, (७) मलमूत्र त्यागादि, [ब] अर्जित प्रेरक-व्यक्तिगत प्रेरक–(१) आकांक्षा का स्तर, (२) जीवन लक्ष्य, (३) मदव्यसन, (४) आदत की विवशता, (५) रुचि, (६) अचेतन प्रेरणायें तथा (७) मनोवृत्तियां, सामान्य सामाजिक प्रेरक – (१) सामुदायिकता, (२) आत्म-स्थापना, (३) अर्जनात्मकता तथा (४, युयुत्सा, उपसंहार।

१३. संवेदना का स्वरूप एवम् वेवर–फेचनर नियम १७२–१७८
(Nature of Sensation and Weber-Fechner Law)
भूमिका, संवेदना का स्वरूप संवेदना की विशेषतायें या गुण, वेबर-फेनचर संवेदना का नियम —[अ] संवेदनात्मक विस्तार, [ब] वेबर का नियम, [द] वेबर–फेचनर संवेदना के सिद्धान्त की आलोचना, उपसंहार।

१४. संवेदना के प्रकार (Kinds of Sensation) १७९-१९०
भूमिका, [१] संवेदना के प्रकार–[२] विशिष्ट संवेदना–(१ दृष्टि संवेदना (२) श्रवण संवेदना, (३) घ्राण संवेदना, (४) स्वाद संवेदना, (५) तथा स्पर्श संवेदना [३] स्नायुविक संवेदना–(१) स्थिति संवेदना, (२) स्वतन्त्र-गति संवेदना, (३) प्रतिरोध संवेदना, [४] अन्तरावयव संवेदना, उपसंहार।

१५. प्रत्यक्षीकरण (Perception १९१–१९९
भूमिका, प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप, संवेदना, एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर, प्रत्यक्षीकरण में संलग्न प्रक्रियायें, प्रत्यक्षीकरण के निर्धारक तत्व, उपसंहार।

१६ प्रत्यक्षीकरण के नियम (Laws of Perception) २००–२११
भूमिका, प्रत्यक्षीकरण में आकृति एवम् पृष्ठभूमि का महत्व, प्रत्यक्षीकरण के नियम या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्व—[अ] वाह्य तत्व—(१). समग्रता, (२) समीपता, (३) समानता, (४) आच्छादन, (५) संगति, (६) सजातीयता, [ब] आन्तरिक या केन्द्रिय तत्व–(१) परिचय, (२) मनोवृत्ति, (३) चित्तवृत्ति, (४) दृष्टिकोण, (५) प्रेरणायें, (६) सामाजिक आदर्श, (७) सामाजिक सम्बन्ध तथा (८) गत अनुभव, [स] प्रोत्साहक तत्व (१) उभार या सारगर्भिता तथा (२) सुन्दर आकृति, उपसंहार।

१७. भ्रम और विभ्रम (Illusion and Hallucination) २१२–२२२
भूमिका, भ्रम अथवा विषर्यय का स्वरूप भ्रम अथवा विपर्यय के प्रकार,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भ्रम अथवा विपर्यय के कारण, विभ्रम का स्वरूप, विभ्रम के कारण, भ्रम या विपर्यय एवं विभ्रम के अन्तर, उपसंहार ।

१८. ध्यान और रुचि (Attention and Interest) २२३–२३२

भूमिका, ध्यान का स्वरूप, ध्यान की विशेषतायें, ध्यान के प्रकार, ध्यान एवं रुचि में सम्बन्ध, उपसंहार ।

१९. ध्यान की दशायें या निर्धारक २३३–२४०

(Conditions or Determinants of Attention)

भूमिका, ध्यान की दशायें या निर्धारक--[अ] ध्यान की वाह्य या वस्तुगत दशायें–(१) स्वरूप, (२) निश्चित रूप, (३) आकार, ४) परिवर्तन, (५) गति, (६) नवीनता, (७) विषमता, (८) पुनरावृत्ति, (९) स्थितिकाल, (१०) तीव्रता, (११) स्थिति तथा (१२) रहस्यमयता, [ब]—(१) अभिरुचि, (२) आवश्यकतायें, (३) अर्थ, (४) उद्देश्य, (५) आदत, (६) गत अनुभव, (७) दृष्टिकोण तथा (८) जिज्ञासा, उपसंहार ।

२०. ध्यान : अनवधान, चंचलता, विघ्न एवं विभाजन २४१–२४९

(Attention : Inattention, Fluctuation, Destraction and Division)

भूमिका, अनवधान, ध्यान की चंचलता या अस्थिरता, ध्यान में विघ्न या ध्यानविक्षेप, ध्यान का विभाजन, उपसंहार ।

२१. स्मृति : स्वरूप, तत्व और अनुकूल दशायें २५०–२६४

(Memory : Nature Factors, and Favourable Conditions)

भूमिका, स्मृति का अर्थ एवं परिभाषा, अच्छी स्मृति के लक्षण, स्मृति के तत्व—(१) सीखना अथवा शिक्षण, (२) धारणा, (३) प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण तथा (४) प्रत्यभिज्ञा या पहचान , स्मृति की अनुकूल दशायें या हेतु उपसंहार ।

२२. स्मरण करने की मितव्ययी विधियां २६५–२७२

(Economical Methods of Memorization)

भूमिका, स्मरण या कंठस्थीकरण करने की मितव्ययी विधियाँ, स्मृति के प्रकार उपसंहार ।

२३. विस्मरण एवं स्मृति—प्रशिक्षण २७३–२८६

(Forgetting and Memory—Training)

भूमिका, विस्मृति का स्वरूप विस्मरण के कारण--[अ] विस्मरण के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सैद्धान्तिक कारण–(१) अनाभ्यास-सिद्धान्त, (२) प्रतिघात या हस्तक्षेप-सिद्धान्त और [अ] दमन-सिद्धान्त,- [ब] विस्मरण के सामान्य कारण, विस्मृति की उपयोगिता, स्मृति में उन्नति करने के उपाय, उपसंहार ।

२४. **साहचर्य के नियम** (Laws of Association) २८७–२९४
भूमिका, साहचर्य का स्वरूप, साहचर्य के नियम–[अ] साहचर्य के मुख्य नियम, [ब] साहचर्य के गौण नियम, साहचर्य के प्रकार, विचारों के साहचर्य की उपयोगिता, उपसंहार ।

२५. **प्रतिमा** (Image) २९५–३०१
भूमिका, प्रतिमा का स्वरूप, प्रतिमा की विशेषतायें, प्रतिमा एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर, प्रतिमा के प्रकार, उपसंहार ।

२६. **कल्पना** (Imagination) ३०२–३११
भूमिका, कल्पना का स्वरूप, प्रतिमा एवं कल्पना में भेद, कल्पना का वर्गीकरण–[अ] मैकडूगल द्वारा कल्पना का वर्गीकरण [ब] ड्रेवर द्वारा कल्पना का वर्गीकरण, कल्पना की उपयोगिता, उपसंहार ।

२७. **चिन्तन एवं प्रत्यय** (Thinking and Concept) ३१२–३२३
भूमिका, चिन्तन का स्वरूप, चिन्तन के तत्व, चिन्तन में भाषा का स्थान, रचनात्मक चिन्तन–[अ] रचनात्मक चिन्तन का अर्थ [व] रचनात्मक चिन्तन की अवस्थाएँ, प्रत्यक्ष का स्वरूप, प्रत्यय निर्माण,-उपसंहार ।

२८. **तर्क** (Reasoning) ३२४–३२९
भूमिका, तर्क का स्वरूप, तर्क के स्तर अथवा चरण, तर्क के प्रकार, तर्क प्रक्रिया के प्रेरक, उपसंहार ।

२९. **सीखना : स्वरूप, प्रकार, तत्व और नियम** ३३०–३४३
(Learning : Nature, Kinds, Factors and Laws)
भूमिका, सीखने का स्वरूप, सीखना एवं परिपक्वता में अन्तर, सीखने के प्रकार, सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने वाले तत्व, सीखने के नियम—[अ] थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित सीखने के नियम [ब] सीखने के कुछ अन्य नियम, मनुष्य एवं पशु के सीखने में अन्तर, उपसंहार ।

३०. **सीखने के सिद्धान्त** (Theories of Learning) ३४४–३६६
भूमिका, सीखने के सिद्धान्त--(१) सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त, (२) प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त, (३) अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त, (४) अनुकरण का सिद्धान्त, (५) निषेधात्मक समायोजन का सिद्धान्त, तथा (६) निरीक्षण या तर्क का सिद्धान्त, उपसंहार ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३१. सीखने की वक्र रेखायें-प्रारम्भिक तेजी, पठार और दैहिक सीमा ३६७.३७४
(Learning Curves-Initial Spurt, Platean and Physiological Limit)
भूमिका, सीखने की वक्र रेखाओं के प्रकार—(१) सकारात्मक तीव्ररेखा, (२) नकारात्मक तीव्रगति तथा (३) 'S' शक्ल की वक्ररेखा, प्रारम्भिक तेजी, सीखने का पठार, शारीरिक सीमा, उपसंहार।

३२. शिक्षण का स्थानान्तर (Transfer of Training) ३७५–३८१
भूमिका, शिक्षण के स्थानान्तर का अर्थ, शिक्षण के स्थानान्तरण के प्रकार, शिक्षण के स्थानान्तर के सिद्धाँत, शिक्षण के स्थानान्तरण के हेतु (या सहाय), उपसंहार।

३३. ऐच्छिक एवं अनैच्छिक क्रियायें-आदत ३८२–३९२
(Voluntary and Involuntary Actions-Habit)
भूमिका, क्रियाओं के प्रकार, आदत का स्वरूप, आदत की विशेषतायें, आदतों के प्रकार, बुरी आदतों के कारण, आदत निर्माण के नियम, बुरी आदतों के तोड़ने के नियम, जीवन में अच्छी आदतों की उपयोगिता, उपसंहार।

३४. थकान के लक्षण, कारण एवं निवारण ३९३–४००
(Symptoms, Causes and Cure of Fatigue)
भूमिका, थकान का स्वरूप, थकान के प्रकार एवं उसके लक्षण, थकान के कारण, थकान दूर करने के उपाय, उपसंहार।

३५. संवेग, भाव एवं स्थाईभाव ४०१–४१४
(Emosion, Feeling and Sentiment)
भूमिका, संवेग का स्वरूप, संवेग की विशेषतायें, संवेग में शारीरिक परिवर्तन, [अ] वाह्य शारीरिक परिवर्तन [व] आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन, संवेगों के प्रकार, भाव एवं संवेग में अन्तर, संवेग और स्थाई भाव में अन्तर, उपसंहार।

३६. संवेग के सिद्धान्त (Theories of Emotion) ४१५–४२५
भूमिका, संवेग के विभिन्न सिद्धान्त—(१) सामान्य ज्ञान का सिद्धान्त, (२) जेम्स-लेंगे सिद्धान्त, (३) कैनन-बार्ड सिद्धान्त, (४) प्रेरणात्मक सिद्धान्त तथा (५) सक्रियकरण सिद्धान्त, उपसंहार।

३७. चेतना का स्तर (Levels of Consciousness) ४२६–४४२
भूमिका, चेतना का स्वरूप, चेतना के स्तर—(१) चेतन मन, (२) अर्ध-चेतन या अवचेतन मन तथा (३) अचेतन मन—(अ) अचेतन मन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की फ्रायड द्वारा व्याख्या, (ब) अचेतन मन की युंग द्वारा व्याख्या, अचेतन मन की विशेषतायें, (द) अचेतन मन के अस्तित्व के प्रमाण, उपसंहार।

३८. स्वप्न और दिवा-स्वप्न (Dream and Day-dream) ४४३–४६०

भूमिका, स्वप्न का स्वरूप, स्वप्नों के प्रकार, स्वप्न के कारण, स्वप्न के सिद्धान्त, दिवास्वप्न का स्वरूप, स्वप्न और दिवास्वप्न में अन्तर, उपसंहार।

३९. बुद्धि का स्वरूप और सिद्धान्त ४६१–४६८

(Nature and Theories of Intelligence)

भूमिका, बुद्धि का स्वरूप, बुद्धि के सिद्धान्त—(१) अद्वैत सिद्धान्त, (२) सीमित शक्ति का सिद्धान्त, (३) दो खण्ड का सिद्धान्त, (४) बहुशक्ति का सिद्धान्त, (५) बहु मानसिक योग्यताओं का सिद्धान्त तथा (६) क्रमिक महत्व का सिद्धान्त, बुद्धि और ज्ञान में अन्तर, उपसंहार।

४०. बुद्धि परिक्षण (Intelligence Tests) ४६९–४८३

भूमिका, बुद्धि परीक्षण के प्रकार—[अ] वैयक्तिक बुद्धि परिक्षण—(१) शाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण तथा (२) आशाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण, [ब] सामूहिक बुद्धि परिक्षण—(१) शाब्दिक सामुहिक बुद्धि परीक्षण तथा (२) अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परिक्षण, वैयक्तिक एवं सामूहिक बुद्धि परीक्षण में अन्तर, बुद्धि परिक्षणों की उपयोगिता, उपसंहार।

४१. विशेष योग्यता, अभिरुचि तथा रुचि परीक्षण ४८४–४९४

(Special Ability, Aptitude and Interest Tests)

भूमिका, विशेष योग्यता तथा अभिरुचि का अर्थ एवं उनका सम्बन्ध, प्रमुख विशेष योग्यता परीक्षण, प्रमुख रुचि परिक्षण, उपसंहार।

४२. व्यक्तित्व का स्वरूप (Nature of Personality) ४९५–५०७

भूमिका, व्यक्तित्व का स्वरूप, व्यक्तित्व के गुण अथवा तत्व, व्यक्तित्व पर प्रभाव डालने वाले तत्व-[अ] वंशानुक्रम [ब] वातावरण, उपसंहार।

४३. व्यक्तित्व के प्रकार एवं मापन विधियाँ ५०८–५२३

(Thpes and Methods of Assessment of Personality)

भूमिका, व्यक्तित्व के प्रकार,—(१) क्रिया-प्रधान व्यक्तित्व, (२) भाव-प्रधान व्यक्तित्व तथा (३) विचार प्रधान व्यक्तित्व, अन्तर्मुखी व्यक्तित्व, वहिर्मुखी व्यक्तित्व, व्यक्तित्व के मापन की विधियाँ-(१) व्यक्ति इतिहास विधि, (२) साक्षात्कार विधि, (३) प्रश्नावली विधि, (४) परिस्थिति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षण पद्धति, (५) व्यवहारिक परीक्षण विधि, (६) मूल्यांकन विधि, (७) व्यक्तित्व परिसूची, (८) आत्म-कथा विधि, (९) स्वतन्त्र सम्पर्क विधि, (१०) निरीक्षण विधि, (१३) मनोविश्लेषणात्मक विधियाँ तथा (१४) प्रक्षेपण विधियाँ, उपसंहार।

४४. व्यक्तित्व का संगठन और विघटन ५२४–५३७
(Integration and Disintegration of Personality)
भूमिका, व्यक्तित्व के संगठन का अर्थ, व्यक्तित्व के विघटन का अर्थ, व्यक्तित्व के विघटन के प्रकार—(१) साधारण समायोजन दोष, (२) मनोदैहिक रोग, (३) मनस्ताप, (४) मनोविकृत, (५) बहुविधि व्यक्तित्व तथा (६) मनोरुग्ण व्यक्तित्व, व्यक्तित्व के विघटन के कारण व्यक्तित्व के विघटन के उपचार की विधियाँ, उपसंहार।

४५. संघर्ष (Conflict) ५३८–५४३
भूमिका, संघर्ष के प्रकार, संघर्ष के कारण या श्रोत, संघर्ष को शान्ति करने वाली मानसिक-कार्य पद्धतियाँ, उपसंहार।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

The Proper Study of Mankind is Man.

—Pope

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१

मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषा

[Meaning and Difinition of Psychology]

प्रश्न संख्या—१

मनोविज्ञान के अर्थ और परिभाषा की विवेचना कीजिए।

Discuss the meaninng and definition of Psychology.

भूमिका (Introduction)

"मनुष्य एक बुद्धियुक्त प्राणी है।"* बुद्धियुक्त प्राणी होने के नाते आदि काल से जहाँ वह वाह्य पदार्थों, तथ्यों तथा घटनाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहा है वहाँ उसमें अपने तथा दूसरों के 'अनुभवों (Experiences) तथा व्यवहारों' (Behaviours) को समझने की जिज्ञासा Curiosity) रही है। प्राचीनकाल से ही विद्वान तथा दार्शनिक इस बात पर जोर देते रहे हैं कि **"अपने आपको जानो"** (Know Thyself) या **"मनुष्य का उचित अध्ययन मनुष्य है"** † सदैव से जिज्ञासु मानव के मस्तिष्क में ये प्रश्न उठते रहे हैं कि वह तथा अन्य मनुष्य अनुभव तथा व्यवहार क्यों (Why) करते हैं? इनका वास्तविक रूप क्या (What) है? तथा ये कैसे (How) होते हैं? इन प्रश्नों यथा क्यों (Why), क्या (What), कैसे (How) का उत्तर प्राप्त करने के प्रयास के परिणामस्वरूप 'मनोविज्ञान' (Psychology) की उत्पत्ति हुई। इस प्रयास के क्रम में धर्मशास्त्र (Religion), दर्शनशास्त्र (Philosophy) आदि विषय मनोविज्ञान को बहुत समय तक अपना अभिन्न अंग बनाये रहे। किन्तु

*"Man is a rational animal." —*Socrates*

"†"The proper study of mankind is man." —*Pope*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्नीसवीं शताब्दी में मनोविज्ञान ने एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में अपना अस्तित्व स्थापित कर लिया। अब स्वभावतः हमारे समक्ष यह प्रश्न उठता है कि मनोविज्ञान क्या है। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए हम मनोविज्ञान का अर्थ (Meaning of Psychology) तथा मनोविज्ञान की परिभाषा (Difinition of Psychology) प्रस्तुत करेंगे।

मनोविज्ञान का अर्थ
(Meaning of Psychology)

[अ] मनोविज्ञान का सामान्य अर्थ
(The General Meaning of Psychology)

प्रायः जब कोई मनोविज्ञान के सामान्य या वास्तविक ज्ञान से अपरिचित व्यक्ति मनोविज्ञान के विद्यार्थी या शिक्षक से मिलता है तो वह उससे पूछने लगता है कि 'आप तो दूसरों के मन की बातें बता सकते हैं, बताइये कि इस समय मेरे मन में क्या है ? यदि किसी व्यक्ति की नवागन्तुक पत्नी सदैव उसकी रुचि, आवश्यकता तथा इच्छा के अनुकूल कार्य करती है तो वह उसे एक कुशल मनोवैज्ञानिक की पदवी से विभूषित कर देता है। कुछ लोग तो जादू टोना, तन्त्र–मन्त्र आदि जानने वाले को मनोवैज्ञानिक समझ बैठते हैं। इस प्रकार की धारणाओं का कारण यह है कि सामान्य व्यक्ति के लिए किसी के मन की बात जान लेना मनोवैज्ञानिक का कार्य है। **अतः सामान्य अर्थ में दूसरों के मन की बातों को जानने वाली विद्या को मनोविज्ञान कहते हैं।** किन्तु इस प्रकार की प्रचलित धारणाओं के आधार पर मनोविज्ञान को दूसरों के मन को जानने वाली विद्या कहना मनोविज्ञान के वैज्ञानिक स्वरूप की अपेक्षा करना है।

[ब] मनोविज्ञान का शाब्दिक अर्थ
(The Etymological Meaning of Psychology)

किसी शब्द के वास्तविक अर्थ को समझने के पूर्व हमें उस शब्द के शाब्दिक अर्थ को जानने की जिज्ञासा सहज में ही जाग्रत हो जाती है। शाब्दिक अर्थ को जानने से एक तो शब्द का उत्पत्ति विषयक ज्ञान प्राप्त हो जाता है दूसरे उसका बहुत कुछ अर्थ भी स्पष्ट हो जाता है। अतः यहाँ पर हम मनोविज्ञान का वास्तविक अर्थ प्रस्तुत करने के पूर्व उसका शाब्दिक अर्थ प्रस्तुत करेंगे। 'मनोविज्ञान' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'साइकॉलाजी' (Psychology) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'साइकॉलाजी' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। 'साइकि' (Psyche) तथा "लोगस' (Logas)। 'साइकि' का अर्थ आत्मा (Soul) तथा 'लोगस' शब्द

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का अर्थ है 'विज्ञान' (Science) या 'विचार विमर्श' (To Talk)। अत: शाब्दिक अर्थ में मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान (Science of Soul) कहलाता है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान वह विज्ञान है जिसमें कि आत्मा के सम्बन्ध में विचार विमर्श या बातचीत की जाती है। सबसे पहले ग्रीस दार्शनिकों ने मनोविज्ञान की इसी अर्थ में परिभाषा की, किन्तु मनोविज्ञान का जो वर्तमान स्वरूप है वह उसके शाब्दिक अर्थ से स्पष्ट नहीं होता। आत्मा के विज्ञान के स्थान में मनोविज्ञान की क्रमश: मन (Mind), चेतना (Consciousness) और व्यवहार (Behaviour) के विज्ञान के रूप में परिभाषा की गई और आज उसे अनुभव तथा व्यवहार (Experience and Behavionr) का विज्ञान समझा जाता है। आगे हम मनोविज्ञान का वास्तविक अर्थ प्रस्तुत करते हुये बतायेंगे कि मनोविज्ञान अनुभव तथा व्यवहार दोनों का विज्ञान है।

[स] मनोविज्ञान का वास्तविक अर्थ
(The Real Meaning of Psychology)

प्रत्येक व्यक्ति (Individual) का शिशु के रूप में वातावरण में पालन-पोषण तथा विकास होता है। उसे अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिये अर्थात् अपनी आवश्यकताजों की पूर्ति के लिए भौतिक (Physical), सामाजिक (Social), आर्थिक (Economic), राजनैतिक (Political), नैतिक (Moral) तथा धार्मिक (Religious) वातावरण से जीवन पर्यन्त 'अभियोजन' (Adjustment) करना पड़ता है। ऐसे अभियोजनों में वह विभिन्न 'मानसिक प्रतिक्रियायें' (Mental Activities) तथा शारीरिक प्रतिक्रियायें (Physical Activities) करता है। मनोविज्ञान व्यक्ति के वातावरण के साथ ऐसे ही 'अभियोजनात्मक व्यवहार का अध्ययन करता है। इस अभियोजनात्मक व्यवहार के दो रूप (Forms) होते हैं—(१)अनुभूति (Experience) तथा (२) व्यवहार (Behaviour)। अनुभूति व्यक्ति की 'मानसिक प्रतिक्रियाओं' यथा संवेदना, (Sensation), प्रत्यक्षीकरण, (Perception), सीखना, (Learning), कल्पना (Imagination), चिन्तन (Thinking) आदि को और व्यवहार, उसकी शारीरिक प्रतिक्रियाओं-यथा चलना, फिरना, बोलना, लिखना, मोटर चलाना आदि को कहते हैं। चूंकि अभियोजनात्मक व्यवहार में मानसिक प्रतिक्रियायें (अनुभूति) तथा शारीरिक प्रतिक्रियायें (व्यवहार) दोनों होती हैं इसलिए मनोविज्ञान को अनुभूति (Experience) तथा व्यवहार (Behaviour) का विज्ञान कहा जाता है। मनोविज्ञान, जैसी ये मानसिक तथा शारीरिक प्रतिक्रियायें होनी हैं वैसे ही उनके वास्तविक स्वरूप का अध्ययन करता है। अत: मनोविज्ञान विधायक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Positive) विज्ञान है। व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं अर्थात् अनुभूति तथा व्यवहार का संचालन स्नायुमण्डल तथा शरीर के अन्य अवयवों द्वारा होता है इसलिये मनोविज्ञान इनका भी अध्ययन करता है। व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक प्रतिक्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिये अन्य विधियों के साथ-साथ प्रयोगात्मक विधि को अपनाना पड़ता है और प्रयोगों में पशुओं जैसे— कुत्ता, बिल्ली, चूहा आदि का सहारा लेना पड़ता है। इसलिए मनोविज्ञान पशुओं के अभियोजनात्मक व्यवहार के आधार का भी अध्ययन करता है। उपर्युक्त शब्दों के आधार पर हम संक्षेप में कह सकते हैं कि **मनोविज्ञान वह विधायक विज्ञान है जिसके अन्तर्गत हम व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं अर्थात् उसके अनुभव तथा व्यवहार का अध्ययन करते हैं, जिन्हें समझने के लिए मनुष्य की शारीरिक बनावट तथा पशुओं के व्यवहारों तथा शारीरिक बनावट के अध्ययन का सहारा लिया जाता है।**

[ब] मनोविज्ञान का विश्लेषणात्मक अर्थ
(The Analytical Meaning of Psychology)

उपर्युक्त शब्दों में हमने मनोविज्ञान का सामान्य, शाब्दिक तथा वास्तविक अर्थ प्रस्तुत किया जिससे पाठकों को मनोविज्ञान का अर्थ स्पष्ट हो गया होगा। आगे हम मनोविज्ञान के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने के लिये उसके स्वरूप के प्रमुख तथ्य बिन्दुओं पर प्रकाश डालते हुये उसका विश्लेषणात्मक अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं:—

(१) **मनोविज्ञान एक विधायक विज्ञान है** (Psychology is a Positive Science) :—सामान्यतः विज्ञान दो प्रकार के होते हैं। (१) विधायक (Positive) तथा (२) नियामक (Normative)। विधायक विज्ञान का तात्पर्य उस विज्ञान से है जिसमें तथ्यों का उसी रूप में अध्ययन किया जाता है जिस रूप में वे हैं। नियामक विज्ञान यह निश्चित करता है कि किसी विचार, कर्म या वस्तु को कैसा होना चाहिये। दूसरे शब्दों में विधायक मनोविज्ञान का सम्बन्ध '**क्या है**' (What is) से है और नियामक विज्ञान का सम्बन्ध '**क्या होना चाहिये**' (What to be) से है। मनोविज्ञान एक विधायक या प्राकृतिक विज्ञान है क्योंकि यह मानसिक तथा शारीरिक प्रक्रियाओं का उसी रूप में अध्ययन करता है जिस रूप में वे हमारे अभियोजनात्मक व्यवहार में घटित होती हैं। नीतिशास्त्र, सौन्दर्यशास्त्र तथा तर्कशास्त्र नियामक विज्ञान हैं क्योंकि इनका सम्बन्ध सत्यं शिवं तथा सुन्दरम् के आदर्शों से है। ये विज्ञान यह बतलाते हैं कि हमारे विचार, अनुभूति तथा कर्म कैसे होने चाहिये। संक्षेप में मनोविज्ञान एक विधायक विज्ञान है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) **मनोविज्ञान व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रियाओं या अनुभूति का अध्ययन करता है** (Psychology studies the mental activities or experience of an individual):—व्यक्ति वातावरण से अभियोजन करने के लिए निरन्तर वाह्य तथा आन्तरिक योजनाओं से उत्तेजित होकर उनके प्रति अनेक मानसिक प्रतिक्रियायें (Mental Activities) करता है। इन मानसिक प्रतिक्रियाओं को ही अनुभूति (Experience) कहा जाता है। व्यक्ति वातावरण का प्रत्यक्षीकरण (Perception) करता है, उसके सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है (Learning), उससे सुख या दुख की अनुभूति (Feeling of Pleasure or Pain) करता है, प्राप्त ज्ञान की पुनरावृति करता है (Remembering), उसकी कल्पना करता है (Imagination), उसके बारे में चिन्तन तथा तर्क करता है (Thinking and Reasoning) तथा उसके सम्बन्ध में निर्णय देता है (Judging)। इस प्रकार की मानसिक प्रतिक्रियाओं को अनुभूति कहते हैं। स्पष्ट है कि अनुभूति के अन्तर्गत ज्ञानात्मक (Cognitive) तथा संवेगात्मक (Emotional) दोनों प्रकार की प्रतिक्रियाओं का समावेश होता है। अनुभूति की दो विशेषतायें होती हैं—प्रथम अनुभूति किसी वस्तु की 'चेतना, है तथा द्वितीय अनुभूति कोई स्थिर तत्व न होकर **चंचल तथा गत्यात्मक प्रकृति,** (Dynamic Nature) की होती है। मनोविज्ञान **इसी चेतन अनुभूति** (Conscious Experience) का अध्ययन करता है। जबसे मनोविश्लेषण (Psycho-analysis) के जन्मदाता सिग्मण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) ने चेतन के साथ साथ **'अचेतन'** (Unconscious) तथा 'उपचेतन' (Sub-conscious) अनुभूतियों के अस्तित्व तथा महत्व को प्रकाशित किया तब से अनुभूति का विस्तृत स्वरूप हो गया। अब अनुभूति के अन्तर्गत **'चेतन"** (Concious), **'अचेतन'**-(Unconscious) तथा 'उपचेतन' (Sub-conscious) तीनों प्रकार की अनुभूतियों का समावेश हो गया है। अतः अब मनोविज्ञान इन समस्त प्रकार-की अनुभूतियों या मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करने लगा है।

(३) **मनोविज्ञान व्यक्ति की शारीरिक प्रतिक्रियाओं या व्यवहार का अध्ययन करता है** (Psychology studies the physical activities or behaviour of an individual):—व्यक्ति के वातावरण के साथ अभियोजनात्मक व्यवहार का दूसरा रूप उसकी शारीरिक प्रतिक्रियायें (Physical Activities) होती हैं जिन्हें हम व्यवहार (Behaviour) के नाम से सम्बोधित करते हैं। ये शारीरिक प्रतिक्रियायें व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रियाओं की अभिव्यक्ति होती हैं। उदाहरण के लिए व्यक्ति **'चिन्तन की अवस्था'**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Thoughtful State) में होता है उस समय वह गम्भीर मुद्रा में होता है और धीरे धीरे वह अपने से बातचीत करता है। इसके विपरीत वह जब 'संवेगात्मक अवस्था' (Emotional State) में होता है तो दौड़ता है, हँसता है, और कभी कभी चिल्लाता है। कुछ शारीरिक प्रतिक्रियाओं—जैसे चलना, फिरना, दौड़ना, खाना-पीना इत्यादि—का बाहर से ही 'निरीक्षण' Observation) हो सकता है किन्तु कुछ ऐसी शारीरिक प्रतिक्रियायें जैसे हृदय की धड़कनें, सांस की गति, रक्त चाप आदि होती हैं जिनका निरीक्षण 'यन्त्रों' (Instruments) द्वारा प्रयोगशाला में होता है। मनोविज्ञान इन सभी शारीरिक प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण (Observation) तथा परीक्षण (Experiment) द्वारा अध्ययन करता है इस प्रकार मनोविज्ञान शारीरिक प्रतिक्रियाओं या व्यवहार का अध्ययन करता है।

(४) **मनोविज्ञान व्यक्ति की शारीरिक बनावट तथा उसकी क्रियाओं का अध्ययन करता है** (Psychology studies of individual's physical structure and activities)—मनः शारीरिक प्राणी (Psycho-physical animal) होने के नाते व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक प्रतिक्रियायें अर्थात् अनुभूति और व्यवहार एक दूसरे पर आधारित होते हैं। इन दोनों के बीच सम्पर्क स्थापित करने वाला 'स्नायु मण्डल' (Nervous System) होता है जिसके स्नायुतन्त्र सम्पूर्ण शरीर में तारों के जाल की भांति बिछे रहते हैं। अतः मनोवैज्ञानिक को अनुभूति तथा व्यवहार को समझने के लिए व्यक्ति की **शारीरिक बनावट तथा उसकी क्रियाओं** विशेष तौर से स्नायुमण्डल तथा **आन्तरिक परिवर्तन** (Organic Changes) का अध्ययन करना पड़ता है। सबसे पहले वातावरण व्यक्ति की **ज्ञानेन्द्रियों** (Sense Organs) को प्रभावित (Stimulate) करतां है तत्पश्चात ज्ञानेन्द्रियों द्वारा वातावरण की सूचना स्नायु मण्डल के केन्द्र अर्थात् **मस्तिष्क** (Mind) को पहुँचती है और अन्त में व्यक्ति **कर्मेन्द्रियों** (Motar Organs) द्वारा वातावरण को जवाब (Response) देता है। इस प्रकार व्यक्ति तथा वातावरण के बीच अभियोजन के लिए स्नायु मण्डल के माध्यम से अन्तः क्रिया (Interaction) होती रहती है इस दृष्टिकोण को सामने रखकर वारेन तथा करमाइकल ने मनोविज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है **"मनोविज्ञान व्यक्तियों और उनके वातावरण के बीच स्नायु मण्डल द्वारा होने वाली अन्तः क्रिया का विज्ञान है।"**

"Psychology is the science that studies the interaction between human beings and their environment which occur by means of the nervous system." —*Warren and Carmickall*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१५५८३

(५) **मनोविज्ञान पशुओं के व्यवहार तथा उनकी शारीरिक बनावट का अध्ययन करता है** (Psychology studies the behaviour and physical structure of animals) :—यद्यपि मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति के अभियोजनात्मक व्यवहार का अध्ययन करना है किन्तु वह पशुओं के व्यवहारों का भी अध्ययन करता है। ऐसा क्यों ? हम देखते हैं कि मानव व्यवहार इतना जटिल होता है कि बिना उसके मस्तिष्क या शरीर के किसी अन्य अंग का चीड़ फाड़ किये हुए उसे नहीं समझा जा सकता। किन्तु मनुष्य का जीवन इतना सस्ता नहीं कि वह मनोवैज्ञानिक को प्रयोग शाला में मानव व्यवहार समझने के लिए असहनीय कष्ट और मृत्यु को स्वीकार करे। ऐसी स्थिति में मनोविज्ञान पशुओं के व्यवहार का अध्ययन कर उसकी तुलना में मानव व्यवहार को समझने का प्रयास करता है। पशुओं के व्यवहार को समझने के लिए मनोविज्ञान की एक 'शाखा पशु मनोविज्ञान' (Animal Psychology) या 'तुलनात्मक मनोविज्ञान' (Comparative Psychology) का विकास हो गया है।

मनोविज्ञान की परिभाषा

(Definition of Psychology)

[अ] मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है

(Psychology is the science of soul)

जैसा कि मनोविज्ञान के शाब्दिक अर्थ को प्रस्तुत करते हुए हमने देखा था कि मनोविज्ञान 'आत्मा का विज्ञान' (Science of Soul) है। 'आत्मा के विज्ञान' के रूप में ही मनोविज्ञान की परिभाषा प्रारम्भ हुई। ईसा से चार शताब्दी पूर्व दो महान दार्शनिकों प्लेटो (Plato) तथा अरस्तू (Aristotle) ने मनोविज्ञान को 'आत्मा का विज्ञान' बतलाया। आत्मा की खोज तथा उसके सम्बन्ध में विचार करना ही मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य था। प्लेटो के अनुसार आत्मा की तीन क्रियायें होती हैं (१) **भरण पोषण की क्रिया** (Nutritive Function), (२) **अनुभूति की क्रिया** (Sensitive Function) तथा (३) **बुद्धि की क्रिया** (Rational Function)। चूंकि मनुष्य में आत्मा की ये तीन क्रियायें निहित रहती हैं इसलिये वह समस्त प्राणियों में श्रेष्ठ है। प्लेटो ने आत्मा के इसी स्वरूप का अध्ययन करना मनोविज्ञान का प्रमुख कार्य बतलाया। अरस्तू के अनुसार आत्मा और शरीर को अलग अलग नहीं किया जा सकता। इन्होंने मनोविज्ञान को विज्ञान के अन्तर्गत माना और 'मानव की आत्मा के अध्ययन' के रूप में उसकी परिभाषा की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आलोचना (Citicism) :– ग्रीस दार्शनिकों द्वारा दी गई उपर्युक्त मनोविज्ञान की परिभाषा यथा 'मनोविज्ञान' आत्मा का विज्ञान है – भ्रम उत्पन्न करने वाली है क्योंकि आत्मा का न कोई स्थिर स्वरूप है और न तो आकार। बिना निश्चित स्वरूप, आकार एवं रंग के आत्मा का वैज्ञानिक अध्ययन असम्भव है। जिस विषय का अध्ययन वैज्ञानिक पद्धति से न किया जा सके उसे हम विज्ञान नहीं कह सकते। अतः अन्त में विद्वानों ने मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार रॉस के शब्दों में **"शाब्दिक अर्थ में मनोविज्ञान आत्मा का विज्ञान है किन्तु यह परिभाषा अत्यन्त अनिश्चित हैं क्योंकि हम इस प्रश्न का संतोषजनक उत्तर नहीं दे सकते कि 'आत्मा क्या है।"**

"Psychology literally means the science of the soul but the definition suffers from extreme vagueness as we cannot give any satisfactory answer to question 'What is soul." —*J. S. Rots*

[ब] मनोविज्ञान मन का विज्ञान है

(Psychology is the science of mind)

जब विद्वान् मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानने में सहमत न हुए तो उन्होंने मनोविज्ञान की नई परिभाषा प्रस्तुत की जिसके अनुसार मनोविज्ञान मन या मस्तिष्क का विज्ञान (Science of the Mind) है। अतः मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य मन का अध्ययन करना माना जाने लगा।

आलोचना (Criticism) :—जिस प्रकार मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान मानने से अनेक कठिनाइयाँ उपस्थित हुईं उसी प्रकार मनोविज्ञान को मन का विज्ञान मानने में भी कठिनाइयाँ सामने आयीं जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—

(१) मनोवैज्ञानिकों के लिए यह सम्भव न हो सका कि 'मन' का सही रूप निश्चित कर सकें।

(२) आधुनिक मनोवैज्ञानिक मन के स्थान पर मानसिक प्रक्रियाओं (Mental Processes) का अस्तित्व मानते हैं।

(३) इस परिभाषा में यह स्पष्ट नहीं है कि मनोविज्ञान विधायक (Positive) विज्ञान है या नियामक (Normative)।

(४) मन शब्द का प्रयोग करने वाले विद्वान् स्वयं मन के स्वरूप के सम्बन्ध में एक नहीं हैं।

(५) इस परिभाषा में मानव तथा पशु के वाह्य व्यवहार का कोई स्थान नहीं है।

(६) मन में एक प्रकार की अविच्छिन्नता एवं एकता निहित है जो कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामान्य मनुष्यों में ही पाई जाती है। इसका प्राय: मानसिक विकृतावस्था, स्वप्नावस्था तथा पशुओं में अभाव होता है। किन्तु मनोविज्ञान मनुष्य की इन अवस्थाओं तथा पशु के मनों की भी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।

इस प्रकार मनोविज्ञान को मन का विज्ञान मानने में अनेक कठिनाइयाँ उपस्थिति हुईं जिनके कारण मनोविज्ञान की उन्नति न हो सकी। बी० एन० झा ने इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुये लिखा है **"मन के अपरिभाषित वस्तु बने रहने के कारण मन के विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की उन्नति न हो सकी जिस प्रकार कि इसकी पहले दिनों में कम उन्नति हुई थी जबकि इसको आत्मा का विज्ञान समझा जाता था।"**

"Mind having remained an undefined object, psychology as the science of 'mind' made hardly any advance, as it had in earlier days made little progress when considered as the science of soul."

—*B. N. Jha*

[स] मनोविज्ञान चेतना का विज्ञान है

(Psychology is the science of consiousness)

१९वीं शताब्दी के नवीन मनोवैज्ञानिकों के प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Experimental Psychology) को जन्म देकर मनोविज्ञान को दर्शन (Philosophy) से मुक्त कर लिया और अन्त में मनोविज्ञान ने अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर लिया। इन मनोवैज्ञानिकों का ध्यान मनोविज्ञान की परिभाषा निश्चित करने की ओर गया और अन्त में मनोविज्ञान की यह परिभाषा निश्चित की कि 'मनोविज्ञान **चेतना** (Consciousness) का विज्ञान है'। इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चेतना का तात्पर्य उस आन्तरिक या व्यक्तिगत अनुभूति से है जो कि वाह्य प्रकृति से भिन्न होती है। इन मनोवैज्ञानिकों ने चेतन अनुभूति के अध्ययन के लिये अन्तर्निरीक्षणात्मक पद्धति (Introspective Method) का प्रयोग किया। आगे हम मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान बताने वाले कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत की हुई मनोविज्ञान की परिभाषायें प्रस्तुत कर रहे हैं।

(१) **विलियम जेम्स**—'मनोविज्ञान की सर्वोत्तम परिभाषा.........स्वयं चेतना की अवस्थाओं के वर्णन एवं व्याख्या के रूप में दी जा सकती है।"

"The definition of psychology may best be given.........as the description and explanation of state of consciouseness as such."

—*William James*

(२) **वुन्ट**—"प्राकृतिक विज्ञान की विषय-वस्तु वाह्य अनुभव के विषयों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विरुद्ध मनोविज्ञान को उसकी जांच करना है जिसको हम आन्तरिक अनुभव कहते हैं अर्थात् हमारी अपनी संवेदना और अनुभूति, हमारे विचार और संकल्प ।"

"Psychology has to investigate that which we call internal experience is our own sensation and feeling, our thought and violiton in contra-distinction to the object of external experience, which form the subject matter of natural science." —*Wundt*

(३) **जेम्स सली**—"मैं इस प्राचीन अवधारणा को मानता हूँ कि मनोविज्ञान ......आन्तरिक जगत के विषयों से सम्बन्धित होने और स्वयं अपनी पद्धति या यन्त्र अर्थात् अन्तर्निरीक्षण का प्रयोग करने के कारण भौतिक अथवा प्राकृतिक बिज्ञानों से प्रथक किया जाता है ।"

"I abide by the old conception that psychology is distinctly marked of from Physical or Natural science as..........having to do with the phenomena of the inner world and employing its own method or instrument namely introspection." *James Sully*

आलोचना—(Criticism) : – मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान मानने में जो अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं वे निम्नलिखित हैं :—

(१) इस परिभाषा में भी यह स्पष्ट नहीं किया गया कि मनोविज्ञान विधायक विज्ञान है अथवा नियामक ।

(२) व्यवहारवादियों के अनुसार चूंकि चेतन अनुभूति आत्मनिष्ठ (Subjective) तथा व्यक्तिगत (Personal) होती है, अतः उसके स्वरूप का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन नहीं हो सकता है ।

(३) चेतन अनुभूति पर वाह्य **निरीक्षण** (Objective Observation) **एवं प्रयोगात्मक पद्धति** (Experimental Methods) का प्रयोग नहीं हो सकता है ।

(४) आधुनिक मनोविज्ञान चेतना को न मानकर चेतन प्रक्रियाओं को मानता है ।

(५) जिन विचारकों ने चेतन शब्द का प्रयोग किया है वे उसके स्वरूप के सम्बन्ध में एक मत नहीं है । कुछ के अनुसार वह द्रव्य (Substance) है तो कुछ के अनुसार धारा (Stream) या प्रक्रिया (Process) ।

(५) चेतना में मानव तथा पशु व्यवहार का समावेश नहीं होता है ।

(७) आधुनिक मनोविज्ञान चेतना के तीनों स्तरों यथा **चेतन** (Conscious), **अचेतन** (Unconscious) तथा **अव-चेतन** (Sub-conscious) का अध्ययन करता है जबकि मनोविज्ञान को उपयुक्त रूप में चेतना का विज्ञान मानने से चेतना के केवल एक स्तर अर्थात् चेतना पर ही विचार किया जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपर्युक्त शब्दों से भली भांति स्पष्ट है कि मनोविज्ञान को चेतना का विज्ञान कहा जाना उचित नहीं है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मैकडूगल ने चेतना शब्द की आलोचना करते हुये लिखा है "चेतना एक बहुत ही बुरा शब्द है एवं यह मनोविज्ञान के लिए बहुत ही दुर्भाग्य की बात है कि यह शब्द साधारण प्रयोग में आ गया।"

"Consciousness is a throughout bad word; and it has been a great misfortune for psychology that the word has come into general use." —*Mc Dougall Outline of Psychology P. 17*

[ब] मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान है

(Psychology is the Science of Behaviour)

बीसवीं शताब्दी के व्यवहार (Behaviorist) मनोवैज्ञानिकों ने चेतन अनुभूति का खण्डन कर मनोविज्ञान की व्यवहार के विज्ञान (Science of Behaviour) से रूप में परिभाषा की। इन मनोवैज्ञानिकों में **वाटसन** (Watson) का नाम प्रमुख है जो कि **व्यवहारवाद** (Behaviourism) के प्रतिपादक हैं। इन्होंने तथा अन्य व्यवहारवादियों ने मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान बतलाते हुये निम्न परिभाषायें प्रस्तुत की हैं :—

(१) **वाटसन** :—"एक ऐसा मनोविज्ञान लिखना सम्भव है जिसको कि व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सके।"

"It is possible to write a psychology to define it..........as the science of behaviour," —*Watson*

(२) **पिल्सबरी** :—"सबसे अधिक सन्तोषजनक रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा मानव व्यवहार के विज्ञान के रूप में की जा सकती है।"

"Psychology may be most satisfactory defined as the science of human behaviour." —*Pillsbury*

(३) **मैकडूगल** :—'सर्वोत्तम तथा विस्तृत रूप में मनोविज्ञान की परिभाषा जीवित प्राणियों के व्यवहार के विधायक विज्ञान के रूप में की जा सकती है।"

"Psychology may be best and most comprehensively defined as the positivc science of the conduct of living creatures.' —*William Mc Dougall*

आलोचना (Criticism)—चेतन अनुभूति के समान मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान मानने में भी अनेक कठिनाइयाँ होती हैं जो निम्नलिखित हैं :—

(१) मनोविज्ञान का सम्बन्ध विशेष रूप से चेतना से है। व्यवहार तो चेतना का प्रकाशन है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) वास्तव में व्यवहार को अनुभव या चेतना के बिना नहीं समझा जा सकता है। मनोविज्ञान अनुभव तथा व्यवहार दोनों का विज्ञान है।

(३) व्यवहारवादी मनोविज्ञान को मानसिक प्रवृत्तियों का विज्ञान न मानकर उत्तेजना प्रतिक्रिया (Stimulus-Response) का विज्ञान मानते हैं। किन्तु इससे मानव व्यवहार की सम्पूर्ण व्याख्या नहीं हो पाती है। उत्तेजना को ग्रहण करने के लिये मन या चेतना अनुभूति की अति आवश्यकता है और यह मन या चेतना अनुभूति ही उत्तेजक के प्रति एक विशिष्ट प्रकार की प्रतिक्रिया करता है। इस प्रकार व्यवहारवादियों ने मनुष्य को एक भौतिक यन्त्र मान बनाकर मनोविज्ञान को समाप्त करने की चेष्ठा की है।

इस प्रकार मनोविज्ञान को व्यवहार का विज्ञान कहना उचित नहीं है। डा० जे० एन० सिन्हा ने इस सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुये लिखा है—**"अतः व्यवहारवादी मनोविज्ञान जो मन या चेतना या अन्तर्निरीक्षण में अलग रहता है अयोक्तिक प्रतीत होता है। मनोविज्ञान भौतिक या शारीरिक विज्ञान नहीं है। यह मन का विज्ञान है। इसका सम्बन्ध अनुभव एवं व्यवहार से है।"**

"So the behaviourist psychology which dispenses with mind or consciousness, or introspection seems to be absurd. Psychology is not a physical science. It is the science of mind, It deals with cxperience and behaviour."

[य] मनोविज्ञान अनुभव और व्यवहार का विधायक विज्ञान है

(Psychology is the Positive Science of Experience and Behaviour)

उपर्युक्त शब्दों में हमने मनोविज्ञान के इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालते हुये मनोविज्ञान की परिभाषायें प्रस्तुत कीं। इन परिभाषाओं में ऐसी कोई भी परिभाषा नहीं है जो मनोविज्ञान के वास्तविक तथा सम्पूर्ण स्वरूप पर प्रकाश डालती हो। १९ वीं शताब्दी के पूर्व जब मनोविज्ञान दर्शन का अंग था तब वह आत्मा या मन का विज्ञान था जिसका कि वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन सम्भव ही नहीं था। किन्तु १९वीं तथा २०वीं शताब्दी में जब से मनोविज्ञान ने अपने आपको दर्शन से मुक्त कर स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में स्थान पाया तबसे भी मनोविज्ञान की सर्वमान्य परिभाषा निर्धारित न हो सकी। एक ओर जहाँ 'रचनावाद' (Structuralism) के समर्थकों जैसे विलियम जेम्स (William James), वुन्ट (Wundt), टिच्नर (Titchener) आदि ने मनोविज्ञान को **चेतन अनुभूति** (Conscious Experience) का विज्ञान बताया तो दूसरी ओर **'व्यवहारवाद'** (Behavi-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ourism) के प्रतिपादक **जे० बी० वाटसन** (J. B. Watson) ने मनोविज्ञान को **'व्यवहार** (Behaviour) का अध्ययन बतला कर भौतिक विज्ञान बना दिया। वास्तव में इन दोनों ही दृष्टिकोणों में अतिशयोक्ति है। मनोविज्ञान, चाहे जिस रूप में भी हो अनुभूति तथा व्यवहार दोनों का अध्ययन करता हैं। हाँ यह बात दूसरी है कि कुछ लोग अनुभव पर अधिक जोर देते हैं तो कुछ व्यवहार पर। किन्तु अधिकांश मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान में इन दोनों के अध्ययन को आवश्यक मानते हैं। अतः इस दृष्टि कोण से मनोविज्ञान की आधुनिकतम परिभाषा यह हुई कि **मनोविज्ञान अनुभव तथा व्यवहार का विज्ञान** (Science of Experience and Behaviour) है। इसके अतिरिक्त अब सभी मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञान को **'विधायक विज्ञान'** (Positive Science) मानते हैं। अनुभव तथा व्यवहार का अध्ययन किस प्रकार किया जाय इस सम्बन्ध में आधुनिक मनोविज्ञानिकों का विचार है कि इन दोनों का अध्ययन उत्तेजनाओं के प्रति प्राणी के अभियोजनों (Adjustments) के रूप में करना उचित है। मनोविज्ञान के स्वरूप पर हम उसका वास्तविक अर्थ प्रस्तुत करते हुए प्रकाश डाल चुके हैं। अतः अब पुनरावृत्ति करने की आवश्यकता नहीं है। आगे हम अनुभव तथा व्यवहार के विधायक विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान की परिभाषायें प्रस्तुत कर रहे हैं—

(१) **मन**:—"मनोविज्ञान अनुभव के शब्दों में अनुभव तथा व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

"Psychology is a positive science of experience and behaviour interpreted in terms of experience."

—*N. L. Munn*

(२) **वुडवर्थ** :—"मनोविज्ञान वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति के व्यापारों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है।"

"Psychology is the science of the activities of an individual in relation to the environment."

—*Woodworth*

(३) **थाउलस** :—मनोविज्ञान मानव अनुभव तथा व्यवहार का विधायक विज्ञान है।"

"Psychology is the science of human experience and behaviour."

—*Thouless.*

(४) **वैलेन्टाइन** :—मनोविज्ञान मन का वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें न केवल बौद्धिक बल्कि संवेगात्मक अनुभव भी आते हैं तथा प्रेरक शक्तियाँ तथा व्यवहार भी सम्मिलित है।"

"Psychology is the scientific study of the mind, including not

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

only intellectual but emotional experience, and including motive forces and actions or behavipur." —*Valentine*

(५) जलोटा :–मनोविज्ञान उन मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है जिसका प्रदर्शन शारीरिक व्यवहार में होता है तथा उनका निरीक्षण प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा होता है।

"Psychology is defined as the study of mental process as expressed in bodily behaviour, and or observed in direct experience." —*Dr. Jalota*

(६) ब्रिजिस :—मनोविज्ञान चेतन तथा व्यवहार एवं व्यवहार के अचेतन में निर्धारिकों का विज्ञान है।"

"Psychology is the science of consciousness and behaviour and unconscious determinants of behaviour." —*Bridges.*

(७) स्किनर :—मनोविज्ञान जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के प्रति प्राणी की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रतिक्रियाओं या व्यवहार से तात्पर्य प्राणी की समस्त प्रकार की प्रतिक्रियाओं, समायोजन कार्य व्यापारों और प्रकाशनों से है।"

"Psychology deals with responses to any and every kind of situation that life presents. By responses or behaviour is meant all forms of processes, adjustments, activities and expression of the organism." —*Gharles E. Skinner.*

(८) जेम्स ड्रेवर :—"मनोविज्ञान वह विधायक विज्ञान है जो मानव और पशु के उस व्यवहार का अध्ययन करता है जो व्यवहार उस अन्तर्जगत के मनोभावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करता है जिसको हम मानसिक जीवन कहते हैं।"

"Psychology is the positive science which studies the behaviour of men and animals. so far as that behaviour is regarded as an experession of that inner life of thoughts and feelings which we call mental life." —*James Drever.*

संक्षेप में मनोविज्ञान अनुभव तथा व्यवहार का विधायक विज्ञान है

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में मनोविज्ञान वह विधायक विज्ञान है जिसके अन्तर्गत हम व्यक्ति की मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं अर्थात् उसके अनुभव (Experience) तथा व्यवहार (Behaviour) का अध्ययन करते हैं जिन्हे समझने के लिए मनुष्य की शारीरिक बनावट तथा पशुओं के व्यवहारों तथा शारीरिक बनावट के अध्ययन का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहारा लिया जाता है। मनोविज्ञान के इस स्वरूप का विश्लेषण करने पर हम देखते हैं कि—(१) मनोविज्ञान एक विधायक विज्ञान, (२) मनोविज्ञान व्यक्ति की मानसिक प्रतिक्रियाओं या अनुभूति का अध्ययन है, (३) मनोविज्ञान व्यक्ति की शारीरिक प्रतिक्रियाओं या व्यवहार का अध्ययन करता है, (४) मनोविज्ञान व्यक्ति की शारीरिक बनावट तथा उसकी क्रियाओं का अध्ययन करता है तथा (५) मनोविज्ञान पशुओं के व्यवहार तथा उनकी शारीरिक बनावट का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये हम ने देखा कि किस प्रकार मनोविज्ञान क्रमशः आत्मा का विज्ञान, मन का विज्ञान, चेतना का विज्ञान तथा व्यवहार का विज्ञान के रूप में परिभाषित किया गया किन्तु ये समस्त परिभाषायें अवैज्ञानिक तथा अपूर्ण रहीं। अन्त में मनोविज्ञान की वैज्ञानिक, सम्पूर्ण तथा आधुनिकतम परिभाषा यह हुई –मनोविज्ञान अनुभव तथा व्यवहार का विधायक विज्ञान है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२

मनोविज्ञान की समस्यायें और क्षेत्र

[Problems and Scope of Psycholoy]

प्रश्न संख्या—२

मनोविज्ञान की समस्याओं तथा क्षेत्र पर प्रकाश डालिए ।

Throw light on problems and scope of Psychology.

भूमिका (Introduction)

प्रत्येक विज्ञान की अपनी कुछ विशिष्ट समस्यायें तथा अध्ययन करने की सामग्री होती है जिसके आधार पर उसे अन्य विज्ञानों से विलग किया जाता है। मनोविज्ञान की भी अपनी कुछ समस्यायें तथा अध्ययन की सामग्री है। आधुनिक काल में मनोविज्ञान का उद्देश्य है मानव 'अनुभव' (Experience) तथा 'व्यवहार' (Behaviour) के सम्बन्ध में भविष्य की बातें बताना तथा उनका नियन्त्रण करना। इस द्विमुखी उद्देश्य की पूर्ति के लिए मनोविज्ञान को तीन प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मनोविज्ञान की मुख्य अध्ययन की सामग्री मानव अनुभव (Experience) तथा 'व्यवहार' (Behaviour) है जिसे समझने के लिए उसे तत्सम्बन्धी अनेक बातों का अध्ययन करना पड़ता है। मनोविज्ञान की कौन-कौन समस्यायें हैं तथा इसके अन्तर्गत किन-किन बातों का अध्ययन करना पड़ता है, इन्हें समझने के लिए हम इस प्रश्न में मनोविज्ञान की समस्यायें (Problems of Psychology) तथा मनोविज्ञान का क्षेत्र व विषय सामग्री (Scope or Subject matter of Psychology) प्रस्तुत करेंगे।

मनोविज्ञान की समस्यायें

(Problems of Psychology)

[१] मानव अनुभव तथा व्यवहार को समझना

(To Understand the human experience and behaviour)

मनोविज्ञान मानव अनुभव तथा व्यवहार का विज्ञान है। अतः जिस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैज्ञानिक अपने विषय की सूक्ष्म निरीक्षण तथा परीक्षण द्वारा अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त करना चाहता है उसी प्रकार मनोवैज्ञानिक भी अपने विषय अर्थात् मानव अनुभव तथा व्यवहार को अच्छी तरह समझना चाहता है। वह समझना चाहता है कि व्यक्ति अपने वातावरण के प्रति किसी प्रकार का क्यों और कैसे अभियोजनात्मक व्यवहार करता है। इसे समझने के लिये वह सामान्य तथा असामान्य व्यक्ति, बालक, प्रौढ़ तथा वृद्ध व्यक्ति, पशु आदि की मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं को जानने का प्रयास करता है।

[२] मानव अनुभव तथा व्यवहार की भविष्यवाणी करना
(To predict the human experience and behaviour)

मानव अनुभव तथा व्यवहार को समझने के बाद मनोवैज्ञानिक को इनका भविष्य में जो रूप होगा उसके सम्बन्ध में भविष्यवाणी (Prediction) करनी पड़ती है। मनोविज्ञान इस बात का अध्ययन करता है कि यदि व्यक्ति के सम्मुख अमुक परिस्थितियाँ होंगी तो वह अमुक प्रकार का व्यवहार करेगा। उदाहरण के लिये यदि बालक को भविष्य में आवारा तथा अपराधी बालकों का संग मिलेगा तो वह भी अपराधी बन जायगा। हाँ यह बात अवश्य है कि मनोविज्ञान मानव अनुभव तथा व्यवहार की उतनी शुद्ध तथा विश्वसनीय भविष्यवाणी नहीं कर पाता जितनी कि भौतिकशास्त्र भौतिक पदार्थों के सम्बन्ध में करता है क्योंकि एक तो मनुष्य का व्यवहार बहुत ही जटिल होता है और दूसरे भौतिक पदार्थों के समान मनुष्य का प्रयोगशालाओं में पूर्ण अध्ययन नहीं हो पाता। किन्तु फिर भी मनोविज्ञान अधिकाधिक विश्वसनीय तथा शुद्ध भविष्यवाणी करने का प्रयास कर रहा है।

[३] मानव अनुभव तथा व्यवहार को नियन्त्रित करना
(To control the human experience and behaviour)

मनोविज्ञान के सम्मुख तीसरी समस्या है मानव अनुभव तथा व्यवहार को नियन्त्रित करना। यदि हम समझने में समर्थ हो जाते हैं कि अमुक परिस्थितियों में कोई व्यक्ति अमुक प्रकार का व्यवहार करेगा और यदि हम उन परिस्थितियों पर नियन्त्रण करलें तो स्वाभाविक रूप से हम उस व्यक्ति के व्यवहार को नियन्त्रित कर लेंगे। यदि हम किसी अच्छे बालक को आवारा तथा अपराधी बालक के संग में न जाने देंगे तो यह बालक अपराधी बालक बनने से बच जायगा। भविष्यवाणी करने के समान मानव अनुभव तथा व्यवहार को नियन्त्रित करने की समस्या भी अति कठिन है। किन्तु हां यह बात अवश्य है कि जिस दिन मनोविज्ञान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानव व्यवहार को नियन्त्रित करने में सफल हो जायेगा उस दिन विश्वबन्धुत्व तथा विश्वशान्ति की कल्पना को साकार रूप मिल जायगा।

मनोविज्ञान का क्षेत्र व विषय सामग्री
(Scope or subject matter of psychology)

[१] मानसिक क्रियाओं का अध्ययन
(Study of mental activities or processes)

मनोविज्ञान मूलतः मन का विज्ञान है। अतः इसका सम्बन्ध विशेष तौर से मन की क्रियाओं अर्थात् मानसिक क्रियाओं जैसे संवेदना (Sensation), प्रत्यक्षीकरण (Perception), सीखना (Learning), याद करना (Remembering), भूलना (Forgetting), कल्पना (Imagination), चिन्तन (Thinking), तर्क (Reasoning), निर्णय (Judging), इत्यादि से है। मनोविज्ञान इन मानसिक क्रियाओं के स्वरूप, उनकी कार्य प्रणाली उनके आधार आदि का मनोवैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है।

[२] शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन
(Study of Physical Activities)

मानसिक क्रियायें वैषयिक (Subjective) होती हैं। अतः हमें दूसरे की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करने के लिये उनमें अन्तर्दर्शन (Introspection) पर निर्भर रहना पड़ता है। किन्तु अन्तर्दर्शन से हम मानसिक क्रियाओं का वैज्ञानिक ढंग से ज्ञान नहीं कर पाते। इन मानसिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति शारीरिक क्रियाओं में होती है। अतः मनोविज्ञान शारीरिक क्रियाओं जैसे चलना, फिरना, लड़ना, रोना, हँसना, खाना पीना आदि शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। इसके लिये निरीक्षण तथा प्रयोगात्मक पद्धति का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है।

[३] संवेगात्मक क्रियाओं का अध्ययन
(Study of emotional activities)

वास्तव में संवेगात्मक क्रियायें मानसिक तथा शारीरिक क्रियाओं से प्रथक नहीं है क्योंकि इनमें हमारा मन (Mind) तथा शरीर (Body) दोनों सक्रिय रहते हैं। किसी सुन्दर गीत को सुनकर हम हर्ष का अनुभव करते हैं और हंसने लगते हैं या अन्य हर्ष में होने वाली शारीरिक मुद्राओं को बना लेते हैं। इसी प्रकार अन्य संवेगों जैसे शोक, सुख, दुख की मानसिक तथा शारीरिक क्रियायें होती हैं। मनोविज्ञान इन क्रियाओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[४] पशु व्यवहार का अध्ययन

(Study of Animal Behaviour)

मनोविज्ञान मनुष्य की मानसिक, शारीरिक तथा संवेगात्मक क्रियाओं अर्थात् मनुष्य की अनुभूति तथा व्यवहार को वैज्ञानिक ढग से समझने के लिये पशु व्यवहार का अध्ययन करता है। साधारणतया पशु का व्यवहार सरल होता है। अतः उसे सुविधापूर्वक समझा जा सकता है। मनोविज्ञान पशु का सरल व्यवहार समझकर मानव के जटिल व्यवहार को समझने में समर्थ होता है। मनोवैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में बिल्ली, कुत्ता, चूहा, चिम्पेंजी, बन्दर, कबूतर इत्यादि पर विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। यह कार्य विशेष रूप से पशु मनोविज्ञान (Animal Psychology) करता है।

[५] शारीरिक बनावट और उसकी क्रियाओं का अध्ययन

(Study of Physical Structure and its Activities)

व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक तथा संवेगात्मक क्रियाओं का आधार शारीरिक बनावट तथा उसकी क्रियायें होती हैं। उदाहरण के लिये स्नायुमण्डल (Nervous System) व्यक्ति के शरीर का ऐसा अंग है जो उसके अभियोजनात्मक व्यवहार (अर्थात् अनुभूति तथा व्यवहार) को नियन्त्रित तथा संचालित करता है। मनोविज्ञान व्यक्ति के शरीर के इस प्रकार के अंगों तथा उसकी क्रियाओं का अध्ययन करता है।

[६] व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन

(Study of various stages of the Individual)

मनोविज्ञान व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं अर्थात् गर्भावस्था, शैशवावस्था बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था तथा वृद्धावस्था में होने वाले अनुभव तथा व्यवहार का अध्ययन करता है। वर्तमान समय में व्यक्ति की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन करने के लिये मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं जैसे बाल मनोविज्ञान, किशोर मनोविज्ञान, प्रौढ़ मनोविज्ञान आदि का विकास हो रहा है।

[६] चेतना के विभिन्न स्तरों का अध्ययन

(Study of Various Levels of Consciousness)

एक समय था जब मनोविज्ञान केवल चेतना (Consciousness) का अध्ययन करता था किन्तु जब से सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) ने अचेतन (Unconscious) तथा अवचेतन या अर्धचेतन (Sub-conscious) का चेतन के स्तर के रूप में अस्तित्व सिद्ध कर दिया तब से मनोविज्ञान चेतना के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विभिन्न स्तरों अर्थात् चेतन (Conscious), अचेतन (Unconscious) तथा उपचेतन या अर्धचेतन (Subconscious) का अध्ययन करने लगा है।

[८] व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन

(Study of individual differences)

वर्तमान समय में मनोविज्ञान व्यक्ति में पाई जाने वाली विभिन्नताओं जैसे शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विभिन्नता, चरित्र तथा व्यक्तित्व में विभिन्नता, आदि का अध्ययन करता है। इस अध्ययन के लिये मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार के परीक्षणों जैसे बुद्धि-परीक्षण, रुचि-परीक्षण अभिरुचि-परीक्षण व्यक्तित्व-परीक्षण आदि को अपनाता है।

[९] वंशानुक्रम एवं वातावरण का अध्ययन

(Study of heredity and environment)

मनोविज्ञान व्यक्ति के अनुभव, व्यवहार तथा विकास, व्यक्तिगत विभिन्नता आदि पर जो वंशानुक्रम तथा वातावरण का प्रभाव पड़ता है उसका तुलनात्मक ढंग से अध्ययन करता है। वर्तमान समय में मनोविज्ञान के समक्ष यह एक महत्वपूर्ण समस्या है कि व्यक्ति के व्यक्तित्व, स्वरूप तथा उसके निर्धारण में वंशानुक्रम का महत्व अधिक है अथवा वातावरण का।

[१०] वाह्य उत्तेजनाओं या वस्तुओं का अध्ययन

(Study of external stimulii or objects)

व्यक्ति का अधिकांश व्यवहार वाह्य उत्तेजकों या वस्तुओं द्वारा निर्धारित होता है। वे ध्वनि, रंग, घ्राण आदि संवेदनाओं तथा संवेगों को उत्पन्न करती हैं। वायु से कंपन ध्वनि की संवेदना उत्पन्न होती है, प्रेमिका को देखकर प्रेमभाव उत्पन्न होता है, शत्रु को देखकर क्रोध उत्पन्न होता है, सर्प को देखकर भय होता है। इन संवेदनाओं और संवेगों के अनुसार हम शारीरिक क्रियायें भी करने लगते हैं। इस प्रकार हमारे व्यवहार को निर्धारित करने में वाह्य उद्दीपकों तथा वस्तुओं का विशेष स्थान है। मनोविज्ञान, जिस रूप में वाह्य उत्तेजक या वस्तुयें मन को उत्तेजित करती हैं उस रूप में उनका अध्ययन करता है।

[११] जन्मजात एवं अर्जित प्रेरकों का अध्ययन

(Study of inborn and acquired motives)

मनुष्य के अनुभव तथा व्यवहार को निर्धारित करने में प्रेरकों का अत्यधिक स्थान होता है क्योंकि ये उसे व्यवहार करने के लिये प्रेरित करते हैं कुछ प्रेरक जैसे भूख (Hunger), प्यास (Thirst), काम (Sex) आदि जन्मजात होते हैं और कुछ अर्जित जैसे मद-व्यसन (Drug-addiction), जीवन लक्ष्य (Life-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

goal) आदि। मनोविज्ञान मनुष्य के व्यवहार को समझने के लिए इन प्रेरकों को अपना प्रमुख विषय सामग्री बनाता है।

[१२] असामान्य व्यवहार का अध्ययन

(Study of abnormal behaviour)

मनोविज्ञान सामान्य व्यवहार की भांति व्यक्ति के असामान्य व्यवहार (Abnormal Behaviour) का भी अध्ययन करता है। असामान्य व्यवहार से हमारा तात्पर्य पागलों, स्नायु रोगियों (Neurotics), जड़ व्यक्तियों, अन्धे तथा वाणीविहीन व्यक्तियों के व्यवहार से है। मनोविज्ञान इन लोगों के व्यवहार के स्वरूप, इनके कारणों तथा निवारणों के सम्बन्ध में वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है। वर्तमान समय में असामान्य व्यवहार के अध्ययन के प्रति मनोवैज्ञानिक की रुचि दिन पर दिन बढ़ती जा रही है। मनोविज्ञान की एक प्रथक शाखा **'असामान्य मनोविज्ञान'** (Abnormal Psychology) का जन्म ही असामान्य व्यवहार के अध्ययन के लिए हुआ।

[१३] विभिन्न प्रकार के साहित्य का अध्ययन

(Study of various types of literature)

साहित्य का व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। अतः मनोविज्ञान व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार को समझने के लिए विभिन्न प्रकार के साहित्य से अध्ययन सामग्री एकत्रित करता है। नाटक, काव्य, जीवनी, आत्मकथा, कथा-साहित्य, वैज्ञानिक खोज, ऐतिहासिक घटनायें आदि सभी मनोवैज्ञानिक को व्यक्ति के अनुभव तथा व्यवहार को समझने में सहायता प्रदान करते हैं।

[१४] सीखने तथा स्मृति की प्रक्रियाओं का अध्ययन

(Study of learning and memorising processes)

वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक सीखने तथा स्मृति की प्रक्रियाओं पर वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने लगे हैं। सीखने के सम्बन्ध में थार्नडाइक, कोहलर, पैवलव आदि के प्रयत्न सराहनीय हैं। स्मृति के क्षेत्र में एबिन्घास (Ebbinghaus) ने वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन प्रारम्भ किया। इस ओर अब और सक्रिय प्रयास किया जा रहा है।

[१५] सामूहिक मन और सामाजिक व्यवहार का अध्ययन

(Study of collective mind and social behaviour)

मनोविज्ञान व्यक्ति के मन तथा व्यवहार के साथ साथ सामूहिक मन तथा सामाजिक व्यवहार का भी अध्ययन करता है। उनको समझने के लिए जन रीतियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Folkways), प्रथायें (Customs) परम्परायें (Traditions), संस्थायें (Institutions), समितियों (Associations) जनमत (Public opinion), पूर्वाग्रहों (Prejudices), प्रचार (Propaganda), भीड़ (Crowd), नेतृत्व (Leadership) आदि का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान की एक पृथक शाखा समाज-मनोविज्ञान (Social psychology) के अन्तर्गत इन सब बातों का अध्ययन किया जाता है।

[१६] लोक व्यवहार का अध्ययन
(Study of behaviour)

जब से जनजातीय कल्याण (Tribal welfare) की तरफ सरकार का ध्यान गया तब से मनोविज्ञान जनजातियों के साहित्य, कला, धर्म, पौराणिक कथाओं (Mythologies) अन्धविश्वासों (Superstitions) आदि के आधारभूत मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों को समझने में तथा उनको आधुनिक समाज से तुलना करने में संलग्न है। मनोविज्ञान का यह अध्ययन मानवशास्त्रियों (Anthropologists) को जनजातियों की सामाजिक संरचना तथा उसका संगठन और विघटन समझने में पर्याप्त सहायता पहुँचाता है। इस प्रकार के जनजातीय अध्ययन के लिए लोक मनोविज्ञान (Folk Psychology) का प्रतिपादन हो चुका है।

[१७] व्यक्ति तथा जाति की उत्पत्ति तथा विकास का अध्ययन
(Study of the origin and development of individual and race)

मनोविज्ञान की एक नवीन शाखा उत्पत्ति मूलक मनोविज्ञान (Genetic Psychology) में व्यक्ति तथा जाति की उत्पत्ति तथा उनके विकास की विभिन्न अवस्थाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत शिशु, बालक, किशोर, प्रौढ़, पशु आदि सभी का अध्ययन किया जाता है।

[१८] मापन सम्बन्धी अध्ययन
(Study related to measurement)

व्यक्ति की बुद्धि, ज्ञान, रुचि, अभिरुचि आदि का मापन या मूल्यांकन करने के लिए मनोविज्ञान अनेक वैज्ञानिक विधियों या परीक्षणों की खोज करता है। बुद्धि परीक्षण, (Intelligence Tests), व्यक्ति परीक्षण (Personality Tests), ज्ञानोपार्जन परीक्षण (Achievement Tests), रुचि परीक्षण (Interest Tests), अभिरुचि परीक्षण (Aptitude Tests) इत्यादि अनेक परीक्षणों का निर्माण हो चुका है। इनका व्यवहारिक जीवन में उपयोग भी पर्याप्त मात्रा में होने लगा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[१६] **अलौकिक व्यवहार का अध्ययन**

(Study of super-natural or super-human behaviour)

कुछ वर्षों पूर्व से मनोविज्ञान की एक शाखा परा-मनोविज्ञान (Para Psychology) ने मनुष्यों के अलौकिक व्यवहार का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करना प्रारम्भ कर दिया है। यद्यपि भारतीय ग्रन्थों में अलौकिक व्यवहारों का उल्लेख होता आया है किन्तु इनका वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो सका। **आत्म-वार्ता** (Spirit-communication), **मन-वार्ता** (Telepathy), **अद्भुत-प्रत्यक्षीकरण** (Extra-Sensory Perception) आदि आलौकिक व्यवहार हैं जिनका मनोविज्ञान वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है।

[२०] **व्यवहारिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन**

(Study of psychological principles of various aspects of applied life)

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि किस प्रकार मनोविज्ञान मानव अनुभूति तथा व्यवहार की अधिकतम जानकारी प्राप्त करने के लिए तत्सम्बन्धी विभिन्न पहलुओं का सैद्धांतिक ज्ञान प्रदान करता है। किन्तु अब मनोविज्ञान दिन पर दिन मनुष्य की व्यवहारिक समस्याओं को समझने, तथा सुलझाने के लिए व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। इसके लिए मनोविज्ञान की एक शाखा **व्यवहारिक मनोविज्ञान** (Applied Psychology) का भी विकास हो गया है। आगे हम देखेंगे कि मनोविज्ञान व्यावहारिक जीवन के किन-किन क्षेत्रों के मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का अध्ययन करता है :—

(१) **शिक्षा** (Education)—मनोविज्ञान शिक्षा के विभिन्न अंगों-यथा शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षालय, पाठ्यक्रम, शिक्षण पद्धति, अनुशासन आदि से सम्बन्धित समस्याओं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन कर उनका समाधान करने का प्रयास करता है। वह विशेष तौर से बालकों की मानसिक प्रक्रियाओं जैसे प्रत्यक्षीकरण, कल्पना, स्मृति, भूलना, विचार, तर्क, ध्यान, बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं अपराधी बालकों, मूल प्रवृत्तियों इत्यादि का अध्ययन कर ऐसे मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करता है जो बालकों के शिक्षण में सहायक हैं।

(२) **व्यावसायिक निर्देशन** (Vocational Guidance)—शिक्षा के उपरान्त प्रत्येक बालक को व्यावहारिक जीवन को सफल बनाने के लिए कोई न कोई व्यवसाय अपनाना पड़ता है। मनोविज्ञान विभिन्न परीक्षणों की सहायता से बालकों की व्यक्तिगत रुचियों, आवश्यकताओं, अभिरुचियों बुद्धि स्तर आदि का पता लगाकर तदनुकूल उन्हें व्यवसाय चुनने में मार्ग प्रदर्शन करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) **उद्योग और व्यापार** (Industry and Trade):—औद्योगीकरण तथा व्यापारीकरण के साथ-साथ मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत उद्योग तथा व्यापार से सम्बन्धित समस्याओं का समावेश होता जा रहा है। मनोविज्ञान हड़ताल, तालाबन्दी, दुर्घटनायें, काम की दशायें, श्रमिकों तथा अधिकारियों की भर्ती, थकान, श्रम, कुशलता, श्रम कल्याण इत्यादि से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन करता है और इनका समाधान करने के लिये मार्ग खोजता है। इसी प्रकार मनोविज्ञान, विज्ञापन, प्रचार, क्रय-विक्रय इत्यादि व्यापार से सम्बन्धित बातों का अध्ययन करता है।

(४) **कार्मिक वर्गप्रशासन** (Personnel Administration):—लोक प्रशासन (Public Administration) के अन्तर्गत कार्मिक-वर्गप्रशासन का अत्यधिक महत्व है क्योंकि लोक प्रशासन की सफलता कार्मिक वर्गप्रशासन अर्थात् सरकारी कर्मचारियों के प्रशासन पर आधारित होती है। मनोविज्ञान कार्मिक वर्ग प्रशासन का समस्याओं-यथा लोक कर्मचारियों की भरती (Recruitment of Public Servants), प्रशिक्षण (Training), पदोन्नति (Promotion,, अनुशासन (Discipline), पदावनति (Demotion), पदच्युति (Dismissal), सेवा-निवृत्ति (Retirement), कर्मचारी-संगठन (Employees Organization) इत्यादि का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है और इनकी समस्याओं के समावान के लिए साधनों, सिद्धांतों तथा विधियों को प्रस्तुत करता है। द्वितीय महायुद्ध के समय जल, थल तथा नभ सेनाओं के लिये योग्य सिपाहियों तथा अफसरों के चुनाव के लिये आर्मीबीटा तथा आर्मीआल्फा परीक्षणों का निर्माण किया गया।

(५) **मानसिक रोग** (Mental Diseases):—जब से मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविश्लेषण सम्प्रदाय ((Psychoanalysis School) का विकास हुआ तब से एक तरफ मनोविज्ञान विभिन्न प्रकार के मानसिक रोगों जैसे स्नायविक रोग (Neurasthenia), कल्पना-ग्रह (Obsession), भीतिरोग (Pholio). उन्माद (Hysteria), स्थिर भ्रमरोग इत्यादि के लक्षणों तथा कारणों की छानबीन करता है तो दूसरी ओर मानसिक चिकित्सा की विभिन्न विधियों जैसे स्वतन्त्र साहचर्य (Free Association), सम्मोहन (Hypnotism), निर्देशन (Suggestion), पुनर्शिक्षण (Re-education) इत्यादि को प्रतिपादित कर मानसिक रोगों का निवारण करता है। इस प्रकार मनोविज्ञान मानसिक चिकित्सा सम्बन्धी अध्ययन करता है।

(६) **अपराध और कानून** (Crime and Law):—मनोविज्ञान के अध्ययन क्षेत्रों के अन्तर्गत अपराध तथा कानून से सम्बन्धित बहुत सी बातों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समावेश हो गया है जो विशेष तौर से मानव प्रकृति से सम्बन्धित है। अपराध के कारण, अपराधी का पता लगाना, अपराधियों का सुधार इत्यादि के लिए मनोविज्ञान ने अनेक साधनों तथा सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है। इसी प्रकार कानून को निर्माण करने, न्याय के तरीकों का प्रतिपादन करने, न्यायाधीशों वकीलों गवाहों इत्यादि के मानसिक लक्षणों का अध्ययन करने आदि में मनोविज्ञान दिन पर दिन अग्रसर हो रहा है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में **मनोविज्ञान की तीन प्रकार की समस्यायें हैं।** (१) मानव अनुभव तथा व्यवहार को समझना (२) मानव अनुभव तथा व्यवहार की भविष्यवाणी करना, तथा (३) मानव अनुभव तथा व्यवहार को नियन्त्रित करना। **मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न बातों का अध्ययन किया जाता है**—(१) मानसिक क्रियाओं का अध्ययन (२) शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है—(३) संवेगात्मक क्रियाओं का अध्ययन, (४) पशु-व्यवहार का अध्ययन, (५) शारीरिक बनावट और उसकी क्रियाओं का अध्ययन, (६) व्यक्ति के विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन, (७) चेतना के विभिन्न स्तरों का अध्ययन, (८) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का अध्ययन, (९) वंशानुक्रम एवं वातावरण का अध्ययन, (१०) वाह्य उत्तेजनाओं या वस्तुओं का अध्ययन, (११) जन्मजात एवं अर्जित प्रेरकों का अध्ययन, (१२) असामान्य व्यवहार का अध्ययन, (१३) विभिन्न प्रकार के साहित्य का अध्ययन, (१४) सीखने तथा स्मृति की प्रक्रियाओं का अध्ययन, (१५) सामूहिक मन और सामाजिक व्यवहार का अध्ययन, (१६) लोक व्यवहार का अध्ययन, (१७) व्यक्ति तथा जाति की उत्पत्ति तथा विकास का अध्ययन, (१८) मापन सम्बन्धी अध्ययन, (१९) अलौकिक व्यवहार का अध्ययन तथा (२०)व्यवहारिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन। इस प्रकार मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३

मानव जीवन में मनोविज्ञान का महत्व

[Importance of Psychology in human life]

प्रश्न संख्या—३

मानव जीवन में मनोविज्ञान के अध्ययन का क्या महत्व है ?

What is the importance of the study of Psychology in human life ?

भूमिका (Introduction)

जब से इस व्यापक विश्व में हम मानव के अस्तित्व की कल्पना कर सकते हैं तभी से मानव जीवन में किसी न किसी रूप में मनोविज्ञान का महत्व बना रहा है, किन्तु जबसे एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान के स्वरूप का प्रादुर्भाव हुआ तबसे मनोविज्ञान का महत्व तथा उपयोगिता में अत्यधिक वृद्धि हुई है। वर्तमान समय में मानव जीवन का ऐसा कोई भी पहलू न होगा जिसको समझने और जिस क्षेत्र में प्रगति करने के लिये मनोविज्ञान की सहायता न ली जाती हो। मनोविज्ञान व्यक्ति के दैनिक जीवन से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की समस्याओं को समझने तथा सुलझाने में बड़ी सहायता करता है। आज सभी सामाजिक वैज्ञानिक (Social Scientists)[1] अपने-अपने विज्ञान को मनोवैज्ञानिक आधार पर प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि मानव जीवन में मनोविज्ञान के अध्ययन का अत्यधिक महत्व है। अब हम मनोविज्ञान का महत्व समझने के लिए मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान का महत्व (Importance of Psychology in the various fields of human life) प्रस्तुत करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान का महत्व
(Importance of Psychology in the various fields of human life)

[१ बाल विकास में मनोविज्ञान का प्रयोग
(Use of Psychology in child development)

प्रत्येक व्यक्ति शिशु (Infant) के रूप में इस व्यापक संसार में प्रवेश करता है। मनोविज्ञान का प्रयोग यहीं से उसके विकास की क्रिया में होने लगता है। मनोविज्ञान के अध्ययन द्वारा बाल विकास के क्रम, प्रत्येक क्रम की विशेषतायें, बालक की जन्मजात और अर्जित आवश्यकताओं, बालकों का संवेगात्मक, सामाजिक और नैतिक व्यवहार, विकास के क्रम में मानसिक रोगों के उत्पन्न होने की सम्भावनायें, मानसिक रोगों के निदान तथा उपचार, विधियाँ इत्यादि बातें भली भाँति समझने में समर्थ हो जाते हैं। फलस्वरूप आज के बाल-युग (Child–Age) में प्रत्येक सुशिक्षित माता-पिता अपने बालकों का सुचारुपूर्वक पालन-पोषण करने के लिए उपर्युक्त बातों की जानकारी प्राप्त करना अपना परम धर्म समझने लगे हैं। उक्त उद्देश्य के लिए राज्य और स्थानीय संस्थाओं की ओर से बाल-कल्याण केन्द्र व बाल निर्देशन, कक्ष भी स्थापित किये गये हैं। खेल (Play) द्वारा बालकों का विकास, शिक्षा, निदान और उपचार की विधि मनोविज्ञान ी ही देन है।

[२] शिक्षा में मनोविज्ञान का प्रयोग
(Use of Psychology in Education)

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वाङ्गीण विकास करना है ताकि वह देश का योग्य नागरिक वन सके। परन्तु शिक्षा कोई रुपया पैसा तो नहीं है कि जिसको जिस समय चाहे दे दे। इसके लिए विभिन्न बौद्धिक क्षमताओं, मानसिक योग्यताओं अभिरुचियों, दृष्टिकोणों तथा स्वभाव को समझना होगा। उक्त उद्देश्य की पूर्ति में शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology) का महत्वपूर्ण स्थान है। सीखने की प्रक्रिया में प्रेरणा (Motivation), आवृत्ति (Repetition), पुरस्कार और दण्ड (Reward and punishment), अनुकरण (Imitation), सुझाव (Suggestion), सहानुभूति (Sympathy), विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं (Mental Processes) संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान स्मृति, कल्पना, चिन्तन-तर्क इत्योदि का किस तरह उपयोग किया जाय यह हमें शिक्षा मनोविज्ञान के द्वारा ही ज्ञात होता है। वंशानुक्रम (Heredity) द्वारा बालक को कौन-कौन शक्तियाँ प्राप्ति होती हैं ? पर्यावरण (Environment) का बालक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर क्या प्रभाव पड़ता है ? यह किस प्रकार उसकी जन्मजात शक्तियों में परिवर्तन लाता है। इस बात की चर्चा व्यावहारिक मनोविज्ञान में की जाती है। अन्त में किशोरावस्था (Adolesence) प्राप्त करने के उपरान्त विद्यार्थी को व्यावसायिक निर्देशन (Vocational Guidance) प्रदान करने में मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रकार शिक्षा का कोई भी क्षेत्र मनोविज्ञान से अछूता नहीं रह पाता है।

[३] मानसिक स्वास्थ्य में मनोविज्ञान का उपयोग

(Use of Psychology in mental health)

लोगों के मानसिक स्वास्थ्य को बनाये रखने में मनोविज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण हाथ है। आधुनिक मनोविज्ञान ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि 'स्वथ्य मस्तिष्क में स्वस्थ काया का' निवास (Sound Health in Sound Mind) रहता है। इस दृष्टिकोण से मानसिक स्वास्थ्य की अति आवश्यकता है। फ्रायड (Freud), एडलर (Adler), जुङ्ग (Jung) आदि मनोविश्लेषकों ने लोगों के असामान्य व्यवहार (Abnormal Behaviour) का कारण हमारी अतृप्त तथा दमित इच्छायें बतलाई जो भावना ग्रन्थियों (Complexes) के रूप में अचेतन मन (Unconscious Mind) में रहकर हमें असामान्य व्यवहार करने को प्रेरित करती हैं। परन्तु हमारा उद्देश्य केवल रोग के कारण जानना ही नहीं है बल्कि निदान (Diagnosis) तथा चिकित्सा (Therapy) की भी आवश्यकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए बहुत सी विधियों को उपयोग में लाया जाता है। जो इस प्रकार हैं—[अ] निदान के लिए (१) व्यक्ति इतिहास (Case History), (२) साक्षात्कार (Interview), (३) मनोवैज्ञानिक परीक्षण (Psychological Tests), (४) मनोविश्लेषण (Psychoanalysis) तथा [ब] चिकित्सा के लिए—(१) सुझाव (Suggestion) (२) युक्तिपूर्ण तर्क (Rational Persuation), (३) उन्नयन (Sublimation), (४) पुनर्शिक्षण (Re-education), (५) खेल द्वारा चिकित्सा (Play Therapy), (६) व्यावसायिक चिकित्सा (Occupational Therapy), (७) मनो—विश्लेषण (Psycho analysis), (८) अनादेशात्मक चिकित्सा (Non—Directive Therapy), (९) आघात चिकित्सा विधि (Shock Therapy), (१०) रासायनिक विधि (Chemo-Therapy), (११) निद्रा परख विधि (Narco Therapy), (१२) मनोशल्य चिकित्सा (Psycho—Surgery) इत्यादि प्रमुख विधियाँ हैं। इसके अतिरिक्त मानसिक अस्वास्थ्य की रोक-थाम के लिए व्यावहारिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न निरोधात्मक (Preventive)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विधियों का प्रयोग किया जाता है।

[४] मनोविज्ञान का अपराध निरोध और न्याय में प्रयोग

(Use of Psychology in crime Prevention and justice)

(अ) अपराध (Crime) :—मनोविज्ञान को व्यावहारिक रूप मिलने के साथ ही साथ अपराध के प्रति समाज के दृष्टिकोण में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। अब अपराधी को एक रोगी एवं अपराध को एक सामाजिक समस्या के रूप में देखा जाने लगा है। मनोविज्ञान के द्वारा अन्तर्गत अपराध के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, वंशानुक्रमीय, आर्थिक, राजनैतिक इत्यादि कारणों की छान बीन की जाती है और अपराधों की रोगों की तरह चिकित्सा की व्यवस्था की जाती है। मनोविज्ञान के इस व्यावहारिक दृष्टिकोण को सामने रखते हुए गाँधी जी ने लिखा है। **"जेल उनकी चिकित्सा तथा सुधार के लिए अस्पताल में बदल देना चाहिये। जेल के कर्मचारियों को चिकित्सकों के रूप में बदल देना चाहिए। कैदियों को अनुभव होना चाहिए कि वे उनके मित्र हैं।"**

"The jail must be converted into a hospital for their teatment and care. The jail staff should be transformed into physicians. The prisoners should be made to feel that they are friends"

—*M K Gandhi*

(ब) दण्ड (Punishment) :—अपराध की भांति दण्ड के प्रति भी समाज के दृष्टिकोण बदल रहे हैं। आजकल अपराध के विभिन्न सिद्धान्तों यथा—**[१] प्रायश्चित का सिद्धान्त, [२] प्रतिशोधात्मक सिद्धान्त, [३] निवर्तक सिद्धान्त, [४] निरोधात्मक सिद्धान्त तथा [५] सुधारात्मक सिद्धान्त**—में से सुधारक सिद्धान्त को मान्यता दी जा रही है। अपराधियों को सुधारने या उनमें आत्मसम्मान, उत्तरदायित्व, सहयोग इत्यादि की भावना उत्पन्न करने के लिए **'मुक्त बन्दीग्रह'** (Open Jail) **'प्रोबेशन'** (Probation), **'पैरोल'** (Parole) इत्यादि की व्यवस्था की गई है।

(स) बाल अपराध (Juvenile Delinqency) :—आधुनिक युग में बाल अपराधियों के सुधारने में मनोविज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है। अब मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि बालक का शैशवकाल से ही लालन-पालन एवं शिक्षा—दीक्षा उपयुक्त ढंग से न हो पावे तो उनमें अपराध प्रवृत्तियों का अंकुरित होना अवश्यम्भावी है। फलस्वरूप आधुनिक युग में बालकों के लिये उपयुक्त वातावरण उपलब्ध करने के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक हो गया है। बाल अपराधियों को सुधारने के लिए अनेक प्रकार के मनोवैज्ञानिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साधन तथा विधियां प्रयोग की जाने लगी हैं। **बाल न्यायालय** (Juvenile Courts), **सुधार विद्यालय** (Reformatory Schools) तथा **निर्देशन उपचार-शालाओं** (Guidance Clinics) की स्थापना होने से बाल अपराधियों का सुधार सम्भव तथा सरल हो गया।

(द) न्याय (Justice) :—न्याय के मामले में भी मनोविज्ञान बहुत ही सहायक सिद्ध हुआ है। अभियुक्त वास्तविक अपराधी है अथवा नहीं यह जानने के लिये शब्द साहचर्य परीक्षण (Words Association Test) तथा अन्य मनो-शारीरिक विधियों से जैसे श्वास क्रिया (Breathing), हृदय की धड़कन (Heart Beating), प्रतिक्रिया (Reaction), रक्तचाप (Blood Pressure) का अध्ययन कर अपराधी के कथन की सत्यता का पता लगा कर इसी के आधार पर न्याय किया जाने लगा है। इस प्रकार न्याय में मनोविज्ञान का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

[५] मनोविज्ञान का उद्योग और व्यापार में उपयोग
(Use of Psychology in Industry and Trade)

(अ) चयन (Selection) :—किसी उद्योग व व्यापार की सफलता के लिये योग्य श्रमिकों तथा कर्मचारियों की आवश्यकता है। मनोविज्ञान विभिन्न परीक्षणों तथा विधियों द्वारा उक्त आवश्यकता की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होता है।

(ब) कार्य-कुशलता (Efficiency)—उद्योगों द्वारा वांछित तथा अधिकतम लाभ उठाने के लिये श्रमिकों की कार्य-कुशलता में वृद्धि करने की अति आवश्यकता है। मनोविज्ञान की सहायता के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कारखानों में कार्य करने की उपयुक्त दशाओं, विश्राम, दुर्घटनाओं की रोक-थाम इत्यादि की मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यवस्था की जाती है जिससे उत्पादन में वृद्धि (Increase in Production) होती है।

(स) सन्तुष्टि (Satisfaction) :—वर्तमान समय में औद्योगिक संघर्षों से बचने तथा उनको शान्तिपूर्ण ढंग से निपटाने में व्यावहारिक मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण देन है। औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मनोवैज्ञानिक श्रमिकों द्वारा की गई हड़तालों को निपटाने, तालाबन्दी की समस्या का समाधान करने एवं अन्य किसी कारण से श्रमिकों एवं सेवायोजकों के बीच उठे हुए तनाओं को समाप्त करने का प्रयास करते हुए उन्हें एक दूसरे के प्रति सन्तुष्ट जीवन बिताने के लिये अवसर प्रदान करते हैं।

(द) विक्रय (Sell) :—वृहत् मात्रा में उत्पादित सामग्री के सफल वियक्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के लिये प्रचार (Propaganda) तथा विज्ञापन (Advertisement) की आकर्षक विधियों को अपनाए जाने में मनोविज्ञान का ही हाथ है। मनोविज्ञान द्वारा उपभोक्ताओं (Consumers) की रुचियों तथा मनोवृत्तियों का अध्ययन कर उनके ध्यान को आकर्षित करने के लिये तरह-तरह के विज्ञापनों का सफल प्रयोग मनोविज्ञान का ही चमत्कार है। इस तरह उद्योग तथा व्यापार के क्षेत्र में मनोविज्ञान पर्याप्त सहायक सिद्ध हुआ है।

[६] **सामाजिक जीवन में मनोविज्ञान का प्रयोग**
(Use of Psychology in social life)

(अ) **सामाजिक समायोजन** (Social Adjustment)—'मनुष्य सामाजिक प्राणी है' (Man is a social animal) क्योंकि समाज के बीच रह कर वह अपने व्यक्तित्व का विकास करते हुये अपनी भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। वह परिवार, स्कूल, मनोरंजन गृह तथा दूसरे धार्मिक संस्थाओं, राजनैतिक दलों एवं राष्ट्र के सदस्य के रूप में कैसे दूसरों से स्वास्थ्य तथा सन्तोषजनक सामाजिक समायोजन (Social Adjustment) स्थापित करे यह मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होता है।

(ब) **सांस्कृतिक पृष्ठभूमि** (Cultural Background)—प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी संस्कृति (Culture) हुआ करती है जिसका कि मानव व्यवहार पर अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक मनोविज्ञान द्वारा मनुष्य के व्यवहार को समझने के लिये उसकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि (Cultural Background) को अच्छी तरह समझ सकते हैं और ऐसा करने से यह जान सकते हैं कि संस्कृति के विभिन्न पहलू उसके जीवन पर कहाँ तक प्रभाव डालते हैं और उसकी उनके प्रति कैसी अभिवृत्तियाँ (Attitudes) हैं।

(स) **सामाजिक समस्यायें** (Social Problems)—प्रत्येक समाज के अन्तर्गत कुछ सामाजिक समस्यायें होती हैं। जैसे भारतवर्ष में दहेज प्रथा, बाल विवाह प्रथा, जाति प्रथा, अछूत प्रथा, दासी प्रथा, विधवा विवाह का निषेध इत्यादि समस्यायें है। मनोविज्ञान इन समस्याओं के समाधान में सहायक सिद्ध होता है।

(द) **सामाजिक संघर्ष** (Social Conflicts) समाज के अन्तर्गत तथा विभिन्न समाजों के बीच अनेक आधारों को लेकर समाज में बहुत से संघर्ष होते रहते हैं। भारतवर्ष को ही लीजिये यहाँ जाति, वर्ग, वर्ण, धर्म, भाषा सम्प्रदाय' प्रान्त इत्यादि को लेकर आये दिन आंधियाँ चला करती हैं जिससे देश, समाज और व्यक्ति को अनेक हानियाँ उठानी पड़ती हैं। समाज मनोविज्ञान द्वारा इन संघर्षों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैज्ञानिक ढंग से जाँच पड़ताल की जाती है और इनके निराकरण के लिये उपाय खोजे जाते हैं।

राजनैतिक जीवन मे मनोविज्ञान का उपयोग

(Use of Psychology in political life)

सामाजिक जीवन की तरह राजनैतिक जीवन में व्यावहारिक मनोविज्ञान का प्रयोग किया जाता है। प्रजातन्त्रिक देशों में निर्वाचन काल में विभिन्न राजनैतिक दल प्रचार (Propaganda) के विभिन्न साधनों द्वारा जनमत (Public opinion) को अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हैं। इसी प्रकार राज्य अपनी कोई कार्य प्रणाली को कार्यान्वित करने के लिये विभिन्न मनोविज्ञानिक साधनों का प्रयोग करता है। विभिन्न राजनैतिक मामलों के परिणामस्वरूप जो अन्तर्राष्ट्रीय तनाओं (International Tensions) की स्थिति आती है उसे शान्तिपूर्वक समाप्त करने में मनोविज्ञान सहायक सिद्ध हो रहा है।

[८] सैन्य कार्यकलापों में मनोविज्ञान का उपयोग

(Use of Psychology in military life)

वर्त्तमान समय में सैन्य कार्य कलापों में मनोविज्ञान के प्रयोग अत्यधिक मात्रा में होने लगे हैं। इसके लिए पृथक विषय सैन्य-मनोविज्ञान (Military-Psychology) का आविर्भाव हो गया है जिसके अन्तर्गत युद्ध की अनिवार्यता को मानते हुये अपनी शक्ति, वुद्धि तथा शत्रु के पराजित करने के उद्देश्यों को लेकर सैन्य कार्य कलापों में निम्न प्रकार से मनोविज्ञान का प्रयोग किया जाता है—(१) मनोवैज्ञानिक परीक्षणों द्वारा नवसैनिकों, कर्मचारियों तथा सैनिकों का चुनाव, (२) इन्हें इनके अनुकूल सैनिक कार्यों पर लगाना, (३) नवसैनिकों को सैन्य-जीवन के लिए अभ्यस्त करना, (४) नवसैनिकों, पुराने सैनिकों तथा अफसरों को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रशिक्षण (Training) तथा पुनर्शिक्षण (Re-training के लिए प्रशिक्षण विधियों एवं आवश्यक सामग्रियों का निर्माण करना, (५) सैनिकों की अभिवृत्तियों (Attitudes) तथा रुचियों (Interests) का अध्ययन करना, (६) प्रचार सामग्री का निर्माण तथा वितरण, (७) सेनाओं के विभिन्न पदों एवं क्रियाओं का कार्य-विश्लेषण तथा इन क्रियाओं को मनो-दैहिक (Psycho-Physiological) समस्याओं के अध्ययन तथा अनुसंधान में सहायता, (८) गुप्तचर-कार्य और गुप्तचर-प्रति-कार्य (Espionage and Counter-espionage) (९) युद्ध में मनोवैज्ञानिक क्षति (Psychological Casualties) को रोकना उसके कारणों की खोज करना और उपचार करना, (१०) युद्ध कार्य में लगे हुए सैनिकों की उत्साह शीलता (Morale) में अभिवृद्धि करना, (११) शत्रु को हतो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

त्साहित करने के लिये प्रचार द्वारा भयों, संदेहों तथा दुर्बलताओं की वृद्धि करना, (१२) युद्ध एवं युद्ध समाप्ति होने पर सेना के छुट्टी पाये हुए सैनिकों को शैक्षणिक, व्यावसायिक, शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दृष्टि से पुनः समाज में अभियोजन करने का अवसर देना ताकि वे सफल असैन्य जीवन (Civilized-Life) व्यतीत कर सकें।

विश्वशान्ति स्थापना में मनोविज्ञान का सहयोग

(Use of Psychology in Establishing World-Peace)

एक ओर सैन्य मनोविज्ञान युद्ध कलापों में सहायक सिद्ध होता है तो दूसरी ओर समाज मनोविज्ञान विश्व शांति के लिये युद्ध के कारणों, तथा शान्ति के उपायों का अध्ययन करता है। समाज मनोविज्ञान ने विश्वशान्ति के लिये निम्न उपाय प्रस्तुत किये हैं—[१] विश्वव्यापी आन्दोलन द्वारा राष्ट्रीयता की भावना (Nationalism) के स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना (Internationalism) को जाग्रत करना, [२] राष्ट्रों के पारस्परिक संघर्षों और मतभेदों को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर में सलाह मशबिरे एवं दूसरी विधियों के समाधान करने की व्यवस्था करना, [३] सामाजिक समूहों जैसे जाति वर्ण, धर्म आदि के पारस्परिक द्वेषों को शिक्षा, प्रचार और परस्पर सम्पर्क द्वारा दूर करने का प्रयास करना, [४] मानव संस्कृति की प्रगति के मार्ग में युद्ध द्वारा उपस्थित होने वाली बाधाओं एवं शान्ति द्वारा सम्भावित सुविधाओं की ओर विश्व के नागरिकों का ध्यान आकर्षित करने का प्रयास करना, [५] अन्तर्राष्ट्रीय नियोजन (International Planning) द्वारा सारे देशों की आर्थिक समस्याओं एवं भोजन कपड़े और समान सम्बन्धी आवश्यकताओं को सुलझाने का प्रयास करना ताकि अन्तर्देशीय आर्थिक विषमतायें तथा अभाव दूर हो सके। [६] जब तक विश्व में शान्ति, प्रेम तथा विश्वास का वातावरण उत्पन्न न होवे तब तक शक्तिहीन तथा छोटे देशों की सुरक्षा के प्रयत्न करना तथा आक्रमणशील देशों के द्वारा युद्ध छेड़ने की सम्भावनाओं को असम्भव बनाना।

[१०] अन्य क्षेत्रों में मनोविज्ञान का उपयोग

(Use of Psychology in the other fields)

उपर्युक्त क्षेत्रों में तो मनोविज्ञान का संगठित रूप से प्रयोग होता है परन्तु जीवन के ऐसे अन्य बहुत से क्षेत्र हैं जिनमें मनोविज्ञान का कम प्रयोग नहीं होता। लोग अपने से तथा परिवार, पड़ोस, समाज, व्यवसाय, वैवाहिक मित्र मण्डली इत्यादि के बीच एक दूसरे के मनोभावों व्यवहार प्रतिक्रियाओं तथा उनकी सीमाओं को समझते हुए एक दूसरे से व्यवस्थित होने तथा एक दूसरे की सुख सुविधा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बढ़ाने में समर्थ होते हैं। धर्म, मनोरञ्जन, कला इत्यादि के क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का पर्याप्त उपयोग होता है। साहित्यकार, कवि, राजनैतिक समाज सुधारक, व्याख्यानदाता इत्यादि सब मनोवैज्ञानिक ज्ञान से लाभ उठाते हैं। इस प्रकार जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ मनोविज्ञान का कुछ न कुछ उपयोग न होता हो।

उपसंहार (Conclusion)

वास्तव में जीवन का ऐसा क्षेत्र न होगा जहाँ पर कि मनोविज्ञान का उपयोग न हो परन्तु निम्न क्षेत्र तो ऐसे हैं जहाँ पर कि मनोविज्ञान का संगठित रूप से प्रयोग होता है। [१] बाल विकास, [२] शिक्षा, [३] मानसिक स्वास्थ्य, [४] अपराध निरोध तथा न्याय, [५] उद्योग और व्यापार, [६] सामाजिक जीवन, [७] राजनैतिक जीवन, [८] सैन्य कार्य कलाप, [९] विश्व शान्ति स्थापना तथा [१०] अन्य क्षेत्र। वास्तव में मनोविज्ञान का क्षेत्र दिन पर दिन बढ़ता ही जा रहा है। बर्ट के शब्दों में वर्त्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि **'मनोविज्ञान जीवन के इतने अधिक क्षेत्रों से सम्बन्धित है कि प्रत्येक क्षेत्र के सम्बन्ध में सुचारु रूप से प्रकाश डालना कठिन हो गया है।"**

"Psychology touches life at so many points that it is difficult to discuss each point, systematically.

—*H. E. Burt*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४

मनोविज्ञान की शाखायें
[Branches of Psycholgy]

प्रश्न संख्या—४

मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं को बताते हुए उनके विषय में स्पष्ट वर्णन कीजिए।

Discuss the various branches of Psychology.

भूमिका (Introduction)

एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का बीजारोपण हुये अभी शताब्दी भी पूरा नहीं हो पाई है कि यह अपनी विभिन्न शाखाओं सहित एक विस्तृत विज्ञान के रूप में विकसित हो गया है। इसका कारण यह है कि मनोविज्ञान मानव अनुभूति तथा व्यवहार का अध्ययन करता है और जहाँ-जहाँ मानव जीवन है वहाँ-वहाँ अनुभूति तथा व्यवहार अवश्य है। इस विस्तृत भूमि में सर्वत्र मानव जीवन व्याप्त है। अतः मनोविज्ञान का एक विज्ञान के रूप में विकसित होना स्वाभाविक है। मानव व्यवहार को विस्तार पूर्वक समझने के लिये यह आवश्यक है कि हम उसके विभिन्न पहलुओं का प्रथक-प्रथक अध्ययन करें। इसीलिये मनोविज्ञान के अन्तर्गत अनेक शाखाओं का विकास हो गया। अब प्रश्न उठता है कि आखिर मनोविज्ञान की कौन-कौन प्रमुख शाखायें हैं। यह समझने के लिए इस प्रश्न में हम मनोविज्ञान की विभिन्न शाखायें (Various Branches of Psycholgy) प्रस्तुत कर रहे हैं।

मनोविज्ञान की विभिन्न शाखायें
(Various Branches of Psychology)

[अ] मनोविज्ञान की शाखाओं का दो भागों में विभाजन

मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किया जा सकता है—

(१) **सैद्धान्तिक मनोविज्ञान** (Theoretical Psychology)—सैद्धान्तिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविज्ञान की वे शाखायें आती हैं जिनमें मानव अनुभूति तथा व्यवहार के सम्बन्व में नियमों और सिद्धान्तों की खोज की जाती है। इन शाखाओं का प्रमुख उद्देश्य होता है विभिन्न प्रयोगों और परीक्षणों द्वारा मानव अनुभूति तथा व्यवहार के मूल में काम करने वाले कारकों, नियमों तथा सिद्धान्तों की खोज करना जिससे हम मनुष्य के अभियोजनात्मक व्यवहार को अधिकाधिक समझ सकें।

(२) **व्यावहारिक मनोविज्ञान** (Applied Psychology)—व्यावहारिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत मनोविज्ञान की वे शाखायें आती हैं जिनके अन्तर्गत सैद्धान्तिक मनोविज्ञान की शाखाओं से जो मानव ,अनुभूति तथा व्यवहार के सम्बन्ध में कारकों, नियमों और सिद्धान्तों को खोजा गया है उनका मानव के व्यावहारिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में किस प्रकार प्रयोग किया जाय इसका अध्ययन होता है। स्पष्ट है कि व्यावहारिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत आने वाली शाखाओं का उद्देश्य मानव को मनोविज्ञान के ज्ञान से लाभान्वित करना है।

[ब] मनोविज्ञान की विभिन्न शाखाओं का तालिका द्वारा स्पष्टीकरण

मनोविज्ञान की शाखायें

(Branches of Psychology)

सैद्धान्तिक मनोविज्ञान (Theoretical Psychology)	**व्यावहारिक मनोविज्ञान** (Applied Psychology)
१. सामान्य मनोविज्ञान [General Psychology]	१. शिक्षा-मनोविज्ञान [Educational Psychology]
२. प्रयोगात्मक मनोविज्ञान [Experimental Psychology]	२. औद्योगिक मनोविज्ञान [Industrial Psychology]
३. पशुमनोविज्ञान : तुलनात्मक मनो० [Animal or Comparative Psychology]	३. व्यापार मनोविज्ञान [Commercial Psychology]
४. शारीरिक मनोविज्ञान [Physiological Psychology]	४. कानूनी मनोविज्ञान [Legal Psychology]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५. बाल मनोविज्ञान
[Child Psychology]
६. व्यक्ति या वैभिन्य मनोविज्ञान
[Individual or Differential Psychology]
७. समाज मनोविज्ञान
[Social Psychology]
८. असामान्य मनोविज्ञान
[Abnormal Psychology]
९. मनोविश्लेषण मनोविज्ञान
[Psycho-Analysis]
१०. मनोभौतिक विज्ञान
[Psycho-Physics]
११. विकासात्मक मनोविज्ञान
[Developmental Psychology]
१२. लोक मनोविज्ञान
[Folk Psychology]
१३. विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान
[Analytical Psychology]
१४. किशोर मनोविज्ञान
[Adolescent Psychology]
१५. परा मनोविज्ञान
[Para Psychology]

५. चिकित्सा मनोविज्ञान
[Psychiatry]
६. रोगोपचारी मनोविज्ञान
[Clinical Psychology]
७. सैन्य मनोविज्ञान
[Military Psychology]
८. निर्देशन मनोविज्ञान
[Guidance Psychology]

अब हम मनोविज्ञान की उपर्युक्त शाखाओं को अच्छी तरह समझने के लिये उन पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे ।

सैद्धान्तिक मनोविज्ञान
(Theoretical Psychology)

[१] सामान्य मनोविज्ञान (General Psychology)

सामान्य मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत मनोविज्ञान के मूलभूत सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है। इसका सम्बन्ध सामान्य व्यक्तियों (Normal Individuals) से है। वह इन सामान्य व्यक्तियों की सामान्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रियाओं, व्यवहारों और अनुभूतियों का अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसके अन्तर्गत संवेदना (Sensation), प्रत्यक्षीकरण (Perception), प्रेरणा (Motivation), संवेग (Emotion), सीखना (Learninig), स्मृति (Memory), कल्पना (Imagination), विचार (Thinking), व्यक्तित्व (Personality) इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। मनोविज्ञान की अन्य शाखाओं का समुचित अध्ययन करने के लिए सामान्य मनोविज्ञान के मूल सिद्धान्तों का अध्ययन आवश्यक है।

[२] प्रयोगात्मक मनोविज्ञान (Experimental Psychology)

सामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत आने वाली विषय सामग्री का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करने के लिये मनोविज्ञान की एक नवीन शाखा का अविर्भाव हुआ जिसे हम प्रयोगात्मक मनोविज्ञान कहते हैं। उन्नीसवी शताब्दी के प्रारम्भ तक सामान्य मनोविज्ञान दर्शनशास्त्र (Philosophy) का एक सहायक अंग था। किन्तु इसी शताब्दी में नवीन मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोगात्मक मनोविमान को जन्म देकर मनोविज्ञान को एक स्वतन्त्र विज्ञान बना दिया। सामान्य रूप से प्रयोगात्मक मनोविज्ञान वह विज्ञान है जो प्राणियों की क्रियाओं, अनुभवों तथा व्यवहारों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञान जिन विधियों (Methods) का प्रयोग करता है इनमें उसका दृष्टिकोण आत्मनिष्ठ (Subjective) न होकर वस्तुनिष्ठ (Objective) होता है। संक्षेप में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान को उसकी निम्नलिखित विशेषताओं में व्यक्त किया जा सकता है।

(१) यह विशेषरूप से सामान्य वयस्क व्यक्तियों (Normal Human Adult) की क्रियाओं तथा अनुभूतियों यथा संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, प्रेरणा, संवेग, सीखना, ध्यान, स्मरण, विस्मरण, कल्पना इत्यादि का अध्ययन प्रस्तुत करता है।

(२) यह नियन्त्रित अवस्थाओं में प्राणी प्रतिक्रियाओं, व्यवहारों, तथा अनुभूतियों का अध्ययन करता है।

(३) इसके अन्तर्गत वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए यन्त्रों का भी प्रयोग किया जाता है।

(४) यह सामग्रियों (Data) का गुणात्मक तथा परिणामात्मक बिश्लेषण करता है।

(५) परिणामस्वरूप प्रयोग के आधार पर जो निष्कर्ष प्राप्त होते हैं वे वैज्ञानिक होते हैं। इनमें विश्वसनीयता (Realibility) तथा प्रमाणिकता (Validity) पाई जाती है।

[३] पशु पालन—तुलनात्मक मनोविज्ञान
(Animal Psychology : Comparative Psychology)

चार्ल्स डार्विन (Charles Darwin) द्वारा प्रतिपादित विकासवाद के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिद्धान्त (Theory of Evolution) से प्रभावित होकर मनोवैज्ञानिक (Psychologists) तथा शरीर-वैज्ञानिक (Physiologists) पशुओं की क्रियाओं का अध्ययन करने के लिए उन्मुख हुए। पशु मनोविज्ञान यह अध्ययन करता है कि किस तरह अमीबा (Amoeba) से प्रारम्भ होकर मनुष्य तक क्रमानुसार मानसिक क्रियायें सरल से जटिल होती गयीं। यद्यपि मनोविज्ञान का प्रमुख विषय मनुष्य की क्रियाओं और अनुभूतियों का अध्ययन करना है किन्तु ये इतनी जटिल होती हैं कि उनका सीधे समुचित अध्ययन हो ही नहीं सकता। दूसरे मनुष्य के कुछ विशेष व्यवहार जानने के लिए हम मनुष्य पर सुविधापूर्वक प्रयोग भी तो नहीं कर सकते हैं। उदाहरण के लिए संवेगात्मक दशा में मनुष्य में जो आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन होते हैं उन सबका अध्ययन करने के लिए हम मनुष्य पर प्रयोग नहीं कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में हम पशुओं के व्यवहार का अध्ययन कर मनुष्यों के व्यवहार को समझने का प्रयास करते हैं। पैंवलव (Pavlov) थार्नडाइक (Thorndike) कोहलर (Kholer) इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने पशुओं में सीखने की क्रियाओं का अध्ययन करने के लिए अनेक प्रयोग किये जिससे पशु मनोविज्ञान के विकास में पर्याप्त सहायता मिली. स्पष्ट है कि पशु-मनोविज्ञान का दृष्टिकोण तुलनात्मक है। इसीलिए हम पशु मनोविज्ञान को कभी-कभी तुलनात्मक मनोविज्ञान (Comparative) कह देते हैं।

[४] शारीरिक मनोविज्ञान
(Physiological Psychology)

मनुष्य पुनःशारीरिक प्राणी (Psycho-physical animal) है। अत: उसकी मानसिक क्रियाओं को समुचित रूप से समझने के लिए उसकी इन शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन करना अति आवश्यक है जिनका विशेष प्रभाव मनुष्य के व्यवहार तथा चेतन में पड़ता है। स्नायुमण्डल (Nervous system), इन्द्रियाँ (Receptors) तथा प्रभावक (Effectors) ये मानव शरीर के ऐसे तीन अंग हैं जिन्हें कि हम मानसिक क्रियाओं के आधार कह सकते हैं। शारीरिक मनोविज्ञान प्रधान रूप से इन्हीं तीनों अंगों का अध्ययन करता है।

[५] बाल मनोविज्ञान
(Child Psychology)

बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो गर्भाधान से लेकर परिपक्वता तक बच्चों के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, प्रेरणात्मक, सामाजिक, नैतिक तथा भाषा सम्बन्धी विकास का अध्ययन करता है। मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन के अभियोजनात्मक व्यवहार को तभी समझा जा सकता है जबकि हम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसकी बाल्यावस्था का समुचित अध्ययन करलें। इसका कारण यह है कि बाल्यावस्था सम्पूर्ण जीवन की आधार शिला है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि मनुष्य के व्यक्तित्व तथा चरित्र का निर्माण बहुत कुछ बाल्यावस्था में ही हो जाता है। बालमनोमिज्ञान हमें यह बताता है कि बालकों के व्यक्तितत्व के विभिन्न पहलुओं के विकास में वंशानुक्रम तथा वातावरण कितनी सहायता पहुँचाते हैं? बालकों की योग्यताओं और क्षमताओं का मापन परीक्षणों द्वारा कैसे किया जा सकता है। परिवार, पड़ोस शिक्षालय तथा समुदाय बालकों के जीवन का संतुलित विकास कैसे कर सकते हैं इत्यादि।

[६] व्यक्ति मनोविज्ञान, वैभिन्न मनोविज्ञान

(Individual Psychology Differential Psychology)

व्यक्ति मनोविज्ञान व्यक्तियों में जो वैयक्तिक विभिन्नता (Individual Difference) पाई जाती है उसका वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है। हम देखते हैं कि कुछ व्यक्ति संवेगशील होते हैं, कुछ व्यक्ति विचार शील होते हैं तो कुछ व्यक्ति कर्मशील होते हैं। युंग ने व्यक्ति को दो प्रकारों (Types) में विभक्त किया है—अन्तर्मुखी प्रवृत्ति वाले (Introverts) तथा वहिर्मुखी प्रवृति वाले (Extroverts)। युंग महोदय ने इन दोनों प्रकारों का एक मध्यवर्ती प्रकार भी बताया है जिसे उन्होंने उभयमुखी प्रवृति वाले (Ambiverts) कहा है। इसी प्रकार बुद्धि, चरित्र, शारीरिक विशेषताओं, रुचियों, अभिवृत्तियों इत्यादि के आधार पर व्यक्तियों में अन्तर प्राप्त किये जा सकते हैं। व्यक्ति मनोविज्ञान इन सभी प्रकार के अन्तरों को जानने का प्रयास करता है। यह ज्ञान शैक्षणिक एवं व्यावसायिक निर्देशन (Educational and Vocational Guidance) में अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है। इन विभिन्नताओं को जानने के लिए विभिन्न प्रकार के परीक्षणों यथा बुद्धि परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, विशेष योग्यता परीक्षण, अभिरुचि परीक्षण, रुचि परीक्षण इत्यादि की सहायता ली जाती है। वर्तमान समय में इन परीक्षणों का महत्व बहुत बढ़ गया है।

[७] समाज मनोविज्ञान (Social Psychology)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक प्राणी होने के नाते वह प्रतिक्षण समाज के सम्पर्क में रहता है। अतः उसका समाज के विभिन्न व्यवितयों के साथ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। इस सम्बन्ध के परिणामस्वरूप वह दूसरे व्यक्तियों से प्रभावित होता है और स्वयं भी वह दूसरों को प्रभावित करता है। व्यक्ति का सम्बन्ध व्यक्तियों से ही नहीं एक विशेष समुदाय से भी होता है जिसमें वह रहता है। समाज मनोविज्ञान इस प्रकार के सम्बन्धों और उसके व्यक्ति पर पड़े प्रभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन करता है। इसके अतिरिक्त समाज-मनोविज्ञान एक समुदाय से दूसरे समुदाय के साथ जो सम्बन्ध होता है उसका भी अध्ययन करता है। इन सम्बन्धों के अतिरिक्त जनमत (Public Opinion), प्रचार (Propaganda), क्रान्ति, युद्ध, पूर्वाग्रह (Prejudice), सामाजिक संघर्ष इत्यादि समाज-मनोविज्ञान के प्रमुख अध्ययन विषय हैं।

[८] **असामान्य मनोविज्ञान** (Abnormal Psychology)

असामान्य मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो कि व्यवहारों तथा अनुभूतियों के असामान्य पक्ष का यथा भ्रम, विभ्रम, स्मृति भ्रंश, बोलने की भूल, स्वप्न, दिवा स्वप्न, निद्रा, सम्मोहन, मूर्छा, मानसिक रोगी जैसे उन्माद, भीतिरोग, विकृत, विश्वास, हठ, भ्रम, साइकोस्थनियां इत्यादि, बहु-व्यक्तित्व आदि का अध्ययन करती है। मनोविज्ञान की यह शाखा अग्रलिखित चार प्रश्नों के उत्तर देती है—मनुष्यों में पाई जाने वाली असामान्य मनोविज्ञान का विशेष सम्बन्ध चिकित्सा-शास्त्र (Medical Science) से है क्योंकि इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक-विक्षिप्त अवस्थाओं को दूर करने के लिए उपायों को ढूंढ़ता है।

[९] **मनोविश्लेषण विज्ञान** (Psycho-Analysis)

मनोविश्लेषण विज्ञान असामान्य मनोविज्ञान की ही एक शाखा है। इसको जन्म देने का श्रेय सिगमंड फ्रायड (Sigmund Freud) को प्राप्त हुआ। मनोविश्लेशण विज्ञान स्वप्न, दिवा स्वप्न, द्वेष व्यक्तित्व, लिखने में युक्तियां करना, भूलना, हास्य, विनोद, कला, अपराध, मानसिक रोगों इत्यादि का विश्लेषण कर उनके अचेतन कारणों का पता लगाता है। विभिन्न मनोविश्लेषणवादियों ने इस दिशा में अलग-अलग कारण बतलाये हैं। फ्रायड के अनुसार दबी हुई काम प्रवृत्ति (Libido) असामान्य व्यवहारों का कारण है। एडलर महोदय के अनुसार हीनता की ग्रन्थि (Inferiority Complex) उनका कारण है। युंग ने दबी हुई जीवन शक्ति (Will to Live) को असामान्य व्यवहार का कारण बतलाया। रिवर्स महोदय ने दबे हुए भय को असामान्य व्यवहार का कारण बतलाया।

[१०] **मनोभौतिक विज्ञान** (Psycho-physics)

मनोविज्ञान की यह शाखा मानसिक प्रक्रियाओं बिशेषतया संवेदनाओं एवं भौतिक उद्दीपनों (Physical Stimuli) के बीच परिणामस्वरूप सम्बन्धों (Quantitative Relations) का अध्ययन करती है। उदाहरणार्थ वेवर-फेशनर के नियम (Weber Fechner Law) के अन्तर्गत यह अध्ययन किया जाता है कि दो उद्दीपनों को अलग-अलग पहचानने के लिए उनमें कितना कम से कम अन्तर होना चाहिए। यह नियम हमें यह बताता है कि एक निश्चित सीमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तक उत्तेजना (यथा प्रकाश) ज्यों-ज्यों प्रबल होती जाती है, संवेदना (यथा प्रकाश की संवेदना) भी प्रवल होती जाती है। मनो-भौतिक विज्ञान न केवल मानसिक प्रक्रियाओं का शारीरिक प्रक्रियाओं के सम्बन्ध का अध्ययन करता है बल्कि वह वाह्य वस्तुओं से उनके सम्बन्ध का भी अध्ययन करता है।

[११] विकासात्मक मनोविज्ञान (Developmental Psychology)

विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत व्यवहार तथा मानसिक प्रक्रियाओं का जिस क्रम में विकास होता है उसी क्रम में अध्ययन किया जाता है तथा उनके कारणों का पता लगाया जाता है और उनके भावी स्वरूप के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जाती है। विभिन्न व्यक्तियों के व्यवहार तथा मानसिक प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके उनके अन्तरों तथा उनके कारणों को ज्ञात किया जाता है। इसके साथ-साथ विकास के क्रम में विभिन्न परिवर्तनों का अध्ययन कर उनके नियन्त्रण के उपायों की खोज की जाती है।

[१२] लोक मनोविज्ञान (Folk Psychology)

लोक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किसी भी देश के विभिन्न आदिवासियों के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, अंधविश्वासों (Superstitions), पौराणिक कथाओं (Mythologies), कला, साहित्य, संगीत, धर्म इत्यादि में निहित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का अध्ययन किया जाता है तथा आधुनिक समाज से उनकी तुलना की जाती है। इनके अतिरिक्त इनके अन्तर्गत विभिन्न समाजों का मानसिक विश्लेषण करके उनकी विलक्षणताओं को समझने का प्रयास किया जाता है। इस अध्ययन में सामाजिक मानव-शास्त्र (Social Anthropology) से विशेष सहायता ली जाती है।

[१३] विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान (Analytical Psychology)

मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत अन्तर्दर्शन (Introspection), निरीक्षण (Observation) तथा प्रयोग द्वारा मनुष्य की स्वाभाविक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है तथा जटिल प्रक्रियाओं का विश्लेषण करके उनके विभिन्न अंगों को अलग अलग किया जाता है। विश्लेषणात्मक 'मनोविज्ञान से ही सम्बन्धित उत्पत्ति मूलक मनोविज्ञान (Genetic Psychology) है जिसके अन्तर्गत व्यक्ति तथा जाति की उत्पत्ति तथा उनके क्रमिक विकास का अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत पशु बालक किशोर, प्रौढ़, वृद्धि इत्यादि सभी का अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक विस्तृत शाखा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[१४] **किशोर मनोविज्ञान** (Adolescent Psychology)

मनोविज्ञान की यह शाखा किशोर व्यक्ति (१२ से २१ वर्ष की आयु तक) के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विकास का अध्ययन करती है। मनुष्य के जीवन में किशोरावस्था (Adolescence) का बहुत ही महत्व है क्योंकि यह ही एक ऐसी अवस्था है, जिसमें व्यक्ति प्रौढ़ जीवन की तैयारी करता है। इस अवस्था में मनुष्य में क्रान्तकारी परिवर्तन होते हैं। इसीलिये स्टैनली हाल ने लिखा है "**किशोरावस्था बड़े बल, एवं तनाव, तूफान एवं विरोध की अवस्था है।**" * अतः यदि इस अवस्था में उसे सही मार्ग प्रदर्शन न मिला तो वह गलत रास्ते में भटक सकता है। किशोर मनोविज्ञान किशोर तथा किशोरियों के विभिन्न परिवर्तन, उनकी समस्याओं तथा आवश्यकताओं का अध्ययन कर उनके निर्देशन के लिये ज्ञान प्रस्तुत करता है।

[१५] **परा मनोविज्ञान** (Para Psychology)

परा-मनोविज्ञान मनुष्यों की अलौकिक घटनाओं का अध्ययन करता है। भारतीय शास्त्रों में इस प्रकार की अनेक घटनाओं का उल्लेख हुआ है किन्तु उनका वैज्ञानिक ढंग से अभी तक अध्ययन नहीं किया गया। कुछ वर्षों पूर्व से मनोवैज्ञानिकों की इस ओर रुचि बढ़ रही है। इस प्रकार परा-मनोविज्ञान मनोविज्ञान की एक नवीनतम शाखा है। अलौकिक व्यवहारों के अन्तर्गत अग्रलिखित घटनाओं का समावेश होता है—मन वार्ता (Telepathy), आत्म-वार्ता (Spirit Communication), अद्भुत-प्रत्यक्षीकरण (Extra-Sensory perception), स्फटिक अवलोकन (Crystal gazing) इत्यादि।

व्यवहारिक मनोविज्ञान
(Applied Psychology)

[१] **शिक्षा मनोविज्ञान** (Educational Psychology)

शिक्षा का उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का सर्वाङ्गीण विकास करना है। किन्तु यह विकास तभी सम्भव है जबकि बालक की क्रियाओं, आवश्यकताओं, समस्याओं तथा योग्यताओं का अध्ययन मनोवैज्ञानिक ढंग से किया जाय और मनोवैज्ञानिक विधि द्वारा उनको शिक्षा दी जाय। शिक्षा-मनोविज्ञान इन सभी बातों का अध्ययन करता है और ऐसी मनोवैज्ञानिक विधि ढूंढ़ता है जिसके द्वारा अध्यापन करने से बालकों को शिक्षा प्राप्त करने में अधिक से अविक आसानी हो

---

*"Adolescence is a period of great stress and strain, storm and strife." —*Stanley Hall*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रौर वे ग्रधिक से ग्रधिक रुचि लें। सक्षेप में शिक्षा मनोविज्ञान व्यावहारिक मनोविज्ञान की वह शाखा है जो कि शिक्षा प्रक्रिया को सफल बनाने के लिये व्यक्ति का ग्रध्ययन शिक्षा-सम्बन्धी वातावरण में करता है।

[२] ग्रौद्योगिक मनोविज्ञान (Industrial Psychology)

मनोविज्ञान के ज्ञान को उद्योगों को सफल बनाने में प्रयोग करने वाली शाखा ग्रौद्योगिक मनोविज्ञान कहलाती है। ग्रौद्योगिक मनोविज्ञान उद्योगों में लगे कारीगरों की क्षमताग्रों, ग्रावश्यकताग्रों, रुचियों ग्रौर समस्याग्रों का ग्रध्ययन कर ऐसे ज्ञान को प्रस्तुत करता है जिससे वे काम करने में ग्रधिकाधिक रुचि लें ग्रौर जिससे उत्पादन में वृद्धि हो ताकि कारीगर व मजदूर तथा उद्योगपति दोनों लाभान्वित हों। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये ग्रौद्योगिक मनोविज्ञान के ग्रन्तर्गत ग्रग्रलिखित बातों का ग्रध्ययन किया जाता है—(१) काम करने की दशायें (Working Conditions), (२) थकावट तथा विश्राम, (३) मजदूरी की विभिन्न विधियाँ, (४) हड़ताल, (Strike), तालाबन्दी (Lock-out), (६) दुर्घटना (Accident), (७) व्यावसायिक चुनाव, (८) कार्य-कुशलता, (९) लगातार एक प्रकार का कार्य करते रहने के कारण उत्पन्न एकरसता (Monotony)।

[३] व्यापार मनोविज्ञान (Commercial Psychology)

व्यापार मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मनोविज्ञान के सामान्य सिद्धान्तों को व्यापार की व्यावहारिक समस्याग्रों पर लागू करता है। वह विक्रय कला को ग्रधिकाधिक सफल बनाने के लिये उपायों या साधनों की खोज करता है ग्रौर उनको लागू करने के तरीके प्रस्तुत करता है। यह विज्ञापन प्रचार ग्रादि के लिये मनौवैज्ञानिक पद्धतियाँ प्रस्तुत करता है।

[४] कानूनी मनोविज्ञान (Legal Psychology)

कानूनी मनोविज्ञान, मनोविज्ञान के सामान्य सिद्धान्तों तथा नियमों को कानूनी व्यवसाय पर लागू करता है। इसके ग्रन्तर्गत न्यायाधीशों, वकीलों तथा गवाहों के मानसिक लक्षणों का ग्रध्ययन किया जाता है। विभिन्न मनोवैज्ञानिक विधियों द्वारा यह जानने का प्रयत्न किया जाता है कि व्यक्ति ने ग्रपराध किया है ग्रथवा नहीं। मनोविज्ञान की इस शाखा का सम्बन्ध लक्ष्य के मनोविज्ञान, ग्रपराधियों के मनोविज्ञान तथा हस्तलेखों के मनोविज्ञान से है।

[५] चिकित्सा मनोविज्ञान (Phychiatry)

चिकित्सा मनोविज्ञान मानसिक रोगों तथा स्नायुमण्डल की क्रियाग्रों की उलझनों के कारण स्पष्ट करता है ग्रौर इन रोगों तथा उलझनों को दूर करने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिये मनोवैज्ञानिक विधियों यथा निर्देश (Suggestion), सम्मोहन (Hyphno-tism), विश्राम चिकित्सा (Rest-Cure) पुर्नशिक्षण (Re-education), स्वच्छन्द वार्तालाप (Free-talk), व्यावसायिक चिकित्सा (Occupational Therapy) को सुझाता है।

[६] रोगोपचारी मनोविज्ञान (Clinical Psychology)

इसके अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों तथा नियमों को शिक्षा तथा शिक्षा-लय सम्बन्धी समस्याओं पर लागू किया जाता है। हीनता की भावना, बाल-अपराध, मानसिक तथा संवेदन सम्बन्धी दोष रोगात्मक रक्षा का अभाव, बालकों के व्यक्तित्व का अपने माता-पिता, शिक्षकों या मित्रों के व्यक्तियों से संघर्ष इत्यादि समस्याओं के मनोवैज्ञानिक कारणों को समझकर उन्हें सुलझाने का प्रयास किया जाता है।

[७] सैन्य मनोविज्ञान (Military Psychology)

सैन्य मनोविज्ञान मनोवैज्ञान सिद्धान्तों तथा नियमों को सैन्य जीवन में लागू करता है। सेना को लड़ने के लिये प्रोत्साहित करना, दुश्मनों की मानसिक स्थिति को समझना, युद्ध की पद्धतियों को सेना के मनोनुकूल बनाना इत्यादि बातों का सैन्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत अध्ययन किया जाता है।

[८] निर्देशन मनोविज्ञान (Guidance Psychology)

मनोविज्ञान की इस शाखा के अन्तर्गत मनोवैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धान्तों के आधार पर व्यक्ति को शैक्षिक (Educational) तथा व्यावसायिक (Vo-cational) निर्देशन प्रदान किया जाता है ताकि निर्देशन मनोवैज्ञानिक (Guid-ance Psychologists) बालकों या व्यक्तियों से व्यक्तिगत सम्पर्क (Personal Contact) स्थापित कर उनकी आवश्यकताओं, योग्यताओं, अभिवृत्तियों तथा रुचियों का पता लगाते हैं और उनके अनुकूल उन्हें शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में निर्देशन मनोविज्ञान का महत्व दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने मनोविज्ञान की शाखाओं को दो भागों में विभाजित किया—प्रथम सैद्धान्तिक मनोविज्ञान तथा द्वितीय व्यावहारिक मनोविज्ञान। इन दोनों भागों के अन्तर्गत आने वाली **मनोविज्ञान की शाखायें** अग्रलिखित हैं—[अ] **सैद्धान्तिक मनोविज्ञान**—(१) सामान्य मनोविज्ञान, (२) प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, (३) पशु मनोविज्ञान या तुलनात्मक मनोविज्ञान, (४) शारीरिक मनोविज्ञान,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[५] बाल मनोविज्ञान, [६] व्यक्ति मनोविज्ञान या वैभिन्य मनोविज्ञान, [७] समाज मनोविज्ञान, [८] असामान्य मनोविज्ञान, [९] मनोविश्लेषण विज्ञान, [१०] मनोविज्ञान, [११] विकासात्मक मनोविज्ञान, [१२] लोक मनोविज्ञान,— [१३] विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान, [१४] किशोर मनोविज्ञान एवं [१५] परा मनोविज्ञान, [ब] व्यवहारिक मनोविज्ञान—[१] शिक्षा मनोविज्ञान, [२] औद्योगिक मनोविज्ञान, [४] कानूनी मनोविज्ञान, [५] चिकित्सा मनोविज्ञान, [६] रोगोपचारी मनोविज्ञान, [७] सैन्य मनोविज्ञान एवं [८] निदेशन मनोविज्ञान। मनोविज्ञान की उपर्युक्त शाखाओं से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान एक व्यापक विज्ञान है। जीवन के प्रत्येक पहलू को समझने तथा लाभ प्राप्त करने में मनोविज्ञान अत्यधिक सहायक सिद्ध होता है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५

मनोविज्ञान एक विज्ञान है
[Psychology is a Science]

प्रश्न संख्या—५

क्या मनोविज्ञान एक विज्ञान है ? यदि हां, तो यह विज्ञान कैसे है ?

Is Psychology a science ? If yes, how is it science ?

भूमिका (Introduction)

यह निर्विवाद सत्य है कि मनोविज्ञान एक विज्ञान (Science) है। किन्तु फिर भी हमारे सम्मुख यह प्रश्न उठता है कि मनोविज्ञान सचमुच विज्ञान है ? यदि यह विज्ञान है तो इसका प्रमाण क्या है। यह समझने के पूर्व कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है हम यह समझ लें कि आखिर विज्ञान क्या है ? (What is Science ?) प्राय: लोग विज्ञान का तात्पर्य कुछ विशेष प्रकार के विषयों जैसे रसायनशास्त्र, भौतिकशास्त्र, जीवशास्त्र इत्यादि से लगाते हैं। किन्तु किसी निश्चित विषय-सामग्री के आधार पर किसी विषय को विज्ञान कहना बिलकुल गलत है। वास्तविकता यह है कि जिस विषय की विषय-सामग्री का क्रमबद्ध या नियमबद्ध (Systematic) रूप से अध्ययन किया जाता है उस विषय को विज्ञान कहते हैं। इस प्रकार विज्ञान कोई विषय विशेष न होकर वैज्ञानिक पद्धति (Scientific Method) का नाम है। जैसा कि बीसन्ज तथा बीसन्ज (Biesanz and Biesanz) ने विज्ञान की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये लिखा है **"यह पद्धति है न कि विषय सामग्री जो विज्ञान की कसौटी है।"**† ग्रीन के अनुसार "विज्ञान

---

†It is approach rather than content that is the test of science.
—Biesanz and Biesanz

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनुसन्धान की एक पद्धति है।"* जे० एफ० क्यूबर ने विज्ञान को परिभाषित करते हुए लिखा है "विज्ञान पर्यवेक्षण तथा पुनःपर्यवेक्षण की क्रिया के द्वारा संसार की समानताओं की खोज करने की एक पद्धति है जिसके परिणाम सिद्धान्तों के रूप में प्रकट किये जाते हैं और ज्ञान के क्षेत्र में व्यवस्थित तथा संगठित किये जाते हैं।† इस प्रकार हम कह सकते हैं कि **विज्ञान कोई विषय सामग्री नहीं है बल्कि जिस विषय या विषय-सामग्री का वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन होता है उसे विज्ञान कहते हैं।** अब हम इस प्रश्न में यह अच्छी तरह समझने के लिए कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है पहिले यह बतायेंगे कि वैज्ञानिक पद्धति क्या है? (What is Scientific Method) तत्पश्चात विज्ञान के आवश्यक तत्व (Essential Elements of Psychology) बतायेंगे और अन्त में इन तत्वों के आधार पर सिद्ध करेंगे कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है (Psychology is a Science)।

वैज्ञानिक पद्धति क्या है?
(What is Scientific Method)

[अ] वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ (Meaning of Scientific Method)

इसके पूर्व कि हम वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ प्रस्तुत करें हमें यह जान लेना चाहिए कि पद्धति का क्या अभिप्राय है? पद्धति का तात्पर्य होता है—निश्चित व्यवस्था के अनुसार किसी भी विषय सामग्री का अध्ययन करना। पद्धति के अन्तर्गत नाना प्रकार की प्रविधियों और प्रणालियों का समावेश होता है। इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुए हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक पद्धति का तात्पर्य उस पद्धति से है जिसे कि प्रयोग सिद्ध ज्ञान प्राप्त करने के लिए विज्ञान अपनी प्रविधियों (Techniques), प्रणालियों (Procedures), उपकरणों (Tools), को प्रयोग करने में करता है। मार्टिनडेल तथा मौनेकसी ने वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ प्रस्तुत करते हुये ठीक ही लिखा है, (वैज्ञानिक) **पद्धति से हमारा अभिप्राय उस तरीके से होता है जिसे कि विज्ञान प्रयोग सिद्ध ज्ञान की प्राप्ति के लिए अपनी**

---

*"Science is a way of investigation." —*Green*

†"The science is the method of discovery of the uniformities in the universe through the process of observation and re-observation the result of which eventually comes to be stated in principles and arranged and organized into the field of knowledge."

—*J. F. Cuber*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आधारभूत प्रणालियों को व्यवहार करने में तथा अपने उपकरणों एवं प्रविधियों के प्रयोग करने में करता है।"

"By (Scientific) 'method' we mean the manners in which science conducts its basic procedures and employs its tools and techniques in the attainment of emperical knowledge."

—*Martindale and Monachesi*

[ब] वैज्ञानिक पद्धति के प्रमुख स्तर

(Important Steps of Scientific Method)

ऊपर हमने वैज्ञानिक पद्धति का अर्थ प्रस्तुत किया। अब हम यह बतलायेंगे कि वैज्ञानिक पद्धति को किन-किन स्तरों (Steps) से गुजरना पड़ता है जिनसे कि वह पूर्णता को प्राप्त करती है। इसके प्रमुख स्तर निम्नलिखित हैं:—

(१) **उपकल्पना का निर्माण** (Making a Hypothesis) :—वैज्ञानिक पद्धति का सबसे पहला स्तर है – उपकल्पना का निर्माण करना। उपकल्पना पूर्व अनुभव पर आधारित एक ऐसा विचार होता है जिसके सम्बन्ध में यह निश्चय रूप से नहीं कहा जा सकता है कि यह पूर्ण सत्य है। बल्कि उसकी सत्यता के थोड़े बहुत प्रमाण अवश्य मिलते हैं। अनुसन्धानकर्ता अपने पूर्व अनुभव के आधार पर किसी तथ्य को अध्ययन के लिए प्रस्तुत करता है तत्पश्चात् वह उसकी सत्यता के लिये आगे बढ़ता है। लुण्डबर्ग ने कल्पना की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये लिखा है, **"पिछले अनुभवों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से स्वीकृत कल्पना जो कि एक परिस्थिति में सम्भावित महत्वपूर्ण तत्व है एक उपकल्पना है।"**

"This is all that working hypothesis is a clearly recognized assumption based on previous experience, of what are probably significant factors in a situation."

—*Lundberg.*

(२) **यन्त्र तथा साधन** (Apparatus or Means) :—जब अनुसन्धान-कर्ता किसी उपकल्पना का निर्माण कर लेता है तो उसे सत्य सिद्ध करने को तथा आगे अध्ययन जारी रखने के लिये आवश्यक यन्त्रों अथवा साधनों को चुनता है।

(३) **अवलोकन** (Observation) :—यन्त्रों अथवा साधनों को चुन लेने के पश्चात् उपस्थित तथ्यों का अवलोकन तथा पर्यवेक्षण किया जाता है। अवलोकन के लिए मानव इन्द्रियों को यथाशक्ति प्रयोग करने का प्रयास किया जाता है ताकि वह तथ्यात्मक और निष्पक्ष हो।

(४) **अवलोकन को लिखना** (Recording) :—मानव इन्द्रियाँ जो कुछ अवलोकन करती हैं उसे ज्यों का त्यों लिख लिया जाता है। लिखने में पूर्ण सावधानी बर्ती जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) वर्गीकरण (Classification) :—अवलोकन को लिखने के उपरान्त एकत्रित विषय-सामग्री का वर्गीकरण किया जाता है जिससे कि असम्बन्धित तथ्यों के ढेर को वैज्ञानिक रूप प्राप्त हो जाता है। दूसरे शब्दों में वर्गीकरण द्वारा विषय-सामिग्री में बिखरे हुये प्रतिमान स्पष्ट कर लिए जाते हैं।

(६) सामान्यीकरण (Generalization):—वैज्ञानिक पद्धति का अन्तिम स्तर है—स्वीकृत तथ्यों (Data) द्वारा सामान्य-नियम निर्धारित करना। यदि उपकल्पना और उपकल्पना की सत्यता सिद्ध करने वाला यह सामान्य नियम समान होता है तो उपकल्पना को सत्य समझ लिया जाता है अर्थात् उसे वैज्ञानिक रूप प्रदान कर दिया जाता है। इस प्रकार वैज्ञानिक पद्धति का सबसे पहला स्तर है उपकल्पना का निर्माण करना और अन्तिम स्तर है सामान्यीकरण अर्थात् उपकल्पना को वैज्ञानिक सिद्धान्त के रूप में स्वीकार करना। वैज्ञानिक सिद्धान्त की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये आर० एम० मैकाइवर ने लिखा है, **ऐसे सिद्धान्त का दूसरा नाम सावधानी पूर्वक वर्णित एवं नियत रूप से आवर्तक घटनाओं का अनुक्रम है।"**

"Such a law is simply another name for a carefully described and uniformly recurring sequence of conditions." —*R. M. Maciver.*

[स] वैज्ञानिक प्रवृत्ति अथवा धारणा
(Scientific Attitude or Spirit)

ऊपर हमने वैज्ञानिक पद्धति के विभिन्न स्तर प्रस्तुत किये परन्तु इसका तात्पर्य यह न लगाना चाहिए कि यदि कोई अनुसंधानकर्ता इन स्तरों से गुजरते हुये किसी विषय सामग्री का अध्ययन करेगा तो वह वैज्ञानिक पद्धति द्वारा अध्ययन समझा जायगा। वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग करने के लिए अनुसंधानकर्ता के पास एक चीज और होना चाहिए वह है—वैज्ञानिक प्रकृति अथवा भावना (Scientific Attitude or Spirit) जिसके अभाव में वैज्ञानिक पद्धति निर्जीव एवं आत्म-हीन रहती है। वैज्ञानिक प्रवृत्ति अथवा भावना रखने वाले व्यक्ति में अग्रलिखित विशेषतायें होती हैं-(१) जिज्ञासा (Curiosity), (२) तटस्थता (Objectivity), (३) साहस (Courage), (४) धैर्य (Patience), (५) संदिग्धता (Scepticism), (६) कठोर परिश्रम (Hard Labour), (७) मितव्ययिता (Parsimony), तथा रचनात्मक कल्पना (Creative Imagination)।

विज्ञान के आवश्यक तत्व
(The Essential Elements of Science)

भूमिका में हमने स्पष्ट किया था कि जिस विषय या विषय सामग्री का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैज्ञानिक पद्धति द्वारा अध्ययन किया जाय, उसे विज्ञान कहते हैं। वैज्ञानिक पद्धति के अतिरिक्त विज्ञान के कुछ अन्य तत्व या विशेषतायें हैं जिनके आधार पर हम किसी विषय को पूर्णरूप से विज्ञान की संज्ञा से सुशोभित कर सकते हैं। विज्ञान के ये तत्व या विशेषतायें निम्नलिखित हैं:

(१) **वैज्ञानिक पद्धति** (Scientific Method) :—वैज्ञानिक पद्धति क्या है, इस सम्बन्ध में हम ऊपर प्रकाश डाल चुके हैं।

(२) **तथ्यात्मक** (Factual) :—विज्ञान वास्तविक तथ्यों की खोज कर उनका अध्ययन करता है। विज्ञान का आदर्श तथा नैतिकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह तो जो वस्तु जिस रूप में अपना अस्तित्व रखती है, उसी रूप में उसका अध्ययन करता है। संक्षेप में विज्ञान 'क्या है' (What is), का अध्ययन करता है और 'क्या होना चाहिये' इससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता है।

(३) **सार्वभौमिक** (Universal) :—विज्ञान के जो भी नियम व सिद्धान्त होते हैं वे सार्वभौमिक होते हैं। दूसरे शब्दों में विज्ञान के नियमों व सिद्धान्तों की किसी देश व काल में परीक्षा क्यों न की जाय वे सर्वदा खरे उतरते हैं। इस प्रकार सार्वभौमिकता (Universality) विज्ञान का आवश्यक तत्व है।

(४) **प्रमाणिक** (Varifiable) :—वैज्ञानिक नियम व सिद्धान्त प्रमाणिक हुआ करते हैं। इसके नियम व सिद्धान्त किसी समय भी और किसी के भी द्वारा प्रमाणित किये जा सकते हैं। संक्षेप में वैज्ञानिक नियमों को चाहें कितनी बार और चाहे किसी के द्वारा जांच की जाय वे सदैव सत्य सिद्ध होते हैं।

(५) **कार्य-कारण सम्बन्धों की खोज** (Discovery of Cause-effect Relationships):—विज्ञान अपनी विषय सामग्री में, कार्य कारण में सम्बन्धों की खोज करता है। दूसरे शब्दों में विज्ञान 'क्या है' का वर्णन करके चुपचाप नहीं हो जाता है वरन् वह 'कैसे है' का भी उत्तर प्राप्त करने का प्रयास करता है। कार्य-कारण सम्बन्धों की खोज कर विज्ञान सार्वभौमिक तथा प्रमाणिक नियम प्रस्तुत करने में समर्थ होता है। इस प्रकार **'कार्य-कारणवाद'** (Causality) में विश्वास पर ही विज्ञान की नींव टिकी होती है।

(६) **भविष्यवाणी** (Prediction) :—विज्ञान अपनी विषय-सामग्री की छान-बीन कर सार्वभौमिक तथा प्रमाणिक नियम प्रस्तुत करता है और इन्हीं सार्वभौमिक तथा प्रमाणिक नियमों के आधार पर भविष्यवाणी (Prediction) करता है। दूसरे शब्दों में विज्ञान 'क्या है'? का उत्तर प्राप्त कर 'क्या होगा' का उत्तर भी प्रदान करता है। वह बतलाता है कि अमुक क्षेत्र में अमुक बात होनी है। संक्षेप में विज्ञान भविष्यवाणी कर सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनोविज्ञान एक विज्ञान है
(Psychology is a Science)

उपर्युक्त शब्दों में हमने विस्तार पूर्वक यह वतलाने की चेष्टा की कि विज्ञान क्या है। अब हम सिद्ध करने के लिए कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है यह देखेंगे कि किस प्रकार मनोविज्ञान में उपर्युक्त वर्णित विज्ञान के समस्त तत्व पाये जाते हैं।

[१] मनोविज्ञान वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता है

मनोविज्ञान अपनी विषय-सामग्री के अध्ययन में जिन पद्धतियों का प्रयोग करता है वे प्राय: घैज्ञानिक होती । इन पद्धतियों में प्रयोगात्मक पद्धति (Experimental Method) जिसका मनोविज्ञान की सभी शाखाओं में अधिकाधिक प्रयोग किया जाता है पूर्ण वैज्ञानिक है। इस पद्धति ने ही मनोविज्ञान को पूर्ण विज्ञान बना दिया है। प्रयोगात्मक पद्धति में सबसे पहिले विषय से सम्बन्धित कोई **'उपकल्पना'** (Hypothesis) निर्मित कर ली जाती है जिस पर कि हम प्रयोग प्रारम्भ करते हैं। इसके उपरान्त प्रयोग में प्रयुक्त होने वाले **'यन्त्रों अथवा साधनों'** (Apparatus or M(ans) को चुन लिया जाता है। इसके उपरान्त प्रयोग करने में प्रयोगकर्ता जो कुछ भी सूक्ष्म **अवलोकन** (Observation) करता है उसको उसी रूप में क्रमवद्ध रूप से लिख (Recording) लेता है। इ।ना करने के उपरान्त लिखित विषय सामग्री का व्यवस्थित रूप से **वर्गीकरण** (Classification) कर लिया जाता है। अन्त में **स्वीकृत तथ्यों** (Data) के आधार पर सामान्य नियम (General Law) निकाला जाता है। यदि उपकल्पना तथा सामान्य नियम में समानता होती है तो उपकल्पना को सिद्धान्त का रूप दे दिया जाता है। इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान की पद्धतियों के प्रयोग में .मनोविज्ञान सदैव **'वैज्ञानिक प्रकृति या भावना'** (Scientific Attitude or Sprit) रखता है जो कि विज्ञान की विषय-सामग्री के अध्ययन के लिए आवश्यक है। अत: स्पष्ट है कि मनोविज्ञान अपनी विषय-सामग्री के अध्ययन में वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता है।

[२] मनोविज्ञान तथ्यात्मक है अर्थात् 'क्या है' का वर्णन करता है

मनोविज्ञान मानव व्यवहार का तथ्यात्मक (Factual) अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान मानव व्यवहार 'क्या है' 'क्यों है' और 'कैसे है' का वर्णन करता है। वह नियामक विज्ञान के समान इस बात पर रुचि नहीं रखता कि व्यवहार 'कैसा होना चाहिये'। मनोविज्ञान केवल व्यवहार का वर्णन करता है एवं उसके सामान्य नियमों एवं सिद्धान्तों की खोज करता है। संक्षेप में मनोविज्ञान का सम्बन्ध मूल्यों (Values) से न होकर तथ्यों (Facts) से होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[३] मनोविज्ञान के नियम तथा सिद्धान्त प्रमाणिक होते हैं

मनोविज्ञान जिन नियमों एवं सिद्धान्तों को प्रतिपादित करता है वे यदि परिस्थितियों में परिवर्तन न हो तो सभी देश व काल में एक से होते हैं। ऐसा नहीं है कि एक देश या काल के व्यक्ति के व्यवहार के लिये जो नियम तथा सिद्धान्त लागू होते हों वे दूसरे देश या काल के व्यक्ति पर लागू न होते हों। उदाहरण के लिये मनोविज्ञान का यह नियम सभी जगह लागू होगा कि जब भी किसी व्यक्ति को संवेगात्मक अनुभूति होगी तब उसमें शारीरिक परिवर्तन अवश्य होंगे। संक्षेप में मनोविज्ञान के नियम और सिद्धान्त सार्वभौमिक होते हैं।

[४] मनोविज्ञान के नियम तथा सिद्धान्त प्रमाणिक होते हैं

मनोविज्ञान के अन्तर्गत जो भी नियम और सिद्धान्त निकाले जाते हैं वे परीक्षण (Verification) तथा पुन: परीक्षण (Re-verification) करने पर सदैव सत्य सिद्ध होते हैं। उनकी प्रमाणकिता की कोई भी कुशल व्यक्ति किसी समय जांच कर सकता है। उदाहरण के लिए जहाँ कहीं कोई व्यक्ति मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है वहाँ उसकी इच्छाओं (Desires) का दमन (Repression) अवश्य हुआ है। जहाँ-जहाँ भी मानसिक चिकित्सकों ने इस नियम का परीक्षण तथा पुन: परीक्षण किया है वहाँ यह सत्य सिद्ध हुआ है। इस प्रकार मनोविज्ञान के समस्त नियम तथा सिद्धान्त प्रमाणिक होते हैं।

[५] मनोविज्ञान कार्य-करण सम्बन्धों की व्याख्या करता है

मनोविज्ञान मानव अनुभूति तथा व्यवहार को समझने में कार्य-कारण सम्बन्धों (Cause-effect Relationships) की व्याख्या करता है। दूसरे शब्दों में वह केवल इस बात का अध्ययन नहीं करता कि व्यवहार 'क्या है' बल्कि इस बात का भी अध्ययन करता है कि व्यवहार 'क्यों' व 'कैसे' होता है। उदाहरण के लिए मनोवैज्ञानिक केवल मानसिक रोगी के व्यवहार का अध्ययन नहीं करता बल्कि इस बात को का भी प्रयास करता है कि व्यक्ति मानसिक रोग से कैसे ग्रस्त हुआ है।

[८] मनोविज्ञान भविष्यवाणी कर सकता है

मनोविज्ञान मानव व्यवहार के अध्ययन में कार्य-कारण सम्बन्धों की खोज करता है जिसके परिणामस्वरूप वह मानव व्यवहार के सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर सकता है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान 'क्या है,' 'क्यों हैं' तथा 'कैसे है' के आधार पर 'क्या होगा' के सम्बन्ध में भविष्यवाणी करने की सामर्थ्य रखता है। उसकी यह भविष्यवाणी सही भी सिद्ध होगी। हम देखते हैं कि वर्तमान समय में प्रगतिशील देशों में सरकारी नौकरियों में नियुक्तियां करने में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के आधार पर जो भविष्यवाणियाँ की गई हैं उनका साहारा लिया जाता है। मनोवैज्ञानिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षणों के आधार पर अब यह जानना सम्भव हो गया है कि अमुक व्यक्ति भविष्य में सफल शिक्षक हो सकता है, अमुक व्यक्ति सफल शासक सिद्ध हो सकता है, अमुक व्यक्ति सेना में कुशलता प्राप्त कर सकता है इत्यादि।

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्योंकि मनोविज्ञान में वे सभी तत्व मौजूद हैं जो किसी विषय के विज्ञान होने के लिए आवश्यक हैं। **मनोविज्ञान एक विज्ञान है क्योंकि** (१) मनोविज्ञान वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता है, (२) मनोविज्ञान तथ्यात्मक है अर्थात् यह 'क्या है' का वर्णन करता है, (३) मनोविज्ञान के नियम एवं सिद्धान्त सार्वभौमिक होते हैं, (४) मनोविज्ञान के नियम एवं सिद्धान्त प्रमाणिक होते हैं, (५) मनोविज्ञान कार्य-कारण सम्बन्धों की व्याख्या करता है तथा (६) मनोविज्ञान भविष्यवाणी कर सकता है। मनोविज्ञान में विज्ञान के सभी तत्वों के पाये जाने के कारण हम कह सकते हैं कि मनोविज्ञान यथार्थ विज्ञान (Exact Science) है। किन्तु हमें इसका यह तात्पर्य तो नहीं लगा लेना चाहिए कि मनोविज्ञान में भौतिक विज्ञान (Physical Science) के समान यथार्थता पाई जाती है। वास्तव में हम समस्त विज्ञानों में एक सी ही यथार्थता की आशा नहीं कर सकते हैं। प्रत्येक विज्ञान की यथार्थता कुछ न कुछ मात्रा में उसकी विषय-सामग्री की प्रकृति पर निर्भर होती है। मानव अनुभूति तथा व्यवहार इतने जटिल, परिवर्तनशील तथा गतिशील विषय हैं कि जिनका अध्ययन करगे वाला विज्ञान अर्थात् मनोविज्ञान इतना यथार्थ हो ही नहीं सकता जितने कि भौतिक वस्तुओं का अध्ययन करने वाले विज्ञान होते हैं। अतः मनोविज्ञान एक यथार्थ विज्ञान अवश्य है। किन्तु इसे विज्ञान कहते समय इसकी यथार्थता की सीमाओं पर ध्यान रखना आवश्यक है। किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि अन्य सामाजिक विज्ञानों की अपेक्षा मनोविज्ञान में अधिक यथार्थता पाई जाती है और इसीलिए मनोविज्ञान को प्राकृतिक विज्ञानों (Natural Sciences) की कोटि में रखने के लिए बल दिया जाता है। इधर कुछ वर्षों से नये-नये यन्त्रों एवं नवीन पद्धतियों के आविष्यकार के कारण मनोविज्ञान की यथार्थता में पर्याप्त वृद्धि हुई है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६

मनोविज्ञान की अध्ययन-पद्धतियाँ

[Methods of the Study of Psychology]

प्रश्न संख्या—३

मनोविज्ञान के अध्ययन में प्रयोग होने वाली मुख्य विधियों की व्याख्या कीजिये।

Discuss the chief methods used in the study of Psychology.

भूमिका (Introduction)

अन्य विज्ञानों (Sciences) की तरह मनोविज्ञान (Educational Psychol gy) की अपनी अध्ययन पद्धतियाँ (Methods of Study) हैं। इसके पहले कि हम इन अध्ययन पद्धतियों पर प्रकाश डालें हमें यह जान लेना चाहिए कि पद्धति का क्या अर्थ होता है। किसी निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करना ही पद्धति (Method) है। साधारण भाषा में यदि इसे कार्य करने का ढंग कहा जाय तो अनुचित न होगा। चार्ल्स जीड (Charles Gide) के अनुसार "वैज्ञानिक भाषा में हम यह भी कह सकते हैं कि अध्ययन विधि उस मार्ग को सूचित करती है जिस पर कि चलकर सत्य की खोज की जाती है।"* अब हम मनोविज्ञान की पद्धतियों (Methods of Psychology) पर प्रकाश डालेंगे।

---

*"In the scientific language, the term method is used to designate the road that must be followed to lead to the discovery of truth."
—*Charles Gide.*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनोविज्ञान की अध्ययन–पद्धतियाँ
(Methods of Psychology)

[अ] मनोविज्ञान की अध्ययन-पद्धतियों का तालिका द्वारा स्पष्टीकरण

मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धतियां
(Methods of Psychology)

- आत्मगत पद्धतियाँ (Subjective Methods)
  - अन्तर्निरीक्षण (Introspection)
  - अन्तरानुभवों का संचय (Anecdotal)
- वस्तुगत पद्धतियाँ (Objective Methods)
  - निरीक्षण (Observation)
  - प्रयोगात्मक (Experimental)
  - तुलनात्मक (Comparative)
  - विकासात्मक (Genetic)
  - व्यक्ति इतिहास (Case History)
  - मनोविक्रित्यामक (Pathological)
  - सांख्यिकी (Statistical)
  - परीक्षण (Test)
  - प्रश्नावली (Questionnair)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] उपरोक्त तालिका का स्पष्टीकरण मनोविज्ञान की पद्धतियों को दो भागों में विभाजित कर कर सकते हैं।

१—आत्मगत पद्धतियां (Subjective Methods)

(१) अन्तर्दर्शन (Introspection)

(२) अन्तरानुभवों का संचय (Anecdotal Method)

२—वस्तुगत पद्धतियां (Objective Methods)

(१) निरीक्षण पद्धति (Observational Method)

(२) प्रयोगात्मक पद्धति (Experimental Method)

(३) तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method)

(४) विकासामक पद्धति (Genetic Method)

(५) व्यक्ति इतिहास पद्धति (Case History Method)

(६) मनोविक्रियात्मक पद्धति (Pathological Method)

(७) सांख्यिकी पद्धति (Statistical Method)

(८) परीक्षणात्मक पद्धति (Test Method)

(९) प्रश्नावली पद्धति (Questioning Method)

[अ] आत्मगत पद्धतियां (Subjective Method)

अर्न्तनिरीक्षणात्मक पद्धति
(Introspective Method)

[अ] अन्तर्निरीक्षणात्मक पद्धति का अर्थ
(Meaning of Introspective Method)

अन्तर्निरीक्षणात्मक पद्धति वह पद्धति है जिसमें व्यक्ति स्वत: अपनी मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन कर उनकी व्याख्या करता है। यह पद्धति मनोविज्ञान को छोड़ कर अन्य विज्ञानों में नहीं पाई जाती है। टिचनर (Titchner) नामक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने इस पद्धति को वैज्ञानिक स्वरूप प्रदान किया। अन्तर्निरीक्षण में विद्यार्थी अपनी अनुभूतियों के स्वरूपों को समझने का वैज्ञानिक प्रयास करता है। इस प्रयास में वह अपनी मानसिक क्रियाओं के नियमों को भी समझने की कोशिश करता है। जब व्यक्ति अन्तर्निरीक्षण करता है तो वह अपना ध्यान वाह्य पदार्थों से हटाकर मानसिक क्रियाओं पर लगा देता है। एक क्रोधान्वित बालक जब अपनी मानसिक अवस्था का पता लगाने के लिए अपने मन का अन्तर्निरीक्षण करता है तो वह क्रोध जाग्रत करने वाले वाह्य उद्दीपकों से अपना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यान हटाकर मानसिक क्रियाओं पर लगाता है। इस प्रकार अन्तर्निरीक्षण पद्धति मनोविज्ञान की मुख्य पद्धति है जिसके द्वारा हम अपने मन का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। अन्तर्निरीक्षण (Introspection) की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए बी० एन० झा ने लिखा है कि **"अन्तर्निरीक्षण स्वयं अपने मन का निरीक्षण करने की प्रक्रिया है। यह एक प्रकार का आत्म-निरीक्षण है जिसमें हम अपनी संवेदनाओं तथा किसी मानसिक कार्य के समय घटित होने वाले अन्य व्यापारों का निरीक्षण, विश्लेषण तथा वर्णन करते हैं।"**

"Introspection is the process of locking inwards into our minds. It is a sort of self observation in which we observe, analyse, and report our own feelings, and in fact all that passes in our minds during the course of a mental act."

—*B. N. Jha*

[ब] अन्तर्निरीक्षण पद्धति की कठिनाइयां

(Difficulties in Introspective Method)

अन्तर्निरीक्षण पद्धति को कार्यान्वित करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फलस्वरूप हम इन कठिनाइयों को प्रस्तुत करते हुए इनके निराकरण के उपायों पर नीचे प्रकाश डालेंगे—

(१) मानसिक क्रियाओं का अस्पष्ट तथा अव्यक्त होना :— मानसिक क्रियायें इतनी अधिक अस्पष्ट एवं अव्यक्त होती हैं कि हम उनका सुचारु-रूप से अन्तर्निरीक्षण नहीं कर सकते हैं। हम लोग वस्तुओं के निरीक्षण करने के इतने अधिक अभ्यस्त हो जाते हैं कि हमें अस्पष्ट मानसिक क्रियाओं पर ध्यान केन्द्रित करना कठिन हो जाता है।

इस कठिनाई का निराकरण करने के लिए अभ्यास की विशेष आवश्यकता है। अभ्यास करने से हम इतने अधिक सतर्क हो जाते हैं कि जब चाहें तब हम अपनी मानसिक क्रियाओं का निरीक्षण कर सकते हैं। साथ-साथ हम अभ्यास से किसी मानसिक क्रिया के समाप्त होने के पहले उस पर विचार कर सकते हैं।

(२) मानसिक क्रियाओं का चंचल तथा अस्थिर होना :— मानसिक क्रियायें तथा अवस्थायें स्वभाव से ही चंचल एवं अस्थिर होने के कारण निरन्तर परिवर्तित होती रहती हैं। जैसे ही हम उन पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करते हैं कि वे हमारे मस्तिष्क से दूर भाग जाती हैं। हम मानसिक प्रक्रियाओं जैसे संवेग, अनुभूति, विचार आदि को अन्तर्निरीक्षण करने के लिए पेड़, 'पुस्तक, 'पहाड़ आदि की तरह स्थिर नहीं रख सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिये हमें स्मृति की आवश्यकता है। स्मृति द्वारा जो मानसिक क्रिया विलीन हो जाती है उसका हम तुरन्त प्रत्याह्वान या पुन: स्मरण (Recall) करके अन्‍ निरीक्षण कर सकते हैं। इसके साथ-साथ यदि हम पूर्ण सावधान रहें तो जैसे ही कोई मानसिक क्रिया हमारे मस्तिष्क में आवे वैसे ही हम उसे ध्यान से पकड़ सकते हैं।

(३) **वाह्य पदार्थों द्वारा हमारा ध्यान आकर्षित होना :**—वाह्य पदार्थ हमारे ध्यान को निरन्तर अपनी ओर खींचते रहते हैं, फलस्वरूप हम अपने ध्यान को मानसिक क्रियाओं पर केन्द्रित करने में असमर्थ हो जाते हैं जिससे कि हम उनका अन्तर्निरीक्षण नहीं कर पाते हैं।

इस कठिनाई को दूर करने के लिए हमें ध्यान को एकाग्र करने का प्रयास करना चाहिये जिससे कि हम कभी भी अपना ध्यान वाहरी पदार्थ से खींच कर किसी भी मानसिक क्रिया में केन्द्रित कर सकते हैं। परिणामस्वरूप हम अन्तर्निरीक्षण में भी सफल हो सकते हैं।

(४) **अन्तर्निरीक्षण करने वाले व्यक्ति के मस्तिष्क का दो भागों में विभक्त हो जाना :**—अन्तर्निरीक्षण करते समय निरीक्षण करने वाले व्यक्ति का मस्तिष्क दो भागों में विभक्त हो जाता है क्योंकि वही मस्तिष्क ज्ञाता अथवा द्रष्टा एवं ज्ञेय अथवा दृश्य विषय दोनों का कार्यकर्त्ता है। जैसा कि हम देखते हैं कि अन्र्दर्शन में वही मस्तिष्क निरीक्षण करता है एवं उसी का निरीक्षण भी होता है। किन्तु कैसे सम्भव है कि वह मस्तिष्क उसी का निरीक्षण करे? वास्तव में मस्तिष्क को एक ही समय में दो भागों में विभक्त करना असम्भव है। उस दृष्टिकोण को सामने रखकर प्रसिद्ध विद्वान् काम्टे (Comte) का विचार है कि "अन्तर्निरीक्षण असम्भव है"

उपरोक्त सैद्धान्तिक आपत्ति हमारे नित्य प्रति के अनुभव के आधार पर युक्तिसंगत नहीं है। हम प्रतिदिन अपने मस्तिष्क से अपनी ही मानसिक क्रियाओं का अन्तर्निरीक्षण करते रहते हैं। हम सुखानुभूति एवं दुखानुभूति दोनों अवस्थाओं का अनुभव सुचारुतापूर्वक करते रहते हैं। इसी प्रकार हम अपनी अन्य मानसिक प्रक्रियाओं का अन्तर्निरीक्षण करते हैं। जब हम विचार कर रहे होते हैं तो हम यह भी अनुभव करते हैं कि हम विचार कर रहे हैं। इस प्रकार एक ही मस्तिष्क ज्ञाता एवं विषय दोनों का कार्य करता रहता है। दूसरे शब्दों में एक ही समय में हमारे मस्तिष्क का निरीक्षिण एवं निरीक्षित होना सम्भव है।

(५) **अनेक मनोवैज्ञानिकों द्वारा एक ही मानसिक प्रक्रिया का अध्ययन करना असम्भव :**—दो मनोवैज्ञानिक किसी एक प्राकृतिक पदार्थ का निरीक्षण कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सकते हैं परन्तु अन्तर्निरीक्षण द्वारा दो मनोवैज्ञानिकों का एक ही मानसिक क्रिया का निरीक्षण करना सम्भव नहीं है। उदाहरण के लिए क्रोध संवेग का अनुभव दो मस्तिष्कों को नहीं हो सकता है।

विशेषज्ञों की सहायता से इस कठिनाई का भी निराकरण किया जा सकता है। दो मनोवैज्ञानिक एक ही मानसिक क्रिया का अनुभव नहीं कर सकते परन्तु वे समान प्रकार की मानसिक क्रिया का अनुभव कर सकते हैं। इस आधार पर एक विशेष प्रकार की मानसिक क्रिया का अन्तर्निरीक्षण अनेक मनोवैज्ञानिकों को पारस्परिक सहायता से करना चाहिये। उनको अन्तर्निरीक्षण के परिणामों को परस्पर मिलाना चाहिये।

(६) वाह्य वस्तु और मानसिक प्रक्रिया का एक साथ निरीक्षण असम्भवः— कभी-कभी हमें अन्तर्निरीक्षण में किसी वाह्य वस्तु से उत्पन्न किसी मानसिक क्रिया पर अपना ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है। परन्तु जब हम मानसिक क्रिया पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं तब हमारा ध्यान उस वस्तु से अलग हो जाता है। फलस्वरूप शीघ्र ही वह मानसिक क्रिया विलीन हो जाया करती है। इस आशय को प्रस्तुत करते हुए स्टाउट महोदय लिखते हैं, **"यदि मैं देखने की प्रक्रिया का निरीक्षण करूं, तो मुझे एक ही साथ जो देखा जाता है (वस्तु) उस पर एवं उसको देखने की क्रिया (प्रत्यक्षीकरण) पर ध्यान देना होगा।"**

"If I observe the process of seeing, I must attend at once to what is seen (object) and to the seeing of it (perception)."

—*Stout-Manual of Psychology,P. 42*

अन्य कठिनाइयों की तरह हम इस कठिनाई का भी निराकरण कर सकते हैं। हम यदि सतर्क रहें तो एक समय में वस्तु एवं मानसिक क्रिया में ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं। हम चाहें तो पहले वस्तु पर फिर मानसिक क्रिया पर क्रमशः जल्दी-जल्दी ध्यान देने में समर्थ हो सकते हैं। यहां मानसिक प्रक्रिया एवं वस्तु के मध्य में ध्यान का प्रद्योलन (Vibration) हो जाता है। इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए हम स्मृति (Memory) की सहायता ले सकते हैं क्योंकि पाश्चात्य दर्शन इस कठिनाई से विमुक्त होता है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए विशेषज्ञों का सहयोग परमावश्यक है।

(७) अन्तर्निरीक्षण द्वारा प्राप्त ज्ञान का आत्मगत एवं व्यक्तिगत होना :— अन्तर्निरीक्षण पद्धति के विरुद्ध एक कठिनाई यह है कि इसके द्वारा जो हमें ज्ञान प्राप्त होता है वह आत्मगत (Subjective) एवं व्यक्तिगत (Personal)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है। परिणामस्वरूप हम इस पद्धति द्वारा प्राप्त ज्ञान के आधार पर वैज्ञानिक नियम नहीं बना सकते हैं।

इस कठिनाई का निराकरण किया जा सकता है। इसके लिये एक तो यह आवश्यक है कि प्रशिक्षण तथा अभ्यास द्वारा अन्तर्निरीक्षण को अधिक से अधिक वस्तुगत (Objective) बनाने का प्रयास किया जाय और दूसरे अनेक मनोवैज्ञानिकों द्वारा किए हुए अन्तर्निरीक्षण के विवरण की तुलना करके उनमें से सामान्य तत्वों को निकाल कर एक सामान्य सिद्धान्त बनाया जाय। इन दोनों उपायों को काम में लाने से अन्तर्निरीक्षण से प्राप्त परिणामों को वस्तुगत बनाया जा सकता है।

(८) **बच्चों, पागलों, मानसिक रोगियों तथा पशुओं पर इस पद्धति का प्रयोग असम्भव है :**—अन्तर्निरीक्षण पद्धति में अन्तिम कठिनाई यह है कि यह बच्चों, पागलों, मानसिक रोगियों तथा पशुओं पर प्रयोग नहीं की जा सकती क्योंकि इन सभी में अपनी मानसिक प्रक्रियाओं का निरीक्षण करने की सामर्थ्य नहीं होती है।

उपर्युक्त कठिनाइयों एवं उनके निराकरण के उपायों को प्रस्तुत करते हुए हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि अन्तर्निरीक्षण पद्धति को सुचारु रूप से कार्यान्वित करने के लिये अभ्यास एवं मन की एकाग्रता की आवश्यकता है।

[स] अन्तर्निरीक्षण पद्धति का महत्व

(Importance of Introspective Method)

(१) **अपने आपको समझ लेना :**—अंतर्निरीक्षण पद्धति का सबसे प्रमुख गुण यह है कि इस पद्धति द्वारा व्यक्ति अपनी मानसिक क्रियाओं एवं मानसिक अवस्थाओं का पता लगाकर अपने आपको समझने में समर्थ हो जाता है जो कि जीवन में आवश्यक है—

(२) **निरीक्षण की जाने वाली वस्तु का सर्वदा व्यक्ति के पास रहना :**—अन्तर्निरीक्षण पद्धति में जिस सामग्री अथवा वस्तु का निरीक्षण करना पड़ता है वह सर्वदा मनुष्य के पास रहती है। मनुष्य किसी भी समय किसी ली स्थान में अपनी मानसिक क्रियाओं का अन्तर्निरीक्षण कर सकता है।

(३) **दूसरे की मानसिक क्रियाओं की अनुभूति :**—अन्तर्निरीक्षण पद्धति का अन्तिम गुण यह है कि इस पद्धति से व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की मानसिक प्रक्रियाओं का पता लगा लेते हैं। फलस्वरूप वे एक दूसरे का हाथ बटाने में समर्थ हो जाते हैं।

[द] निष्कर्ष (Conclusion)

हम देखते हैं कि अन्तर्निरीक्षण पद्धति में व्यक्ति केवल अपनी ही मानसिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रियाओं का अध्ययन कर पाता है जब कि मनोविज्ञान में सभी व्यक्तियों की मानसिक क्रियाओं के अध्ययन की आवश्यकता है। फलस्वरूप एक व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं से अन्य मनुष्य की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करना अवांछनीय है। यह आवश्यक नहीं कि जो व्यक्ति कुछ अपने विषय में सोचे ठीक वही दूसरों के मन की अवस्था हो। अतः अन्तर्निरीक्षणात्मक पद्धति के साथ बहिर्निरीक्षणात्मक पद्धति को अपनाना आवश्यक प्रतीत होता है।

अन्तरानुभावों की संचय-पद्धति
(The Anecdotal Method)

व्यक्तिगत अनुभवों का एक लेखा तैयार करना

मनोविज्ञान की आत्मगत पद्धतियों के अन्तर्गत दूसरी पद्धति है अन्तरानुभवों की संचय पद्धति (The Anecdotal Method)। इस पद्धति में व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों का पुनः स्मरण (Recall) कर इनका एक लेखा (Record) तैयार करता है। वास्तव में हम इस पद्धति को विश्वसनीय (Reliable) पद्धति नहीं कह सकते हैं क्योंकि वास्तविक व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों का उसी प्रकार पुनः स्मरण नहीं कर सकते हैं जिस प्रकार कि उसने उनका अनुभव किया था। एक प्रसिद्ध विद्वान् ने कहा है :—

"This method is not very reliable as true experiences are to be recalled. Some times authors exaggerate or minimise their past impressions and experiences.

—*A Eminent Scholar*

[ब] वस्तुगत पद्धतियां
(Objective Methods)

१—वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति
(Extrospective Method or Objective Observation)

[अ] वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति का अर्थ (Meaning of Extrospective Method or Objective Observation)

वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति (Objective Observation or Extrospective Method) वह पद्धति है जिसमें कि हम अपने अनुभव के आधार पर दूसरे व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन कर उसकी मानसिक अवस्था का पता लगाते हैं। उदाहरण के लिये हम एक व्यक्ति को मुस्कराते हुए देखते हैं तो हमको पता चल जाता है कि वह खुश है। इसी प्रकार जब किसी को आँसू बहाते हुये देखते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं तो हमें पता चल जाता है कि वह दुःखी है। इसी प्रकार हम नित्यप्रति किसी न किसी व्यक्ति का व्यवहार देखकर उसकी मानसिक अवस्था का पता लगाते रहते हैं। यह सब वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति के ही उदाहरण हैं।

[ब] वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति के मुख्य तत्व (Factors of Extrospective Method or Objective Observation)

(१) दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार का निरीक्षण करना :— जब हम दूसरे व्यक्ति की मानसिक अवस्था का पता लगाने का प्रयास करते हैं तो सर्वप्रथम हम उसके व्यवहार अर्थात् उसके रहन-सहन का ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हैं।

(२) व्यवहार का अवलोकन कर उसकी मानसिक स्थिति का पता लगाना:— जब हम किसी व्यक्ति के व्यवहार का ध्यानपूर्वक अवलोकन करते हैं तो हमें उसकी मानसिक अवस्था का पता चल जाता है। उदाहरण के लिये जब हम एक व्यक्ति की लाल आंखें एवं दांत पीसते हुए देखते हैं तो हमें अनुमान लग जाता है कि वह व्यक्ति क्रोध में है। इसी प्रकार स्टाउट महोदय ने एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए लिखा है— 'जब एक कुत्ता अपनी पूँछ हिलाता है तो हम अनुमान लगाते हैं कि वह खुश है।"

"When a dog wags his tail we infer that it is pleased." —*Stout*

(३) अपने अनुभवों के आधार पर दूसरों के व्यवहार की व्याख्या करना:— वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति का तृतीय तत्व है अपने अनुभवों के आधार पर दूसरे के व्यवहार की व्याख्या करना। मान लीजिए कोई व्यक्ति रो रहा है तो हम कहते हैं कि वह दुखी है। यह हमने कैसे जाना कि रोता हुआ व्यक्ति दुखी होता है ? हमने यह पहले ही अनुभव कर लिया था कि जब हम दुखी होते हैं तो रोने लगते हैं। इस प्रकार हम दूसरों के व्यवहार को देखकर उसकी मानसिक स्थिति का तभी पता लगा सकते हैं जब कि हम स्वयं अनुभव कर चुके होते हैं। स्टाउट ने भी ठीक ही लिखा है :—

"In order that we may be able to enter into the exprience of others, it is indeed necessary that we have similar correlated experience." —*Stout*

(४) सामान्यीकरण :— वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति का अंतिम अंग या स्तर है—सामान्यीकरण (Generalization)। सामान्यीकरण द्वारा ही वैज्ञानिक नियमों एवं सिद्धान्तों का निर्माण किया जाता है। वास्तव में यदि हम यह कहें कि मानव अनुभूति तथा व्यवहार के सम्बन्ध में सामान्य नियम निकालना वाह्य-निरीक्षण पद्धति का उद्देश्य है तो अनुचित न होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति की कठिनाइयां (Difficulties in Extrospective Method or Objective Observation)

(१) अपने समान दूसरे को समझना :—प्रायः जब कोई व्यक्ति दूसरे का निरीक्षण करता है तो वह अपने अनुकूल दूसरे को भी समझने लगता है। उदाहरण के लिये यदि एक व्यक्ति धार्मिक स्वभाव का होता है तो वह दूसरे व्यक्ति को भी अपने जैसा अर्थात् धार्मिक स्वभाव वाला समझने लगता है।

कठिनाई का निराकरण :—इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए निरीक्षणकर्त्ता को चाहिए कि वह निरीक्षण करने के समय पूर्णरूपेण सावधान रहे। इसके साथ-साथ उसे निरीक्षण करने के लिए रचनात्मक कल्पना (Constructive Imagination) एवं अनुमान का सहारा लेना चाहिए।

(२) पक्षपात एवं भ्रान्त संस्कारों का प्रभाव :—जब कोई व्यक्ति किसी का निरीक्षण करता है तो उसे पक्षपात एवं भ्रान्त संस्कार प्रभावित करने लगते हैं। फलस्वरूप उसका किया हुआ निरीक्षण व्यर्थ चला जाता है। प्रायः हम जिससे प्रेम करते हैं उसमें दोषों को नहीं देखते हैं। इसके विपरीत जिसके प्रति हम दुश्मनी रखते हैं उसमें दोष देखने लगते हैं।

कठिनाई का निराकरण :—इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए निरीक्षणकर्त्ता को चाहिए कि वह निष्पक्ष होकर किसी व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण करे एवं उसे चाहिए कि वह भ्रान्त संस्कारों एवं धारणाओं से अपने आप को मुक्त रखे ताकि वह वैज्ञानिक रूप में निरीक्षण कर सके।

(३) निरीक्षण किए जाने वाले व्यक्ति का आडम्बरपूर्ण व्यवहार :—वाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति में निरीक्षण किये जाने वाले व्यक्ति के आडम्बरपूर्ण व्यवहार के कारण उसकी मानसिक अवस्था का पता लगाना मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति किसी के प्रति शत्रुता रखते हुए भी उसके प्रति मित्रता का व्यवहार करता है फलस्वरूप हम उसकी शत्रुतापूर्ण मानसिक अवस्था का पता लगाने में असमर्थ हो जाते हैं।

कठिनाई का निराकरण :—इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए निरीक्षक को चाहिए कि वह निरीक्षण किये जाने वाले व्यक्ति के विभिन्न व्यवहार का सावधानीपूर्वक निरीक्षण करे। इसके साथ-साथ उसे रचनात्मक कल्पना का भी सहयोग लेना चाहिए।

(४) एक ही प्रकार के व्यवहार का अनेक मानसिक अवस्था का द्योतक होना :—प्रायः यह देखा जाता है कि एक ही प्रकार का व्यवहार अनेक मानसिक अवस्थाओं का द्योतक है। उदाहरण के लिए कभी-कभी लोग दुख में भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आँसू बहाते हैं एवं सुख में भी। फलस्वरूप उसकी मानसिक अवस्था का पता लगाना मुश्किल हो जाता है।

कठिनाई का निराकरण—इस कठिनाई को दूर करने के लिए निरीक्षक को चाहिये कि वह सावधानी एवं धैर्य से काम ले। उसे चाहिए कि वह परिस्थिति को अच्छी प्रकार समझने का प्रयास करे। फलस्वरूप वास्तविक परिस्थिति का स्वतः पता चल जावेगा।

(५) व्यवहार का स्पष्ट होना—कभी-कभी व्यक्ति का व्यवहार इतना अस्पष्ट होता है कि मानसिक स्थिति का पता लगाना मुश्किल हो जाता है। प्रायः व्यक्ति स्वीकृति भी उसी रूप में देते हैं एवं अस्वीकृति भी, फलस्वरूप उनकी मानसिक अवस्था का पता लगाना मुश्किल हो जाता है।

कठिनाई का निराकरण—इस कठिनाई पर विजय प्राप्त करने के लिए निरीक्षण करने वाले को चाहिए कि वह सावधान होकर किसी व्यक्ति के व्यवहार का निरीक्षण करे एवं रचनात्मक कल्पना और अनुमान का आश्रय ले।

[द] निष्कर्ष (Conclusion)

वास्तव में वाह्य निरीक्षण पद्धति (Objective Observation or Extrospective Method) का जिस प्रकार अन्य विज्ञानों में बहुत महत्व है उसी प्रकार मनोविज्ञान में भी इसको महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। बालक, विक्षिप्त एवं पशु की मानसिक अवस्थाओं का अध्ययन तो बिना इसके हो ही नहीं सकता है। इस पद्धति में जो भी कठिनाइयाँ हैं उनको धैर्य, अनुमान, सावधानी एवं रचनात्मक कल्पना द्वारा दूर किया जा सकता है।

(२) प्रयोगात्मक पद्धति
(Experimental Method)

[अ] प्रयोगात्मक पद्धति का अर्थ
(Meaning of Experimental Method)

प्रयोगात्मक पद्धति का तात्पर्य उस पद्धति से है जिसमें व्यवस्थित एवं नियन्त्रित परिस्थितियों में किसी प्राणी की अनुभूति तथा व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। प्रयोग में सर्वप्रथम प्रयोगकर्ता (Experimenter) के समक्ष मानव व्यवहार से सम्बन्धित कोई प्रश्न या समस्या होती है। इसी प्रश्न का उत्तर पाने या समस्या के समाधान के लिए वह प्रयोग करता है। उपस्थित प्रश्न या समस्या का हल करने के लिए प्रयोगकर्ता उसे एक उपकल्पना (Hypothesis) के रूप में प्रस्तुत करता है। किसी भी उपकल्पना के निर्माण में युक्ति से काम लिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता है। निर्मित उपकल्पना को प्रयोगों के द्वारा सत्य या असत्य सिद्ध किया जाता है। मान लीजिये किसी पढ़ने वाले व्यक्ति के समक्ष यह प्रश्न उठ खड़ा हुआ कि वह जो विषय-वस्तु सीखता है उसी सीमा तक उसे याद रहेगी जिस सीमा तक वह उसके सीखने में अभ्यास करता रहता है। यह प्रश्न एक प्रकार से एक उपकल्पना मात्र है। इस प्रश्न का उत्तर पाने के लिए प्रयोग करना प्रारम्भ किया। मान लीजिए प्रयोग से यह परिणाम निकला कि 'सीखने में' अभ्यास का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है तो इससे उपकल्पना की सत्यता सिद्ध हो जाती है। इसी प्रकार मानव अनुभूति तथा व्यवहार से सम्बन्धित अनेक समस्याओं का समाधान करने के लिये प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है और ऐसे नियमों एवं सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया जा सकता है जो मानव व्यवहार की सार्वभौमिक रूप से व्याख्या करें। चूँकि प्रयोगात्मक पद्धति में पूर्व निर्धारित परिस्थितियों में निरीक्षण किया जाता है इसलिये प्रयोग को नियन्त्रित निरीक्षण (Controlled Observation) कहते हैं। प्रयोगात्मक पद्धति में सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके द्वारा जो परिणाम प्राप्त होते हैं उनकी विशेष परिस्थितियों में कई बार पुनरावृत्ति की जा सकती है और कितनी बार प्रयोग क्यों न किया जाय सब बार एक ही परिणाम प्राप्त होंगे। प्रयोगात्मक-पद्धति में अन्तःनिरीक्षण (Introspection) एवं बर्हिनिरीक्षण (Extrospection) दोनों का प्रयोग होता है। अब तक लगभग समस्त मानसिक क्रियाओं यथा संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, प्रतिमा, स्मृति, कल्पना, विचार, ध्यान, सीखना, संवेग इत्यादि पर प्रयोग किये जा चुके हैं।

[ब] प्रयोगात्मक पद्धति के विभिन्न स्तर
(Various Steps of Experimental Method)

प्रयोगात्मक पद्धति अर्थात् मनोवैज्ञानिक प्रयोग के निम्नलिखित स्तर होते हैं :—

(१) एक समस्या का उठाना (Raising a Problem)—प्रयोग में सबसे पहिला स्तर मानव व्यवहार के सम्बन्ध में किसी समस्या को उठाना है। उदाहरणार्थ हम देखते हैं कि प्रायः सिगरेट पीने की बड़ी आलोचना होती है। कुछ लोग कहा करते हैं कि जो व्यक्ति सिगरेट पीते हैं उनका चरित्र तथा स्वास्थ्य दोनों खराब हो जाते हैं। प्रायः हम लोगों के मुँह से सुनते हैं कि जो विद्यार्थी सिगरेट पीते हैं वे सिगरेट न पीने वालों की अपेक्षा परीक्षा में कम अंक प्राप्त करते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कि न सिगरेट पीने के पक्ष में हैं और न विपक्ष में। उन लोगों का विचार है कि परीक्षा में कम अंक लाने का कारण सिगरेट पीने की आदत न होकर विद्यार्थी का वातावरण तथा व्यक्तित्व होते हैं। सिगरेट पीने वाले व्यक्ति सिगरेट न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पीने वाले व्यक्तियों की अपेक्षा मिलनसार तथा आरामी होते हैं। अतः वे परीक्षा के लिए सिगरेट न पीने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा कम परिश्रम कर पाते हैं। सिगरेट पीने के सम्बन्ध में इस वाद-विवाद के आधार पर यह समस्या उठती है कि शारीरिक तथा मानसिक कुशलता पर सिगरेट पीने का क्या असर पड़ता है? इस समस्या का समाधान करने के लिए मनोवैज्ञानिक प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग करते हैं।

(२) एक उपकल्पना का निर्माण (Formulation of a Hypothesis)—मनोवैज्ञानिक प्रयोग का दूसरा स्तर है उपस्थिति समस्या के आधार पर एक उपकल्पना का निर्माण करना। उपर्युक्त दिये हुए सिगरेट के पीने के उदाहरण में शारीरिक एवं मानसिक कुशलता पर सिगरेट पीने के प्रभाव की समस्या को सुलझाने के लिये इसे उपकल्पना का रूप प्रदान करना आवश्यक है। यह उपकल्पना इस प्रकार होगी "सिगरेट पीने से शारीरिक एवं मानसिक कुशलता में कमी होती है।"

(३) स्वतन्त्र परिवर्त्यों एवं आश्रित परिवर्त्यों को प्रथक-प्रथक करना (Dividing the Independent Variables and Dependent Variables)—मनोवैज्ञानिक प्रयोग का तृतीय स्तर है प्रयोग की उपकल्पना में से स्वतन्त्र परिवर्त्यों एवं आश्रित परिवर्त्यों का प्रथक करना। ऊपर दी हुई उपकल्पना में सिगरेट पीना स्वतन्त्र परिवर्त्य है क्योंकि हमें सिगरेट पीने एवं न पीने के प्रभाव को समझने के लिए प्रयोग करना है। शारीरिक एवं मानसिक कुशलता आश्रित परिवर्त्य हैं क्योंकि ये प्रयोग में स्थिर रहेंगे।

(४) वातावरण अथवा परिस्थिति को नियन्त्रित करना (Controlling the Environment or Situation)—प्रयोग का चतुर्थ स्तर है जिस वातावरण या परिस्थिति में प्रयोग किया जा रहा हो उसको नियन्त्रित करना। सिगरेट पीने के प्रभाव के प्रयोग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। हो सकता है कि प्रयोज्य (जिस व्यक्ति पर प्रयोग किया जाता है) शारीरिक और मानसिक कुशलता पर सिगरेट पीने का कोई प्रभाव न सिद्ध करना चाहता हो। यह भी हो सकता है कि प्रयोज्य जान बूझ कर ऐसी क्रियाएँ प्रारम्भ कर दे जिससे यह पता लगे कि सिगरेट पीने से कुशलता में वृद्धि हुयी है। इस प्रकार की सम्भावनाओं (Possibilities) को अप्रभावशील बनाने के लिए प्रयोग में वातावरण को नियन्त्रित किया जाता है। इसके लिए सबसे पहिले सभी प्रयोज्यों की आँखों पर पट्टी बाँध दी गई। एक से दो खोखले होल्डरों को प्रयोग में लाया गया, जिनमें अन्तर केवल इतना था कि एक होल्डर के खोखले में बिजली के तार का कुण्डल था जिसमें से प्रयोज्य गर्म हवा पी सकता था और दूसरे में वास्तव में सिगरेट थी। जितनी बार भी प्रयोग की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनरावृत्ति की गई उतनी ही बार सिगरेट पीने से सम्बन्धित सभी प्रकार की आवाजें करने का प्रबन्ध किया गया जैसे कि दियासलाई टेबुल में रखना आदि। इसके अतिरिक्त प्रयोज्य के पास सिगरेट की राख डाल दी गई जिससे कि वह समझे कि वास्तव में सिगरेट पी गई है। प्रयोगकर्ता स्वयं प्रयोज्य के मुँह में होल्डर लगाता एवं निकालता था। इस बात का पूर्ण ध्यान रक्खा जाता था कि किसी भी समय प्रयोज्य सिगरेट पर हाथ न लगाने पावे। इसी प्रकार वातावरण सम्बन्धी प्रभाव डालने वाली अन्य बातों पर पूर्ण नियन्त्रण किया गया।

(५) प्रयोगफल का विश्लेषण (Analysis of the Result)—प्रयोगात्मक पद्धति का पाँचवाँ स्तर है प्रयोग के द्वारा जो फल प्राप्त हुआ है उसका विश्लेषण करना। कभी-कभी प्रयोग में अधिक प्रयोज्यों के रखने की आवश्यकता होती है। ऐसी दशा में कभी-कभी उन्हें दो समूहों में विभक्त कर लेना आवश्यक होता है। इनमें से एक **नियन्त्रित समूह (Controlled Group)** और दूसरा **प्रयोगबद्ध समूह (Experimental Group)** कहलाता है। उपर्युक्त सिगरेट पर किये हुए प्रयोग में प्रत्येक प्रयोज्य नियन्त्रित प्रयोज्य और प्रयोगबद्ध प्रयोज्य दोनों बने। सभी प्रयोज्यों को आधी बार सिगरेट पीने का अवसर दिया गया और आधी बार गर्म हवा पीने का। प्रायः प्रयोगबद्ध समूह स्वतन्त्र परिवर्त्य कहा जाता है क्योंकि प्रयोजक उसे रोक सकता है या किसी भी प्रकार से प्रयोग कर सकता है। उक्त वर्णित प्रयोग में सिगरेट स्वतन्त्र परिवर्त्य है एवं उसके परिणामों की तुलना सिगरेट रहित परिणामों से की गई। प्रयोग के फल का विश्लेषण करने में सांख्यकी पद्धति (Statistical Technique) की सहायता ली जाती है।

(६) प्रयोगफल से उपकल्पना की सत्यता जाँचना (Verification of the Hypothesis by the result of the Experiment)—प्रयोगात्मक पद्धति का अन्तिम किन्तु सबसे महत्वपूर्ण स्तर है प्रयोग में जो फल प्राप्त हुआ है उसके द्वारा उपकल्पना की सत्यता की जाँच करना। उक्त वर्णित सिगरेट वाले प्रयोग में सिगरेट वाले सभी सत्रों के परिणामों की तुलना सिगरेट रहित सभी सत्रों से की गई जिससे यह पता लगा कि दोनों के परिणामों में अति शून्य अन्तर है। सिगरेट पीने से हृदय की गति में थोड़ी सी वृद्धि हुई और हाथ में कम्पन बढ़ गया। यह प्रभाव सिगरेट पीने की आदत वाले प्रयोज्यों की अपेक्षा सिगरेट न पीने की आदत वाले प्रयोज्यों में अधिक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हुआ। मानसिक परीक्षणों द्वारा सिगरेट का प्रभाव न के बराबर स्पष्ट हुआ। लगभग दो सप्ताह यह प्रयोग जारी रक्खा और अन्त में यह ज्ञात हुआ कि शारीरिक तथा मानसिक कुशलता पर सिगरेट का प्रभाव न के बराबर पड़ता है। इस प्रकार शारीरिक एवं मानसिक कुशलता पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिगरेट के प्रभाव की समस्या को सुलझाने के लिये जो उपकल्पना—यथा सिगरेट पीने से शारीरिक एवं मानसिक कुशलता में कमी होती है—की थी वह गलत सिद्ध हुई।

[स] प्रयोगात्मक पद्धति में कठिनाइयाँ
(Difficulties in Experimental Method)

(१) प्रयोज्य के व्यवहार में कृत्रिमता का आना—प्रयोगात्मक पद्धति के कुछ आलोचकों का विचार है कि चूँकि इस विधि का प्रयोग अस्वाभाविक परिस्थिति में होता है, फलस्वरूप प्रयोज्य के व्यवहार में कृत्रिमता आ जाती है अर्थात् वह अस्वाभाविक व्यवहार करने लगता है और उसकी मानसिक अवस्था का पता लगाना मुश्किल हो जाता है। परन्तु यदि प्रयोगकर्ता कुशल है तो वह चाहे तो प्रयोज्य को अस्वाभाविक वातावरण का भान न होने दे, फलस्वरूप ये कठिनाइयाँ न आने पावें।

(२) व्यक्ति की समस्त मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन असम्भव—प्रयोगात्मक पद्धति द्वारा व्यक्ति की समस्त मानसिक क्रियाओं का अध्ययन असम्भव है। उदाहरण के लिये यदि हमें यह जानना हो कि सीखने की प्रक्रिया के लिये मस्तिष्क के विभिन्न भाग क्या कार्य करते हैं तो हमें यह जानने के लिये पशुओं पर प्रयोग करके अपना काम चलाना होगा और अन्त में इस प्रयोग के परिणाम के आधार पर व्यक्ति के सम्बन्ध में निष्कर्ष देना होगा।

(३) प्रभावित करने वाले समस्त तत्वों को नियंत्रित करना असंभव—प्रयोगात्मक पद्धति में व्यक्ति की मानसिक अवस्था को प्रभावित करने वाले समस्त तत्वों को नियन्त्रित करना बिलकुल असम्भव है। मान लीजिये कुशल प्रयोगकर्ता बाह्य तत्वों को नियन्त्रित कर ही ले किन्तु वह प्रयोज्य के आत्मगत तत्वों को नियन्त्रित नहीं कर सकता है। परिणामस्वरूप प्रयोग की सत्यता, विश्वसनीयता एवं वैज्ञानिकता पर कुछ शंका बनी रहती है।

(४) प्रयोज्य को उसकी पूर्व स्वाभाविक दशा में लाने में कठिनता—प्रयोगात्मक पद्धति में अन्तिम कठिनाई यह है कि प्रायः प्रयोज्य को उसके पूर्व स्वाभाविक दशा में लाना नितान्त कठिन हो जाता है। प्रायः प्रयोज्य अच्छे परिणाम के लिये अस्वाभाविक व्यवहार करने लगते हैं। फलस्वरूप निर्णय शुद्ध नहीं होने पाता है।

[द] प्रयोगात्मक पद्धति का महत्व
(Importance of Experimental Method)

मनोविज्ञान में प्रयोगात्मक पद्धति ही ऐसी पद्धति है जिसने कि मनोविज्ञान को प्राकृतिक विज्ञान (Positive Science) की श्रेणी में ला दिया है। फलस्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस पद्धति से बहुत लाभ हुआ है। अब किसी व्यक्ति की मानसिक अवस्था का अनेक रूप में अध्ययन किया जाना सम्भव हो गया है। एक बार प्रयोग अथवा परीक्षा समाप्त होने पर उसकी सत्यता, विश्वसनीयता एवं वैज्ञानिकता को सिद्ध करने के लिये उसे दोहराया जा सकता है। इस पद्धति में अन्तर्निरीक्षणात्मक पद्धति (Introspective Observational Method) एवं बाह्य निरीक्षणात्मक पद्धति (Extrospective Observational Method) से मिलने वाले समस्त लाभ प्राप्त हो जाते हैं। फलस्वरूप इसे मनोविज्ञान की सर्वश्रेष्ठ विधि कहा जाय तो अनुचित न होगा। इसी विधि के कारण अब मनोविज्ञान को नवीन मनोविज्ञान (New Psychology) कहा जाने लगा है।

(३) तुलनात्मक पद्धति
(Comparative Method)

पशु व्यवहार का अध्ययन कर मानव व्यवहार को समझना

इस पद्धति में विभिन्न प्रकार के पशुओं की मूल-प्रवृत्तियों, बुद्धि, स्नायुमण्डल आदि की विभिन्न मात्राओं की तुलना की जाती है। साथ ही साथ मनुष्यों एवं पशुओं की भी तुलना की जाती है जिससे यह पता चलता है कि मनुष्य किस तरह से पशुओं से अधिक श्रेष्ठ है, कौन सी मानसिक क्रियाएँ मनुष्यों में होती हैं, पशुओं में नहीं। मनुष्य एवं पशु किस तरह वातावरण से अनुकूलन करने के लिये विभिन्न व्यवहार करते हैं, आदि।

(४) विकासात्मक पद्धति
(Genetic Method)

व्यक्ति के मानसिक विकास एवं वृद्धि का अध्ययन

विकासात्मक पद्धति वह पद्धति है जिसमें कि व्यक्ति अथवा जाति के मानसिक विकास एवं वृद्धि का अध्ययन किया जाता है। व्यक्ति में शैशवावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक जो परिवर्तन होते हैं उनका पता लगाया जाता है अर्थात् विभिन्न अवस्थाओं की विशेषताओं एवं आवश्यकताओं का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इसके साथ-साथ यह भी पता लगाया जाता है कि व्यक्तित्व के विकास पर वंशानुक्रम (Heredity) एवं वातावरण (Environment) का क्या प्रभाव पड़ता है। संक्षेप में वुडवर्थ के अनुसार **"मनोविज्ञान का एक महत्वपूर्ण कार्य व्यक्ति की जन्मावस्था अथवा गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक मानसिक एवं व्यावहारिक विकास जानना है।"**

"One important job of psychology is that of tracing the

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

mental and behavioural development of individual from birth on better from before birth upto maturity." —**Woodworth.**

(५) व्यक्ति इतिहास पद्धति
(Case History Method)

व्यक्ति के इतिहास द्वारा उसका अध्ययन करना

यह पद्धति विक्षिप्त एवं अपराधी बालकों की मानसिक अवस्था का अध्ययन करने के लिए प्रयोग की जाती है। मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि बालक मानसिक कठिनाइयों के कारण असाधारण एवं समाज-विरोधी कार्य करने लगता है। फलस्वरूप मनोवैज्ञानिक उन भौतिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारणों के ढूंढ़ने का प्रयास करते हैं जिनके कारण बालक को मानसिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। इसके लिए मनोवैज्ञानिक को व्यक्ति के इतिहास का अध्ययन करना पड़ता है। बालक का इतिहास जानने के लिए मनोवैज्ञानिक बालक के माता, पिता, मित्र एवं पड़ोसियों से सहायता लेता है, मनोवैज्ञानिक क्लीनिक (Psychological clinic) में उसे उससे मुक्त वार्तालाप करना पड़ता है आदि।

(६) मनोविकृत्यात्मक पद्धति
(Pathological Method)

व्यक्ति के असाधारण व्यवहार के कारण जानना एवं उसका निराकरण करना

यह पद्धति भी असामान्य (Abnormal) व्यक्तियों के अध्ययन के लिए प्रयोग की जाती है। इस पद्धति द्वारा यह पता लगाया जाता है कि व्यक्ति असाधारण व्यवहार (Abnormal Behaviour) क्यों करने लगता है? क्यों वह थोड़ी देर में हँसने लगता है? और थोड़ी देर में रोने लगता है? क्यों वह थोड़ी-सी बात पर गुस्सा होने लगता है? क्यों वह स्वप्नावस्था में उठकर चल देता है आदि? इसके साथ-साथ असाधारण व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक ढंग से उपचार भी किया जाता है। इस प्रकार असाधारण व्यक्तियों के व्यवहार को समझने के लिए यह पद्धति बहुत काम देती है।

(७) सांख्यकी पद्धति
(Statistical Method)

प्रयोगात्मक परिणामों को प्रमाणिकता सिद्ध करने के लिए इस पद्धति का उपयोग

यह पद्धति मनोविज्ञान की सबसे नवीन पद्धति है। इसके द्वारा प्रयोगों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के परिणामों (Results) की सत्यता (Validity), विश्वसनीयता (Reliability) एवं प्रतिपन्नता (Accuracy) की परीक्षा की जाती है। इसके लिए सांख्यिकीय पद्धति में माध्य (Mean), मध्यक (Median), भूयिष्ठक (Mood), एवं प्रमाण विचलन (Standard Deviation) निकाला जाता है। वर्तमान युग में अधिकांशतः प्रयोगात्मक परिणामों की प्रमाणिकता सिद्ध करने के लिए सांख्यिकी पद्धति का विशेष रूप से प्रयोग होने लगा है।

(८) परीक्षण पद्धति
(Test Method)

व्यक्तियों की व्यक्तिगत भिन्नता को जानने के लिए परीक्षा लेना

शिक्षा मनोविज्ञान के अन्तर्गत परीक्षण पद्धति (Test Method) वह पद्धति है जिसमें कि व्यक्तियों की व्यक्तिगत भिन्नता (Individual difference) जानने के लिए नाना प्रकार से परीक्षाएं ली जाती हैं। इस प्रकार की मुख्य परीक्षाएं हैं—बुद्धि परीक्षा (Intelligence Tests), प्रवणता परीक्षा (Special Aptitude Tests), संवेगात्मक परीक्षाएं (Tests of Emotionality), व्यक्तित्व परीक्षाएं (Personality Tests) आदि।

(९) प्रश्नावली पद्धति
(Questionnaire Method)

विभिन्न प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करके बालक अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध में अध्ययन करना

प्रश्नावली पद्धति में व्यक्ति का अध्ययन करने के लिये एवं व्यक्ति के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसे बहुत से प्रश्नों का उत्तर देने के लिए कहा जाता है। तत्पश्चात् इन उत्तरों के द्वारा व्यक्ति के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाला जाता है कि उसका व्यक्तित्व किस प्रकार का है। इस पद्धति को हम अन्तर्निरीक्षण पद्धति भी कह सकते हैं क्योंकि प्रश्नों का जो उत्तर प्रयोज्य देते हैं वे उनके अन्तर्निरीक्षण (Introspection) पर आधारित होते हैं। फिर इन्हीं प्रश्नों का परीक्षण निरीक्षण कर बालक के सम्बन्ध में अपना विचार प्रस्तुत करता है। इस दृष्टि से प्रश्नावली पद्धति (Questionnaire Method) में अन्तर्निरीक्षण अथवा अन्तर्दर्शन (Introspection) एवं निरीक्षण (Observation) दोनों का प्रयोग हो पाता है।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों का तात्पर्य यह है कि हम मनोविज्ञान की अध्ययन पद्धतियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—(अ) आत्मगत पद्धतियाँ (Subjective Methods) एवं (ब) विधेयात्मक पद्धतियाँ (Objective Methods)। आत्मगत पद्धतियां दो हैं—(१) अन्तर्निरीक्षणात्मक पद्धति एवं (२) अन्तरानुभवों की संचय पद्धति। वस्तुगत पद्धतियाँ ६ हैं—(१) बाह्य निरीक्षणात्मक, (२) प्रयोगात्मक, (३) तुलनात्मक, (४) विकासात्मक, (५) व्यक्ति इतिहास, (६) मनोविक्रियात्मक, (७) सांख्यकी, (८) परीक्षण एवं (९) प्रश्नावली पद्धति। मनोवैज्ञानिकों का कर्तव्य है कि वे इन पद्धतियों को अधिक से अधिक वैज्ञानिक ढंग से प्रयोग करने का प्रयास करें ताकि इनसे प्राप्त परिणामों की 'सत्यता' (Validity), 'विश्वसनीयता' (Reliability) एवं 'प्रतिपन्नता' (Accuracy) में किसी प्रकार की शंका न रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

७

मनोविज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध

[Relation of Psychology with other Sciences]

प्रश्न संख्या—७

मनोविज्ञान का शरीरविज्ञान, जीवविज्ञान, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, दर्शन, नीतिशास्त्र और तर्कशास्त्र से सम्बन्ध बतलाइए।

Discuss the relation of Psychology with Psychology, Biology, Sociology Anthropology, Philosophy, Ethics and Logic.

भूमिका (Introduction)

श्री जे० पी० गिलफोर्ड (J. P. Guilford) ने अपनी पुस्तक जेनरल साइकोलॉजी (General Psychology) में समस्त विज्ञानों को चार भागों में विभाजित किया है—[१] सामाजिक विज्ञान (Social Sciences)—यथा राजनीतिशास्त्र (Political Science), अर्थशास्त्र (Economics), मानवशास्त्र (Anthropology) तथा समाजशास्त्र (Sociology), [२] मानसिक विज्ञान (Mental Sciences) यथा नीतिशास्त्र (Ethics), सौन्दर्यशास्त्र (Aesthetics), तर्कशास्त्र (Logic) तथा मनोविज्ञान (Psychology), [३] जैविक विज्ञान (Biological Sciences) यथा दैहिक विज्ञान (Physiology), जन्तु विज्ञान (Zoology) तथा वनस्पति विज्ञान (Botany), [४] भौतिक विज्ञान (Physical Sciences) यथा भौतिक शास्त्र (Physics) रसायन शास्त्र (Chemistry) आदि (अगले पृष्ठ में तालिका द्वारा विज्ञानों का यह वर्गीकरण प्रस्तुत किया गया है)। इन विज्ञानों में भौतिक विज्ञान अन्य सभी विज्ञानों की आधारशिलाएं हैं। मनोविज्ञान एक ओर भौतिक विज्ञानों से सम्बन्धित है। क्योंकि इन्हीं विज्ञानों ने उसे अध्ययन की विधि प्रदान की है जिसको अपनाकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विज्ञानों के वर्गीकरण
(Classification of Sciences)

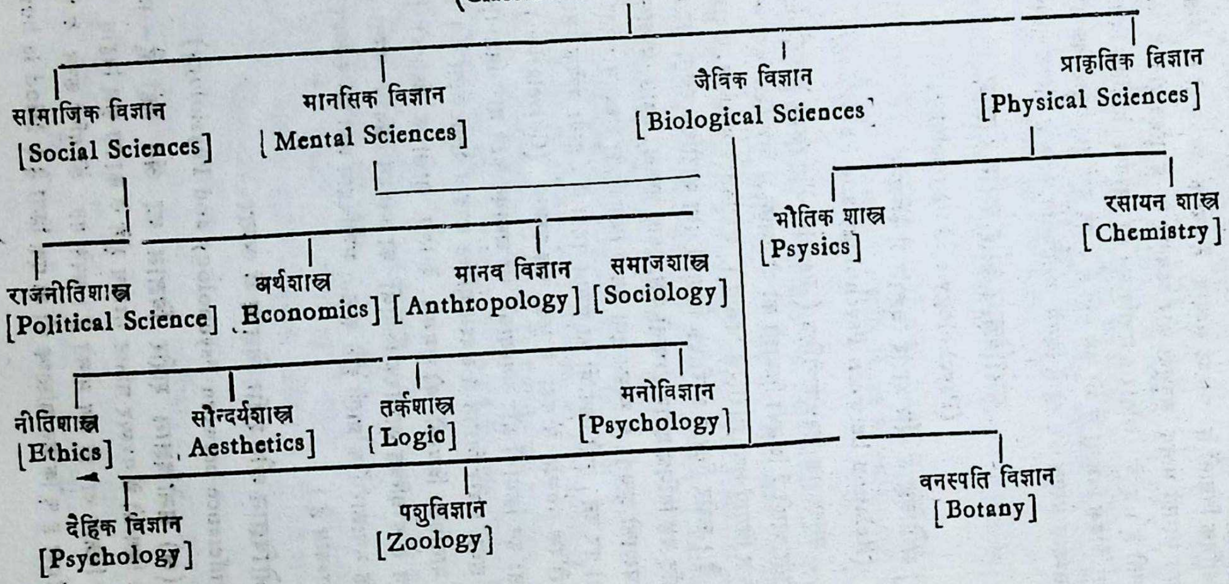

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसने एक स्वतन्त्र विज्ञान के रूप में अस्तित्व कायम किया है, और दूसरे इसका सामाजिक विज्ञानों से घनिष्ट सम्बन्ध है क्योंकि उन सभी के अन्तर्गत आने वाली विषय सामग्री मानव अनुभूति और व्यवहार से प्रभावित होती है और स्वयं प्रभाव डालती है। इसके अतिरिक्त मनोविज्ञान का सम्बन्ध मानसिक विज्ञानों से तो है ही किन्तु जैविक विज्ञानों से भी कम नहीं है। अब हम कुछ प्रमुख विज्ञानों से मनोविज्ञान का सम्बन्ध प्रस्तुत कर रहे हैं जिनसे मनोविज्ञान का अति घनिष्ट सम्बन्ध है।

मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान

(Psychology and Physiology)

[अ] मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान में सम्बन्ध

(Relation between Psychology and Physiology)

मनुष्य एक मनः शारीरिक (Psycho-Physical) प्राणी है अर्थात् मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जिसकी क्रियाओं को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—मानसिक क्रियाएँ तथा शारीरिक क्रियाएँ। मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। शरीर विज्ञान शारीरिक क्रियाओं तथा शारीरिक रचना का अध्ययन करता है अर्थात् यह विभिन्न शरीर संस्थानों जैसे, स्नायु मण्डल, श्वास, प्रश्वास, रक्त संचार ग्रन्थि प्रणाली इत्यादि के स्वरूप तथा उनकी क्रियाओं का अध्ययन करता है। मानसिक क्रियाओं पर इन सभी क्रियाओं का प्रभाव पड़ता है। प्रायः प्रत्येक मानसिक अवस्था का शारीरिक अवस्था से कुछ न कुछ सह-सम्बन्ध (Correlation) अवश्य रहता है। अतः इन क्रियाओं और अवस्थाओं का अध्ययन करने वाले विज्ञानों—यथा मनोविज्ञान तथा शरीर विज्ञान में अवश्य घनिष्ट सम्बन्ध पाया जाता है। इसलिए मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं को समझने के लिए शारीरिक क्रियाओं विशेष तौर से स्नायुतन्त्र से सम्बन्धित शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन अवश्य करता है। संक्षेप में मनुष्य के मनःशारीरिक प्राणी होने के नाते मनोविज्ञान तथा शरीर-विज्ञान का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है।

[ब] मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान में अन्तर

(Difference between Psychology and Physiology)

(अ) मनोविज्ञान शरीर विज्ञान का अंग नहीं है—मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं में परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध होने के कारण कुछ विद्वान् मनोविज्ञान को शरीर विज्ञान का ही अंग मानते हैं। अपने मत की पुष्टि करने के लिए उन्होंने यह तर्क दिया है चूँकि मन मस्तिष्क की ही एक क्रिया है (Mind is but a func-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

tion of the brain) अर्थात् चेतना जड़ शरीर की विभिन्न क्रियाएँ हैं—इसीलिए मनोविज्ञान कोई प्रथक विज्ञान न होकर शरीर विज्ञान का ही एक अंग है। किन्तु यह दृष्टिकोण तथ्यात्मक एवं तार्किक दोनों दृष्टिकोणों से असंगत है। यह सत्य है कि मानसिक क्रियाओं को समझने में शारीरिक क्रियाओं को समझने से सहायता मिलती है किन्तु दोनों को हम एक तो नहीं कह सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि मनोविज्ञान शरीरविज्ञान का एक अंग न होकर एक प्रथक विज्ञान है।

(ब) मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान में अन्तर—मनोविज्ञान तथा शरीर विज्ञान में निम्नलिखित प्रमुख अन्तर हैं—

(१) अध्ययन क्षेत्र में अन्तर—मनोविज्ञान का प्रमुख अध्ययन क्षेत्र मानसिक क्रियाएँ तथा उनकी बाह्य अभिव्यक्ति है। शरीर विज्ञान का अध्ययन क्षेत्र शारीरिक क्रियाएँ हैं।

(२) दृष्टिकोण में अन्तर—मनोविज्ञान तथा शरीर विज्ञान दोनों के दृष्टिकोणों में अन्तर है। शरीर शास्त्र शरीर की भिन्न-भिन्न रूप से अध्ययन करता है। किन्तु मनोविज्ञान बाह्य उत्तेजना के प्रति सम्पूर्ण शरीर की प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है। व्यवहारवाद (Behaviourism) के जन्मदाता वाटसन (Watson) ने इसी आधार पर मनोविज्ञान तथा शरीर विज्ञान में भेद किया है।

[स] शरीर विज्ञान से सम्बन्धित मनोविज्ञान की कुछ शाखाएँ
(Some Branches of Psychology Related to Physiology)

जैसा कि हम सबसे पहले बता चुके थे कि मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध के कारण मनोविज्ञान की निम्नलिखित शाखाओं का विकास हुआ।

(१) दैहिक या शारीरिक मनोविज्ञान (Physiological Psychology)—यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जो मानसिक क्रियाओं के देहिक आधार का अध्ययन करती हैं। हॉफडिंग (Hoffding) के शब्दों में "शारीरिक मनोविज्ञान मानसिक जीवन के सामान्य दैहिक जीवन से निकट सम्बन्ध पर आधारित है।"* देहिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत हम मानसिक क्रियाओं से सम्बन्धित शारीरिक क्रियाओं का अध्ययन करते हैं। स्नायुतन्त्र, श्वासक्रिया, रक्तसंचालन, ग्रन्थियाँ, ज्ञानेन्द्रियाँ, माँसपेशियाँ इत्यादि देहिक मनोविज्ञान के प्रमुख अध्ययन विषय

---

*"'Physiological Psychology is based upon the close connection of mental life with organic life in general."

—Hoffding.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं जो मानसिक क्रियाओं के प्रमुख आधार हैं। इन सबका अध्ययन शरीर-विज्ञान भी करता है किन्तु उसका दृष्टिकोण दैहिक मनोविज्ञान से प्रथक है।

(२) मनोभौतिक विज्ञान (Psycho-physics)—मनोभौतिक विज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न शारीरिक क्रियाओं का सूक्ष्मतम परिणामात्मक (Quantitative) अध्ययन किया जाता है। इसके अन्तर्गत विशेषतौर से यह पता लगाया जाता है कि भिन्न-भिन्न इन्द्रियों की विभिन्न उत्तेजनाओं में कम से कम कितना अन्तर हो कि उनका प्रत्यक्षीकरण हो सके।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मनोविज्ञान और शरीर विज्ञान यद्यपि भिन्न-भिन्न विज्ञान हैं किन्तु दोनों में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। वुडवर्थ (Woodworth) ने इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है **"इन दोनों विज्ञानों के मध्य की रेखाएँ दो भिन्न राज्यों की सीमाओं के समान हैं और किनारे के आरपार बहुत से यातायात की अनुमति देती हैं।"**

"The lines between these sciences are like the boundaries between friendly states and allow much of traffic across the border." —**Woodworth.**

मनोविज्ञान और जीवविज्ञान
(Psychology and Biology)

[अ] मनोविज्ञान और जीवविज्ञान का सम्बन्ध
(Relation between Psychology and Biology)

मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। जीवविज्ञान जीवित वस्तुओं के जीवन सम्बन्धी तत्वों तथा क्रियाओं का अध्ययन करता है। जीव विज्ञान मनुष्य की उत्पत्ति और उसके प्राणीशास्त्रीय विकास का अध्ययन करता है। वह मनुष्य की यौन, प्रजातीय, शारीरिक तथा व्यक्तिगत विशेषताओं की व्याख्या करता है। इसके अतिरिक्त जीवविज्ञान पर्यावरण से उसके अनुकूलन के सिद्धान्तों को स्पष्ट करता है। उदाहरण के लिये डार्विन ने अपने विकासवाद के अन्तर्गत जो जैविक सिद्धान्त जैसे अस्तित्व के लिये संघर्ष (Struggle for Existence), योग्यतम की जीत (Survival of the Fittest) आदि प्रस्तुत किये हैं वे विकासवाद के अन्तर्गत ही आते हैं। मनुष्य की मानसिक क्रियाएँ सदैव जैविक प्राणीशास्त्रीय क्रियाओं से प्रभावित होती हैं, मनुष्य जो व्यवहार करता है वह सदैव जैविक सिद्धान्तों पर आधारित होता है। यदि हम किसी भी मानसिक क्रिया को समझना चाहते हैं तो हमें उससे सम्बन्धित जैविक क्रिया का अवश्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्ययन करना होगा। अतः स्पष्ट है कि मनोविज्ञान और जीवविज्ञान का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है।

[ब] मनोविज्ञान एवं जीवविज्ञान में अन्तर
(Difference between Psychology and Biology)

उपर्युक्त शब्दों से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान तथा जीवविज्ञान में घनिष्ट सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अतिशयोक्ति के रूप में देखने की चेष्टा की है। प्रसिद्ध व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक डा० जे० बी० **वाटसन** (Dr. J. B. Watson) ने पशुमनोविज्ञान पर विशेष बल दिया और मानव व्यवहार की व्याख्या केवल **उत्तेजना-प्रक्रिया** (Stimulus-response) के रूप में की। किन्तु मानव व्यवहार के सम्बन्ध में यह दृष्टिकोण अपूर्ण है। वास्तव में व्यवहार को समझने के लिए उत्तजना-प्रतिक्रिया के साथ-साथ हमें आन्तरिक अनुभवों को भी स्थान देना होगा। इस प्रकार जैविक क्रियाओं के आधार पर व्यवहार की पूर्ण व्याख्या नहीं कर सकते हैं। अतः स्पष्ट है कि मनोविज्ञान तथा जीवविज्ञान में कुछ आधारभूत अन्तर अवश्य हैं। ये अन्तर निम्नलिखित शब्दों में सुस्पष्ट किए जा सकते हैं :—

(१) अध्ययन क्षेत्र में अन्तर—मनोविज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत केवल मानसिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। अन्य क्रियाओं का अध्ययन उसी सीमा तक किया जाता है जिस सीमा तक वे मानसिक क्रियाओं को प्रभावित करती हैं।

(२) दृष्टिकोण में अन्तर—मनोविज्ञान मनुष्य का एक व्यक्ति के रूप में अध्ययन करता है। जबकि जीवविज्ञान मनुष्य को एक जीव-मात्र (Living Being) मानकर उसका अध्ययन करता है।

इस प्रकार मनोविज्ञान तथा जीव-विज्ञान में परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध होते हुए दोनों में कुछ आधारभूत अन्तर हैं।

मनोविज्ञान और समाजशास्त्र
(Psychology and Sociology)

[अ] मनोविज्ञान और समाजशास्त्र का सम्बन्ध
(Relation between Psychology and Sociology)

समाजशास्त्र समाज (Society) व सामाजिक सम्बन्धों (Social Relationships) का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान मानवीय अनुभूतियों तथा व्यवहारों का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक सम्बन्धों के मनोवैज्ञानिक आधारों को समझना पड़ता है। यह आधार मानवीय अनुभूतियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एवं व्यवहारों के अध्ययन से ज्ञात होता है। इसी प्रकार मानवीय अनुभूतियों तथा व्यवहार को समझने के लिये सामाजिक सम्बन्धों को जानना आवश्यक हो जाता है। इस प्रकार मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र दोनों एक दूसरे को सहायता पहुँचाते हैं। मैकाइवर तथा पेज ने ठीक ही लिखा है **"समाजशास्त्र विशेषरूप से मनोविज्ञान को सहायता देता है जिस प्रकार मनोविज्ञान समाजशास्त्र को विशेष सहायता देता है।"**

"Sociology in special gives aid to psychology, just as psychology gives special aid to sociology." —**R. M. MacIver.**

[ब] मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में समानता

(Similarity between Psychology and Sociology)

मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र में घनिष्ट सम्बन्ध ही नहीं है बल्कि कई मामलों में दोनों में समानता भी है। ये समानताएँ निम्नलिखित हैं—

(१) मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र दोनों के विषय-क्षेत्र में पर्याप्त साम्य है। मनोविज्ञान मानसिक क्रियाओं का अध्ययन करता है और समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। ये सामाजिक सम्बन्ध मानसिक क्रियाएँ ही होती हैं।

(२) दोनों ही वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग करते हैं।

(३) दोनों ही यथार्थ (Positive) विज्ञान हैं।

(४) दोनों ही अन्य विज्ञानों की अपेक्षा भविष्यवाणी करने की अधिक क्षमता रखते हैं।

(५) दोनों ही का तटस्थता (Objectivity) रखना कठिन है।

[स] मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में अन्तर

(Difference between Psychology and Sociology)

मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में उक्तवर्णित समानताएँ होते हुए निम्नलिखित महत्वपूर्ण अन्तर हैं:—

(१) **क्षेत्र में अन्तर**—मनोविज्ञान व्यक्ति की व्यक्तिगत अनुभूति तथा व्यवहार का अध्ययन करता है। समाजशास्त्र समाज में पाये जाने वाले सम्बन्धों का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान का सम्बन्ध व्यक्ति से है और समाजशास्त्र का सम्बन्ध समाज से है।

(२) **व्यवहार के आधार में अन्तर**—मनोविज्ञान के अनुसार व्यक्ति के प्रत्येक व्यवहार का आधार व्यक्ति का मन या चेतना है। समाजशास्त्र के अनुसार सामाजिक व्यवहारों का आधार व्यक्ति की समूह में रहने की प्रवृत्ति है।

(३) **दृष्टिकोण में अन्तर**—उपर्युक्त वाक्यों से स्पष्ट है कि मनोविज्ञान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

12253

का दृष्टिकोण व्यक्तिगत है और समाजशास्त्र का दृष्टिकोण सामाजिक है। मैकाइवर (MacIver) ने इस ओर संकेत करते हुए लिखा है "यह केवल सामान्य सामग्री की ओर दृष्टिकोण का अन्तर है।"*

(४) पद्धतियों में अन्तर—दोनों की अध्ययन पद्धतियाँ अलग-अलग होती हैं।

[द] समाज मनोविज्ञान और समाजशास्त्र
(Social Psychology and Sociology)

(अ) समाज मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में सम्बन्ध—मनोविज्ञान की एक शाखा समाज मनोविज्ञान (Social Psychology) समाजशास्त्र के अति निकट है। यदि हम यह कहें कि मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में जो सम्बन्ध है उसके ही परिणामस्वरूप समाज मनोविज्ञान की उत्पत्ति हुई तो अनुचित न होगा। इसीलिये समाजशास्त्र और मनोविज्ञान दोनों समाज मनोविज्ञान को अपनी शाखा मानते हैं। क्रच (Krech) तथा क्रचफील्ड (Crutchfield) के अनुसार "समाज मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।"† यही स्थिति लगभग समाजशास्त्र की भी है। इसीलिए कार्ल पियर्सन (Karl Pearson) ने इन दोनों विज्ञानों में कोई अन्तर नहीं माना है। मोटवानी (Motwani) के अनुसार "समाज मनोविज्ञान, मनोविज्ञान और समाजशास्त्र के बीच की एक कड़ी है।"** लेपियर तथा फ्रान्सवर्थ (Lapiere and Fransworth) ने समाज मनोविज्ञान तथा समाजशास्त्र में घनिष्ट सम्बन्ध बतलाते हुए लिखा है "समाज मनोविज्ञान के लिए उसी प्रकार है जिस प्रकार शारीरिक रसायनशास्त्र जीवशास्त्र एवं रसायनशास्त्र के लिए है।"

"Social Psychology is to Sociology and Psychology as Bio-Chemistry is to Biology and Chemistry."

—Lapiere and Fransworth.

(ब) समाज मनोविज्ञान और समाजशास्त्र में अन्तर (Difference between Social Psychology and Sociology)—उपर्युक्त शब्दों

---

*"It is a difference of attitude in regard to a common material." —R. M. MacIver.

†"Social Psychology is the science of the behaviour of the individual in society." —Krech and Crutchfield.

** "Social Psychology is a link between psychology and sociology." —Motwani.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से स्पष्ट है कि समाज मनोविज्ञान और समाजशास्त्र दोनों में पर्याप्त समानता है। किन्तु दोनों में कुछ आधारभूत अन्तर भी है जो इस प्रकार हैं :—

(१) अध्ययन सामग्री में अन्तर—समाज मनोविज्ञान समाज में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है। जबकि समाजशास्त्र समूह के व्यवहार को अपना अध्ययन केन्द्र मानता है। क्लाइनबर्ग (Klinberg) ने इस तथ्य की ओर संकेत करते हुए लिखा है "इसी समय यह भी सच है कि समाजशास्त्र का भौतिक सम्बन्ध समूह के व्यवहार से और समाज मनोविज्ञान का सामूहिक परिस्थिति में व्यक्ति के व्यवहार से है।"

"At the same time it remains true that the primary concern of the sociologist is group behaviour, and that of the social psychology is the group situations." —**Otto Klinberg.**

(२) दृष्टिकोण में अन्तर—समाज मनोविज्ञान के अन्तर्गत सांस्कृतिक व सामाजिक मूल्यों के प्रति व्यक्ति की अभिवृत्तियों (Attitudes) का अध्ययन किया जाता है। जबकि समाजशास्त्र इन अभिवृत्तियों से सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों व नियमों का अध्ययन करता है। रिवर्स (Rivers) महोदय का विचार है कि दोनों विज्ञानों का परस्पर सम्बन्ध आवश्यक है किन्तु एक विज्ञान को दूसरे विज्ञान पर आधारित नहीं होना चाहिये।

मनोविज्ञान और मानवशास्त्र
(Psychology and Anthropology)

[अ] मनोविज्ञान और मानवशास्त्र में सम्बध
(Relation between Psychology and Anthropology)

क्रोबर (Kroeber) ने मानवशास्त्र की परिभाषा करते हुये लिखा है—"मानवशास्त्र मानव का विज्ञान है।"* जेकब्स तथा स्टर्न के अनुसार **"मानवशास्त्र सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर अब तक के मनुष्यों का शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास एवं व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है।"**† मनोविज्ञान मानव अनुभूतियों तथा व्यवहारों का अध्ययन करता है। मनुष्य की अनुभूतियों तथा व्यवहारों को समझने में मानवशास्त्रीय अध्ययन अति सहायक होता है क्योंकि मनुष्य वर्तमान समय में जो व्यवहार करता है उसके निर्धारण में सृष्टि से लेकर अब तक के

*"Anthropology is the science of man." —**Kroeber.**

†"Anthropology is the scientific study of the physical, social and cultural development and behaviour of human beings science their appearance in earth." —**Jacobs and Sterr.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनुष्यों का शारीरिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास तथा व्यवहार का बहुत बड़ा हाथ होता है। यही विकास तथा व्यवहार व्यक्ति के वातावरण का सृजन करता है जिसके बीच व्यक्ति अनुभूति तथा व्यवहार करता है। मानवशास्त्री भी अपने अध्ययन में मनोविज्ञान से पर्याप्त सहायता लेता है। वह आदि से अब तक के मनुष्यों के विकास तथा व्यवहार को समझने के लिये इस विकास तथा व्यवहार के मनोवैज्ञानिक आधार को समझने का प्रयत्न करता है। वह व्यक्ति के वर्तमान मनोवैज्ञानिक अध्ययन के आधार पर आदि मनुष्यों के व्यवहार को समझने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार मनोविज्ञान और मानवशास्त्र का घनिष्ट सम्बन्ध है।

[ब] मनोविज्ञान और मानवशास्त्र में अन्तर

(Difference between Psychology and Anthropology)

मनोविज्ञान और मानवशास्त्र से घनिष्ट सम्बन्ध होते हुए भी दोनों में निम्नलिखित आधारभूत अन्तर पाये जाते हैं :—

(१) मनोविज्ञान मनुष्य के वातावरण की उत्तेजनाओं के प्रति प्रतिक्रिया का अध्ययन करता है। मानवशास्त्र मानव सभ्यता तथा संस्कृति के इतिहास का अध्ययन करता है।

(२) मनोविज्ञान मनुष्य की क्रियाओं और उनके मूल में छिपी हुई प्रेरणाओं का अध्ययन करता है। मानवशास्त्र मनुष्य की उत्पत्ति का इतिहास ढूंढ़ता है।

(३) मनोविज्ञान वातावरण के साथ वंशानुक्रम का भी अध्ययन करता है। मानवशास्त्र मनुष्य के सम्पूर्ण वातावरण का अध्ययन करता है।

(४) मनोविज्ञान सभ्य और आदि मनुष्यों के व्यवहार में कोई अन्तर नहीं करता है। मनोविज्ञान मनुष्य कैसे सभ्य तथा सुसंस्कृत हुआ इसका क्रमबद्ध इतिहास प्रस्तुत करता है।

(५) मनोविज्ञान मनुष्य की सभ्यता एवं संस्कृति के स्थान पर मनुष्य की प्रकृति पर अधिक बल देता है। मानवशास्त्र मनुष्य की सभ्यताओं और संस्कृतियों के अवशेषों (Relics) के आधार पर प्राचीन सभ्यताओं एवं संस्कृतियों का वर्णन करता है।

[स] समाज मनोविज्ञान और मानवशास्त्र में सम्बन्ध

(Relation between Social Psychology and Anthropology)

मनोविज्ञान की एक शाखा समाज मनोविज्ञान का मानवशास्त्र से अति घनिष्ट सम्बन्ध है। मानवशास्त्र एक विस्तृत विज्ञान है जिसको अग्रलिखित दो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भागों में विभाजित किया जा सकता है—(१) शारीरिक मानवशास्त्र (Physical Anthropology) तथा (२) सांस्कृतिक मानवशास्त्र (Cultural Anthropology)। आगे हम मानवशास्त्र की इन दोनों शाखाओं के साथ मनोविज्ञान का सम्बन्ध प्रस्तुत करेंगे।

(१) समाज मनोविज्ञान और शारीरिक मानवशास्त्र (Social Psychology and Physical Anthropology)—शारीरिक मानवशास्त्र प्रजाति के सम्बन्ध में विशेष रूप से अध्ययन करता है। मनुष्यों के सामाजिक व्यवहार को समझने के लिये समाज मनोविज्ञान को शारीरिक लक्षणों का अध्ययन करना आवश्यक है। अतः समाज मनोविज्ञान प्रजाति मनोविज्ञान में रुचि रखता है। इसके लिये उसे शारीरिक मानवशास्त्र से सहायता लेनी पड़ती है।

(२) समाज मनोविज्ञान और सांस्कृतिक मानवशास्त्र (Social Psychology & Culturat Anthropology)—सांस्कृतिक मानवशास्त्र संस्कृति का विज्ञान है। हॉबल के शब्दों में "संस्कृति सीखे हुए व्यवहार प्रतिमानों का कुलयोग है।"† समाज मनोविज्ञान मनुष्य और उसके सामाजिक सांस्कृतिक वातावरण के मध्य उत्पन्न सम्बन्धों का अध्ययन करता है। अतः समाज मनोविज्ञान व्यक्ति का व्यवहार तभी समझ सकता है जबकि उस व्यक्ति के समाज एवं संस्कृति को समझा जाय। समाज मनोविज्ञान के प्रायः सभी विषयों जैसे व्यक्तित्व, पक्षपात, जनमत प्रचार, फैशन इत्यादि को समझने के लिए सांस्कृतिक मानवशास्त्र का अध्ययन अति आवश्यक है। इसी प्रकार सांस्कृतिक मानव व्यवहार तथा मानव प्रकृति को समझने के लिए समाज मनोविज्ञान से सहायता लेता है। यही मानव व्यवहार तथा मानव प्रकृति सभी संस्कृतियों की आधार होती है। रैडिन महोदय का कथन है "मुझे यह स्पष्ट करने दो······जो शायद संस्कृतियों के समस्त अनुसंधानों का मुख्य अंग है। क्या हम कभी किसी संषतोजनक ज्ञान, जो मानव व्यवहार की संरचना करता है, पर पहुँच सकते हैं ?"

"Let me refer......to what is perhaps the core of all investigations of cultures can we ever arrive at any satisfactory knowledge of what constitute human nature." —Radin.

---

†"Culture is the sum total of learned behaviour pattern." —Hoebel.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मनोविज्ञान और दर्शन
(Psychology and Philosophy)

[अ] मनोविज्ञान और दर्शन का सम्बन्ध
(Relation between Psychology and Philosophy)

प्राचीनकाल से लगभग १६वीं शताब्दी तक मनोविज्ञान दर्शन का अङ्ग बना रहा है। अतः यदि हम यह कहें कि मनोविज्ञान की दर्शन से उत्पत्ति हुई तो अनुचित न होगा। दर्शनशास्त्र, आत्मा, परमात्मा, अन्तिमसत्ता, ज्ञान के प्रमाण और साधन, मूल्यों इत्यादि का अध्ययन करता है। मनोविज्ञान ने सदैव से आत्मा के स्वरूप को समझने तथा ज्ञान के प्रमाणों और साधनों का अध्ययन करने में दर्शनशास्त्र की सहायता की है। आज जब मनोविज्ञान ने आत्मा को छोड़कर अनुभूति तथा व्यवहार के विज्ञान के स्वरूप में अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित कर लिया है वह दर्शन से घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है। जैसे-जैसे दर्शनशास्त्र कोरी कल्पना न रहकर व्यावहारिक विज्ञान का रूप ग्रहण करता जा रहा है वैसे-वैसे उसका मनोविज्ञान से और अधिक सम्बन्ध गूढ़ होता जा रहा है। अब दर्शन पहिले की भांति पुनः विश्व के उद्देश्यों को खोजने, मूल्यों को निर्धारित करने, आत्मा तथा परमात्मा के अस्तिव के सम्बन्ध में जानने, ज्ञान के स्रोतों को समझने इत्यादि में मनोविज्ञान से सहायता लेता है। इसी प्रकार मनोविज्ञान में बहुत से प्रश्नों का उत्तर देने में दर्शन की सहायता ली जाती है। इसलिए मन (Munn) ने लिखा है "......मनोविज्ञान एवं दर्शन के बीच सदैव काफी समानता रहेगी।"

"...psychology and philosophy will always have a great deal in common."
—N. L. Munn.

[ब] मनोविज्ञान और दर्शन में अन्तर
(Difference between Philosophy and Psychology)

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि किस प्रकार मनोविज्ञान और दर्शन का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध के कारण कुछ लोग मनोनिज्ञान को दर्शन की एक शाखा मान लेते हैं। किन्तु वास्तविकता यह है कि दोनों विज्ञान प्रथक-प्रथक हैं। दोनों में निम्नलिखित मुख्य अन्तर पाये जाते हैं—

(१) क्षेत्र में अन्तर—मनोविज्ञान का अध्ययन-क्षेत्र व्यक्ति उसकी चिन्तन प्रणाली, संवेदना, संवेगात्मक परिपक्वता (Emotional Maturity), व्यक्तित्व इत्यादि है। दर्शन का अध्ययन-क्षेत्र आत्मा, परमात्मा संसार की रचना का उद्देश्य जीवन का लक्ष्य तथा मूल्य, आत्मोन्नति के उपाय, जीव एवं जगत के सम्बन्धों का निरूपण, ज्ञान के प्रमाण इत्यादि हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) व्यापकता में अन्तर—जैसा कि अध्ययन क्षेत्र से पता लगता है कि दर्शन एक व्यापक विज्ञान है। जबकि मनोविज्ञान एक सीमित विज्ञान है।

(३) जन्म में अन्तर—दर्शन का जन्म पहिले हुआ। यह सभी विज्ञानों का मूलस्रोत है। मनोविज्ञान का जन्म दर्शन से हुआ। इसीलिये प्रायः मनोविज्ञान को दर्शन की सन्तान (Son of Philosophy) कहा जाता है।

(४) प्रकृति में अन्तर—मनोविज्ञान और दर्शन दोनों की प्रकृति में अन्तर है। मनोविज्ञान की प्रकृति दार्शनिक न होकर वैज्ञानिक है।

(५) दृष्टिकोण में अन्तर—दर्शन का दृष्टिकोण समग्र एवं समन्वयवादी होता है, जबकि मनोविज्ञान का दृष्टिकोण सीमित तथा विश्लेषणात्मक होता है।

(६) लक्ष्य में अन्तर—दर्शन का उद्देश्य सत्यं, शिवं, सुन्दरम् की खोज करना है। मनोविज्ञान का उद्देश्य मानव अनुभूति तथा व्यवहार की व्याख्या करना है।

(७) पद्धति में अन्तर—मनोविज्ञान निरीक्षण (Observation), परीक्षण (Experimentation) इत्यादि वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग करता है। दर्शन श्रवण, मनन, निदिध्यासन, तर्क, सहज, ज्ञान (Intuition) इत्यादि विधियों का प्रयोग करता है।

मनोविज्ञान और नीतिशास्त्र
(Psychology and Ethics)

[अ] मनोविज्ञान और नीतिशास्त्र का सम्बन्ध
(Relation between Psychology and Ethics)

नीतिशास्त्र का मनोविज्ञान से अति घनिष्ठ सम्बन्ध है। नीतिशास्त्र मानव व्यवहार का नियामक विज्ञान है। यह मानव जीवन के परम लक्ष्य अर्थात् परम हित के स्वरूप का निर्णय करता है। यह परम शुभ के मानदण्ड को निश्चित करता है जिसके द्वारा हमें अपने संकल्पों और कार्यों का निर्धारण करना चाहिए। यह हमें बताता है कि हमारे लिए कौन से संकल्प करना वांछनीय हैं और कौन से नहीं। किन्तु यह जानने के पूर्व हमें यह समझ लेना आवश्यक है कि यथार्थ में संकल्प कैसे करते हैं। यह जानकारी हमें मनोविज्ञान के द्वारा होती है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान हमें बताता है कि हम संकल्प कैसे करते हैं। अतः यह स्पष्ट है कि नीतिशास्त्र को नैतिकता का मनोवैज्ञानिक आधार ज्ञात करने के लिए मनोविज्ञान पर निर्भर होना पड़ता है। यदि हम मनोविज्ञान का सहारा लिए नैतिकता का निर्माण करते हैं तो यह नैतिकता र्ण रअहेगीम और इसे कार्यान्वित रूप न दिया जा सकेगा। इस प्रकार नीतिशास्त्र का ननोविज्ञ ापूसे निकटतम सम्बन्ध है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] मनोविज्ञान और नीतिशास्त्र में अन्तर
(Difference between Psychology and Ethics)

यह तो ठीक है कि नीतिशास्त्र को मनोविज्ञान पर आधारित होना चाहिये किन्तु यह कहना कि जैसा कि कुछ सुखवादी कहते हैं कि नीतिशास्त्र मनोविज्ञान की एक शाखा है बिलकुल गलत है। स्टाउट (Stout) महोदय दोनों में अन्तर प्रस्तुत करते हुए लिखते हैं "नीतिशास्त्र यह नहीं पता लगाता कि हम यथार्थ में कैसे संकल्प करते हैं बल्कि यह कि हमें संकल्प कैसे करना चाहिए। दूसरी ओर मनोविज्ञान औचित्य अथवा अनौचित्य अथवा उनकी सम्भव बनाने वाली परम अवस्थाओं के प्रसंग के बिना ही केवल संकल्प की उस प्रक्रिया की खोज करता है, जो कि यथार्थ में होती है।"* मनोविज्ञान तथा नीतिशास्त्र में निम्नलिखित महत्वपूर्ण अन्तर हैं :—

(१) क्षेत्र में अन्तर—नीतिशास्त्र की अपेक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र व्यापक है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत ज्ञान, भावना तथा संकल्प तीनों ही प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। जबकि नीतिशास्त्र का सम्बन्ध केवल संकल्प से है। यदि वह कहीं ज्ञान एवं भावना का अध्ययन करता है तो केवल संकल्प के प्रसंग में।

(२) प्रकृति में अंतर—मनोविज्ञान एक तथ्यात्मक और विधायक (Positive) विज्ञान है और नीतिशास्त्र एक आदर्शात्मक और नियामक (Normative) विज्ञान है। दूसरे शब्दों में मनोविज्ञान 'है' (Is) से सम्बन्धित है और नीतिशास्त्र 'चाहिये' (Ought) से। सेथ (Seth) का कथन है कि नीतिशास्त्र 'चाहिये' का सर्वोत्कृष्ट विज्ञान है।

(३) दृष्टिकोण में अंतर—मनोविज्ञान नैतिक तथ्यों का अध्ययन मानसिक तथ्यों के रूप में करता है, जबकि नीतिशास्त्र मनोवैज्ञानिक तथ्यों का अध्ययन नैतिक दृष्टिकोण से करता है।

मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र
(Psychology and Logic)

[अ] मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र में सम्बन्ध
(Relation between Psychology and Logic)

तर्कशास्त्र विचारों का विज्ञान है। इसके अन्तर्गत हम प्रत्यक्ष (Concept), अनुमान (Interference), निर्णय (Judgement) इत्यादि के नियमों

---

*"Ethics inquires how we ought to will not how we actually do will. Psychology 'on the other hand' deals only with the process of volition as it actually occurs, without reference to its rightness or wrongness, or to the ultimate conditions which make rightness and wrongness possible."

—**Stout—Manual Psychology.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिद्धान्तों एवं कसौटियों का अध्ययन करते हैं। इसी प्रकार मनोविज्ञान प्रत्ययन, अनुमान, निर्णय इत्यादि का मनोवैज्ञानिक आधार पर अध्ययन करता है। मनोविज्ञान मानसिक खोज (Mental Exploration) के रूप में तर्क-प्रक्रिया का अध्ययन करता है। तर्कशास्त्र तभी पूर्णता को प्राप्त कर सकता है जबकि वह मनोवैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हो। दूसरी ओर मनोविज्ञान को भी अपने अध्ययन में तर्क प्रणाली का प्रयोग करना पड़ता है। इस प्रकार मनोविज्ञान तथा तर्कशास्त्र दोनों परस्पर घनिष्ठ रूप से सम्बन्वित हैं।

[ब] मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र में अन्तर
(Difference between Psychology and Logic)

मनोविज्ञान और तर्कशास्त्र में निम्नलिखित अन्तर है:—

(१) क्षेत्र में अन्तर—तर्कशास्त्र की अपेक्षा मनोविज्ञान का क्षेत्र विस्तृत है। तर्कशास्त्र केवल विचार प्रक्रिया से सम्बन्धित होता है जबकि मनोविज्ञान विचार, भाव तथा संकल्प तीनों प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।

(२) प्रकृति में अन्तर—तर्कशास्त्र हमें यह बताता है कि हमें कैसे सोचना चाहिये और मनोविज्ञान यह बताता है कि हम कैसे सोचते हैं। इस दृष्टिकोण से तर्कशास्त्र एक नियामक (Nomative) विज्ञान है और मनोविज्ञान एक विधायक (Positive) विज्ञान है।

(३) दृष्टिकोण में अन्तर—मनोविज्ञान का दृष्टिकोण तथ्यात्मक है जबकि तर्कशास्त्र का दृष्टिकोण नियामक है।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने मनोविज्ञान का शरीरशास्त्र, जीव-विज्ञान, समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, दर्शन, नीतिशास्त्र तथा तर्कशास्त्र से सम्बन्ध स्पष्ट किया जिससे पता चलता है कि जहाँ एक ओर इन सभी विज्ञानों की विषय-सामग्री के अध्ययन में मनोविज्ञान से सहायता ली जाती है वहाँ दूसरी ओर मनोविज्ञान भी अपनी विषय-सामग्री अर्थात् मानव अनुभूति तथा व्यवहार को समझने में इन सभी विज्ञानों से सहायता लेता है। एक ओर मनोविज्ञान और इन सभी विज्ञानों में समानता पाई जाती है तो दूसरी ओर मनोविज्ञान और इन विज्ञानों में महत्वपूर्ण अन्तर भी पाये जाते हैं। अन्त में इतना कहना पर्याप्त होगा कि मनोविज्ञान तथा अन्य विज्ञानों में कितना भी अन्तर क्यों न हो किन्तु कोई भी वैज्ञानिक जब तक मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों से परिचित न होगा तब तक उसका अध्ययन कम से कम सामाजिक और मानसिक विज्ञानों में अपूर्ण रहेगा।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८

प्रतिक्रिया यन्त्र–स्नायु मण्डल

[Response Mechanism—Nervous System]

प्रश्न संख्या—८

प्रतिक्रिया यन्त्र से आप क्या समझते हो ? स्नायु-मण्डल का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

What do you know by Response Mechanism ? Describe briefly the nervous system.

भूमिका (Introduction)

मस्तिष्क एवं शरीर (Mind and body) का पारस्परिक बहुत घनिष्ट सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे को निरन्तर प्रभावित करते हैं। यदि हमारा मस्तिष्क क्लेशावस्था में है तो हमें भूख-प्यास का अनुभव तक नहीं होता है। इसी प्रकार यदि हमारा शरीर रोगावस्था में है तो हमारा मस्तिष्क शिथिल हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि हम मस्तिष्क विहीन-शरीर एवं शरीर विहीन-मस्तिष्क की कल्पना तक नहीं कर सकते हैं। इसीलिए व्यवहार एवं अनुभव की दशाओं को अच्छी तरह से समझ लेने के लिए दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध समझना नितान्त आवश्यक प्रतीत होता है। यह समझने के लिए हमें प्रतिक्रिया यन्त्र (Response Mechanism) को समझना होगा। अब हम इस प्रश्न में पहिले प्रतिक्रिया यन्त्र का अर्थ प्रस्तुत करेंगे और इसके उपरान्त प्रतिक्रिया यन्त्र के विभिन्न अंगों यथा ग्राहक (Receptors), स्नायु-मण्डल (Nervous System) तथा प्रभावक (Effectors) पर प्रकाश डालेंगे।

प्रतिक्रिया यन्त्र का अर्थ

(Meaning of Response Mechanism)

प्राणी कुछ ऐसे विशेष अवयव होते हैं जिनके कारण उसकी मानसिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रिया सम्भव होती है। इन अवयवों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—प्रथम भाग ज्ञानेन्द्रियों का एवं द्वितीय भाग स्नायविक एवं क्रियात्मक अवयवों का। यहाँ पर हमारा सम्बन्ध केवल द्वितीय भाग के अवयवों अर्थात् स्नायविक एवं क्रियात्मक अवयवों से है। इन अवयवों के तीन वर्ग हुआ करते हैं, (१) ग्राहक (Receptors) जिनके द्वारा प्राणी में उत्तेजना की क्रिया प्रारम्भ हुआ करती है (२) स्नायु-मण्डल (Nervous System) जिससे प्राणी का व्यवहार परिचालित एवं नियन्त्रित होता है एवं (३) प्रभावक (Effectors) जिनके द्वारा प्रतिक्रिया हुआ करती है। इन्हीं तीनों वर्ग के अवयवों के सामूहिक रूप को प्रतिक्रिया-यन्त्र (Response Mechanism) कहते हैं। प्रतिक्रिया-यन्त्र को हम संक्षेप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत कर सकते हैं।

उत्तेजना—ग्राहक—स्नायु-मण्डल—प्रभावक—प्रतिक्रिया
(Stimulus-Receptors-Nervous System-Effectors-Response)

हम जानते हैं कि संसार में समस्त जीवधारियों में समानता नहीं होती है। कुछ जीवधारी निम्नकोटि के होते हैं एवं कुछ उच्चकोटि के। इन निम्न एवं उच्च-कोटि के जीवधारियों में मनुष्य का स्थान सर्वोच्च कोटि का होता है। फलस्वरूप इसका प्रतिक्रिया-यन्त्र अत्यन्त जटिल होता है। अतः यदि हम इसके प्रतिक्रिया-यन्त्र का ज्ञान प्राप्त कर लें तो अन्य जीवधारियों के प्रतिक्रिया-यन्त्र का कुछ न कुछ अनुमान अवश्य लगा लेंगे। अब प्रतिक्रिया-यन्त्र को समझने के लिये उसके प्रत्येक अंग पर अलग-अलग प्रकाश डालेंगे।

ग्राहक (Receptors)

व्यक्ति ग्राहकों द्वारा उत्तेजकों से उत्तेजना को प्राप्त करता है। ये ग्राहक निम्न तीन प्रकार के होते हैं :—

(१) वाह्य ग्राहक (Exteroceptors)—ये ग्राहक व्यक्ति के शरीर के धरातल पर इस तरह से स्थित रहते हैं कि वातावरण की शक्तियों का इन पर सूक्ष्म प्रभाव तक पड़ जाता है। उदाहरण के लिए हमारी आँख की पुतली के धरातल पर स्थित ग्राहक कोषाणु इसी प्रकार के होते हैं।

(२) पूर्वान्त ग्राहक (Proprioceptors)—ये ग्राहक हमारे शारीरिक तत्वों (bodily tissues) में प्रत्येक स्थान पर व्याप्त रहते हैं। उदाहरण के लिये मांसपेशियों में स्थित संवेदना कोषाणु (Sensory cells) इसी प्रकार के ग्राहक हैं जो इनमें गति होने से उत्तेजित हो जाते हैं।

(३) अन्तर्ग्राहक (Interoceptors)—अन्तर्ग्राहक आंतों एवं आमाशय की भीतरी सतह पर उपस्थित रहते हैं जोकि अन्तरावयव-संवेदनाएं ग्रहण किया करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपर्युक्त समस्त ग्राहक ज्ञान-वाही नाड़ी तन्तुओं (Afferent Neurons) के बाह्य सिरों से जुड़े होते हैं। हम ज्ञान-वाही तन्तुओं का स्नायु-मण्डल के अन्तर्गत वर्णन करेंगे।

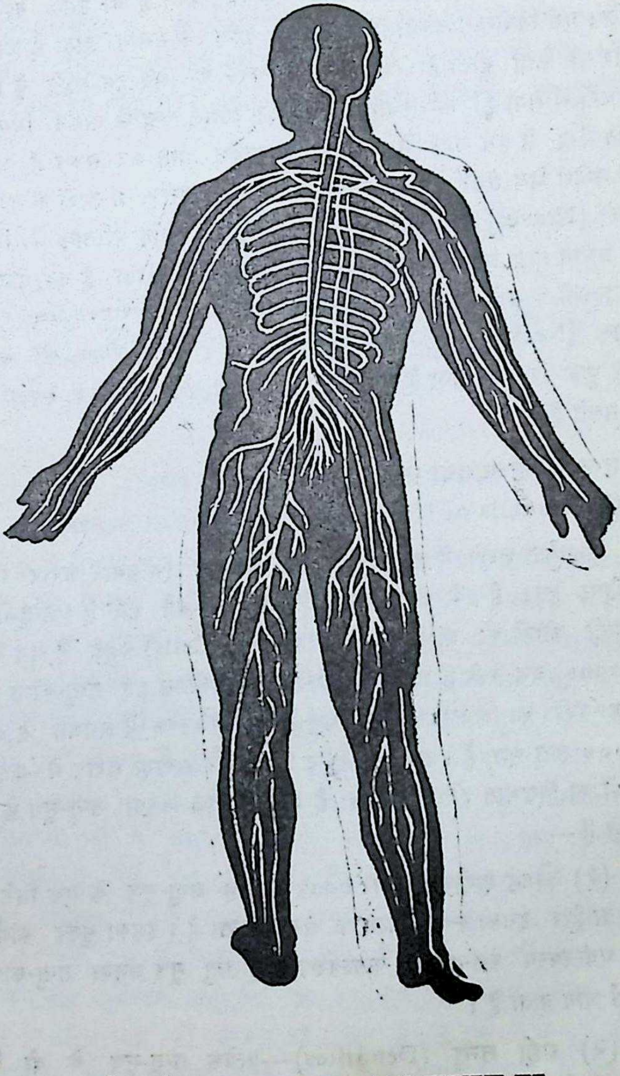

चित्र संख्या १—स्नायु-मण्डल का साधारण रूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्नायु-मण्डल (Nervous System)

[अ] स्नायु-मण्डल का स्वरूप (Nature of Nervous System)

स्नायु-मण्डल व्यक्ति के शरीर का वह भाग है जो उसके व्यवहार को परिचालित एवं नियन्त्रित करता है। यह एक जाल के समान होता है जो हमारे सम्पूर्ण शरीर पर फैला होता है। अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कहते हैं कि जिस प्रकार तारघरों में लगी हुई समस्त तारें किसी एक प्रधान केन्द्र में जाकर मिलती हैं एवं इस प्रधान केन्द्र से हम जहाँ से चाहें वहाँ से सन्देश प्राप्त कर सकते हैं और जहाँ चाहें वहाँ सन्देश भेज सकते हैं ठीक उसी प्रकार हमारे शरीर में तारों के समान फैला हुआ तन्तुओं (Nerves) का जाल एक प्रधान केन्द्र अर्थात् मस्तिष्क में मिलता है एवं इसी प्रधान केन्द्र अर्थात् मस्तिष्क से ज्ञान ग्रहण किया जाता है एवं संदेश भेजा जाता है। तन्तुओं के इसी सम्पूर्ण मण्डल अथवा संस्थान को स्नायु-मण्डल अथवा तन्तु—संस्थान (Nervous System) कहा जाता है। स्नायु-मण्डल का साधारण रूप पिछले पृष्ठ पर दिया गया है जिसको देखकर हम उसके सामान्य स्वरूप का अनुमान लगा सकते हैं।

[ब] तन्तु-कोष्ठ अथवा तन्तु-सूत्र (Nerve-cells or Neurons)

उपर्युक्त शब्दों में हमने यह स्पष्ट किया था कि हमारे शरीर में तन्तुओं का जाल फैला हुआ है। ये तन्तु-कोष्ठों (Cells) से बने होते हैं। तन्तुओं को बनाने वाले इन्हीं कोष्ठों को ही तन्तु कोष्ठ (Nerve Cells) कहते हैं जब ये तन्तु-सूत्र (Neurons) बन जाते हैं। इस दृष्टिकोण से विकसित हुए तन्तु-कोष्ठ ही तन्तु सूत्र हैं। वैज्ञानिकों का विचार है कि केवल हमारे मस्तिष्क में लगभग ६,०००,०००,०००,००० तन्तु-सूत्र हैं। अतः इस दृष्टि से हमारे सम्पूर्ण शरीर में कई गुने हजार तन्तु-सूत्रों का विद्यमान होना निश्चित है। तन्तु-कोष्ठ अथवा तन्तु-सूत्र के निम्न तीन भाग होते हैं—

(१) कोष्ठ शरीर (Cell body)—यह तन्तु-सूत्र के एक सिरे के पास स्थित होता है। इसका स्वरूप बल्ब के समान होता है। इसका मुख्य कार्य कोष्ठ को जीवित एवं स्वस्थ रखना है। फलस्वरूप यह तन्तु सूत्र अथवा तन्तु-कोष्ठ का एक महत्वपूर्ण भाग होता है।

(२) ग्रही तन्तु (Dendrites)—प्रत्येक तन्तु-सूत्र के दो सिरे हुआ करते हैं। ये सिरे कोष्ठ शरीर के बायें-दायें निकले रहते हैं। इन दो सिरों में से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एक सिरा ग्राही तन्तु (Dendrites) कहलाता है। इसे ग्राही तन्तु इसलिए कहते हैं क्योंकि यह अन्य तन्तु कोषों से उत्तेजना ग्रहण करता है।

(३) वाही तन्तु (Axone)—तन्तु-सूत्र के दूसरे सिरे को वाही-तन्तु (Axone) कहते हैं। ग्राही तन्तु की अपेक्षा वाही तन्तु अधिक लम्बा होता है। कभी-कभी तो यह कई फीट तक लम्बा होता है। इसको वाही तन्तु इसलिए कहते हैं क्योंकि यह बाहर से भीतर प्रवेश हुई उत्तेजना को भीतर से बाहर की तरह प्रवाह करता रहता है। दिए हुए तन्तु सूत्र (Neurons) के चित्र से उसके तीन भाग पूर्णतया स्पष्ट हो रहे हैं।

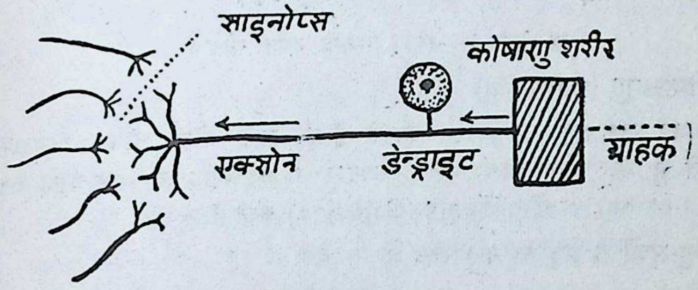

चित्र संख्या २—तन्तु-सूत्र

[स] तन्तु सम्बन्ध अथवा योजक (Synapse)

ऊपर हमने बताया था कि हमारे शरीर में असंख्य तन्तु-सूत्र (Neurons) विद्यमान हैं। इन समस्त सूत्रों में परस्पर एक दूसरे में सम्बन्ध होता है। जिस स्थान पर यह सम्बन्ध होता है उसे तन्तु सम्बन्ध या योजक (Synapse) कहते हैं। प्रत्येक योजक के एक ओर एक तन्तु-सूत्र (Neurons) का वाही तन्तु (Axone) एवं दूसरी ओर एक तन्तु-सूत्र का ग्राही तन्तु (Dendrites) रहता है, फिर दूसरे योजक में दूसरे तन्तु-सूत्र का बचा हुआ दूसरा सिरा अर्थात् वाही तन्तु (Axone) एवं तीसरे तन्तु-सूत्र के ग्राही तन्तु (Dendrites) रहता है। इन योजकों के कारण ही एक तन्तु-सूत्र के वाही तन्तु (Axone) से आई हुई उत्तेजना दूसरे तन्तु-सूत्र के ग्राही तन्तु (Dendrites) तक पहुँच जाती है। इस सम्बन्ध में एक बात और समझ लेना चाहिए वह यह कि योजक (Synapse) पर एक ही तरफ अर्थात् वाही तन्तु से ग्राही तन्तु की ओर उत्तेजना जा सकती है। यह आवश्यक नहीं कि एक तन्तु-सूत्र का सम्बन्ध केवल एक ही तन्तु-सूत्र से हो बलिक यह भी सम्भव हो सकता है कि एक तन्तु-सूत्र के ग्राही तन्तु का सम्बन्ध दूसरे दो-तीन सूत्रों के दो-तीन वाही तन्तुओं से हो। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकार एक तन्तु-सूत्र अनेक तन्तु-सूत्रों से उत्तेजना पाता रहता है। इस प्रकार योजक अथवा स्नायु सम्बन्ध का संगठन बहुत ही जटिल होता है। नीचे हम दो तन्तु सूत्रों का स्नायु सम्बन्ध अथवा योजक का चित्र दे रहे हैं, उसे भली भांति समझ लेना चाहिए।

चित्र संख्या ३—स्नायु सम्बन्ध अथवा योजक

[द] कोष्ठसमूह (Ganglion)

जब अनेक तन्तु सूत्र आपस में मिलते हैं तो इनके कोष्ठ जो कि बल्ब की तरह होते हैं, भी परस्पर मिल जाते हैं, फलस्वरूप कई कोष्ठों का एक समूह बन जाता है। इस समूह को ही कोष्ठ समूह (Ganglion) कहते हैं।

[य] तन्तु-सूत्रों के भेद निम्नलिखित हैं

(१) ज्ञानवाही तन्तु-सूत्र (Sensory of Afferent Neurons)—ज्ञानवाही तन्तु-सूत्र वे तन्तु-सूत्र हैं जो स्नायु-प्रवाहों (Nerve Impulses) को ज्ञानेन्द्रियों (Sense Organs) से सुषुम्ना (Spinal Cord) एवं सुषुम्ना से मस्तिष्क (Brain) में ले जाने का कार्य सम्पादित करते हैं।

(२) गतिवाही स्नायु-सूत्र (Motor or Efferent Neurons)—गतिवाही स्नायु सूत्रों का मुख्य कार्य स्नायु-प्रवाहों (Nerve Impulses) को मस्तिष्क (Brain) एवं सुषुम्ना (Spinal Cord) से ग्रन्थियों (Glands) एवं मांसपेशियों (Muscles) तक ले जाना है।

(३) साहचर्यात्मक स्नायु-सूत्र (Associative Neurons)—साहचर्यात्मक स्नायु-सूत्रों का निवास-स्थान सुषुम्ना (Spinal Cord) एवं मस्तिष्क (Brain) में होता है। इनका मुख्य कार्य इन्हीं केन्द्रों में एक स्थान से दूसरे स्थान स्नायु-प्रवाहों (Nerve Impulses) को ले जाना है।

[र] स्नायु प्रवाह (Nerve Impulse)

(अ) स्नायु प्रवाह क्या है ? (What is Nerve Impulse ?)—श्री आर० एस० लिल्ली (R. S. Lillie) के अनुसार "स्नायु प्रवाह उत्तेजना के द्वारा प्रभावित रासायनिक परिवर्तन है (Nerve Impulse is due to a

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

chemical change exicited by the Stimulus)। जब कोई उत्तेजना (जैसे रोशनी) हमारी किसी ज्ञानेन्द्रिय (जैसे आँख) को प्रभावित करती है तो उसमें एक प्रकार का रासायनिक संक्षोभ (Chemical Disturbance) उत्पन्न हो जाता है जिसे हम विद्युत रासायनिक संक्षोभ (Electro-Chemical Disturbance) कहते हैं। यह संक्षोभ स्नायु तन्तुओं (Nerve Fibres) के द्वारा मस्तिष्क में पहुँचाता है जिससे प्राणी को उत्तेजना का ज्ञान होता है। ठीक इसी प्रकार यह संक्षोभ तथा ग्रन्थियों में पहुँचता है तो प्राणी व्यवहार करने लगता है। इसी वैद्युत रासायनिक बहाव (Body Chemical Disturbance) या रासायनिक बहाव (Body Chemical Flow) को स्नायु प्रवाह (Nerve Impulse) कहते हैं।

(ब) सीमांत उत्तेजना (Threshold Stimulus)—भिन्न-भिन्न स्नायु-तन्तुओं (Nerve Fibres) को उत्तेजित करने के लिए भिन्न शक्तियों (Strengths) की उत्तेजनाओं की जरूरत है। उत्तेजना की वह न्यूनतम शक्ति जो स्नायुतन्तु को उत्तेजित करने में समर्थ हो सीमांत उत्तेजना (Threshold Stimulus) कही जाती है। यह सीमान्त उत्तेजना विभिन्न स्नायु-तन्तुओं की बनावट के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार की हुआ करती है।

(स) सम्पूर्ण या बिलकुल नहीं का नियम (All-or-None-Law)—स्नायु-प्रवाह (Nerve Impulse) का उत्पन्न एवं क्रियाशील होना 'सम्पूर्ण या बिलकुल नहीं के नियम' (All-or-None-Law) पर आधारित है। पर्याप्त उत्तेजना प्राप्त कर जब कोई भी स्नायु-कोष उत्तेजित होता है तो वह अपनी पूर्ण शक्ति के साथ क्रियाशील हो उठता है। किन्तु यह भी सम्भव है कि उत्तेजना इतनी दुर्बल हो कि स्नायु-कोष उत्तेजित ही न हो और उसमें क्रियाशीलता भी न हो। इस प्रकार यदि उत्तेजना स्नायुकोष को उत्तेजित करती है तो वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति से उत्तेजित होता है अन्यथा बिलकुल उत्तेजित नहीं होता है। स्नायु कोष के पूर्ण उत्तेजित होने को स्नायु प्रवाह का सम्पूर्ण या बिल्कुल नहीं का नियम (All-or-None-Law) कहते हैं।

(द) पूर्ण विश्रामावस्था एवं सापेक्षिक विश्रामावस्था (Absolute Refractory Period and Refractory Period)

(अ) पूर्ण विश्रामावस्था (Absolute Refractory Period)—जब कोई भी स्नायु-कोष (Neuron) किसी स्नायु-प्रवाह (Nerve impulse) के द्वारा उत्तेजित होता है तो इसके शीघ्र बाद एक लघु-अवकाश (Interval) का क्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आता है जब वह उत्तेजना कितनी भी तीव्र क्यों न हो वह उत्तेजित न होने की क्षमता के इस समय को पूर्ण विश्रामावस्था कहते हैं।

(ब) सापेक्षिक विश्रामावस्था (Relative Refractory Period)— पूर्ण विश्रामावस्था की अवस्था आती है। इस अवस्था में यदि उत्तेजक सामान्य स्थिति में उत्तेजित करने वाले उत्तेजक से अधिक शक्तिमय होगा तो स्नायुकोष उत्तेजित हो सकता है।

स्नायु मण्डल के विभाग
(Divisions of Nervous System)

[अ] स्नायु-मण्डल का प्रथम ढंग से विभाजन

सम्पूर्ण स्नायु-मण्डल को दो ढंगों से विभाजित किया जा सकता है। प्रथम ढंग के अनुसार स्नायु-मण्डल के दो विभाग हो सकते हैं:—

(१) केन्द्रीय स्नायु-मण्डल (Central Nervous System)—केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के दो भाग हैं प्रथम मस्तिष्क (Brain) तथा सुषुम्ना (Spinal Cord)।

(२) सीमान्त स्नायु-मण्डल (Peripheral Nervous System)— सीमान्त स्नायु-मण्डल के अन्तर्गत वे समस्त स्नायु पुंज (Ganglion) तथा स्नायु तन्त्र (Nerve Fibres) विदित होते हैं जो कि सुषुम्ना (Spinal) तथा मस्तिष्क (Brain) के बाहर पाये जाते हैं।

[ब] स्नायु-मण्डल का द्वितीय ढंग से विभाजन

द्वितोय ढंग के अनुसार भी स्नायु-मण्डल को दो विभागों में बाँटा जा सकता है।

(१) स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल (Autonomic Nervous System)—स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल के अन्तर्गत केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के वे भाग एवं सीमान्त स्नायु-मण्डल के वे स्नायु-कोष आते हैं जो कि अंतड़ियों की चिकनी मांशपेशियों (Smooth Muscles of the Intestines), रक्त नलिकाओं (Blood Vessels) जनन सम्बन्धी नलिकाओं (Urogenital-Tract) की प्रतिक्रियाओं से सम्बन्धित हैं। इसके साथ-साथ हृदय की मांसपेशियों की प्रतिक्रियाओं के साथ इनका सम्बन्ध रहता है और इनका सम्बन्ध ग्रन्थियों (Glands) की पूर्ति क्रियाओं से भी रहता है जो कि स्नायुप्रवाहों को ग्रहण करते हैं। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल प्राणी के आन्तरिक पर्यावरण (Internal Environment) को नियन्त्रित करता है।

(२) दैहिक स्नायु-मण्डल (Somatic Nervous System)— दैहिक स्नायु-मण्डल के अन्तर्गत केन्द्रीय एवं सीमान्त स्नायु-मण्डलों के उन भागों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का समावेश होता है जो ज्ञानेन्द्रियों से स्नायु-प्रवाहों को संचालित करते हैं एवं उन्हें मस्तिष्क में संगठित रूप प्रदान करते हैं और जो गतिवाही स्नायु प्रवाहों (Motor Nerve Impulses) को शरीर एवं विभिन्न अंगों की धारीदार मांस-पेशियों तक ले जाते हैं।

उपर्युक्त वर्णित स्नायु-मण्डलों के विभागों के सम्बन्ध में पाठकों को यह समझ लेना चाहिये कि स्वतः संचालित स्नायु एवं दैहिक स्नायु-मण्डल के सीमान्त छोर (Peripheral Endings) एक दूसरे से बिलकुल प्रथक् हैं, किन्तु केन्द्रीय स्नायु-मण्डल एवं सीमान्त स्नायु-मण्डल में इनका किसी प्रकार का स्पष्ट विभाजन नहीं है। हमारे कहने का अभिप्राय यह है कि स्वतः संचालित एवं दैहिक स्नायु-मण्डल के स्नायु-कोष (Neurons) केन्द्रीय एवं सीमान्त दोनों ही स्नायु-मण्डल में पाये जाते हैं।

[स] स्नायु-मण्डल के विभागों का तालिका द्वारा स्पष्टीकरण

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर हम स्नायु-मण्डल के विभागों को तालिका द्वारा निम्न प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं:—

स्नायु-मण्डल

- केन्द्रीय स्नायु-मण्डल (Central Nervous System)
- सीमान्त स्नायु-मण्डल (Peripheral Nervous System)
- दैहिक स्नायु-मण्डल (Somatic Nervous System)
  - केन्द्रीय दैहिक स्नायु-मण्डल (Central Somatic Nervous System)
  - सीमान्त दैहिक स्नायु-मण्डल (Peripheral Nervous System)
- स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल (Autonomic-Nervous System)
  - केन्द्रीय स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल (Central Autonomic Nervous System)
  - सीमान्त स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल (Peripheral Autonomic Nervous System)

अगले अध्याय में हम केन्द्रीय स्नायु-मण्डल पर प्रकाश डालेंगे। यहाँ पर हम स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल
(Autonomic Nervous System)

[अ] स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल की स्थिति एवं प्रमुख कार्य

स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु (Spinal Cord) के समानान्तर स्नायु-कोषों के गुच्छों (Ganglia) के रूप में ऊपर से नीचे तक फैला हुआ है। इन स्नायु-कोषों से निकल कर स्नायु तन्तु (Nerve Fibres) आमाशय, यकृत (Liver), हृदय (Heart), फेफड़ा (Lungs), अंतड़ी, गुर्दे (Kidneys), प्रस्वेद ग्रन्थि (Sweat Glands), लारवाही ग्रन्थि (Solivary Glands), रक्त नलिकाओं की दीवारों (Walls of Blood Vessels), पुतलियों को प्रसारित करने वाली मांशपेशियों एवं अन्य आन्तरिक अवयवों में जाते हैं। स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल इन समस्त आन्तरिक अवयवों की क्रियाओं को संचालित तथा नियन्त्रित करता है। इस स्नायु-मण्डल को स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल इसलिए कहा जाता है कि इसे क्रियान्वित होने के लिए किसी बाह्य-परिस्थिति या उत्तेजना की आवश्यकता नहीं होती बल्कि यह इन सभी अवयवों से उत्तेजित एवं क्रियाशील होता रहता है जिनको यह संचालित तथा नियन्त्रित करता है। यद्यपि सामान्य तौर से स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल केन्द्रीय स्नायु-मण्डल से स्वतन्त्र होता है किन्तु केन्द्रीय स्नायु-मण्डल स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल पर बहुत हद तक अपना प्रभाव डालता रहता है। समस्त ऐच्छिक क्रियायें (Voluntary Actions) केन्द्रीय स्नायु-मण्डल से संचालित तथा नियन्त्रित होती हैं और अनैच्छिक क्रियायें (Involuntary Actions) प्रायः स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल द्वारा संचालित तथा नियन्त्रित होती हैं।

[ब] रचना के आधार पर स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल का तीन भागों में विभाजन

रचना या बनावट के आधार पर स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है—

(१) शीर्ष भाग (Cranial Division)—यह स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल का ऊपरी भाग होता है। यह हमारे मस्तिष्क के तने को उपतारे की पेशी से जोड़ता है जो उसके सिकुड़ जाने का कारण है। इसके साथ उसे लार ग्रन्थियों (Salivary Glands) से भी जोड़ता है जो उनके लार बहाने का कारण है स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल के अन्य स्नायु आमाशय की पेशियों एवं ग्रन्थियों में प्रतिष्ठित होते हैं जो कि आमाशय की दीवार की पेशियों को मथने की क्रिया के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तेजित करते रहते हैं एवं आमाशय की ग्रंथियों को जठर रस (Gastric Juice) छोड़ने के हेतु उत्तेजित करते रहते हैं। इनके अन्य स्नायु हृदय में प्रविष्ट रहते हैं जो कि उसकी गति को मन्द करने में समर्थ होते हैं।

(२) मध्यम अथवा सहानुभूतिक भाग (Sympathetic Division)—यह सुषुम्ना (Spinal Cord) के बीच के भाग से सम्बन्धित रहता है। सहभावी स्नायु (Sympathetic Nerves) जो वक्षस्थल के पास सुषुम्ना से होकर निकलते हैं हृदय एवं आमाशय पर शीर्ष स्नायु विपरीत प्रभाव डालते हैं। ये आमाशय की गति को कम करते एवं हृदय की गति तेज करते हैं। यह भाग क्रोध, भय आदि प्रबल संवेगों (Emotions) में संलग्न रहा करता है।

(३) अनुत्रिका भाग (Sacral Division)—यह स्वतः संचालित स्नायु मण्डल का नीचे का भाग होता है। इससे चलने वाले स्नायु जननेन्द्रिय, गुर्दे, गुदा आदि को जाते हैं और ये उनकी क्रिया को उत्तेजित करते हैं।

नीचे हम स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल को उसके विभिन्न भागों सहित चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं—

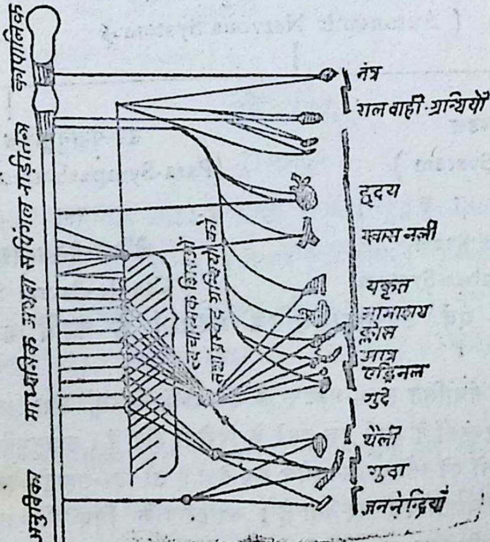

चित्र संख्या ४—स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल के विभिन्न भाग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] स्नायुविक क्रिया के आधार पर स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल का दो भागों में विभाजन

स्नायुविक क्रिया (Nervous Activity) के आधार पर स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) सहानुभूतिक मण्डल (Sympathetic System)—इसमें सहानुभूतिक प्रवाह (Sympathetic Outflow) सुषुम्ना के 'थोरेसिको' एवं 'लम्बर' (Thoracico and Lumber) स्नायुओं से होकर बढ़ता है, इसलिए इसको 'थोरेसिको-लम्बर-मन्डल' (Thoracico-Lumber-System) भी कहा जाता है।

(२) उप-सहानुभूतिक मण्डल (Para-Sympathetic System)—इसमें उप-सहानुभूतिक प्रवाह (Para-Sympathetic Outflow) केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के 'क्रैनियल' (Cranial) एवं 'सैक्रल' (Sacral) स्नायुओं से होकर बढ़ता है इसलिए इसे 'क्रैनियो-सैक्रल मण्डल' (Cranio-Sacral System) भी कहा जाता है। स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल के दोनों विभागों को निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल
(Autonomic Nervous System)

सहानुभूतिक मण्डल (Sympathetic System) अथवा थोरेसिको-लम्बर-मण्डल (Thoracico-Lumber-System)	उप-सहानुभूतिक मण्डल (Para-Sympathetic System) अथवा क्रैनियो-सैक्रल-मण्डल (Cranio-Sacral-System)

[द] सहानुभूतिक एवं उप-सहानुभूतिक मण्डलों के कार्यों का परस्पर विरोध होना

प्रायः स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल के इन दोनों विभागों यथा सहानुभूतिक एवं उप-सहानुभूति मण्डलों के कार्य एक दूसरे के विरोधी होते हैं। सहानुभूतिक मण्डल यदि आन्तरिक अवयवों को अधिक क्रियाशील कर देता है तो उप-सहानुभूतिक मण्डल उनकी क्रियाओं में शिथिलता पैदा कर देता है। उदाहरण के लिए यदि सहानुभूतिक मण्डल ने हृदय की गति तीव्र कर दी तो उप-सहानुभूतिक मण्डल उसमें शिथिलता पैदा कर देगा। सामान्य रूप से जीवन के आन्तरिक अंगों की स्वाभाविक क्रियायें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वतः संचालित मण्डल के इन दोनों विभागों की क्रियाओं के सन्तुलन पर आधारित होती हैं। जब भी इन दोनों विभागों की क्रियाओं का सन्तुलन बिगड़ जाता है तब आन्तरिक अवयवों की स्वाभाविक गतियों में गड़बड़ी पैदा हो जाती है। सामान्य रूप से यदि कोई आकस्मिक घटना उत्पन्न हो जाती है तो सहानुभूतिक मण्डल में अत्यधिक क्रियाशीलता उत्पन्न हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप हृदय की धड़कन एवं नाड़ी की गति में पर्याप्त वृद्धि हो जाती है, किन्तु शान्ति और प्रसन्नता की अवस्था में सहानुभूतिक एवं उपसहानुभूतिक मण्डलों की क्रियाशीलताओं की स्थिति संतुलित रहती है। संवेगों के संचालन तथा नियन्त्रण में सहानुभूतिक मण्डल का बहुत बड़ा हाथ है। संवेगावस्था में व्यक्ति में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों यथा हृदय तथा नाड़ी की गति बढ़ना, रक्त संचरण में तीव्रता, सम्पूर्ण शरीर में रोंगटे खड़े हो जाना-इत्यादि को सहानुभूतिक मण्डल ही नियन्त्रित करता है।

प्रभावक (Effectors)

प्रतिक्रिया यन्त्र (Response Mechanism) का अन्तिम अर्थात् प्रभावक (Effectors) अवयव है। प्रभावक वे कोष्ठ अथवा कोष्ठ समूह हैं जिनकी सहायता से प्राणी व्यवहार करता है। प्रभावक निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं।

(१) मांसपेशियां (Muscles)

(२) ग्रन्थियां (Glands)।

माँसपेशियाँ
(Muscles)

मांसपेशियां तीन प्रकार के कोष्ठों से बनी हुई हैं जिनके आधार पर उन्हें तीन भागों में बांटा जाता है—(१) स्निग्ध पेशी कोष्ठ (Smooth Muscle Cell), (२) रेखायुक्त पेशी कोष्ठ (Striped Muscle Cell) तथा (३) हृत्पेशी कोष्ठ (Cardiac Cell)। विभिन्न प्रकार की मांसपेशियों के कोष्ठों या सूत्रों की रचना अगले पृष्ठ में दिए हुए चित्रों से स्पष्ट होती हैं।

अब हम संक्षेप में तीनों प्रकार की मांसपेशियों पर प्रकाश डाल रहे हैं।

(१) स्निग्ध पेशी कोष्ठ (Smooth Muscle Cell)—ये कोष्ठ विकास-परम्परा में सबसे प्राचीन पेशी कोष्ठ माने गये हैं। इस प्रकार के कोष्ठों वाली पेशियां आमाशय एवं आंतों की दीवारों में स्थित रहती हैं। इन पेशियों को स्वतन्त्र स्नायु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मण्डल (Autonomic Nervous System) से उत्तेजना प्राप्त होती है फलस्वरूप ये स्वतन्त्रतापूर्वक हर समय कार्य करती रहती हैं।

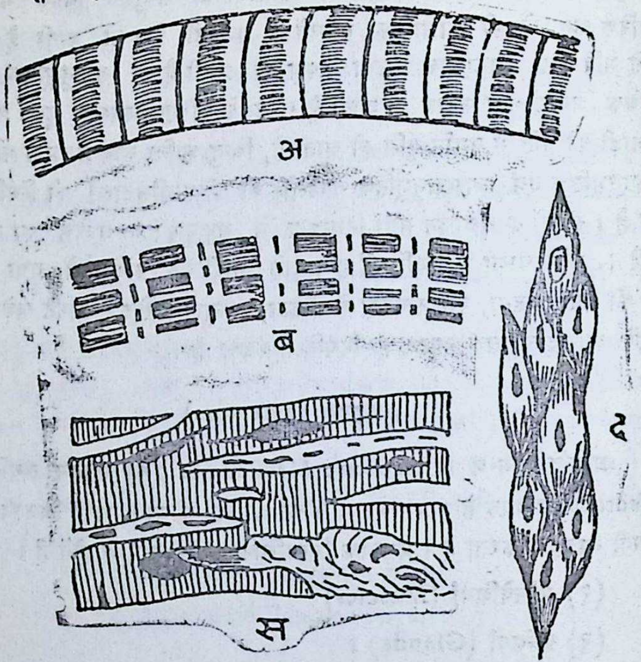

चित्र संख्या ५—मांसपेशियों के सूत्रों की रचना

उपर्युक्त चित्र में (अ और ब) रेखायुक्त पेशी सूत्र (स) हृदय पेशी सूत्र तथा (द) स्निग्ध पेशी सूत्र की बनावट प्रदर्शित करते हैं।

(२) रेखा-युक्त पेशी कोष्ठ (Striped Muscle Cell)—विकास-परम्परा में इस प्रकार के कोष्ठों वाली पेशियाँ स्निग्ध कोष्ठों वाली पेशियों के उपरान्त आती हैं। ये पेशियाँ मस्तिष्क-सुषुम्ना स्नायु-मण्डल (Cerebro-System) द्वारा नियन्त्रित होती हैं एवं प्राणी की इच्छा के अनुसार फैलती या संकुचित होती रहती हैं। इस तरह की पेशियाँ हाथ-पैर इत्यादि में स्थान-स्थान पर विद्यमान हैं।

(३) हृत्पेशी कोष्ठ (Cardiac Cells)—ये कोष्ठ हृदय की पेशी में हुआ करते हैं। यह एक विशेष प्रकार की पेशी हुआ करती है जिसमें रेखायुक्त पेशी की भाँति समानान्तर रेखायें नहीं हुआ करती हैं। यह पेशी भी स्निग्ध पेशी की तरह स्वतन्त्र स्नायु-मण्डल से नियन्त्रित होती हैं।

ऊपर जो मांसपेशियाँ दी हुई हैं उनमें से पहली एवं तीसरी प्रकार की मांसपेशियाँ अनैच्छिक पेशियाँ (Involuntary Muscles) एवं दूसरी प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की ऐच्छिक पेशियां (Voluntary Muscles) कही जाती हैं। यही पेशियां व्यवहार अथवा चेष्टा करती हैं।

ग्रन्थियाँ (Glands)

कोष्ठों की एक विशेष प्रकार की रचना

कोष्ठों की एक विशेष प्रकार की रचना को ग्रंथियां (Glands) कहा जाता है। ये ग्रंथियां उत्तेजित होने पर रसस्राव की क्रिया करती हैं एवं क्रियावाही तन्तुओं से जुड़ी होती हैं। फलस्वरूप इनको मांसपेशियों के समान प्रभावक (Effectors) समझा जाता है। ये ग्रन्थियाँ हमारे शरीर में अनेक स्थान पर विद्यमान हैं। इन ग्रन्थियों को हम निम्न दो भागों में विभाजित कर सकते हैं :—

(१) प्रणाली विहीन ग्रंथियाँ (Ductless Glands)—इन ग्रन्थियों के सम्बन्ध में हम व्यक्तित्व वाले अध्याय में प्रकाश डालेंगे।

(२) नलिका अथवा प्रणालीमयी ग्रंथियाँ (Duct Glands)—यह ग्रन्थियाँ वे ग्रन्थियां हैं जिनका रस उसमें जुड़ी हुई नलिका द्वारा शरीर के किसी विवर (Cavity) में आता है। हमारे सम्पूर्ण शरीर में ऐसी निम्नलिखित ग्रन्थियां हैं—

(१) लारवाही ग्रंथियाँ (Salivary Glands), (२) आमाशय रसवाही ग्रंथियाँ (Gastric Glands), (३) क्लोम (Pancreas), (४) यकृत (Liver)। ये चारों प्रकार की ग्रन्थियां पाचन-क्रिया में सहायक होती हैं और अनेक प्रकार के रासायनिक रस देती हैं।

(५) प्रस्वेद ग्रंथियाँ (Sweat Glands)—ये ग्रन्थियाँ प्रस्वेद को प्रवाहित कर शरीर का तापक्रम संतुलित करती हैं।

(६) अश्रु ग्रंथियाँ (Tear Glands)—ये ग्रन्थियां अधिक रोने पर नेत्रों को आँसू अथवा साधारण रस प्रदान करती हैं।

(७) गुर्दे (Kidneys)—ये शरीर से व्यर्थ के पदार्थों के निकालने का कार्य सम्पादित करते हैं।

(८) काम ग्रंथियाँ (Sex Glands)—ये ग्रन्थियां प्राणी को सन्तानोत्पादन के लिये रस प्रदान करती हैं।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि प्रतिक्रिया-यन्त्र (Response Mechanism) के निम्नलिखित तीन अङ्ग हैं—(१) ग्राहक (Receptors) जिसके द्वारा प्राणी में उत्तेजना क्रिया उत्पन्न होती है। (२) स्नायु-मण्डल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Nervous System) जिसके द्वारा प्राणी का व्यवहार संचालित तथा नियन्त्रित होता है तथा (३) प्रभावक (Effectors) जिसके द्वारा व्यक्ति वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है। ग्राहक तीन प्रकार के होते हैं—(१) बाह्य ग्राहक, (२) पूर्वान्त ग्राहक तथा (३) अन्तर्ग्राहक। स्नायु-मण्डल को निम्नलिखित चार भागों में विभाजित किया जा सकता है—(१) केन्द्रीय स्नायु-मण्डल, (२) सीमान्त स्नायु-मण्डल, (३) दैहिक स्नायु-मण्डल तथा (४) स्वतः संचालित स्नायु-मण्डल। प्रभावकों को दो भागों में विभाजित किया जाता है—(१) मांसपेशियाँ तथा (२) ग्रन्थियाँ। वास्तव में शरीर के अन्य संस्थानों या मण्डलों (Systems) की अपेक्षा स्नायु-मण्डल का अधिक महत्व है क्योंकि इसके अभाव या विनष्ट हो जाने पर मानव-जीवन सम्भव ही नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६

केन्द्रीय स्नायु-मण्डल

(Central Nervous-System)

प्रश्न संख्या—६

केन्द्रीय स्नायु-मण्डल का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।

Give a brief description of central nervous-system.

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान मानव अनुभूति तथा व्यवहार का विज्ञान है। मानव अनुभूति तथा व्यवहार को संचालित एवं नियन्त्रित करने का उत्तरदायित्व प्रकृति ने स्नायु-मण्डल को सौंपा है। स्नायु-मण्डल के विभिन्न विभागों में केन्द्रीय स्नायु-मण्डल (Central Nervous-System) का सबसे महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि मनुष्य की सभी उच्च-स्तरीय और आत्म-प्रेरित अथवा ऐच्छिक एवं जटिल (Higher Voluntary & Complex) क्रियायें केन्द्रीय स्नायु-मण्डल से ही संचालित तथा नियन्त्रित होती हैं। दूसरे शब्दों में केन्द्रीय स्नायु-मण्डल हमारी उच्च मानसिक क्रियाओं का केन्द्र है। यह पशुओं में इतना जटिल और विकसित नहीं होता जितना कि मनुष्य में। इसीलिये मनुष्य की मानसिक क्रियाओं से कहीं अधिक उच्चस्तर की होती हैं। अब हम केन्द्रीय स्नायु-मण्डल को अच्छी तरह समझने के लिये पहले केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के विभाग (Division of Central Nervous-System) प्रस्तुत करेंगे, तत्पश्चात् सुषुम्ना (Spinal Cord) तथा मस्तिष्क (Brain) की रचना एवं उनके कार्यों पर प्रकाश डालेंगे और अन्त में बृहत्मस्तिष्कीय बल्क में क्रियाओं का स्थान निर्धारण (Localization of Functions in the Cerebral Cortex) करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के विभाग
(Divisions of Central Nervous-System)

अ] केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के दो प्रधान विभाग
(Two Chief Divisions of Central Nervous-System)

केन्द्रीय स्नायु-मण्डल को दो प्रधान विभागों में विभाजित किया जाता है। ये विभाग निम्नलिखित हैं।

(१) सुषुम्ना (Spinal Cord),
(२) मस्तिष्क (Brain)।

पुनः मस्तिष्क को विभिन्न ढंगों से अनेक विभागों में विभाजित किया जा सकता है। आगे हम मस्तिष्क का विभाजन प्रस्तुत कर रहे हैं—

ब] मस्तिष्क के विभिन्न विभाग
(Various Divisions of Mind)

शरीर-वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क के निम्नलिखित पाँच विभाग किये हैं।

(१) अन्तर-मस्तिष्क (Diencephalon)
(२) मस्तिष्क खण्ड (Telencephalon)
(३) मध्य मस्तिष्क (Mesencephalon or Mid-brain)
(४) अनुमस्तिष्क (Melencephalon)
(५) सुषुम्ना शीर्ष (Myelencephalon or Medulla)।

शरीर-वैज्ञानिकों ने इन विभागों को इसलिये अपनाया कि इन विभागों को भ्रूण-सम्बन्धी विकास (Embryological Development) के क्रम में प्रस्तुत किया जा सकता है। शरीरिक वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क का एक दूसरी तरह भी विभाजन किया है। उन्होंने उसके निम्नलिखित विभाजन किये हैं—

(१) अग्र-मस्तिष्क (Fore-Brain)
- **(क) मस्तिष्क खण्ड (Telencephalon)**
  - (i) वृहत्‌मस्तिष्क (Cerebrum)
  - (ii) मूलभूत स्नायु-पुंज (Basal-ganglia)
- **(ख) अन्तर मस्तिष्क (Diencephalon)**
  - (i) थैलेमस (Thalamus)
  - (ii) हाइपोथैलेमस (Hypothalamus)

(२) मध्य मस्तिष्क (Mid-brain)

(३) पृष्ठ मस्तिष्क (Hind-brain)
- **(क) सुषुम्ना शीर्ष (Medulla Oblongata or Myelencepha lon)**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ख) अनुमस्तिष्क (Melencephalon)

(i) लघु मस्तिष्क (Cerebellum)

(ii) सेतु (Pons)।

[स] तालिका द्वारा केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के विभागों का प्रस्तुतीकरण (Presentation of the Divisions of Central Nervous System by the Scale)

अगले पृष्ठ में हम तालिका द्वारा केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के विभिन्न भागों को प्रस्तुत कर रहे हैं।

अब हम केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के सम्बन्ध में संक्षिप्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए पहले सुषुम्ना (Spinal Cord) पर प्रकाश डालेंगे, तत्पश्चात् मस्तिष्क (Brain) के विभागों यथा सुषुम्ना शीर्ष, (Medulla), अनुमस्तिष्क (Melencephalon), लघु मस्तिष्क (Cerebellum) तथा सेतु (Pons)—मध्य मस्तिष्क—छत (Tectum or Roof) तथा सतह (Floor)—अन्तर मस्तिष्क (Diencephalon)—थैलेमस (Thalamus), तथा हाइपोथैलेमस (Hypothalamus) एवं मस्तिष्क खण्ड (Telencephalon)—बृहद् मस्तिष्क (Cerebrum) तथा मूलभूत स्नायु-पुंज (Basal Ganglion) पर प्रकाश डालेंगे।

सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु
(Spinal Cord)

[अ] सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु की बनावट
(Structure of the Spinal Cord)

गर्दन से प्रारम्भ होकर पीठ से होती हुई पुच्छ की हड्डी तक जो हड्डी चली गई है उसे मेरुदण्ड कहा जाता है। रीढ़ की इस हड्डी के अन्दर केन्द्रीय स्नायु-मण्डल (Central Nervous System) का लगभग १८ इञ्च एक लम्बा भाग होता है जिसे सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु (Spinal Cord) कहा जाता है। सुषुम्ना से स्नायु तन्तुओं (Nerve-Fibres) के ३१ जोड़े निकल कर समस्त शरीर में फैले होते हैं। इन जोड़ों को निम्नलिखित चार भागों में विभक्त किया जा सकता है।—

(१) ग्रीवा सम्बन्धी सुषुम्ना-स्नायु (Cervical Spinal Nerves) ८

(२) लम्ब सम्बन्धी सुषुम्ना—स्नायु (Tharacic Spinal Nerves) १२

(३) कटि सम्बन्धी सुषुम्ना-स्नायु (Lumber Spinal Nerves) ५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

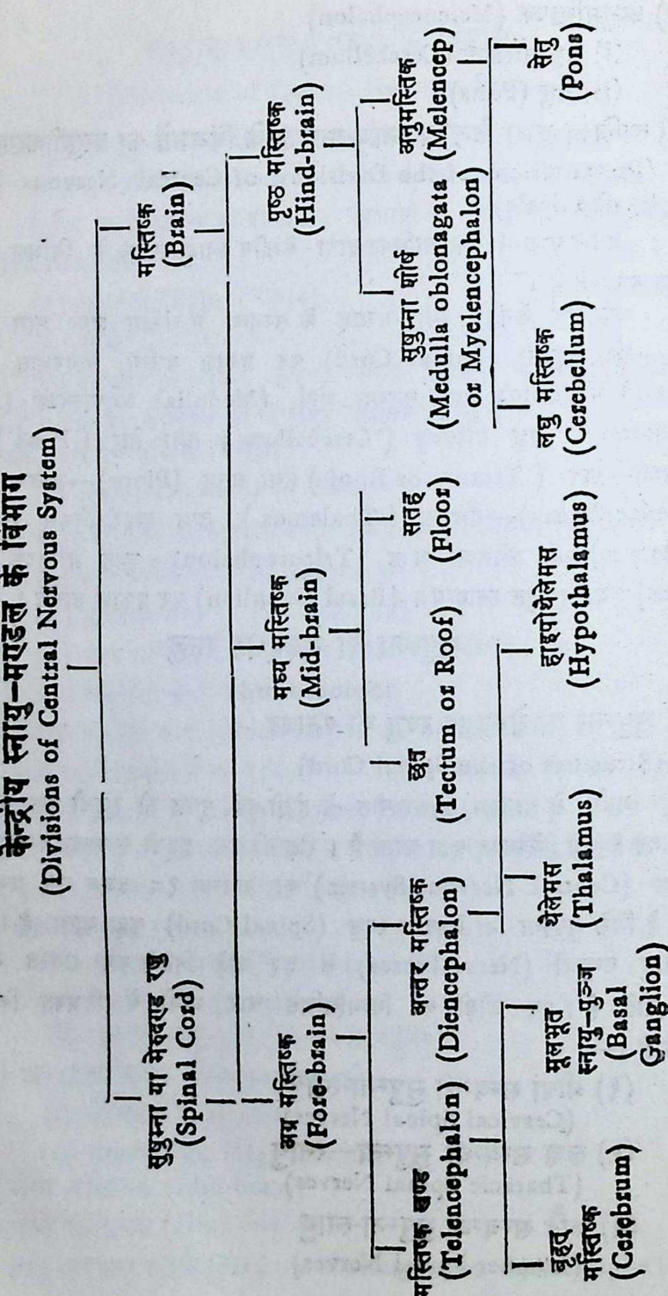
केन्द्रीय स्नायु-मण्डल के विभाग
(Divisions of Central Nervous System)
सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु
(Spinal Cord)
मस्तिष्क
(Brain)
अग्र मस्तिष्क
(Fore-brain)
मध्य मस्तिष्क
(Mid-brain)
पृष्ठ मस्तिष्क
(Hind-brain)
मस्तिष्क खण्ड
(Telencephalon)
अन्तर मस्तिष्क
(Diencephalon)
छत
(Tectum or Roof)
सतह
(Floor)
सुषुम्ना शीर्ष
(Medulla oblonagata
or Myelencephalon)
अनुमस्तिष्क
(Melencep)
बृहद्
मस्तिष्क
(Cerebrum)
मूलसूत्र
स्नायु-पुञ्ज
(Basal
Ganglion)
थैलेमस
(Thalamus)
हाइपोथैलेमस
(Hypothalamus)
लघु मस्तिष्क
(Cerebellum)
सेतु
(Pons)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) सैक्रेल सुषुम्ना स्नायु
(Sacral Spinal Nerves)

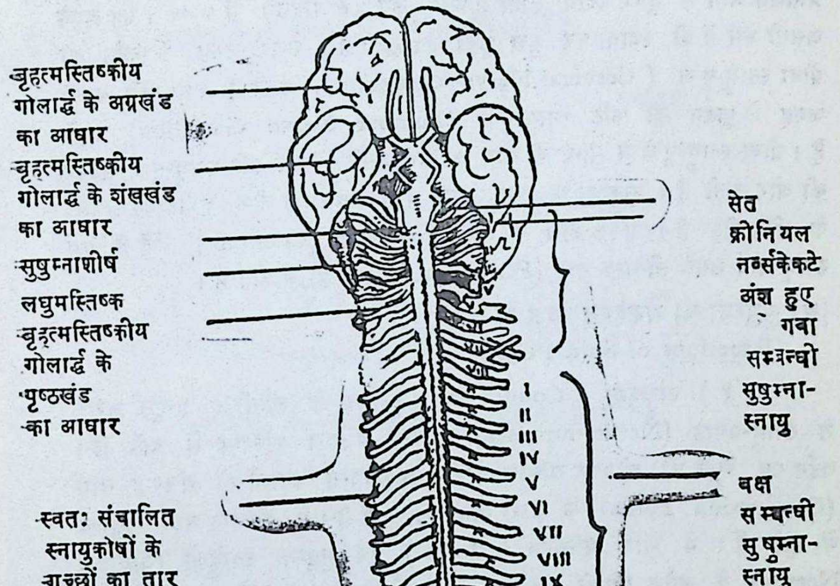

चित्र संख्या ६—स्नायु-मण्डल का सामान्य चित्र जिसमें मस्तिष्क सुषुम्ना तथा सुषुम्ना की स्नायुयें स्पष्ट हो रही हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुषुम्ना में दो प्रकार के पदार्थ पाये जाते हैं (१)-घूसर पदार्थ (Gray Matter) तथा (२) धवल पदार्थ (White Matter)। सुषुम्ना के ५० प्रतिशत भाग में घूसर पदार्थ होता है और शेष ५० प्रतिशत में धवल। यह अपने असली रूप में दो स्थानों पर कुछ फूली हुई होती है। ऊपरी जगह के फूलन को ग्रीवा स्नायु-पुंज (Cervical Nerve Ganglion) कहते हैं तथा नीचे वाली जगह के फूलन को कटि स्नायु-पुंज (Lumber Nerve Ganglion) कहते हैं। ग्रीवा स्नायु-पुंज से हाथ की ओर स्नायुयें आती हैं एवं कटि स्नायु-पुंज से पैर की ओर जाती हैं। सुषुम्ना के स्नायु मार्ग (Pathways) ठीक शरीर की त्वचा के नीचे होते हैं। इसके बीच के भाग में जीवकोष (Cellbody) होते हैं एवं स्नायु मार्ग उसके सीमान्त भाग (Peripheral Portion) में होते हैं।

[ब] सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु के कार्य (Functions of Spinal Cord)

(१) संचरण (Conduction)—सिर के अतिरिक्त सम्पूर्ण शरीर से स्नायु-प्रवाह (Nerve-impulses) सुषुम्ना के द्वारा मस्तिष्क में आते हैं। गर्दन एवं चेहरे को छोड़कर मस्तिक शरीर की समस्त क्रियाओं को संचरण मार्ग (Conduction Paths) के द्वारा नियन्त्रित होते हैं। ये संचरण मार्ग सुषुम्ना में होते हैं। ये मार्ग मस्तिष्क (Brain) एवं सुषुम्ना स्नायुओं (Spinal Nerves) के अनेक प्रवेणों (Entrances) तथा निर्गमों (Exists) के ऊपर एवं नीचे की ओर होते हैं। इसी प्रकार स्पष्ट है कि संचरण (Conduction) सुषुम्ना या मेरुदण्ड रज्जु का अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रमुख कार्य है।

(२) प्रतिक्षेप-क्रियाओं का समन्वयात्मक केन्द्र (A Integrative Centre of Reflex Actions)–संचारण के कार्य के अतिरिक्त सुषुम्ना प्रतिक्षेप क्रियाओं (Reflex Actions) का संचरण तथा नियन्त्रण करती है। सुषुम्ना प्रतिक्षेप क्रियाओं का एक समन्वयात्मक केन्द्र (Integrated Centre) है। प्रतिक्षेप क्रियाओं की कार्य-प्रणाली निम्नलिखित है। सर्वप्रथम विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों (Sense Organs) के द्वारा स्नायु-प्रवाह (Nerve Impulse) अन्तर्वाहक या ज्ञानवाही तन्तुओं (Afferent or Sensory Nerves) में आते हैं। बीच में कोष्ठ-समूह (Ganglion) से वेग पाकर स्नायु प्रवाह सुषुम्ना में आ जाते हैं। सुषुम्ना में आये हुए इन स्नायु प्रवाहों को वहिर्वाहक या गतिवाही स्नायुयें (Efferent or Motor Nerves) सुषुम्ना से बाहर मांसपेशियों (Muscles) तथा ग्रन्थियों (Glands) में ले आती हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति क्रियाशील हो जाता है। स्नायु-प्रवाह के इस चक्र को जिसमें वह ज्ञानेन्द्रियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Sense Organs) से सुषुम्ना और सुषुम्ना से कर्मेन्द्रियों (Motor Organs) तक आता है, प्रतिक्षेप क्रिया चक्र (Reflex Arc) कहते हैं। अनेक प्रतिक्षेप क्रियाओं के लगातार होने से प्रतिक्षेप क्रिया शृङ्खला (Chain Reflex) का निर्माण हो जाता है। नीचे हम प्रतिक्षेप क्रिया चक्र का चित्र प्रस्तुत कर रहे हैं—

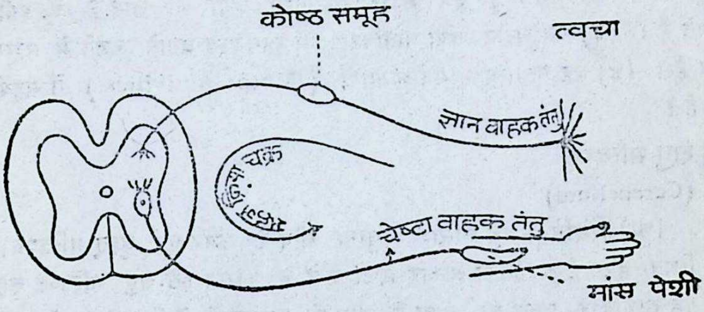

चित्र संख्या ७—दो स्नायु-कोषों का प्रतिक्षेप क्रिया चक्र

मस्तिष्क
(Brain)

[१] सुषुम्ना शीर्ष
(Medulla Oblongata or Myelencephalon)

(अ) स्थिति—सुषुम्ना शीर्ष सुषुम्ना (Spinal Cord) का ऊपरी भाग है जहाँ पर मस्तिष्क से उसका सम्बन्ध रहता है। यह लम्बाई में लगभग एक इन्च होता है। (ब) कार्य—(१) सुषुम्ना शीर्ष प्राण-सम्बन्धी समस्त क्रियाओं (All vital Functions of the body) जैसे रक्त संचरण (Blood Circulation), श्वसन (Respiration) निगलना आदि को नियन्त्रित तथा संचालित करता है। (२) सुषुम्ना शीर्ष की सारी क्रियाएं अचेतन रूप से चला करती हैं। (३) यह सुषुम्ना को मस्तिष्क के उच्च केन्द्रों (Higher Centres of the Brain) से जोड़ता है। (४) सुषुम्ना के समान यह अपने क्षेत्र के समस्त प्रतिक्षेप क्रियाओं को संचालित एवं नियन्त्रित करता है।

[२] अनुमस्तिष्क
(Melencephalon)

अनुमस्तिष्क के दो भाग होते हैं—सेतु (Pons) एवं लघु मस्तिष्क (Cerebellum)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[१] सेतु (Pons)

(अ) स्थिति—सेतु की स्थिति सुषुम्ना शीर्षक के ठीक ऊपर होती है। इसका रंग सफेद और आकृति में पुल के मेहराब की तरह होता है। (ब) कार्य—(१) यह लघु मस्तिष्क के दोनों अर्द्धवृत्तों को ऊपर की ओर जोड़ता है। (२) वृहद् मस्तिष्क से भी तन्तु सूत्र शरीर से निम्न अंगों को जाते हैं वे इसी से गुजरते हैं। (३) यह शरीर तथा वातावरण में सामंजस्य बनाये रखने में सहायक होता है। (४) यह गत्यात्मक मनोव्यापारों (Motor Activities) में सहयोग देता है।

[२] लघु मस्तिष्क
(Cerebellum)

(अ) स्थिति—लघु मस्तिष्क सुषुम्ना शीर्ष के ऊपर एवं बृहद् मस्तिष्क के नीचे स्थित होता है। इसका आकार छोटा होने के कारण इसे लघु मस्तिष्क कहते हैं। यह अण्डाकार शक्ल का होता है और दो अर्द्धखण्डों में विभाजित होता है। अनेक स्नायु तन्तुओं (Nerve Fibres) के द्वारा यह एक ओर सुषुम्ना शीर्ष से सम्बन्धित होता है और सेतु के द्वारा वृहद् मस्तिष्क से सम्बन्धित होता है। (ब) कार्य—(१) यह विभिन्न शारीरिक क्रियाओं के बीच समन्वय (Co-ordination) स्थापित करता है। (२) यह शारीरिक सन्तुलन (Bodily Balance) में सहायता पहुँचाता है। (३) जिन क्रियाओं का संचालन अनेक मांसपेशियों द्वारा होता है उनको यह नियन्त्रित करता है जैसे आदतजन्य कार्य।

[३] मध्य मस्तिष्क
(Mid Brain or Mesencephalon)

(अ) स्थिति—यह अपेक्षाकृत मस्तिष्क का छोटा विभाग होता है। यह पृष्ठ मस्तिष्क (Hind Brain) एवं अग्र मस्तिष्क (Fore Brain) के मध्य सम्बन्ध स्थापित करता है। इसके निम्नलिखित दो भाग होते हैं—(१) सतह (Floor) तथा (२) छत (Tectum or Roof)। (ब) कार्य—(१) सतह के कार्य—मध्य मस्तिष्क की सतह स्नायु-मण्डल के उच्च एवं निम्न भागों को मिलाने वाला पथ है। इसमें गतिवाही स्नायुएँ (Motor Nerves) नीचे की ओर और ज्ञानवाही स्नायुएँ (Sensory Nerves) ऊपर की ओर जाती हैं। इसमें स्थित गतिवाही प्रतिक्षेप केन्द्र (Motor Reflex Centres) गतिवाही प्रतिक्षेप क्रियाओं (Motor Reflex Centres) को नियन्त्रित तथा संचालित करते हैं जैसे सिर हिलाना आदि। (२) छत के कार्य—मध्य मस्तिष्क की छत ज्ञानवाही क्रियाओं (Sensory Activities) को संचालित एवं नियन्त्रित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करती हैं। निम्नकोटि के प्राणियों में देखने सुनने की क्रियायें इसी के द्वारा संचालित होती हैं।

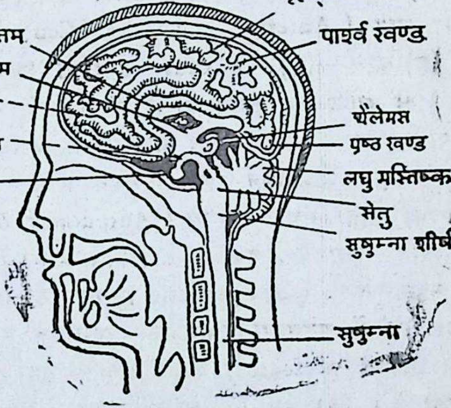

चित्र संख्या-७ मानव मस्तिष्क के दाहिने अर्द्धखण्ड में मस्तिष्क के प्रमुख विभागों की स्थिति

[४] अन्तर मस्तिष्क
(Diencephalon)

अन्तरमस्तिष्क के निम्नलिखित दो भाग हैं—(१) थैलेमस (Thalamus) तथा (२) हाइपोथैलेमस या लघु थैलेमस (Hypothalamus)।

(१) **थैलेमस (Thalamus)**—(अ) स्थिति—थैलेमस लघु मस्तिष्क के सामने एवं वृहद् मस्तिष्क के नीचे का भाग कहलाता है। सेतु से ठीक ऊपर इसका क्षेत्र है। इसमें परस्पर सम्बन्धित अनेक कोष केन्द्र (Nuclei) पाये जाते हैं जिनका कि सुषुम्ना तथा मस्तिष्क के निम्न केन्द्रों (Lower Centres) एवं मस्तिष्क खण्ड के वृहन्मस्तिकीय अर्धखण्डों से सम्बन्ध रहता है। (ब) कार्य—(१) थैलेमस एक स्विच बोर्ड का कार्य करता है। जो भी ज्ञानवाही स्नायु तन्त्र (Sensory Neurons) यहाँ आती हैं उन्हें वह उचित स्थान में भेज देता है। विभिन्न ग्राहकों द्वारा स्नायु तन्त्र जो खबर लाते हैं उनको थैलेमस कार्टेक्स (Cortex) के विभिन्न क्षेत्रों में पहुँचा देती है। (२) थैलेमस संवेगों के संचालन एवं नियन्त्रण में महत्वपूर्ण कार्य करता है। (३) साधारण सीखने की क्रिया थैलेमस पर ही आधारित है।

फा०—८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) हाइपोथैलेमस या लघु थैलेमस (Hypothalamus)—(अ) स्थिति —इसकी स्थिति थैलेमस क्षेत्र के नीचे एवं सेतु के ऊपर होती है। इसको दो भागों में विभाजित किया जाता है (१) पहला भाग पीछे एवं बगल का भाग (Posterior and Lateral Portion) कहा जाता है तथा (२) दूसरा भाग अगला एवं बीच का भाग (Anterior and the Central Portion) कहा जाता है। (ब) कार्य—(१) यह स्वतः संचालित क्रियाओं (Autonomic Functions) की सृष्टि तो करता ही है किन्तु उन्हें संगठित रूप भी प्रदान करता है। परिणामस्वरूप प्राणी अपने आन्तरिक वातावरण (Internal Environment) के साथ अभियोजन करने में समर्थ होता है। इससे स्पष्ट है कि हाइपोथैलेमस् का स्वतः संचालित मंडल (Autonomic Nervous System) से घनिष्ठ सम्बन्ध रहता है। इसलिये हाइपोथैलेमस को बिजली द्वारा उत्तेजित करने से सहानुभूतिक (Sympathetic) एव उप-सहानुभूतिक (Parasympathetic) दोनों मंडलों में क्रियाशीलता उत्पन्न हो जाती है। (२) थैलेमस रक्त-चाप (Blood pressure) को नियन्त्रित तथा मस्तिष्क पर उसका वितरण करता है। (३) इस पर शरीर-तापक्रम (Body Temperature) आधारित होता है। (४) यह काम-सम्बन्धी क्रियाओं (Sexual activities) को नियन्त्रित करता है। (५) यह भूख-प्यास से सम्बन्धित शारीरिक अवस्थायें (Physiological condition) निर्भर होती हैं। (६) यह शारीरिक पाक क्रिया (Metabolism) का संचालन करता है। (७) संवेगात्मक व्यवहार के संचालन में हाइपोथैलेमस का बड़ा हाथ रहता है।

[५ मस्तिष्क खण्ड
(Telencephalon)

मस्तिष्क खण्ड के अन्तर्गत दो भागों का समावेश होता है—(१) मूलभूत स्नायु-पुंज (Basal Ganglia) तथा (२) वृहद् मस्तिष्क (Cerebrum)।

(१) मूलभूत स्नायु-पुंज (Basal Gangla)—(अ) स्थिति—यह मस्तिष्क खण्ड का सबसे प्राचीन भाग है। यह भूरे पदार्थों (Gray Matter) की एक राशि है जो कि बल्क (Cortex) के नीचे स्थित होते हैं। मूलभूत पुंज (Basal Ganglia) का एक भाग कार्पस स्ट्रीटियम (Corpes Striatum) कहलाता है जो कि एक जटिल एवं महत्वपूर्ण रचना है। (ब) कार्य—(१) यह प्राणी की शारीरिक मुद्रा (Bodily Posture) को बनाये रखने में अत्यधिक सहायक होता है। (२) इस पर गति संगठन (Co-ordination of Movement) के कुछ पहलू निर्भर होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) बृहत् मस्तिष्क (Cerebrum)—यह मस्तिष्क का सबसे बड़ा तथा सबसे महत्वपूर्ण भाग है। बृहद् मस्तिष्क (Cerebrum) तथा सुषुम्ना (Spinal cord) दोनों मिलकर बृहद् मस्तिष्क-सुषुम्ना स्नायु मण्डल (Cerebrum-Spinal Nervous System) का निर्माण करते हैं। अतः पाठकों से यदि बृहद् मस्तिष्क-सुषुम्ना स्नायु मण्डल के सम्बन्ध में प्रश्न पूछा जाय तो वे बृहद् मस्तिष्क तथा सुषुम्ना दोनों पर एक दूसरे से सम्बन्ध स्थापित करते हुए प्रकाश डालें। सुषुम्ना पर हम प्रकाश डाल चुके हैं। अब हम बृहद् मस्तिष्क को अच्छी तरह समझने के लिये इस पर कुछ विस्तृत रूप से प्रथक् प्रकाश डालेंगे।

बृहत् मस्तिष्क
(Cerebrum)

[अ] बृहत् मस्तिष्क की स्थिति एवं बनावट
(Position and Structure of Cerebrum)

(अ) दो अर्द्धखण्डों में विभाजन—बृहद् मस्तिष्क की स्थिति मस्तिष्क के सबसे ऊपर होती है। यह मस्तिष्क का सबसे बड़ा तथा महत्वपूर्ण भाग है। इसे दो अर्द्धखण्डों में विभाजित किया जा सकता है। (१) दाहिना अर्द्धखण्ड (Right Hemisphere) तथा (२) बायाँ अर्द्धखण्ड (Left Hemisphere)। दाहिना अर्द्धखण्ड शरीर के बायें भाग की तथा बायाँ अर्द्धखण्ड शरीर के दाहिने भाग की समस्त चेतन (Conscious) तथा अचेतन (Unconscious) क्रियाओं का संचालन तथा नियन्त्रण करते हैं।

(ब) मनुष्य के बृहत् मस्तिष्क की विशेषता—निम्न प्राणियों (Lower Organisms) की अपेक्षा उच्च प्राणियों (Higher Organisms) विशेष तौर से मनुष्य का बृहद् मस्तिष्क अत्यन्त जटिल तथा आकार में बड़ा होता है। इसके अतिरिक्त निम्न प्राणियों के बृहद् मस्तिष्क की सतह (Surface) चिकनी तथा उच्च प्राणियों की मस्तिष्क की सतह ऊबड़ खाबड़ होती है। मनुष्य के बृहद् मस्तिष्क की शकल ठीक अखरोट के समान ऊबड़ खाबड़ होती है।

(स) बृहन्मस्तिष्कीय बल्क—बृहन्मस्तिष्कीय अर्द्धखण्डों (Cerebral-Hemispheres) की बाह्य परत (Outer layer) बृहन्मस्तिष्कीय बल्क (Cerebral Cortex) कहलाती है जिसके ऊपरी भाग में भूरे पदार्थ (Gray-Matter) पाये जाते हैं। बृहन्मस्तिष्कीय बल्क कहीं उभरा होता है और कहीं धँसा होता है। धँसे हुए भाग को दरार (Fissures) कहा जाता है। प्रमुखतया इसमें दो दरारें होती हैं जिन्हें मध्य दरार या रोलेण्डो की दरार (Central-fissure or fissure of Rolando) तथा पार्श्व दरार या सिलवियस की दरार (Lateral

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

fissure or fissure of Sylvius) कहा जाता है।

(द) बृहत् मस्तिष्क का चार खण्डों में विभाजन—उक्त वर्णित दोनों दरारें बृहत् मस्तिष्क को निम्नलिखित चार खंडों (Lobes) में विभाजित करती हैं।

(१) अग्रखण्ड (Frontal Lobe)
(२) मध्य-खण्ड (Parietal Lobe)
(३) पृष्ठ-खण्ड (Occipital Lobe)
(४) शंख-खण्ड (Temporal Lobe)

नीचे के चित्र में बृहत् मस्तिष्क के चारों खण्ड स्पष्ट दिखलाई दे रहे हैं—

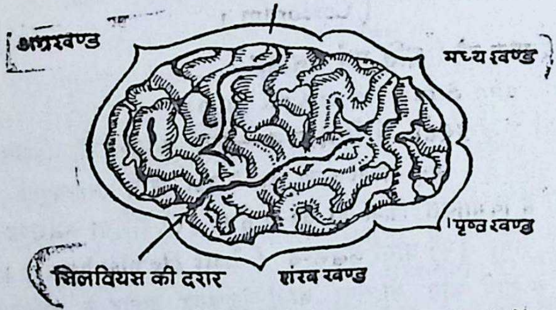

चित्र संख्या ८—बृहत् मस्तिष्क के चारों खण्ड और दोनों दरारें

[न] बृहत् मस्तिष्क एक संयोजक के रूप में
(The Cerebrum as a co-ordinating Centre)

बृहत् मस्तिष्क द्वारा हमारे बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होते हैं। यह हमारी सभी उच्च क्रियाओं का केन्द्र होता है। यहीं से स्वेच्छित क्रियाओं का संचालन होता है। यह सभी निचले केन्द्रों को संचालित तथा नियमित करता है। वह एक संयोजक केन्द्र (Co-ordination centre) या संयोजक केन्द्रों के एक समुदाय (A Group of Co-ordinating Centres) के रूप में कार्य करता है। विभिन्न ग्राहकेन्द्रियों (Receptors Organs) से स्नायु प्रवाह (Nerve Impulses) यहाँ आते हैं और विभिन्न उच्च केन्द्रों में जाते हैं एवं पुनः सारे शरीर की मांसपेशियों (Muscles) तथा ग्रन्थियों (Glands) में जाते हैं। विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों (Sense organs) से आये हुए स्नायु प्रवाह बृहन्मस्तिष्कीय वल्क (Cerebral Cortex) के सुनिश्चित क्षेत्रों में आते हैं। बृहन्मस्तिष्कीय वल्क में कुछ ऐसे भी निश्चित क्षेत्र हैं जिनके द्वारा वे स्नायु-प्रवाह मांसपेशियों एवं ग्रन्थियों में चले जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बृहन्मस्तिष्कीय बल्क में क्रियाओं का स्थान-निर्धारण
(Localization of Functions in the Cerebral Cortex)

[अ] बृहन्मस्तिष्कीय बल्क में क्रियाओं के स्थान निर्धारण में प्रयोग की गई विधियाँ
(Methods used in Localization of Functions in the Cerebral Cortex)

१६ वीं शताब्दी के मनोवैज्ञानिकों का कथन था कि प्रत्येक मानसिक क्रिया का मस्तिष्क के विशिष्ट क्षेत्र (Specific Area) में स्थान निर्धारित किया जा सकता है। बाद में जब वैज्ञानिक पद्धतियों (Scientific Methods) का प्रयोग किया गया तो मस्तिष्क में मानसिक क्रियाओं से स्थान निर्धारण के विषय में उनके कथन में पर्याप्त मात्रा में सत्यता प्राप्त हुई। बृहन्मस्तिष्कीय बल्क (Cerebral Cortex) के विभिन्न क्षेत्रों (Areas) में मानसिक क्रियाओं के स्थान निर्धारण में मस्तिष्क वैज्ञानिकों (Phrenologists) ने जिन पद्धतियों का प्रयोग किया है वे निम्नलिखित हैं :—

(१) बृहन्मस्तिष्कीय बल्क (Cerebral Cortex) के कुछ क्षेत्रों (Areas) के आकस्मिक विनाश (Accidental destruction) द्वारा ज्ञानवाही तथा गतिवाही प्रभावों का अध्ययन।

(२) मनुष्य और छोटे पशुओं के मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्रों में बिजली का झटका (Electrical Stimulation) देना।

(३) छोटे पशुओं के मस्तिष्क के कुछ विशेष भागों को आपरेशन विधि (Operation Method) द्वारा हटा लेना।

(४) छोटे पशुओं के मस्तिष्क के कुछ भागों का प्रयोगात्मक विनाश विधि (Method of Experimental Destruction) का प्रयोग करना।

(५) स्नायु ह्रास (Nerve degeneration) की परीक्षा। यह परीक्षा मृत्यु के तुरन्त बाद की जाती है।

[ब] बृहन्मस्तिष्कीय बल्क के कुछ निश्चित क्षेत्र
(Some Definite Areas of Cerebral Cortex)

बृहन्मस्तिष्कीय बल्क पर मानसिक क्रियाओं के स्थान निर्धारण (Localization) के सम्बन्ध में अब तक जो अध्ययन हुये हैं उनके आधार पर बृहन्मस्तिष्कीय बल्क पर निम्नलिखित तीन निश्चित क्षेत्र (Definite Areas) बनाये जा सकते हैं :—

(१) ज्ञानवाही क्षेत्र (Sensory Area)

(२) गतिवाही क्षेत्र (Motor Area)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) साहचर्य क्षेत्र (Association Area)

अब हम वृहन्मस्तिष्कीय बल्क के इन तीनों क्षेत्रों पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।

[१] बृहन्मस्तिष्कीय बल्क के ज्ञानवाही क्षेत्र (Sensory Areas of Cerebral Cortex)

वृहन्मस्तिष्कीय बल्क के ज्ञानवाही क्षेत्र के अन्तर्गत ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर निम्नलिखित पांच क्षेत्रों का समावेश होता है :—

(१) दृष्टि क्षेत्र (Visual Area)—मस्तिष्क के पृष्ठ खण्ड (Occipital Lobe) में पाये जाने वाला वल्कीय क्षेत्र (Cortical Area) दृष्टि क्षेत्र है। इसके द्वारा दृष्टि संवेदनायें संचालित एवं नियन्त्रित होती हैं। यदि दृष्टि क्षेत्र को नष्ट कर दिया जाय तो व्यक्ति में अंधापन आ जायगा।

(२) श्रवण क्षेत्र (Auditory Cortex)—श्रवण क्षेत्र शंख खण्ड (Temporal Lobe) के ऊपरी भाग में स्थित है। आन्तरिक कानों (Inner Ears) में पाये जाने वाले ग्राहक कोषों (Receptors Cells) से जब स्नायु प्रवाह (Nerve impulse) शंख खण्ड के श्रवण क्षेत्र में आते हैं तो व्यक्ति को श्रवण-संवेदनायें होती हैं। यदि श्रवण-बल्क (Auditory Cortex) विनष्ट हो जाय तो व्यक्ति में बहरापन आ जायगा।

(३) और (४) घ्राण एवं स्वाद क्षेत्र (Olfactory and Gustory Area)—घ्राण क्षेत्र वृहन्मस्तिष्कीय बल्क (Cerebral Cortex) के श्रवण क्षेत्र के पास स्थित है। अभी तक के अध्ययन से स्वाद क्षेत्र का निश्चित रूप से स्थान निर्धारण (Localization) नहीं किया जा सका है।

(५) त्वक् पेशी संवेदना क्षेत्र (Somesthetic Area)—यह क्षेत्र रोलेण्डों की दरार (Fissure of Rolando) के ठीक पीछे स्थित है। इस क्षेत्र को शरीर संवेदन क्षेत्र (Body Sensitivity Area) भी कहा जाता है। इस क्षेत्र के द्वारा स्पर्श तथा गति संवेदनाओं (Sensations of Touch and Movement) का संचालन तथा नियन्त्रण होता है। यदि इस क्षेत्र में त्वक पेशी संवेदन स्नायु तन्तुओं (Somesthetic Nerve fibres) को नष्ट कर दिया तो व्यक्ति की स्पर्श संवेदना में शिथिलता आ जाती है।

[२] बृहन्मस्तिष्कीय बल्क के गतिवाही क्षेत्र (Motor Areas of Cerebral Cortex)

वृहन्मस्तिष्कीय बल्क का प्रमुख गतिवाही क्षेत्र (Motor Area) अग्रखण्ड (Frontat Lobe) में रोलैंडो की दरार (Fissure of Rolando)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के ठीक सामने स्थित है। इस क्षेत्र में अनेक शुण्डाकार स्नायु-कोष (Nerve-Cells) पाये जाते हैं जिन्हें शुण्डाकार कोष (Pyramidal Cells) कहा जाता है। यहीं से गतिवाही स्नायु प्रवाहों (Motor Nerve-impulses) की उत्पत्ति

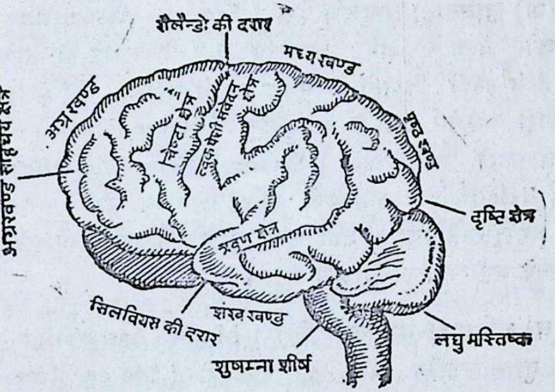

चित्र संख्या ६—वृहन्मस्तिष्कीय वल्क में क्रियाओं का स्थान निर्धारण

होती है। सुषुम्ना (Spinal Cord), सुषुम्नाशीर्ष (Medulla Ablongate) मध्य मस्तिष्क (Mid-brain) तथा लघु मस्तिष्क (Cerebellum) के संचालित तथा नियन्त्रित प्रतिक्षेत्र क्रियाओं (Reflex Actions) का बड़ा महत्व होता है। किन्तु समस्त सुसंगठित एवं जटिल गटिल गतियाँ (Co-ordinated and Complex Movement) वृहन्मस्तिष्कीय वल्क के गतिवाही क्षेत्र द्वारा संचालित तथा नियन्त्रित होती हैं और इस क्षेत्र के स्नायु प्रवाहों से उत्पन्न होती हैं। इस क्षेत्र के स्नायु कोषों (Nerve Cells) को विनष्ट कर देने से उनके द्वारा उत्तेजित होने वाली मांसपेशियों में गतिशून्यता (Paralysis) आ जाती है।

(३) वृहन्मस्तिष्कीय वल्क के साहचर्य क्षेत्र

(Association Areas of Cerebral Cortex)

वृहन्मस्तिष्कीय वल्क के ज्ञानवाही एवं गतिवाही क्षेत्र (Sensory and Motor Areas) सम्पूर्ण क्षेत्र के केवल एक छोटे से भाग को समाहित कर पाते हैं। शेष बचे हुये बड़े भारी भाग में साहचर्य क्षेत्र (Association Areas) आते हैं। ज्ञानवाही क्षेत्र (Sensory Areas) ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न स्नायु प्रवाहों (Nerve-impulses) को ग्रहण करते हैं एवं गति क्षेत्र (Motor Areas) इन स्नायु प्रवाहों को मांसपेशियों (Muscles) में भेजते हैं। साहचर्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्षेत्र (Association Areas) ज्ञानवाही तथा गतिवाही क्रियाओं को सम्बन्धित करते हैं और उनके बीच समन्वय (Integration) स्थापित करते हैं। अब हम संक्षेप में विभिन्न साहचर्य क्षेत्रों पर प्रकाश डाल रहे हैं।

(अ) ज्ञानवाही साहचर्य क्षेत्र (Sensory Association Areas)—वृहन्मस्तिष्कीय वल्क के विभिन्न ज्ञानवाही क्षेत्रों के समीप जो ज्ञानवाही साहचर्य क्षेत्र होते हैं वे उनकी क्रियाओं के सुचारु रूप से सम्पादन होने में सहायक होते हैं। जब ज्ञानवाही साहचर्य क्षेत्रों के स्नायु-तन्तु (Nerve-Fibers) विनष्ट हो जाते हैं तब ज्ञानवाही स्नायु-प्रवाहों (Sensory Nerve impulses) में निहित सम्बन्धों (Relations) तथा अर्थों को पहचानने एवं समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है अर्थात् सभी तरह की ज्ञान शून्यताओं में उत्तेजनाओं की संवेदनायें तो होती हैं किन्तु उनके अर्थ का ज्ञान नहीं होने पाता।

(ब) गतिवाही-साहचर्य क्षेत्र (Motor Association Areas)—यह क्षेत्र वृहन्मस्तिष्कीय वल्क के गतिवाही (Motor Area) के निकट माना जाता है। इस क्षेत्र के निकट हो जाने कार्य पर करने की क्षमता (Ability to do) समाप्त हो जाती है। इस स्थिति को चेष्टाशून्यता (Apraxia) कहते हैं। चेष्टाशून्यता आ जाने पर हाथ एवं अंगुलियाँ गतिशून्य तो नहीं होती किन्तु इनमें समन्वय एवं संगठन की क्षमता जाती रहती है। यह स्थिति आने पर टाइप करने वाला व्यक्ति टाइप नहीं कर सकता और हरमोनियम बजाने वाला व्यक्ति हरमोनियम नहीं बजा सकता।

(स) अग्र-साहचर्य क्षेत्र (Frontal Association Areas)—गतिवाही क्षेत्र के सम्मुख अग्रखण्डों (Frontal Lobe) में अति विस्तृत साहचर्य-क्षेत्र (Association Areas) स्थिति है। इसलिये इन्हें अग्र-साहचर्य क्षेत्र कहते हैं। पहले लोगों का विचार था कि यह विस्तृत-क्षेत्र वुद्धि का स्थान (Seat) है। लोगों का यह भी विचार था कि चूँकि मनुष्य के अग्र-साहचर्य क्षेत्र अन्य पशुओं की अपेक्षा बड़े होते हैं इसलिये वह सभी प्राणियों में बुद्धिमान प्राणी है। किन्तु इस सम्बन्ध में जो अनुसंधान हुये हैं उनसे ये सब बातें गलत सिद्ध हुई हैं। प्रयोगों से ज्ञात हुआ है कि अग्र-साहचर्य क्षेत्रों के पूर्ण तरह से नष्ट हो जाने से व्यक्ति में तात्कालिक स्मरण-शक्ति की कमी आ जाती है। अगले खण्डों (Frontal Lobes) के बाहर साहचर्य केन्द्रों के विनष्ट हो जाने पर शीघ्र प्रभाव नहीं पड़ता है। यदि कोई भी अग्र-साहचर्य क्षेत्र ठीक से काम करता रहे तो शीघ्र हानि नहीं होती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] सम्पूर्ण बृहन्मस्तिष्कीय वल्क के सामान्य कार्य—मस्तिष्क की समक्षमता का सिद्धान्त (Genenal Functions of the Entire Cerebral Cortex —Theory of Equipotentiality of the Brain)

मस्तिष्क-वैज्ञानिकों ने अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि सम्पूर्ण बृहन्मस्तिष्कीय वल्क एक इकाई के रूप में कार्य करता है। लेश्ले (Lashley) महोदय ने मस्तिष्क की क्रियाओं का वर्णन करते हुये बतलाया है कि मस्तिष्क के समस्त भागों में बराबर शक्ति पाई जाती है। यदि मस्तिष्क के किसी भी भाग में क्षति हो जाती है तो हानिरहित दूसरे भाग उसके कार्यों को करने लगते हैं। लेश्ले ने इस तथ्य को 'मस्तिष्क की समक्षमता के सिद्धान्त' (Theory of Equipotentiality of the Brain) के नाम से सम्बोधित किया है।

[द] कोई भी जटिल क्रिया मस्तिष्क की मात्रा पर निर्भर होती है—मस्तिष्क सामूहिक क्रिया का सिद्धान्त (Any Complex Activity Depends on the Amount of Brain-Theory of Mass action of the Brain)।

लेश्ले महोदय ने अपने उपर्युक्त वर्णित सिद्धान्त-यथा मस्तिष्क की समक्षमता का सिद्धान्त—को एक दूसरे सिद्धान्त-यथा मस्तिष्क के सामूहिक क्रिया का सिद्धान्त—पर आधारित बतलाया। इस सिद्धान्त के अनुसार किसी भी जटिल क्रिया (Complex Activity) का अच्छी तरह सम्पादित होना मस्तिष्क की मात्रा (Amount of Brain) पर निर्भर है न कि उसके किसी विशिष्ट भाग पर। जितनी मात्रा में मस्तिष्क में क्षति होती है उसी के अनुपात में जटिल क्रिया के सम्पादन में कमी आती है।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि केन्द्रीय स्नायु-मण्डल दो प्रमुख विभागों यथा सुषुम्ना (Spinal Cord) तथा मस्तिष्क (Brain) से मिलकर बना है। सुषुम्ना एक तो संचारण (Conduction) का कार्य करती है और दूसरे वह प्रतिक्षेप क्रियाओं का एक समन्वयात्मक केन्द्र है। मस्तिष्क के प्रमुख विभाग इस प्रकार हैं (१) सुषुम्ना शीर्ष (२) आनुमस्तिष्क—सेतु, एवं लघु मस्तिष्क, (३) मध्य मस्तिष्क—सतह और छत, (४) अन्तरमस्तिष्क—थैलेमस और हाइपोथैलेमस या लघु मस्तिष्क, तथा (५) मस्तिष्क खण्ड—मूलभूत स्नायु पुंज और बृहद मस्तिष्क। मस्तिष्क के इन समस्त अंगों में बृहत मस्तिष्क का सबसे प्रमुख स्थान है क्योंकि यह ही हमारी सभी उच्च तथा स्वेच्छित क्रियाओं (Higher and

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Voluntary Action) का संचालन करता है। अब तक बृहन्मस्तिष्कीय बल्क पर मानसिक क्रियाओं के निर्धारण के सम्बन्ध में जो अध्ययन हुये हैं उनके आधार पर बृहन्मस्तिष्कीय बल्क पर निम्नलिखित तीन निश्चित क्षेत्र बताये जा सकते हैं—(१) ज्ञानवाही क्षेत्र, (२) गतिवाही क्षेत्र तथा (३) साहचर्य क्षेत्र। शरीर-वैज्ञानिकों ने मस्तिष्क की क्रियाओं के सम्बन्ध में दो सिद्धान्तों—यथा (१) समक्षमता का सिद्धान्त तथा (२) सामूहिक क्रिया का सिद्धान्त—का प्रतिपादन किया। इन सिद्धान्तों के आधार पर हमें यह न समझ लेना चाहिये कि मस्तिष्क में क्रियाओं का स्थान निर्धारण नहीं हो सकता है। अभी तक जिन क्रियाओं का स्थान निर्धारण किया गया है उनके आधार पर हम यह कह सकते हैं कि स्थान निर्धारण एक स्थापित सत्य (Established Fact) है। इसके अतिरिक्त यह भी ठीक है कि मस्तिष्क के एक भाग दूसरे भागों से बहुत कुछ क्रियात्मक तादात्मय (Functional Identification) रखते हैं।* शेरिंग्टन (Sherrington) महोदय ने सम्पूर्ण केन्द्रीय स्नायु-मण्डल की सामान्य क्रिया का वर्णन करते हुये उसे एक इकाई (Unit) के रूप में माना है। उन्होंने लिखा है "यह एक ऐसा अंग है जो प्राणी की अनेक क्रियाओं एवं प्रतिक्रियाओं में एकता स्थापित करके उसकी आवश्यकता के अनुकूल बना देता है। अतः प्राणी वातावरण के साथ सफल अभियोजन स्थापित कर लेते हैं।"

"It is, in short, an organ of co-ordination, in which from a concourse of multitudinous excitations, there result orderly acts, reactions adapted to the needs of the organism marked by absence of confusion and proceed in sequences likewise free from confusion."

—**Sherrington.**

———

* "Localization is an established fact. But our concept of cortical areas must apparently be modified to allow far wide flexibility as to permit of much functional identity of one part with other. The clinical as well as experimental evidence indicates the equipotentiality found for rat's brain holds within broad limits for the brain of cats, monkeys and men."

—**H. E. Carret.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०

वंशानुक्रम एवं पर्यावरण का तुलनात्मक महत्व

[Relative Importance of Heredity and Environment]

प्रश्न संख्या—१०

मानव व्यवहार में वंशानुक्रम एवं पर्यावरण के तुलनात्मक महत्व की जाँच कीजिये।

Examine the relative importance of heredity and environment in human behaviour.

भूमिका (Introduction)

मानव व्यवहार को समझने के लिए इस प्रश्न पर काफी समय से विवाद चला आ रहा है कि मनुष्य के व्यवहार पर वंशानुक्रम (Heredity) का अधिक प्रभाव पड़ता है या पर्यावरण (Environment) का। वंशानुक्रमवादी इस बात पर बल देते हैं कि मानव व्यवहार को निर्धारित करने में वंशानुक्रम का अधिक प्रभाव पड़ता है। किन्तु इसके विपरीत पर्यावरणवादी कहते हैं कि पर्यावरण ही मनुष्य के सम्पूर्ण व्यवहार का एक मात्र आधार है। दोनों सम्प्रदायों ने अपने-अपने मत की पुष्टि के लिये परीक्षणों (Experiments) का आधार लिया है। किन्तु, वास्तविकता यह है कि मानव व्यवहार को निर्धारित करने में वंशानुक्रम एवं पर्यावरण दोनों का ही महत्वपूर्ण योगदान है। अब स्वभावतः हमारे समक्ष प्रश्न उठता है कि आखिर वंशानुक्रम और पर्यावरण क्या हैं ? इस प्रश्न में वंशानुक्रम एवं पर्यावरण का स्वरूप तथा उनका मानव व्यवहार में तुलनात्मक महत्व समझने के लिए हम वंशानुक्रम का स्वरूप (Nature of Heredity), उत्पत्ति विधि के सिद्धान्त (Principles of Fertilization), वंशानुक्रम के नियम (Laws of Heredity), वातावरण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का स्वरूप (Nature of Environment), वंशानुक्रम एवं पर्यावरण के प्रभाव पर विभिन्न परीक्षण (Various Experiments on the Influence of Heredity and Environment) तथा वंशानुक्रम और पर्यावरण के महत्व के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय (Final Judgment about the Importance of Heredity and Environment) प्रस्तुत करेंगे।

वंशानुक्रम का स्वरूप
(Nature of Heredity)

[अ] वंशानुक्रम का अर्थ [Meaning of Heredity]

वंशानुक्रम (Heredity) एक भावात्मक (Abstraction) शब्द है क्योंकि न हम इसे देख सकते हैं और न छू सकते हैं वरन् हम इसका अनुभव करते हैं। जब हम विचार करना प्रारम्भ करते हैं तो कभी-कभी हम यह भी विचार करने लगते हैं कि इस व्यापक विश्व में अनेक प्रकार के प्राणी उपस्थित हैं। इन सब में सन्तानोत्पत्ति की शक्ति निहित है। जिस तरह का जो प्राणी होता है वह उसी तरह की सन्तान उत्पन्न करता है। ये गुण तीन तरह के होते हैं—(१) जाति की समानता (२) विविधिता एवं (३) विचित्रता। पूर्वजों से प्राप्त इन्हीं व्यक्तिगत गुणों को ही हम वंशानुक्रम (Heredity) कहते हैं। जीव-विज्ञान के अनुसार "वंशानुक्रम फलति रजाणु के भावी गुणों में विद्यमान गुणों का योग है।"

[ब] वंशानुक्रम की परिभाषा [Definition of Heredity]

१—जे० एफ० क्यूबर—"इसके अन्तर्गत वे समस्त गुण एवं विशेषतायें आती हैं जो एक व्यक्ति में निहित हैं क्योंकि वह जातियों का नमूना है।"

"It consists of all those traits and characteristics which a person possesses because he is a specimen of the Species Homo Sapiens."

—J. F. Cuber.

२—रूथ बैण्डिक्ट—"वंशानुक्रम माता-पिता से सन्तानों को प्राप्त होने वाले गुण हैं।"

"Heredity is the transmission of traits from parents to offspring."

—Ruth Bendict.

३—पी० जिसबर्ट—"प्रकृति में पीढ़ी का प्रत्येक कार्य कुछ जैवकीय अथवा मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को माता-पिता द्वारा उनकी सन्तानों को हस्तान्तरित करना है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Every act of generation in nature is the transmission by the parents to their offspring of certain characteristics, biological or phychological." —P. Gisbert.

४—बील्स एवं ह्वाजर—"वंशानुक्रम का अर्थ, वस्तुओं की अपनी जाति की वस्तुओं का प्रजनन करने की प्रवृत्ति है।"

"......heredity meaning simply the tendency of things to reproduce their own kind......" —Beals and Horizer.

५—जेम्स ड्रेवर—"माता-पिता की शारीरिक एवं मानसिक विशेषताओं का सन्तानों में हस्तान्तरण होना वंशानुक्रम है।"

"Heredity is the transmission from parents to offspring of physical and mental characteristics." —James Drever.

उत्पत्ति विधि के सिद्धान्त
(Principles of Fertilization)

विद्वानों ने उत्पत्ति विधि के क्रमशः निम्न सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं :—

(१) मनुष्य का शरीर कोष्ठों (Cells) का योग होता है।

(२) मनुष्य जीवन अण्डकोष (Egg cell) एवं शुक्रकोष्ठ (Sperm cell) के मिलने से शुरू होता है।

(३) प्रत्येक कोष्ठ का निर्माण दो वस्तुओं से होता है (१) नाभिक (Nucleus) एवं कोशारस (Cyto-Plasm)।

(४) ज्योंही अण्डकोष्ठ एवं शुक्रकोष्ठ का समन्वय होता है त्योंही कोष्ठ 'विभाजन की प्रक्रिया' (Mitosis) प्रारम्भ हो जाती है फलस्वरूप वे एक से दो, दो से चार, चार से आठ इसी प्रकार असंख्य कोष्ठों में विभाजित हो जाते हैं।

(५) कोष्ठों के नाभिक (Nucleus) वर्णसूत्र (Chromosomes) एवं वाहकाणु (Genes) हुआ करते हैं।

(६) ये वर्ण सूत्र एवं वाहकाणु अपनी प्रतिलिपियाँ उत्पन्न करने में समर्थ होते हैं।

(७) प्रत्येक कोष्ठ में एक ही प्रकार के वर्ण सूत्र एवं वाहकाणु पाये जाते हैं।

(८) उपर्युक्त प्रक्रिया के परिणामस्वरूप मूल जीवाणु (Germ-plasm) की निरन्तरता बनी रहती है।

(९) वंशानुक्रम मूल जीवाणु ही होता है।

(१०) मूल जीवाणु वर्णसूत्र एवं वाहकाणु का योग हुआ करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(११) मनुष्य जाति में २४ 'युग्म वर्णसूत्र' प्राप्त होते हैं।

(१२) वाहकाणुओं का मिश्रण कभी नहीं होता है, भले ही वे प्रबल अथवा गौण रहें।

(१३) मनुष्य के लक्षणों एवं वाहकाणुओं का बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध हुआ करता है।

(१४) जीववैज्ञानिकों का कथन है कि वाहकाणुओं के योग से १६,७७७,२१६ प्रकार की विभिन्नतायें सम्भव हैं।

(१५) इस प्रकार व्यक्तिगत विभिन्नता वंशानुक्रम से ही हो जाती है। बोरिंग लांगफील्ड एवं वील्ड का विचार है :—

"The hereditary basis of individual difference lies in the almost unlimited variety of possible gene combinations which may occur, especially in so complex an organization as man."

—**Boring Langfild & Weld.**

वंशानुक्रम के नियम
(Law of Heredity)

वंशानुक्रम के प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं—

(१) मूल जीवाणु की निरन्तरता का नियम (Law of Continuity of Germ-Plasm),

(२) रूपान्तर का नियम (Law of Variation)।

(३) अर्जित गुणों के अवितरण का नियम (Law of Non-Transmission of Acquired Traits)।

(४) प्रत्यागमन का नियम (Law of Regression)।

(५) मेण्डल का नियम (Law of Mendel)।

[१] मूल जीवाणु की निरन्तरता का नियम
(Law of Continuity of Germ-plasm)

मूल जीवाणु की निरन्तरता का प्रतिपादन वीजमैन (Weisman) नामक वैज्ञानिक ने किया है। मूल जीवाणु (Germ-plasm) शरीर के उस तत्व को कहते हैं जो अण्ड कोष्ठ (Egg cells) एवं शुक्र कोष्ठ (Sperm cells) के द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होता रहता है एवं यह कभी नष्ट नहीं होता। इस प्रकार मूल जीवाणु में हस्तान्तरित होने की विशेषता सन्निहित है। फलस्वरूप उसके इस हस्तांतरित होने की प्रक्रिया को 'मूल जीवाणु की निरन्तरता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथवा सनातनता का नियम' (Law of Continuity of Germ Plasm) कहते हैं।

[२] रूपान्तर का नियम (Law of Variation)

(अ) डारविन (Darwin) के अनुसार—प्रसिद्ध जीवशास्त्री (Biologist) डार्विन (Darwin) का विचार है कि जो जीवजन्तु अपने जिस शारीरिक अवयव का प्रयोग नहीं करता है वह अवयव धीरे-धीरे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तान्तरित होकर रूपान्तरिक होता जाता है। यह रूपान्तर इतना अधिक होता है कि उपयोग न करने वाले अवयवों का लोप हो जाता है। उदाहरण के लिये हम देखते हैं कि बतख अपने पंखों का उपयोग नहीं करती हैं फलस्वरूप एक समय ऐसा आ सकता है कि पंखहीन बतखें पैदा होने लगें।

(ब) लैमार्क (Lamark) के अनुसार—डार्विन की तरह लैमार्क भी एक जीवशास्त्री था। उसने अनेक जीवजन्तुओं का परीक्षण एवं निरीक्षण कर 'रूपान्तर का नियम' (Law of Variation) प्रतिपादित किया। उसने अपने नियम के पुष्टीकरण के लिये जिराफ नामक प्राणी का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उसका विचार है कि बहुत समय पहले जिराफ की गर्दन इतनी लम्बी नहीं थी जितनी की अब देखने में आती है। इसका कारण यह है कि खाने की इच्छा शक्ति के कारण आदिकाल में जिराफ नामक जानवरों ने लम्बे-लम्बे पेड़ों की पत्तियों को खाने का प्रयास किया। यह प्रयास बराबर एक पीढ़ो से दूसरी पीढ़ी के द्वारा होता आया। फलस्वरूप एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के जिराफों की गर्दन लम्बी होती गई। इस प्रकार लैमार्क के अनुसार वातावरण से अनुकूलन करने के प्रयास के परिणामस्वरूप एक ही जाति के प्राणियों में रूपान्तर होता रहता है।

[३] अर्जित गुणों के अवितरण का नियम (Law of Non-transmission of Acquired Traits)

बहुत से वैज्ञानिकों ने विभिन्न परीक्षणों के आधार पर उपर्युक्त नियम से लगभग विपरीत 'अर्जित गुणों के वितरण का नियम' (Law of Non-Transmission of Acquired Traits) प्रतिपादित किया। इस नियम का तात्पर्य यह है कि जो गुण अथवा अवगुण माता-पिता अपने जीवन-काल में अर्जित कर लेते है उनका हस्तान्तरण उनकी सन्तानों में नहीं होता है। उदाहरण के लिये यदि कोई व्यक्ति किसी कारण अन्धा हो जाय तो उसकी संतानें भी अन्धी हों ऐसी बहुत कम सम्भावना रहती है। इस विचार का पुष्टीकरण करने के लिये वीजमैन (Weisman) ने एक प्रयोग किया। उसने कुछ चूहों को एकत्रित किया और उनकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पूँछों को काट दिया। इसी प्रकार दूसरी, तीसरी, चौथी, पीढ़ी आदि के चूहों की पूँछों को काटता रहा परन्तु किसी भी पीढ़ी के चूहे ऐसे न हुये जो पूँछविहीन हों। इस परीक्षण से यह निष्कर्ष निकलता है कि अर्जित गुणों का हस्तान्तरण नहीं होता है।

उपर्युक्त नियम की आलोचना—कुछ विद्वान् अर्जित गुणों के अवितरण के नियम को स्वीकार नहीं करते हैं। उन्होंने इसके सम्बन्ध में बहुत से प्रयोग भी किये हैं जिनसे उनको पता चला कि अर्जित गुणों का हस्तान्तरण होता रहता है। नीचे हम पैवलव, मैकडूगल एवं हरीसन का प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं।

(अ) पैवलव (Pavlov) का प्रयोग—पैवलव महोदय ने सफेद चूहों पर प्रयोग करते हुये यह देखा कि पहली पीढ़ी के चूहे ३० बार घण्टी सुनने पर भोजन को प्राप्त करने के लिये आते हैं परन्तु पाचवीं पीढ़ी के चूहे केवल ५ बार ही घण्टी सुनकर भोजन प्राप्त करने के लिये आ जाते हैं।

(ब) मैकडूगल (McDougall) का प्रयोग—मैकडूगल महोदय ने कुछ चूहों को एक ऐसे तालाब में छोड़ दिया जिससे निकलने के दो मार्ग थे—एक मार्ग में प्रकाश था एवं दूसरे में अंधेरा। चूहे प्रकाश वाले मार्ग से निकलने का प्रयास करते थे परन्तु इस मार्ग से निकलने में उन्हें बिजली का धक्का लग जाता था फलस्वरूप वे घबड़ा जाते थे। उन्होंने अनेक प्रयास एवं भूल (Trial and Error) कर अंधेरे मार्ग को प्राप्त कर लिया जिससे कि निकलने में उन्हें किसी प्रकार की घबड़ाहट न होती थी। परीक्षण में उन्होंने देखा कि प्रथम पीढ़ी के चूहे १६५ बार प्रयास एवं भूल करने के उपरान्त सही मार्ग अर्थात् अंधेरा वाला मार्ग प्राप्त कर पाते हैं परन्तु २३ वीं पीढ़ी के चूहों को केवल २५ बार ही प्रयास एवं भूल करने पर सही मार्ग मिल जाता है।

(स) हरीसन (Harrison) का प्रयोग—हरीसन महोदय ने बहुत से सामान्य पतंगों को दो टोलियों में विभाजित किया। प्रथम टोली को उसने साधारण मैदान में पाये जाने वाले पत्तों पर पाला एवं द्वितीय टोली के पतंगों को फैक्टरियों के आस-पास के पत्तों पर पाला। कुछ दिन के उपरान्त उसने देखा कि द्वितीय टोली के पतंगों का रंग काला हो गया है क्योंकि इन पतंगों को फैक्टरियों का धुँआ प्रभावित करता रहता है। फलस्वरूप एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी के पतंगे उत्तरोत्तर काले पड़ते गये हैं।

उपर्युक्त नियम एवं प्रयोगों का निष्कर्ष—उपर्युक्त शब्दों से यह विदित होता है कि केवल प्राणी के वही अर्जित गुण संक्रमित होते हैं जिनका प्रभाव उसके बीजकोषों (Germ-plasm) पर पड़ता है इसके विपरीत वे अर्जित गुण संक्रामित नहीं होते जो बीजकोषों पर अपना कोई प्रभाव नहीं डालते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[४] प्रत्यागमन का नियम
(Law of Regression)

मन्द-बुद्धि के माता-पिता की सन्तानों को प्रतिभाशाली होने एवं प्रतिभाशाली माता-पिता की संतानों को मन्द बुद्धि होने की प्रवृत्ति को प्रत्यागमन (Regression) का सिद्धान्त कहा जाता है। विद्वानों ने प्रत्यागमन के अनेक कारण प्रस्तुत किये हैं परन्तु निम्न कारण सर्वमाननीय हैं—

(१) जब वंश सूत्रों का मिश्रण अच्छी तरह से नहीं होता तो प्रतिभाशाली माता-पिता के मन्द-बुद्धि सन्तानें उत्पन्न हो जाती हैं। इसके विपरीत अगर मिश्रण ठीक तरह से हुआ तो सन्तानों में अच्छे गुण आ जाते हैं।

(२) मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को वंशानुक्रम से दो प्रकार के गुण प्राप्त होते हैं—(१) व्यक्त (Dominant) एवं (२) सुप्त (Recessive)। ये व्यक्त एवं सुप्त दोनों प्रकार के गुण पिता से पुत्र के क्रम में भावी सन्तति को हस्तांतरित होते रहते हैं। कुछ परिस्थितियों के कारण कभी व्यक्त गुण सुप्त हो जाते हैं और कभी सुप्त गुण व्यक्त हो जाते हैं। इसी कारण से अनेक पीढ़ियों के बाद भी पूर्वजों के गुण या दोष सन्तान में आ जाया करते हैं। अनेक अध्ययनों के उपरान्त वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि "बालक को आधा गुण माता-पिता से, चौथाई अपने दादा से, आठवाँ अपने परदादा से एवं सोलहवाँ अपने पर-दादा से प्राप्त होता है। भारतीय शिक्षाशास्त्री कश्यप एवं पुरी ने ठीक ही लिखा है—

"More specifically, 1/2 comes from his parents, 1/4 from his grand-parents, 1/8 from his great-grand-parents, and so on for all the other more remote ancestors."

—**Kashyap and Puree.**

(५) मेण्डल का नियम (Law of Mendel)

जेकोस्लोवाकिया निवासी प्रसिद्ध विद्वान् ग्रेगर जान मेण्डल (Gregoas John Mendel) महोदय ने वंशानुक्रम के सम्बन्ध में यह नियम निकाला कि प्रकृति सर्वदा सन्तुलित अवस्था रखने का प्रयास करती है। इस नियम को प्रधान प्रकार की ओर प्रत्यागमन का नियम भी कहा जाता है। चूँकि इस नियम का प्रतिपादन मेण्डल ने किया है फलस्वरूप प्रायः उसके नियम को 'मेण्डल का नियम' (Law of Mendel) अथवा संक्षेप में 'मेण्डलवाद' (Mendalism) कहते हैं। मेण्डल ने अपने नियम को प्रतिपादित करने में मटरों का प्रयाग किया जिसे हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेण्डल का प्रयोग (Experiment of Mendel)—मेण्डल महोदय ने सर्वप्रथम छोटी एवं बड़ी मटर को बराबर संख्या में मिलाकर बो दिया। जो मटरें उत्पन्न हुईं वे सब की सब मटरें हुईं। उसने पुनः इन वर्णसंकर जाति की मटरें बोईं। इनसे जो मटरें उत्पन्न हुयीं, वे वर्णसंकर जाति की हुईं, इन मटरों को लेकर उसने पुनः इनको बो दिया तो इनसे जो मटरें प्राप्त हुईं वे विशुद्ध प्रकार की थीं। मेण्डल के इस प्रयोग को अच्छी तरह से समझने के लिये हम नीचे उसकी तालिका प्रस्तुत कर रहे हैं—

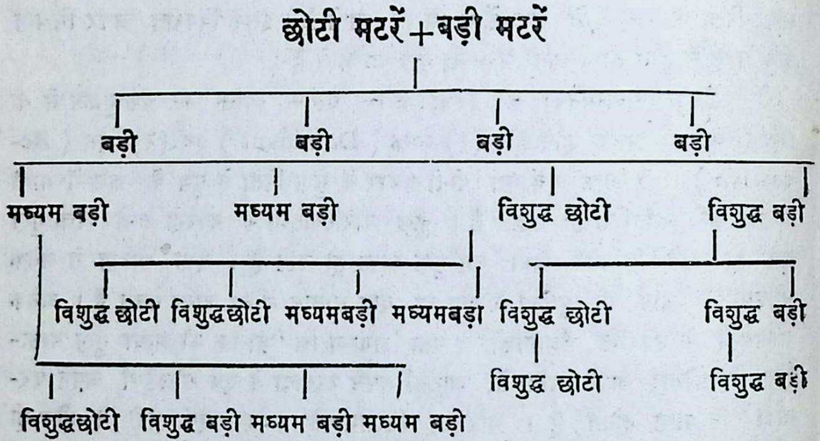

मेण्डल का प्रयोग

मेण्डल के नियम अथवा मेण्डलवाद का निष्कर्ष—मेण्डल के नियम से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रकृति सर्वदा जाति के गुणों की रक्षा करने का प्रयास करती है। दूसरे शब्दों में प्रकृति यह चाहती है कि केवल विशुद्ध जाति को ही आगे बढ़ने दिया जाये। इसीलिए विद्वानों ने मेण्डल के इस नियम को "प्रधान प्रकार की ओर प्रत्यागमन का नियम कहा है।" मेण्डल के नियम का सारांश प्रस्तुत करते हुये बी० एन० झा ने लिखा है, "**यह सब कहने का सारांश यह है कि वर्णसंकर स्वयं अपने वीर्याणुओं अथवा रजाणुओं का निर्माण करते हैं तो सबल गुण से युक्त माता-पिता वाली शुद्ध किस्मों को ही उत्पन्न करते हैं**—

"The sum and substance of the whole thing is that the hybrids when they come to form their own sperms (Male) or egg cells (Female) produce pure parental types with the dominant characters."

—B. N. Jha.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पर्यावरण का स्वरूप
(Nature of Environment)

[अ] पर्यावरण का अर्थ
(Meaning of Environment)

यदि हम पर्यावरण या वातावरण का शाब्दिक अर्थ समझने का प्रयास करें तो हमें पता चलता है कि पर्यावरण शब्द दो शब्दों से मिल कर निर्मित होता है—परि+आवरण। 'परि' शब्द का अर्थ होता है चारों तरफ से एवं 'आवरण' शब्द का अर्थ होता है ढके हुए। इस दृष्टिकोण से पर्यावरण वह है जो चारों ओर से ढका हुआ है। **कहने का तात्पर्य यह है कि प्राणी के अतिरिक्त जो भी वस्तुयें उसको प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं वे सब पर्यावरण या वातावरण के अन्तर्गत आ जाती हैं।**

[ब] पर्यावरण की परिभाषा
(Definition of Environment)

(१) **बोरिंग लैंगफील्ड एवं वील्ड**—"एक व्यक्ति के वातावरण के अन्तर्गत उन सब उत्तेजनाओं का योग आ जाता है जिनको कि वह गर्भ धारण से लेकर मृत्यु तक ग्रहण करता है।"

"......a person's environment consists of the sum total of the stimulation which he receives from his conception until his death." —**Boring Langfeld and Weld.**

(२) **ई० जे० रास**—"वातावरण कोई बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"

"Environment is any external force, which influence us."

—**E. J. Ross.**

(३) **टी० डी० इलियट**—चेतन पदार्थ को किसी इकाई के प्रभावकारी उद्दीपन एवं अन्तर्क्रिया के क्षेत्र को वातावरण कहते हैं।"

"The field of effective stimulation and interactions for any unit of living matter." —**T. D. Elliot.**

(४) **पी० जिस्बर्ट**—"वातावरण, उस सबको कहते हैं जो किसी एक वस्तु को चारों ओर घेरे है एवं उस पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।"

"Environment is anything immediately surrounding an object and exerting a direct influence on it." —**P. Gisbert.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वंशानुक्रम एवं पर्यावरण के प्रभाव पर विभिन्न परीक्षण
(Various Experiments on the Influence of Heredity and Environment)

इन परीक्षणों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—नियंत्रित और अनियन्त्रित :—

वंशानुक्रम और पर्यावरण इन दोनों में मनुष्य के व्यवहार पर किसका अधिक प्रभाव पड़ता है इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये वंशानुक्रमवादियों ने तथा पर्यावरणवादियों ने जो कुछ परीक्षण किए हैं उन परीक्षणों को हम निम्नलिखित दो भागों में विभाजित कर सकते हैं।

(१) अनियन्त्रित परीक्षण (Uncontrolled Experiments)

(२) नियन्त्रित परीक्षण (Controlled Experiments)

अनियन्त्रित परीक्षण
(Uncontrolled Experiments)

अनियन्त्रित परीक्षणों का तात्पर्य उन परीक्षणों से है जिनमें दोनों कारक वंशानुक्रम तथा पर्यावरण स्वतन्त्र रहते हैं :—

उन परीक्षणों को जिनमें वंशानुक्रम (Heredity) तथा पर्यावरण (Environment) दोनों कारक स्वतन्त्र या अस्थिर (Variable) रहते हैं अनियन्त्रित परीक्षण कहते हैं। इन परीक्षणों में सबसे बड़ा दोष यह है कि इनमें यह पूर्णरूपेण पता नहीं लग पाता है कि वंशानुक्रम तथा पर्यावरण में से किसका अधिक प्रभाव पड़ा। फिर भी इनका कुछ महत्व अवश्य है, अतः अब हम कुछ अनियन्त्रित परीक्षण प्रस्तुत कर रहे हैं।

[१ शारीरिक लक्षणों की माप
(Measurement of Physical Traits)

शारीरिक लक्षणों में से लम्बाई का मापना सबसे सरल होता है। जापानी और अमेरिकन सिपाहियों की लम्बाई नापी गई जिसमें जापानी सिपाहियों की ५६ इंच से लेकर ६६ इंच और अमेरिकन सिपाहियों की ६१ से ७५ इंच तक थी। इसी प्रकार जापानी सैनिकों की औसत लम्बाई ६३·२४ इंच और अमेरिकन सिपाहियों की औसत लम्बाई ६७·२१ इंच थी। इस परीक्षण के आधार पर वंशानुक्रमवादियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि दो समूहों में जो लम्बाई में अन्तर पाया जाता है उसका एकमात्र कारण वंशानुक्रम (Heredity) है। परन्तु वंशानुक्रमवादियों के इस निष्कर्ष को निम्नलिखित कारणों के कारण स्वीकार करना ठीक प्रतीत नहीं होता है :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) मनुष्य की लम्बाई कितनी होगी इसको निर्धारित करने में उसके भोजन के प्रकार, पालन पोषण के ढंग, जलवायु, जीवन की परिस्थितियाँ इत्यादि का बहुत प्रभाव पड़ता है अर्थात् पर्यावरण में अन्तर होने के कारण लोगों की लम्बाई में अन्तर पड़ जाता है।

(२) प्रायः देखा जाता है कि मुसीबत के दिनों में जब खाने-पीने को अच्छा नहीं मिल पाता है तो लम्बाई और वजन दोनों में बहुत ही कम वृद्धि हो पाती है। इसके विपरीत जब ये वस्तुयें पर्याप्त मात्र में उपलब्ध होती हैं तो लम्बाई और वजन दोनों बढ़ जाते हैं। बास (Boas) ने अपने अवलोकन द्वारा लिखा है कि अमेरिका में रहने वाले यहूदियों तथा जापानियों की लम्बाई औसतन अपने माता-पिता की लम्बाई से औसत से २ इंच बढ़ गई।

(३) सकीनफील्ड ने ठीक ही लिखा है, "जन्म प्रारम्भ होने के क्षण से और वयस्क होने तक अगणित कारक [अर्थात् पर्यावरण] कद के वाहकाणुओं की क्रिया पर प्रभाव डालते हैं।"

"From the moment of conception and through puberty, innumerable factors bear upon the action of the stature-genes."

—Scheinfeld.

[२] बुद्धि स्तर की माप
(Measurement of Intelligence Levels)

प्रथम महायुद्ध (First World War) के समय सैनिकों के बुद्धि स्तर मापने के लिये अमेरिका में मनोवैज्ञानिक परीक्षण हुए। इन परीक्षणों में यह देखा गया कि अमेरिकन सैनिकों की औसत मानसिक आयु (Mental Age) १३.१ वर्ष और नीग्रो सैनिकों की औसत मानसिक आयु १०.४ वर्ष है। इसी प्रकार के परीक्षण क्लार्क (Clarke) तथा पिटसन ने लास एन्जिल (Los Angeles) और लेनियर (Lanier) ने न्यूयार्क (New York) में किए। इन परीक्षणों के आधार पर वंशानुक्रमवादियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न समूहों के बौद्धिक स्तर में जो अन्तर पाया जाता है उसका कारण वंशानुक्रम है परन्तु इस विचार को निम्नलिखित कारणों से स्वीकार नहीं किया जा सकता है—

(१) स्टाडर्ड (Stoddard) का मत है कि वास्तव में बुद्धि परीक्षक बुद्धि को नहीं मापते हैं बल्कि प्रायः ज्ञान (Knowledge) को मापते हैं जो पर्यावरण में अर्जित किया जाता है।

(२) हाँ यदि हम यह मान भी लें कि बुद्धि परीक्षक वास्तव में बुद्धि को मापते हैं तो भी इस समस्या का हल नहीं हो पाता है क्योंकि अमेरिकन और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीग्रो लोगों का पर्यावरण समान नहीं है फलस्वरूप इस बात की सम्भावना हो सकती है कि बुद्धि स्तर में अन्तर पर्यावरण के अन्तर में निहित हों।

(३) यह तो स्वीकार करना पड़ता है कि मनुष्य की बुद्धि के विकास पर पारिवारिक जीवन, सामाजिक अनुभव, शिक्षा, प्रशिक्षण इत्यादि कारणों का बहुत प्रभाव पड़ता है। अमेरिका में रहने वाले नीग्रो श्वेत जाति की तुलना में हीन पर्यावरण में रहते हैं।

[३] व्यावसायिक समूहों का अध्ययन
(Study of Occupational Groups)

अमेरिका में यह जानने के लिए सर्वेक्षण हुआ कि ५,००,००० डालर से अधिक आय वाले उच्च अधिकारी, कम्पनियों के स्वामी तथा भागीदार किन समूहों में पैदा हुये हैं। इस सर्वेक्षण से पता लगा कि ३६ प्रतिशत बड़े व्यवसायियों के, २०.७ प्रतिशत किसी न किसी प्रकार के व्यवसायियों के, १२.४ प्रतिशत किसानों के, ८ प्रतिशत कुशल श्रमिकों के, ५ प्रतिशत क्लर्कों के और २२ प्रतिशस अकुशल श्रमिकों के पुत्र थे। इस सर्वेक्षण में केवल २७.६ प्रतिशत ही साधारण लोगों की सन्तानें थीं बाकी सब उच्च वंशानुक्रम वाले समूहों की सन्तानें थीं। निम्नलिखित कारणों से यह नहीं कहा जा सकता है कि उच्च वंशानुक्रम होने के कारण ही कोई व्यक्ति कुशल व्यवसायी होता है—

(१) जिन लोगों को उच्चकोटि का पारिवारिक जीवन, सुन्दर शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा सम्बन्ध प्राप्त हुए वे लोग अपने व्यवसाय में बहुत सफल हुए। ये सब कारण पर्यावरण से सम्बन्धित हैं न कि वंशानुक्रम से।

(२) कोई भी व्यवसाय पूँजी तथा प्रयास पर आधारित होता है जो पर्यावरण से सम्बन्धित होते हैं फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि उच्च स्थिति प्राप्त करना उच्च वंशानुक्रम का परिणाम है।

[४] विख्यात एवं कुख्यात वंशों के अध्ययन
(Studies of Famous and Degenerate Generations)

(१) ज्यूक्स वंश (Jukes Generation)—१७२० ई० में ज्यूक (Juke) नामक भ्रष्टाचारी व्यक्ति अमेरिका में पैदा हुआ। उसने युवावस्था प्राप्त करने पर अपनी ही कोटि की स्त्री से शादी की। परिणामस्वरूप उससे एक नये वंश अथवा परिवार की उत्पत्ति हुई। इस परिवार में १८७७ तक पाँच पीढ़ियों में १२०० वंशज पाये गये जिसमें ४३० सदा रोगग्रस्त रहे, ३०० बाल्यावस्था में ही समाप्त हो गये, ३१० जीवन पर्यन्त भिखारी रहे, १३० विभिन्न अपराधों के कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जेलों की हवा खाते रहे, ७ हत्यारे निकले बाकी ११ कुछ व्यावसायिक कला सीख पाये, औरतों में से आधी से अधिक वेश्यायें हुईं।

(२) एडवर्ड् स वंश (Edwards Generation)—रिचर्ड एडवर्ड (Richard Edward) जो कि एक उच्च कोटि का विद्वान् था, ने अपनी ही कोटि की स्त्री से शादी की। १६०० ई० में १३६५ वंशज प्राप्त हुए जिनमें से २६५ विश्वविद्यालय के स्नातक थे। इनमे से १३ वंशज महाविद्यालयों के अध्यक्ष और १ संयुक्त राज्य अमेरिका का उपाध्यक्ष था। अन्य व्यक्ति कोई न कोई उच्च पद पर विराजमान थे।

इन दोनों वंशों के अध्ययन के आधार पर वंशानुक्रमवादियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि किसी व्यक्ति का अच्छा बुरा होना पूर्णरूपेण उसके वंशानुक्रम पर आधारित है। परन्तु वंशानुक्रमवादियों के इस मत को भी निम्नलिखित कारणों से स्वीकार नहीं किया जा सकता है—

(१) हम देखते हैं कि वंशानुक्रम माता-पिता से निश्चित होता है। मनुष्य के शारीरिक और मानसिक लक्षण वाहकाणुओं (Genes) के सम्मिलित प्रभाव से निश्चित होते हैं। स्त्री और पुरुष भिन्न-भिन्न वंश के होते हैं। प्रत्येक पीढ़ी माता-पिता के वाहकाणुओं का एक नया योग होती है। इसलिये यह कहना कि जो वंशानुक्रम १७२० में था वही १८७७ में भी उस वंश के सदस्यों में था बिलकुल अवैज्ञानिक होगा।

(२) वंशानुक्रमवादियों को यह तो मानना ही पड़ेगा कि ज्यूक्स तथा एडवर्ड वंशजों के पर्यावरण में पर्याप्त विभिन्नता थी।

(३) उपर्युक्त अध्ययनों को पूर्ण भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि ज्यूक्स परिवार के सदस्यों की खोजें दरिद्र परिवारों, अनाथालयों एवं जेलों में हुईं और एडवर्ड परिवार के सदस्यों की खोजें उच्च परिवारों एवं प्रमुख स्थानों में हुईं।

(४) आसबर्न ने ठीक ही लिखा है, "समाजशास्त्रीय अध्ययनों के रूप में यह अध्ययन रुचिकर है। वंशानुक्रम के प्रमाण के रूप में साधारणतया उन्हें अब स्वीकार नहीं किया जा सकता है।"†

(५) कोन्कलिन ने भी लिखा है, "अनेक उत्तम गुण माता-पिता में मिल सकते हैं और उनके बच्चों में उनका अभाव हो सकता है, एक पूर्वज की प्रतिभा के स्थान पर उसके वंशज में अयोग्यता, मूर्खता और पागलपन हो सकता है।"

---

†"As sociological studies they are of interest. As evidence of heredity they are now generally discredited." —F. Osborn.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Consequently the best traits may appear in parents and to be lost in their offspring, genius in an ancester may be replaced by incompetence, imbecility, or insanity in a descendant."

—E. G. Conklin.

नियन्त्रित परीक्षण (Controlled Experiments)

नियन्त्रित परीक्षणों का तात्पर्य उन परीक्षणों से है जिसमें किसी एक कारक को नियन्त्रित रक्खा जाता है—

जैसा कि हमने अनियन्त्रित परीक्षणों को प्रस्तुत करने के पूर्व कहा था ये परीक्षण दोष रहित नहीं हैं क्योंकि इनमें दोनों कारक वंशानुक्रम (Heredity) तथा पर्यावरण (Environment) स्वतन्त्र रहते हैं। परिणामस्वरूप इन परीक्षणों से यह निश्चित रूप से पता नहीं चलता है कि वंशानुक्रम का अधिक प्रभाव पड़ता है अथवा पर्यावरण का। इस दोष से बचने के लिये विद्वानों ने नियन्त्रित परीक्षण (Controlled experiments) किए जिनमें एक कारक स्थिर (Constant) रहता है और दूसरा कारक अस्थिर (Variable)। इस प्रकार नियन्त्रित परीक्षणों का तात्पर्य उन परीक्षणों से है जिनमें किसी एक कारक को नियन्त्रित रक्खा जाता है। यद्यपि ऐसे परीक्षण मनुष्यों में करना मुश्किल है फिर भी जिज्ञासु मानव ने इस ओर प्रयत्न किये हैं। अब हम कुछ नियन्त्रित परीक्षण प्रस्तुत कर रहे हैं :—

[१] समान पर्यावरण में पाले गये समान जुड़वा बच्चों* का अध्ययन (Study of Identical Twins reared together)

यह अध्ययन 'डाओनी' (Dionne) बहनों पर किया गया। ये बहनें ५

---

* जुड़वाँ बच्चे (Twins)— जुड़वाँ बच्चे उन बच्चों को कहते हैं जो माँ के गर्भ में एक साथ विकसित होते हैं। जुड़वाँ बच्चे दो प्रकार के होते हैं— **(१) समान जुड़वाँ बच्चे** (Identical or Monozygotic Twins) तथा **(२) भ्राता जुड़वाँ बच्चे** (Fraternal or Dizygotic Twins)। समान जुड़वाँ बच्चे वे बच्चे हैं जो एक ही अण्डकोष्ठ (Egg cell) से विकसित होते हैं। भ्राता जुड़वाँ बच्चे वे बच्चे हैं जो अलग-अलग अण्डकोष्ठ (Egg cell) तथा शुक्र कोष्ठ (Sperm cell) से बनते हैं। इस तरह समान जुड़वाँ बच्चों का वंशानुक्रम बिलकुल समान होता है क्योंकि ये एक अण्डकोष्ठ के विभाजन से विकसित होते हैं और भ्राता जुड़वाँ बच्चों का भी वंशानुक्रम समान होता है क्योंकि एक स्त्री और पुरुष के अण्डकोष्ठ और शुक्र कोष्ठ से विकसित होते हैं फिर भी भ्राता जुड़वाँ बच्चों की अपेक्षा समान जुड़वाँ बच्चों का वंशानुसंक्रमण अधिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थीं जो समान जुड़वाँ (Indentical Twins) पैदा हुई थीं और एक परिवार में पाली गई थीं। इस प्रकार इनके वंशानुक्रम तथा पर्यावरण दोनों समान थे। जब ये बहनें २ वर्ष की हो गईं तो मनोवैज्ञानिकों ने इन पाँचों बहनों की सामाजिक सफलता (Social Success), सामाजिक जनप्रियता (Social Popularity) तथा सामाजिक रुचियाँ (Social Interest) इन तीनों गुणों की परीक्षा ली जिसका परिणाम निम्नलिखित है—

क्रम सं०	बहिनों का नाम	सामाजिक सफलता	सामाजिक जनप्रियता	सामाजिक रुचियाँ
१	एनेट	१·२	०·८	२·७
२	सेसिल	१·३	१·२	१·८
३	एमिली	०·६	१·०	०·६
४	मेरी	०·६	०·७	०·४
५	थूनी	१·६	१·६	१·०

उपर्युक्त परीक्षणों में हमने देखा कि पाँचों बहनों में मानसिक अन्तर बना रहा जबकि उनका वंशानुक्रम और पर्यावरण समान था। परीक्षणकर्त्ताओं का कथन है कि एमिली को क्रोध बिलकुल नहीं आता था जबकि मेरी क्रोध की एक पुतली थी। थूनी का व्यवहार तो बुजुर्गों सा था। इस प्रकार मानसिक अन्तर के कारण हमारी समस्या और भी जटिल हो जाती है क्योंकि इसमें वंशानुक्रम तथा पर्यावरण में समानता होते हुए अन्तर पाया गया है।

[२] असमान पर्यावरणों में पाले गये समान जुड़वाँ बच्चों का अध्ययन (Study of Identical Twins reared apart)

प्राणीशास्त्री न्यूमैन (Newman) मनोवैज्ञानिक फ्रीमैन (Freeman) एवं

समान होता है। जुड़वाँ बच्चे उन बच्चों की अपेक्षा अधिक समान हुआ करते हैं जो कि कुछ समय के अन्तर के बाद जन्म लिया करते हैं। इस प्रकार हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि जुड़वाँ बच्चों (Twins)—चाहे वे भ्राता सम्बन्धी जुड़वाँ बच्चे हों चाहे समान जुड़वाँ बच्चे हों—का वंशानुसंक्रमण (Heredity) समान हुआ करता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सांख्यिक होलजिगर (Holzinger) इन तीनों ने १६ जुड़वाँ बच्चों (Identical twins) को विभिन्न पर्यावरणों में पालकर उनका अध्ययन किया। स्पष्ट रहे कि इस परीक्षण में इन समान जुड़वाँ बच्चों का वंशानुक्रम स्थिर (Constant) या अपरिवर्तनशील था और पर्यावरण अस्थिर (Variable) या परिवर्तनशील व भिन्न था। इन परीक्षणकर्ताओं ने बताया कि यद्यपि इन जुड़वाँ बच्चों के शारीरिक लक्षणों पर पर्यावरण ने बहुत न्यून मात्रा में प्रभाव डाला है परन्तु इन जुड़वाँ बच्चों के मानसिक लक्षणों पर पर्यावरण का बहुत प्रभाव पड़ा है क्योंकि उनमें बहुत अन्तर पाया गया है। इस परीक्षण में हमने देखा कि जुड़वाँ बच्चों में अन्तर पाये गये हैं। इस अध्ययन के आधार पर वंशानुसंक्रमण तथा पर्यावरण के विचार की ओर संकेत करते हुए परीक्षणकर्त्ताओं ने उचित ही लिखा है, "हम प्रो० एच० एम० जेनिंग्स के अधिकारपूर्ण कथन से सहानुभूति अनुभव करते हैं कि जो कुछ वंशानुक्रम कर सकता है वह पर्यावरण भी कर सकता है।"

"We feel in sympathy with Professor H. S. Jenning's dictum that what heredity can do environment can also do."

—**Newman, Freeman and Holzinger.**

(३) समान पर्यावरण में पाले गये विभिन्न माता-पिता के बच्चों का अध्ययन

(Studies of Children of different Parentage reared together)

कुछ परीक्षण ऐसे भी हुए जिनमें विभिन्न माता पिता के बच्चे एक ही पर्यावरण में पाले गये। इनमें पर्यावरण स्थिर (Constant) होता है तथा वंशानुसंक्रमण अस्थिर (Variable)। इस प्रकार के परीक्षणों में कुमारी बर्क्स (Miss Burks) का परीक्षण उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि मनुष्य की बुद्धि के विकास में ८० प्रतिशत वंशानुक्रम का और २० प्रतिशत पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है। अपने परीक्षण में बर्क्स ने पर्यावरण को पूर्णतया मापने का प्रयास किया जो सम्भव नहीं है। इसी प्रकार का एक परीक्षण स्कील्स (Skeels) महोदय ने १५० अवैध बालकों पर किया जिनके वंशानुक्रम का कोई पता नहीं था। उन्होंने इन बालकों को अनाथालय में रक्खा। इन बालकों की समय-समय पर बुद्धि परीक्षा होती रही और उसकी तुलना भी होती रही। इन बालकों में से दो वर्ष के उपरान्त १६ बालकों की बुद्धि लब्धि (I. Q.) ११६ तक हो गई जबकि उनकी माताओं की औसत बुद्धि लब्धि केवल ७१ निकली। ढाई वर्ष के उपरान्त इन बच्चों की बुद्धि लब्धि फिर १०८ रह गई। स्कील्स महोदय अपने परीक्षण के आधार पर इस निष्कर्ष पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहुँचे कि "पर्यावरण का बुद्धि पर उससे कहीं अधिक प्रभाव पड़ता है जितना कि साधारणतया स्वीकार किया जाता है।

"Intelligence is more responsive than is commonly admitted."

—Skeels.

वंशानुसंक्रमण और पर्यावरण के महत्व के सम्बन्ध में अन्तिम निर्णय

(Final Judgment about the Importance of Heredity-and Environment)

[अ] वंशानुसंक्रमण और पर्यावरण की अप्रथकता

(Inseparability of Heredity and Environment)

उपर्युक्त परीक्षणों से यह निष्कर्ष निकलता है कि वंशानुसंक्रमण तथा पर्यावरण को एक दूसरे से प्रथक नहीं किया जा सकता है। वास्तव में यह प्रश्न ही व्यर्थ है कि वंशानुक्रम और पर्यावरण में कौन अधिक महत्वपूर्ण है। बालक का जन्म माता पिता के संयोग से होता है। ऐसी स्थिति में कोई यह प्रश्न पूछे कि दोनों में कौन महत्वपूर्ण है तो वह उसकी महान मूर्खता होगी। जिस प्रकार हमारे जीने के लिए पानी और हवा दोनों की आवश्यकता है उसी प्रकार मनुष्य के विकास के लिये वंशानुक्रम और पर्यावरण दोनों की अति आवश्यकता है। अतः यह प्रश्न करना कि वंशानुसंक्रमण और पर्यावरण में से दोनों में कौन महत्वपूर्ण है अपने समय और शक्ति को नष्ट करने के सिवाय कुछ नहीं है। एल्टनवर्ग के शब्दों में "प्रत्येक लक्षण को अपने विकास के लिये वंशानुसंक्रमण तथा पर्यावरण दोनों की आवश्यकता होती है।"* इसी प्रकार लम्ले ने लिखा है, "यह वंशानुक्रम नहीं बल्कि वंशानुक्रम और पर्यावरण हैं।"† यही बात मैकाइवर तथा पेज ने भी व्यक्त करते हुये लिखा है, "जीवन की प्रत्येक घटना दोनों का फल होती है। उनमें से एक परिणाम के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी की दूसरी।

---

*"Each trait requires both heredity and environment for its development." —Edger Altenberg.

†"It is not heredity or environment but heredity an environment." —Lumley.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोई न तो कभी हटाई जा सकती है और न तो कभी प्रथक की जा सकती है।"

"Every phenomenon of life is product of both. Each is as necessary to the result as the other. Neither can ever be eliminated and neither can be isolated."

[ब] वंशानुक्रम एवं पर्यावरण एक दूसरे के पूरक हैं (Heredity and Environment are complementry to each other)

वंशानुक्रम और पर्यावरण के सम्बन्ध में यदि और गहराई तक अवलोकन किया जाय तो पता चलता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। वह कैसे ? वह ऐसे कि जब प्राणी इस संसार में जन्म लेता है वह वंशानुक्रम (Heredity) से नाना प्रकार की क्षमतायें, शक्तियाँ, जिन्हें मनोविज्ञान की भाषा में मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts) कहते हैं, लेकर आता है और इन क्षमताओं एवं शक्तियों से विकसित होने का अवसर पर्यावरण (Environment) में प्राप्त होता है। इस तथ्य को स्पष्ट करते हुए लैण्डिस तथा लैण्डिस ने अपने सुन्दर शब्दों में लिखा, "वंशानुसंक्रमण हमें विकसित होने की क्षमतायें प्रदान करता है, परन्तु इन क्षमताओं के विकसित होने के लिए अवसर पर्यावरण से अवश्य प्राप्त होने चाहिए वंशानुसंक्रमण हमें हमारी कार्यशील पूँजी देता है और पर्यावरण हमें इसके विनियोग का अवसर देता है।"

"Heredity gives us the capacities to be developed but opportunity for the development of these capacities must come from the environment. Heredity gives us our working capital, environment gives us the opportunity to invest it."

—Landis and Landis 'Social Living,' P. 8

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने वंशानुक्रम का स्वरूप, उत्पत्ति विधि के सिद्धान्त वंशानुक्रम के नियम यथा (१) मूल जीवाणु की निरन्तरता का नियम (२) रूपान्तर का नियम, (३) अर्जित गुणों के अवितरण का नियम, प्रत्यागमन का नियम तथा मण्डल का नियम—एवं पर्यावरण का स्वरूप प्रस्तुत करने के उपरान्त वंशानुक्रम एवं पर्यावरण के प्रभाव को समझने के लिये दो प्रकार के परीक्षण प्रस्तुत किये—प्रथम अनियन्त्रित परीक्षण जिनके अन्तर्गत चार प्रकार के अध्ययनों का बहुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महत्व हैं—(१) शारीरिक लक्षणों की माप, (२) बुद्धि स्तर की माप, (३) व्यावसायिक समूहों का अध्ययन तथा (४) विख्यात एवं कुविख्यात वंशों के अध्ययन और द्वितीय नियन्त्रित परीक्षण जिसके अन्तर्गत निम्न अध्ययन सम्मिलित हैं—(१) समान पर्यावरण में पाले गये समान जुड़वाँ बच्चों का अध्ययन, (२) असमान पर्यावरण में पाले गये विभिन्न माता पिता के बच्चों का अध्ययन। इन परीक्षणों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जिस प्रकार शरीर और मन का एक दूसरे के अभाव में कोई महत्व नहीं है। इसी प्रकार वंशानुक्रम तथा पर्यावरण का एक दूसरे के अभाव में कोई महत्व नहीं है। वास्तव में वंशानुक्रम और पर्यावरण के सम्बन्ध में यह प्रश्न करना मूर्खतापूर्ण है कि इन दोनों में किसका अधिक महत्व है। वास्तविकता तो यह है कि दोनों एक दूसरे से अप्रथक तथा एक दूसरे के पूरक हैं। वंशानुसंक्रमण से मनुष्य कुछ क्षमतायें या शक्तियां लेकर आता है और इनके विकसित होने के लिये अवसर पर्यावरण में ही प्राप्त होते हैं। अन्त में हम मैकाइवर तथा पेज के शब्दों में इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि, **"वंशानुक्रम एक पर्यावरण में ही सम्भवतया यथार्थता प्राप्त करता है। जीवन के समस्त गुण वंशानुक्रम में होते हैं, गुणों की सम्पूर्ण उत्पत्ति पर्यावरण पर निर्भर होती है।"**

"Heredity is potentiality made actual within an environment. All the qualities of life are in the heredity, all the evocation of qualities depends on the environment."

—MacIver and Page.

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

११

मूल प्रवृत्तियाँ

[Instincts]

प्रश्न संख्या—११

मैकडूगल की मूल प्रवृत्तियों के सिद्धान्त की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए। मूल प्रवृत्तियों एवं प्रतिक्षेप में क्या अन्तर है ?

Examine critically McDougall's theory of Instincts. What are the differences between instincts and reflex actions ?

भूमिका (Introduction)

आदिकाल से ही मानव मस्तिष्क में यह प्रश्न उठता रहा है कि व्यक्ति अथवा प्राणी कोई व्यवहार क्यों करता है ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये कितने ही विचारकों ने प्रयास किया परन्तु कोई भी विचारक ऐसा विचार उपस्थित न कर सका जो सर्व माननीय हो। हाँ यह अवश्य है कि मनोविज्ञान, जो कि व्यवहार का विज्ञान है, ने इस प्रश्न का सही उत्तर हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया। प्रायः मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि प्राणी के व्यवहार को परिचालित करने में मूल प्रवृत्तियों (Instincts) का ही प्रमुख स्थान है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में मूल प्रवृत्तियों को स्थान देते हुये मैकडूगल (McDougall) ने लिखा है, "हम कह सकते हैं कि मूल प्रवृत्तियाँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में सम्पूर्ण मानव व्यवहारों की प्रमुख चालक होती हैं।" मूल प्रवृत्तियाँ क्या हैं ? अब हम इस प्रश्न में मूल प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए पहले मूल प्रवृत्तियों का स्वरूप (Nature of Instinct), मूल प्रवृत्तियों की विशेषतायें (Characteristics of the Ins-

---

We may say, then, that directly or indirectly instincts are prime moves of all human activities. —**William McDougall.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

tincts) एवं मूल प्रवृत्तियों के प्रकार (Kinds of Instincts) प्रस्तुत करेंगे। तत्पश्चात् मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति के सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of McDougall's Theory of Instinct) प्रस्तुत करेंगे और अन्त में मूल प्रवृत्तियों एवं प्रतिक्षेप क्रियाओं में अन्तर (Distinction between Instincts and Reflex Actions) बतायेंगे।

मूल प्रवृत्तियों का स्वरूप
(Nature of Instincts)

[अ] मूल प्रवृत्तियों का अर्थ (Meaning of Instincts)

व्यक्ति जैसे ही बालक के रूप में इस व्यापक संसार में प्रवेश करता है वैसे ही कुछ न कुछ व्यवहार करना प्रारम्भ कर देता है और जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे उसका व्यवहार का क्षेत्र भी बढ़ता जाता है। उसका यह व्यवहार विभिन्न परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। उसके इन विभिन्न व्यवहारों को परिचालित करने वाली जन्मजात (Inborn) शक्तियों को मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts) कहते हैं। मूल प्रवृत्तियों की वैज्ञानिक ढंग से व्याख्या करने वाले प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विलियम मैकडूगल (William McDougall) के अनुसार प्रत्येक मूल प्रवृत्ति के तीन पहलू होते हैं—(१) ज्ञानात्मक (Cognative), (२) संवेगात्मक (Affective) एवं (३) क्रियात्मक (Conative)। ज्ञानात्मक पहलू के अनुसार सर्वप्रथम व्यक्ति वस्तु विशेष अथवा उत्तेजक (Stimulus) से प्रभावित होता है, तत्पश्चात् संवेगात्मक पहलू के अनुसार व्यक्ति किसी संवेग (Emotion) का अनुभव करता है और अन्त में क्रियात्मक पहलू के अनुसार व्यक्ति किसी प्रकार की क्रिया अथवा प्रतिक्रिया (Activity or Response) करता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि **मूल प्रवृत्तियाँ वे जन्मजात शक्तियाँ हैं जो कि प्राणी का व्यवहारों को परिचालित करती है और जिसके ज्ञानात्मक, संवेगात्मक तथा क्रियात्मक ये तीन पहलू होते हैं।**

[ब] मूल प्रवृत्तियों की परिभाषा (Definition of Instincts)

(१) विलियम मैकडूगल—"मूल प्रवृत्ति एक वंश परम्परागत अथवा जन्मजात मन:शारीरिक प्रवृत्ति है जो उसके अधिकारी के लिये यह निर्धारित करती है कि मूल व्यक्ति किसी एक जाति की वस्तुओं का प्रत्यक्ष करेगा और उन पर ध्यान देगा, किसी ऐसी वस्तु के प्रत्यक्ष के उपरान्त एक उद्वेगात्मक तीव्रता का अनुभव करेगा और उसके सम्बन्ध में एक विशेष प्रकार की क्रिया करेगा या कम से कम ऐसी क्रिया करने के आवेग का अनुभव करेगा।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"An instinct is an inherited or innate psycho-physical disposition which determines its possessor to perceive and to pay attention to objects of a certain class, to experience an emotional excitement of a particular quality upon perceiving an object and to act in regard to it in a particular manner or at least to experience an impluse to such action." —William McDougall.

(२) वाटसन—"उपर्युक्त उत्तेजनाओं के अंतर्गत क्रमशः व्यक्त होने वाली स्पष्ट प्रतिक्रियाओं के संयोग को मूल प्रवृत्ति कहते हैं।"

"Instinct is a combination of explicit response, unfolding serially under appropriate stimulation." —Watson.

(३) जिन्सबर्ग—"मूल प्रवृत्तीय व्यवहार उस न्यून या अधिक जटिल कार्य शृङ्खला या व्यवहार का द्योतक है जो कि प्रगति के लिये उन निश्चित उद्देश्यों का अनुकूलन करते हैं जो कि वंश परम्परागत निश्चित होते हैं एवं व्यक्तिगत प्राणी के पूर्व अनुभव से स्वतन्त्र होते हैं।"

"The term instinctive activity indicates certain more or less complicated traits of movement which are congenitally determined and are independent of previous experience by the individual." —Ginsberg.

(४) सी० डब्ल्यू वैलन्टाइन—"मूल प्रवृत्ति वह स्वाभाविक प्रवृत्ति है जो कुछ जैवकीय उद्देश्य को विशेष तरीके से क्रिया कर पूरा करती है।"

"An instinct is an innate impulse to act in a cetrain way fulfilling some biological purpose." —C. W. Vallentine.

(५) डा० पेखाम एवं मिसेज पेखाम—"मूल प्रवृत्ति शब्द के अन्तर्गत हम उन सब जटिल कार्यों को लेते हैं जो कि बिना पूर्व अनुभव के उसी प्रकार किये जाते हैं जिस प्रकार से उस लिंग और प्रजाति के समस्त सदस्यों द्वारा किये जाते हैं।"

Under the term 'instinct' we place all complex acts which are performed previous to experience and in a similar manner by all members of the same sex and race.

—Dr. Peckham and Mrs. Peckham.

मूल प्रवृत्तियों की विशेषतायें

(Characteristics of the Instincts)

[अ] मूल प्रवृत्तियों की विशेषतायें (Characteristics of the Instincts)

(१) ये प्राणी के व्यवहार को परिचालित करती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) ये प्रकृतिदत्त एवं जन्मजात होती हैं।

(३) ये एक प्रकार के समस्त प्राणियों में सामान्य रूप से पाई जाती हैं।

(४) इनसे परिचालित क्रिया में किसी प्रकार का व्यक्तिगत भेद नहीं होता।

(५) ये शोधनशील या परिवर्तनशील होती हैं।

(६) इनमें पूर्व अनुभव में लाभ उठाने की क्षमता होती है।

(७) ये आदत से भिन्न होती हैं।

(८) मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार से प्रयोजन निहित रहता है।

(९) समस्त मूल प्रवृत्तियाँ जन्मकाल से ही जागरूक नहीं होती हैं बल्कि जैसे-जैसे व्यक्ति का विकास होता जाता है वैसे-वैसे वे सुषुप्तावस्था को त्याग कर जागृत अवस्था में प्रवेश करती जाती हैं।

(१०) मूल प्रवृत्ति से संचालित क्रियायें जटिल एवं अनैच्छिक होती हैं।

(११) मूल प्रवृत्यात्मक क्रियाओं में बुद्धि एवं चेतना का सर्वथा अभाव नहीं रहता है।

(१२) मूल प्रवृत्यात्मक कार्य शारीरिक ढाँचा, उम्र एवं वातावरण पर विशेष रूप से आश्रित रहते हैं।

(१३) प्रायः मूल प्रवृत्यात्मक क्रियायें जब तक अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर लेती हैं तब तक समाप्त नहीं होती हैं।

(१४) मैकडूगल के विचार से प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का सम्बन्ध एक विशेष संवेग से होता है।

(१५) मूल प्रवृत्ति के क्रमशः तीन पहलू (अङ्ग) हैं—(१) ज्ञानात्मक (Cognitive), (२) संवेगात्मक (Affective) एवं (३) क्रियात्मक (Conative)।

[ब] मनुष्यों एवं पशुओं की मूल प्रवृत्तियों में अन्तर

(Difference between Man and Animal Instincts)

(१) पशुओं की अपेक्षा मनुष्य की मूल प्रवृत्तियाँ अधिक परिवर्तनशील हुआ करती हैं।

(२) पशुओं की मूल प्रवृत्तियों की अपेक्षा मनुष्यों की मूल प्रवृत्तियों का विकास देर से होता है।

(३) बौद्धिक प्राणी (Rational Animal) होने के कारण मनुष्य का मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार पूर्णरूपेण अन्धवत् नहीं होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूल प्रवृत्तियों के प्रकार
(Kinds of Instincts)

[१] ड्रेवर का वर्गीकरण (Classification by Drever)

(१) रुच्यात्मक (Appetitive)
(२) प्रतीकात्मक (Reactive)

[२] कार्क पैट्रिक का वर्गीकरण (Classification by Kark Patrick)

(१) आत्मरक्षा की शक्ति
(२) सन्तान उत्पत्ति की शक्ति
(३) सामूहिक जीवन व्यतीत करने की शक्ति
(४) परिस्थिति को अनुकूल करने की शक्ति
(५) आदर्श पालन की शक्ति

[३] थार्नडाइक का वर्गीकरण (Classification by Thorndike)

(१) वैयक्तिक (Individual)
(२) सामाजिक (Social)

[४] वुडवर्थ का वर्गीकरण (Classification by Woodworth)

१—शरीर रक्षा सम्बन्धी भौतिक आवश्यकताओं से सम्बन्धित हमारी क्रिया जैसे प्यास, भूख, नींद, थकावट आदि।

२—दूसरे लोगों से सम्बन्धित प्रतिक्रिया जैसे काम-तृप्ति, पुत्र-कामना, सामूहिक जीवन इत्यादि।

३—खेल से सम्बन्धित प्रवृत्तियाँ जैसे हँसना, खेलना, चलना, दौड़ना फिरना आदि।

[५] मैकडूगल का वर्गीकरण (Classification by McDougall)

मूल प्रवृत्ति (Instincts)	सम्बन्धी संवेग (Allied Emotions)
१—पलायन (Escape)	भय (Fear)
२—युयुत्सा (Combat or Pugnacity)	क्रोध (Anger)
३—निवृत्ति (Repulsion)	घृणा (Disgust)
४—पुत्र कामना (Parental)	वात्सल्य (Love)
५—शरणागत (Appeal)	करुणा, दुख (Distress)
६—कामप्रवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)
७—जिज्ञासा (Curiosity)	आश्चर्य (Wonder)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

८—दैन्य (Submission)	आत्महीनता (Negative Self feeling)
९—आत्म-गौरव (Self assertion)	आत्माभिमान (Positive Self-feeling)
१०—सामूहिकता (Social Instinct or Gregariousness)	एकाकीपन (Loneliness)
११—भोजनान्वेषण (Food Seeking)	भूख (Appetite)
१२—संग्रह प्रवृत्ति (Collection)	अधिकार भावना (Feeling of Ownership)
१३—रचना प्रवृत्ति (Construction)	कृतिभाव (Feeling of Creativeness)
१४—हास (Laughter)	आमोद (Amusement)

मैग्डूगल द्वारा प्रस्तुत की गई मूल प्रवृत्तियों को याद करने के लिये निम्न-लिखित फारमूला उपयोगी सिद्ध होता।

$$A^2\ C^3\ S^4\ \frac{P\ E\ R}{L\ F\ G}$$

Or

			Parental
			Escape
Appeal,	Curiosity	Sex	Repulsion
Aquisition	Combat	Submissin	Laughter
	Construction	Self assertion	Food seeking
			Gregariousness

[६] भारतीय धर्मशास्त्री का वर्गीकरण

(Classification by Indian Dharmshastras)

(१) पुत्रैषणा (Putraishanas)।
(२) वित्तैषणा (Vitaishanas)।
(३) दारेषणा (Daraishanas)।

[७] कुछ प्रसिद्ध वैज्ञानिकों का केवल एक ही मूल प्रवृत्ति पर विश्वास है

(Some Famous Psychologists belive in only one Instinct)

(अ) फ्रायड (Freud)	कामशक्ति (Sex or Libido)
(ब) ऐडलर (Adler)	आत्म-प्रदर्शन (Self assertion)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(स) बर्गसन (Bergson) प्राणशक्ति (Elan Vital)
(द) शोपेनहावर (Shopenhaur) जीने की इच्छा (Will to Live)

[८] उपर्युक्त वर्गीकरण के अनुसार सारांश रूप में पुनः वर्गीकरण करना

ऊपर हमने देखा है कि भिन्न-भिन्न विद्वानों ने मूल प्रवृत्तियों (Instincts) का अलग-अलग वर्गीकरण किया है। प्रायः यदि हम समस्त मूल प्रवृत्तियों पर पुनः विहंगम दृष्टि डालें तो हम पायेंगे कि प्रेरणा शक्ति रूपी वृक्ष की निम्न ३ मूल प्रवृत्तियाँ शाखाओं के समान हैं :—

(१) आत्म-रक्षा (Self-preservation)
(२) जाति-रक्षा (Race-preservation)
(३) सामूहिक जीवन (Herd Instinct)

उपर्युक्त शब्दों में हमने विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा बतलाई हुई मूल प्रवृत्तियों को प्रस्तुत किया। इन सब मनोवैज्ञानिकों में से विलियम मैकडूगल (William McDougall) ने जो मूल प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत किये हैं वे अधिक वैज्ञानिक हैं। वास्तव में मूल प्रवृत्तियों का सम्बन्ध मैकडूगल के नाम से जुड़ा है। किन्तु आधुनिक समय में मैकडूगल द्वारा प्रस्तुत मूल प्रवृत्तियों के सम्बन्ध में विचार सर्वमान्य नहीं हैं। विभिन्न वैज्ञानिकों ने मैकडूगल द्वारा प्रस्तुत मूल प्रवृत्तियों की भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से आलोचनायें प्रस्तुत की हैं। आगे हम मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति के सिद्धान्त की आलोचना प्रस्तुत कर रहे हैं।

मैकडूगल के मूल प्रवृत्ति के सिद्धान्त की आलोचना

(Criticism of McDougall's Theory of Instinct)

[अ] मस्तिष्क के त्रिविभाजन के विरुद्ध आलोचना

(१) मैकडूगल द्वारा मस्तिष्क का तीन भागों में विभाजन असंगत है क्योंकि ये तीनों एक दूसरे से इतने सम्बन्धित हैं कि इनकी क्रियाओं का एक दूसरे से पृथक करना मुश्किल है—जिन्सबर्ग।

(२) मैकडूगल का दैहिक सिद्धांत (Physiological Theory), जिसको कि उसने मस्तिष्क को तीन भागों में विभाजित करने में आधार माना है, पूर्ण रूपेण कल्पना पर आधारित है। —डा० स्टाउट (Dr. Stout)

[ब] प्रत्येक मूल प्रवृत्ति एक विशेष संवेग द्वारा अनुगामित होती है, इस तथ्य की आलोचना—

(३) कभी-कभी मूल प्रवृत्ति संवेग (Emotion) के अभाव में भी उत्तेजित हो जाती है जैसे चिड़िया का घोसला निर्माण करना या शिकार खेलना —शैण्ड Shand)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) मैकडूगल का यह कथन कि प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का सम्बन्ध एक विशेष संवेग से होता है पूर्ण सत्य नहीं प्रतीत होता है। उदाहरण के लिये भय (Fear) का संवेग उत्पन्न होने से यह आवश्यक नहीं कि पलायन ही होगा बल्कि हम छिप भी सकते हैं और चुप भी रह सकते हैं—शैण्ड।

(५) मैकडूगल के अनुसार एक मूल प्रवृत्ति केवल अपने सहवर्ती संवेग को ही जाग्रति कर सकती हैं अन्य को नहीं। यह तथ्य भी उचित नहीं। चिड़ियों के उड़ने की प्रवृत्ति के साथ भय, संवेग, क्रोध इत्यादि कोई भी संवेग जाग्रत हो सकता हैं—शैण्ड।

(६) मूल प्रवृत्तियों के साथ संवेगों का सम्बन्ध आवश्यक नहीं। संवेग तब उत्पन्न होते हैं जबकि मूल प्रवृत्तियाँ अपना उद्देश्य पूरा कर लेती हैं—ब्राउन (Dr. William Brown)।

(७) कुछ मूल प्रवृत्तियों के संवेगों को आसानी से नहीं समझा जा सकता —जयदेव सिंह (Jaidev Singh)।

(८) जब मूल प्रवृत्यात्मक कार्य में किसी प्रकार का अवरोध होता है तभी संवेग जाग्रत होता है पहले नहीं—जिन्सबर्ग (Ginsberg)।

(९) संवेग प्राणी को अपना उद्देश्य पूरा करने के लिये अनेक प्रकार के व्यवहार करने का अवसर देता है। "संवेग वह प्रेरणा-शक्ति है जो कि ज्ञानयुक्त अस्थिर व्यवहार को उसी प्रकार सेवा करता है जिस प्रकार से कि स्वाभाविक मूल प्रवृत्तीय व्यवहार अपरिवर्तनशील प्रतिक्रियाओं की आवश्यकताओं की सेवा करता है।"

"Emotions are driving forces serving intelligent variable behaviour just as the automatic instinctive responses serve the needs of stereotyped behaviour." —**R. H. Thouless.**

[स] "मूल प्रवृत्ति एकमात्र व्यवहार का आधार है" इस तथ्य की आलोचना

(१०) मैकडूगल द्वारा वर्णित वंशानुक्रमणीय का एकाकीपन में पनपना सम्भव नहीं है उसके लिये सामाजिक पर्यावरण की आवश्यकता है। फिर हम मूल प्रवृत्ति को व्यवहार का एक मात्र आधार कैसे मान सकते हैं—जिन्सबर्ग (Ginsberg)।

(११) मूल प्रवृत्तियों को मानव व्यवहार के मौलिक तत्व नहीं माने जा सकते बल्कि वे तो विभिन्न व्यवहारों के स्वरूपों के वर्ग के नाम हैं न कि वे ही मौलिक तत्व हैं।

(१२) प्रत्येक रुचि को हम मूल प्रवृत्तियों तक होतिसमी नहीं कर सकते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं। वास्तव में प्रत्येक मानव के गुण एवं शक्ति का आन्तरिक पहलू भी हुआ करता है—वुडवर्थ (Woodworth)।

(१३) मैकडूगल मूल प्रवृत्तियों के आधार पर पशु व्यवहार की व्याख्या अवश्य कर सकता है, परन्तु मानव, जिसमें सर्वदा नवीन लक्ष्य जन्म लेते रहते हैं, के व्यवहार की व्याख्या करने में असमर्थ है—वुडवर्थ

(१४) मनुष्य के व्यवहार को निर्धारित करने में केवल मूल प्रवृत्तियों का ही स्थान नहीं है बल्कि सामाजिक परम्परा भी उत्तरदायी है। "भूख एवं प्यास निःसन्देह मूल प्रवृत्तियों की प्रकृति की हैं, परन्तु भूख और प्यास को सन्तुष्ट करने की पद्धतियाँ अनुभव एवं शिक्षा द्वारा अर्जित की जाती हैं"* हाबहाउस (Hobhouse)

(१५) बिना सामाजिक पर्यावरण के मूल प्रवृत्तियाँ विकसित नहीं हो सकतीं फिर उन्हें व्यवहार के मौलिक आधार कैसे कहा जा सकता है "वन्शानुसंक्रमण मनुष्य में क्षमता, सुप्रवृत्ति, प्रकृत्ति हैं परन्तु, पारस्परिक संघर्ष और पर्यावरण के कारण क्षमतायें पूर्ण होती हैं, सुप्रवृत्ति उत्साहित अथवा हतोत्साहित होती है प्रकृति का विकास अथवा विनाश होता है।"

"What is hereditary, in man is capactiy, propensity, disposition but the capacities ere filled in the propensities encouraged or chceked, the dispositions inhabited or developed by mutual interactions and the pervading influence of the circumambient atmosphere."

—Hobhouse.

प्रतिक्षेप क्रिया का स्वरूप
(Nature of Reflex Action)

[अ] प्रतिक्षेप क्रिया का अर्थ (Meaning of Reflex Action)

वास्तव में प्रतिक्षेप क्रिया प्राणी की जन्मजात एवं सरलतम क्रिया है जो स्वतः क्रियान्वित होती है। इसके लिये प्राणी को इच्छा की कोई आवश्यकता नहीं। प्रतिक्षेप क्रिया को अधिक स्पष्ट करने के लिये हम कह सकते हैं कि प्रतिक्षेप क्रिया एक सरल एवं स्व-संचालित मांसपेशीय (Muscular) या ग्रन्थि सम्बन्धी (Glandular) प्रतिक्रिया (Reaction) है जो उपयुक्त उत्तेजनाओं के द्वारा ज्ञानेन्द्रियों (Sense Organs) के उत्तेजित होते ही शीघ्र उत्पन्न हो

*"Hunger and thirst, no doubt, are of the nature of instincts, but the methods of satisfying hunger and thirst are acquired by experience or by teaching." —Hobhouse.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाया करती हैं। उदाहरण के लिए नेत्र की ओर कोई वस्तु आती है तो पलकें अपने आप झुक जाती हैं। इसी प्रकार नाक में कोई वस्तु जैसे तम्बाकू की नस पड़ने से छींक का आ जाना, कम प्रकाश में आँख के तारे का फैलना एवं अधिक प्रकाश में बन्द हो जाना प्रतिक्षेप क्रिया के उदाहरण हैं। ज्ञानेन्द्रियों के उत्तेजित होते ही प्रतिक्षेप क्रियाएँ इतनी शीघ्रता से कार्यान्वित हो जाती हैं कि उनके होने के पहिले प्राणी को इसकी चेतना नहीं होने पाती है। इसी कारण ये प्रायः अचेतन क्रियायें मानी जाती हैं। हाँ यह अवश्य है कि जब ये क्रियायें सम्पन्न हो जाती हैं तो प्राणी को इनकी चेतना रहती है।

ब] प्रतिक्षेप क्रिया की परिभाषा (Definition of Reflex Action)

(१) सी० एस० शेरिंगटन—प्रतिक्षेप क्रियायें वे प्रतिक्रियायें हैं जिनमें प्रारम्भिक प्रक्रिया, एक प्रवाहक के माध्यम द्वारा, किसी नाड़ी (या अवयव) को उस प्रक्रिया को समाप्त करने की शक्ति प्रदान करती है, जबकि उस नाड़ी (या अवयव) में स्वयं को समाप्त करने की शक्ति नहीं है और प्राकृतिक दशा में न तो उसमें प्रक्रिया प्रारम्भ करने की शक्ति है।"

"Reflexes are reactions, in which there follows an initiating reaction of an end-effect reached through the mediation of a conductor, a nerve itself capable either of the end-effect or, under natural condition of the inception reaction."

—G. S. Sherrington.

(२) आर० एच० थाउलस—प्रतिक्षेप क्रिया वह साधारण स्वाभाविक प्रतिक्रिया है जिसमें क्रिया के द्वारा कोई लाभप्रद कार्य किया जाता है।

"The reflex is also a simple innate pattern relation in which a movement, of serviceable kind is carried out."

—R. H. Thouless.

प्रतिक्षेप क्रियाओं की विशेषताएँ
(Characteristics of Reflex Actions)

(१) तत्कालिक (Immediateness)—प्रतिक्षेप क्रिया की सबसे प्रथम विशेषता यह है कि यह शीघ्र ही क्रियान्वित हो जाती है। उदाहरण के लिए यदि आँख के सामने उड़ता हुआ तिनका आ जाता है तो हमारी पलकें शीघ्र ही गिर जाती हैं। इसी तरह अन्य प्रतिक्षेप क्रियायें शीघ्र ही हो जाती हैं।

(२) एकरूपता (Uniformity)—प्रतिक्षेप क्रियायों में एकतरूपा का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुण उपस्थित रहता है। दूसरे शब्दों में जब एक उत्तेजना हमारे सामने उपस्थित होती है तो एक प्रतिक्रिया होती है एवं उस प्रतिक्रिया का ढंग भी हमेशा एक हो सा होता है। उदाहरण के लिये जब नाक में कोई चीज चली जाती है तो तुरन्त छींक आ जाती है। इसी प्रकार जितने बार नाक में कोई चीज जायेगी उतने हो बार छींक आने की सम्भावना रहती हैं। इस प्रकार प्रतिक्षेप क्रियाओं में एकरूपता निहित रहती है।

(३) सरलता (Easyness)—ऊपर हमने बताया है कि प्रतिक्षेप क्रियाओं में एकरूपता (Uniformity) रहती है। इस दृष्टिकोण से हम यह भी कह सकते हैं कि प्रतिक्षेप क्रियायें जटिल न होकर सरल हुआ करती हैं। उदाहरण के लिये आँख में कोई चीज पड़ने से आँसू आने की सम्भावना रहती है अन्य चीजों की नहीं।

(४) स्वतन्त्रता (Freedom)—प्रतिक्षेप क्रियायें सर्वदा स्वतन्त्र क्रियायें होती हैं। दूसरे शब्दों में इन क्रियाओं पर हमारी बुद्धि का नियन्त्रण नहीं रहता है। ये तो उत्तेजना के उपस्थित होते ही उसके अनुरूप शीघ्र ही स्वतः हो जाती हैं। प्रतिक्षेप क्रियाओं की हमें चेतना नहीं रहती है और रहती भी है तो वह होने के बाद। फलस्वरूप उनको नियन्त्रित करने का कोई प्रश्न भी नहीं उठ पाता है।

(५) स्थानीयता (Locality)—प्रतिक्षेप क्रियायें सर्वदा स्थानीय होती हैं। दूसरे शब्दों में किसी प्रतिक्षेप क्रिया का सम्बन्ध केवल शरीर के अंग से होता है न कि सम्पूर्ण शरीर से। उदाहरण के लिये जब हमारे पैर में कोई धीरे से सुई चुभा देता है तो हमारा पैर तुरन्त खिंच जाता है एवं सम्पूर्ण शरीर पर प्रभाव नहीं पड़ने पाता है।

(६) नैसर्गिकता (Innateness)—प्रतिक्षेप क्रियाओं की अंतिम विशेषता यह है कि सदा नैसर्गिक अथवा जन्मजात (Innate) क्रियाएँ होती हैं। दूसरे शब्दों में प्रतिक्षेप क्रियाएँ अर्जित (Acquired) अथवा सीखी हुई क्रियाएँ नहीं होती हैं बल्कि ये जन्म से ही बालक में निहित रहती हैं।

मूल प्रवृत्तियों एवं प्रतिक्षेप क्रियाओं में अन्तर
(Distinction between Instincts and Reflex Actions)

मूल प्रवृत्तियों एवं प्रतिक्षेप क्रियाओं में जहाँ बहुत से अन्तर हैं वहाँ कुछ दोनों में समानताएँ भी हैं। अतः इन दोनों की समानता प्रस्तुत करते हुए असमानता उपस्थित करना अवांछनीय न होगा। इस दृष्टिकोण से दोनों में समानता एवं असमानता प्रस्तुत कर रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मूल प्रवृत्ति (Instinct)	प्रतिक्षेप क्रिया (Reflex Action)

दोनों में समानता

(१) मूल प्रवृत्ति प्रकृतिदत्त एवं जन्मजात हुआ करती है।	(१) प्रतिक्षेप क्रियायें भी प्रकृतिदत्त एवं जन्मजात हुआ करती हैं।
(२) मूल प्रवृत्ति विशेष तौर से जैविक उद्देश्य की पूर्ति करती है।	(२) प्रतिक्षेप क्रिया भी प्राणी के जैविक उद्देश्य की पूर्ति करती है।
(३) मूल प्रवृत्ति में उद्देश्य की चेतना नहीं होती है।	(३) प्रतिक्षेप क्रियाओं में भी उद्देश्य की चेतना नहीं रहती हैं।
(४) मूल प्रवृत्ति एक प्रजातीय गुण है।	(४) प्रतिक्षेप क्रिया भी एक प्रजातीय गुण है।

"In the first place both instincts and reflexes are natural and inborn. Secondly attention to the directed goal is absent in both. Both are automatic and mechanical. In the third place both are directed to the attainment of goals biologically useful to organism. Fourthly both are racial traits and are consequently universal in their impression." —**Kashyap and Puree.**

अन्तर

(१) मूल प्रवृत्ति सम्पूर्ण परिस्थिति (Total Situation) की प्रतिक्रिया हुआ करती है।	(१) प्रतिक्षेप क्रिया एक विशिष्ट उत्तेजना (Stimulus) की प्रतिक्रिया है।
(२) मूल प्रवृत्ति प्राणी के समस्त शरीर की प्रतिक्रिया है	(२) प्रतिक्षेप क्रिया प्राणी के किसी विशेष अंग की प्रतिक्रिया है।
(२) मूल प्रवृत्ति के द्वारा जो क्रियायें होती हैं वे असाधारण एवं जटिल हुआ करतो हैं।	(३) प्रतिक्षेप क्रिया साधारण एवं सरल प्रकृति की होती हैं।
(४) मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तनशीलता निहित रहती है।	(४) प्रतिक्षेप क्रिया अपरिवर्तनीय अथवा एकरूपक क्रिया होती है।
(५) मूल प्रवृत्तीय क्रिया तब तक समाप्त नहीं होती है जब तक कि उद्देश्य की पूर्ति नहीं हो जाती है।	(५) यदि कोई दूसरी उत्तेजना प्राप्त नहीं होती है तो प्रतिक्षेप क्रिया प्रतिक्रिया होकर शीघ्र हो समाप्त हो जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) मूल प्रवृत्ति एक दैहिक क्रिया तो होती ही है परन्तु इसके अतिरिक्त यह इच्छा (Will), प्रेरणा (Impulse), चित्त वृत्ति (Mood), भावना (Spirit), अदि से भी निश्चित होती है।

(६) प्रतिक्षेप क्रियाओं की केवल दैहिक अथवा शारीरिक प्रतिक्रिया होती है।

(७) प्रत्येक मूल प्रवृत्ति का सम्बन्ध एक विशेष संवेग से होता है।

(७) प्रतिक्षेप क्रियाओं का सम्बन्ध किसी संवेग से नहीं होता है।

(८) जीवन के सान्ध्यकाल के अर्थात् वृद्धावस्था में बहुत सी मूल प्रवृत्तियाँ समाप्त या शांत हो जाती हैं।

(८) प्रतिक्षेप क्रियायें जीवन भर तक उसी रूप में चलती रहती हैं।

(९) अभ्यास के द्वारा मूल प्रवृत्यात्मक क्रियाओं में सुधार किया जा सकता है।

(९) सहज क्रिया में ऐसा करना बिलकुल असम्भव है।

(१०) मूल प्रवृत्ति में मानसिक प्रक्रिया पाई जाती है। दूसरे शब्दों में मूल प्रवृत्ति में जो क्रियात्मक प्रक्रिया (Conative Process) पाई जाती है वह ज्ञानात्मक (Cognitive) एवं उत्तेजनात्मक (Affective) नामक दोनों प्रक्रियाओं से प्रारम्भ होती है।

(१०) सहज क्रिया में मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) का पूर्ण अभाव रहता है। दूसरे शब्दों में इसमें केवल क्रियात्मक प्रक्रिया (Conative process) ही पाई जाती है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में मूल प्रवृत्तियाँ वे जन्मजात शक्तियाँ हैं जो कि व्यक्ति या प्राणी का व्यवहार परिचालित करती हैं एवं जिसके ज्ञानात्मक, संवेगात्मक एवं क्रियात्मक ये तीन पहलू हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों में से मैकडूगल ने जो मूल प्रवृत्तियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया है वह अधिक वैज्ञानिक है किन्तु वर्तमान समय में निम्नलिखित आधारों को लेकर मनोवैज्ञानिकों ने मैकडूगल द्वारा प्रस्तुत मूल प्रवृत्तियों के वर्गीकरण की आलोचनायें की हैं—(अ) मस्तिष्क के विभाजन की आलोचना, (ब) प्रत्येक मूल प्रवृत्ति एक विशेष संवेग द्वारा अनुगामित होती है, इस तथ्य की आलोचना तथा (स) मूल प्रवृत्ति एक मात्र मानव व्यवहार की आधार हैं, इस तथ्य की आलोचना। मूल प्रवृत्तियों एवं प्रवृत्तिक्षेप क्रियाओं में अन्तर प्रस्तुत करते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुये हमने देखा कि जहाँ उसमें कुछ समानतायें प्राप्त होती हैं वहाँ इनमें बहुत सी असामनतायें मौजूद हैं। अन्त में मैकडूगल द्वारा प्रस्तुत मूल प्रवृत्तियों के विचार के सम्बन्ध में हम यह कह सकते हैं कि भले ही प्रयोगों के आधार पर मूल प्रवृत्तियों का विचार पूर्ण सत्य सिद्ध न रहा हो किन्तु मूल प्रवृत्तियों के विचार ने मानव व्यवहार को समझने में बहुत सहायता दी है। आज भी प्रायः सामाजिक तथा वैज्ञानिक व्यक्ति के सामाजिक व्यवहार को समझने के लिये मूल प्रवृत्तियों पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२
प्रेरणा
[Motivation]

प्रश्न संख्या—१२

प्रेरणा से आप क्या समझते हैं ? यह कितने प्रकार की होती हैं। इनका निर्माण कैसे होता है ? उदाहरण देकर समझाइये।

What do you understand by motives ? What are their kinds ? How are they formed. Give examples.

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान व्यवहार का विज्ञान (Science of Behaviour) है। फलस्वरूप इस विज्ञान में यह जानने की विशेष समस्या रहती है कि कोई व्यक्ति कोई व्यवहार अथवा कार्य क्यों करता है। अभी तक इस प्रश्न के उत्तर में कहा जाता रहा है कि व्यक्ति इस संसार में मूल प्रवृत्तियों (Instincts) से सुसज्जित होकर अवतीर्ण होता है और यही मूल प्रवृत्तियां उसके व्यवहार को परिचालित करती हैं। परन्तु वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिकों ने मूल प्रवृत्तियों के अस्तित्व को अस्वीकार कर दिया है। उनका विचार है कि हमारे व्यवहार को परिचालित करने वाली शक्तियां प्रेरक (Motives) हैं जो कि कुछ मूल प्रवृत्तियों की तरह जन्मजात (Innate) होती हैं और कुछ प्रेरक प्राणी वातावरण से अर्जित (Acquired) भी कर लेता है। अब हम प्रेरकों के सम्बन्ध में समुचित जानकारी प्राप्त करने के लिये प्रेरक का अर्थ (Meaning of Motives), आवश्यकता, चालक और उद्दीपन (Need, Drive and Incentive) एवं प्रेरकों के प्रकार (Kinds of Motives) प्रस्तुत करेंगे। प्रेरकों के विभिन्न प्रकार प्रस्तुत करते हुये यह भी बतायेंगे कि इनका निर्माण कैसे होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेरणा का स्वरूप
(Nature of Motive)

प्राणी के व्यवहार को परिचालित करने वाली जन्म-जात एवं अर्जित वृत्तियों को प्रेरक कहते हैं।

जैसा कि नाम से स्पष्ट होता है कि प्रेरक (Motive) वह अन्तवृत्ति है जो कि प्राणी में क्रिया को उत्पन्न करती है। प्राणी इस क्रिया को तब तक जारी रखता है जब तक कि उसके उद्देश्य की पूर्ति न हो जाय। इस प्रकार प्रेरक के तीन कार्य होते हैं:—प्राणी में क्रिया को उत्पन्न करना, उस क्रिया को जारी कर और जब तक उसके उद्देश्य की प्राप्ति न हो तब तक इस क्रिया को जारी रखना। प्रेरक की परिभाषा देते हुये शेफर एवं अन्य विद्वानों ने लिखा है, **"प्रेरक क्रिया की एक ऐसी प्रवृत्ति है जो कि चालक (Drive) द्वारा उत्पन्न होती है एवं अभियोजन (Adjustment) द्वारा समाप्त होती है।"*** उदाहरण के लिये खाने का प्रेरक Motive) भूख-चालक (Hunger-drive) से उत्पन्न होता है और जब पेट में भोजन-सामग्री आ जाती है तो भूख चालक समाप्त हो जाता है फलस्वरूप खाने के प्रेरक का भी अन्त हो जाता है। इस प्रकार अभियोजनात्मक प्रतिक्रिया (Adjustment Response) चालक की तुष्टि द्वारा प्रेरक (Motive) प्रवृत्ति का अन्त कर देती है। उपर्युक्त शब्दों का निष्कर्ष यह है कि प्रेरक प्राणी की आन्तरिक स्थिति है जिसको प्रेरणा से वह समस्त कार्य करता है। प्रेरक की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये वुडवर्थ ने ठीक ही लिखा है—**"प्रेरक व्यक्ति की वह अवस्था अथवा तत्परता है जो कि उसे किसी व्यवहार को करने के लिये एवं किन्हीं उद्देश्यों को प्राप्त करने लिये निर्देशित करता है।"**

"A Motive is a state or set of the individual which disposes him for certain behaviour and for seeking certain goals."

—R. S. Woodworth.

प्रेरक व प्रेरणा की कुछ अन्य परिभाषाएँ

"Motives are conditions physiological and psychological within the organism that dispose it to act in certain ways."

—McDougall.

---

* "A motive may now be defined as a tendency to activity initiated by drive and concluded by the adjustment."

—Shaffer and Others.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Motive is a general term which may be used to designate to make a choice to perform an act or to continue in readiness to act in a certain manner."

—Morgan.

"Motive is an affective conative factor which operates in determining the direction of an individual's behaviour towards an end or goal, consciously apprehended or unconsious."

—James Drever.

"Motivation covers any and every factor of the springs of human action from the beginning to the end i. e. attitude, bais, urge impulse, craving, incentive, desires, wish, interest, will, intention, longing aim."

—M. K. Thomson.

आवश्यकता, चालक एवं उद्दीपन
(Need, Drive and Incentive)

(अ) आवश्यकता, चालक एवं उद्दीपन का अर्थ
(Meaning of Need, Drive and Incentive)

प्रायः प्रेरकों (Motives) का वर्णन करने में आवश्यकता (Need), चालक (Drive) एवं उद्दीपन (Incentive) इन तीनों शब्दों का बार-बार प्रयोग होता है, फलस्वरूप इनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना परमावश्यक हो जाता है अतः हम क्रमशः एक-एक का वर्णन करते हुये इनमें सम्बन्ध प्रस्तुत करेंगे।

(अ) आवश्यकतायें (Needs)— प्रत्येक प्राणी की कुछ मौलिक शारीरिक आवश्यकतायें (Needs) होती हैं। इन आवश्यकताओं की तृप्ति पर उसका जीवन आधारित हुआ करता है। हवा, भोजन, पानी, काम, मलमूत्र त्याग इत्यादि प्राणी की मुख्य आवश्यकतायें होती हैं, यदि प्राणी की इन शारीरिक आवश्यकताओं की तृप्ति नहीं हो पाती है तो उसका शारीरिक सन्तुलन (Physiological Balance) विघटित हो जाता है। इस विघटन के परिणामस्वरूप प्राणी में तनाव अथवा क्रियाशीलता तब तक चालू बनी रहती है जब तक कि प्राणी को आवश्यकताओं की तृप्ति नहीं हो जाती है। उदाहरण के लिये एक भूखी बिल्ली को जितने समय तक भोजन नहीं दिया जायगा उतने समय तक उसमें तनाव अथवा क्रियाशीलता चालू बनी रहेगी एवं ज्यों ही उसे भोजन प्राप्त हो जायगा त्योंही उसकी क्रियाशीलता जाती रहेगी। इसी आशय को स्पष्ट करते हुये बोरिंग लैंगफील्ड एवं वील्ड महोदय ने आवश्यकता की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए लिखा है "आवश्यकता जीवधारियों का भीतरी तनाव है जो किन्हीं उद्दीपनों अथवा लक्ष्यों के सम्बन्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में जीवों का क्षेत्र व्यवस्थित करते हैं और उनको प्राप्त करने के हेतु क्रियाशीलता उत्पन्न करने वाले होते हैं।"

"A need is a tension within an organism which tends to organize the field of the organism with respect to certain incentives or goals and to incite activity directed towards their attainment."

—**Boring Longfeld & Weld.**

(ब) चालक (Drive) प्राणी की आवश्यकताओं (Needs) से चालक (Drive) की उत्पत्ति हुआ करती है। वह कैसे ? इसके समझने के लिये हम अनेक उदाहरण दे सकते हैं। हम कह सकते हैं कि पानी की आवश्यकता से प्यास, भोजन की आवश्यकता से भूख एवं काम की आवश्यकता से काम नामक चालक (Drive) की उत्पत्ति होती है। पानी में कमी की अवस्था को आवश्यकता कहा जाता है अतः प्यास को चालक की अवस्था कहा जायगा। डैशिल के शब्दों में "चालक उस आदि शक्ति का एक भंडार है जो मनुष्यों के अंगों को कार्य करने के लिए बाध्य करता है।"

"Drive is an original source of energy that activates the human organism." —**Dashiell.**

चालक की कुछ अन्य परिभाषायें

"A Drive is a strong, persistent stimulus that demands an abjective response." —**Shaffer Gilmar & Schoen.**

"A Drive is an intra organic activity or condition of tissue supplying stimulation for a particular type of behaviour."

—**Boring Longfeld and Weld.**

(स) उद्दीपन (Incentive)—पर्यावरण की वस्तुयें जिनके द्वारा प्राणी के चालकों (Drives) की तृप्ति होती है उद्दीपन (Incentives) कहलाती हैं। उदाहरण के लिये प्यास-चालक (Thurst Drive) की तृप्ति पानी के द्वारा होती है। अतः पानी को हम उद्दीपन (Incetive) कहेंगे। इसी प्रकार भूख-चालक (Hunger Drive) का उद्दीपन है, भोजन (Food) एवं काम चालक (Sex Drives) का उद्दीपन है, विपरीत लिंगीय प्राणी। इस दृष्टिकोण से आवश्यकता (Need) एवं चालक (Drive) व्यक्ति की आन्तरिक आवश्यकतायें हैं एवं उद्दीपन बाह्य पर्यावरण में उपस्थित रहने वाला पदार्थ-अथवा प्राणी है। उद्दीपन की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये बोरिंग, लैंगफील्ड एवं वील्ड ने लिखा है, "हम कह सकते हैं कि उद्दीपन एक वस्तु, परिस्थिति अथवा क्रिया है जो व्यवहार को उत्तेजित, उत्पन्न एवं निर्देशित करता है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"An incentive may be defined as an object, a situation of an activity which excites, maintains and directs behaviour."

—Boring Longfeld & Weld.

[अ आवश्यकता, चालक एवं उद्दीपन का सम्बन्ध
(Relatinn among Need, Drive and Incentive)

यद्यपि आवश्यकता, चालक एवं उद्दीपन का सम्बन्ध उपर्युक्त शब्दों से स्पष्ट हो जाता है परन्तु यदि हम इनके सम्बन्ध को पुनः समझ लें तो और भी अच्छा होगा। उपर्युक्त शब्दों के आधार पर यदि हम प्रेरित व्यवहार (Motivated Behaviour) का विश्लेषण करें तो इसको दो भागों में विभाजित कर सकते हैं— (१) प्रथम भाग के अन्तर्गत वह क्रिया आती है जो चालक (Drive) के द्वारा प्राणी को उद्दीपन की तरफ निर्देशित करती है। इस दृष्टिकोण से इस क्रिया को लक्ष्य निर्देशित व्यवहार (Goal Directing Behaviour) कहते हैं, (२) द्वितीय भाग के अन्तर्गत वह क्रिया आती है जो कि उद्दीपन (Incentive) के उपस्थित होने पर घटती है। इस दृष्टिकोण से इस क्रिया को लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार (Goal Derived) Behaviour) कहते हैं। उदाहरण के लिये जलान्वेषण-सम्बन्धी व्यवहार प्राणी की वह क्रिया है जो उसको एवं पानी को पास-पास लाती है और पानी पीने का व्यवहार प्राणी की वह क्रिया है जो उसकी प्यास मिटाती है। इस उदाहरण में जलान्वेषण सम्बन्धी व्यवहार, लक्ष्य निर्देशित व्यवहार एवं पानी पीने का व्यवहार लक्ष्य प्राप्ति व्यवहार है। उपर्युक्त दृष्टिकोण को सामने रखकर हिलगार्ड (Hilgard) ने आवश्यकता-चालक-उद्दीपन (Need-Drive-Incentive) फारमूला प्रस्तुत किया है। उसने लिखा है, "आवश्यकता से चालक की उत्पत्ति होती है, चालक एक उच्च तनाव की स्थिति है जो अस्थिर क्रियाशीलता एवं क्रियाभिमुख व्यवहार को गति देती है, उद्दीपन वह बाह्य पर्यावरण है जो आवश्यकता की पूर्ति करता है और इस प्रकार तृप्ति प्रक्रिया के द्वारा चालक की समाप्ति होती है।"

"Need gives rise to drive, drive is a state of heightened tension leading to restless activity and preparatory behaviour. The incentive is something in the external environment that satisfies the need and thus reduces the drive through consumatsory activity."

—Hilgard.

प्रेरकों के प्रकार
(Kinds of Motives)

[ब] प्ररकों के वर्गीकरण के सम्बन्ध में आवश्यक विचार
Essential thinking about the Classification of Motives)

हमने देखा कि प्रेरक (Motives) वे शक्तियाँ हैं जो व्यक्तियों के व्यवहार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को परिचालित करती हैं। प्रेरकों के अन्तर्गत आवश्यकताओं (Needs) एवं चालकों (Drives) का मुख्य स्थान है। अतः कुछ विद्वान् प्रेरकों का वर्गीकरण करने के लिये आवश्यकताओं (Needs) का वर्गीकरण करते हैं और कुछ विद्वान् ऐसे भी हैं जो चालकों (Drives) का वर्गीकरण करते हुये प्रेरकों के प्रकार प्रस्तुत करते हैं परन्तु हम इस झंझट में न पड़ कर सीधे प्रेरकों का वर्गीकरण करेंगे।

[ब] प्रेरकों के प्रकार—तालिका द्वारा स्पष्टीकरण (Kinds of Motives-Classification by Scale)

प्रेरकों के प्रकार
(Kinds of Motives)

- जन्मजात प्रेरक (Innate Motives)
  - भूख (Hunger)
  - प्यास (Thurst)
  - काम (Sex)
  - नींद (Drowsiness)
  - प्रेम (Love)
  - क्रोध (Anger)
  - मल मूत्र त्यागादि (Excretion of waste products)
- अर्जित प्रेरक (Acquired Motives)
  - व्यक्तिगत प्रेरक (Personal Motives)
    - आकांक्षा का स्तर (Level of Aspiration)
    - जीवन लक्ष्य (Life Goal)
    - मदव्यसन (Drug Addiction)
    - आदत की विवशता (Force of Habit)
    - रुचि (Interest)
    - अचेतन प्रेरणा (Unconscious Motives)
    - मनोवृत्तियाँ (Attitudes)
  - सामान्य सामाजिक प्रेरक (Common Social Motives)
    - सामुदायिकता (Gregariousness)
    - आत्म-स्थापन (Self-assertion)
    - अर्जनात्मकता (Acquisitiveness)
    - युयुत्सा (Pugnacity)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] उपर्युक्त प्रेरकों के प्रकार का स्पष्टीकरण
(Clarification of above Kind of Motives)

(अ) जन्मजात प्रेरक (Innate Motives)

(१) भूख (Hunger)

(२) प्यास (Thurst)

(३) काम (Sex)

(४) नींद (Drowsiness)

(५) प्रेम (Love)

(६) क्रोध (Anger)

(७) मल मूत्र त्यागादि (Excretion of Waste Products)

(ब) अर्जित प्रेरक (Acquired Motives)

(१) व्यक्तिगत प्रेरक (Personal Motives)

(i) आकांक्षा का स्तर (Level of Aspiration)

(ii) जीवन लक्ष्य (Life Goal)

(iii) मद व्यवसन (Drug Addiction)

(iv) आदत की विवशता (Force of Habits)

(v) रुचि (Interest)

(vi) अचेतन प्रेरणायें (Unconscious Motives)

(vii) मनोवृत्तियाँ (Attitudes)

(स) सामान्य सामाजिक प्रेरक (Common Social Motives)

(i) सामुदायिकता (Gregariousness)

(ii) आत्म-स्थापन (Self-assertion)

(iii) अर्जनात्मकता (Acquisitiveness)

(iv) युयुत्सा (Pugnacity)

जन्मजात प्रेरक (Innate Motives)

[अ जन्मजात प्रेरकों का अर्थ (Meaning of Innate Motives)

जन्मजात प्रेरकों के वे प्रेरक हैं जो प्राणी में जन्म से ही निहित रहते हैं। इन प्रेरकों की तृप्ति के अभाव में प्राणी जीवित नहीं रह सकता है। अतः जन्मजात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेरकों को हम शारीरिक प्रेरक (Physiological Motives), प्राथमिक प्रेरक (Primary Motives), अतिआवश्यक प्रेरक (Vital Motives), जैवकोय प्रेरक (Biological Motives) आदि नामों से सम्बोधित कर सकते हैं।

[ब, जन्मजात प्रेरकों के प्रकार (Kinds of Innate Motives)

(१) भूख (Hunger)—प्रत्येक प्राणी जब जन्म लेता है तो भूख प्रेरक उसमें निहित रहता है। जब प्राणी के पेट में भोजन का अभाव हो जाता है तो उसे शीघ्र ही भूख (Hunger) लगती है और जब तक वह भोजन प्राप्त नहीं कर लेता है तब तक प्राणी में क्रियाशीलता अथवा तनाव की हालत रहती है और ज्यों ही उसे भोजन प्राप्त हो जाता है त्यों ही उसके भूख प्रेरक (Hunger Drive) का अन्त हो जाता है।

(२) प्यास प्रेरक (Thurst Drive)—शरीर में पानी के अभाव से अर्थात् पानी की आवश्यकता के परिणामस्वरूप प्राणी में प्यास चालक अथवा प्रेरक (Thurst Drive or Motive) की उत्पत्ति होती है और जैसे ही प्राणी को पानी पीने के लिये मिल जाता है वैसे ही प्यास चालक (Thurst Drive) का अन्त हो जाता है।

(३) काम प्रेरक (Sex Motives)—सृष्टि को चलाने के लिये प्रकृति ने प्रत्येक प्राणी को काम प्रेरक (Sex Motives) प्रदान किया है। जब प्राणी अपने विषमलिंगीय प्राणी के साथ संयोग कर लेता है तो काम प्रेरक अथवा चालक का अन्त हो जाता है। यदि विश्व के लोगों को कुछ वर्षों तक काम प्रेरक की तृप्ति का अवसर न दिया जाय तो भले ही वे असाधारण व्यवहार न करें परन्तु यह निश्चित है कि विश्व व्यक्तिविहीन हो जाये। काम प्रेरक का महत्व प्रस्तुत करते हुये शोपेनहावर ने लिखा है **"यह प्रवृत्ति लड़ाई का कारण, सुलह का ध्येय, गम्भीरता का आधार, मजाक का लक्ष्य, हँसी पैदा करने वाली बातों का खजाना एवं समस्त रहस्यमय संकेतों का आधार होती हैं।"**

"It (Sex Motive) is the cause of war, the end of peace, the basis of all that is grave, the aim of jest, the inexhaustible source of wit and the meaning of all mysterious hints."

—The Selected Essasys of Shopenhaur.

(४) नींद (Drowsiness)—जब व्यक्ति १५-२० घण्टे काम करता है तो नींद की आवश्यकता होती है जिसके परिणामस्वरूप नींद प्रेरक की उत्पत्ति होती है और जब व्यक्ति कुछ घण्टों तक सो लेता है तो उसके नींद प्रेरक का अन्त हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) प्रेम (Love)—मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि प्रेम एक जन्मजात प्रेरक है। जब व्यक्ति किसी से प्रेम करने की आवश्यकता (Need) अनुभव करता है तो उसके शरीर में एक तनाव उत्पन्न हो जाता है और जैसे ही वह इच्छित वस्तु अथवा प्राणी से प्रेम प्रदर्शित कर लेता है वैसे ही उसके प्रेम प्रेरक (Love Motive) की तृप्ति हो जाती है।

(६) क्रोध (Anger)—अन्य प्रेरकों के समान क्रोध (Anger) भी एक जन्मजात प्रेरक है। जब प्राणी की आवश्यकता की पूर्ति होने में कोई व्यक्ति बाधा पहुँचाता है तो क्रोध प्रेरक की जाग्रति हो जाती है परिणामस्वरूप उसके शरीर में क्रियाशीलता अथवा तनाव की उत्पत्ति हो जाती है। जब हमारी आवश्यकता की पूर्ति हो जाती है एवं हम बाधा पहुँचाने वाले व्यक्ति से किसी प्रकार का बदला ले लेते हैं तो क्रोध प्रेरक की तृप्ति हो जाती है।

(७) मलमूत्र त्यागादि (Need to Excrete Waste Products) अन्य प्रेरकों के समान मलमूत्र त्यागादि भी एक जन्मजात प्रेरक होता है यदि प्राणी इस प्रेरक को कुछ समय तक तृप्ति न होने दे तो उसका स्वास्थ्य बिगड़ने का डर रहता है। जब तक प्राणी इस प्रेरक की पूर्ति नहीं करता है तब तक उसमें क्रियाशीलता बनी रहती है।

[ख] जन्मजात प्रेरकों में परिवर्तन
(Changes in Innate Motives)

हमें एक बात यह समझ लेना चाहिए कि जन्मजात प्रेरकों (Innate-Motives) में वातावरण अथवा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन अथवा परिमार्जन होता रहता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सीखने के परिणामस्वरूप जन्मजात प्रेरकों में सर्वदा कुछ न कुछ परिवर्तन अथवा परिमार्जन होता रहता है। उदाहरण के लिए काम प्रेरक व्यक्ति का एक जन्म-जात प्रेरक है। इस प्रेरक की तृप्ति व्यक्ति किसी भी स्त्री के संयोग से करता है। परन्तु हम देखते हैं कि व्यक्ति समाज के बीच रह कर शिक्षा और अनुभव के कारण काम प्रेरक की तृप्ति एक विशेष स्त्री के संयोग से करता है। इतना ही नहीं वह काम प्रेरक की तृप्ति स्त्री संयोग के बजाय प्रेम पत्रों, प्रेम संदेशों, प्रेमोपहारों के प्रति क्रियाशील होकर कर लेता है। यह सब सीखने के परिणामस्वरूप ही होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि सीखने के परिणामस्वरूप प्रेरकों में निम्न परिवर्तन होते हैं:—

(१) प्रेरकों में विशिष्टता आ जाना।

(२) प्रेरकों में अनेक प्रकार की इच्छाओं के सम्मिलित हो जाने के कारण जटिलता आ जाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) साधनों का स्वयं लक्ष्य बन जाना।

(४) जब नवीन उत्तेजनाओं का मुख्य प्रेरक के साथ संयोग हो जाता है तो ये मुख्य प्रेरक को क्रियाशील बनाने में समर्थ हो जाती हैं।

अर्जित प्रेरक (Acquired Motives)

[अ] अर्जित प्रेरकों का अर्थ (Meaning of Acquired Motives)

अर्जित प्रेरक वे प्रेरक हैं जो व्यक्ति शिक्षा एवं वातावरण के सम्पर्क में आकर प्राप्त कर लेता है। इस दृष्टिकोण से ये प्रेरक जन्मजात (Inborn) न होकर सीखे (Learned) हुए होते हैं। बहुत से विद्वानों ने अर्जित प्रेरकों (Acquired Motives) को द्वितीयक (Secondary) कम आवश्यक (Non-Vital) मनोवैज्ञानिक (Psychological) एवं सामाजिक (Social) प्रेरकों की संज्ञा दी है।

[ब] अर्जित प्रेरकों के प्रकार (Kind of Acquired Motives)

(१) व्यक्तिगत प्रेरक (Personal Motives)

(२) सामान्य सामाजिक प्रेरक (Common Social Motives)

व्यक्तिगत प्रेरक (Personal Motives)

(अ) व्यक्तिगत प्रेरकों का अर्थ (Meaning of Personal Motives)

हम देखते हैं कि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के जीवन अनुभव भिन्न-भिन्न होते हैं। अनुभव की विभिन्नता का कारण व्यक्तियों का भिन्न-भिन्न वातावरण होता है क्योंकि भिन्न-भिन्न वातावरण में व्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार से अपने जन्मजात एवं सामान्य सामाजिक प्रेरकों की तृप्ति करता है। परिणामस्वरूप विभिन्न व्यक्तियों में विभिन्न प्रकार की इच्छाओं, लक्ष्यों एवं अभिरुचियों का विकास हो जाता है। इस प्रकार की वृत्तियों को ही व्यक्तिगत प्रेरक (Personal Motives) कहते हैं। व्यक्तिगत प्रेरकों की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए मन (Munn) ने लिखा है, **"व्यक्तिगत प्रेरक वे प्रेरक हैं जो किसी विशेष संस्कृति में स्वयं प्रधान नहीं होते हैं यद्यपि वे शारीरिक (जन्मजात) एवं सामान्य सामाजिक प्रेरकों से सम्बन्धित होते हैं।**

"The term personal motive will be used to refer to motives which, while allied with physiological and common social motives are themselves not predominant in a particular."

—**Munn.**

(ब) व्यक्तिगत प्रेरकों के प्रकार (Kinds of Personal Motives)

(१) आकांक्षा का स्तर (Level of Aspiration)—प्रत्येक व्यक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की आकांक्षा का स्तर (Level of Aspiration) अलग अलग होता है। एक व्यक्ति महीने में डेढ़ सौ कमाने की आकांक्षा करता है तो दूसरा व्यक्ति महीने में डेढ़ हजार रुपया कमाने की आकांक्षा करता है तो कोई ऐसा भी व्यक्ति होता है जो महीने में पन्द्रह हजार रुपया कमाने की आकांक्षा रखता है। एक व्यक्ति बी० ए० पास की आकांक्षा करता है तो कोई दूसरा व्यक्ति पी-एच० डी० की डिग्री से सुशोभित होना चाहता है। इस प्रकार अलग-अलग व्यक्तियों की आकांक्षा का अलग-अलग स्तर होता है जिसको प्राप्त करने के लिये व्यक्तिगत सतत् प्रयास करता है।

(१) जीवन लक्ष्य (Life Goal)—जीवन लक्ष्य भी मनुष्य का एक महत्वपूर्ण प्रेरक होता है। प्रत्येक व्यक्ति का कुछ न कुछ लक्ष्य होता है। कोई व्यक्ति वकील बनना चाहता है तो कोई डाक्टर, कोई इंजीनियर बनना चाहता है तो कोई प्रोफेसर। इस बात की सम्भावना हो सकती है कि बहुत से व्यक्तियों का जीवन लक्ष्य एक ही हो परन्तु यह आवश्यक नहीं कि इस लक्ष्य की उत्पत्ति एक ही प्रकार से हुई हो। उदाहरण के लिये किसी व्यक्ति का डाक्टर बनने का लक्ष्य इसलिये है कि वह डाक्टरी से मनमाना पैसा पैदा कर सकेगा, किसी दूसरे का इसलिये है कि वह डाक्टर बनकर स्वयं एवं अपने परिवार का स्वास्थ्य अच्छा रख सकेगा। ऐसी भी सम्भावना हो सकती है कि कोई व्यक्ति उपर्युक्त समस्त बातों से प्रेरित होकर डाक्टर बनने का लक्ष्य बना लेता है।

(३) मद-व्यसन (Drug-Addiction)—कुछ लोग अपने जीवन काल में मद-व्यसन (Drug-Addiction) की आदत डाल देते हैं जो कि एक शक्तिशाली प्रेरक होता है। जब व्यक्ति को मद-व्यसन करने को नहीं मिलता तो उसके शरीर में इतनी क्रियाशीलता हो जाती है कि मद-व्यसन के लिये दूसरों की हत्या तक कर सकता है। प्रायः जब व्यक्ति के जन्मजात अथवा शारीरिक प्रेरकों की तृप्ति नहीं होती है तो उसे जो निराशा अथवा दुःख होता है उसी से छुटकारा पाने के लिए वह मद-व्यसन करने लगता है। पहले तो व्यक्ति दुःख एवं निराशा से छुटकारा पाने के लिये मद-व्यसन करता है। परन्तु धीरे-धीरे उसके शरीर में ऐसे परिवर्तन आ जाते हैं कि उसके लिये मद-व्यसन शारीरिक आवश्यकता बन जाती है।

(४) आदत की विवशता (Force of Habit)—जब व्यक्ति किसी कार्य को बार-बार करता है तो उसे उस कार्य को करने की आदत बन जाती है। कभी-कभी व्यक्ति में कोई आदत इतनी दृढ़ हो जाती है कि वह प्रबल प्रेरक का रूप ग्रहण कर लेती है। उदाहरण के लिये यदि किसी सुन्दरी को नित्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रति सुबह दर्पण में अपना चेहरा देखने की आदत बन गई है तो वह सुबह उठते ही दर्पण में अपना चेहरा देखने का प्रयास करेगी और यदि उसे निश्चित स्थान में दर्पण नहीं मिलता है तो वह बेचैन अवस्था में तब तक दर्पण ढूँढ़ती रहेगी जब तक कि वह उसे प्राप्त न हो जाय और वह दर्पण में अपना चेहरा न देख ले।

(५) रुचि (Interest)—व्यक्ति की रुचि (Interest) एक महत्वपूर्ण प्रेरक है। व्यक्ति की जिस स्थान, व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति रुचि हो जाती है वह उसके सम्बन्ध में अधिक क्रियाशील रहता है। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति की रुचि मनोविज्ञान में है तो वह मनोविज्ञान को ही पढ़ने में अधिक समय देने का प्रयास करेगा। स्ट्रौंग महोदय ने ठीक ही कहा, "रुचि में सुख का भाव एवं वस्तु को प्राप्त करने एवं उसके सम्बन्ध में कुछ करने की प्रत्यात्मक प्रवृत्ति सन्निहित रहती है।……चलचित्र में रुचि का अर्थ है कि उसे देखकर व्यक्ति आनन्दित होता है तथा वह ऐसा ही करता है……।"

(६) अचेतन प्रेरणा (Unconscious Motivation)—व्यक्ति में अचेतन प्रेरक (Unconscious Motive) होते हैं, जिनकी यद्यपि व्यक्ति को चेतना नहीं होती है परन्तु वे उसके व्यवहार को परिचालित करते हैं। उदाहरण के लिये किसी वस्तु अथवा परिस्थिति से असाधारण भय होना अचेतन प्रेरणा हैं। इसी प्रकार अन्य मानसिक रोगों से अचेतन प्रेरणा का होना सिद्ध होता है।

(७) मनोवृत्तियाँ (Attitudes)—प्रत्येक व्यक्ति की किसी व्यक्ति, जाति समाज एवं देश के प्रति कुछ न कुछ मनोवृत्ति रहती है। यह मनोवृत्ति दो तरह की हो सकती है—अनुकूल (Favourable) एवं प्रतिकूल (Unfavourable)। जिनके प्रति हमारी अनुकूल मनोवृत्ति रहती है उनको तो हम सर्वश्रेष्ठ मान लेते हैं। एवं जिनके प्रति हमारी प्रतिकूल मनोवृत्ति रहती है उनको हम निकृष्ट सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए एक मुसलमान कुरान को सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ मानता है परन्तु रामायण को वह बुरा बताता है। इसका कारण यह है कि कुरान के प्रति उसकी अनुकूल मनोवृत्ति है एवं रामायण के प्रति प्रतिकूल। इस प्रकार मनो-मनोवृत्तियाँ निश्चित करने वाली प्रवृत्तियाँ (Determining Tendencies) हैं जैसा कि मन ने लिखा है।*

"An interest is accompanied by pleasant feeling and by dynamic tendency to seek the object or do something with it.........interest in the motives means that one enjoys attending them and does so........." —E. K. Strong.

"As a matter of fact, attitudes are usually defined as determining tendencies." —Munn.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामान्य सामाजिक प्रेरक
(Common Social Motives)

(अ) सामान्य सामाजिक प्रेरकों का अर्थ
(Meaning of Common Social Motives)

सामान्य सामाजिक प्रेरक (Common Social Motives) वे अर्जित प्रेरक (Acquired Motives) हैं जो प्रायः प्रत्येक व्यक्ति में पाये जाते हैं। इन प्रेरकों का प्रत्येक व्यक्ति में पाये जाने का मुख्य कारण यह है कि प्रायः प्रत्येक व्यक्ति के कुछ ऐसे जीवन अनुभव होते हैं जो अन्य सब व्यक्तियों में पाये जाते हैं। जिस प्रकार जन्मजात अथवा शारीरिक प्रेरक सार्वभौमिक (Universal) होते हैं उसी प्रकार सामान्य सामाजिक प्रेरक मानव जीवन में सार्वभौमिक रूप से पाये जाते हैं।

(ब) सामान्य सामाजिक प्रेरकों के प्रकार
(Kinds of Common Social Motives)

प्रायः मनोवैज्ञानिकों में इस बात का मतभेद है कि सामान्य सामाजिक प्रेरक कितने हैं परन्तु निम्नलिखित ४ सामान्य सामाजिक प्रेरकों को प्रायः समस्त मनोवैज्ञानिक स्वीकार करते हैं :—

(१) सामूहिकता एवं सामुदायिकता (Gergariousness)—केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि समस्त प्राणी सामूहिकता अथवा सामुदायिकता के प्रेरक (Motive of Gergariousness) को अर्जित कर लेते हैं। हां इतना अवश्य है कि मनुष्य इस प्रेरक का स्पष्ट प्रकाशन दृष्टिगोचर होता है। इस प्रेरक की उत्पत्ति बाल्यकाल की आश्रितता (Dependence) के परिणामस्वरूप होती है। नवजात शिशु को उसकी मां खिलाती पिलाती एवं पुचकारती है। फलस्वरूप वह मां को चाहने लगता है। जब मां उसके पास उपस्थित होती है तो उसको सन्तोष प्राप्त होता है। बालक में सामुदायिकता के प्रेरक का विकास यहीं से प्रारम्भ हो जाता है और जैसे-जैसे बालक अन्य लोगों के सम्पर्क में आता जाता है वैसे-वैसे इसके विकास के साथ सामुदायिकता का भी विकास होता जाता है। धीरे-धीरे बालक की ऐसी स्थिति आ जाती है कि वह समस्त कार्यों को अन्य लोगों के साथ मिलकर करना पसन्द करता है। इस प्रकार बालक सामुदायिकता की प्रवृत्ति अर्जित कर लेता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मन का कथन है—

"Since we are dependent upon others for a long period of time, and most of our pleasures from the time of birth are experienced in the company of others, there seems no necessity for

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

supposing that our strong desire for human associations is inborn. It seems much more reasonable to suppose that gregariousness is learned." —N. L. Munn.

(२) आत्म-गौरव अथवा आत्म-स्थापन (Self-assertion)—सामुदायिकता की तरह आत्म-गौरव अथवा आत्म-स्थापन का प्रेरक (Motive of Self-assertion) भी महत्वपूर्ण सामान्य सामाजिक प्रेरक है। इस प्रेरक की उत्पत्ति बालक के क्रोधात्मक व्यवहार से हुआ करती है जब बालक की स्वतन्त्र गति में कोई अवरोध (Restraint) उपस्थित करता है तो वह सम्पूर्ण शक्ति लगा कर इस अवरोध को दूर करने का प्रयास करता है। अवरोध को दूर करने में बालक में बहुत से आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन होते हैं जो कि उसका क्रोध प्रदर्शित करते हैं। जैसे-जैसे बालक का विकास होता जाता है वैसे-वैसे क्रोध उत्पन्न होने वाली उत्तेजनाएँ (Stimulus) भी बढ़ती जाती हैं। परिणाम स्वरूप अवरोध के साथ-साथ ये उत्तेजनाएँ बालक में क्रोध उत्पन्न करना प्रारम्भ कर देती हैं। बालक के लिये अन्य व्यक्तियों के कार्य एवं उनकी बातें अवरोध का प्रतीक बन जाती हैं। जब बालक छोटा होता है तो चिल्लाकर, रोकर एवं क्रोध प्रकट कर अवरोध को दूर करता है किन्तु जब वह बड़ा होता है तो अवरोधों पर विजय प्राप्त करने के लिये एवं क्रोधान्वित व्यवहार करने के लिए अभियोजनात्मक समस्या समाधानों की खोज कर उन्हें अपनाने लगता है। इस प्रकार आत्म-गौरव अथवा आत्म-स्थापना (Self-assertion) के प्रेरक को अर्जित कर बालक दूसरों के ऊपर आधिपत्य जमाने का प्रयास करने लगता है। प्रसिद्ध मनोविश्लेषक एडलर (Adler) का तो यहाँ तक विचार है है कि आत्म-स्थापना (Self-assertion) अथवा शक्ति की इच्छा (Will to Power) की प्रवृत्ति ही व्यक्ति के व्यवहार को परिचालित करती है। यदि हम व्यक्ति के व्यवहार का अच्छी तरह निरीक्षण करें तो हमें यह पता लगता है कि आत्म-गौरव के प्रेरक की अभिव्यक्ति, प्रभुत्व, नेतृत्व, आत्म-प्रदर्शन, प्रतिष्ठा की भावना आदि में होती है जैसा कि मन ने लिखा है—

"It is expressed in domination, leadership, self-display and the desire of recognition." —Munn.

(३) अर्जनात्मकता (Acquisitiveness)—अर्जनात्मकता प्रवृत्ति का विकास बाल्यकाल से प्रारम्भ हो जाता है। बालक को जो वस्तुयें अच्छी लगती हैं उनको वह लेकर कभी उनके साथ खेलता है तो कभी उनको वह मुँह में रखता है। बालक के अर्जनात्मक प्रेरक पर पुरस्कार एवं दंड का विशेष प्रभाव पड़ता है जो वस्तुयें उसे संतोष प्रदान करती हैं उनको वह अर्जित करने का प्रयास करता है एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जो वस्तुयें असंतोष प्रदान करती हैं उन्हें वह छोड़ देता है। जब बालक बड़ा हो जाता है तो वह इस अर्जनात्मक प्रवृत्ति से प्रेरित होकर जीवन में काम आने वाली वस्तुओं को अर्जित करने लगता है।

(४) युयुत्सा अथवा कलह (Pugnacity)—प्रायः लोगों का विचार है कि कलह अथवा युयुत्सा (Pugnacity) की प्रवृत्ति जन्मजात होती है जो समस्त प्राणियों में पाई जाती है। परन्तु नाना प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से पता लगा है कि युयुत्सा प्रेरक जन्मजात न होकर अर्जित प्रेरक (Acquired Motive) होता है। मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि युयुत्सा प्रेरक की उत्पत्ति दो कारणों से होती है–(१) शारीरिक अथवा जन्मजात प्रेरकों (Physiological or Innate Motives) की तृप्ति होने में बाधा पहुँचना एवं (२) युयुत्सा की ओर प्रवृत्ति करने वाली शिक्षा बहुत कम प्रदान की जाती है परन्तु नित्य प्रति के अनुभवों से पता चलता है कि हममें से सभी लोगों के शारीरिक अथवा जन्मजात प्रेरकों की तृप्ति में बाधा पहुँचाती है जिससे कि हम सब में कलह अथवा युयुत्सा प्रेरक की उत्पत्ति हो जाती है। इस प्रेरक के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुए मन ने लिखा है—

"......Those who frustrate the satisfaction of these basic needs will arouse anger and pugnacions or aggressive attitudes and acts. However, each of us is born into a situation where certain culture patterns, including traditional antipathies exist. These mold us into pugnacious or peaceful individuals, regardless of whether satisfaction of our needs as actually thwarted or threatened with frustration."

—N. L. Munn.

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों का तात्पर्य है कि प्रेरक (Motives) वे जन्मजात (Innate) एवं अर्जित (Acquired) प्रवृत्तियाँ हैं जो प्राणी के व्यवहार को संचालित करती हैं। प्रेरक मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं—(१) जन्मजात प्रेरक (Innate Motives) एवं (२) अर्जित प्रेरक (Acquired Motives)। जन्मजात प्रेरक-(१) भूख, (२) प्यास, (३) काम, (४) नींद, (५) प्रेम, (६) क्रोध एवं (७) मलमूत्र त्याग आदि। अर्जित प्रेरक-(१) व्यक्तिगत प्रेरक (Personal Motives) एवं सामान्य सामाजिक प्रेरक (Common Social Motives)। व्यक्तिगत प्रेरक—(१) आकांक्षा का स्तर, (२) जीवन-लक्ष्य, (३) मदव्यसन, (४) आदत की विवशता, (५) रुचि, (६) अचेतन प्रेरणा एवं (७) मनोवृत्तियां। सामान्य सामाजिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रेरक—(१) सामुदायिकता, (२) अर्जनात्मकता, (३) युयुत्सा एवं (४) आत्म-स्थापन। अन्त में प्रेरकों के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि प्रायः लोगों की ऐसी धारणा है कि युद्ध इत्यादि की भावना जन्मजात एवं अपरिहार्य है। किन्तु यह विचार उचित प्रतीत नहीं होता है। वास्तविकता यह है कि ऐसी प्रवृत्ति उस समाज में मनुष्य अर्जित करता है जो मनुष्य को प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक बनता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक मन ने भी ठीक ही कहा है :—

"To those who claim that man has inborn and ineradicable urges which demand such social institutions as war, we may answer that such motives, rather than being inborn, are themselves the products of these social institutions which frustate satisfaction of basic needs and subject each individual to educational influences which instil particular social motives and techniques."

—N. L. Munn.

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१३

संवेदना का स्वरूप एवं वेबर-फेचनर नियम

[Nature of Sensation & Weber-Fechner Law]

प्रश्न संख्या—१३

संवेदना से आप क्या समझते हो ? वेबर-फेचनर नियम पर प्रकाश डालिए।

What do you understand by sensation? Throw light on Weber-Fechner Law.

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। व्यक्ति को अपने वातावरण के अभियोजन करने के लिये बहुत सी मानसिक प्रक्रियाओं यथा संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, सीखना, स्मरण, विस्मरण, कल्पना, चिन्तन, तर्क इत्यादि को करना पड़ता है। इन समस्त मानसिक प्रक्रियाओं में संवेदना सबसे पहिली और सरलतम मानसिक प्रक्रिया होती हैं। संवेदना को मूल मानसिक प्रक्रिया (Primary Mental Process) भी कहा जाता है क्योंकि यह प्रेरक मानसिक प्रक्रिया में किसी न किसी रूप में अवश्य उपस्थित रहती है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है (Sensation is the first step of knowledge)। अतः हमारे लिये यह आवश्यक हो जाता है कि अन्य मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन के पूर्व हम संवेदना का अध्ययन करें। इस प्रश्न में संवेदना क्या है यह समझने के लिये हम संवेदना के स्वरूप (Nature of Sensation) तथा संवेदना की विशेषताएं या गुण (Characteristics or Attributes of Sensation) प्रस्तुत करेंगे, इसके उपरान्त वेबर-फेचनर संवेदना का नियम (Weber-Fechner Law of Sensation) बतायेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवेदना का स्वरूप
(Nature of Sensation)

[अ] संवेदना का अर्थ (Meaning of Sensation)

जब कोई भौतिक पदार्थ जिसे मनोवैज्ञानिक भाषा में भौतिक उत्तेजनायें (Physical Stimulus) कहा जाता है व्यक्ति की किसी ज्ञानेन्द्रिय (Sensory organ) को प्रभावित करता है तो उसके प्रभाव के परिणामस्वरूप उसकी ज्ञानेन्द्रिय उत्तेजित होती है। तत्पश्चात् ज्ञानवाही तन्तु (Sensory Nerves) ज्ञानेन्द्रिय की इस उत्तेजित अवस्था का हाल व्यक्ति के मस्तिष्क के केन्द्र को पहुँचा देते हैं। फलस्वरूप व्यक्ति को उत्तेजना के गुण की चेतना होती है अर्थात् व्यक्ति को उत्तेजना का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। उत्तेजना के गुण मात्र की चेतना प्रदान करने वाली इसी प्रथम मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) को संवेदना अथवा निर्विकल्पक प्रत्यक्ष ज्ञान (Sensation) कहते हैं। स्पष्ट है कि संवेदना ज्ञान की प्रथम श्रेणी होती है। इसमें उत्तेजना का आभासमात्र प्राप्त होता है। हमारे कान में किस प्रकार की ध्वनि आ रही है। यह किस पशु-पक्षी की है? यह किस स्थान से आ रही है? यह अच्छी है या बुरी? इस बात को समझने में हम बिलकुल असमर्थ हैं। ध्वनि के इस प्रकार के ज्ञान को मनोवैज्ञानिक भाषा में संवेदना कहते हैं। परन्तु यदि हम यह समझ जायँ कि यह आवाज मोर की है, यह अमुक बाग से आ रही है, यह अच्छी है तो मनोवैज्ञानिक भाषा में इसे संवेदना न कह कर प्रत्यक्षीकरण (Preception) कहते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि केवल नवजात शिशु को ही संवेदना होती है, प्रौढ़ों को नहीं क्योंकि उनके अनुसार प्रौढ़ों के लिये संवेदना तत्काल प्रत्यक्षीकरण (Perception) में परिवर्तित हो जाती है। कदाचित् इसलिये डा० वार्ड का विचार है "विशुद्ध संवेदना एक मनोवैज्ञानिक कल्पना है।"* संक्षेप में हम कह सकते हैं कि **संवेदना वह मूल तथा सरलतम मानसिक प्रकिया है जिसमें व्यक्ति को उत्तेजना का ज्ञान न होकर उसका आभासमात्र होता है।**

[ब] संवेदना की परिभाषा (Definition of Sensation)

(१) क्रूज—संवेदना उत्तेजना के प्रति प्राणी की प्राथमिक प्रतिक्रिया है।

"Sensation refers to the initial response to a stimuls."

—Cruze, Psychology for College Students P. 522.

---

*"A pure sensation is a psychological myth." —Ward.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) सली—यह एक सरल मानसिक प्रक्रिया है जो कि एक ज्ञान वाहक स्नायु के अन्तिम छोर से उत्तेजित होने के फलस्वरूप उत्पन्न होती है जबकि वह मस्तिष्क में अंकित होती है।

"A simple psychological phenomenon resulting from the stimulation of the peripheral extremity of an opperant nerve when this is propagated to the brain." —Sully.

(३) डा० जे० एन० सिन्हा—"संवेदना एक कोरा प्रभाव है जोकि एक उत्तेजना का ज्ञानेन्द्रियों पर क्रिया करने के कारण उत्पन्न होता है।"

"A sensation is a fair impression produced by a stimulus acting on a sense organ." —J. N. Sinha.

(४) एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक—"एक संवेदना प्राथमिक ज्ञानात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा उत्तेजना के गुण की चेतना होती है।

"Sensation is an elementary cognitive mental process by which we are merely aware of the attitudes of a stimulus."

—An Eminent Psychologist.

संवेदना की विशेषतायें या गुण
(Characteristics or Attributes of Sensation)

(१) गुण या प्रकार (Quality)—प्रत्येक संवेदना में भिन्न-भिन्न गुण होते हैं। इस भिन्नता के कारण वे एक दूसरे से भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिये श्रवण संवेदना (Auditory Sensation), दृष्टि संवेदना (Visual Sensation) से भिन्न होती है एवं दृष्टि संवेदना स्वाद संवेदना (Taste Sensation) से भिन्न होती है। ये गुण-भेद दो प्रकार के होते हैं—(१) जातीय (Generic) एवं विशिष्ट (Specific) उदाहरण के लिये ध्वनि संवेदना में जो भेद होता है वह जातीय होता है क्योंकि ये दो विभिन्न ज्ञानेन्द्रियों से उत्पन्न हुई हैं और लाल एवं पीले रंग की संवेदनाओं में जो भेद है वह विशिष्ट भेद है क्योंकि ये एक ही ज्ञानेन्द्रिय से उत्पन्न हुई हैं।

(२) तीव्रता (Intensity)—प्रत्येक संवेदना में तीव्रता की भी विशेषताएँ पाई जाती हैं। यह तीव्रता भिन्न-भिन्न संवेदनाओं में भिन्न-भिन्न मात्रा में होती है। कुछ संवेदनायें प्रबल होती हैं, कुछ निर्बल। उदाहरण के लिये प्रकाश प्रबल हो सकता है एवं निर्बल भी। चन्द्रमा का प्रकाश प्रबल होता है एवं तारागणों का प्रकाश निर्बल। इस प्रकार विभिन्न संवेदनाओं की तीव्रता में अन्तर होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) सत्ता-काल (Duration) :—संवेदनाओं में सत्ताकाल की विशेषता पाई जाती है। कुछ सवेदनायें अधिक देर तक होती रहती हैं। इन संवेदनाओं के सत्ताकाल में विभिन्नता होने के कारण उत्तेजना के सत्ताकाल पर आश्रित हैं। जितनी देर तक कोई उत्तेजना हमारी ज्ञानेन्द्रिय को प्रभावित करती है उतनी ही देर तक के लिये ही उस उत्तेजना से प्राप्त होने वाली संवेदना होती रहती है। यदि कोई आवाज ५ सेकेंड के लिये होती है तो उससे प्राप्त श्रवण संवेदना अल्पकालीन होती है और यदि कोई आवाज ५० सेकेण्ड तक ठहरती है तो उससे प्राप्त श्रवण संवेदना दीर्घकालीन होगी।

(४) व्याप्ति या विस्तार (Volume of Extensity)—प्रत्येक संवेदना में पर्याप्त अथवा विस्तार की विशेषता पाई जाती है। जिस उत्तेजना द्वारा ज्ञानेन्द्रिय का जितना अंचल (Region) उत्तेजित होता है उससे प्राप्त संवेदना की उतनी ही व्याप्ति होती है। तारे की संवेदना की व्याप्ति छोटी होती है एवं चन्द्रमा की व्याप्ति अधिक। इस प्रकार सुई की नोक की संवेदना की व्याप्ति छोटी होती है एवं पैसे की संवेदना की व्याप्ति बड़ी। इस प्रकार भिन्न-भिन्न संवेदनाओं की व्याप्ति में अन्तर होता है।

(५) स्पष्टता (Clearness)—समस्त संवेदनाओं में स्पष्टता की भी विशेषता पाई जाती है। कुछ संवेदनायें अधिक स्पष्ट होती हैं, कुछ कम स्पष्ट एवं कुछ अस्पष्ट। संवेदनाओं की स्पष्टता तीव्रता (Intensity), व्याप्ति (Extensity) एवम् सत्ताकाल (Duration) पर आधारित होती है। संवेदना की स्पष्टता ध्यान पर भी आधारित होती है जब हम किसी संवेदना पर ध्यान केन्द्रीभूत करते हैं तो वह स्पष्ट संवेदना होगी। इस प्रकार संवेदनाओं की स्पष्टता की मात्रा में अन्तर होता है।

(६) स्थानीय चिन्ह (Local Sign)—प्रकृति ने विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं के लिये विभिन्न ज्ञानेन्द्रियाँ निश्चित कर दी हैं। इन ज्ञानेन्द्रियों का शरीर में निश्चित स्थान होता है, फलस्वरूप प्रत्येक संवेदना में स्थानीय चिन्ह की विशेषता पाई जाती है। हम यह सुगमता से बता देते हैं कि विशेष प्रकार की संवेदना शरीर के अमुक भाग में हो रही है। उदाहरण के लिये यदि हमारे हाथ के किसी भाग में सुई चुभोई जाय तो उससे जो हमें स्पर्श संवेदना प्राप्त होगी उसके सम्बन्ध में हम निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि यह संवेदना हमारे हाथ के अमुक भाग से आ रही है। इस प्रकार संवेदना में स्थायी चिन्ह की विशेषता पाई जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वेबर-फेचनर संवेदना का सिद्धान्त

(Weber Fechner Law of Sensation)

[अ] संवेदनात्मक विस्तार

विभिन्न प्रकार के उत्तेजक (Stimulus) हमारी ज्ञानेन्द्रियों (Sense-organs) को प्रभावित करते रहते हैं। परन्तु हमें समस्त उत्तेजकों की संवेदना (Sensation) प्राप्त नहीं होती है। यदि उत्तेजक बहुत धीमे अथवा तीव्र होते हैं तो उनकी हमें संवेदना नहीं होती है। यदि किसी उत्तेजक की तीव्रता को क्रमशः बढ़ाया जाय और जिस सीमा में उत्तेजक इतना प्रभावशोल हो जाय कि वह संवेदना उत्पन्न कर सके तो उस सीमा को 'संवेदना का सीमान्त (Threshold of Sensibility) कहते हैं। यदि उस उत्तेजक की तीव्रता को क्रमशः बढ़ाता चला जाया जाय तो एक सीमा ऐसी आ जाती है कि व्यक्ति को उसकी संवेदना के बजाय कष्ट का अनुभव होने लगता है। उदाहरण के लिये तेज चीखने वाले शब्द की व्यक्ति को संवेदना नहीं होती है बल्कि कष्ट अनुभव होता है। जिस बिन्दु पर उत्तेजक कष्टदायक प्रतीत होने लगते हैं उस बिन्दु को मनोवैज्ञानिक भाषा में संवेदना की सीमा का अतिक्रमण बिन्दु' (Point of upper limit of Sensation) कहते हैं। 'संवेदना का सीमान्त' एवं 'संवेदना की सीमा का अतिक्रमण-बिन्दु' के बीच के अन्तर को ही मनोवैज्ञानिक भाषा में 'संवेगात्मक-विस्तार' (Range of sensibility) कहते हैं। अब हम आगे वेबर (Weber) एवं फेखनर (Fechner) के संवेदना-विषयक सिद्धान्त को प्रस्तुत करेंगे। चूंकि इनके सिद्धान्तों में अधिक मात्रा में समानता है इसलिये इन दोनों के सिद्धान्तों के नाम को बेबर-फेचनर संवेदना का सिद्धान्त (Weber-Fechner Law of Sensation) कहते हैं।

[ब] वेबर का सिद्धान्त—संवेदना की तीव्रता में उपयुक्त अन्तर प्राप्त करने के लिए उसके उत्तेजक को उसी अनुपात में बढ़ाना

जर्मनी के प्रसिद्ध शरीर वैज्ञानिक वेबर (Weber) महोदय ने अपने अन्वेषणों के आधार पर संवेदना-विषयक एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार 'संवेदना के सीमान्त' (Threshold of Sensibility) एवं 'संवेदना की सीमा के अतिक्रमण बिन्दु' के मध्य में जितनी ही अधिक उत्तेजक (Stimulus) की तीव्रता होगी उतनी ही इससे सम्बन्धित संवेदना की तीव्रता भी होगी। उन्होंने यह जानने के लिये कि किसी संवेदना (Sensation) की तीव्रता में अन्तर प्राप्त करने के लिये उत्तेजक (Stimulus) की तीव्रता को किस अनुपात

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में बढ़ाया जाय, एक नियम की खोज की। वेबर के ही शब्दों में वह नियम है, "एक संवेदना की तीव्रता में उपयुक्त अन्तर प्राप्त करने के लिये उसके उत्तेजक को उसी अनुपात में बढ़ाया जाय।"

"In order to secure a just noticeable increase in the intensity of sensation it is necessary to increase the stimulus arousing the sensation by a constant fraction of itself." —Weber.

मान लीजिये हमारे सिर पर ४० ग्राम का बोझ रख दिया जाय तो दबाव की संवेदना से हमें तब तक कोई परिवर्तन न अनुभव होगा जब तक कि ४० ग्राम में २ ग्राम और न बढ़ा दिया जाय। यदि हम ४० ग्राम के बजाय १०० ग्राम वजन अपने शरीर में रखते हैं तो दबाव की संवेदना में अन्तर अनुभव करने के लिये १०० ग्राम में ५ ग्राम और बढ़ा देना होगा। यहाँ पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दबाव की संवेदना में अन्तर अनुभव करने के लिए मौलिक उद्दीपक का कम से कम एक बीसवां भाग अर्थात $\frac{1}{20}$ अवश्य बढ़ाना चाहिये। इसी तरह परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि कम से कम ध्वनि का १/३, प्रकाश का १/१००, गंध का १/५ एवं उठाये हुए तौल का १/२० भाग उनके मूल उद्दीपकों से घटाया बढ़ाया जाय तो उनसे सम्बन्धित संवेदना का अनुभव होगा।

[स] फेचनर का नियम—संवेदना को अंकगणितीय क्रम से बढ़ाने के लिये उत्तेजक को ज्यामितीय क्रम में बढ़ने की आवश्यकता—

फेचनर (Fechner) महोदय ने संवेदना का जो अपना सिद्धान्त प्रतिपादित किया है वह इस प्रकार है। संवेदना (Sensation) की तीव्रता को अंकगणितीय क्रम (Arithmetical Progression) से बढ़ाने के लिये उत्तेजक (Stimulus) की तीव्रता को 'ज्यामितीय क्रम' (Geometrical Progression) से बढ़ाना चाहिए। यह नियम-फेचनर के सिद्धान्त (Weber Fechner Law of Sensation) के नाम से प्रसिद्ध है। यदि हम इस नियम का विश्लेषण करें तो हमें मालूम होगा १, २, ३, ४, ५, ६, (अंकगणितीय क्रम) वाले संवेदना की तीव्रता के क्रम को प्राप्त करने के लिए हमें उत्तेजक की तीव्रता के क्रम १, २, ४, ८, १६, ३२, (ज्यामितक्रम करना होगा।)

[ब] वेबर-फेचनर संवेदना के सिद्धान्त की आलोचना—इसमें निम्न त्रुटियाँ हैं—

(१) यद्यपि यह सिद्धान्त दबाव, दबाने एवं मांसपेशियों सम्बन्धी संवेदनाओं के लिए बहुत कुछ उपयुक्त सिद्ध होता है परन्तु घ्राण, तापक्रम एवं स्वाद सम्बन्धी संवेदनाओं के लिए यह सिद्धान्त उपयुक्त नहीं है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) संवेदनात्मकता के विस्तार (Range of Sensibility) के लिए वह सिद्धान्त ठीक है परन्तु 'संवेदना के सीमान्त', 'चेतना बिन्दु' एवं 'संवेदना सीमा के अतिक्रमण बिन्दु' की ओर यह सिद्धान्त संदिग्ध है। प्रायः यह देखा जाता है कि चेतना बिन्दु की तरफ तो संवेदना का अधिक अनुभव किया जाता है परन्तु संवेदना–सीमा के अतिक्रमण बिन्दु की तरफ हम जैसे ही बढ़ते जाते हैं वैसे ही संवेदना का अनुभव कम होने लगता है।

(३) यह ठीक नहीं प्रतीत होता कि संवेदना की तीव्रता, उत्तेजक की तीव्रता के निश्चित अनुपात के बढ़ जाने पर ही अनुभव होता है। उदाहरण के लिए २० ग्राम में १ ग्राम की वृद्धि उसी प्रकार अनुभव नहीं की जाती जिस प्रकार २० किलो में १ किलो की वृद्धि अनुभव की जाती है।

(४) मुन्सटरबर्ग (Muncterberg) एवं जेम्स का कथन है कि तीव्र संवेदना कई धीमी संवेदनाओं का योग नहीं कहा जा सकता है बल्कि वह तो एक नई प्रकृति की संवेदना होती है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में संवेदना वह मूल तथा सरलतम प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति को उत्तेजना का ज्ञान न होकर उसका आभासमात्र होता है। संवेदना की निम्नलिखित विशेषतायें या गुण हैं—(१) गुण या प्रकार, (२) तीव्रता, (३) सत्ताकाल, (४) व्याप्ति या विस्तार, (५) स्पष्टता तथा (६) स्थानीय चिह्न। संवेदना के वेबर के नियम इस प्रकार हैं—संवेदना के सीमान्त एवं संवेदना की सीमा के अतिक्रमण बिन्दु के मध्य में जितनी ही अधिक उत्तेजक (Stimulus) की तीव्रता होगी उतनी ही सम्बन्धित संवेदना की तीव्रता होगी। फेचनर का नियम इस प्रकार है—संवेदना की तीव्रता को अंकगणित क्रम से बढ़ाने के लिए उत्तेजक की तीव्रता को 'ज्यामित क्रम' से बढ़ाना चाहिए। इन दोनों के नियम में पर्याप्त साम्य पाया जाता है अतः हम संयुक्त रूप से इन दोनों के नियम को 'वेबर–फेचनर का नियम' कहते हैं। यद्यपि यह नियम दोष-विहीन नहीं है किन्तु यह दबाव, दबाने, एवं मांसपेशियों, संवेदनाओं के लिए अधिक उपयुक्त है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१४

संवेदना के प्रकार

[Kinds of Sensation]

प्रश्न संख्या—१४

संवेदना के मुख्य प्रकार बताइये उनका संक्षेप में वर्णन कीजिये।

What are the various kinds of Sensation? Give a brief account of them.

भूमिका (Introduction)

व्यक्ति के सम्पूर्ण ज्ञान का आधार संवेदनायें (Sensation) होती हैं। ये संवेदनायें अनेक प्रकार की होती हैं। जितनी प्रकार की संवेदनायें होती हैं उतने प्रकार का ही हमारा ज्ञान भी होता है। इन सवेदनाओं का विभाजन अनेक आधारों पर किया जाता है जिनमें से प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं—(१) ग्राहकों (Receptors) के वर्गीकरण एवं स्थानीयकरण के आधार पर, (२) उत्तेजना (Stimulus) के स्वरूप के आधार पर तथा (३) ज्ञानेन्द्रियों (Sense organs) एवं अन्तरावयवों (Internal organs) के आधार पर। इन समस्त आधारों पर संवेदनाओं का वर्गीकरण करने पर संवेदनाओं के उतने ही प्रकार होते हैं जितने कि किसी एक आधार पर वर्गीकरण करने पर होते हैं। अब हम इस प्रश्न में विभिन्न प्रकार की संवेदनाओं के सम्बन्ध में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त करने के लिये पहले संवेदना के प्रकार (Kinds of Sensations) प्रस्तुत करेंगे और इसके उपरान्त प्रत्येक संवेदना पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।

संवेदना के प्रकार

(Kinds of Sensation)

[अ] संवेदना के विभिन्न प्रकार (Various Kinds of Sensation)

(१) विशिष्ट संवेदना (Specific Sensation)

१—दृष्टि संवेदना (Visual sensation)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२—श्रवण संवेदना (Auditory sensation)
३—घ्राण संवेदना (Olfactory sensation)
४—स्वाद संवेदना (Taste sensation)
५- स्पर्श संवेदना (Tactual sensation)

(अ) शीत संवेदना (Cold sensation)
(ब) उष्ण संवेदना (Warm sensation)
(स) पीड़ा संवेदना (Pain sensation)
(द) दबाव संवेदना (Touch sensation)

(२) स्नायविक संवेदना (Kinesthetic Sensation)

१—स्थित संवेदना (Sensation of Position)
२—स्वतन्त्रगति संवेदना (Sensation of free movement)
३—प्रतिरोध संवेदना (Sensation of resistance)

(३) अन्तरावयव (Organic sensation)

[ब] संवेदना के विभिन्न प्रकारों का तालिका द्वारा प्रस्तुतीकरण (Presentation of Various Kinds of Sensation by Scale)

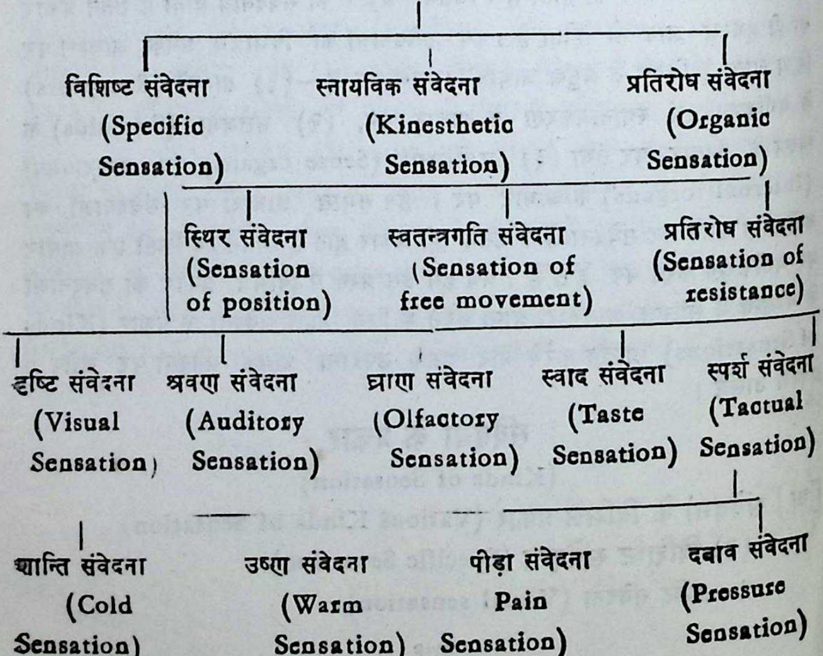

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशिष्ट संवेदना (Specific Sensation)

[अ] विशिष्ट संवेदना का अर्थ

विशिष्ट संवेदनायें वे संवेदनायें हैं जो प्राणी को किसी बाह्य उत्तेजना (External Stimulus) एवं किसी विशेष ज्ञानेन्द्रिय के परिणामस्वरूप होती हैं। उदाहरण के लिए जब कोई आवाज होती है तो उसकी संवेदना एक विशेष ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् कान (ear) के द्वारा होती है। इसी प्रकार हमारे शरीर में अन्य ज्ञानेन्द्रियाँ हैं जिनके द्वारा हमें विशेष प्रकार की संवेदना प्राप्त होती है। आगे हम विशिष्ट संवेदनाओं से सम्बन्धित ज्ञानेन्द्रियों को प्रस्तुत करेंगे।

[ब] विशिष्ट संवेदना एवं उनसे सम्बन्धित ज्ञानेन्द्रियाँ

विशिष्ट संवेदना	ज्ञानेन्द्रियाँ
१- दृष्टि संवेदना (Visual Sensation)	आँख (Eye)
२—श्रवण संवेदना (Auditory Sensation)	कान (Ear)
३—घ्राण संवेदना (Olfactory Sensation)	नाक (Nose)
४—स्वाद संवेदना (Taste Sensation)	जीभ (Tongue)
५—स्पर्श संवेदना (Tactual Sensation)	त्वचा (Skin)

(१) दृष्टि संवेदना (Visual Sensation)

[अ] दृष्टि संवेदना किस प्रकार होती है ?

दृष्टि संवेदना का सम्बन्ध प्रकाश एवं आँख से है। जब उत्तेजना (Stimulus) के रूप में प्रकाश का आँख पर प्रभाव पड़ता है तो परिणामस्वरूप प्रकाश की लहरें कनीनका (Cornia) से होती हुई ताल (Lense) द्वारा केन्द्रित हो जाती हैं, तत्पश्चात् वे दृष्टि पटल (Retina) पर पड़ती हैं, फिर यहाँ से दृष्टि स्नायुओं (Optic Nerves) द्वारा जैसे ही वे मस्तिष्क केन्द्र में पहुँचती हैं वैसे ही दृष्टि संवेदना (Visual sensation) होती है।

[ब] आँख की बनावट-फोटो खींचने वाले कैमरे के समान

शरीर के विज्ञान-वेत्ताओं का विचार है कि आँख की बनावट फोटो खींचने वाले कैमरे (Camera) के समान होती है। यह तीन आवरणों से ढकी रहती है। ये आवरण निम्नलिखित हैं :—

१—**श्वेत पटल (Sclerotic)**—श्वेत पटल आँख का बाह्य भाग होता है। यह आँख को चारों ओर से घेरे रहता है। आँख के सामने इसका कनीनका (Cornia) नामक भाग पारदर्शी होता है एवं शेष भाग अपारदर्शी होता है।

२—**मध्य पटल (Choroid)**—यह काले एवं भूरे रंग का होता है। इसका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आगे वाला भाग उपतारा (Iris) कहलाता है। इनका मुख्य कार्य प्रकाश को ग्रहण करना होता है। उपतारा के बीच में एक छिद्र होता है जिसे पुतली कहा जाता है। अधिक प्रकाश में पुतली सिकुड़ जाती है एवं मध्यम प्रकाश में फैल जाती है। इस फैली अवस्था में आवश्यकतानुसार प्रकाश आँख में प्रवेश कर सकता है। उपतारा (Iris) के पीछे लेन्स (Lense) की स्थिति रहती है जो कि प्रकाश को आँख के उचित स्थान पर स्थापित कर देता है।

३—अक्ष पट (Retina)—अक्ष पट आँख का सबसे भीतरी भाग है। इससे दृष्टि संवेदना (Visual Sensation) के ग्राहक (Receptors) उपस्थित रहते हैं। ये ग्राहक दो प्रकार के होते हैं, एक प्रकार के ग्राहकों को शंकु (Cones) दण्ड से प्रकाश एवं अंधकार की संवेदना होती तथा शंकु से विभिन्न रंगों की। अब हम आँख को अच्छी तरह समझाने के लिये उसका चित्र प्रस्तुत करते हैं।

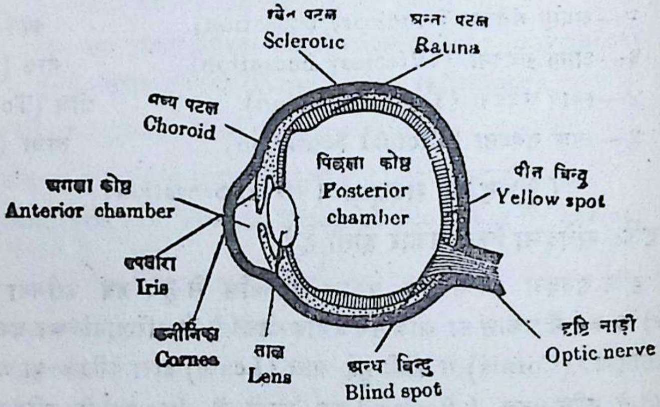

चित्र १०—मनुष्य की आंख

[स] दृष्टि संवेदना के प्रकार निम्न दो हैं—

(१) रंगहीन संवेदना (Achromatic Sensation)—काले, भूरे एवं उजले की संवेदना को रंगहीन संवेदना (Achromatic Sensation) कहते हैं। विद्वानों ने काले, उजले एवं भूरे को रंग नहीं माना है। फलस्वरूप उन्होंने इन तीनों की संवेदना को रंगहीन संवेदना कहा है। काले, उजले एवं भूरे की संवेदना अर्थात रंगहीन संवेदना (Rods) के द्वारा होती है।

(२) रंगों की संवेदना (Chromatic Sensation)—रंगों की संवेदना वह संवेदना है जिसमें लाल, हरे, नीले एवं पीले रंग की संवेदना होती

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। विद्वानों का विचार है कि मुख्य रंग ४ हैं—लाल, हरा, नीला एवं पीला। इन रंगों के मिश्रण से ही अन्य रंगों की उत्पत्ति होती है फलस्वरूप इन रंगों के मिश्रण से अन्य रंगों की भी संवेदना होने लगती है। रंगों की संवेदना शंकुओं (Cones) द्वारा होती है।

(२) श्रवण संवेदना (Auditory Sensation)

[अ] ध्वनि संवेदना किस प्रकार होती है ?

जब किसी प्रकार का शब्द होता है तो शब्द प्रकम्पन (Ether Vibration) कान पर प्रभाव डालता है। फलस्वरूप कान उत्तेजित हो जाते हैं। कान की इस उत्तेजित अवस्था का हाल ध्वनि स्नायुओं द्वारा मस्तिष्क के ध्वनि केन्द्र में पहुँचता है जिससे कि ध्वनि संवेदना (Auditory Sensation) होती है। आगे हम कान की बनावट प्रस्तुत करते हुए संवेदना के सम्बन्ध में पुनः विचार करेंगे।

[ब] कान की बनावट—कान के निम्न तीन भाग हैं

१—बाह्य कान (Outer Ear)
२—मध्य कान (Middle Ear)
३—आन्तरिक कान (Inner Ear)

इन भागों के सम्बन्ध में वुडवर्थ का विचार है "बाह्य कान एकत्रित करने वाला है, मध्य कान परिवर्तन करने वाला है एवं आन्तरिक कान इन्द्रिय-ग्राहक है।"

"The outer ear is a collector, the middle ear a transformer and the inner a sensitive receptor." —**Woodworth.**

१—बाह्य कान (Outer Ear)—बाहरी कानों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम भाग जो सीप के समान चौड़ा होता है, कान का बाहरी भाग है। दूसरा भाग कान की नली (Auditory tube) जिसके द्वारा ध्वनि कान से ढोल (Ear drum) के पास पहुँचती है।

२—मध्य कान (Middle Ear)—मध्य कान के अन्तर्गत दो छोटी छोटी हड्डियों का संग्रह होता है। ये मध्य कान के ढोल में सटी होती हैं। इन्हें क्रमशः मुगदर (Hammer), निहाई (Anvil) एवं रकाब (Stirrup) कहा जाता है। तीसरा भाग आन्तरिक झिल्ली (Inner Membrance) का है। ज्यों ही कोई ध्वनि ढोल के पास पहुँचती है त्यों ही वह प्रकंपित हो जाता है। परिणामस्वरूप मुगदर, निहाई एवं रकाब में प्रकंपन प्रारम्भ हो जाता है जिससे कि ध्वनि लगभग बीस गुनी बढ़ जाती है। इसके उपरान्त परिवर्तित ध्वनि आन्तरिक कान (Inner

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ear) में प्रवेश करती है। मनुष्य के कान को अच्छी तरह समझने के लिए उसका चित्र नीचे दिया जा रहा है।

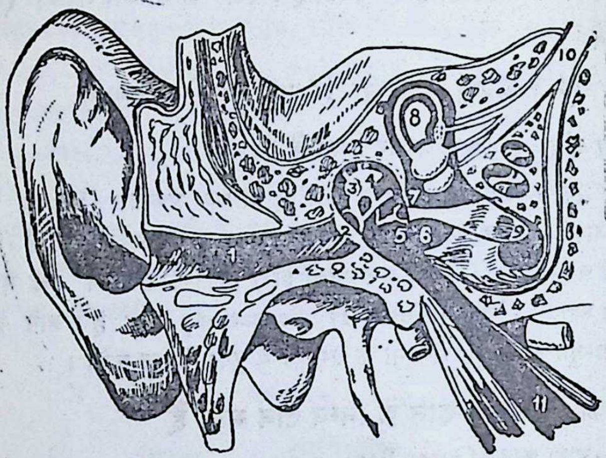

चित्र न० ११—मनुष्य का कान

[अ] बाह्य कान (१) कान की नली [ब] मध्य कान (२) कान का ढोल (३) मुगदर (४) निहाई (५) रकाब [स] आन्तरिक (६) गोलाकार (७) अण्डाकार द्वार (८) अर्द्ध वृत्ताकार नालियाँ (९) शंख अथवा कोकलिया (१०) श्रवण स्नायु एवं (११) कण्ठ कर्ण नली।

(३) आन्तरिक कान (Inner Ear)—आन्तरिक कान खोपड़ी की हड्डियों के अन्दर स्थित होता है एवं इसके अन्दर घोंघे के समान एक इन्द्रिय जिसे शंख (Cochlea) कहते हैं, स्थित होती है। यह एक प्रकार के तरल पदार्थ से भरी होती है। इस तरल पदार्थ में तलपत्र (Bisilar membrance) नामक झिल्ली रहती है जिसमें कि अनेक केश कोष्ठ (Hair cells) स्थित रहते हैं। श्रवण संवेदना की विभिन्न स्नायुयें (Nerves) तलपत्र से निकलकर मस्तिष्क के श्रवण केन्द्र में पहुँचती हैं। मध्य कान (Middle ear) से जब ध्वनि प्रकंपन (Sound vibration) द्वारा शंख (Cochlea) में स्थित तरल पदार्थ में पहुँचती है तो उसमें भी प्रकम्पन पैदा हो जाता है। फलस्वरूप केश कोष्ठ भी प्रकम्पित होने लगते हैं। तत्पश्चात् यही प्रकम्पन स्नायु-आवेग (Nerve impulses) में परिवर्तित हो जाते हैं। फिर वह ध्वनि स्नायु (Auditory nerve) के माध्यम से मस्तिष्क के ध्वनि केन्द्र में पहुँच जाती है। परिणामस्वरूप हमें संवेदना होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ख] ध्वनि के प्रकार निम्न दो हैं—

(१) लयात्मक ध्वनि (Tone)—लयात्मक ध्वनि वह ध्वनि है जो क्रमबद्ध एवं संगीतमयी होती है। उदाहरण के लिए सितार, हरमोनियम, पियानों आदि वाद्य-यन्त्रों की ध्वनियाँ लयात्मक ध्वनियाँ (Tone) हैं।

(२) अलयात्मक ध्वनि (Noise)—अलयात्मक ध्वनि वह ध्वनि है जो क्रम-बद्ध एवं संगीतमयी नहीं होती है। उदाहरण के लिए मेलों, सड़कों आदि की ध्वनियाँ जो क्रमहीन एवं असंगीतमयी होती हैं इन दो प्रकार की ध्वनियों के सम्बन्ध में वुडवर्थ का विचार है कि "अलयात्मक ध्वनि (शोर) अस्थिर वायु कम्पनों से, अलयात्मक ध्वनि (तान) क्रमिक एवं समान कम्पनों से पैदा होती है।"

"Noise is produced by an unsteady medlay of vibrations, tone by a sequence of unifrom vibrations." —Woodworth.

(३) घ्राण संवेदना (Olfactory Sensation)

[अ] घ्राण संवेदना किस प्रकार होती है ?

घ्राण संवेदना नाक (Nose) नामक ज्ञानेन्द्रिय से होती है। ज्यों ही किसी प्रकार की सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध नाक की झिल्ली पर प्रतिक्रिया करता है त्योंही उसमें स्थित गन्ध कनिकायें उसको ग्रहण कर लेती हैं। तत्पश्चात् वह गन्ध स्नायुओं द्वारा मस्तिष्क के घ्राण केन्द्र में पहुँच जाती है तथा व्यक्ति को घ्राण संवेदना (Olfactory sensation) होती है।

[ब] गन्ध के प्रकार – हेनिंग के अनुसार

यों तो अनेक मनोवैज्ञानिकों ने गन्ध के प्रकार अलग-अलग बतलाये हैं। परन्तु हेनिंग (Henning) द्वारा बताये हुए गन्ध के प्रकार उचित प्रतीत होते हैं। उसके अनुसार ६ प्रकार की मौलिक गन्ध होती है जो निम्नलिखित हैं :—

(१) पुष्पों की गन्ध (Flower odour)—नाना प्रकार के फूलों एवं फूल के तेलों की गन्ध।

(२) फलों की गन्ध (Fruit odour)—नाना प्रकार के फलों एवं कुछ फलों के तेलों की गन्ध।

(३) मसाले की गन्ध (Spice odous)—समस्त प्रकार के मसालों की गन्ध।

(४) राल की गन्ध (Resinous odour)—तारपीन, राल आदि की गन्ध।

(५) दूषित गन्ध (Foul odour)—मच्छर-खटमल, सड़े फल अफीम आदि की गन्ध।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) भस्म की गन्ध (Burning odour)—जले कपड़े, धुआँ आदि की गन्ध।

[स] घ्राण संवेदना की विशेषतायें

(१) जिस प्रकार अन्य संवेदनाओं द्वारा बाह्य जगत की वस्तुओं का ज्ञान होता है उसी प्रकार घ्राण संवेदना से भी बाह्य वस्तुओं का ज्ञान होता है। उदाहरण के लिए प्राचीन काल में गन्ध के आधार पर मनुष्यों के भोजन का पता लगाना।

(२) गन्ध ग्रहण करने वाली इन्द्रियों में शीघ्र ही थकावट आ जाती है। उदाहरण के लिए यदि व्यक्ति २-३ बार चमेली का तेल सूंघता है तो उसे उसकी सुगन्ध मिलती रहेगी और यदि उसे बार-बार सूँघता है तो गन्ध ग्रहण करने वाली इन्द्रियाँ थक जायेंगी एवं व्यक्ति को चमेली की सुगन्ध की संवेदना प्राप्त न हो सकेगी।

(३) व्यक्ति को गन्ध से सम्बन्धित भावों की अनुभूति होने लगती है। यह प्रिय भी हो सकती है एवं अप्रिय भी। उदाहरण के लिए चमेली की गन्ध प्रिय होती है एवं कीच की गन्ध अप्रिय।

(४) स्वाद संवेदना (Taste Sensation)

[अ] स्वाद संवेदना किस प्रकार से होती है

स्वाद संवेदना का सम्बन्ध जीभ से है जब हम कोई वस्तु खाते हैं अर्थात् जीभ पर रखते हैं तो उसका घुलनशील पदार्थ हमारी जीभ के अंकुरों (Papillae) को प्रभावित करता है। फलस्वरूप स्वाद कलिकायें उत्तेजित हो जाती हैं। इस स्थिति की सूचना स्नायुएँ (Nerves) मस्तिष्क (Brain) के स्वाद केन्द्र (Taste centre) में पहुँचा देती हैं तब हमें स्वाद संवेदना (Taste Sensation) होती है।

[ब] स्वाद संवेदनाओं के प्रकार

मनोवैज्ञानिकों ने मुख्य रूप से स्वाद संवेदनाओं को ४ भागों में विभाजित किया है जो निम्नलिखित हैं :—

(१) मीठी संवेदना—मीठी संवेदना जीभ के अगले भाग पर चीनी या चीनी युक्त पदार्थों के रखने से होती है।

(२) खट्टी संवेदना—यदि नीबू आदि खट्टे पदार्थों को जीभ में रक्खा जाय, तो जीभ के दोनों किनारों द्वारा खट्टेपन की संवेदना होती है।

(३) कड़वा संवेदना—जीभ की जड़ द्वारा कड़वापन को संवेदना प्राप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होती है। उदाहरण के लिए यदि मिर्च जीभ में रक्खी जाय तो जीभ के पिछले भाग से कड़वेपन की संवेदना प्राप्त होती है।

(४) नमकीन संवेदना—जब व्यक्ति नमक या नमक युक्त पदार्थों को खाता है अर्थात् जीभ पर रखता है तो उसके अगले भाग से नमकीन संवेदना प्राप्त होती है।

(५) स्पर्श संवेदना (Tactual or Cutaneous Sensation)

[अ] स्पर्श संवेदना किस प्रकार की होती है

स्पर्श संवेदना का सम्बन्ध त्वचा (Skin) नामक ज्ञानेन्द्रिय से है। जब कोई नुकीली अथवा अन्य कोई वस्तु त्वचा पर छू जाती है तो इसका मध्यपरत शीघ्र ही उत्तेजित होता है। इस उत्तेजना का हाल स्नायुओं द्वारा मस्तिष्क से स्पर्श केन्द्र में पहुँचाता है, फलस्वरूप व्यक्ति को स्पर्श संवेदना (Tactual or cutaneous sensation) होती है।

[ब] स्पर्श संवेदना के प्रकार

विद्वानों का विचार है कि मुख्य रूप से ४ प्रकार की स्पर्श संवेदनायें होती हैं। विद्वानों का विचार है कि इन विभिन्न संवेदनाओं के लिए त्वचा में भिन्न-भिन्न स्थान निर्धारित होते हैं। दूसरे शब्दों में समस्त प्रकार की संवेदना एक ही स्थान पर उत्पन्न नहीं होती हैं। बल्कि विभिन्न प्रकार की संवेदना विभिन्न प्रकार के स्पर्श बिन्दुओं द्वारा होती हैं। उदाहरण के लिए शीत संवेदना शीत बिन्दु से प्राप्त होती है अन्य से नहीं। ४ प्रकार की स्पर्श संवेदनायें निम्नलिखित हैं—

(१) शीत संवेदना (Cold Sensation)—हमें शीत संवेदना ठंडे या कुछ विशेष प्रकार के पदार्थों से होती है जब कोई ठण्डी वस्तु शीत बिन्दु पर छू जाती है तब हमें शीत संवेदना (Cold Sensation) प्राप्त होती है।

(२) उष्ण संवेदना (Warm Sensation)—जब कोई गर्म वस्तु त्वचा के उष्ण बिन्दुओं पर छू जाती है तो प्राणी को उष्ण संवेदना (Warm Sensation) होती है। विद्वानों का विचार है कि उष्ण संवेदना का प्रतिक्रिया काल (Reaction time) शीत संवेदना की प्रतिक्रिया काल से अधिक हुआ करता है।

(३) पीड़ा संवेदना (Pain Sensation)—जब कोई नुकीली वस्तु दबाव के साथ त्वचा को स्पर्श करती है तो त्वचा का पीड़ा सम्बन्धी विशेष अवयव उत्तेजित हो जाता है। इस विशेष अवयव की इस अवस्था का हाल स्नायुवों (Nerves) द्वारा मस्तिष्क के पीड़ा केन्द्र पर पहुँचता है। फलस्वरूप पीड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवेदना (Pain Sensation) होती है।

(४) दबाव संवेदना (Pressure or Touch Sensation)—दबाव संवेदना के ग्राहक लगभग सम्पूर्ण शरीर में पाये जाते हैं। कुछ ग्राहक अधिक दबाव अनुभव करते हैं एवं कुछ कम। फलस्वरूप शरीर में दबाव संवेदना भी भिन्न-भिन्न मात्रा में होती है। उदाहरण के लिए तलुये की अपेक्षा हथेली में संवेदना अधिक मात्रा में होती है। जब कोई वस्तु त्वचा पर छूती है तो त्वचा के दबाव सम्बन्धी ग्राहक उत्तेजित हो जाते हैं। इस अवस्था का स्नायुवों द्वारा जब मस्तिष्क के केन्द्र को भान होता है तो दबाव संवेदना होती है। यदि किसी वस्तु को एक ही स्थान पर अधिक देर तक दबाया जाय तो दबाव की संवेदना का अनुभव नहीं करता है।

स्नायुविक संवेदना (Kinaesthetic Sensation)

[अ] स्नायुविक संवेदना का अर्थ

जो संवेदना मांसपेसियों (Muscles) एवं ग्रन्थियों (Glands) में गति आने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होती है उसे गति अथवा स्नायविक (Movement or Kinaesthetic Sensation) कहते हैं। 'किनेस्थैटिक' एक यूनानी शब्द है जिसका तात्पर्य गति (Movement) से है। इसलिये प्रायः मनोवैज्ञानिक संवेदना को ही किनेस्थैटिक अर्थात् स्नायुविक संवेदना कहने लगे हैं। स्नायुविक अथवा गति संवेदना के सम्बन्ध में वुडवर्थ का विचार है, "स्नायुविक संवेदनायें मांसपेशियों, ग्रन्थियों एवं जोड़ों के ग्राहकों (Receptors) के क्रियाशीलता से उत्पन्न होती हैं।"

"Kinaesthetic sensitivity comes from activation of receptor in our muscles, tendons and joints." —Munn.

[ब] स्नायुविक संवेदना के प्रकार

(१) स्थिति संवेदना (Sensation of Position)—जब कोई व्यक्ति अपने किसी हाथ को फैलाता है तो इस फैलाव के कारण एक संवेदना होती है जिसे स्थिति संवेदना (Sensation of position) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

(२) स्वतन्त्र गति संवेदना (Sensation of free movement)—जब कोई व्यक्ति अपने हाथ को इधर-उधर घुमाता है तो इस घुमाने के परिणामस्वरूप जो संवेदना उत्पन्न होती है उसे स्वतन्त्र गति संवेदना (Sensation of free movement) कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) प्रतिरोध संवेदना (Sensation of Resistance)—जब कोई व्यक्ति किसी चीज को धक्का देता है अथवा वह किसी भार (Weight) को उठाता है तो धक्का देने एवं भार उठाने के परिणामस्वरूप जो संवेदना उत्पन्न होती है उसे प्रतिरोध संवेदना (Sensation of Resistance) कहते हैं।

[ख] स्नायुविक संवेदना का महत्व

प्राणियों में स्नायुविक संवेदना का बहुत महत्व है। विश्व के समस्त पदार्थों के भार, स्थिति, विस्तार, दिशा आदि का ज्ञान हमें स्नायुविक संवेदना द्वारा ही प्राप्त होता है। स्नायुविक संवेदना का महत्व प्रस्तुत करते हुये वुडवर्थ महोदय ने लिखा है, "पेशिक (स्नायुविक) संवेदना प्रतिक्षेप अथवा ऐच्छिक गति में महत्वपूर्ण है। इसके अभाव में जब तुम कोई गति प्रारम्भ करना चाहोगे तो तुम्हें अपने अंगों की स्थिति का बहुत कम ज्ञान होगा एवं जब वह गति हो रही होगी तो तुम्हें इसका कुछ पता नहीं होगा कि वह कहाँ तक बढ़ चुकी है और तुम्हें यह भी पता नहीं होगा कि उसे कब रोक दिया जाय।"

"The muscle-sense is important in either reflex or voluntary movement. Without it, when you wanted to start any movement, you would have littile indication of existing position of the limbs, and when the movement was on the way, you would have little indication of how far it had progressed and would not know when to stop it." **—Woodworth.**

अन्तरावयव या आंगिक संवेदनायें

(Organic Sensation)

[अ] अन्तरावयव या आंगिक संवेदनाओं का अर्थ

अन्तरावयव या आंगिक संवेदना (Organic Sensation) वह संवेदना है जो शरीर के अन्तर्गत स्थित उत्तेजनाओं अर्थात् आन्तरिक उत्तेजनाओं (Internal Stimulus) के परिवर्तन के परिणामस्वरूप होती है जब व्यक्ति के आन्तरिक अवयवों में परिवर्तन होता है तो ज्ञानवाही नाड़ियों (Afferent Nerves) में उत्तेजना पैदा होती है एवं यही उत्तेजना मस्तिष्क के केन्द्र में पहुँच कर अन्तरावयव या आंगिक संवेदना (Organic Sensation) उत्पन्न करती है। आंगिक संवेदना की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये ड्रमण्ड एवं मैलान ने लिखा है, "आंगिक संवेदना किसी आंगिक आवश्यकता अथवा आंगिक आवश्यकता की पूर्ति की क्रिया की अनुभूति है।"

"An organic sensation is the feeling of an organic need or of an activity satisfying an organic need."

—Drummond and Mellon.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] अन्तरावयव या आंगिक संवेदना के प्रकार

निम्नलिखित हैं :—(१) भूख, (२) प्यास, (३) नोंद, काम पिपासा, (४) रोमांच, (५) आराम, (६) बेचैनी, (७) सिर दर्द, (८) थकान, (९) निद्रा, (१०) शरीर की स्वस्थ अथवा अस्वस्थ दशा।

[स] अन्तरावयव या आंगिक संवेदनाओं की विशेषतायें

(१) इसके लिये कोई ज्ञानेन्द्रिय (Sense Organ) की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

(२) ये आन्तरिक शारीरिक उत्तेजनाओं से उत्पन्न होती हैं।

(३) ये संवेदनायें अनिश्चयात्मक होती हैं। उदाहरण के लिए भूख की संवेदना हो रही है या प्यास की यह पूर्ण निश्चित नहीं होता है।

(४) ये संवेदनायें छोटे-से-छोटे जीवों में पाई जाती हैं। दूसरे शब्दों में ये प्राथमिक स्वरूप ही होती हैं।

(५) इन संवेदनाओं से हमें केवल शारीरिक अवस्था का ज्ञान होता है।

(६) हमारे सुखमय एवं दुखमय जीवन के लिए बहुत कुछ यही संवेदनायें उत्तरदायी होती हैं :—

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों का निष्कर्ष यह है कि सवेदना मुख्य रूप से तीन प्रकार की होती है—विशिष्ट संवेदना (Specific Sensation), स्नायुविक संवेदना (Kinaesthetic Sensation) एवं आन्तरिक संवेदना (Organic Sensation)। विशिष्ट संवेदनायें प्राणी की विभिन्न इन्द्रियों अर्थात् आँख, कान, नाक, जीभ एवं त्वचा से सम्बन्धित होती हैं और इन इन्द्रियों से जो संवेदनायें प्राप्त होती हैं वे दृष्टि संवेदना, श्रवण संवेदना, घ्राण संवेदना, स्वाद संवेदना एव स्पर्श सवेदना के नाम से पुकारी जाती हैं। स्नायुविक संवेदनायें माँसपेशियों, ग्रन्थियों एवं जोड़ों की गति करने के परिणामस्वरूप होती हैं। जहाँ तक आन्तरिक संवेदनाओं का सम्बन्ध है ये संवेदनायें व्यक्ति को शरीर के अन्तर्गत स्थित उत्तेजनाओं के परिवर्तन के परिणामस्वरूप होती हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१५

प्रत्यक्षीकरण

[Perception]

प्रश्न संख्या—१५

संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण में भेद बताइए तथा प्रत्यक्षीकरण का पूरी तरह विश्लेषण कीजिए।

Distinguish between Sensation and Perception giving a full analysis of the latter.

भूमिका (Introduction)

प्राणी को अपने पर्यावरण से अभियोजन (Adjustment) करने के लिये पर्यावरण की वस्तुओं, घटनाओं एवं परिस्थितियों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करना अति आवश्यक हो जाता है। यह जानकारी प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम इसे पर्यावरण की किसी नवीन वस्तु, घटना या परिस्थिति की संवेदना (Sensation) होती है। किन्तु संवेदना से उसे केवल वस्तु का आभासमात्र होता है। संवेदना की प्रक्रिया में उत्तरोत्तर विकास होने के परिणामस्वरूप वह जटिल प्रक्रिया में परिणित होती जाती है जिसके द्वारा व्यक्ति को पर्यावरण की चीजों का केवल आभासमात्र नहीं होता बल्कि उसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस जटिल मानसिक प्रक्रिया को प्रत्यक्षीकरण (Perception) के नाम से सम्बन्धित किया जाता है। अब हम इस प्रश्न में प्रत्यक्षीकरण को अच्छी तरह समझने के लिये प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप (Nature of Perception), संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर (Difference between Sensation and perception), प्रत्यक्षीकरण की विशेषतायें (Characteristics of Perception), प्रत्यक्षीकरण में संलग्न प्रक्रियायें (Process involved in Perception) तथा प्रत्यक्षीकरण के निर्धारक तत्व (Determinants of Perception) प्रस्तुत करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप

(Nature of Perception)

[अ] प्रत्यक्षीकरण का अर्थ (Meaning of Perception)

प्रत्यक्षीकरण (Perception) एक मानसिक क्रिया (Mental Process) है जिसमें व्यक्ति संवेदना (Sensation) तथा परिस्थितियों में पूर्व अनुभव के आधार पर शीघ्र ही अर्थ जोड़ देता है। दूसरे शब्दों में प्रत्यक्षीकरण वह मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है जिससे व्यक्ति ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित करने वाले वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, घटनाओं अर्थात् उत्तेजकों का तात्कालिक (Immediate) ज्ञान प्राप्त कर लेता है। प्रत्यक्षीकरण को सविकल्प प्रत्यक्ष ज्ञान भी कहते हैं। अब प्रश्न उठता है कि व्यक्ति को प्रत्यक्षीकरण कैसे होता है ? जब व्यक्ति के सामने कोई उत्तेजक उपस्थित हो जाता है तो उससे प्रभावित होकर उसकी ज्ञानेन्द्रियों स्नायु (Nerve impuluses) उत्पन्न हो जाते हैं। तत्पश्चात् ये स्नायु प्रवाह व्यक्ति के मस्तिष्क केन्द्र (Brain Centre) में पहुँच जाते हैं। फलस्वरूप व्यक्ति को संवेदना (Sensation) होती है। परन्तु यह संवेदना प्रत्यक्षीकरण में परिवर्तित हो जाती हैं क्योंकि जैसे ही व्यक्ति संवेदना का अनुभव करता है वैसे ही वह उसमें अर्थ जोड़ देता है। अर्थात् व्यक्ति को उत्तेजक ज्ञान हो जाता है। इस प्रकार अर्थयुक्त संवेदना को ही प्रत्यक्षीकरण कहते हैं। उदाहरण के लिये व्यक्ति के सामने एक आम उपस्थित होता है तो उसे आम को संवेदना होती है अर्थात् उसे यह आभास होता हैं कि कोई वस्तु उसके सामने उपस्थित है। परन्तु शीघ्र ही वह पूर्व अनुभव के आधार पर यह जान जाता है, यह मीठा आम है; इसके अन्दर गुठली होती है आदि। इसी प्रकार के ज्ञान को प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।

[ब] प्रत्यक्षीकरण का विश्लेषण (Analysis of Perception)

प्रत्यक्षीकरण की मानसिक क्रिया का विश्लेषण करने में निम्न बातें होती हैं—

(१) वस्तु अथवा उत्तेजक का उपस्थित होना।
(२) ज्ञानेन्द्रियों का उत्तेजक न प्रभावित होना।
(३) ज्ञानेन्द्रियों से स्नायु प्रवाहों का उत्पन्न होना।
(४) स्नायु प्रवाहों का मस्तिष्क के केन्द्र में पहुँचना।
(५) संवेदना का अनुभव होना।
(६) संवेदना का अर्थ जोड़ देना।
(७) प्रत्यक्षीकरण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ख] प्रत्यक्षीकरण के सम्बन्ध में गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों का विचार ।
(View of Gestalt Psychologists on Perception)

गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों (Gestalt Psychologist) के पूर्व अर्थात् प्राचीन मनोवैज्ञानिकों की यह धारणा थी कि प्रत्यक्षीकरण (Perception) एक संवेदना समूह (Bundle of sensation) मात्र है। परन्तु इस धारणा का खण्डन करते हुये गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने कहा कि उत्तेजक की विभिन्न संवेदनाओं का ज्ञान हमें अलग प्राप्त नहीं होता है, वरन् हमें उसके संघात (Gestalt) समन्वय (Integration) अथवा उनकी इकाई (Unit) का ज्ञान प्राप्त होता है, फलस्वरूप उत्तेजक का ज्ञान हमें इकाई के रूप में होता है। उदाहरण के लिये जब हम एक चारपाई देखते हैं तो ऐसा तो नहीं होता कि हम उसके भिन्न-भिन्न भागों का अलग-अलग प्रत्यक्षीकरण करें बल्कि हम तो सम्पूर्ण चारपाई की एक इकाई के रूप में प्रत्यक्षीकरण करते हैं।

[द] प्रत्यक्षीकरण की परिभाषाएँ (Definitions of Perception)

(१) मैकडूगल—"प्रत्यक्षीकरण वर्तमान वस्तुओं का चिन्तन है। एक वस्तु तब तक वर्तमान है जब तक कि उससे आने वाला उत्तेजक हमारी इन्द्रियों को प्रभावित करता है।"

"Perceiving is the thinking of present object. An objects s ipresent so lono as energy (stimulus) coming from it affects our sense organs." —McDougall.

(२) स्टेगनर—"इन्द्रियों के द्वारा बाह्य वस्तु अथवा घटना का ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया को प्रत्यक्षीकरण कहते हैं।"

"Perecption is the process of obtaining knowledge of external objects and events dy means of the senses." —Stagner.

(३) जेम्स—"यह (प्रत्यक्षीकरण) विशेष भौतिक वस्तुओं की चेतना है जो इन्द्रियों के समक्ष है।"

"It (perception) is the consciousness of particular material things present to sense." —James.

(४) कॉलिन्स एव ड्रेवर—प्रत्यक्षीकरण एक वस्तु अथवा परिस्थिति को समझना है जो एक या और सभी ज्ञानेन्द्रियों को प्रभावित करता है।"

"Perception is the immediate apprehension of an object or all of the sense organs by way of sensation." —Collins and Drever.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) **बोरिंग एवं अन्य विद्वान्**—उत्तेजक से क्रिया के बीच की शृङ्खला में प्रत्यक्षीकरण पहली कड़ी है।"

"Perception is the first event in the chain which leads from the stimulus to action." **— Boring and others.**

संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर

(Difference between Sensation and Perception)

संवेदना एवं प्रत्यक्षीकरण में निम्नलिखित अन्तर हैं।

(१) संवेदना एवं उत्तेजक के प्रति प्रथम मानसिक प्रक्रिया (First mental Process) है एवं प्रत्यक्षीकरण द्वितीय मानसिक क्रिया (Second mental Process) है।

(२) विलियम जेम्स के कथनानुसार संवेदना 'परिचयात्मक ज्ञान' (Knowledge of Acquaintance) है एवं प्रत्यक्षीकरण 'वस्तु विषयक ज्ञान' (Knowledge) है।

(३) संवेदना प्रत्यक्षीकरण का एक भाग है। फलस्वरूप संवेदना सरल एवं प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है।

(४) वास्तव में संवेदना केवल शिशुओं को होती है जबकि प्रत्यक्षीकरण कुछ विकसित अवस्था में होता है। इस दृष्टि से संवेदना एक कल्पित सत्ता मात्र है एवं प्रत्यक्षीकरण मूर्त प्रकृति अनुभव। इसीलिये वार्ड ने कहा है, विशुद्ध संवेदना एक मनोवैज्ञानिक कल्पना है।" (A Pure sensation is a psychological myth)।

(५) संवेदना एक अनुभावात्मक मानसिक प्रक्रिया (Presentative process) है और प्रत्यक्षीकरण 'अनुभव स्मरणात्मक मानसिक प्रक्रिया (Presentative Representative process) है। पिल्सबरी ने ठीक ही कहा है, "एक प्रत्यक्षीकरण संवेदना और स्मृतियों का योग है जिसमें संवेदना एवं स्मृति पहचान के बाहर हैं।" (A perception is a fusion of sensation and memories in which sensation and memory are indistinguishable."—Pillsbury)।

(६) संवेदना मस्तिष्क में स्थित ज्ञान केन्द्रों की प्रक्रिया होती है एवं प्रत्यक्षीकरण मस्तिष्क के सहचारी केन्द्रों की प्रतिक्रिया होती है।

(७) संवेदना में मन निष्क्रिय होता है जबकि प्रत्यक्षीकरण में सक्रिय।

(८) संवेदना अव्यावहारिक मानसिक प्रक्रिया है एवं प्रत्यक्षीकरण व्यावहारिक मानसिक प्रक्रिया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यक्षीकरण की विशेषतायें
(Characteristics of Perception)

स्टाउट (Stout) के अनुसार प्रत्यक्षीकरण की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(१) एकता एवं अविच्छिन्नता (Unity and Continuity)—कुछ प्रत्यक्षीकरण (Perception) अल्प स्थायी हुआ करते हैं। जैसे ही वे व्यक्ति की इच्छाओं को तृप्त कर देते हैं वैसे ही उनका लोप हो जाता है। इसके विपरीत कुछ प्रत्यक्षीकरण दीर्घकाल तक चालू बने रहते हैं। ये दीर्घकालीन प्रत्यक्षीकरण सरल मानसिक क्रियाओं (Mental Activities) की एक शृंखला के समान बन जाते हैं। रस्सी पर चलने, साइकिल पर सन्तुलन बनाये रखने एवं नाना प्रकार के शारीरिक कौशल के खेलों में प्रत्यक्षीकरण की शृंखलाएँ रहती हैं जिनमें कि एकता (Unity) एवं अविच्छिन्नता (Continuity) सम्बन्धित रहती है।

(२) ध्यान (Attention)—प्रत्यक्षीकरण के लिये ध्यान एवं मानसिक स्फूर्ति की बहुत ही आवश्यकता है। जब व्यक्ति किसी वस्तु पर अपना ध्यान न केन्द्रित करेगा तब तक वह उस वस्तु का प्रत्यक्षीकरण (Perception) नहीं कर सकता है। जब बिल्ली चूहे का प्रत्यक्षीकरण करना चाहती है तो वह अपने कानों एवं आँखों को पहले से ही समायोजित कर लेती है।

(३) अनुभव से सीखना (Learning by Experience)—प्रत्यक्षीकरण में प्राणी को अनुभव से सीखने का अवसर प्राप्त होता है। जब कोई व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है तो उसे ज्ञान प्राप्त होता है। वह मानसिक संस्कार (Mental Disposition) के रूप में उसके मस्तिष्क में प्रविष्ठ बना रहता है और इसी मानसिक संस्कार के आधार पर वह नवीन वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है। इस प्रकार उसे अनुभव द्वारा सीखने का अवसर मिलता है।

(४) प्रयत्न को बदलने के साथ दृढ़ता (Persistency with Varied Efforts)—प्रत्यक्षीकरण (Perception) में परिवर्तनशील प्रयत्न एवं दृढ़ता दोनों की आवश्यकता है। प्रायः देखा गया है कि जब कोई पशु किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है तो वह नाना प्रकार की गतियां करता है और अन्त में प्रत्यक्षीकरण करने में सफल हो जाता है। इस प्रकार प्रत्यक्षीकरण में प्रयत्न एवं दृढ़ता दोनों की आवश्यकता है।

(५) परिवर्तनशील परिस्थितियों से स्वतन्त्र समायोजन (Free Adaptation to Varying Conditions)—कभी-कभी वातावरण में परिस्थितियाँ अथवा उत्तेजनायें अपनी दूरी, स्थिति एवं दशा बदलती रहती हैं। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अथवा पशु को उनका प्रत्यक्षीकरण करने के लिये अपनी गतियों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वतः न्त्रतापूर्वक समायोजन करना पड़ता है। उदाहरण के लिये जब एक जंगली पशु शिकार पर झपटता है तो उसे अपनी गतियों को परिवर्तनशील उत्तेजनाओं से स्वतन्त्रतापूर्वक समायोजन करना पड़ता है।

(६) प्रत्यक्षीकरण में पुनः स्मरण का स्थान (Reproduction in Perception)—प्रत्यक्षीकरण (Perception) में साहचर्य (Association) निहित रहता है। दूसरे शब्दों में जब व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण करता है तो उसे उससे सम्बन्धित अन्य बातों का पुनः स्मरण हो आता है। उदाहरण के लिये जब हम एक आम का प्रत्यक्षीकरण करते हैं तो हमें उसके मीठेपन का पुनः स्मरण होता है।

प्रत्यक्षीकरण में संलग्न प्रक्रियायें
(Process Involved in Perception)

प्रत्यक्षीकरण एक जटिल मानसिक प्रक्रिया (Complex Mental Process) है। किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण में अनेक मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं। ये प्रक्रियाएँ निम्नलिखित हैं :—

(१) ग्राहक प्रक्रियायें (Receptor Process)—जब व्यक्ति के सामने कोई उत्तेजना उपस्थिति होती है तो तत्सम्बन्धी ज्ञानेन्द्रिय उसको ग्रहण करती है परिणामस्वरूप ज्ञानेन्द्रिय में स्नायुप्रवाह (Nerve Impulse) उत्पन्न होता है जो कि ज्ञानवाही नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क के वृहन्मस्तिष्कीय बल्क ज्ञानवाही क्षेत्र (Sensory Area of the Cerebral Cortex) में चला जाता है जिससे व्यक्ति को उत्तेजक का प्रत्यक्षीकरण होता है। प्रक्रिया को ग्राहक प्रक्रिया (Receptor Process) कहते हैं। प्रत्यक्षीकरण किसी भी उत्तेजना का क्यों न हो सबमें ज्ञानेन्द्रियों (Sense-Organs) की क्रियायें संलग्न रहती हैं। संक्षेप में प्रत्यक्षीकरण में ग्राहक प्रक्रियाओं का होना आवश्यक है।

(२) प्रतीकात्मक प्रक्रियायें (Symbolic Process)—प्रत्यक्षीकरण में वृहन्मस्तिष्कीय बल्क क्षेत्र में किसी उत्तेजना के स्नायु प्रवाहों के पहुँचने पर उससे सम्बन्धित साहचर्य-क्षेत्र में भी एक प्रकार प्रतिक्रिया होने लगती है जिसे हम प्रतीकात्मक प्रक्रिया (Symbolic Process) कहते हैं। व्यक्ति उत्तेजक से सम्बन्धित जो भी गत अनुभव (Past Experiences) प्राप्त करता है वे प्रतिमाओं (Images) के रूप में साहचर्य क्षेत्र में चिन्ह (Traces) के रूप में उपस्थित रहते हैं। उत्तेजना के उपस्थित होने पर जब वृहन्मस्तिष्कीय-क्षेत्रों में प्रतिक्रिया होने लगती है तो उनसे सम्बन्धित साहचर्य-क्षेत्र भी सक्रिय हो जाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं एवं उपस्थित उत्तेजना के प्रति अनेक प्रतिमायें सजग (Conscious) हो जाती हैं। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति बगीचे में टहलता हुआ गुलाब का फूल देखता है। इसके पहिले उसने गुलाब की सुगन्ध तथा मोहकता के सम्बन्ध में जो अनुभव किये थे अब वे प्रतिमा के रूप में सजग हो उठते हैं। प्रत्यक्षीकरण में होने वाली इन प्रतिक्रियाओं को प्रतीकात्मक प्रक्रियायें कहते हैं।

(३) भावात्मक प्रक्रियायें (Effective Pzocesses)—ग्राहक एवं प्रतीकात्मक क्रियाओं के साथ-साथ प्रत्यक्षीकरण में भावात्मक प्रक्रियायें भी संलग्न रहती हैं। किसी वस्तु, व्यक्ति या घटना का प्रत्यक्षीकरण या तो प्रिय अनुभव होता है या अप्रिय। उदाहरण के लिये किसी सुन्दर गीत, या सुन्दर तस्वीर का प्रत्यक्षीकरण प्रिय लगता है और इसके विपरीत कुरूप स्त्री, डरावनी आवाज, भयानक तस्वीर का प्रत्यक्षीकरण अप्रिय लगता है। किसी वस्तु, या व्यक्ति या घटना के प्रति प्रियता या अप्रियता का भाव गत अनुभव (Past Experience) पर भी आधारित होता है। प्रियता एवं अप्रियता के अतिरिक्त तटस्थता का भाव (Feeling of Neutrality) भी प्रत्यक्षीकरण में संलग्न रहता है।

(४) सौन्दर्यानुभूति की प्रक्रियायें (Aesthetic Processes)—किन्हीं-किन्हीं उत्तेजनाओं के प्रत्यक्षीकरण में सौन्दर्यानुभूति की प्रक्रिया भी संलग्न रहती है। सौन्दर्यानुभूति के निम्नलिखित दो आधार होते हैं—(१) भावात्मक प्रक्रियायें (Effective Processes) तथा (२) पूर्वानुभूति का प्रत्याह्वान (Recall of Past Experience)। प्रायः जो वस्तु हमें प्रिय लगती है वह सुन्दर भी प्रतीत होती है। इसके विपरीत जो वस्तु अप्रिय लगती है वह कुरूप प्रतीत होती है और जिस वस्तु में तटस्थता का भाव रहता है उसमें सुन्दरता या कुरूपता की कोई अनुभूति नहीं होती बल्कि उसके प्रति तटस्थता रहती है। वर्तमान वस्तु के प्रति पहले प्रियता, अप्रियता या तटस्थता की अनुभूति हुई है उसके आधार पर भी वह वस्तु सुन्दर कुरूप या तटस्थता प्रतीत होती है।

(५) इकाईकरण की प्रक्रियायें (Unification Processes)—प्रत्यक्षीकरण में इकाईकरण की प्रक्रियायें भी संलग्न रहती हैं। व्यक्ति किसी भी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण अलग-अलग हिस्सों में नहीं करता बल्कि वह इकाई के रूप में प्रत्यक्षीकरण करता है। उदाहरण के लिये व्यक्ति गुलाब के फूल को कलियों, पत्तियों एवं डंठल के रूप में नहीं देखता बल्कि वह गुलाब के फूल को एक पूर्ण इकाई के रूप में देखता है। किसी वस्तु को उसके अलग-अलग हिस्सों में न देखकर एक इकाई के रूप में देखने की प्रक्रिया को ही इकाईकरण प्रक्रिया (Process of Unifica tion) कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यक्षीकरण के निर्धारक तत्व
(Determinants of Perception)

प्रत्यक्षीकरण पर विचार करते हुए हमारे समक्ष यह प्रश्न उठता है कि प्रत्यक्षीकरण कैसे होता है। दूसरे शब्दों में वे कौन-कौन से तत्व हैं जो प्रत्यक्षीकरण में घटित होते हैं। इन तत्वों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। एक प्रकार के वे तत्व हैं तो सभी प्रकार के प्रत्यक्षीकरण में होते हैं इन्हें हम प्रायः रचनात्मक तत्व (Structural Factors) कहते हैं तथा दूसरे प्रकार के वे तत्व हैं जो विभिन्न प्रकार के प्रत्यक्षीकरण में प्रथक्-प्रथक् कार्य करते हैं। जिन्हें हम प्रत्यक्षीकरण के नियम (Laws of Perception) या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्व (Factors involved in the organization) के नाम से सम्वोधित करते हैं। इस प्रश्न में हमारा सम्वन्ध विशेषरूप से प्रथम प्रकार के तत्वों से है। ये तत्व निम्न-लिखित हैं :—

(१) उत्तेजना (Stimulus)—प्रत्यक्षी के निर्धारक के रूप में उत्तेजना का सबसे पहले स्थान होता है क्योंकि उत्तेजना द्वारा ही प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और उत्तेजना का ही प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। सही प्रत्यक्षीकरण के लिये उत्तेजना का स्वरूप स्पष्ट होना अति आवश्यक है।

(२) ज्ञानेद्रियाँ (Sense Organs)—उत्तेजना के बाद प्रत्यक्षीकरण में ज्ञानेन्द्रियों का स्थान आता है क्योंकि ज्ञानेन्द्रियाँ ही उत्तेजना को ग्रहण करती हैं। यदि किसी व्यक्ति की किसी ज्ञानेन्द्रिय में दोष पाया जाता है तो वह इस ज्ञानेन्द्रिय से सम्बन्धित उत्तेजना का सही प्रत्यक्षीकरण नहीं कर सकता है। यदि किसी व्यक्ति को जोनडिस बीमारी हो जाती है तो उसे प्रत्येक वस्तु अपने वास्तविक रंग में न दिखलाई देकर पीली दिखलाई देती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण करने के लिये ज्ञानेन्द्रियों तथा आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा आदि का होना अति आवश्यक है।

(३) स्नायु मण्डल (Nervous System)—प्रत्यक्षीकरण के लिये उत्तेजना तथा ज्ञानेन्द्रियों के बाद स्नायु-मण्डल का होना आवश्यक होता है। जब किसी उत्तेजना द्वारा ज्ञानेन्द्रियाँ उत्तेजित होती हैं तो इनमें उत्पन्न स्नायु प्रवाह (Nerve Impluse) ज्ञानवाही नाड़ियों के द्वारा वृहन्मस्तिष्कीय बल्क क्षेत्रों (Cerebral Cortex Areas) में पहुँचाता है एवं मस्तिष्क के विभिन्न ज्ञानवाही क्षेत्रों की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप प्रत्यक्षीकरण होता है। यदि किसी व्यक्ति के वृहन्मस्तिष्कीय बल्क का कोई ज्ञानवाही क्षेत्र विनष्ट हो जाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तो उसे उस क्षेत्र से सम्बन्वित उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण नहीं होता है। उदाहरण के लिये श्रवण क्षेत्र के विनष्ट हो जाने पर व्यक्ति को आवाज का प्रत्यक्षीकरण नहीं हो सकता है।

(४) गत अनुभव (Past Experience)—किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण करने के लिये यह आवश्यक है कि व्यक्ति को उसके विषय में कुछ ज्ञान हो। दूसरे शब्दों में प्रत्यक्षीकरण के लिए गत अनुभव आवश्यक है। उदाहरण के लिये अमरूद को लीजिये। मान लीजिये किसी व्यक्ति ने अमरूद कभी नहीं देखा, उसे यह नहीं मालूम कि अमरूद खट्टा होता है या मीठा, वह यह भी नहीं जानता कि अमरूद कोई वस्तु होती है। अमरूद के सम्बन्ध में गत अनुभव के अभाव में उसे केवल अमरूद की संवेदना होगी न कि उसे उसको प्रत्यक्षीकरण होगा। क्योंकि प्रत्यक्षीकरण करने में संवेदना में अर्थ का जोड़ना आवश्यक है व्यक्ति अर्थ तभी जोड़ सकता है जबकि उसे प्रत्यक्षीकरण की जाने वाली वस्तु के सम्बन्ध में ज्ञान हो।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में प्रत्यक्षीकरण वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित करने वाले वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, घटनाओं तथा परिस्थितियों अर्थात् उत्तेजनाओं का तत्कालीन ज्ञान प्राप्त करता है। संवेदना और प्रत्यक्षीकरण में मुख्य अन्तर यह है कि संवेदना में तो व्यक्ति को केवल वस्तु, घटना, या परिस्थिति का आभास मिलता है किन्तु प्रत्यक्षीकरण में उसका पूर्ण ज्ञान हो जाता है। **प्रत्यक्षीकरण की विशेषतायें**—(१) एकता एवं अविच्छिन्नता, (२) ध्यान, (३) अनुभव से सीखना, (४) प्रयत्न को बदलने के साथ दृढ़ता, (५) परिवर्तनशील परिस्थितियों से स्वतन्त्र समायोजन, तथा प्रत्यक्षीकरण में पुनः स्मरण का स्थान। **प्रत्यक्षीकरण में संलग्न प्रक्रियायें**—(१) ग्राहक प्रक्रियायें, (२) प्रतीकात्मक प्रक्रियायें, (३) भावात्मक प्रक्रियायें, (४) सौन्दर्यानुभूति की प्रक्रियायें तथा (५) एकीकरण की प्रक्रियायें। **प्रत्यक्षीकरण के निर्धारक तत्व**—(१) उत्तेजना, (२) ज्ञानेन्द्रियाँ (३) स्नायुमण्डल तथा (४) गत अनुभव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१६
प्रत्यक्षीकरण के नियम
[Laws of Perception]

प्रश्न संख्या—१६

प्रत्यक्षीकरण में आकृति एवं पृष्ठभूमि का क्या महत्व है ? प्रत्यक्षीकरण के नियमों या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्वों की विवेचना कीजिये।

What is the importance of figure and ground in perception ? Discuss the laws of perception or factors involved in the organization of perception.

भूमिका (Introduction)

हम जानते हैं कि प्रत्यक्षीकरण एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति पर्यावरण में उपस्थित किसी वस्तु, या घटना या परिस्थिति का तत्कालिक ज्ञान प्राप्त करता है। नित्यप्रति के अनुभव के आधार पर वस्तु, घटना या परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण के सम्बन्ध में हमारे समक्ष अनेकों प्रश्न उठते हैं जैसे क्यों कोई व्यक्ति किसी वस्तु का शीघ्र प्रत्यक्षीकरण कर लेता है ? कोई व्यक्ति उस वस्तु की ओर ध्यान भी क्यों नहीं देता है ? क्यों कुछ उत्तेजनाओं की विशेष स्थिति होने के कारण अपने वास्तविक रूप में प्रत्यक्षीकरण नहीं की जाती है बल्कि एक नवीन रूप ग्रहण कर लेती है ? क्यों एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को मनुष्य के रूप में न देखकर उसको मित्र, शत्रु, धर्मात्मा, पापी, सज्जन या दुर्जन के रूप में देखता है ? क्यों हम एक स्थान पर विशेष प्रकार से स्थित विभिन्न उत्तेजनाओं का अलग अलग प्रत्यक्षीकरण न करके सामूहिक रूप से प्रत्यक्षीकरण करते हैं ? क्यों हम विभिन्न उत्तेजनाओं के बीच से खाली (Gap) स्थान को नहीं देखते हैं ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इत्यादि इन सब प्रश्नों से स्पष्ट पता चलता है कि ऐसे कुछ तत्व या नियम अवश्य होंगे जो हमारे प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करते हैं। प्रत्यक्षीकरण को प्रभावित करने वाले तत्वों या नियमों को ही हम प्रत्यक्षीकरण के नियम (Laws of Perception) या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्व (Factors involved in the organization of Perception) कहते हैं। अब हम इस प्रश्न में प्रत्यक्षीकरण के नियमों या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्वों को अच्छी तरह समझने के लिए प्रत्यक्षीकरण में आकृति एवं पृष्ठभूमि का महत्व (Role of Figure and Ground in Perception) प्रस्तुत करेंगे और इसके उपरान्त प्रत्यक्षीकरण के नियमों या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्वों (Laws of Perception or Factors involved in the organization of Perception) को स्पष्ट करेंगे।

प्रत्यक्षीकरण में आकृति एवं पृष्ठभूमि का महत्व
(Role of Figure and Ground in Perception)

[अ] बिना आधार के हम आवृत्ति का प्रत्यक्षीकरण नहीं कर सकते हैं

हम किसी वस्तु या परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण शून्य में नहीं करते बल्कि उसका कुछ न कुछ आधार अवश्य रहता है। बिना आधार (Ground) के हम किसी आकार (Figure) का प्रत्यक्षीकरण नहीं कर सकते हैं। जिस उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण करते हैं उसे आकार या आकृति (Figure) कहा जाता है और जिस आधार पर प्रत्यक्षीकरण होता है उसे आधारभूमि या पृष्ठभूमि (Background) कहते हैं। उदाहरण के लिए चन्द्रमा का प्रत्यक्षीकरण आकाश की पृष्ठभूमि में होता है और बिजली का प्रत्यक्षीकरण बादल की पृष्ठभूमि में होता है। इसी प्रकार टेबुल पर रक्खी हुई पुस्तक का प्रत्यक्षीकरण टेबुल की पृष्ठभूमि में होता है और जमीन पर रक्खी हुई टेबुल का प्रत्यक्षीकरण जमीन की पृष्ठभूमि में होता है। जब हमें पुस्तक का प्रत्यक्षीकरण होगा तो टेबुल का भी और जब हमें टेबुल का प्रत्यक्षीकरण होगा तो जमीन का भी। इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी वस्तु, परिस्थिति या घटना के प्रत्यक्षीकरण में आकृति (Figure) तथा पृष्ठभूमि (Background) दोनों ही का समावेश रहता है।

[ब] आकृति एवं पृष्ठभूमि के मनोवैज्ञानिक महत्व का उल्लेख सर्वप्रथम एडगर रूबिन ने किया

श्री एडगर रूबिन (Edger Rubin) ने सर्वप्रथम आकृति या आकार तथा पृष्ठभूमि का महत्व प्रस्तुत किया। यद्यपि एडगर रूबिन के पूर्व भी आकृति एवं पृष्ठभूमि का विचार चित्रकला में किया जाता था किन्तु उनके मनोवैज्ञानिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

महत्व को प्रस्तुत करने का श्रेय सबसे पहिले रूबिन महादय को ही प्राप्त हुआ। रूबिन महोदय का कथन है कि आकृति (Figure) पृष्ठभूमि (Background) के आगे फैली हुई जान पड़ती है। किन्तु पृष्ठभूमि आकृति के पीछे फैली हुई दिखलाई पड़ती है। आकृति तथा पृष्ठभूमि में अन्तर प्रस्तुत करते हुए श्री रूबिन ने कहा है कि आकृति की एक निश्चित रूपरेखा होती है किन्तु पृष्ठभूमि अपेक्षाकृत अनिश्चित होती है। आकृति पृष्ठभूमि की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली, सार्थक (Meaningful), स्पष्ट (Clear), पूर्ण (Complete), आकारयुक्त (Concrete) तथा रंगयुक्त (Colourful) होती है। इन्हीं गुणों के कारण पृष्ठभूमि की अपेक्षा आकृति हमारी ज्ञानेन्द्रियों को पहले और अधिक प्रभावित करती है और अधिक दिन तक हमारी स्मृति में बनी रहती है।

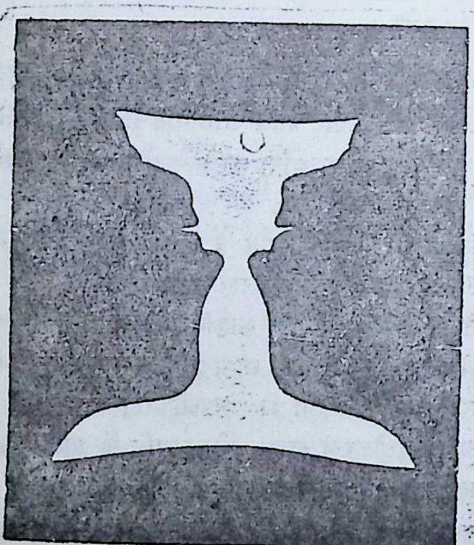

चित्र संख्या १२

[स] आकृति एवं पृष्ठभूमि का प्रत्यक्षीकरण केवल दृष्टि तक सीमित नहीं होता वरन् अन्य ज्ञानेन्द्रियों में भी पाया जाता है

प्रायः हम लोग यह समझ बैठते हैं कि आकृति और पृष्ठभूमि का प्रत्यक्षीकरण केवल दृष्टि तक ही सीमित रहता है किन्तु हमारा यह विचार गलत है। वास्तविकता यह है कि आकृति एवं पृष्ठभूमि का प्रत्यक्षीकरण दृष्टि को ही नहीं बल्कि अन्य ज्ञानेन्द्रियों को भी होती है। अपने प्रयोगों के आधार पर वरनन (Vernon) ने बताया कि ध्वनि के प्रत्यक्षीकरण आकृति (Figure)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा पृष्ठभूमि (Back-ground) दोनों ही तत्व विद्यमान रहते हैं। उदाहरण के लिये यदि किसी स्थान में लगातार एक ही तरह की मन्द आवाज हो रही हो और वहाँ कोई व्यक्ति अचानक बोल उठे तो हमको उस व्यक्ति की जोर की आवाज का आकृति के रूप में प्रत्यक्षीकरण होगा। संगीत में वाद्य यन्त्र से निकला हुआ लयात्मक स्वर (Tone) का प्रत्यक्षीकरण आकृति के रूप में एवं वाद्य यन्त्र से निकले हुए अन्य अधिस्वर (Over-tones), जिनकी सहायता से राग (Melody) की उत्पत्ति होती है, का पृष्ठभूमि के रूप में प्रत्यक्षीकरण होगा। इसी प्रकार आकृति एवं पृष्ठभूमि का प्रत्यक्षीकरण अन्य ज्ञानेन्द्रियों में भी प्राप्त होता है। इन सभी उदाहरणों से पता चलता है कि प्रत्यक्षीकरण में आकृति एवं पृष्ठभूमि दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है।

[द आकृति एवं पृष्ठभूमि के महत्व पर विचार करते हुये गेस्टाल्टवादियों ने यह स्पष्ट करने की चेष्टा की है क्यों हम किसी वस्तु का आकृति के रूप में प्रत्यक्षीकरण करते हैं।

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण में आकृति (Figure) तथा पृष्ठभूमि (Background) दोनों विद्यमान रहते हैं। अब हमारे सामने यह प्रश्न उठता है कि आखिर हम क्यों किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण आकृति के रूप में करते हैं। गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों (Gestalt Psychologists) ने आकृति तथा पृष्ठभूमि के महत्व पर विचार करते हुए इस प्रश्न का उत्तर देने की चेष्टा की है। प्रसिद्ध गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिक वर्दीमियर (Wertheimer) का कथन है कि जब दृष्टि क्षेत्र (Visual field) में अनेक उत्तेजनायें आती हैं तब उनमें से कुछ हमें अलग पूर्ण इकाई के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं और कुछ इस पूर्ण इकाई की पृष्ठभूमि के रूप में दिखाई देती हैं अब हमारे समक्ष एक दूसरा प्रश्न उठता है कि क्यों कुछ उत्तेजनायें आपस में मिलकर एक पूर्ण इकाई का रूप धारण कर लेती हैं और अन्य उत्तेजनायें पृष्ठभूमि में चली जाती हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने में वर्दीमियर के अध्ययन उल्लेखनीय हैं। उन्होंने अपने अध्ययनों के आधार पर उन तत्वों या नियमों (Factors or Laws) की चर्चा की है जिनके आधार पर उत्तेजनायें परस्पर मिलकर एक पूर्ण इकाई (Unit) का रूप धारण कर लेती हैं। चूँकि ये तत्व या नियम प्रत्यक्षीकरण तथा प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्वों के रूप में काम करते हैं इसीलिये उन्हें प्रत्यक्षीकरण के नियम (Laws of Perception) या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Factors involved in the organization of Perception) कहते हैं। ये तत्व या नियम कौन-कौन से हैं इस पर हम प्रथक् रूप से प्रकाश डालेंगे।

प्रत्यक्षीकरण के नियम या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्व

(Laws of Perception of Factors involved in the organization of Perception)

[अ] प्रत्यक्षीकरण के नियमों का प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्वों का तीन भागों में विभाजन

मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षीकरण के नियमों या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्वों को निम्नलिखित तीन भागों में विभाजित किया है :—

(१) बाह्य तत्व (External or Peripheral Factors)

(२) आन्तरिक या केन्द्रीय तत्व (Internal or Central Factors)

(३) प्रोत्साहक कारक (Reinforcing Factors)।

[ब] उक्त तीनों भागों के अन्तर्गत आने वाले नियमों या तत्वों का तालिका द्वारा प्रस्तुतीकरण।

बाह्य तत्व (External or Peripheral Factors)	आन्तरिक या केंद्रीय तत्व (Internal or Central Factors)	प्रोत्साहक तत्व (Reinforcing Factors)
(१) समग्रता (Wholes)	(१) परिचय (Familiarity)	(१) उभार (Pregnance)
(२) समीपता (Proximity)	(२) मनोवृत्ति (Mental Set)	(२) सुन्दर आकृति (Good figure)
(३) समानता (Similarity)	(३) चित्तवृत्ति (Mood)	
(४) आच्छादन (Closure)	(४) दृष्टिकोण (Attitude)	
(५) संगति (Symmetry)	(५) प्रेरणायें (Motivation)	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) सजातीयता (Homogeneity)
(७) निरन्तरता (Continuity)

(६) सामाजिक आदर्श (Social Norms)
(७) सामयिक सम्बन्ध (Causal Relations)
(८) गत अनुभव (Past Experience)

[१] बाह्य तत्व (External or Peripheral Factors)

प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले बाह्य तत्व निम्नलिखित हैं :—

(१) **समग्रता** (Wholes)—गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाला सबसे पहला नियम या तत्व है 'समग्रता का नियम' (Law of Wholes)। इस नियम के अनुसार हम समग्र परिस्थिति का एक साथ प्रत्यक्षीकरण करते हैं। संवेदनाओं का समूह प्राणी के मस्तिष्क पर एक संगठित आकृति (Organized Figure) के रूप में प्रभाव डालता है। जर्मन भाषा में इस संगठित आकृति को ही गेस्टाल्टन (Gestalten) कहते हैं। समग्रता के नियम को सिद्ध करने के लिए गेस्टाल्टवादियों ने अनेक भ्रमों या विपर्ययों (Illusions) का सहारा लिया है। नीचे हम इस नियम को सिद्ध करने के लिये सास बहू का भ्रम चित्र सहित प्रस्तुत कर रहे हैं :—

चित्र संख्या १३—सास बहू का भ्रम

ऊपर दिये हुये चित्र को आप ध्यान से देखिये। शायद आपको एक युवा स्त्री का चेहरा दिखलाई पड़ रहा होगा जिसमें उसका एक कान, गर्दन तथा आँखों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की बरौनी दिखलाई पड़ रही होंगी। परन्तु यदि आप युवा स्त्री के स्थान पर बूढ़ी सास को देख रहे होंगे तो युवा स्त्री के दिखलाई देने वाले उच्च सभी अंगों का अर्थ बदल जायगा। पहले जो बहू की गर्दन थी वह अब सास के मुँह तथा ठोढ़ी के रूप में दिखाई देने लगी। इस चित्र से यह सिद्ध होता है कि चित्र के विभिन्न अंगों के गुण समग्रता के गुणों पर आश्रित होते हैं और समग्र के आधार पर ही विभिन्न अंगों के गुणों का अर्थ लगाया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने में समग्रता का नियम अति महत्वपूर्ण होता है।

(२) समीपता (Proximity or Nearness)—जो वस्तुयें अर्थात् उत्तेजक स्थान या काल में एक दूसरे के समीप हुआ करती हैं वे इकाई के रूप में शीघ्र ही प्रत्यक्षीकरण कर ली जाती हैं। इसके विपरीत जो वस्तुयें दूर-दूर एवं अनियमित होती हैं उनका प्रत्यक्षीकरण सरलता से नहीं होता है।

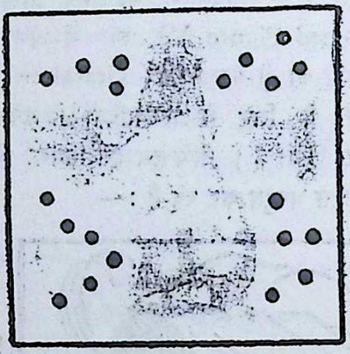

चित्र नं० १४—समीपता का नियम

(३) समानता (Similarity)—जब उत्तेजनाओं में समानता होती है तो उनका प्रत्यक्षीकरण शीघ्र ही कर लिया जाता है। इसके विपरीत जब उत्तेजनाओं में असमानता होती है तो उनका प्रत्यक्षीकरण आसानी से नहीं हो पाता है। यदि किसी कागज में बूँदें और छोटे-छोटे त्रिभुज पास-पास बनें हों तो या तो हम बूँदों का प्रत्यक्षीकरण एक साथ करेंगे या त्रिभुज का।

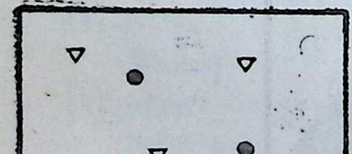

चित्र संख्या १५—समानता का नियम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) अच्छादन (Closure)—यदि व्यक्ति के सम्मुख कोई ऐसी आकृति प्रस्तुत की जाय, जिसका कोई अङ्ग अपूर्ण है तो वह अपूर्णता की ओर ध्यान न देकर पूर्ण रूप से देखेगा। नीचे के चित्र में एक तारा (Star) दिया हुआ है जिसमें रेखायें अपूर्ण हैं। किन्तु हम इस तारे की इस अपूर्णता को न देखकर पूर्ण तारे का प्रत्यक्षीकरण करते हैं। इस उदाहरण में उभार (Pregnance) तथा अच्छी आकृति (Good Figure) के नियम भी सिद्ध होते हैं क्योंकि उभार तथा अच्छी आकृति के कारण भी हम अपूर्णता का प्रत्यक्षीकरण न कर पूर्ण आकृति का प्रत्यक्षीकरण करते हैं।

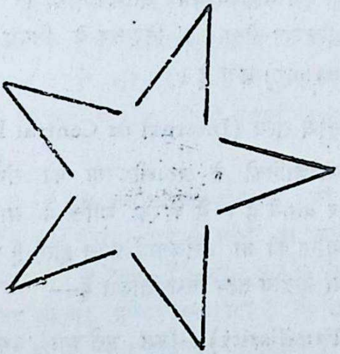

चित्र संख्या १६—अच्छादन का नियम

(५) निरन्तरता (Continuity)—जिन उत्तेजनाओं (Stimulus) में निरन्तरता अथवा अविच्छिन्नता सन्निहित रहती है, वे इकाई के रूप में सरलता से प्रत्यक्षीकरण कर ली जाती हैं। उदाहरण के लिये जब समस्त बिन्दु मिलकर एक रेखा का निर्माण कर देते हैं तो उन सबका भली-भाँति प्रत्यक्षीकरण हो जाता है।

(६) संगति (Symmetry)—जब विभिन्न उत्तेजनाओं की स्थिति एक संगति (Symmetry) के रूप में होती है तो उनका प्रत्यक्षीकरण एक साथ हो जाता है। मनोवैज्ञानिकों ने समीपता एवं समानता से संगति को अधिक महत्व दिया है।

(७) सजातीयता (Homogeneity)—प्रत्यक्षीकरण के निर्धारकों में सजातीयता के नियम के अनुसार एक सी तीव्रता वाले अङ्गों का सङ्गठित रूप से प्रत्यक्षीकरण होता है। नीचे दिये हुये चित्र के (क) भाग में दो वृत्त स्पष्ट दिखलाई देते हैं और (ख) भाग में दोनों वृत्तों के मध्य एक सा रंग होने के कारण वही दो वृत्त संगठित रूप में दो वृत्तों के स्थान पर एक छल्ला के रूप में दिखाई पड़ते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

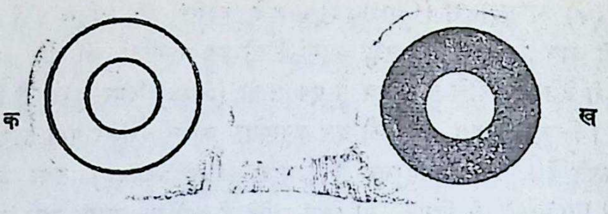

चित्र संख्या १७—सजातीयता का नियम

(८) निरन्तरता (Continuity)—प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजनाओं की निरन्तरता का भी महत्व होता है। यदि विभिन्न उत्तेजक लगातार हमारे सम्मुख आते हैं तो उनका एक साथ प्रत्यक्षीकरण होता है। निरन्तर के नियम के आधार पर सातत्य नियम (Law of Constancy) बना है।

[२] आन्तरिक या केन्द्रीय तत्व (Internal or Central Factors)

गैस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले कुछ आन्तरिक या केन्द्रीय तत्व बताये हैं। ये कारक व्यक्ति में मानसिक संस्कार के रूप होते हैं जिनके कारण व्यक्ति को जो उत्तेजनायें प्राप्त होती हैं उनको संगठित रूप में देखता है। ये आन्तरिक या केन्द्रीय तत्व निम्नलिखित हैं—

(१) परिचय (Familiarity)—जिस उत्तेजना, वस्तु या व्यक्ति से किसी व्यक्ति का पहिले से परिचय होता है तो वह उसका शीघ्र तथा आसानी से प्राप्त कर लेता है। अनेक बच्चों में माँ अपने बच्चे का पहले प्रत्यक्षीकरण कर लेती है, अनेक व्यक्तियों में प्रेमिका अपने प्रेमी का प्रत्यक्षीकरण शीघ्र कर लेती है, अनेक चित्रों में व्यक्ति उस चित्र का पहले प्रत्यक्षीकरण करता है जिस चित्र से उसका परिचय होता है। इस प्रकार प्रत्यक्षीकरण में एक बहुत महत्वपूर्ण कारक है।

(२) मनोवृत्ति (Mental Set)—प्रत्यक्षीकरण का दूसरा आन्तरिक या केन्द्रीय तत्व व्यक्ति की मनोवृत्ति होती है। वह उसी के अनुकूल किसी उत्तेजना की पूर्ण इकाई का प्रत्यक्षीकरण करना है। चूँकि भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की मनोवृत्ति भिन्न-भिन्न होती है इसलिये उनका किसी उत्तेजना का प्रत्यक्षीकरण भिन्न-भिन्न होता है। सामान्य रूप से मनोवृत्ति दो प्रकार की होती है—(१) अभ्यासजन्य (Habitual) तथा तात्कालिक या क्षणिक (Immediate or Momentary)। जैसा कि नाम से विदित होता है कि अभ्यासजन्य मनोवृत्ति आदत से उत्पन्न होती है। अपनी प्रथक् आदतों के कारण दो विद्वान् किसी तथ्य या परिस्थिति को दो दृष्टिकोण से देखते हैं। शराबी शराब की बोतल को ही देखकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शराब का प्रत्यक्षीकरण करने लगता है। तात्कालिक या क्षणिक मनोवृत्ति किसी मौजूदा परिस्थिति से उत्पन्न होती है। यदि किसी समय किसी व्यक्ति की मनोवृत्ति किसी चीज को देखने या सुनने या रसास्वादन करने की होती है तो बिना उस चीज के ही वह उस चीज का प्रत्यक्षीकरण करता है। प्रेमिका यदि किसी स्थान पर अपने प्रेमी की प्रतीक्षा कर रही होती है तो वह कभी-कभी दूर से आते हुये दूसरे व्यक्ति को अपना प्रेमी समझ बैठती है। प्रायः मनोवृत्ति के कारण सभी को इस प्रकार के गलत प्रत्यक्षीकरण हो जाते हैं।

(३) चित्तवृत्ति (Mood)—प्रत्यक्षीकरण में व्यक्ति की चित्तवृत्ति का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। जिस समय व्यक्ति की जैसी चित्तवृत्ति होती है उस समय वह उसी के अनुकूल चीजों का प्रत्यक्षीकरण करता है। कोई व्यक्ति जब क्रोध की अवस्था में होता है तो अपनी स्त्री तथा पुत्र को दुःख का कारण समझता है। किन्तु जब वह हर्ष की अवस्था में होता है तो दुश्मन तक को वह मित्र के रूप में प्रत्यक्षीकरण करता है।

(४) दृष्टिकोण (Attitude)—प्रत्यक्षीकरण करने में व्यक्ति के दृष्टिकोण का भी विशेष स्थान है। इसी कारण एक ही प्रकार की वस्तु को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण के लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से देखते हैं। उदाहरण के लिये किसी समारोह को देखकर एक धार्मिक पुरुष को यह दृष्टिगोचर होता है कि रामायण या किसी अन्य प्रकार का धार्मिक प्रवचन हो रहा है। यदि उस समारोह को एक राजनीतिज्ञ देखता है तो वह उसे ऐसा प्रतीत होता है कि कि किसी प्रसिद्ध नेता का भाषण हो रहा है।

(५) प्रेरणायें (Motivations)—प्रत्यक्षीकरण करने में प्रेरणाओं (Motivations) का बहुत ही प्रभाव पड़ता है। एक भूखे मनुष्य को केवल भोजन का ही शीघ्र प्रत्यक्षीकरण नहीं हो जाता है बल्कि यदि भोजन सम्बन्धी वार्तालाप हो तो वह भी उसे अच्छी लगती है। इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की काम-प्रवृत्ति (Sex Instinct) बहुत ही तीव्र हो गई हो तो वह नारियों के सुन्दर चित्रों, फिल्मी गानों का शीघ्र ही प्रत्यक्षीकरण कर लेता है। इस प्रकार प्रत्यक्षीकरण बहुत कुछ प्रेरणाओं पर आधारित होता है।

(६) सामाजिक आदर्श (Social Norms)—व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण के निर्धारण में समाज की संस्कृति तथा सामाजिक आदर्शों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। हिन्दू मन्दिर में पत्थर की मूर्ति का ईश्वर के रूप में प्रत्यक्षीकरण करते हैं इस प्रकार का प्रत्यक्षीकरण ईसाइयों तथा मुसलमानों को नहीं होता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७) सामयिक सम्बन्ध (Causal Relation)—प्रत्यक्षीकरण में सामयिक सम्बन्ध का भी प्रभाव पड़ता है। मान लीजिये किसी व्यक्ति को सुबह होते ही काने व्यक्ति का दर्शन हो गया और उस दिन किसी वजह से उसे खाना न प्राप्त हुआ तो यदि दूसरे दिन फिर उस काने व्यक्ति के दर्शन हो गये तो व्यक्ति उसको एक असगुन व्यक्ति के रूप में प्रत्यक्षीकरण करता है।

(८) गत अनुभव (Past Experience)—व्यक्ति अपने गत अनुभव के आधार पर किसी वस्तु का समग्र रूप में प्रत्यक्षीकरण करता है। उदाहरण के लिये यदि किसी शब्द के अक्षर अलग-अलग छपे हों तो हम उन अक्षरों को अलग-अलग नहीं पढेंगे बल्कि उन्हें एक पूर्ण शब्द के रूप में पढेंगे। उदाहरण के लिए किसी कागज पर अग्रलिखित अक्षर छपे हुये हैं-शि, क्षा, ल, य। इन अक्षरों के सामने आते ही हम शि, क्षा, ल, य के रूप में न पढ़कर इन्हें समग्र रूप में पढेंगे अर्थात् 'शिक्षालय' शब्द के रूप में पढ़ेंगे।

[द] प्रोत्साहक तत्व (Reinforcing Factors)

गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने बाह्य तथा केन्द्रीय तत्वों के साथ-साथ प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले कुछ प्रोत्साहक तत्वों को भी बतलाया है। जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं:—

(१) उभार या सारगर्भिता (Pregnance)—जिस प्रकार हमारी वस्तुओं को समग्र रूप में देखने की प्रवृत्ति होती है इसी प्रकार हमारी छोटी मोटी असम्बद्धताओं पर ध्यान न देकर वस्तुओं को सारगर्भित तथा सम्बद्ध रूप में देखने की प्रवृत्ति होती है। उदाहरण के लिये प्रायः मकान चोकोर बनते हैं किन्तु यदि एक ओर की दीवार तिरछी होती है तो हम तिरछेपन पर ध्यान न देकर चोकोरपन का ही प्रत्यक्षीकरण करते हैं।

(२) सुन्दर आकृति (Good Figure)—यदि कोई उत्तेजना या वस्तु की आकृति सुन्दर होती है तो उसका प्रत्यक्षीकरण अन्य उत्तेजनाओं या वस्तुओं की अपेक्षा शीघ्र होता है। सुन्दर आकृति के परिणामस्वरूप व्यक्ति आकृति की अपूर्णता की ओर ध्यान नहीं देता है वरन् वह पूर्ण इकाई के रूप में देखता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सुन्दर आकृति प्रत्यक्षीकरण का एक बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि प्रत्यक्षीकरण में आकृति तथा पृष्ठभूमि का अत्यधिक महत्व है। बिना आधार या पृष्ठभूमि के हम आकार या आकृति का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यक्षीकरण नहीं कर सकते हैं। प्रत्यक्षीकरण के नियम या प्रत्यक्षीकरण को संगठित करने वाले तत्व निम्नलिखित हैं—[अ] बाह्य तत्व—(१) समग्रता, (२) समीपता, (३) समानता, (४) आच्छादन, (५) निरन्तरता, (६) संगति, (७) सजातीयता तथा (८) निरन्तरता [ब] आन्तरिक या केन्द्रीय तत्व—(१) परिचय, (२) मनोवृत्ति, (३) चित्तवृत्ति, (४) दृष्टिकोण, (५) प्रेरणायें, (६) सामाजिक आदर्श, (७) सामयिक सम्बन्ध तथा (८) गत अनुभव [स] प्रोत्साहक तत्त्व—(१) उभार या सारगर्भिता तथा (२) सुन्दर आकृति।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१७

भ्रम और विभ्रम

[Illusion and Hallucination]

प्रश्न संख्या—१७

भ्रम (या विपर्यय) एवं विभ्रम के स्वरूप एवं कारणों की विवेचना कीजिए। दोनों में अन्तर भी स्पष्ट कीजिए।

Discuss the nature and causes of an illusion and a Hallucination. Also show the difference between them.

भूमिका (Introduction)

प्रायः हम ग्रामीण तथा सामान्य स्तर के लोगों के मुँह से सुनते हैं कि अमुक व्यक्ति रस्सी को साँप समझकर भयभीत हो गया, अमुक व्यक्ति को अमुक स्थान में भूत या अमुक देवता दिखलाई दिया, अमुक स्त्री ने आज रात्रि को अपने मृतक प्रति को देखा, अमुक व्यक्ति को श्मशान में रोने की आवाज सुनाई दी आदि। ये सब गलत या अयार्थक प्रत्यक्षीकरण (False Perception) के उदाहरण हैं। इस प्रकार के प्रत्यक्षीकरण मनोविज्ञान के अन्तर्गत भ्रम या विपर्यय (Illusion) तथा विभ्रम (Hallucination) के नाम से सम्बन्धित किये जाते हैं। अब प्रश्न उठता है कि आखिर भ्रम और विभ्रम वास्तव में क्या हैं? इनके क्या कारण हैं? इन दोनों में क्या अन्तर है? इन बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये पहले हम भ्रम या विपर्यय का स्वरूप (Nature of Illusion) भ्रम के प्रकार (Kinds of Illusion) और भ्रम के कारण (Causes of Illusion) प्रस्तुत करेंगे, तत्पश्चात् विभ्रम का स्वरूप (Nature of Hallucination) एवं विभ्रम के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

कारण (Causes of Hallucination) स्पष्ट करेंगे और अन्त में भ्रम और विभ्रम में अन्तर (Difference between Illusion and Hallucination) बतायेंगे।

भ्रम अथवा विपर्यय का स्वरूप
(Nature of Illusion)

[अ] भ्रम संवेदना का गलत अर्थ लगाने वाली मानसिक प्रक्रिया है—

भ्रम अथवा विपर्यय (Illusion) वह मानसिक प्रक्रिया (Mental-process) है जिसमें संवेदना (Sensation) का गलत अर्थ लगाया जाता है। **दूसरे शब्दों में उत्तेजक अथवा परिस्थिति का गलत ज्ञान प्राप्त कराने वाली मानसिक प्रक्रिया को भ्रम अथवा विपर्यय कहते हैं।** अधिक स्पष्ट करने के लिए हम कह सकते हैं कि भ्रम अथवा विपर्यय अशुद्ध अथवा गलत प्रत्यक्षीकरण (False perception) है। वह कैसे ? हम देखते हैं कि प्रत्यक्षीकरण में परिस्थिति अथवा उत्तेजक (Stimulus) का वास्तविक ज्ञान होता है, परन्तु भ्रम अथवा विपर्यय में परिस्थिति अथवा उत्तेजक का वास्तविक ज्ञान नहीं होता है। यहाँ पर वास्तविक ज्ञान तो प्रत्यक्षीकरण (Perception) है ही, इसके साथ-साथ अवास्तविक ज्ञान भी प्रत्यक्षीकरण है क्योंकि ज्ञान अवास्तविक अवश्य है परन्तु यह भी प्रत्यक्षीकरण के परिणामस्वरूप प्राप्त हुआ है। भ्रम के अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। जैसे सड़क पर पड़ी हुई रस्सी का सर्प समझना, रात्रि को सबेरा समझना, अँधेरी रात्रि में खड़े हुए पेड़ के ठूँठ को भूत या कोई भयानक जानवर समझना आदि।

[ब] भ्रम एक क्षणिक अथवा अस्थायी प्रक्रिया है—

भ्रम अथवा विपर्यय (Illusion) प्रत्यक्षीकरण (Perception) की भाँति स्थायी न होकर क्षणिक अथवा अस्थायी मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है। हाँ कुछ भ्रम अवश्य स्थायी होते हैं। परन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। भ्रम एक स्थायी अथवा क्षणिक मानसिक प्रक्रिया इसलिये है कि ज्यों ही व्यक्ति को उत्तेजक अथवा परिस्थिति का वास्तविक ज्ञान हो जाता है त्यों ही भ्रम समाप्त हो जाता है। उदाहरण के लिये कोई व्यक्ति सड़क पर पड़ी हुई रस्सी को जब तक सर्प समझता है तब तक तो उसे भ्रम या विपर्यय होता है परन्तु जब वह उस रस्सी के पास जाकर उसे अच्छी तरह देखता है तो उसका विपर्यय समाप्त हो जाता है अर्थात् उसे यह ज्ञान हो जाता है कि यह सर्प नहीं है बल्कि यह तो रस्सी है। इस प्रकार जब वह रस्सी को रस्सी समझता है तो उसके भ्रम का स्थान प्रत्यक्षीकरण ले लेता है जिसमें कि वस्तु का वास्तविक ज्ञान होता है। इस प्रकार भ्रम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अथवा विपर्यय क्षणिक अथवा अस्थायी होते हैं और ये शीघ्र ही प्रत्यक्षीकरण में परिवर्तित हो जाते हैं।

भ्रम अथवा विपर्यय के प्रकार
(Kinds of Illusion)

भ्रमों या विपर्ययों को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

(१) व्यक्तिगत भ्रम अथवा विपर्यय (Individual Illusions) :— जो भ्रम (Illusions) संसार के समस्त आदमियों को न होकर कुछ ही व्यक्तियों को व्यक्तिगत रूप से भिन्न-भिन्न मात्रा में होते हैं उन्हें व्यक्तिगत भ्रम (Individual Illusions) कहते हैं। चूँकि इस प्रकार का एक ही भ्रम किसी मनुष्य को लगातार नहीं होता रहता है इसलिये इनको क्षणिक भ्रम (Transitory Illusions) भी कहते हैं। उदाहरण के लिए श्याम को आता हुआ देखकर एक व्यक्ति को यह भ्रम हो जाता है कि हमारा मित्र राम आ रहा है। परन्तु श्याम को आता हुआ देखकर अन्य व्यक्ति तो उसे राम न समझ कर श्याम ही समझते हैं। इस प्रकार यह आवश्यक नहीं है कि एक ही उत्तेजक से सब लोगों को एक ही प्रकार का भ्रम होगा एवं यह भी आवश्यक नहीं है कि समस्त व्यक्तियों को भ्रम होगा। ज्योंही व्यक्ति श्याम के पास पहुँच जाता है त्योंही वह श्याम को श्याम ही समझता है, पहले की भाँति राम नहीं। इस प्रकार व्यक्तिगत भ्रम क्षणिक अथवा अस्थायी होते हैं। परिणामस्वरूप इन्हें क्षणिक भ्रम के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

(२) सार्वभौमिक भ्रम अथवा विपर्यय (Universal Illusions) :— भ्रम अधिकांशतः सभी व्यक्तियों को होते हैं उन्हें सार्वभौमिक भ्रम (Universal Illusions) कहते हैं। उदाहरण के लिए चलती रेल अथवा मोटर पर यात्रा करते हुये समस्त व्यक्तियों को यह अनुभव होता है कि उनके दोनों तरफ की जमीन वेग से भागी जा रही है। चूँकि इस प्रकार के भ्रम समस्त व्यक्तियों को होते हैं इसलिए इन्हें सार्वभौमिक (Universal) भ्रम कहते हैं। हमें एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि सार्वभौमिक भ्रम सर्वदा स्थायी होते हैं। फलस्वरूप इन्हें स्थायी भ्रम (Permanent Illusions) भी कहते हैं। प्रायः देखा जाता है कि रेखागणितीय दृष्टि विपर्यय (Geometrical Optical Illusions) सार्वभौमिक (Universal) एवं स्थायी (Permanent) विपर्यय हुआ करते हैं। अगले पृष्ठ पर हम सार्वभौमिक या स्थायी भ्रमों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

उदाहरण सं० १—नीचे दिये हुए चित्र में रेल की लाइनें बिलकुल समानान्तर होते हुए भी उन्हें जैसे-जैसे आगे को देखा जाता मिलती हुई प्रतीत होती हैं।

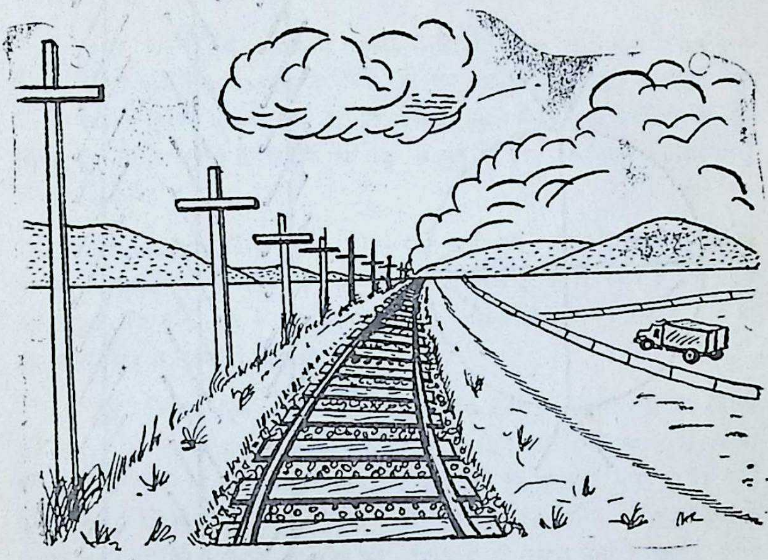

चित्र संख्या १८—रेल की लाइनों का भ्रम

उदाहरण सं० २—हेरिंग (Hering) का भ्रम—नीचे दिए हुए चित्र में दोनों लेटी हुई रेखाएँ समानान्तर हैं किन्तु वे समानान्तर प्रतीत नहीं होती हैं।

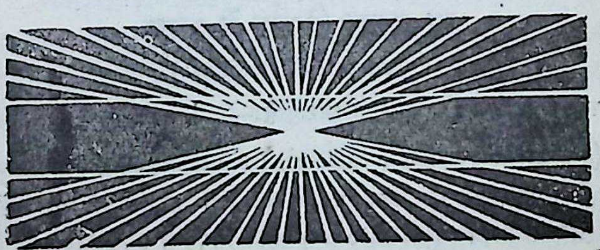

चित्र संख्या १६—हेरिंग का भ्रम

उदाहरण सं० ३-जूलनर (Zullner) का भ्रम—चित्र संख्या २० में खड़ी हुई रेखाएँ एक दूसरे के समानान्तर हैं किन्तु वे समानान्तर प्रतीत नहीं होती हैं।

उदाहरण सं० ४—पोगेनडोर्फ (Poggendorf) का भ्रम—चित्र संख्या २१ में वृत्त के दोनों अर्धव्यास समान हैं किन्तु ये समान नहीं प्रतीत होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

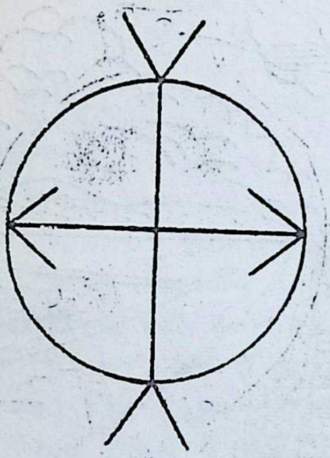

चित्र सं०—२१ पोगेनडोर्फ का भ्रम

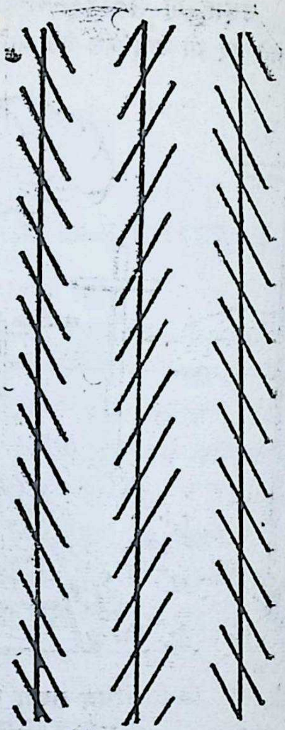

चित्र सं० २०—जूलनर का भ्रम

भ्रम अथवा विपर्यय के कारण
(Causes of Illusions)

भ्रम अथवा विपर्यय के निम्न कारण हैं:—

(१) ज्ञानेन्द्रिय दोष (Defect of Sense organ)—प्रायः जब किसी व्यक्ति की किसी ज्ञानेन्द्रिय में किसी प्रकार का दोष होता है तो उस ज्ञानेन्द्रिय से सम्बन्धित भ्रम या विपर्यय (Illusions) होने लगते हैं। उदाहरण के लिये जब किसी व्यक्ति को पीलिया का रोग हो जाता है तो उसे समस्त वस्तुयें पोली दृष्टिगोचर होती हैं।

(२) आदतें (Habits)—भ्रम का होना बहुत कुछ हमारी आदतों पर निर्भर हुआ करता है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति अपने बच्चे को नित्य प्रति विशेष प्रकार के कपड़े पहने हुए देखता है। अगर उस व्यक्ति को उसी प्रका रके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपड़े पहने हुए उसी उम्र का दूसरा बालक दृष्टिगोचर हो तो उसे अपना बच्चा समझ बैठता है।

(३) मनोवृत्ति (Mental Set)—हमें बहुत कुछ भ्रम हमारी मनोवृत्ति के कारण भी होते हैं। उदाहरण के लिये जब हम अर्द्धरात्रि को गाँव के बाहर उस पेड़ के पास से गुजरते हैं जिस पेड़ के प्रति हमारी यह मनोवृत्ति हो जाती है कि इस पेड़ में भूत निवास करता है तो हमें उस पेड़ में भूत के देखने का भ्रम (Illusion) अवश्य हो जायगा।

(४) आशा (Expectation)—कभी-कभी हमें आशा के कारण भ्रम हो जाता है। उदाहरण के लिये यदि आज हमें यह निश्चित हो कि १० बजे हमारा मित्र आ रहा है और यदि मित्र के बजाय कोई दूसरा व्यक्ति दरवाजा खटखटाने लगे तो हमें अपने मित्र के आने का भ्रम हो जाता है।

(५) चिन्ता एवं भय (Anxiety and Fear)—बहुत से भ्रम चिन्ता एवं भय के कारण भी हुआ करते हैं। उदाहरण के लिये यदि किसी व्यक्ति के पड़ोसी की रात्रि को चोरी हो गई हो और उसे इस बात की चिन्ता एवं भय हो कि कहीं हमारे घर में भी किसी रात्रि को चोरी न हो जाय तो वह व्यक्ति रात्रि को छत में चलती हुई पत्नी की पगध्वनि को चोर की पगध्वनि को समझ लेता है अर्थात् पत्नी के बजाय चोर समझ लेता है और कभी-कभी बचने के लिये चिल्लाने भी लगता है। इसी प्रकार अन्य संवेगों की अनुभूति के समय व्यक्ति को भ्रम हो सकते हैं।

(६) नवीनता (Novelty)—हमें प्रायः नवीनता (Novelty) के कारण भी भ्रम अथवा विपर्यय (Illusion) हो जाता है। उदाहरण के लिये जब हम किसी नवीन नगर में जाते हैं तो हमें दिशा भ्रम हो जाता है। हम यह निश्चय नहीं कर पाते हैं कि इस तरफ पूर्व है एवं उस तरफ पश्चिम।

(७) उत्तेजनाओं में विरोध (Contrast of stimuli)—जब उत्तेजनाओं में किसी प्रकार का विरोध (Contrast) होता है तो व्यक्ति को भ्रम हो जाता है। उदाहरण के लिये जब एक साधारण लम्बे आदमी के बराबर एक ठिगना व्यक्ति खड़ा हो जाता है तो वह अधिक लम्बा व्यक्ति दृष्टिगोचर होने लगता है।

(८) संभ्रान्ति (Confusion)—प्रायः ज्योमित एवं अन्य प्रकार के भ्रमों में संभ्रान्ति एक महत्वपूर्ण कारण होता है। संभ्रान्ति से हमारा तात्पर्य किसी चित्र के विभिन्न अंगों के अशुद्धि प्रत्यक्षीकरण से है। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सुन्दर आकृति देखता है तो वह उसमें इतना खो जाता है कि यह विभिन्न अङ्गों की प्रथक् विशेषताओं एवं गुण-दोषों की ओर ध्यान नहीं देता है।

(६) समग्रता की प्रवृत्ति (Tendency towards Whole)—जैसा कि गेस्टाल्टवादी मनोवैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया है कि प्राणी की किसी आकृति को समग्र रूप से देखने की प्रवृत्ति (Tendency) होती है। इस प्रवृत्ति के कारण वह अपूर्ण तथा गलत वस्तु या परिस्थिति का समग्र तथा सही रूप में प्रत्यक्षीकरण करता है। कभी-कभी तो इस प्रवृत्ति के कारण चित्र का विशेष रूप होने के कारण उसमें जो वस्तु नहीं हैं उस वस्तु का भी प्रत्यक्षीकरण होने लगता है। इस प्रकार समग्रता की प्रवृत्ति बहुत से भ्रमों का कारण होती है।

(१०) परिदृश्य (Perspective)—परिदृश्य के कारण भी हमें कई बार भ्रम हो जाता है। इसके कारण प्रत्येक वस्तु त्रिमित (Three Dimentional) दृष्टिगोचर होती है। परिणामस्वरूप परिदृश्य के प्रसंग में किसी आकृति का प्रत्यक्षीकरण होने में भ्रम हो जाता हैं।

(११) प्रसंग (Context)—प्रायः ज्योमित के भ्रम प्रसंग के कारण हो जाते हैं। प्रायः हम ज्योमित की रेखाओं को किसी प्रसंग में देखते हैं जिसके कारण ज्योमित के भ्रम हो जाते हैं। व्यक्ति किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण पृष्ठभूमि (Background) के आधार पर करता है। अतः पृष्ठभूमि से प्रभावित होने के कारण उसे वस्तु का सही प्रत्यक्षीकरण नहीं हो पाता है।

(१२) अपूर्ण विवेचन (Imperfect Interpretation)—कभी-कमी व्यक्ति को प्रत्यक्ष का अपूर्ण विवेचन से भ्रम हो जाता है। आकार भार भ्रम (Style Weight Illusion) इस प्रकार के भ्रमों के उदाहरण हैं। उदाहरण के लिये हमने दो सन्दूक लिये जिनमें से एक का आकार दूसरे से कई गुना बड़ा है। हमने उनमें चीजें भरकर दोनों को वजन में बराबर कर दिया। इसके उपरान्त हमने किसी व्यक्ति से उन सन्दूकों को उठाने को कहा। वजन के सम्बन्ध पर पूछने पर उसने बताया कि बड़े सन्दूक की अपेक्षा छोटा सन्दूक पर्याप्त भारी है।

(१३) गत अनुभव (Past Experience or Preconception)—बहुत से भ्रम गत अनुभव या पूर्वधारणा के कारण हो जाते हैं। गत अनुभव के कारण व्यक्ति को अंधेरे में रस्सी साँप के रूप में दिखलाई पड़ती है। किसी समय उसने अंधेरे में साँप देखा था। ऐसे अनुभव के कारण उसे रात में रस्सी साँप के रूप में दिखाई पड़ती है।

(१४) नेत्रगति (Eye Movement)—भ्रमों को उत्पन्न करने में नेत्रगति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का भी हाथ रहता है। नीचे हम नेत्र गति से उत्पन्न भ्रमों के दो उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

उदाहरण संख्या १—नीचे दो रेखाओं का एक चित्र दिया हुआ है जिसमें लेटी रेखा की अपेक्षा खड़ी रेखा का प्रत्यक्षीकरण करने में आंख पर अधिक जोर देना पड़ता है। इसलिये खड़ी रेखा पड़ी रेखा की अपेक्षा लम्बी प्रतीत होती है।

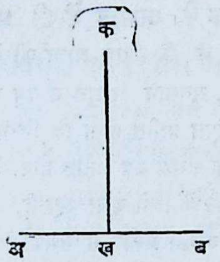

चित्र संख्या २२—खड़ी एवं लेटी रेखा का भ्रम

उदाहरण संख्या २—नीचे दिये हुए मूलर लायर भ्रम (Muller Lyer Illusion) 'अ ब' एवं 'स द' दोनों रेखायें बराबर हैं। किन्तु इनका प्रत्यक्षीकरण करने में 'अ ब' 'स द' से बड़ी प्रतीत होती है। इसका कारण नेत्रगति है, 'अ ब' पंख रेखा (Feather Headed Line) तथा 'स द' बाण रेखा (Arrow Headed Line) है। पंख रेखा का प्रत्यक्षीकरण करने में बाण रेखा की अपेक्षा आंख की गति आवश्यक नहीं होती है, बल्कि नेत्रगति की प्रवृत्ति (Tendency of Eye-Movement) ही भ्रमों को उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त है।

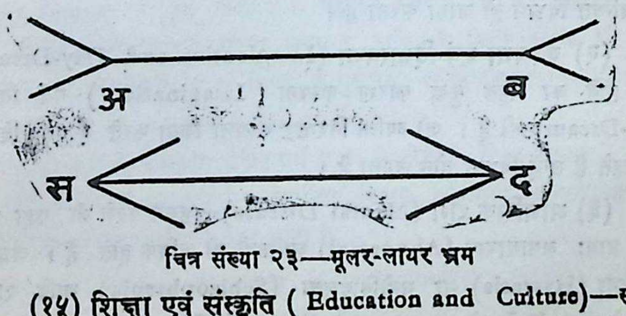

चित्र संख्या २३—मूलर-लायर भ्रम

(१५) शिक्षा एवं संस्कृति (Education and Culture)—सामाजिक जीवन में अनेक भ्रमों की उत्पत्ति शिक्षा एवं संस्कृति के कारण होती है। हिन्दुओं को मुसलमानों के पर्व-त्योहार एवं मुसलमानों को हिन्दुओं के पर्व-त्योहारों में शिक्षा एवं संस्कृति में विभिन्नता के परिणामस्वरूप अनेक भ्रम होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विभ्रम का स्वरूप
(Nature of Hallucination)

परिस्थिति अथवा उत्तेजक के अभाव में प्रत्यक्षीकरण करना विभ्रम है।

विभ्रम (Hallucination) वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति परिस्थिति अथवा उत्तेजक के अभाव में ही प्रत्यक्षीकरण (Perception) करने लगता है। उदाहरण के लिए एक माता को ऐसा प्रतीत होता है कि उसका मृतक पुत्र उसे बुला रहा है, सुनसान स्थान में यह अनुभव करना कि कोई व्यक्ति हमें बुला रहा है, किसी को ऐसा प्रतीत होना कि किसी ने उसकी गर्दन जोर से पकड़ ली है, पत्नी को अर्द्ध-रात्रि के समय यह प्रतीत होना कि उसका मृतक पति उसे साथ ले जाने के लिये डोली में बैठने के लिये बुला रहा है, रेगिस्तान में मृग को पानी का धोखा होना आदि। हमें यह अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिये कि विभ्रम (Hallucination) प्रायः असाधारण (Abnormal) व्यक्तियों को होता है। यों तो समस्त ज्ञानेन्द्रियों से सम्बन्धित विभ्रमों के होने की सम्भावना है, परन्तु प्रायः दृष्टियात्मक (Visual) एवं ध्वन्यात्मक (Auditory) विभ्रम हुआ करते हैं।

विभ्रम के कारण
(Causes of Hallucination)

विभ्रम के निम्नलिखित कारण हैं :—

(१) निरन्तर चिन्तन (Regular Thinking)—प्रायः जब व्यक्ति किसी पदार्थ या विषय के सम्बन्ध में निरन्तर सोचता रहता है तो उसे उस पदार्थ या विषय से सम्बन्धित विभ्रम हो जाया करता है।

(२) कल्पना एवं दिवास्वप्न (Imagination and Day-Dream)—विभ्रम होने का बहुत कुछ कारण कल्पना (Imagination) एवं दिवास्वप्न (Day-Dream) भी हैं। जो व्यक्ति निरन्तर कल्पना किया करते हैं एवं दिवास्वप्न देखते रहते हैं उन्हें विभ्रम होने लगता है।

(३) मानसिक रोग (Mental Disease)—हमने पहले ही कहा था कि विभ्रम प्रायः असाधारण (Abnormal) व्यक्तियों को अधिक होते हैं। जब व्यक्ति हिस्टीरिया (Hysteria) या मनोविह्वलता (Schizophrenia) आदि रोगों से ग्रसित हो जाता है तो उसे नाना प्रकार के विभ्रम होते हैं।

(४) अचेतन की इच्छायें (Desires of Unconscious Mind)—फ्रायड (Freud) आदि मनोविश्लेषकों का विचार है कि जिन इच्छाओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Desires) को व्यक्ति पूरी नहीं कर पाता है वे अचेतन मन (Unconscious Mind) में प्रवेश कर जाती हैं और यही अचेतन मन की दबी हुई इच्छायें विभ्रम का कारण बन जाती हैं।

(५) नशे की हालत (Intoxication)—जो व्यक्ति नशे में चूर हो जाते हैं उनको विभ्रम होने लगते हैं। नशे में चूर व्यक्तियों का चेतन मस्तिष्क (Conscious mind) कार्यहीन हो जाता है फलस्वरूप अचेतन मन कार्य करने लगता है। इससे उसे नाना प्रकार के भ्रम होने लगते हैं।

भ्रम या विपर्यय एवं विभ्रम में अन्तर

(Difference between Illusion and Hallucination)

भ्रम अथवा विपर्यय एवं विभ्रम में निम्नलिखित अन्तर है—

(१) भ्रम अथवा विपर्यय (Illusion) के लिए बाह्य पदार्थ अथवा उत्तेजक (Stimulus) की आवश्यकता है परन्तु विभ्रम (Hallucination) तो बाह्य पदार्थ या उत्तेजक के अभाव में होते रहते हैं। उदाहरण के लिए रस्सी को सर्प समझना भ्रम है। इसमें रस्सी उत्तेजक के रूप में उपस्थित है। सुनसान जगह में किसी के पुकारने की आवाज सुनना विभ्रम है जब कि कहीं से कोई आवाज नहीं आ रही है।

(२) भ्रम अथवा विपर्यय का अनुभव समस्त व्यक्तियों को होता है परन्तु विभ्रम का केवल कुछ ही व्यक्तियों को अनुभव होता है। जो व्यक्ति मानसिक रोगी अथवा नशे में चूर होते हैं विभ्रम प्रायः उन्हीं व्यक्तियों को होता है।

(३) एक ही तरह की परिस्थिति में प्रायः समस्त व्यक्तियों को एक ही तरह का भ्रम होता है परन्तु एक ही परिस्थिति में विभ्रम अलग-अलग प्रकार का होता है। उदाहरण के लिये किसी ठूँठ पेड़ को देखकर चोर या जानवर का भ्रम समस्त व्यक्तियों को होता है, परन्तु सुनसान रात्रि में किसी व्यक्ति को भूत का विभ्रम होता है, किसी व्यक्ति को किसी के पुकारने का विभ्रम होता है, किसी व्यक्ति को किसी के आने का भ्रम होता है आदि।

(४) भ्रम में अधिकांश उत्तेजनायें बाहर से होती है किन्तु विभ्रम में अधिकांश उत्तेजनायें व्यक्ति में ही होती हैं। इसलिए विभ्रम को प्रायः आत्मसापेक्ष प्रत्यक्ष (Subjective Perception) कहा जाता है।

उपसंहार (Conclusion)

कहने का तात्पर्य यह है कि भ्रम अथवा विपर्यय (Illusion) सम्वेदना (Sensation) का गलत अर्थ लगाने वाली मानसिक प्रक्रिया (Mental

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Process) है। **भ्रम के प्रकार**—भ्रम दो प्रकार के होते हैं—(१) व्यक्तिगत भ्रम एवं (२) सार्वभौमिक भ्रम। **भ्रम के कारण**—(१) ज्ञानेन्द्रिय दोष, (२) आदतें, (३) मनोवृत्ति, (४) आशा, (५) चिन्ता एवं भय, (६) नवीनता, (७) उत्तेजनाओं में विरोध, (८) सभ्रान्ति, (९) समग्रता की प्रवृत्ति, (१०) परिदृश्य, (११) प्रसंग, (१२) अपूर्ण विवेचन, (१३) गत अनुभव या पूर्वधारणा, (१४) नेत्रगति तथा (१५) शिक्षा एवं संस्कृति। विभ्रम (Hallucination) वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें परिस्थिति या उत्तेजकों के अभाव में व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण करता है। **विभ्रम के कारण**—(१) निरन्तर चिन्तन, (२) कल्पना एवं दिवास्वप्न, (३) मानसिक रोग, (४) अचेतन मन की इच्छायें तथा (५) नशे की हालत। भ्रम अथवा विपर्यय एवं विभ्रम में मुख्य अन्तर यह है कि भ्रम में तो वस्तु या उत्तेजक की उपस्थिति रहती है किन्तु विभ्रम बिना किसी वस्तु या उत्तेजना के होते हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१८
ध्यान और रुचि
[Attention and Interest]

प्रश्न संख्या—१८

ध्यान के स्वरूप, विशेषतायें एवं प्रकारों पर प्रकाश डालिए। ध्यान एवं रुचि में सम्बन्ध बताइए।

Throw light on the nature, characteristics and kinds of attention. Explain the relation between attention and interest.

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, विस्मरण, कल्पना, सीखना, चिन्तन इत्यादि मानसिक प्रक्रियाओं (Mental Processes) का अध्ययन करता है। ये सभी मानसिक प्रक्रियाएँ ध्यान की प्रक्रिया (Attending Process or bring the object or idea within the realm of Consciousness) पर आधारित होती हैं। उदाहरण के लिये किसी वस्तु का प्रत्यक्षीकरण (Perception), करने के लिये उस वस्तु पर ध्यान देना आवश्यक है। इसी तरह किसी विचार का स्मरण करने के लिये उस विचार पर ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है। वास्तव में ध्यान देने से सभी प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएँ अधिक स्पष्ट हो जाती हैं। (Attention is followed by a process of Clearness)। इस प्रकार स्पष्ट है कि ध्यान समस्त मानसिक प्रक्रियाओं का मूल आधार है। अब हम इस प्रश्न में ध्यान को अच्छी तरह समझने के लिये पहले ध्यान का स्वरूप (Nature of Attention), ध्यान की विशेषतायें (Characteristics of Attention) तथा ध्यान के प्रकार (Kinds of Attention) प्रस्तुत करेंगे और इसके पश्चात् ध्यान एवं रुचि में सम्बन्ध (Relation between Attention and Interest) स्पष्ट करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यान का स्वरूप

(Nature of Attention)

[अ] ध्यान का अर्थ (Meaning of Attention)

प्राचीन मनोवैज्ञानिक ध्यान अथवा अवधान को एक मानसिक शक्ति (Mental Power) समझते थे परन्तु आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि ध्यान एक मानसिक शक्ति न होकर एक मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है। चेतना (Consciousness) को किसी वस्तु या विचार में केन्द्रित करना ध्यान (Attention) कहलाता है। उदाहरण के लिये एक कक्षा में विद्यार्थी कुर्सी, मेज, श्यामपट, रजिस्टर, शिक्षक, उसके शब्द आदि उत्तेजनायें उपस्थित हैं। इन उत्तेजनाओं में केवल हम एक ही उत्तेजना पर अपनी चेतना केन्द्रित करते हैं। दूसरे शब्दों में इन समस्त वस्तुओं में केवल हम एक ही वस्तु पर ध्यान देते हैं। ऐसा क्यों ? इसका कारण यह है कि ध्यान देने में अथवा चेतना को केन्द्रित करने में हमारी मनोवृति (Attitude) एवं अभिरुचि (Interest) का विशेष ध्यान है। इन्हीं के आधार पर हम बहुत सी उत्तेजनाओं में से केवल एक विशेष उत्तेजना पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। यहाँ पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ध्यान एक साधारण मानसिक प्रक्रिया न होकर एक प्रेरणात्मक (Motivational) तथा चयनात्मक (Selective) मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है। उपर्युक्त शब्दों के आधार पर हम ध्यान की परिभाषा देते हुए कह सकते हैं, **ध्यान वह प्रेरणात्मक (Motivational) एवं चयनात्मक मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है जिसके द्वारा हम किसी उत्तेजना को चुन कर उसे अपने चेतना केन्द्र (Centre of Consciousness) में लाते हैं।**

[ब] ध्यान की परिभाषा (Definition of Attention)

(१) मन—"ध्यान को किसी भी दृष्टिकोण से देखा जाय, विश्लेषण के अन्त में वह एक प्रेरणात्मक प्रक्रिया है।"

"Attention, from whatever angle, we consider it is in the last analysis a motivational process."

—Munn.

(२) मैकडूगल—"ध्यान केवल उस चेष्टा अथवा इच्छा को कहते हैं जिसका प्रभाव ज्ञान प्रक्रिया पर पड़ता है।"

"Attention is merely conation or striving, considered from the point of view of its effect on cognitive process."

—Mc Dougall.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) स्टाउट—"ध्यान सरल रूप में उस सीमा तक प्रक्रिया है जहाँ तक वस्तुओं के पूर्ण ज्ञान से उसकी सन्तुष्टि होती है।"

"Attention is simply conation so far as it requires for its satisfaction fuller cognisance of its objects." —**Stout.**

(४) डम्विल—"यह (ध्यान) अन्य वस्तु की अपेक्षा एक वस्तु पर चेतना का केन्द्रीकरण है।"

"It (Attention) is the concentration of consciousness upon one object rather than upon another." —**Dumvile.**

(५) रॉस—"इस प्रकार ध्यान विचार की वस्तु को मन के सामने स्पष्ट बतलाने की प्रक्रिया है।"

"Thus attention is a process of getting an object of thought clearly before the mind." —**Ross.**

ध्यान की विशेषताएँ

(Characteristics of Attention)

ध्यान के स्वरूप को समझने के लिये उसकी विशेषताओं को जानना परमावश्यक है। ये विशेषतायें निम्नलिखित हैं—

(१) मानसिक सक्रियता (Conation)—किसी वस्तु पर ध्यान देने के लिये मानसिक सक्रियता की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये यदि हम चन्द्रमा पर ध्यान केन्द्रित करना चाहते हैं तो हमें अपने मन को क्रियाशील बनाना पड़ता है, हमें चन्द्रमा का सूक्ष्म निरीक्षण करना पड़ता है, हमें बाह्य उत्तेजनाओं से अपना ध्यान खींचकर चन्द्रमा में केन्द्रित करना पड़ता है आदि। इसी मानसिक सक्रियता को प्रयत्न अथवा चेष्टा भी कहते हैं।

(२) प्रयोजनता (Purposiveness)—हम जब किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो उसका कुछ उद्देश्य अवश्य होता है। उदाहरण के लिए यदि हम किसी सुन्दर चित्र पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो हमारा उद्देश्य सौन्दर्यानुभूति का होता है। जिस वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने से हमारे उद्देश्य अथवा प्रयोजन की जितनी अधिक पूर्ति की सम्भावना होती है उतनी ही प्रबलता से हम उस वस्तु पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। इस प्रकार ध्यान में सर्वदा प्रयोजनता निहित रहती है।

(३) चयनात्मकता (Selectiveness)—ध्यान एक चयनात्मक प्रक्रिया होती है। इसमें उस वस्तु या उत्तेजना को चुनना पड़ता है जिस पर हमें ध्यान केन्द्रित करना पड़ता है। उदाहरण के लिये एक कमरे में कपड़े, चारपाई, पंखा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुस्तकें आदि वस्तुएँ उपस्थित हैं जो हमारे ध्यान को आकर्षित करती हैं परन्तु हम अपनी अभिरुचि (Interest) एवं मनोवृत्ति (Attitude) के अनुसार किसी एक वस्तु को मन में चुनकर उस पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इस प्रकार चयनात्मकता ध्यान की एक मुख्य विशेषता है।

(४) संकुचित विस्तार (Narrow Range)—हमारे ध्यान का विस्तार हमेशा संकुचित होता है। इसीलिये ध्यान केन्द्रित करने के लिए हम विभिन्न वस्तुओं में से एक को चुनते हैं। हम एक ही समय में नदी, पहाड़, रेत आदि वस्तुओं पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते हैं। यह अवश्य है कि हम विभिन्न वस्तुओं के एक समूह पर अपना ध्यान अवश्य केन्द्रित कर सकते हैं। इस प्रकार ध्यान का संकुचित विस्तार होता है।

(५) चंचलता (Mobility)—ध्यान बहुत ही चंचल (Mobile) होता है। यह जैसे ही एक वस्तु पर केन्द्रित होता है कि तुरन्त ही दूसरी वस्तु या विचार पर चला जाता है। इस चंचलता अथवा परिवर्तनशीलता के ही कारण वह सदैव नवीन वस्तुओं की परीक्षा करता रहता है। इस बात का समर्थन करते हुए वुडवर्थ ने ठीक ही कहा है, "ध्यान चंचल होता है क्योंकि यह अनुसंधात्मक होता है। यह निरन्तर छानबीन के लिए कोई ताजी चीज खोजता रहता है।"

"Attention is mobile because it is exploratory; it continually seeks something fresh for examination........"

—Woodworth.

(६) सजीव केन्द्र (Active Centre)—ध्यान सदैव अनुभव का सजीव केन्द्र (Active Centre) हुआ करता है। हम जिन चीजों पर ध्यान देते हैं वे सदैव हमारी चेतना में सजीव एवं स्पष्ट हो जाते हैं। इसके विपरीत जिन वस्तुओं पर हम ध्यान नहीं देते हैं वे हमारी चेतना में निर्जीव एवं अस्पष्ट होती हैं। ध्यान ही सर्वदा स्पष्ट चेतना का कारण होता है।

(७) तत्परता अथवा तैयारी (Set or Readiness)—ध्यान देते समय सम्पूर्ण शरीर एक प्रकार की तत्परता अथवा तैयारी (Set or Readiness) की हालत में होता है। फलस्वरूप आवश्यकता के अनुसार किसी प्रकार की प्रतिक्रिया करने में अत्यन्त सुविधा रहती है। हमारी यही तत्परता अथवा तैयारी विभिन्न वस्तुओं अथवा उत्तेजनाओं में किसी एक वस्तु अथवा उत्तेजना को चुनने के लिए बाध्य करती है। इस प्रकार वुडवर्थ के शब्दों में "यह प्रारम्भिक तत्परता अथवा ध्यान में आवश्यक प्रतिक्रिया है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain, Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"This preparatory set or readiness is the essential response in attending." —Woodwroth.

(८) शारीरिक अभियोजन (Bodily Adjustment)—ध्यान की प्रक्रिया में अनेक शारीरिक अभियोजन पाये जाते हैं। मन (Munn) के अनुसार 'ध्यान देने की प्रक्रिया में ग्राहक अभियोजन, तनमुद्रात्मक अभियोजन, मांसपेशीय तनाव तथा केन्द्रीय स्नायविक अभियोजन की विशेषताएँ होती हैं।"* नीचे हम चारों प्रकार के शारीरिक अभियोजन पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं—

(क) ग्राहक अभियोजन (Receptor Adjustment)—ध्यान देने की प्रक्रिया में सबसे पहले ग्राहकेन्द्रियों (Receptors Organs) अर्थात् आँख, कान, नाक इत्यादि का अभियोजन पाया जाता है। जिस वस्तु, घटना या परिस्थिति पर व्यक्ति ध्यान देता है उस ओर उसे ग्राहकेन्द्रियों को मोड़ना पड़ता है। किसी पुस्तक को पढ़ाने के लिये व्यक्ति को अपनी आँख सीधी रूप में पुस्तक पर रखनी पड़ती है, किसी आवाज पर ध्यान देने के लिये आवाज आने वाली दिशा की ओर कान लगाने पड़ते हैं, जिस वस्तु के प्रति ध्यान दिया जाता है उस वस्तु के प्रति एक या एक से अधिक ज्ञानेन्द्रियों का अभियोजन पाया जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि ध्यान की प्रक्रिया में ग्राहकेन्द्रिय-अभियोजन पाया जाता है।

(ख) तनमुद्रात्मक अभियोजन (Postural Adjustment)—ध्यान देने की प्रक्रिया में ग्राहक अभियोजन के साथ-साथ तनमुद्रात्मक अभियोजन (Postural Adjustment) पाया जाता है अर्थात् पूरे शरीर का अभियोजन भी पाया जाता है। हम देखते हैं कि कक्षा में शिक्षक का लेक्चर सुनने के लिये शिक्षार्थी केवल अपने कानों एवं आँखों को ही शिक्षक की तरफ नहीं मोड़ते बल्कि सम्पूर्ण शरीर को एक मुद्रा (Posture) में रखकर उसकी तरफ आँख एवं कान को लगा लेते हैं। इस प्रकार ध्यान की प्रक्रिया में सम्पूर्ण शरीर का अभियोजन पाया जाता है।

(ग) माँसपेशीय तनाव (Muscle Tension)—ध्यान की प्रक्रिया में प्राणी की ज्ञानेन्द्रियों एवं शरीर की माँसपेशियों में तनाव उत्पन्न हो जाता है जिससे हम वस्तु पर ध्यान लगाये रहने के लिये अत्यधिक क्रियाशील हो जाते हैं। उदाहरणार्थ जब व्यक्ति किसी व्याख्यानदाता को व्याख्यान के प्रति ध्यान केन्द्रित

---

*"The act of attending is characterised by receptors adjustment, postural adjustment, muscle tension and central-neural adjustment." —N. L. Munn

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करते हैं तो उनकी आँख कान तथा शरीर के अन्य भागों की मांसपेशियाँ उत्तेजित हो उठती हैं फलस्वरूप उनमें तनाव उत्पन्न हो जाता है और वे अत्यधिक क्रियाशील हो उठते हैं और उनका ध्यान व्याख्यान पर अधिक समय तक लगा रहता है।

(घ) केन्द्रीय स्नायविक अभियोजन (Central Neural Adjustment)—ध्यान देने की प्रक्रिया में बृहन्मस्तिष्कीय वल्क (Cerebral Cortex) का भी अभियोजन सन्निहित रहता है। व्यक्ति को किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने में ग्राहक अभियोजन तथा तनमुद्रात्मक अभियोजन के साथ साथ मस्तिष्क का भी वस्तु के साथ अभियोजन करना पड़ता है। उदाहरण के लिये यदि हम किसी व्याख्यान-दाता का व्याख्यान सुनना चाहते हैं तो हमें न केवल अपनी आँख, कान, मुख एवं पूरे शरीर को उसकी ओर करना पड़ेगा बल्कि हमें अपने मस्तिष्क को भी भाषण की ओर केन्द्रित करना पड़ेगा। इस प्रकार स्पष्ट है कि ध्यान देने की प्रक्रिया में बृहन्मस्तिष्कीय वल्क का भी अभियोजन पाया जाता है।

ध्यान के प्रकार (Kinds of Attention)

[अ] अनैच्छिक, ऐच्छिक एवं अनभिप्रेत (इच्छा विरुद्ध) ध्यान (Non-voluntary, Voluntary and Involuntary Attention)

(१) अनैच्छिक ध्यान (Non-Voluntary Attention)—जब कोई उत्तेजना इतनी अधिक आकर्षक एवं रुचिकर होती है कि हमारी चेतना स्वतः बिना किसी प्रयास के उस पर केन्द्रित हो जाती है तो ऐसे ध्यान को अनैच्छिक ध्यान (Non-Voluntary Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिये यदि हम कमरे में तल्लीन होकर पुस्तक पढ़ रहे हैं और यदि पड़ोस में संगीत होने लगता है तो हमारा ध्यान उस पर चला जाता है। संगीत की तरह अन्य आकर्षक रुचिदायक उत्तेजनाओं पर हमारा ध्यान हमारी बिना इच्छा के चला जाता है। बहुत से विद्वानों ने अनैच्छिक ध्यान को स्वाभाविक (Spontaneous) एवं अभ्यासात्मक (Habitual) ध्यान के नामों से पुकारा है।

(२) ऐच्छिक ध्यान (Voluntary Attention)—जब हम किसी उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये अपनी इच्छा से प्रयास करके किसी उत्तेजना पर अपनी चेतना केन्द्रित करते हैं तो इस ध्यान को ऐच्छिक ध्यान (Voluntary Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिये जब हम परीक्षा में पास होने के लिये अपना ध्यान किसी दुरूह गद्यांश का अर्थ समझने के लिये अपने मन को अधिक सक्रिय कर उस पर लगाते हैं तो यह ध्यान ऐच्छिक ध्यान है। विद्यार्थी परीक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के कुछ दिन पूर्व शिक्षक की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं क्योंकि उन्हें परीक्षा में पास होना है। इसी प्रकार अन्य किसी उपयोगी वस्तु या उत्तेजना पर जानबूझ कर प्रयास से उस पर ध्यान देना ऐच्छिक ध्यान है।

(३) अनभिप्रेत ध्यान (Involuntary Attention)—जब हम किसी खतरे से बचने के लिए अपनी इच्छा के अनुकूल प्रयास करके किसी उत्तेजना पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं तो इस प्रकार के ध्यान को अनभिप्रेत या इच्छा विरुद्ध (Involuntary Attention) कहते हैं। यह ध्यान अनैच्छिक ध्यान की तरह अनायास नहीं होता है बल्कि ऐच्छिक ध्यान की तरह प्रयास करके किया जाता है। तो क्या ऐच्छिक ध्यान एवं इच्छा—विरुद्ध दोनों एक हैं ? नहीं, ऐच्छिक ध्यान में तो अपनी इच्छा के अनुकूल किसी उत्तेजना पर चेतना को केन्द्रित किया जाता है। परन्तु अनभिप्रेत ध्यान में अपनी इच्छा के प्रतिकूल किसी उत्तेजना में चेतना को केन्द्रित किया जाता है। अनभिप्रेत ध्यान का उदाहरण प्रस्तुत करते हुये हम कह सकते हैं कि मान लीजिए एक विद्यार्थी परीक्षा भवन में प्रश्नों का उत्तर लिखने में तल्लीन है। ऐसी अवस्था में अचानक उसे कोई बुलाता है तो वह खिसिया जाता है। परन्तु उससे छुटकारा पाने के लिए शीघ्र ही वह अपना ध्यान उस पर लगाता है। इस प्रकार के हम अन्य उदाहरण प्राप्त कर सकते हैं।

[ब] मूर्त एवं अमूर्त ध्यान (Sensory and Ideational Attention)—

(१) मूर्त ध्यान (Sensory Attention)—जब हम किसी ऐसी उत्तेजना पर अपनी चेतना केन्द्रित करते हैं जिसका एक निश्चित आकार एवं स्वरूप होता है तो इस प्रकार के ध्यान को मूर्त ध्यान (Sensory Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिए मेज, कुर्सी, किताब, कमल आदि ऐसी वस्तुएँ अथवा उत्तेजनाएँ हैं जिनका निश्चित आकार एवं रूप होता है। उन पर ध्यान लगाना मूर्त ध्यान है। मूर्त ध्यान को हम प्रत्यक्ष ध्यान भी कह सकते हैं।

(२) अमूर्त ध्यान (Ideational Attention)—जब हम किसी ऐसी उत्तेजना पर अपनी चेतना को केन्द्रित करते हैं जिसका कोई निश्चित आकार एवं स्वरूप नहीं होता है बल्कि उसका हम चिन्तन (Thinking) अथवा उसकी हम कल्पना कर सकते हैं तो ऐसे ध्यान को अमूर्त ध्यान (Ideational Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिए सत्यता, ईमानदारी, परोपकार, धैर्य आदि पर ध्यान केन्द्रित करना अमूर्त ध्यान है। अमूर्त ध्यान को अप्रत्यक्ष ध्यान भी कहा जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] अव्यवहित एवं अर्जित ध्यान
(Immediate and Derived Attention)

(१) अव्यवहित ध्यान (Immediate Attention)—जब हम किसी ऐसी उत्तेजना पर जो रुचिकर हो अपनी चेतना को केन्द्रित करते है तो ऐसे ध्यान को अव्यवहित ध्यान (Immediate Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिये संगीत पर ध्यान देना अव्यवहित ध्यान है क्योंकि वह रुचिदायक होता है। परन्तु जब कोई व्यक्ति बीमार होता है एवं संगीत पसन्द नहीं करता है तो उसकी ओर उसका ध्यान हो जाना अव्यवहित ध्यान नहीं है।

(२) अर्जित ध्यान (Derived Attention)—जब हम किसी ऐसी उत्तेजना पर, जो स्वयं तो रुचिदायक होती वरन् किसी अन्य उत्तेजना से संलग्न होने के कारण रुचिदायक होती है, अपनी चेतना को केन्द्रित करते हैं तो उस ध्यान को अर्जित ध्यान (Derived Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिये हमारी रुचि अंग्रेजी विषय में नहीं है। परन्तु परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये हम अंग्रेजी पर दिये हुये भाषण को ध्यानपूर्वक सुनते हैं तो यह हमारा ध्यान अर्जित ध्यान है। इसी प्रकार से अर्जित ध्यान के अन्य उदाहरण भी हम प्राप्त कर सकते हैं।

ध्यान एवं रुचि में सम्बन्ध
(Relation between Attention and Interest)

[अ] रुचि का अर्थ (Meaning of Interest)

रुचि किसी वस्तु के प्रति सम्बन्ध जोड़ने वाली मानसिक संरचना है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी वस्तु से अपना सम्बन्ध समझता है। इस प्रकार रुचि एक मानसिक क्रिया न हो कर एक व्यवस्था है। इस मानसिक व्यवस्था का निर्माण अनुभव द्वारा होता है। जो वस्तु बालक को अच्छी लगती है। उसके प्रति उसकी रुचि हो जाती है। यह अनुभव मानसिक संसार (Mental Disposition) के रूप में मानसिक व्यवस्था का अंग बन जाता है। इसी प्रकार अन्य अनुभवों द्वारा मानसिक व्यवस्था का निर्माण होता है—इसी मानसिक व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति को कुछ वस्तुयें रुचिकर लगती हैं एवं कुछ अरुचिकर। अनुभव के साथ-साथ मानसिक व्यवस्था (Mental Structure) के निर्माण में व्यक्ति के जन्मजात प्रेरकों (Motives) का भी प्रमुख स्थान है क्योंकि बालक सबसे पहले इन्हीं की प्रेरणा से व्यवहार करता है और जो वस्तुयें इन प्रेरकों को सन्तुष्ट करती हैं उन्हीं पर व्यक्ति की रुचि केन्द्रित हो जाती है। इस प्रकार **रुचि वह मानसिक व्यवस्था है जिसके कारण हमें कोई वस्तु अच्छी या बुरी लगती है।**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] रुचि के प्रकार (Kinds of Interet)s

(१) जन्मजात रुचि (Inborn Interest)—जो रुचि मूल प्रवृत्तियों एवं जन्मजात प्रेरकों के कारण व्यक्ति में किसी वस्तु के प्रति होती है उसे जन्मजात रुचि (Inborn Interest) कहते हैं।

(२) अर्जित रुचि (Acquired Interest)—जो रुचि अर्जित संस्कारों (आदत, भावना—ग्रन्थियों, स्थायी भाव आदि) के कारण वस्तुओं के प्रति उत्पन्न होती हैं उसे अर्जित रुचि (Acquired Interest) कहते हैं। अर्जित रुचियाँ जन्मजात रुचियों पर आधारित होती हैं।

[स] ध्यान एवं रुचि में सम्बन्ध

(Relation between Attention and Interest)

(१) प्रथम मत—ध्यान रुचि पर आधारित है—ध्यान (Attention) एवं रुचि (Interest) के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों के भिन्न-भिन्न मत हैं। उनमें से कुछ मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि व्यक्ति उन्हीं वस्तुओं पर ध्यान देता है जिनमें कि उसकी रुचि हो। दूसरे शब्दों में ध्यान रुचि पर आधारित है। उदाहरण के लिये कोई व्यक्ति उपन्यास पढ़ने में अपनी रुचि रखता है तो वह स्वाभाविक रूप से उपन्यासों पर अपना ध्यान देगा।

(२) द्वितीय मत—रुचि ध्यान पर आधारित है—उपर्युक्त विचार के विपरीत कुछ मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि रुचि (Interest) ध्यान (Attention) पर आश्रित है। उनका विचार है कि जब तक कोई व्यक्ति किसी वस्तु पर ध्यान न देगा तब तक उसकी उस वस्तु के प्रति रुचि नहीं हो सकती है उदाहरण के लिये यदि कोई विद्यार्थी ध्यानपूर्वक गणित को पढ़ना प्रारम्भ कर दे तो वह उसकी समझ में आने लगेगी। परिणामस्वरूप उसकी रुचि भी अंकगणित के प्रति हो जायगी। इस प्रकार इस मत के अनुसार ध्यान के अभाव में रुचि असम्भव है।

(३) तृतीय (मध्यम) मत—दोनों का सम्बन्ध एक सिक्के के दो पक्षों के समान—कुछ मनोवैज्ञानिक मध्यम वर्ग का अनुकरण करते हैं। इन लोगों का कथन है कि ध्यान एवं रुचि एक दूसरे पर आधारित है। रॉस महोदय का विचार है कि ध्यान (Attention) एवं रुचि (Interest) एक सिक्के के दो पक्षों के समान हैं। यदि रुचि के कारण कोई व्यक्ति किसी चीज पर ध्यान देता है तो ध्यान के कारण भी किसी वस्तु के प्रति उसकी रुचि उत्पन्न हो जावेगी। ध्यान एवं रुचि का सम्बन्ध प्रस्तुत करते हुये मैकडूगल ने लिखा है "रुचि गुप्त ध्यान है; ध्यान सक्रिय रुचि है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Interest is latent attention, attention is interest in action."

—**Mc Dougall.**

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में ध्यान वह प्रेरणात्मक एवं चयनात्मक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी उत्तेजना को चुनकर उसे अपने केन्द्र में लाते हैं। **ध्यान की विशेषतायें**—(१) मानसिक सक्रियता, (२) प्रयोजनता, (३) चयनात्मकता, (४) संकुचित विस्तार, (५) चंचलता, (६) सजीव केन्द्र, (७) तत्परता अथवा तैयारी तथा (८) शारीरिक अभियोजन। ध्यान के प्रकार—(१) अनैच्छिक ध्यान, (२) ऐच्छिक ध्यान, (३) अनभिप्रेत ध्यान, (४) मूर्त ध्यान (५) अमूर्त ध्यान (६) अव्यवहित ध्यान, तथा (७) अर्जित ध्यान। रुचि वह मानसिक व्यवस्था है जिसके कारण हमें कोई वस्तु अच्छी या बुरी लगती है। **रुचि के प्रकार** (१) जन्मजात रुचि तथा (२) अर्जित रुचि। **ध्यान और रुचि के सम्बन्ध में तीन मत**—(१) ध्यान रुचि पर आधारित है। (२) रुचि ध्यान पर आधारित है तथा (३) दोनों का सम्बन्ध एक सिक्के दो पक्षों के समान है। इनमें से तृतीय मत युक्तिसंगत है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१६

ध्यान की दशायें या निर्धारक

[Conditions or Determinants of Attention]

प्रश्न संख्या—१६

ध्यान की दशाओं (या निर्धारकों) से आप क्या समझते हैं? समझाकर लिखिये।

What do you understand by condition of attention? Explain fully. **(Agra 1961, 1963)**

भूमिका (Introduction)

ध्यान के सम्बन्ध में विचार करते हुए हमारे मन में ध्यान की दशाओं या निर्धारकों (Conditions or Determinants) से सम्बन्धित अनेक प्रश्न उठते हैं—जैसे हमारा ध्यान वस्तुओं या परिस्थितियों में से किसी विशेष वस्तु या परिस्थिति पर क्यों चला जाता है? क्यों एक ही पर्यावरण में एक व्यक्ति का ध्यान किसी वस्तु पर चला जाता है और दूसरे व्यक्ति का ध्यान दूसरी वस्तु पर चला जाता है? क्यों कक्षा में बैठे हुए कुछ बालकों का ध्यान शिक्षक के भाषण की ओर रहता है, कुछ का ध्यान कक्षा में बैठे हुए अन्य विद्यार्थियों की ओर चला जाता है और कुछ का ध्यान सिनेमा के गानों की ओर जाता है इत्यादि। किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति की ओर ध्यान जाने के अनेक कारण होते हैं। इन कारणों को हम ध्यान की दशायें या निर्धारक (Conditions or Determinants of Attention) कहते हैं। इन्हें हम दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—(१) बाह्य या वस्तुगत दशायें या निर्धारक (External or Objective Condition or Determinants) तथा (२) आन्तरिक या आत्मगत दशायें या निर्धारक (Interal or Subjective Conditions)। प्रथम प्रकार की दशाओं के अन्तर्गत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाह्य वस्तुयें या परिस्थितियों का समावेश होता है एवं दूसरे प्रकार की दशायें व्यक्ति के अन्दर ही मौजूद रहती हैं। प्रथम प्रकार की दशाओं से होने वाला ध्यान अनैच्छिक ध्यान (Non-voluntary Attention) कहते हैं तथा दूसरे प्रकार की दशाओं से होने वाला ध्यान स्वाभाविक ध्यान (Habitual Attention) कहलाता है। अब हम इस प्रश्न में इन दोनों प्रकार की ध्यान की दशाओं या निर्धारकों पर विचार करेंगे।

ध्यान की दशायें या निर्धारक
[Conditions or Determinants Attention]

[अ] ध्यान की दशाओं या निर्धारकों का तालिका द्वारा प्रस्तुतीकरण

ध्यान की दशायें या निर्धारक
[Conditions or Determinants of Attention]

बाह्य या वस्तुगत दशायें या निर्धारक
[External or Objective Conditions or Determinants]

(१) स्वरूप (Nature)
(२) निश्चित रूप (Definite form)
(३) आकार (Size)
(४) परिवर्तन (Change)
(५) गति (Movement)
(६) नवीनता (Novelty)
(७) विषमता (Contrast)
(८) पुनरावृत्ति (Repetition)
(९) स्थिति काल (Duration)
(१०) तीव्रता (Intensity)
(११) स्थिति (Position)
(१२) रहस्यमयता (Veil of Secrecy)

आन्तरिक या आत्मगत दशायें या निर्धारक
[Internal or Subjective Conditions or Determinants]

(१) अभिरुचि (Interest)
(२) आवश्यकतायें (Needs)
(३) अर्थ (Meaning)
(४) उद्देश्य (Aim)
(५) आदत (Habit)
(६) गत अनुभव (Past Experience)
(७) दृष्टिकोण (Attitude)
(८) जिज्ञासा (Curiosity)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] उपर्युक्त दोनों भागों के अन्तर्गत आने वाली ध्यान की दशाओं या निर्धारकों का स्पष्टीकरण

ध्यान की बाह्य या वस्तुगत दशायें या निर्धारक
(External or Objective Conditions or Determinants of Attention)

ध्यान की बाह्य या वस्तुगत दशायें या निर्धारक निम्नलिखित हैं :—

(१) स्वरूप (Nature)—भिन्न-भिन्न स्वरूप की उत्तेजनायें हमारे ध्यान को विभिन्न अंशों में केन्द्रित करने का अवसर देती हैं। उदाहरण के लिए दृष्टि उत्तेजनाओं में से उन उत्तेजनाओं में हमारा ध्यान जल्दी केन्द्रित हो जाता है जो रंगीन होती हैं। इसके विपरीत रंगहीन उत्तेजनाओं की ओर हमारा ध्यान कम जाता है। इसी प्रकार मधुर संगीत की ओर हमारा ध्यान शीघ्र ही चला जाता है परन्तु अन्य प्रकार के शब्दों पर हम ध्यान नहीं देते। इस प्रकार उत्तेजना का स्वरूप ध्यान आकर्षित करने की एक दशा है।

(२) निश्चित स्वरूप (Definite Form)—जिन वस्तुओं का निश्चित (Definite Form) रूप होता है उनकी ओर हमारा ध्यान शीघ्र चला जाता है। इसके विपरीत जिन वस्तुओं की कोई निश्चित रूपरेखा नहीं होती है वे वस्तुयें हमारे ध्यान को कम प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिये चन्द्रमा का निश्चित रूप होने के कारण हम उस पर शीघ्र ध्यान दे देते हैं। आकाश का निश्चित रूप न होने के कारण हम उस पर ध्यान नहीं देते हैं।

(३) आकार (Size)—जिन वस्तुओं का आकार (Size) बड़ा होता है वे शीघ्र ही हमारे ध्यान का विषय बन जाती हैं। इसके विपरीत छोटे आकार की वस्तुओं पर हमारी चेतना आसानी से केन्द्रित नहीं होती है। हमारा ध्यान पूर्णिमा के चन्द्रमा की ओर शीघ्र चला जाता है क्योंकि इसका बड़ा आकार होता है। इसके विपरीत तारागण हमारा ध्यान नहीं खींच पाते हैं क्योंकि ये चन्द्रमा की अपेक्षा आकार में छोटे हैं। ध्यान को आकर्षित करने के लिये ही प्रायः विज्ञापन बड़े अक्षर में देने का प्रयास किया जाता है।

(४) परिवर्तन (Change)—जिन उत्तेजनाओं में परिवर्तन (Change) होता है वे हमारा ध्यान खींच लेती हैं। परन्तु जिन उत्तेजनाओं में आकस्मिक रूप से परिवर्तन होता है वे उत्तेजनायें बहुत ही शीघ्र हमारा ध्यान खींच लेती हैं। वे उत्तेजनायें जो अपरिवर्तनशील होती हैं वे हमारे ध्यान को बहुत कम खींच पाती हैं। चलता हुआ बिजली का पंखा हमारे ध्यान को आकर्षित कर लेता है। अगर कहीं पर एकाएक शोर बन्द हो जाता है तो हमारा ध्यान उस ओर शीघ्र चला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता है। बिजली के खम्भे की ओर हमारा ध्यान बहुत कम जाता है। इस प्रकार ध्यान के लिये उत्तेजना में परिवर्तन आवश्यक दशा है।

(५) गति (Movement)—जिन उत्तेजनाओं में गति (Movement) होती है वे उत्तेजनायें शीघ्र ही हमारे ध्यान को आकर्षित कर लेती हैं। इसके विपरीत जिन उत्तेजनाओं में गति नहीं है उन पर हमारी चेतना बहुत कम केन्द्रित होती है। चलती हुई मोटर हमारा ध्यान शीघ्र ही अपनी ओर खींच लेती है परन्तु खड़ी हुई नहीं। पिल्सबरी (Pillsbury) ने लिखा है, "जंगली जानवर शिकारी की गति से चौंक जाते हैं, जब कि वह नितान्त गतिहीन होता है तो वे उसे नहीं देख पाते। यदि एक घोड़े के रास्ते में कागज को उड़ाया जाय तो वह चौंक पड़ता है यद्यपि उसी टुकड़े के पड़े रहने से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

"Wild animals are startled by the movements of the hunter, while they fail notice him if he remains perfectly still. A horse shies when a piece of paper is blown across his path, though he would remain unaffected by the same object at rest."

—**Pillsbury.**

(६) नवीनता (Novelty)—जो वस्तुयें जिस व्यक्ति के लिए नवीन होती हैं वे उसको शीघ्र ही आकर्षित कर लेती हैं। जब कोई ग्रामीण नगर में आता है तो वहाँ की प्रत्येक वस्तु उसके ध्यान को आकर्षित करती है क्योंकि उसके लिये वहाँ की प्रत्येक वस्तु नवीन होती है। बालक को नये खिलौने, नया कोट, नई कापी, नई कलम आदि शीघ्र प्रभावित कर लेते हैं।

(७) विषमता (Contrast)—विषमता ध्यान की एक महत्वपूर्ण दशा है। यदि किसी ठिगने आदमी के पास कोई लम्बा आदमी खड़ा हो जाय तो शीघ्र ही हमारी चेतना उस पर केन्द्रित हो जायेगी। इसी प्रकार यदि गोरे आदमियों के बीच बहुत ही काला आदमी खड़ा हो जाय तो हमारा ध्यान उसी की ओर चला जायगा। इस प्रकार ध्यान के लिये उत्तेजनाओं में विषमता होना बहुत ही महत्वपूर्ण है।

(८) पुनरावृत्ति (Repetition)—जब कोई उत्तेजना बार-बार दुहराई जाय तो उस पर हमारा ध्यान आसानी से चला जाता है। परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जितनी ही उत्तेजना दुहराई जाती है उतना ही वह हमारे ध्यान को आकर्षित करती है। अगर हम उत्तेजना को बहुत अधिक दोहरायेंगे तो वह पुनरावृति (Repetition) की एक निश्चित सीमा का अतिक्रमण कर जाती है। फलस्वरूप वह उत्तेजना नीरस एवं प्रभावहीन हो जाती है और हमारा ध्यान उससे हटने लगता है। अध्यापक तीन-चार बार पाठ को दोहराता है तब तक तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विद्यार्थियों का ध्यान उस पर बना रहता है। परन्तु यदि उसकी अत्यधिक पुनरावृत्ति करता है तो विद्यार्थियों का ध्यान उस ओर से हटने लगता है।

(९) स्थितिकाल (Duration)—जो उत्तेजना कम देर तक टिकती है वह हमारा ध्यान बहुत कम खींच पाती है, परन्तु जो उत्तेजना अधिक देर तक टिकती है उस पर हमारा ध्यान आवश्यक रूप से चला जाता है। उदाहरण के लिये अगर गाना एक ही मिनट के लिये गाया जाता है तो सम्भव है कि वह हमारा ध्यान आकर्षित न कर सके परन्तु यदि कोई गाना १०-१५ मिनट तक चलता रहता है तो वह हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेता है। परन्तु यदि गाना अधिक देर तक गाया जायेगा तो एक समय एक निश्चित सीमा का अतिक्रमण कर जाता है। फलस्वरूप गाने से हमारा ध्यान हटना प्रारम्भ हो जाता है।

(१०) तीव्रता (Intensity)—निर्बल उत्तेजनाओं की अपेक्षा तीव्र उत्तेजनाओं का अधिक प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिये फीके रंग की अपेक्षा चमकीले रंग, मन्द प्रकाश की अपेक्षा तेज प्रकाश, मन्द स्वर की अपेक्षा तीव्र स्वर आदि तीव्र उत्तेजनायें हमारे ध्यान को अधिक खींचती हैं। इस प्रकार उत्तेजना की तीव्रता (Intensity) ध्यान के लिये एक महत्वपूर्ण दशा है।

(११) स्थिति (Position)—कुछ उत्तेजनायें अपनी विशेष स्थिति (Position) के कारण हमारा ध्यान आकृष्ट कर लेती हैं। उदाहरण के लिये किसी सभा में हमारा ध्यान अन्य लोगों पर न जाकर सभापति पर चला जाता है क्योंकि वह सब लोगों से भिन्न स्थिति में अर्थात् ऊँचे स्थान पर बैठा होता है। इसी प्रकार जिस उत्तेजना की अन्य उत्तेजनाओं से विशेष स्थिति होती है वह हमारी चेतना का केन्द्र बन जाती है।

(१२) रहस्यमयता (Veil of Secrecy)—सर्वसाधारण उत्तेजनाओं की अपेक्षा रहस्यमयी उत्तेजनाओं की ओर हमारा ध्यान शीघ्र चला जाता है। उदाहरण के लिये सड़क पर दो तीन आदमी सामान्य स्वर से बातचीत कर रहे होते हैं तो उनकी ओर बहुत कम ध्यान जाता है परन्तु जब वे कानाफूसी प्रारम्भ कर देते हैं तो बहुत से लोग उनकी ओर ध्यान से देखने लगते हैं। इसी प्रकार दैनिक जीवन में अन्य उदाहरण भी प्राप्त हो सकते हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि रहस्यमयता (Veil of Secrecy) से ध्यान आकृष्ट होने लगता है।

ध्यान की आन्तरिक या आत्मगत दशायें या निर्धारक

(Internal or Subjective Conditions or Determinants of Attention)

ध्यान की आन्तरिक अथवा आत्मगत दशायें या निर्धारक निम्नलिखित हैं—

(१) अभिरुचि (Interest)—जिन व्यक्तियों की जिन वस्तुओं में अभि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रुचि (Interest) होती है वे व्यक्ति उन्हीं वस्तुओं के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। विद्यार्थी का पुस्तक पर, संगीतज्ञ का संगीत पर, डाक्टर का रोगी पर, बच्चों का खिलौने पर, राजनीतिज्ञ का राजनैतिक बातों पर एवं दार्शनिक का दर्शन सम्बन्धी बातों पर शीघ्र ध्यान चला जाता है क्योंकि उनकी उनके प्रति अभिरुचि है। जेम्स (James) ने ठीक ही लिखा है, "जंगल में प्रत्येक हलचल शिकारी के लिये शिकार होता है, भगोड़े के लिये उसका पीछा करने वाला। सड़क में प्रत्येक टोपी को थोड़ी देर के लिये प्रेमी अपनी प्रेमिका की टोपी समझता है।"

"Every stir in the wood is for the hunter his game, for the fugitive his pursuers. Every bonnet in the street is momentarilly taken by the lover to enshroud the head of his idol."

—James.

(२) आवश्यकतायें (Needs)—जो वस्तुयें हमारी आवश्यकताओं (Needs) की पूर्ति करती हैं वे हमारा ध्यान शीघ्र आकृष्ट कर लेती हैं। उदाहरण के लिये यदि हमें भूख लगती है तो भोजन सामग्री पर और प्यास लगती है तो पानी पर शीघ्र ही हमारी चेतना केन्द्रित हो जाती है। इसी प्रकार अन्य आवश्यकताओं से प्रेरित होकर उनसे सम्बन्धित वस्तुओं पर हमारा ध्यान सहज ही में चला जाता है।

(३) अर्थ (Meaning)—जिन वस्तुओं का अर्थ (Meaning) हम भली भाँति समझते हैं उनके प्रति हमारा ध्यान बहुत ही आसानी से चला जाता है। उदाहरण के लिये साहित्यमर्मज्ञ का ध्यान अन्य विषयों की अपेक्षा साहित्य की ओर शीघ्र ही आकृष्ट हो जाता है। इसी प्रकार जो विद्यार्थी मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते हैं उनका ध्यान उस पर शीघ्र ही चला जाता है परन्तु यदि वे गणित को नहीं समझते हैं तो उस पर उनका ध्यान भी कम जाता है।

(४) उद्देश्य (Aim)—जो उत्तेजनायें अथवा वस्तुयें व्यक्ति के उद्देश्य (Aim) के अनुकूल होती हैं उन पर उसका ध्यान बहुत जल्दी चला जाता है। उदाहरण के लिये परीक्षा में पास होने के उद्देश्य से विद्यार्थियों का ध्यान पुस्तकों में केन्द्रित रहता है, शिक्षक जो महत्वपूर्ण प्रश्न बताते हैं उनकी ओर वे अधिक ध्यान देते हैं। इस प्रकार उद्देश्य से प्रेरित होकर व्यक्ति बहुत सी वस्तुओं में शीघ्र ही अपना ध्यान केन्द्रित कर देता है।

(५) आदत (Habit)—आदत (Habit) ध्यान की एक महत्वपूर्ण दशा (Condition) है। यह हमें किसी उत्तेजना पर ध्यान को केन्द्रित करने के लिये बाध्य करती है। उदाहरण के लिये जिस व्यक्ति को सिगरेट पीने की आदत पड़ गई है उसका ध्यान सिगरेट पर एवं जिस व्यक्ति में भाँग पीने की आदत पड़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गई है उसका ध्यान भाँग पर शीघ्र ही चला जाता है। इसी प्रकार अन्य बहुत ही आदतों के परिणामस्वरूप व्यक्ति विशेष वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित करता है।

(६) अतीत अनुभव (Past Experience)—जिन वस्तुओं का हम अनुभव कर चुके होते हैं उन पर हमारा ध्यान आसानी से चला जाता है। परन्तु जिन वस्तुओं का हमने कभी अनुमान नहीं किया है वे वस्तुयें हमें कम प्रभावित कर पाती हैं। अनुभव के द्वारा हम जिन वस्तुओं का महत्व समझ जाते हैं उन वस्तुओं में ही हमारा ध्यान केन्द्रित हो जाता है। उदाहरण के लिये जोहरी का ध्यान तो हीरे की तरफ चला जाता है परन्तु किसी अनाड़ी का नहीं।

(७) मनोवृत्ति (Attitude)—हमारी मनोवृत्ति जैसी होती है उसी के अनुरूप वस्तुओं पर हमारा ध्यान चला जाता है। मनोवृत्ति के ही कारण हम सर्वदा मित्रों के सद्‌गुणों पर एवं शत्रुओं के दुगुणों पर ध्यान देते हैं। एक बात जानना और भी आवश्यक है, वह यह है कि प्रत्येक मनुष्य की मनोवृत्ति दूसरे मनुष्यों से कुछ-न-कुछ भिन्न होती है। फलस्वरूप प्रत्येक की ध्यान की जाने वाली वस्तुयें भी भिन्न-भिन्न होती हैं। इसीलिए शरीरशास्त्रज्ञ (Physiologist) का ध्यान लोगों की शारीरिक बनावट पर केन्द्रित होता है और मनोवैज्ञानिक (Psychologist) का ध्यान उसके व्यवहार पर। इस ध्यान को केन्द्रित करने में मनोवृत्ति (Attitude) का बहुत प्रभाव पड़ता है।

(८) जिज्ञासा (Curiosity)—जब व्यक्ति की जिज्ञासा प्रवृत्ति बहुत ही बलवती होती है तो वह प्रत्येक नवीन एवं रहस्यमयी घटना पर ध्यान देने का प्रयत्न करता है। इसी जिज्ञासा के ही कारण व्यक्ति नाना प्रकार की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित कर उन पर विचार करता है और भविष्य में महान दार्शनिक बन जाता है। इस प्रकार जिज्ञासा (Curiosity) प्रवृत्ति की प्रेरणा से बहुत सी उत्तेजनाओं में ध्यान केन्द्रित होता है।

उपसंहार (Conclusion)

हम ध्यान की दशाओं या निर्धारकों (Condition or Determinants of Attention) को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित कर सकते हैं बाह्य तथा वस्तुगत दशायें या निर्धारक (External or Objective Conditions or Determinants) एवं आन्तरिक अथवा आत्मगत दशायें या निर्धारक (Internal or Subjective Conditions or Determinants)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बाह्य अथवा वस्तुगत दशायें या निर्धारक—(१) स्वरूप, (२) निश्चित रूप (३) आकार, (४) परिवर्तन, (५) गति, (६) नवीनता, (७) विषय, (८) पुनरावृत्ति, (९) स्थितिकाल, (१०) तीव्रता, (११) स्थिति एवं (१२) रहस्यमयता आन्तरिक अथवा आत्मगत दशायें या निर्धारक—(१) अभिरुचि, (२) आवश्यकतायें, (३) अर्थ, (४) उद्देश्य, (५) आदत, (६) अतीत अनुभव, (७) मनोवृत्ति और (८) जिज्ञासा किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करने के लिये इनमें से एक या एक से अधिक दशायें या निर्धारक सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

२०

ध्यान : अनवधान, चंचलता, विघ्न एवं विभाजन

[Attention : Inattention, Fluctuation, Distraction and Division]

प्रश्न संख्या—२०

संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए—अनवधान, ध्यान की चंचलता, ध्यान में विघ्न तथा ध्यान का विभाजन।

Write short notes on—Inattention, Fluctuation of Attention, Distraction of Attention and Division of Attention.

भूमिका (Introduction)

ध्यान से सम्बन्धित हम अनेक बातों को सामान्य जीवन में लोगों के मुँह से सुनते हैं—जैसे 'क्या करूँ पिता जी मैं पुस्तक पढ़ने की बहुत कोशिश करती हूँ किन्तु मेरा मन लगता ही नहीं है' (**अनवधान**), 'यह बालक बहुत ही चंचल प्रकृति का है, इसका मन किसी बात पर स्थिर ही नहीं रहता' (**ध्यान की चंचलता**), 'कल सुबह मेरा पेपर है पड़ोस में लाउडस्पीकर बज रहा है, पड़ोस में शादी क्या हो रही है मेरी तो बर्बादी हो रही है' (**ध्यान में विघ्न**), 'आपका पुत्र होनहार प्रतीत होता है यह एक ही समय में दो-तीन काम कर डालता है' (**ध्यान का विभाजन**) इत्यादि। इसी प्रकार अनवधान (Inattention), ध्यान की चंचलता (Fluctuation of Attention), ध्यान में विघ्न या ध्यान—विच्छेदन (Distraction of Attention) तथा ध्यान में विभाजन (Division of Attention) के अन्य अनेक उदाहरण हम अपने दैनिक जीवन में पा सकते हैं। इस प्रश्न में इन्हीं सबकी जानकारी प्राप्त करने के लिये इन पर हम क्रमशः संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अनवधान (Inattention)

[अ] अनवधान का अर्थ (Meaning of Inattention)

जब हम किसी वस्तु पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो हमारा मन उस वस्तु पर स्थिर हो जाता है। किन्तु हमारा मन उसी वस्तु पर तो स्थिर नहीं बना रहता है। थोड़ी ही देर बाद उस वस्तु से हटकर हमारा मन दूसरी वस्तु में चला जाता है। उदाहरण के लिए किसी समय हमारा मन टेबुल पर रक्खी हुई पुस्तक पर केन्द्रित होता है। थोड़ी देर बाद हमारा मन पुस्तक से हटकर टेबुल लैंम्प पर चला जाता है। मन को किसी वस्तु से हटाने की प्रक्रिया को अनवधान (Inattention) कहते हैं। किन्तु जैसा कि उदाहरण से स्पष्ट होता है, अनवधान का तात्पर्य ध्यान का अभाव तो नहीं है। किसी एक वस्तु पर अनवधान का तात्पर्य किसी अन्य वस्तु पर ध्यान केन्द्रित कर लेना है। वास्तव में सामान्य जीवन में पूर्ण अनवधान सम्भव ही नहीं है। स्टाउट ने इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि "सामान्य जाग्रत जीवन में पूर्ण अनवधान बिलकुल अपवादस्वरूप है। यह आकस्मिक एवं तीव्र आवेश के धक्के से हो सकता है। यह सोने की तैयारी की अवस्था में भी होता है अन्यथा सामान्य जाग्रत जीवन में ऐसा मालूम होता है कि हम सदैव किसी न किसी वस्तु पर ध्यान देते हैं।" उपर्युक्त शब्दों से भली भाँति स्पष्ट है कि—**अनवधान का तात्पर्य उस मानसिक प्रक्रिया से है जिसमें हमारा मन किसी एक वस्तु, घटना या परिस्थिति से हट जाता है जिसके परिणामस्वरूप हमारा ध्यान दूसरी वस्तु, घटना या परिस्थिति में लग जाता है।**

[ब] अनवधान के प्रकार (Kinds of Inattention)

अनवधान निम्नलिखित दो प्रकार का हो सकता है :—

(१) सापेक्ष या आँशिक अनवधान (Relative Inattention)—सापेक्ष अनवधान वह अनवधान है जिसमें हमारा मन किसी एक वस्तु से हटकर दूसरी वस्तु में चला जाता है। आंशिक अनवधान हमारे मानसिक जीवन में लगातार बना रहता है। आंशिक अनवधान के अन्तर्गत आने वाली वस्तुएँ चेतना के सीमा-प्रदेश (Margin of Consciousness) या अनवधान के क्षेत्र (Field of Inattention) में धुंधले अंकन बनाती है।

(२) पूर्ण अनवधान (Absolute Inattention)—जब हमारा मन किसी भी वस्तु पर केन्द्रित नहीं होता है तो इसे पूर्ण अनवधान कहते हैं। वास्तव में जाग्रत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जीवन में पूर्ण अनवधान सम्भव नहीं है। दूसरे शब्दों में सामान्य जाग्रत जीवन में पूर्ण अनवधान नाम की कोई चीज नहीं होती है। पूर्ण अनवधान तो सुसुप्तावस्था में ही सम्भव है।

ध्यान की चंचलता या अस्थिरता
(Fluctuation of Attention)

[अ] ध्यान की चंचलता का अर्थ (Meaning of Fluctuation)

पाठकों ने अनुभव किया होगा कि जब भी वे किसी वस्तु या आवाज या अन्य किसी उत्तेजना पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो उनका ध्यान बहुत देर तक उस वस्तु या आवाज या उत्तेजना पर देर तक स्थिर नहीं रह पाता है। एक वस्तु या उत्तेजना से जब दूसरी वस्तु या उत्तेजना पर ध्यान चला जाता है तो इस प्रक्रिया को ध्यान का परिवर्तन (Shifting of Attention) कहते हैं। किन्तु जब एक ही वस्तु पर ध्यान लगाए रहने पर भी उस वस्तु पर ध्यान की मात्रा घटती बढ़ती है अथवा कभी उस वस्तु पर ध्यान लगा रहता है कभी टूट जाता है तो इस प्रकार को ध्यान की चंचलता या अस्थिरता (Fluctuation of Attention) कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि हम एक घड़ी को इतनी दूर रख दें कि केवल उसकी टिक-टिक की आवाज सुनाई दे तो हम यह पायेंगे कि

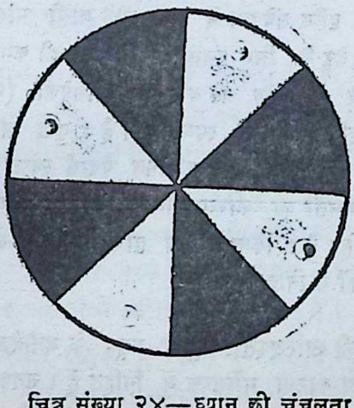

चित्र संख्या २४—ध्यान की चंचलता

कभी तो टिक-टिक की ध्वनि सुनाई देती है कभी नहीं। इसी प्रकार यदि हम आकाश पर किसी टिमटिमाते हुये तारे की ओर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो कभी तो हमारा ध्यान तारे पर केन्द्रित हो जाता है और कभी हट जाता है। पिछले पृष्ठ पर दिये हुये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्र को देखिए। इस चित्र में आप कुछ क्षणों तक सफेद पृष्ठभूमि (Background) पर काला रंग एवं कुछ क्षणों बाद काली पृष्ठभूमि पर सफेद रंग देखेंगे। इसी प्रकार नित्यप्रति के अनुभव के आधार पर ध्यान की चंचलता के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं। इन समस्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि ध्यान चंचल या अस्थिर प्रकृति का होता है। बिलिंग्स (Billings) महोदय ने अपने अध्ययनों के आधार पर बतलाया है कि सामान्य मनुष्य का ध्यान किसी वस्तु पर पांच सेकेण्ड से अधिक देर तक नहीं ठहरता है।

[ब] ध्यान की चंचलता के कारण
(Causes of Fluctuation of Attention)

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार ध्यान की चंचलता का कारण या तो ग्राहकों (Receptors) के नियमन में परिवर्तन हो सकता है या मस्तिष्क (Brai) की अस्थिरता का परिणाम या दोनों कारण संयुक्त रूप से ध्यान की चंचलता के लिये उत्तरदायी हैं। नीचे हम इन दोनों कारणों पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं।

(१) ग्राहकों के नियमन में परिवर्तन—कुछ मनोवैज्ञनिकों का विचार है कि ध्यान की चंचलता का कारण ग्राहकों में निहित है। उदाहरण के लिए उनका कथन है कि दृष्टि की चंचलता दृष्टि संवेदना में प्रयुक्त होने वाली मांसपेशियों का परिणाम है। ये मांशपेशियाँ कुछ देर के लिए पदार्थ की स्पष्टता को कम कर देती हैं। किसी वस्तु को लगातार देखने से आंख की वलिकाय मांसपेशी (Ciliary Muscle) थक जाती हैं, जिससे दृष्टिगत वस्तु स्पष्ट नहीं है। कुछ क्षणों के उपरान्त इस मांशपेशी की थकान समाप्त होने के बाद-दृष्टिगत पदार्थ स्पष्ट हो जाता है। अतः स्पष्ट है कि ध्यान की चंचलता का कारण वलिकाय मांशपेशी की थकान एवं थकान दूर होने के समय में निहित है। किन्तु प्रयोगों द्वारा यह पता लगा है कि ध्यान की चंचलता का कारण ग्राहकों में निहित नहीं है।

(२) मस्तिष्क की अस्थिरता—दूसरे समूह के मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि ध्यान की चंचलता का कारण मस्तिष्क में निहित है। उनका कथन है कि ध्यान की चंचलता का कारण बल्कीय कोषों (Cortical cells) की थकान हैं। जहाँ तक ध्यान की चंचलता के नियमन का प्रश्न है वहाँ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि शरीर में रक्तसंचार की गति एवं सांस लेने की क्रिया के आरोह-अवरोह इसके लिए उत्तरदायी हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप
(Distraction of Attention)

[अ] ध्यान में विघ्न या ध्यान-विक्षेप का अर्थ
(Meaning of Distraction of Attention)

हम प्रायः देखते हैं कि जिस समय हम किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति में ध्यान देते हैं तो अन्य वस्तुयें, घटनायें या परिस्थितियाँ हमारा ध्यान भंग कर देती हैं अर्थात् वे हमारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। उदाहरण के लिये जिस समय हम कमरे में बैठे हुये पुस्तक-अध्ययन में अपना ध्यान लगाये होते हैं उस समय पड़ोस में बजता हुआ लाउडस्पीकर हमारा ध्यान भंग कर देता है। ध्यान भंग करने वाली अन्य कई वस्तुयें हो सकती हैं। ध्यान भंग करने वाली वस्तु को हम ध्यान-बाधक (Distraction) कहते हैं। ध्यान भंग होने वाली इस प्रक्रिया को ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप कहते हैं। दूसरे शब्दों में ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप का तात्पर्य उस मानसिक प्रक्रिया से है जिसमें किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति पर लगा हुआ हमारा ध्यान ध्यान-बाधक के कारण भङ्ग हो जाता है या बँट जाता है।

[ब] ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप के प्रकार
(Kinds of Distraction of Attention)

ध्यान में विघ्न या ध्यान-विक्षेप के निम्नलिखित दो प्रकार होते हैं।—

(१) **निरन्तर ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप (Continuous Distraction of Attention)**—जैसा कि नाम से स्पष्ट है, निरन्तर ध्यान में विघ्न की स्थिति में हमारा ध्यान निरन्तर भंग बना रहता है। उदाहरण के लिए लाउडस्पीकर, रेडियो या ग्रामोफोन की आवाज, बाजार का निरन्तर शोर आदि हमारा ध्यान निरन्तर भंग करते हैं। प्रयोगों के द्वारा यह सिद्ध हुआ है कि निरन्तर ध्यान में विघ्न से व्यक्ति का शीघ्र और आसानी से अभियोजन हो जाता है।

(२) **अनिरन्तर ध्यान में विघ्न या ध्यान-विक्षेप (Discontinuous Distraction of Attention)**—जब हमारा ध्यान रुक-रुक कर भंग होता है तो उसे अनिरन्तर ध्यान में विघ्न या ध्यान-विक्षेप कहते हैं। उदाहरण के लिये कभी-कभी किसी की बीच में बोलने की आवाज सुनाई देना अनिरन्तर ध्यान से व्यक्ति बड़ी मुश्किल से अभियोजना कर पाता है। अतः यह कार्य में बाधक सिद्ध होता है। कभी-कभी अनिरन्तर ध्यान में विघ्न से व्यक्ति भयभीत हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप का कार्यक्षमता पर प्रभाव

(Influence of Distraction of Attention on Efficiency)

सामान्यरूप से लोगों का विचार है कि ध्यान में विघ्न पड़ने के कारण कार्यक्षमता गिर जाती है। किन्तु यह बात नितान्त सत्य नहीं है। कदाचित हमने देखा होगा कि काम करते समय अनेक मजदूर स्त्री पुरुष गाते हैं जिससे कि उनकी कार्य करने की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। बहुत से लोग शोर में इतना अच्छा काम करते हैं जितना कि वे शान्त वातावरण में नहीं कर पाते हैं। कई लोग लिखते पढ़ते समय रेडियो को सुनने के अभ्यस्त हो जाते हैं। मार्गन (Morgan) ने प्रयोगों द्वारा यह ज्ञात किया कि ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप से पहले तो टाइप की गति कुछ घटी किन्तु बाद में पुनः पूर्ववत् हो गई और कुछ दिनों के बाद यह गति बढ़ गई। इतना ही नहीं बल्कि ध्यान विक्षेप का अभाव कर देने से गति कम हो गई। इसके विपरीत वेबर (Weber) महोदय ने कुछ प्रयोगों में ध्यान में विघ्न के कारण कार्यक्षमता में कमी आ जाना ज्ञात किया। वास्तविकता यह है कि ध्यान में विघ्न के कारण कार्यक्षमता बढ़ेगी या घटेगी यह बहुत कुछ कार्य करने वाले व्यक्ति की योग्यता, रुचि, अभिवृत्ति तथा मनोवृत्ति और कार्य के रूप पर निर्भर है। यदि ध्यान में विघ्न व्यक्ति के अनुकूल होगा तो कार्यक्षमता बढ़ेगी किन्तु यदि ध्यान में विघ्न व्यक्ति के प्रतिकूल हुआ तो कार्यक्षमता में कमी आ जाना स्वाभाविक है।

[द] ध्यान में विघ्न या ध्यान-विक्षेप को दूर करने के उपाय

(Measures to Remove the Distraction of Attention)

ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप को दूर करने के निम्नलिखित उपाय हैं:—

(१) सक्रिय रूप से कार्य करना—जिस समय कार्य करते समय ध्यान में विघ्न पड़ रहा हो तो कार्य करने में अधिक शक्ति लगा देनी चाहिये जिससे कि अध्ययन के उपरान्त ध्यान में विघ्न से अभियोजन स्थापित हो जायगा। उदाहरण के लिए यदि पढ़ते समय ध्यान में विघ्न पड़ रहा हो तो ऊँची आवाज से पढ़ना प्रारम्भ किया जा सकता है। इस प्रकार ध्यान में विघ्न को दबाने के लिये सक्रिय रूप से कार्य करना अति प्रभावशाली होता है।

(२) ध्यान-विक्षेप को कार्य का अंग बना लेना:—ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप को यदि कार्य का अंग बना लिया जाय तो व्यक्ति पर उसका कोई प्रभाव न पड़ेगा। इससे व्यक्ति के ध्यान का विभाजन न हो पायेगा और उसका ध्यान कार्य करने में केन्द्रित बना रहेगा। हमने देखा है कि कुछ व्यक्ति कार्य करते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के साथ रेडियो की आवाज को कार्य का अंग बना लेते हैं जिससे ध्यान में विघ्न पड़ने का पृथक रूप से कोई प्रश्न हो नहीं उठता है। वास्तव में ध्यान विक्षेप को कार्य का अंग बना लेना अति कठिन है। उसके लिए व्यक्ति सामर्थ्य, रुचि, स्वभाव तथा अभिवृत्ति का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

ध्यान-विक्षेप की उपेक्षा—ध्यान में विघ्न को दूर करने के लिये ध्यान में पड़ने वाले विघ्न की उपेक्षा की जाय तो सबसे अच्छा है। यदि व्यक्ति ध्यान भंग करने वाली वस्तु की ओर अपना ध्यान न देगा तो ध्यान में विघ्न पड़ ही नहीं सकता है। यदि कोई व्यक्ति ध्यान-विक्षेप की उपेक्षा करने की सामर्थ्य रखता हो तो उस पर उसका कोई प्रभाव न पड़ सकेगा।

ध्यान का विभाजन
(Division of Attention)

[अ] ध्यान के विभाजन का अर्थ
(Meaning of Division of Attention)

हमने बहुत से लोगों के विषय में सुना है कि वे एक ही समय में दो या तीन कार्य सम्पादित कर सकते हैं। नैपोलियन के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि वह एक बार में बहुत से पत्र लिखवाता था। प्रसिद्ध विद्वान तथा क्रांतिकारी लाला-हरदयाल एक ही समय में बहुत से कार्य जैसे पत्र लिखवाना, ब्रिज के खेल में तास के पत्तों की चाल बतलाना, शतरंज के मोहरों की चाल बताना इत्यादि करते थे। **सामान्य तौर से एक समय में दो या तीन कार्यों को सम्पादित करना ध्यान का विभाजन (Division of Attention) कहा जाता है।**

[ब] ध्यान का विभाजन सम्भव नहीं है
(Division of Attention is not Possible)

उपर्युक्त शब्दों में हमने ध्यान का विभाजन का अर्थ प्रस्तुत किया। किन्तु वास्तविकता यह है कि ध्यान का विभाजन सम्भव ही नहीं है। मनोवैज्ञानिक प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि एक समय में हम दो या तीन वस्तुओं, घटनाओं या परिस्थितियों में अपना ध्यान केन्द्रित नहीं कर सकते हैं क्योंकि एक समय में एक ही वस्तु पर ध्यान लगाया जा सकता है। हम एक समय में दो या तीन कार्यों को सम्पादित कर सकते हैं ऐसी निम्नलिखित तीन सम्भावनाओं के कारण हो सकता है :—

(१) वास्तव में दो कार्यों में से एक स्वतः हो जाता है। फलस्वरूप उसमें ध्यान देने की जरूरत नहीं होती है। ऐसी स्थिति में व्यक्ति एक समय में अपना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समग्र ध्यान एक कार्य में लगाता हुआ दूसरे कार्य को भी करने में समर्थ हो जाता है। इस प्रकार एक समय में दो कार्यों का सम्पादित करने का तात्पर्य ध्यान का विभाजन नहीं है।

(२) जब एक कार्य दूसरे कार्य का अंग बन जाता है तब हम दो कार्यों को एक इकाई (Single unit) के रूप में ग्रहण करते हैं। ऐसी स्थिति में दो कार्यों को सम्पादित करने में ध्यान के विभाजन का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है।

(३) हम जिन लोगों के सम्बन्ध में यह कहते हैं कि वे दो या तीन कार्यों को एक समय में करते हैं, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि वे एक समय में दो या तीन कार्यों को सम्पादित करते हैं, बल्कि इससे हमारा केवल यह अभिप्राय है कि वे जल्दी-जल्दी एवं एक कार्य से दूसरे कार्य में अपना ध्यान ले जाते हैं जिससे प्रायः हम कह देते हैं कि वे एक समय में दो या तीन कार्य करते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि हमें जल्दी-जल्दी ध्यान का एक कार्य से दूसरे कार्य में लगाने को ध्यान का विभाजन नहीं समझना चाहिये।

उपर्युक्त तीनों सम्भावनाओं से स्पष्ट है कि ध्यान का एक समय अनेक कार्यों में बँटना असम्भव है। टिचनर (Titchener) तथा ह्विपुल (Whipple) ने इस तथ्य की पुष्टि करते हुये लिखा है :—

"Simultaneity of two psychologically disparate attentions is, in my experience, altogether impossible." —Titchener.

"If both activities are difficult, attention alternates between them and the activity not attended at any moment is temporarily reduced, if not altogether suspended, and if one activity is relatively easy it becomes, after short practice, reduced to automatism so that attention can be given freely to the other."

—Whipple.

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने देखा कि अनवधान का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें हमारा मन किसी एक वस्तु, घटना या परिस्थिति से हट जाता है। अनवधान के प्रकार—(१) सापेक्ष या आंशिक अनवधान तथा (२) पूर्ण अनवधान। जब एक वस्तु पर ध्यान लगाये रहने पर भी उस वस्तु पर ध्यान की मात्रा घटती बढ़ती है अथवा कभी उस वस्तु पर ध्यान लगा रहता है कभी टूट जाता है तो इस प्रक्रिया को ध्यान की चंचलता कहते हैं। ध्यान की चंचलता के दो कारण हो सकते हैं—(१) ग्राहकों के नियमन में परिवर्तन तथा (२) मस्तिष्क की अस्थिरता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

ध्यान में विघ्न या ध्यान विक्षेप का तात्पर्य उस मानसिक प्रक्रिया से है जिससे किसी वस्तु, घटना या परिस्थिति पर लगा हुआ हमारा ध्यान ध्यान-बाध्य के कारण भंग हो जाता है। ध्यान में विघ्न के दो प्रकार होते हैं—(१) निरन्तर ध्यान में विघ्न तथा (२) अनिरन्तर ध्यान में विघ्न। ध्यान में विघ्न को दूर करने के उपाय—(१) सक्रिय रूप से कार्य करना, (२) ध्यान विक्षेप को कार्य का अंग बना लेना तथा (३) ध्यान विक्षेप की उपेक्षा। सामान्य तौर से एक समय में दो या तीन कार्यों को सम्पादित करना ध्यान का विभाजन कहा जाता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि ध्यान का विभाजन सम्भव ही नहीं है। दूसरे शब्दों में ध्यान का एक ही समय अनेक कार्यों में बटना सम्भव नहीं है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२१

स्मृति : स्वरूप, तत्व और अनुकूल दशायें

(Memory : Nature, Factors and Favourable Conditions)

प्रश्न संख्या–२१

स्मृति क्या है ? स्मृति के तत्वों का विश्लेषण कीजिये एवं उनकी प्रकृति बतलाइये। स्मृति की अनुकूल दशायें या हेतुओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

What is memory ! Analyse the factors in memory and briefly indicate their nature. Describe the conditions favourable in memorization.

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान व्यक्ति की **'मानसिक प्रक्रियाओं'** (Mental Processes) का अध्ययन करता है। इन मानसिक प्रक्रियाओं में स्मृति (Memory) का विशिष्ट स्थान है क्योंकि स्मृति एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक तरफ संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान आदि मानसिक प्रक्रियाओं को लाभप्रद बनाती है तो दूसरी तरफ यह कल्पना, सीखना, चिन्तन, तर्क, निर्णय आदि मानसिक प्रक्रियाओं की आधार है। वास्तव में व्यक्ति को पर्यावरण से **'अभियोजन'** (Adjustment) स्थापित करने में स्मृति का अति महत्वपूर्ण स्थान है। यदि मनुष्य की स्मृति-प्रक्रिया रोक दी जाय तो उसका जीवन थोड़े दिनों तक भी नहीं चल सकता है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर स्मृति क्या है ? स्मृति प्रक्रिया के अन्तर्गत किन-किन तत्वों का समावेश होता है ? स्मृति में कौन-कौन सी अनुकूल दशायें हैं आदि ? इन्हीं सभी बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिये इस प्रश्न में हमें स्मृति का स्वरूप (Nature of Memory), अच्छी स्मृति के लक्षण (Marks of Good Memory)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

स्मृति के तत्व या अंग (Factors of Memory) तथा स्मृति की अनुकूल दशायें या हेतु (Favourable Conditions in memorization) प्रस्तुत करेंगे।

स्मृति का अर्थ एवं परिभाषा

(Meaning and Definition of Memory)

[अ] स्मृति का अर्थ (Meaning of memory)

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने प्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया है कि स्मृति कोई मानसिक शक्ति नहीं है वरन् यह एक मानसिक क्रिया है। इस मानसिक क्रिया द्वारा मनुष्य अपने भूत-कालीन अनुभवों को जो कि मानसिक (Mental disposition) के रूप में उसके अचेतनात्मक (Unconscious mind) में निवास करते हैं अपनी वर्तमान चेतना (Present Consciousness) में लाता है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति १० वीं कक्षा में प्रथम स्थान पाने के उपलक्ष में १५ साल पूर्व प्राप्त पुरस्कार के सम्बन्ध में विचार कर रहा है जब कि इस समय न तो वह दशवीं कक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ है और न उसे कोई पुरस्कार दिया जा रहा है, यह कैसे ? इसका कारण यह है कि यह पुरस्कार पाने की घटना १५ साल पहले उसके मस्तिष्क में 'संस्कार' के रूप में संचित हो गई थी, आज वह पुनः वर्तमान चेतना में आ गयी है। इसी संस्कार के रूप में संचित घटना को पुनः वर्तमान में लाने की मानसिक प्रक्रिया को स्मृति कहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि **भूत-कालीन अनुभवों को वर्तमान चेतना में लाने की प्रक्रिया को स्मृति या स्मरण (Memory) कहते हैं।**

[ब] स्मृति की परिभाषा (Definition of Memory)

(१) **मैकडूगल**—"स्मृति का तात्पर्य भूतकालीन घटनाओं के अनुभव की कल्पना करना है एवं यह पहचान लेना है कि वह अपने ही भूतकालीन अनुभव हैं।"

"Memory implies imagining of events as experienced in the past and recognizing them as belonging to one's own past experience." **—Mc Dougall.**

(२) **प्रो० स्टाउट**—"स्मृति एक आदर्श पुनरावृत्ति है जिससे कि अतीत-कालीन अनुभव के पदार्थ क्रम एवं ढंग में जागृत होते हैं जैसे कि वे पहले उपस्थित हुये थे।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Memory is the ideal revival in which the objects of past experience are reinstated as far as possible in the order and manner of their original occurrence." —Prof. Stout.

(३) विलियम जेम्स—"स्मृति चेतना से विलग हो जाने के पश्चात् मन की एक अतीत दशा का ज्ञान है; यह (स्मृति) एक घटना या तथ्य का ज्ञान है जिसके सम्बन्ध में हम मध्यवर्ती-काल में सोच भी नहीं रहे थे, एवं साथ ही यह अतिरिक्त चेतना भी है कि पहिले उसे सोचा या अनुभव किया है।"

"Memory is the knowledge of a former state of mind after it has already once dropped from consciousness, or rather it is the knowledge of an event, or fact which mean time we have not been thinking which the additional consciousness, that we thought or experienced it before."

—Willian James.

(४) जे० एस० रॉस—"स्मृति एक नया अनुभव है जो उस मन की व्यवस्थाओं द्वारा निश्चित होता है जिसका आधार एक पूर्व अनुभव है, एवं दोनों के बीच का सम्बन्ध स्पष्ट समझा जाता है।"

"A memory is a new experience determined by the disposition laid down by previous experiences the relation between the two being clearly apprehended." —J. S. Ross.

(५) वुडवर्थ—"पूर्व समय में सीखी हुई बातों को याद करना ही स्मृति है।"

"Memory consists in remembering what has been learned previously."

—Woodworth.

अच्छी स्मृति के लक्षण
(Marks of good Memory)

अच्छी स्मृति के निम्नलिखित लक्षण हैं—

शीघ्र याद होना (Rapidity of Learning)—अच्छी स्मृति का प्रथम लक्षण है शीघ्र याद होना। हम उस बालक या व्यक्ति की स्मृति को अच्छी कहते हैं जो कि किसी विषय अथवा पाठ को शीघ्र ही याद कर लेता है।

(२) धारणा का स्थायित्व (Permanence of Retention)—अच्छी स्मृति का शीघ्र याद होने के साथ द्वितीय लक्षण है धारणा का स्थायित्व। जो व्यक्ति जितने अधिक समय तक किसी विषय को याद किये रहता है उसकी स्मृति उतनी ही अच्छी होती है।

(३) उपादेयता (Serviceableness)—अच्छी स्मृति उसी को कहा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जायगा जो अवसर आने पर उपयोगी सिद्ध हो। उदाहरण के लिये यदि एक बालक परीक्षा दे रहा है और उसने जो भी बातें याद की हैं वे सब उसको आवश्यकतानुसार याद आ रही हैं तो उसकी स्मृति को अच्छी स्मृति कहा जायगा।

(४) व्यर्थ की बातों को भूलना (Forgetting of Useless Things)—व्यर्थ की बातों को भूलना भी अच्छी स्मृति का आवश्यक लक्षण कहा जाता है। अगर किसी मनुष्य को जीवन पर्यन्त दुखद घटनाएँ (Unpleasant) याद आती रहें तो उसकी ऐसी स्मृति से क्या लाभ।

(५) पुनःस्मरण में यथार्थता (Accuracy of Recall)—अच्छी स्मृति का अन्तिम किन्तु महत्वपूर्ण लक्षण है—पुनः स्मरण में यथार्थता। जो व्यक्ति एक बार किसी पाठ को याद कर लेता है और यदि वह उस पाठ का पुनः स्मरण (Recall) करता है तो वह उसकी चेतना में उसी प्रकार आ जाता है जैसा कि उसने उसे धारण किया था तो उसकी अच्छी स्मृति कहलायेगी। इसी प्रकार पुनः स्मरण में यथार्थता (Accuracy of Recall) अच्छी स्मृति का एक आवश्यक लक्षण है।

स्मृति के तत्व (Factors of Memory)

स्मृति के तत्व (अंग)—निम्नलिखित हैं—

[१] सीखना अथवा शिक्षण (Learning)

स्मरण करने के लिए सीखने की बहुत आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में बिना सीखे या अनुभव किये हम किसी वस्तु या कार्य का स्मरण नहीं कर सकते हैं। फलस्वरूप हम किसी वस्तु या कार्य को सीखने के लिये उसे बार-बार दुहराते हैं, उसका अर्थ समझने का प्रयास करते हैं एवं मन पर उसकी गहरी छाप डालने के लिये उस वस्तु या कार्य को दूसरी वस्तुओं या कार्यों से सम्बन्धित करते हैं। सारांश यह है कि स्मरण सीखने पर आधारित है।

[२] धारणा (Retention)

सीखने के द्वारा जो सम्बन्ध हुए हैं उनका कायम रहना धारणा है। जब हम किसी बात को बार-बार ध्यान देकर सीखते हैं तब यह पाठ हमारे मस्तिष्क में मानसिक संस्कार (Mental desposition) के रूप में अधोचेतन-अंकन (Subconscious-impression) बनाता है। इस प्रकार व्यक्ति के अतीतकालीन अनुभवों का मानसिक संस्कार के रूप में उसके मन के अधोचेतन-स्तर (Subconscious-level) में रहना धारणा है। धारणा को हम जैविक प्रक्रिया (Biological process) होने के कारण देख तो नहीं सकते हैं परन्तु प्रत्याह्वान (Recall), प्रत्यभिज्ञा (Recognition) एवं पुनर्शिक्षण (Relearning)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की प्रतिक्रियाओं द्वारा इसका प्रभाव भली-भांति प्राप्त कर सकते हैं। स्मृति धारणा पर ही निर्भर होती है।

[३] प्रत्याह्वान या पुनःस्मरण (Recall)

भूतकालीन अनुभवों के अघोचेतन संस्कारों को चेतना में लाना ही प्रत्याह्वान या पुनःस्मरण है। उदाहरण के लिये पुरानी किसी सीखी हुई बात, जो कि मानसिक संस्कार के रूप में अघोचेतन मन में अंकित है उसे चेतना में लाना प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण है। हमें यह घ्यान रखना चाहिये कि प्रत्याह्वान केवल उन्हीं वस्तुओं का होता है जिन वस्तुओं की धारणा रहती है। वास्तव में धारणा एवं प्रत्याह्वान स्मरण के मुख्य तत्व अथवा अंग हैं। प्रत्याह्वान अथवा पुनः स्मरण निम्न ४ प्रकार का होता है :—

(१) **स्वत: पुन: स्मरण (Spontaneous Recall)**—जब हम किसी विषय को बिना किसी प्रयास के पुनः स्मरण (Recall) करते हैं तो इस प्रकार के पुनः स्मरण को स्वत पुनः स्मरण (Spontaneoss Recall) कहते हैं।

(२) **प्रयासमय पुन: स्मरण (Deliberate Recall)**—पूर्व अनुभवों को प्रयासपूर्वक पुनः स्मरण करने की मानसिक प्रक्रिया को प्रयासमय पुनः स्मरण (Deliberate Recall) कहते हैं। दूसरे शब्दों में याद की हुई बात को प्रयत्न करके पुनः याद करना प्रयासमय पुनः स्मरण है।

(३) **प्रत्यक्ष पुन: स्मरण (Direct Recall)**—जब हमारे पूर्व अनुभव बिना किसी की सहायता के प्रत्यक्ष रूप से हमारे सामने आ जाते हैं तो इस प्रकार के पुनः स्मरण को प्रत्यक्ष स्मरण (Direct Recall) कहते हैं।

(४) **अप्रत्यक्ष पुनः स्मरण (Indirect Recall)**—जब हमें कोई प्राचीन अनुभव उससे सम्बन्धित अनुभव के याद आ जाने से याद आ जाते हैं तो उसे अप्रत्यक्ष पुनः स्मरण (Indirect Recall) कहते हैं। उदाहरण के लिये यदि हमें अपने स्कूल की याद आ जाती है तो अपने मित्रों की भी याद आ जाती है। यहाँ पर मित्रों की याद आ जाना अप्रत्यक्ष पुनः स्मरण है।

[४] प्रत्यभिज्ञा अथवा पहचान (Recognition)

स्मृति का अन्तिम किन्तु महत्वपूर्ण तत्व है—प्रत्यभिज्ञा अथवा पहचान (Recognition)। प्रत्यभिज्ञा वह मानसिक प्रक्रिया (Mental process) है जिसमें व्यक्ति जिस पूर्व अनुभव की हुई वस्तु का पुनः स्मरण (Recall) करता है उसे वह अच्छी तरह से पहचान जाता है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति को जब वह विद्यार्थी था प्रधानाध्यापक ने पारितोषिक प्रदान किया था। जब वह प्रधानाध्यापक का पुनः स्मरण (Recall) करता है तो वह उन्हें पहचान जाता है कि जिनका मैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुनः स्मरण कर रहा हूँ वे ही प्रधानाध्यापक हैं जिन्होंने मुझे पारितोषिक प्रदान किया था। इसके साथ-साथ व्यक्ति इस मानसिक प्रक्रिया द्वारा अपनी परिचित अपरिचित वस्तुओं के भेद का भी ज्ञान प्राप्त करता है। मनोवैज्ञानिकों ने प्रत्यभिज्ञा अथवा पहचान निम्नलिखित चार प्रकार की बतलाई है—

(१) गुप्त पहचान (Implicit Recognition)—यह पहचान प्राथमिक स्वरूप की होती है एवं निम्नकोटि के जानवरों में पाई जाती है। जानवर का अपने मालिक की आवाज पहचान जाना गुप्त पहचान (Implicit Recognition) का रूप है।

(२) बाह्य पहचान (Explicit Recognition)—बाह्य पहचान उच्च कोटि के जानवरों एवं मनुष्यों में प्राप्त होती है। विचार करना, निर्णय देना, तुलना करना आदि बाह्य पहचान (Explicit Recognition) के उदाहरण हैं।

(३) निश्चित पहचान (Definite Recognition)—जब व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव को निश्चित रूप से पहचान जाता है, और वह उसका उचित विवरण दे सकता है तो इसे निश्चय पहचान (Definite Recognition) कहते हैं।

(४) अनिश्चित पहचान (Indefinite Recognition)—अनिश्चित पहचान वह पहचान है जिसमें व्यक्ति अपने पूर्व अनुभव को पहचान अवश्य जाता है परन्तु उसका ठीक-ठीक विवरण नहीं दे सकता है। अनिश्चित पहचान (Indefinite Recognition) को अधूरी पहचान भी कहा जा सकता है।

उपर्युक्त शब्दों से स्पष्ट होता है कि स्मृति के मुख्य तत्व (अंग) चार हैं जैसा कि वुडवर्थ ने लिखा है, **"सीखना धारण करना, पुनः स्मरण एवं पहचान ये स्मृति के अन्तर्गत आ जाते हैं।"**

"Memory consists in learning, retaining, recall and recognition what has previously been learned."

—Woodworth.

स्मृति की अनुकूल दशायें या हेतु

(Favourable Conditions in Memorization)

जैसा कि हम स्पष्ट कर चुके हैं कि स्मृति के चार तत्व या अंग हैं—(१) सीखना, (Learnining), (२) धारणा (Retention), (३) प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण (Recall) तथा (४) प्रत्यभिज्ञा (Recognition)। इन चारों तत्वों या अंगों की अनुकूल दशायें ही स्मृति की अनुकूल दशायें या हेतु हैं। सीखने की अनुकूल दशाओं को जानने के लिये सीखने की प्रक्रिया वाला अध्याय देखिये। यहाँ पर हम केवल धारणा प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण तथा प्रत्यभिज्ञा की अनुकूल दशाओं पर प्रकाश डाल रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धारणा की अनुकूल दशायें या हेतु
(Favourable Conditions in Retention)

[अ] भौतिक दशायें (Physical Conditions)

(१) उद्दीपक की स्पष्टता (Distinctness of the Stimulus)—जो उद्दीपक बहुत स्पष्ट होते हैं वे बहुत शीघ्र धारण किये जा सकते हैं। इसके विपरीत अगर उद्दीपक स्पष्ट नहीं होता है तो उसको धारण करना असम्भव हो जाता है। हम स्पष्ट चित्रों को शीघ्र ही धारण कर लेते हैं परन्तु अस्पष्ट चित्र धारण नहीं कर पाते हैं।

(२) उद्दीपक की तीव्रता (Intensity of the Stimulus)—उद्दीपक में जितनी अधिक तीव्रता होगी वह उतनी ही शीघ्र धारण कर लिया जाता है। उदाहरण के लिये तीव्र ध्वनि, तीव्र गति एवं तेज प्रकाश को हम बहुत शीघ्र ही धारण कर लेते हैं।

(३) उद्दीपक का स्थिति-काल (Duration of the Stimulvs)—जब उद्दीपक का स्थिति-काल बहुत थोड़ा होता है तब उसका धारण करना मुश्किल हो जाता है। परन्तु अगर उसका स्थिति-काल अधिक होता है तो वह आसानी से धारण कर लिया जाता है। उदाहरण के लिये अगर एक वक्ता का भाषण कुछ समय तक सुनते रहते हैं तो उसको आसानी से धारण किया जा सकता है।

(४) उद्दीपक की पुनरावृत्ति (Repetition of the Stimulus)—जिस चीज की पुनरावृत्ति कई बार होती है उसको आसानी से धारण किया जा सकता है। इसके विपरीत केवल एक-दो बार कोई गति या कहानी सुनने से हम उसे शीघ्र ही भूल जाते हैं अर्थात् धारण नहीं कर पाते हैं।

(५) उद्दीपक की ताजगी (Recency of the Stimulus)—हम नवीन अनुभवों को शीघ्र ही धारण कर लेते हैं। इसके विपरीत प्राचीन अनुभवों को हम धीरे-धीरे बिल्कुल ही भूल जाते हैं। उदाहरण के लिये जो कविता हमने अभी सुनी है उसे हम धारण कर लेते हैं परन्तु बहुत दिनों की सुनी हुई कविता हम भूल जाते हैं। इस प्रकार अनुभवों की ताजगी धारण की हेतु है।

(६) सामग्री का मात्रा (Amount of Material)—यदि सीखी जाने वाली विषय-सामग्री अधिक होती है तो उसकी बहुत दिनों तक धारणा बनी रहती है किन्तु यदि वह छोटी होती है तो धारणा कम समय तक रहती है। सामग्री की मात्रा अधिक होने पर अग्रलिखित कारणों से धारणा पर अनुकूल प्रभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पड़ता है–(१) छोटी विषय-सामग्री याद करने में व्यक्ति को कम परिश्रम पड़ता है और बड़ी विषय-सामग्री को याद करने में अधिक परिश्रम करना पड़ता है। अधिक परिश्रम करने से धारणा अधिक दृढ़ हो जाती है। (२) छोटी विषय-सामग्री की अपेक्षा बड़ी विषय-सामग्री में सार्थकता अधिक ढूंढ़ी जा सकती है और उसके विभिन्न अंगों में आसानी से सम्बन्ध ढूंढ़ा जा सकता है जिसके कारण बड़ी विषय-सामग्री की धारणा पुष्ट हो जाती है।

(७) **सीखने की विषय-सामग्री का वातावरण (Environment in which the Materials are learned)**—धारणा क्रिया पर सीखने की विषय-सामग्री का वातावरण भी अत्यधिक प्रभाव डालता है। कोलाहलपूर्ण एवं संवेगात्मक वातावरण में सीखने की क्रिया सुचारु रूप से नहीं चल पाती है जिसके फलस्वरूप ऐसे वातावरण में सीखी हुई विषय-सामग्री की धारणा मस्तिष्क में दुर्बल रहती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि यदि सीखने की विषय-सामग्री का वातावरण ठीक है तो उसकी धारणा अधिक स्थायी रहती है।

[ब मानसिक दशायें (Mental Conditions)

(१) **रुचि (Interest)**—जिन विषयों के प्रति हमारी रुचि होती है उनको हम शीघ्र ही धारणा कर लेते हैं और इसके विपरीत अरुचिकर विषयों का धारण करना मुश्किल हो जाता है।

(२) **ध्यान (Attention)**—धारणा बहुत कुछ ध्यान पर आधारित होती है। जिन पाठों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हैं उनको बहुत शीघ्र धारण कर लेते हैं और बहुत समय तक धारण किये रहते हैं।

(३) **मानसिक चिन्तन (Mental Review)**—जिन विषयों को हम बार-बार दोहराते एवं मन में याद करते हैं वे विषय शीघ्र ही स्थायी संस्कार बन जाते हैं। फलस्वरूप उनकी धारणा भी बहुत काल तक बनी रहती है। प्रायः शिक्षक महोदय विद्यार्थियों से कहा करते हैं कि किसी पाठ को मन में याद करना चाहिये। इसका कारण पाठ का धारण हो जाना ही है।

(४) **याद करने का इरादा (Intention to Remember)**—जिस पाठ को हम याद करने के इरादे से पढ़ते हैं उसको हम शीघ्र ही धारण कर लेते हैं। इसीलिये प्रायः जो प्राचीन बातें हमने इरादे से सीखी थीं वे हमें बहुत काल तक याद बनी रहती हैं।

(५) **महत्वपूर्ण अनुभव (Important Experiences)**—जो अनुभव हमारे लिये बहुत महत्वपूर्ण होते हैं उनकी धारणा अधिक होती है और वह बहुत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समय तक धारित बने रहते हैं। इसीलिए महान् पुरुषों से मुलाकात का समय हम बहुत काल तक याद किए रहते हैं।

(६) निद्रा (Sleep)—किसी विषय-सामग्री को अध्ययन करने के उपरान्त उसको धारण करने के लिये कुछ समय की आवश्यकता होती है। अतः यदि किसी विषय-सामग्री को सीखने के बाद सो जाया जाय तो स्मृति चिन्हों को सुदृढ़ होने का अवसर प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार किसी वस्तु को सीखने के उपरान्त सो जाने से धारणा पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

(७) मनोवृत्ति (Mental Set)—धारणा पर व्यक्ति की मनोवृत्ति का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। जिस व्यक्ति की मनोवृत्ति जिस ओर होती है वह उन्हीं बातों को बहुत समय तक धारण किये रहता है। उदाहरण के लिए जो व्यक्ति धार्मिक मनोवृत्ति का होता है उसे धार्मिक बातें बहुत समय तक याद बनी रहती हैं। उसी प्रकार जो व्यक्ति पैसे का बहुत भक्त होता है वह पैसे के लेन देन से सम्बन्धित बातों को सदैव याद किये रहता है।

(८) अनुभूति (Feeling)—फ्रायड आदि मनोविश्लेषणवादियों का मत है कि जो अनुभव सुखद होते हैं वे हमें बहुत समय तक याद बने रहते हैं और जो अनुभव दुखद होते हैं उन्हें हम प्रायः शीघ्र भूल जाते हैं। मनोविश्लेषणवादियों का यह मत कहाँ तक ठीक है यह तो नहीं कहा जा सकता है किन्तु हमें यह तो मानना ही पड़ेगा कि सुखद अनुभव धारणा में अनुकूल प्रभाव डालते हैं।

(९) संप्रत्यक्ष (Apperception)—संप्रत्यक्ष से हमारा अभिप्राय सीखे हुये विषय या अनुभव को पहिले से संचित ज्ञान से मिलाना है। यदि हम जो नवीन बातें सीखें उनका सम्बन्ध अपने पूर्व अनुभवों में स्थापित कर दें तो उनको हम बहुत समय तक धारण किए रहेंगे। यदि हम नवीन ज्ञान को सीखने में पूर्व अनुभवों का कुछ भी उपयोग नहीं करते तो हम इस ज्ञान को बहुत समय तक याद नहीं रख सकते हैं।

(१०) बुद्धि (Intelligence)—बुद्धि का धारणा पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है। बुद्धिमान व्यक्ति किसी विषय-सामग्री को अच्छी तरह सोच समझ कर याद करता है। परिणामस्वरूप उसकी धारणा भी टिकाऊ रहती है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति की बुद्धि कम होती है वह विषय को बिना समझे बूझे याद करने का प्रयत्न करता है किन्तु वह उसको सुचारुरूप से याद नहीं कर पाता फलस्वरूप उसकी धारणा भी बहुत कम रहती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि बुद्धि का धारणा पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(११) सीखने की मात्रा (Amount of Learning)—जिस विषय-सामग्री में सीखने की मात्रा जितनी ही अधिक रहती है उसकी धारणा भी उतनी ही अधिक स्थायी रहती है। अतिशिक्षण (Over-learning) का धारणा पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। किन्तु अतिशिक्षण की भी एक निश्चित सीमा होनी चाहिए। एक सीमा से अधिक सीखने से थकान तथा अरुचि अनुभव होने लगती है जिनका धारणा पर प्रतिकूल प्रभाव है।

(१२) सीखने की गति (Speed of Learning)—धारणा क्रिया पर सीखने की गति का भी प्रभाव पड़ता है। मन्दगति से याद की हुई विषय-सामग्री की अपेक्षा तीव्र गति से याद की हुई विषय-सामग्री की धारणा अधिक होती है। इसका कारण यह है कि तीव्र गति से याद करने पर स्मृति-चिन्हों के बीच साहचर्य (Association) का कार्य सुचारु रूप से चलता है। इसलिए तीव्र गति से याद की हुई विषय-सामग्री की धारणा अधिक पुष्ट होती है। इसके विपरीत मन्द गति से याद करने पर सीखी हुई विषय-सामग्री में साहचर्य आसानी से नहीं स्थापित हो पाता है। फलस्वरूप उसकी धारणा की क्रिया कमजोर रहती है। इसके अतिरिक्त तीव्र गति से सीखने से उस बालक में विषय-सामग्री के प्रति रुचि, मानसिक झुकाव आदि स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं जिनके कारण वह इस विषय-सामग्री को सीखता भी शीघ्र है और उसकी धारणा भी अधिक समय तक किये रहता है।

(१३) सीखने की विधियाँ (Methods of Learning)—धारणा पर सीखने की विधियों का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। निरन्तर विधि (Unspaced Method) की अपेक्षा सान्तर विधि (Spaced Method), निष्क्रिय विधि (Passive Method) की अपेक्षा सक्रिय विधि (Active Method), अंश विधि (Part-Method) की अपेक्षा पूर्ण विधि (Whole Method) तथा अबोधपूर्वक विधि (Unintelligent Method) की अपेक्षा बोध पूर्वक विधि (Intelligent Method) से सीखने से विषय-सामग्री की धारणा आसानी से होती है और टिकाऊ भी रहती है।

[स] शारीरिक दशायें (Physical Conditions)

(१) मस्तिष्क की बनावट (Constitution of Mind)—हमारे सीखे हुए समस्त संस्कार मस्तिष्क में सुरक्षित रहते हैं। फलस्वरूप जिन व्यक्तियों का मस्तिष्क जितना अधिक जटिल और विकसित होता है उनकी धारणा उतनी ही अधिक एवं अच्छी हुआ करती है। छोटे बालकों का मस्तिष्क बड़े बालकों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपेक्षा कम विकसित होता है फलस्वरूप उसकी धारणा भी कम एवं कमजोर होती है। वृद्ध लोगों के मस्तिष्क में नाना प्रकार की खराबियाँ आ जाती हैं। अतः उनकी धारणा भी कमजोर एवं खराब हो जाती है। युवकों का मस्तिष्क पूर्ण विकसित होता है। इसलिए उनकी धारणा भी अधिक एवं अच्छी होती है।

(२) स्वास्थ्य (Health)—जिन लोगों का स्वास्थ्य अच्छा होता है वे सीखने में अधिक कुशल होते हैं। फलस्वरूप उनकी धारणा भी बहुत अच्छी एवं अधिक होती है। प्रायः रोगी आदमी को यह शिकायत रहती है कि वे किसी बात को शीघ्र भूल जाते हैं। इसका कारण उनकी धारणा का अच्छा न होना है।

(३) यौन (Sex)—मनोवैज्ञानिक प्रयोगों से पता लगा है कि १४ वर्ष की उम्र तक बालकों की अपेक्षा बालिकाओं का शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत तेजी से होता है। फलस्वरूप बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की धारणा अधिक एवं अच्छी होती है। इसके उपरान्त दोनों के विकास में कोई विशेष अन्तर नहीं रह जाता है। फलस्वरूप उनकी धारणा में कोई अन्तर नहीं रहता है।

प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण की दशाएँ या हेतु
(Favourable Conditions of Recall)

जो अनुकूल दशाएँ या हेतु धारणा (Retention) की हैं प्रायः वही अनुकूल दशायें या हेतु प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण की भी है। अतः प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण की अनुकूल दशाओं को समझने के लिये धारणा की अनुकूल दशाएँ देखिये। किन्तु इन दशाओं के अतिरिक्त प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण की कुछ अनुकूल दशाएँ या हेतु और भी हैं जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं।

(१) मनः शारीरिक अवस्था (Psycho-physical Condition)—अगर किसी व्यक्ति का मन एवं शरीर स्वस्थ तथा शक्ति-सम्पन्न अवस्था में होता है तो वह अतीत अनुभवों का प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण शीघ्र एवं अच्छी तरह से कर लेता है। इसके विपरीत थका हुआ व्यक्ति पुनः स्मरण में अच्छी तरह सफल नहीं हो पाता है।

(२) साहचर्य संकेत (Clue of association)—हमारे अनुभव एक दूसरे से सम्बन्धित दशा में अवचेतन मस्तिष्क (Sub-conscious mind) में उपस्थित रहते हैं। अगर हमें अतीत-कालीन अनुभवों से सम्बन्धित कोई संकेत प्राप्त होता है तो हम उस संकेत से सम्बन्धित मौलिक अनुभव का शीघ्र ही पुनः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मरण कर लेते हैं। उदाहरण के लिये हम अपने किसी अतीत-कालीन मित्र को देख लेते हैं तो हमें वे समस्त बातें स्मरण हो आती हैं जो हमारे और उनके बीच में घटी थीं।

(३) पुनः स्मरण के समय प्रधान रुचि (Dominant interest at the time of Review)—पुनः स्मरण के समय हमारी प्रधान रुचि का विशेष महत्व है। दूसरे शब्दों में जैसी हमारी रुचि होगी उसी से सम्बन्धित हमें किसी वस्तु का स्मरण होता है। यदि हम न्याय के महत्व के सम्बन्ध में विचार कर रहे हैं तो हमें 'रामराज्य में सीता के वनवास' का स्मरण आता है।

(४) प्रसंग का प्रभाव (Influence of Context)—प्रसंग अथवा संदर्भ का पुनः स्मरण में बहुत प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए अगर हमारे मन में सीता का विचार आता है तो हमें शीघ्र ही राम का विचार याद आ जाता है। इसी तरह अगर हमारी चेतना में ४ से ४ मिला देने का विचार आता है तो हमारे मन में ८ का विचार आ जाता है।

(५) प्रेरणायें (Motives)—प्रत्याह्वान पर प्रेरणाओं का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। जिस समय कोई व्यक्ति किसी विशेष प्रेरणा से अत्यधिक वशीभूत हो जाता है उस समय उसे तत्सम्बन्धी वस्तुओं, घटनाओं तथा परिस्थितियों का स्मरण होने लगता है। कभी-कभी तो उसे विभ्रम (Hallucination) तक होने लगता है।

(६) प्रयत्न (Effort)—प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण करने में प्रयत्न का भी महत्वपूर्ण स्थान है। प्रयत्न की अति की सीमा का पार किये बिना सामान्य तौर से सीखी हुई वस्तुओं का जितना अधिक प्रत्याह्वान करने का प्रयत्न किया जाय उतनी ही अधिक हम उनका प्रत्याह्वान कर सकेंगे। अति की सीमा के पार हो जाने पर हमारी प्रत्याह्वान करने की क्रियायें विश्रृङ्खलित हो जाती हैं जिसके परिणामस्वरूप प्रत्याह्वान अति कठिन हो जाता है। इसी प्रकार गलत प्रयत्न (Wrong Effort) भी प्रत्याह्वान में बाधक सिद्ध होता है। प्रत्याह्वान के गलत प्रयत्न अनेक प्रकार के हो सकते हैं। जैसे थकावट में उत्पन्न करने वाला प्रयत्न, संवेगावस्था उत्पन्न करने वाला प्रयत्न, संकेतों के अभाव में अथवा संकेतों के विरुद्ध प्रयत्न इत्यादि। हमको चाहिये कि हम संकेतों को ध्यान में रखते हुए तथा संवेगों पर नियन्त्रण रखते हुए विश्वासपूर्वक प्रत्याह्वान करने के प्रयत्न करें तो हमें अत्यधिक लाभ होगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७) अवरोध का अभाव (Absence of Inhibition)—प्रत्याह्वान में अवरोध के अभाव का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत अवरोध से प्रत्याह्वान में बाधा पड़ती है। यह अवरोध भय, क्रोध आदि संवेगों, दमन, प्रवृत्तियों के संघर्ष (Conflict) इत्यादि से उत्पन्न हो सकता है। हम दैनिक जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण प्राप्त कर सकते हैं जिसमें अवरोध के कारण व्यक्ति प्रत्याह्वान करने में असमर्थ हो जाता है। घबराहट के कारण परीक्षा के समय बहुत से विद्यार्थी याद की हुई विषय-सामग्री का प्रत्याह्वान नहीं कर पाते हैं। जिन वस्तुओं या घटनाओं का सम्बन्ध अप्रिय अनुभूतियों से रहता है वे अनेक प्रयत्न करने पर भी याद नहीं आती हैं। प्रत्याह्वान में बाधा पहुँचाने वाले यह अवरोध पुनरोत्पादक अवरोध (Reproductive Inhibition) कहे जाते हैं। वास्तव में प्रत्याह्वान करने के लिये अवरोध को हटाना अति आवश्यक है।

प्रत्यभिज्ञा या पहचान की अनुकूल दशाएँ या हेतु

(Favourable Conditions in Recognition)

सामान्य तौर से प्रत्यभिज्ञा या पहचान की अनुकूल दशाएँ वही हैं जो धारणा (Retention) तथा प्रत्याह्वान (Recall) की है। क्योंकि प्रत्यभिज्ञा एक ऐसी क्रिया है जो धारणा तथा प्रत्याह्वान पर आधारित होती है। अतः पाठकों को प्रत्यभिज्ञा की भी वही अनुकूल दशाएँ समझना चाहिये जो धारणा तथा प्रत्याह्वान की होती हैं। नीचे हम प्रत्यभिज्ञा की केवल दो अनुकूल दशाओं का वर्णन कर रहे हैं जिनका उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है:—

(१) मनोवृत्ति (Mental Set)—प्रत्यभिज्ञा या पहचान की अनुकूल दशाओं में मनोवृत्ति का बड़ा महत्व है। यदि हम जिस विषय-सामग्री की प्रत्यभिज्ञा करना चाहते हैं उसके प्रति हमारी अनुकूल मनोवृति हो तो हम उसकी प्रत्यभिज्ञा शीघ्र कर लेंगे। इसके विपरीत जिस विषय-सामग्री के प्रति हमारी अनुकूल मनोवृति नहीं है उसकी प्रत्यभिज्ञा करना हमारे लिये मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के लिये मेले में हम किसी व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हों तो उसके दिखलाई देते ही आप उसे अच्छी तरह पहचान जायेंगे किन्तु यदि उस व्यक्ति के आने का विचार हमारे मस्तिष्क में नहीं है तो हम उस व्यक्ति के मेले में होते हुये हम उसको शीघ्र नहीं पहचान सकेंगे। किन्तु मनोवृति से कभी-कभी प्रत्यभिज्ञा में गलती भी हो जाती है। उदाहरण के लिये यदि आप कमरे में बैठे किसी व्यक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हों तो दरवाजे में किसी अन्य व्यक्ति की थपकी को प्रतीक्षित व्यक्ति की आहट समझ बैठेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) आत्म-विश्वास (Confidence)—प्रत्यभिज्ञा पर आत्म-विश्वास का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी आत्म-विश्वास के अभाव में सही प्रत्यभिज्ञा में भी संदेह बना रहता है और गलती हो जाती है। किन्तु अत्यधिक आत्म-विश्वास प्रत्यभिज्ञा पर प्रतिकूल असर डालता है। अत्यधिक आत्म-विश्वास के परिणामस्वरूप व्यक्ति अपनी प्रत्येक पहचान को आँख मूँद कर सही मान बैठता है चाहे वह गलत क्यों न हो। ऐसी दशा में प्रत्यभिज्ञा के लिये आत्म-विश्वास तभी अनुकूल सिद्ध हो सकता है जब कि वह सीमा के परे न हो और समझ बूझकर किया गया हो।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों से स्पष्ट होता है कि भूतकालीन अनुभवों को वर्तमान चेतना में लाने की प्रक्रिया को स्मृति कहते हैं। **अच्छी स्मृति के लक्षण**—(१) शीघ्र याद होना, (२) धारणा का स्थायित्व, (३) उपादेयता, (४) व्यर्थ की बातों को भूलना तथा (५) पुनः स्मरण में यथार्थता। **स्मृति के तत्व या अंग**—(१) सीखना या शिक्षण, (२) धारणा, (३) प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण तथा (४) प्रत्यभिज्ञा या पहचान। स्मृति की अनुकूल दशायें वही हैं जो उसके तत्वों की हैं। **धारणा की अनुकूल दशायें**—[अ]—**भौतिक दशायें**—(१) उद्दीपक की स्पष्टता, (२) उद्दीपक की तीव्रता, (३) उद्दीपक का स्थिति-काल, (४) उद्दीपक की पुनरावृत्ति, (५) उद्दीपक की ताजगी, (६) सामग्री की मात्रा तथा (७) सीखने की विषय-सामग्री का वातावरण। [ब **मानसिक दशायें** (१) रुचि, (२) ध्यान, (३) मानसिक चिन्तन, (४) याद करने का इरादा, (५) महत्वपूर्ण अनुभव, (६) निद्रा, (७) मनोवृत्ति, (८) अनुभूति, (९) संप्रत्यक्ष, (१०) बुद्धि, (११) सीखने की मात्रा, (१२) सीखने की गति तथा (१३) सीखने की विधियाँ; [स] **शारीरिक दशायें** (१) मस्तिष्क की बनावट, (२) स्वास्थ्य तथा (३) यौन। **प्रत्याह्वान या पुनःस्मरण की अनुकूल दशायें**—(१) मनः शारीरिक अवस्था, (२) साहचर्य संकेत, (३) पुनः स्मरण के समय प्रधान रुचि, (४) प्रसंग का प्रभाव, (५) प्रेरणायें, (६) प्रयत्न तथा (७) अवरोध का अभाव। **प्रत्यभिज्ञा या पहचान की अनुकूल दशायें**—(१) मनोवृत्ति तथा (२) आत्म-विश्वास प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जेम्स ड्रेवर (James Drever) ने स्मृति का महत्व प्रस्तुत करते हुये लिखा है, **"स्मृति जीवधारियों की एक विशिष्टता है जिसके द्वारा वे अपने अर्जित अनुभव आगे के लिए छोड़ जाते हैं और उनका भविष्य में**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राप्त अनुभव तथा व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। इसी वजह से उनका एक इतिहास बन जाता है और वह उन्हीं जीवधारियों में अंकित भी रहता है।"

"Memory is the characterstic of living organism in virtue of which what they experience leaves behind effects which modify future experience and behaviour in virtue of which they have a history, and that history is recorded in themselves."

---James Drever.

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri. Funding: MIDF

२२

स्मरण करने की मितव्ययी विधियाँ

[Economical Methods of Memorizing]

प्रश्न संख्या—२२

स्मरण करने में मितव्ययता की पद्धतियों का उल्लेख कीजिये। स्मृति के प्रकार भी स्पष्ट कीजिये।

Describe the methods of effecting economy in memorizing. Also clarify the kinds of memory.

भूमिका (Introduction)

स्मृति से सम्बन्धित सबसे बड़ी समस्या यह है कि आखिर स्मरण करने या सीखने में कौन सी विधियों का प्रयोग किया जाय जिन विधियों के द्वारा हम कम से कम समय में अधिक से अधिक विषय-सामग्री का स्मरण कर लें या उसे सीख लें। वे विधियाँ जिनके द्वारा हम कम से कम समय में अधिक से अधिक विषय-सामग्री याद कर लेते हैं स्मरण या कंठस्थीकरण की मितव्ययी विधियाँ (Economical Methods of Memorizing) कहलाती हैं। स्मरण या कंठस्थीकरण की मितव्ययी विधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिये मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग किये हैं। इन प्रयोगों में उन्होंने यह जानने की कोशिश की कि किन विधियों का प्रयोग करके कम से कम समय में अधिक से अधिक विषय-सामग्री को कंठस्थ किया जा सकता है। इस प्रश्न में पहले हम अब तक जो स्मरण या कंठस्थीकरण की विधियों (Economical Methods of Memorizing) की खोज की गई है इन पर प्रकाश डालेंगे और इससे उपरान्त स्मृति के प्रकार (Kinds of Memory) प्रस्तुत करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्मरण या कंठस्थीकरण करने की मितव्ययी विधियाँ
(Economical Methods of Memorizing)

[१] पूर्ण तथा आंशिक विधियाँ
(Whole versus Part Methods)

किसी पाठ अथवा वस्तु को हम दो प्रकार से याद कर सकते हैं। या तो हम सम्पूर्ण पाठ अथवा वस्तु को आरम्भ से अन्त तक दोहरा कर याद करें या उसको टुकड़ों में विभाजित कर प्रत्येक टुकड़े को अलग-अलग याद करें। प्रथम विधि को पूर्ण विधि (Whole Method) कहते हैं एवं द्वितीय विधि को आंशिक विधि (Part Method)। उदाहरण के लिये २०० पंक्तियों की सम्पूर्ण कविता को एक साथ याद करना पूर्ण विधि है एवं इस कविता के २०-२० पंक्तियों के १० भाग बनाकर प्रत्येक भाग को अलग-अलग याद करना आंशिक विधि है। अब प्रश्न उठता है कि इन विधियों में कौन श्रेष्ठ विधि है। इस सम्बन्ध में बहुत मतभेद है।

जो विद्वान् पूर्ण विधि का समर्थन करते हैं उनका विचार है कि इस विधि के याद करने में पाठ अथवा वस्तु के समस्त भागों के सम्बन्धों में एक क्रम रहता है। फलस्वरूप उसे हम सुविधापूर्वक याद कर लेते हैं। उसके साथ-साथ इस विधि से याद करने में पाठ की सार्थकता समझ में आ जाती है, फलस्वरूप उसके संस्कार मजबूत हो जाते हैं। जो विद्वान् आंशिक विधि का समर्थन करते हैं उनका विचार है कि इस विधि से याद करने में बालक थकावट का अनुभव नहीं करते हैं। वे प्रत्येक भाग को क्रम से धारण कर सम्पूर्ण पाठ को आसानी से याद कर लेते हैं। वास्तविकता तो यह है कि हमें दोनों विधियों को समान महत्व देना होगा क्योंकि एक व्यक्ति किस विधि से याद करे वह उसकी व्यक्तिगत विशेषताओं एवं पाठ पर निर्भर है। बालकों के लिये आंशिक विधि एवं प्रौढ़ों के लिए पूर्ण विधि से याद करना लाभप्रद है। इसके साथ-साथ अगर पाठ बहुत विस्तृत एवं कठिन है तो उसे पूर्ण विधि से याद करना अधिक उपयुक्त है। इसके अतिरिक्त दोनों विधियों के मिश्रण से जो तीसरी विधि बनती है जिसे मिश्रित विधि (Mixed Method) कहते हैं, वह सर्वश्रेष्ठ विधि है। इस विधि के अनुसार पहले सम्पूर्ण पाठ को एक बार समझते हुए पढ़ा जाता है। तत्पश्चात् उस पाठ को अनेक भागों में बाँट कर प्रत्येक भाग को याद किया जाता है अन्त में सम्पूर्ण पाठ को पुनः याद किया जाता है। इस प्रकार यह प्रणाली कई बार करने से पाठ बहुत शीघ्र एवं आसानी से याद हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri. Funding: MIDF

[२] निरन्तर तथा सान्तर विधियाँ
(Unspaced Versus Spead Methods)

जब किसी पाठ को एक ही बैठक में निरन्तर याद किया जाता है तो इसे निरन्तर विधि (Unspaced Method) कहते हैं और इसे जब बीच-बीच में समय छोड़कर याद किया जाता है तो उसे सान्तर विधि (Spaced Method) कहा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि निरन्तर विधि में सीखने का प्रयास (Trials) लगातार होते रहते हैं एवं सान्तर विधि में इन प्रयासों के मध्य में विश्राम-काल (Rest Periods) रहते हैं।

मनोवैज्ञानिकों ने दोनों विधियों की सत्यता प्रकट करने के लिए नाना प्रकार के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। परन्तु अगर हम निष्पक्ष दृष्टि से देखें तो निरन्तर विधि से सीखने की अपेक्षा सान्तर विधि अधिक लाभप्रद सिद्ध होती है क्योंकि इस विधि से सीखने वाला व्यक्ति थकावट एवं अरोचकता का अनुभव नहीं करता है। इसके साथ-साथ व्यक्ति को विषय के संस्कार (Disposition) मजबूत करने के लिए मानसिक चिन्तन (Mental review) का अवसर प्राप्त होता रहता है। यह विधि व्यावहारिक भी है क्योंकि व्यक्ति बहुत समय तक लगातार नहीं पढ़ सकता है। परन्तु निरन्तर विधि की सर्वदा उपेक्षा नहीं की जा सकती हैं। अगर पाठ बहुत छोटा हो तो इसे निरन्तर विधि से याद करना न्यायसंगत होगा। अतः वस्तु के स्वरूप के आधार पर किसी विधि का उपयोग करना अधिक लाभप्रद है।

[३] सक्रिय तथा निष्क्रिय विधियाँ
(Active Versus Passive Methods)

जब किसी विषय-सामग्री (Subject Matter) को जोर-जोर उच्चारण करके याद करते हैं, तो उसे सक्रिय विधि (Active Method) कहते हैं और उसे जब मन में बोलकर अर्थात् चुप होकर याद करते हैं तो उसे निष्क्रिय विधि (Passive Method) कहते हैं। वास्तव में याद करने में ये दोनों विधियाँ अपने-अपने स्थान में पूर्ण उपयुक्त हैं परन्तु जहाँ तक श्रेष्ठता का प्रश्न है वहाँ पर हम निष्क्रिय विधि की अपेक्षा सक्रिय विधि को श्रेष्ठ कहेंगे। जब बालक अथवा व्यक्ति वस्तु को उच्चारण करते हुए सीखता है तो वह बोलने से प्रेरणा प्राप्त करता है। वह वस्तु को शीघ्र धारण करने लगता है। सीखने में बालक का ध्यान यहाँ-वहाँ नहीं जाता है बल्कि वस्तु को उच्चारण करने में लगा रहता है। जहाँ तक निष्क्रिय विधि की उपयोगिता का प्रश्न है कभी-कभी कुछ लोगों को यह विधि भी बहुत उपयुक्त सिद्ध होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[४] बोधपूर्वक तथा अबोधपूर्वक विधियां
(Intelligent Versus Unintelligent Methods)

जब किसी वस्तु को अच्छी तरह समझते हुए याद किया जाता है तो उसे बोध-पूर्वक विधि (Intelligent Method) कहते हैं और जब उसको बिना सोचे-समझे याद किया जाता है अर्थात् रटा जाता है तो उसे अबोधपूर्वक (Unintelligent Method) कहते हैं।

इन दोनों विधियों में हमें यह निर्विवाद रूप से सत्य मानना पड़ेगा कि अबोधपूर्वक विधि की अपेक्षा बोधपूर्वक विधि श्रेष्ठ होती है। जब किसी वस्तु को सोच-समझकर याद किया जाता है तो वह मनुष्य के मस्तिष्क में मानसिक संस्कार (Mental disposition) के रूप में शीघ्र धारित हो जाती है और बहुत समय तक मस्तिष्क में बनी रहती है। फलस्वरूप जो वस्तु याद करना हो उसे सोच-समझकर याद करना चाहिए।

[५] स्मरण करने का इरादा की विधि
(Intention to Remember Method)

जब किसी वस्तु को हम इस इरादे से सीखते हैं कि चाहे जो कुछ हो हमें तो इसे याद ही करना है तो इसे स्मरण करने का इरादा की विधि (Intention to Remember Method) कहते हैं। वास्तव में जो पाठ व्यक्ति इरादा करके याद करता है वह बहुत शीघ्र उसके मस्तिष्क में धारित हो जाता है। इरादे के अभाव में याद करना अविश्वसनीय एवं प्रभावहीन होता है।

[६] रटन विधि
(Cramming Method)

यद्यपि रटन विधि (Cramming Method) को स्मरण की मितव्ययी विधि नहीं कहा जा सकता है परन्तु आधुनिक दोषमयी शिक्षा में इसका महत्व अधिक बढ़ गया है। फलस्वरूप इससे परिचित होना अवांछनीय न होगा। इस विधि के अनुसार बालक को पाठ या किसी पाठ के भाग को बिना विचारे बार-बार कहकर रट लेना चाहिये। इस विधि के द्वारा यद्यपि परीक्षा में कभी-कभी सफलता मिल जाती है। यदि रटा हुआ भुला दिया गया तो असफलता हाथ लगती है। इस विधि की कृपा से पढ़े-लिखे मूर्खों की संख्या बढ़ती चली जा रही है। अतः शिक्षकों का कर्तव्य है कि जहाँ तक बने इसको सोच-समझकर क्रियान्वित होने का अवसर दें।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding: MIDF

[७] साहचर्य विधि
(Artificial Association Method)

स्मरण की विधियों में साहचर्य को बनाने वाली विधि भी बहुत महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि के अनुसार व्यक्ति जिस विषय का स्मरण करना चाहता है उसे उसका सम्बन्ध किसी प्रधान विषय से जोड़ देना चाहिये। उदाहरण के लिये यदि एक व्यक्ति का पुत्र २६ जनवरी को उत्पन्न हुआ और वह इस तारीख का सम्बन्ध देश के महान् दिवस अर्थात् २६ जनवरी से जोड़ देता है तो वह अपने पुत्र की जन्म-तिथि जीवन पर्यन्त तक नहीं भूलेगा।

[८] समूहीकरण और लय विधि
(Grouping and Rhythm Method)

समूहीकरण तथा लय विधि का प्रयोग भी स्मरण करने के लिए महत्वपूर्ण है। इस विधि द्वारा गद्य की अपेक्षा पद्य का स्मरण करने में आसानी होती है। प्रायः संस्कृत साहित्य को याद करने में इस विधि का प्रयोग किया जाता है। संस्कृत के एक-एक श्लोक में इतना अर्थ भरा होता है कि उन पर अनेक पृष्ठ लिखे जा सकते हैं। लय-विधि का प्रयोग करने से इन श्लोकों का स्मरण करने में आसानी होती है।

[९] आवृत्ति विधि
(Recitation Method)

किसी विषय को एक बार पढ़ कर मन ही मन दोहराने की विधि को आवृत्ति विधि कहते हैं। मन में विषय को दोहराने से विषय बार-बार पढ़ने की अपेक्षा दृढ़ हो जाता है। इसका कारण यह है कि पढ़ कर याद करने से मन को अधिक सक्रिय नहीं करना पड़ता है और दूसरे चिन्तन की भी आवश्यकता नहीं होती है। किन्तु ये दोनों बातें आवृत्ति विधि में मौजूद रहती हैं। इस विधि से जो भी विषय-सामग्री याद की जाती है वह मस्तिष्क में अधिक समय तक टिकती है।

स्मृति के प्रकार
(Kinds of Memory)

स्मृति के विभिन्न प्रकार निम्नलिखित हैं—

(१) तात्कालिक स्मृति (Immediate Memory)—तात्कालिक स्मृति वह स्मृति है जिसमें व्यक्ति अथवा बालक किसी विषय को याद कर तुरन्त सुना देता है। तात्कालिक स्मृति में यह सम्भावना अवश्य रहती है कि याद किये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हुए विषय को कुछ दिन बाद भूल जाया जाय।

(२) स्थायी स्मृति (Permanen Memory)—जब व्यक्ति याद किये विषय को बहुत काल तक पुनः स्मरण (Recall) करने योग्य बना रहता है तो उस स्मृति को स्थायी स्मृति (Permanent Memory) कहते हैं।

(३) वैयक्तिक स्मृति (Personal Memory)—जब हम भूतकाल में याद किये तथ्यों एवं उनके जुड़े हुए अपने अनुभवों को पुनः स्मरण करते हैं तो यह व्यक्तिगत स्मृति (Personal Memory) होगी। उदाहरण के लिए जब बालक किसी नये स्कूल में प्रवेश करता है तो इस समय उसे जो अनुभव होता है वह व्यक्तिगत स्मृति है।

(४) अव्यक्तिगत स्मृति (Impersonal Memory)—अनुभव की हुई बातों के अतिरिक्त जब हम अन्य बातों का स्मरण करते हैं तो उसे अव्यक्तिगत स्मृति (Impersonal Memory) कहते हैं। प्रायः जितना भी हम ज्ञान पुस्तकों एवं अपने साथियों से प्राप्त कर उसे स्मरण करते हैं वह सब अव्यक्तिगत स्मृति है।

(५) निष्क्रिय स्मृति (Passive Memory)—जब हम भूतकालीन अनुभवों एवं याद किए हुए तथ्यों का बिना प्रयास करते हुये पुनः स्मरण करते हैं तो उसे निष्क्रिय स्मृति (Passive Memory) कहते हैं। उदाहरण के लिये जब हम आम को देखते हैं तो उसके खट्टेपन की याद स्वतः आ जाती है।

(६) सक्रिय स्मृति (Active Memory)—सक्रिय स्मृति वह स्मृति है जिसमें हम अनुभवों एवं याद किए हुये तथ्यों का पुनः स्मरण करते हैं। उदाहरण के लिए परीक्षा भवन में विद्यार्थी अपने ज्ञान को प्रयास करके पुनः स्मरण करता है।

(७) यान्त्रिक स्मृति (Rote Memory)—विषय को बिना समझे रट लेना, तत्पश्चात् उस याद किए हुए विषय का पुनः स्मरण करना यान्त्रिक (Rote Memory) कहलाती है। उदाहरण के लिए रटी हुई कविता का बारम्बार पुनः स्मरण करना यान्त्रिक स्मृति है।

(८) तार्किक स्मृति (Logical Memory)—जब कोई व्यक्ति किसी विषय को अच्छी तरह से सोच-समझकर उसे बारम्बार पढ़ता है और वह इस योग्य हो जाता है कि वह इस विषय का कभी भी पुनः स्मरण (Recall)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कर सकता है तो इस प्रकार की स्मृति को तार्किक अथवा बौद्धिक स्मृति (Logical Memory) कहते हैं।

(९) आदत स्मृति (Habit Memory)—यह स्मृति यान्त्रिक स्मृति (Rote Memory) से मिलती-जुलती है। जब कोई बालक किसी विषय को बार-बार याद करता है और यह बात अवसर पड़ने पर बिना किसी प्रयास के शीघ्र आ जाती है तो इस प्रकार की स्मृति को आदत स्मृति (Habit Memory) के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

(१०) इन्द्रिय अनुभव स्मृति (Sense Impression Memory)—जब हम किसी वस्तु अथवा विचार को ज्ञानेन्द्रियों (Sense Organs) द्वारा पुनः स्मरण (Recall) करते हैं तो इसे इन्द्रिय अनुभव स्मृति (Sense Impression Memory) कहते हैं। हम यदि अपनी आँखों को बन्द कर लें तो बहुत सी वस्तुओं को सुनकर, छूकर एवं सूँघ कर बता सकते हैं क्योंकि उन्हें हमारी ज्ञानेन्द्रियाँ पहचान चुकी हैं।

(११) शारीरिक स्मृति (Physiological Memory)—जब हम किसी कार्य को बारम्बार करते हैं तो हमारे शारीरिक अंग इस योग्य हो जाते हैं कि वे उस कार्य को करने में किसी प्रकार की गलती न करें तो हम इस प्रकार के शारीरिक अभ्यास को शारीरिक स्मृति (Physical Memory) कहते हैं। उदाहरण के लिये साइकिल चलाने में हमारे पैर एवं टाइप करने में उँगलियों का अभ्यस्त हो जाना शारीरिक स्मृति का ही स्वरूप है।

(१२) मनोवैज्ञानिक अथवा सच्ची स्मृति (Psychological or True Memory)—मनोवैज्ञानिक अथवा सच्ची स्मृति (Psychological or True Memory) उपर्युक्त स्मृतियों में श्रेष्ठ स्मृति है। इस स्मृति में बालक किसी विषय को शीघ्र याद कर लेता है, उसे उसके दोहराने की आवश्यकता नहीं पड़ती है, उसे क्रमबद्ध रूप से विषय का ज्ञान रहता है एवं अवसर पड़ने पर वह विषय उसे शीघ्र ही याद आ जाता है।

उपसंहार (Conclusion)

जिन विधियों के द्वारा कम-से-कम समय में अधिक से अधिक याद किया जा सकता है उन्हें स्मृति की मितव्ययी विधियाँ कहते हैं। स्मृति की मुख्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मितव्ययी विधियाँ—(१) पूर्ण तथा आंशिक विधि, (२) निरन्तर तथा सान्तर विधि, (३) सक्रिय तथा निष्क्रिय विधि, (४) बोधपूर्वक तथा अबोधपूर्वक विधि, (५) स्मरण करने का इरादा, (६) रटन विधि, (७) साहचर्य विधि, (८) समूहीकरण और लय विधि तथा (९) आवृत्ति विधि। स्मृति के मुख्य प्रकार—(१) तात्कालिक स्मृति, (२) स्थायी स्मृति, (३) वैयक्तिक स्मृति, (४) अवैयक्तिक स्मृति, (५) निष्क्रिय स्मृति, (६) सक्रिय स्मृति, (७) यान्त्रिक स्मृति, (८) तार्किक स्मृति, (९) आदत स्मृति, (१०) इन्द्रिय अनुभव स्मृति, (११) शारीरिक स्मृति एवं (१२) मनोवैज्ञानिक तथा सच्ची स्मृति।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDE

२३

विस्मरण एवं स्मृति-प्रशिक्षण

[Forgetting and Memory-Training]

प्रश्न संख्या—२३

विस्मरण से आप क्या समझते हो ? इसके प्रमुख कारण क्या हैं। विस्मृति से हमें क्या लाभ है। स्मरण में उन्नति कैसे की जा सकती है ?

What do you understand by forgetting ? What are its chief causes ? What is the utility of forgetting. How can the memory be impromed ?

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान व्यक्ति को अभियोजनात्मक व्यवहार (Adjustment Behaviour) का अध्ययन करता है। व्यक्ति के अभियोजनात्मक व्यवहार के अन्तर्गत न केवल स्मरण (Remembering) की क्रिया का समावेश होता है बल्कि विस्मरण (Forgetting) की क्रिया भी सम्मिलित रहती है। वास्तव में व्यक्ति के अभियोजनात्मक व्यवहार को सफल बनाने में न केवल स्मरण की क्रिया का महत्व होता है बलिक विस्मरण की क्रिया का भी महत्व होता है। ऐसी दशा में व्यक्ति के अभियोजनात्मक व्यवहार को समझने के लिए स्मरण के साथ-साथ विस्मरण या भूलने की क्रिया का अध्ययन करना आवश्यक है। यहाँ पर प्रश्न उठता है कि विस्मरण क्या है, विस्मरण के क्या कारण हैं, विस्मृति की हमारे जीवन में क्या उपयोगिता है ? हम किस प्रकार से विस्मरण को कम कर सकते हैं आदि। इन्हीं प्रश्नों का उत्तर देने के लिये हम उस प्रश्न में विस्मरण का स्वरूप (Nature of Forgetting), विस्मरण के कारण (Causes of Forgetting)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विस्मरण की उपयोगिता (Utility of Forgetting) तथा विस्मरण में उन्नति करने के उपाय (Measures to imporve Memory) प्रस्तुत करेंगे।

विस्मृति का स्वरूप
(Nature of Forgetting)

भूतकाल के अनुभवों या अनुभूतियों का प्रत्याह्वान करने में असफल बनाने वाली क्रिया को विस्मरण कहते हैं—

व्यक्ति अपने वातावरण के प्रतिक्रिया करने के परिणामस्वरूप जो कुछ अनुभूतियाँ करता है वे स्मृति चिन्ह (Memory Tracts) के रूप में उसके मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। आवश्यकता पड़ने पर भूतकाल में अर्जित अनुभवों का प्रत्याह्वान (Recall) करना या वर्तमान चेतना में लाना स्मरण (Remembering) है। किन्तु कभी-कभी ऐसे भी अवसर आ जाते हैं जबकि व्यक्ति अपने भूतकालीन अनुभवों का प्रत्याह्वान करने या वर्तमान चेतना में लाने में असमर्थ हो जाता है। व्यक्ति की इस प्रकार की मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) को विस्मरण या भूलना (Forgetting) कहते हैं। इस प्रकार **विस्मरण का तात्पर्य उस मानसिक प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति अपने भूतकाल के अनुभवों या अनुभूतियों को प्रत्याह्वान करने में असफल या असमर्थ हो जाता है।**

"Forgetting is the failure of recall of past experience."

विस्मरण के कारण
(Causes of Forgetting)

वास्तव में विस्मरण सीखने (Learning) धारणा (Retention) एवं प्रत्याह्वान करने (Recall) की क्रियाओं में दोष आने के कारण होता है। इसलिये वे समस्त कारण जो सीखना, धारणा और प्रत्याह्वान को कमजोर करते हैं वही विस्मरण के कारण हैं। अतः विस्मण के कारणों का सम्बन्ध सीखने, धारण करने एवं प्रत्याह्वान करने की क्रियाओं से होता है। विस्मरण के कारणों को हम निम्नलिखित दो भागों में विभाजित कर सकते हैं—

(१) सैद्धान्तिक कारण (Theoretical Causes)

(२) सामान्य कारण (General Causes)।

अब हम इन दोनों प्रकार के कारणों पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विस्मरण के सैद्धान्तिक कारण
(Theoretical Causes of Forgetting)

विस्मरण क्यों होता है अर्थात् हम अपने भूतकालीन अनुभवों का प्रत्याह्वान करने में क्यों असफल हो जाते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए मनोवैज्ञानिको ने विभिन्न सिद्धान्त प्रस्तुत किये है जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं :—

(१) अनाभ्यास-सिद्धान्त (Theory of Disuse)
(२) प्रतिघात या हस्तक्षेप-सिद्धान्त (Interference-Theory)
(३) दमन-सिद्धान्त (Repression-Theory) ।

(१) अनाभ्यास-सिद्धान्त
(Theory of Disuse)

[अ] सिद्धान्त का स्पष्टीकरण
(Clarification of the Theory)

अनाभ्यास-सिद्धान्त, जिसे हम 'अनाभ्यास द्वारा क्षय का सिद्धान्त' (Theory of Atrophy through Disuse) भी कहते हैं, का प्रतिपादन एबिंगहौस (Ebbinghause) एवं उसके समर्थकों ने किया। एबिंगहौस महोदय का विचार है कि जब हम कोई विषय-सामग्री याद कर लेते हैं और बहुत दिनों तक उस सीखी हुई विषय-सामग्री को पुनः स्मरण नहीं करते हैं तो हम उसे भूलने लगते हैं। इसीलिए इस सिद्धान्त को अनाभ्यास सिद्धान्त (Theory of Disuse) कहते हैं। यह सिद्धान्त हमें यह बताता है कि विस्मरण की क्रिया के लिए व्यक्ति उत्तरदायी नहीं है बल्कि यह तो अनाभ्यास (Disuse) तथा काल-व्यवधान (Lapse of Time) के कारण अपने आप होती रहती है। इस प्रकार एबिंगहौस के अनुसार **'विस्मरण एक निष्क्रिय मानसिक प्रक्रिया है।'** (Forgetting is a Passive Mental Process) ।

[ब] एबिंगहौस की विस्मरण रेखा
(Ebbinghause Forgetting Curve)

एबिंगहौस महोदय ने अनाभ्यास-सिद्धान्त को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न लम्बाई की अनेकों निरर्थक शब्दों की सूचियों को कण्ठस्थीकरण किया और उसके उपरान्त २० मिनट, १ दिन, दो दिन, ६ दिन और ३१ दिनों के बाद प्रत्याह्वान (Recall) । इस प्रयोग के फल (Result) आधार पर उन्होंने यह बताया कि जैसे-जैसे समय व्यतीत होता है वैसे-वैसे विस्मरण की मात्रा भी बढ़ती जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रारम्भ मे विस्मरणों की गति अधिक तेज होती है किन्तु बाद में धीरे-धीरे मन्द होती जाती है। एबिंगहौस महोदय ने अपने इस प्रयोग के आधार पर एक रेखाचित्र Curve) भी तैयार किया जो **'एबिंगहौस की विस्मरण रेखा** (Ebbinghause Forgetting Corve) के नाम से प्रसिद्ध है। रेखाचित्र का चित्र हम नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं।

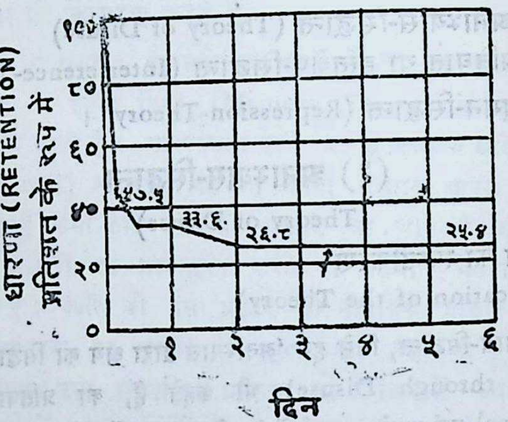

चित्र संख्या २५—एबिंगहौस की विस्मरण रेखा।

[स] सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of the Theory)

यह तो निर्विवाद सत्य है कि अनाभ्यास (Disuse) तथा काल व्यवधान (Lapse of Time) के कारण बहुत सी भूलने की क्रियायें होती हैं किन्तु सभी विस्मरण की क्रियाओं का कारण अनाभ्यास तथा काल-व्यवधान बतलाना उचित नहीं है। जीवन की कितनी ही ऐसी घटनाएँ और परिस्थितियाँ होती हैं जो साठ वर्ष बीत जाने पर भी व्यक्ति उन्हें नहीं भुला पाता है। अतः यह सिद्धान्त पूर्ण संगत नहीं है।

(२) प्रतिघात या हस्तक्षेप सिद्धांत

(Interference-Theory)

[अ] सिद्धान्त का स्पष्टीकरण
(Clarification of the Theory)

प्रतिघात या हस्तक्षेप के सिद्धान्त का प्रतिपादन मूलर (Muller) पिलजेकर (Pilzecker), वुडवर्थ (Woodworth) इत्यादि मनोवैज्ञानिकों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding: MIDF

ने किया। इनका विचार है कि किसी विषय-सामग्री को सीखने के बाद यदि कोई अन्य मानसिक क्रिया की जाती है तो पहले की सीखी हुई विषय सामग्री के स्मृति चिन्ह (Memory Tracts) कमजोर हो जाते हैं जिससे कि इस विषय-सामग्री को भूल जाया जाता है। इस प्रकार इस सिद्धान्त के अनुसार सीखने और प्रत्याह्वान के समय के बीच में यदि कोई अन्य मानसिक क्रिया हो तो वह पहले से सीखी हुई विषय-सामग्री के प्रत्याह्वान (Recall) को कमजोर बना देती है या उसमें बाधक सिद्ध होती है। इस क्रिया को **'पृष्ठोन्मुख अवरोध (Retroactive Inhibition)** कहते हैं। संक्षेप से हस्तक्षेप सिद्धान्त के अनुसार भूलने का कारण पृष्ठोन्मुख अवरोध और तदनुकूल **'विस्मरण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है'** (Forgetting is a Active Mental Process)।

[ब] पृष्ठोन्मुख अवरोध पर मूलर एवं पिलजेकर का प्रयोग (Experiment of Muller and Pilzecker on Retroactive Inhibition)

हस्तक्षेप या प्रतिघात सिद्धान्तों को सिद्ध करने के लिये मूलर (Muller) तथा पिलजेकर (Pilzecker) ने पृष्ठोन्मुख अवरोध पर एक प्रयोग किया। इस प्रयोग में उन्होंने प्रयोज्य (Subect) को समान विषय-सामग्री (Subject matter was of similar Nature) को दो अवस्थाओं (Different Situations) में सिखलाने के बाद उनका प्रत्याह्वान (Recall) करवाया। प्रथम अवस्था में प्रयोज्य को सीखने के लिये विषय-सामग्री दी गई और सीखने के बाद ३० मिनट का विश्राम दिया गया और उसका प्रत्याह्वान करवाया गया। द्वितीय अवस्था में पहले प्रथम अवस्था के ही समान विषय-सामग्री सीखने को दी। उसे सीख लेने के बाद दूसरी विषय-सामग्री ३० मिनट को विश्राम की अवधि में सीखने के लिये दी। इसके बाद पहली विषय-सामग्री का प्रत्याह्वान करवाया गया। इस प्रयोग में उन्होंने यह पाया कि प्रथम अवस्था (जिसमें प्रयोज्य को ३० मिनट का विश्राम प्राप्त हुआ था) का प्रत्याह्वान द्वितीय अवस्था के प्रत्याह्वान (जिसमें ३० मिनट की विश्राम की अवधि में एक दूसरी विषय-सामग्री को सीखने के लिये दी गई थी) अपेक्षा बहुत अधिक था। इससे स्पष्ट है कि पृष्ठोन्मुख अवरोध के कारण प्रत्याह्वान में क्षति हुई। प्रयोग का परिणाम निम्न तालिका में दिया जा रहा है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवस्थाएँ	सीखना	विश्राम अवधि	प्रत्याह्वान का प्रतिशत	पृष्ठोन्मुख से क्षति
प्रथम अवस्था	विषय-सामग्री का सीखना	३० मिनट का विश्राम	५६	
द्वितीय अवस्था	विषय-सामग्री का सीखना	३० मिनट में किसी दूसरी विषय सामग्री को सीखना	२६	३०%

[स] सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of the Theory)

उपर्युक्त सिद्धान्त की भाँति यह सिद्धान्त भी एकाकी है। यह ठीक है कि कुछ विस्मृति की क्रियाएँ प्रतिघात व हस्तक्षेप (Interferenec) या पृष्ठोन्मुख अवरोध (Retroactive Inhibition) के कारण होती हैं किन्तु विस्मरण की सभी क्रियाओं की व्याख्या इस आधार पर नहीं की जा सकती है। अन्य सिद्धान्तों की भाँति यह सिद्धान्त भी कुछ ही क्रियाओं की व्याख्या करती है।

(३) दमन-सिद्धान्त

(Repression-Theory)

[अ] सिद्धांत का स्पष्टीकरण (Clarification of the Theory)

फ्रायड आदि मनोविश्लेषणवादियों ने विस्मरण के सम्बन्ध में दमन-सिद्धांत (Repression Theory) को प्रस्तुत किया। उनका विचार है कि व्यक्ति अपमान जनक, दुखद एवं असंतोषजनक अर्थात् अप्रिय (Unpleasant) अनुभूतियों का प्रत्याह्वान (Recall) नहीं करना चाहता। अतः सामाजिक जीवन में उसे जो इस प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं वे चेतन मन (Conscious Mind) से अचेतन मन (Unconscious Mind) में दमित (Repressed) हो जाती हैं। दमित होने के कारण व्यक्ति इनको प्रत्याह्वान (Recall) नहीं कर पाता है। फ्रायड महोदय ने अनेक मानसिक रोगग्रस्त व्यक्तियों के दमित विचारों का अध्ययन किया वे व्यक्ति मानसिक संघर्ष (Mental Conflict) के कारण अपना तथा अपने माता-पिता और भाइयों का नाम, जन्म स्थान, पुरानी घटनाओं आदि को भूल गये थे। इस प्रकार फ्रायड के अनुसार भूलने का कारण अनुभूतियों का दमन करना है। **'विस्मरण एक सक्रिय मानसिक प्रक्रिया है'** (Forgetting is a Active Mental Process) क्योंकि भूलने की क्रिया व्यक्ति स्वयं अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इच्छानुसार करता है। व्यक्ति भूलना (We forget, because went to forget) चाहता है इसलिये ही भूलता है।

[ब] दमन-सिद्धान्त पर जर्सील्ड का प्रयोग

(Experiment of Jersield on Repression-theory)

दमन-सिद्धान्त को स्पष्ट करते हुये हमने बतलाया कि व्यक्ति जो भी जीवन में अप्रिय अनुभूतियाँ करता है उनका दमन (Repression) करने के कारण वह उनका प्रत्याह्वान (Recall) नहीं कर पाता। जर्सील्ड महोदय ने यह जानने के लिये कि क्या जीवन की अप्रिय अनुभूतियां (Unpleasant Experiences) प्रिय अनुभूतियों (Pleasant Experiences) की अपेक्षा शीघ्र भूल जाती हैं, सन्–१६३० में कालेज के ५१ विद्यार्थियों के ऊपर प्रयोग किया। सभी विद्यार्थियों को कागज का एक-एक सादा टुकड़ा दे दिया गया और सबसे उस पर तीन सप्ताहों की प्रिय अनुभूतियों का प्रत्याह्वान (Recall) कर लिखने के लिये कहा गया। इसी प्रकार उन्हें दुबारा कागज का एक-एक टुकड़ा दे दिया गया और उस पर पिछले तीन सप्ताहों की समस्त अप्रिय अनुभूतियों का प्रत्याह्वान को लिखने के लिये कहा गया। २१ दिन व्यतीत हो जाने के उपरान्त उन समस्त विद्यार्थियों से उन्हीं तीनों सप्ताहों की प्रिय तथा अप्रिय अनुभूतियों का प्रत्याह्वान कर लिखने के लिये कहा गया जिनको कि २१ दिन पहले लिख चुके थे। दोनों समयों के प्रत्याह्वानों के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर निम्न परिणाम प्राप्त हुए—

प्रत्याह्वान	प्रिय अनुभूतियाँ	अप्रिय अनुभूतियाँ
प्रथम प्रत्याह्वान	१६·३५%	१३·७%
द्वितीय प्रत्याह्वान	७·००%	३·१४%

[स] सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of the Theory)

उपर्युक्त वर्णित अन्य सिद्धान्तों की भाँति दमन-सिद्धान्त भी आलोचना के परे नहीं हैं। हम यह मानने को तैयार हैं कि कुछ विस्मरण की क्रियाएँ दमन के कारण होती हैं किन्तु यह कहना कि विस्मरण की सभी क्रियाएँ एक मात्र दमन के कारण हैं न्याय संगत नहीं है। हम देखते हैं कि विद्यार्थी परीक्षा की दृष्टि से इतिहास, नागरिक शास्त्र इत्यादि विषयों को स्मरण रखने की भरसक चेष्टा करते हैं किन्तु फिर भी बहुत सी विषय सामग्री को भूल जाते हैं। इस प्रकार फ्रायड का यह कथन कि विस्मरण क्रिया एक मात्र दमन पर आधारित है गलत है।

निष्कर्ष—उपर्युक्त शब्दों में हमने विस्मरण के कारण सम्बन्धी तीन सिद्धांत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यथा अनाभ्यास, सिद्धान्त, प्रतिघात या हस्तक्षेप-सिद्धान्त तथा दमन सिद्धान्त प्रस्तुत किये। ये सभी सिद्धान्त एकाकी हैं। यह ठीक है कि ये सभी सिद्धान्त विस्मरण के कारण स्पष्ट करते हैं किन्तु विस्मरण की सभी क्रियाओं की व्याख्या किसी एक सिद्धान्त के आधार पर नहीं की जा सकती है। वस्तुतः ये सभी सिद्धान्त विस्मरण के एक-एक कारण पर प्रकाश डालते हैं। व्यक्ति अनाभ्यास (Disuse), पृष्ठोन्मुख अवरोध (Retroactive Inhibition) तथा दमन (Repression) इन तीनों के कारण विस्मरण की क्रिया करता है। इस दृष्टिकोण से **'विस्मरण एक निष्क्रिय-सक्रिय मानसिक प्रक्रिया'** (Forgetting is a Passive-Active Mental Process) है। अब हम इन तीनों सिद्धान्तों द्वारा बताये हुये कारणों के साथ-साथ विस्मरण के अन्य कारण भी प्रस्तुत करेंगे।

विस्मरण के सामान्य कारण

(General Causes of Forgetting)

विस्मरण या भूलने की क्रिया के लिये निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं—

(१) समय व्यवधान (Time Interval)—इस कारण को यदि प्रथम सिद्धान्त का स्वरूप कहा जाय तो अनुचित न होगा। इसके कारण यदि हम सीखी हुई बात का अभ्यास नहीं करते हैं तो वह भूल जायगी। यह बात हम अनाभ्यास सिद्धान्त (Theory of Disuse) में स्पष्ट कर चुके हैं।

(२) उपकरण का स्वरूप (Nature of Material)—व्यक्ति का भूलना बहुत कुछ सीखने वाली वस्तु पर आधारित होता है। यदि याद करने वाली वस्तु सार्थक (Meaningful), रुचिकर (Pleasant) एवं सरल (Easy) है तो वह बहुत कम भूलती है। दूसरी ओर यदि सीखने वाली वस्तु निरर्थक, अरुचिकर एवं कठिन है तो वह शीघ्र ही भूल जाती हैं।

(३) उपकरण की मात्रा (Amount of Material)—कभी-कभी हम उपकरण की मात्रा के कारण भी भूल जाते हैं। यदि कोई विषय लम्बा होता है तो हम उसका बार-बार अभ्यास करते हैं फलस्वरूप वह बहुत दिनों तक नहीं भूल पाता है। दूसरी ओर यदि कोई विषय छोटा होता है तो हमें उसको याद करने के लिये बहुत अभ्यास नहीं करना पड़ता है। फलस्वरूप उसका गहरा संस्कार नहीं पड़ पाता है और हम उसे शीघ्र ही भूल जाते हैं।

(४) सीखने की मात्रा में कमी (Under Learning)—यदि कोई व्यक्ति किसी विषय को कम मात्रा में सीखता है तो स्वाभाविक है कि वह उसको

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शीघ्र भूल जायगा। इसके विपरीत यदि वह विषय को काफी मात्रा में सीख लेता है तो वह उसे बहुत कम भूलता है।

(५) सीखने की दोषपूर्ण विधि (Defective Method of Learning)—यदि सीखने अथवा याद करने की विधि उचित नहीं होती है तो व्यक्ति सीखी हुई वस्तु को अल्पकाल में ही भूल जाता है। इस प्रकार सीखने की विधि का उपयुक्त न होना भूल जाने का प्रमुख कारण है।

(६) पृष्ठोन्मुख अवरोध (Retroactive Inhibition)—किसी विषय के याद करने एवं पुनः स्मरण के बीच में जो मानसिक क्रियाएँ होती हैं वे याद किये हुये विषय का पुनः स्मरण (Recall) करने में बहुधा बाधा पहुँचाती हैं परिणाम-स्वरूप हम उस याद किये हुये विषय को भूल जाते हैं। इस मानसिक क्रिया को ही पृष्ठोन्मुख अवरोध (Retroactive Inhibition) कहते हैं। इसके सम्बन्ध में हम द्वितीय सिद्धान्त पर प्रकाश डाल चुके हैं। इसके विषय में जेन्किस (Jenkins) एवं डलेनबैक (Dallenbach) ने भी ठीक ही लिखा है, 'विस्मृति केवल मस्तिष्क पर अंकित पराने चिन्ह अथवा पुराने साहचर्य को मिटाना नहीं है बल्कि उससे कहीं अधिक नवीन क्रियाओं के द्वारा मस्तिष्क पर अंकित पुराने चिन्ह अथवा पुराने साहचर्य में बाधा का उपस्थित करना है।"* पृष्ठोन्मुख अवरोध का सबसे पहले वर्णन मूलर (Muller) तथा पिलजेकर (Pilzecker) ने किया है। उन्होंने पृष्ठोन्मुख अवरोध के निम्नलिखित चार कारण बतलाये हैं।

(१) पूर्व-शिक्षण एवं विक्षेप-शिक्षण में समानता (Similarity between Pre-training and Interpolated Training)—पूर्व-शिक्षण एवं विक्षेप-शिक्षण में जितनी अधिक समानता होगी उतना ही अधिक पृष्ठोन्मुख अवरोध होता है।

(२) पूर्व-शिक्षण एवं विक्षेप-शिक्षण की मात्रा में अन्तर (Difference between quantity of pre-training and Interpolated-training)—पूर्व-शिक्षण से विक्षेप-शिक्षण की मात्रा में जितनी अधिकता होगी उतनी

---

*"Forgetting is not so much a matter of the decay of the impression and association as it is a matter of the interference, inhibition or obliteration of the old by the new."

—**Jenkins and Dallenbach**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

ही अधिकता पृष्ठोन्मुख अवरोध में भी होगी और जितनी कम होगी उतनी ही कम पृष्ठोन्मुख अवरोध भी होगा।

(३) विक्षेप क्रियाओं का तात्कालिक सम्बन्ध (Spontaneous relation of Interpolated Activities)—पूर्व-शिक्षण विक्षेप-क्रियाओं के बीच जितना कम समय होगा उतना अधिक पृष्ठोन्मुख अवरोध होगा।

(४) सीखने वाले की आयु एवं बुद्धि (Age and Intelligence of the Learner)—यदि सीखने वाले व्यक्ति की आयु एवं बुद्धि अधिक होगी तो पृष्ठोन्मुख अवरोध का बहुत कम प्रभाव पड़ेगा।

सर्वश्री मैल्टन (Melton) एवं लैकुन (Lackun) ने पृष्ठोन्मुख अवरोध सम्बन्धित द्विकारक प्रस्तुत किया जिसके अनुसार पृष्ठोन्मुख अवरोध में अग्रलिखित दो बातों का विशेष प्रभाव पड़ता है—प्रथम नवीन ज्ञान सीखने से पुरानी बात का विस्मरण हो जाता है क्योंकि उसे पुनर्शिक्षण का मौका नहीं मिल पाता है और द्वितीय दूसरे नवीन शिक्षण स्मृति चिन्हों (Memory Tracts) एवं पुराने शिक्षण के स्मृति-चिन्हों में परस्पर प्रतिद्वन्द्विता (Competition) हो जाती है।

(७) मस्तिष्क आघात (Brain Injury)—जब हमारे मस्तिष्क (Brain) में कोई आघात पहुँच जाता है तो हम अपने पूर्व अनुभव किये हुए विचारों का पुनः स्मरण करने में कमजोर हो जाते हैं। प्रायः मस्तिष्क में आघात पहुँचने से उसके स्नायु-तन्तु (Nerve Tissues) छिन्न-भिन्न हो जाते हैं। फलस्वरूप व्यक्ति सीखी या याद की हुई वस्तु को भूल जाता है।

(८) मस्तिष्क की शारीरिक रासायनिक दशा (Physico-chemical state of mind)—कभी-कभी मस्तिष्क की शारीरिक मानसिक दशा (Physico-chemical state of mind) बिगड़ जाती है तो व्यक्ति पुनः स्मरण (Recall) करने में असमर्थ हो जाता है। दूसरे शब्दों में यदि व्यक्ति किसी वस्तु को याद करने के उपरान्त किसी कारण मूर्छित होकर गिर जाता है तो ऐसी हालत में मस्तिष्क में अच्छी तरह रक्त नहीं पहुँचता है। इसका फल यह होता है जब व्यक्ति होश में आता है तो वह सीखी हुई बातों का पुनः स्मरण नहीं कर पाता है। एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने ठीक ही कहा है—

"We fail to recall the matter that we learnt just before we fainted on account of lack of blood supply to the brain. Thus physiological maintenance is essential for remembering."

—An Eminent Psychologist

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(९) **अप्रिय अनुभूतियों का दमन** (Repression)—प्रसिद्ध मनोविश्लेषणवादी (Psychoanalist) मनोवैज्ञानिक फ्रायड (Freud) का विचार है कि व्यक्ति का मन अपने अप्रिय अनुभवों का दमन के द्वारा (Repression) अचेतन क्षेत्र (Unconscious mind) में भेज देता है। फलस्वरूप हम उन्हें भूल जाते हैं। इस प्रकार फ्रायड के अनुसार हम कुछ बातों को स्वयं भुलाने का प्रयास करते हैं। फ्रायड ने अपने विचार को स्पष्ट करते हुये स्वयं लिखा है—

"The forgetting in all cases is proved to be founded on a motive of displeasure." —**Freud.**

(१०) **मादक द्रव्यों का प्रयोग** (Intoxication)—कभी-कभी भूलने का कारण मादक द्रव्यों का सेवन (Intoxication) भी होता है। व्यक्ति सीखने के उपरान्त यदि मादक वस्तुओं का सेवा कर लेता है तो उसकी स्मृति में ह्रास होने लगता है।

(११) **मानसिक रोग** (Mental diseases)—जब कोई व्यक्ति किसी मानसिक रोग का शिकार हो जाता है को उसकी स्मरण शक्ति जाती रहती है। वह जो भी सीखता है तत्काल ही उसे भूल जाया करता है।

(१२) **प्रत्याह्वान में इच्छा का अभाव** (Lack of Desire in Recall) जब व्यक्ति कोई ऐसो विषय-सामग्री सीखता है जिसके प्रत्याह्वान करने की उसकी इच्छा नहीं होती है तो ऐसी विषय-सामग्री को वह शीघ्र भूल जाता है। जो चीजें व्यक्ति बिना किसी लक्ष्य के सीखता है इसको भी भूल जाता है। बिना इच्छा के सीखना या लक्ष्य रहित सीखना निष्क्रिय रूप से सीखना है। निष्क्रिय सीखना शीघ्र विस्मरण हो जाता है।

(१३) **पुनरावृत्ति का अभाव** (Lack of Repetition)—कोई विषय-सामग्री सीखने के बाद बहुत दिनों तक यदि दोहराई नहीं जाती है तो उसका विस्मरण हो जाता है। पुनरावृत्ति के अभाव में सीखने के परिणामस्वरूप जो मस्तिष्क में स्मृति-चिन्ह (Memory Tracts) अंकित हुये थे वे कमजोर पड़ने लगते हैं। संक्षेप में विस्मरण की क्रिया सीखी हुई विषय-सामग्री के दोहराने के अभाव में सम्पादित होती है।

(१४) **संवेदात्मक परिस्थिति में प्रत्याह्वान करना** (Recall in Emotional Situation)—यदि व्यक्ति संवेगात्मक परिस्थितियों में भूत-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालीन अनुभूतियों का प्रत्याह्वान करने का प्रयास करता है तो वह सफल नहीं हो पाता है। उसका प्रमुख कारण यह है कि संवेगात्मक परिस्थिति में व्यक्ति स्वयं संवेगात्मक दशा में हो जाता है जिस दशा में उसका मस्तिष्क ठीक से काम नहीं कर सकता है। प्रायः परीक्षा के भूत से घबराकर कई विद्यार्थी परीक्षा भवन (Examination Hall) में ठीक से याद किये हुये विषय को भूल जाते हैं। इस प्रकार संवेगात्मक परिस्थिति में प्रत्याह्वान (Recall) करने से विस्मरण की क्रिया हो जाती है।

विस्मृति की उपयोगिता

(Utility of Forgetting)

विस्मृति से हमें निम्नलिखित लाभ हैं—

(१) व्यक्ति का स्मृति क्षेत्र सीमित है। फलस्वरूप व्यक्ति जो भी अनुभव अर्जित करता है यदि वह सबको याद किये रहे तो वह नवीन अनुभवों को स्मृति क्षेत्र में स्थान न दे सकेगा। परन्तु व्यक्ति पुरानी बातों को भूल जाता है एवं नवीन बातों को स्मृति क्षेत्र में स्थान देता है।

(२) यदि व्यक्ति को जीवन पर्यन्त के सभी अनुभव याद बने रहेंगे तो उसका जीवन भारस्वरूप हो जायगा। फलस्वरूप विस्मृति की परमावश्यकता है।

(३) मानव-जीवन में बहुत ही दुखद घटनाएँ घटती रहती हैं। जब वह उनको भूल जाता है तो उसके मन में दुख का भी लोप हो जाता है।

(४) भूलने के परिणामस्वरूप ही विद्यार्थी परीक्षा के दृष्टिकोण से उपयोगी बातों को याद कर लेता है एवं अनुपयोगी बातों को भूल जाता है।

(५) भूलने के परिणामस्वरूप व्यक्ति व्यावहारिक जीवन में उपयोग होने वाली बातों को याद रखे रहता है एवं निरर्थक बातों को भूल जाता है।

स्मृति में उन्नति करने के उपाय

(Measures to improve the Memory)

स्मृति में उन्नति या स्मृति प्रशिक्षण के लिए मन ने निम्नलिखित उपाय बतलाए हैं—

(१) व्यक्ति को चाहिए कि वह जिन-जिन बातों को सीखना चाहता है उनको स्मरण करने के इरादे से सीखे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) व्यक्ति को चाहिये कि वह जो सीखे उस पर अच्छी तरह से ध्यान दे।

(३) सीखने के समय स्मृति प्रतिमाओं का उपयोग करना चाहिये।

(४) सीखने वाली बातों का अन्य बातों से साहचर्य स्थापित करना चाहिये।

(५) लय का प्रयोग करना चाहिये क्योंकि इनसे धारणा में सहायता प्राप्त होती है।

(६) थोड़ा-थोड़ा अवकाश देकर किसी सामग्री को सीखना चाहिये। रटने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये।

(७) जिस सामग्री को सीखा जाय उसको मन-ही-मन में दोहराना चाहिये क्योंकि दोहराने से एक तो सीखने में आसानी रहती है दूसरे इससे धारणा में भी सहायता मिलती है।

(८) अध्ययन करने के उपरान्त या तो सो जाना चाहिये अथवा विश्राम तो ले ही लेना चाहिये।

(९) अपने सम्पूर्ण अध्ययन को पढ़ना चाहिये एवं उसको भागों में विभाजित कर पुनः पढ़ना चाहिए।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में विस्मरण का तात्पर्य उस मानसिक प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति अपने भूतकाल के अनुभवों या अनुभूतियों को प्रत्याह्वान करने में असफल या असमर्थ हो जाता है। विस्मरण के कारणों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—[अ] **सैद्धान्तिक कारण**—(१) अनाभ्यास सिद्धान्त, (२) प्रतिघात या हस्तक्षेप सिद्धान्त तथा (३) दमन सिद्धान्त; [ब] **सामान्य कारण**—(१) समय व्यवधान, (२) उपकरण का स्वरूप, (३) उपकरण की मात्रा, (४) सीखने की मात्रा में कमी, (५) सीखने की दोषपूर्ण विधि, (६) पृष्ठोन्मुख अवरोध, (७) मस्तिष्क आघात, (८) मस्तिष्क की शारीरिक रासायनिक दशा, (९) अप्रिय अनुभूतियों का दमन, (१०) मादक द्रव्यों का प्रयोग, (११) मानसिक रोग, (१२) संवेग, (१३) प्रत्याह्वान में इच्छा का अभाव, (१४) पुनरावृत्ति का अभाव तथा (१५) संवेगात्मक परिस्थिति में प्रत्याह्वान करना। यों तो प्रत्यक्ष-रूप से विस्मृति से कोई लाभ प्रतीत नहीं होता है किन्तु वास्तव में विस्मृति व्यक्ति को वातावरण से अभियोजन करने के लिये अग्रलिखित सहायता देती है—(१) नवीन अनुभवों को स्थान देना, (२) भार कम होना, (३) दुखद घटनाएँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूल जाना, (४) आवश्यक बातें याद रखना, तथा (५) व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता। स्मृति की उन्नति या स्मृति प्रशिक्षण के उपाय—(१) इरादा, (२) ध्यान देना, (३) स्मृति प्रतिमाओं का उपयोग, (४) साहचर्य स्थापित करना, (५) लय का प्रयोग, (६) थोड़ा अवकाश देकर पढ़ना एवं रटने का प्रयत्न न करना, (७) मन ही मन दोहराना, (८) अध्ययन के उपरान्त सोना या विश्राम लेना तथा (९) सम्पूर्ण विषय-सामग्री को पढ़कर भागों में विभाजित करके याद करना।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२४

साहचर्य के नियम

[Laws of Association]

प्रश्न संख्या—२४

विचारों का साहचर्य क्या है ? साहचर्य के कौन-कौन से नियम हैं ? जीवन में विचारों के साहचर्य की क्या उपयोगिता है ?

What is association of ideas ? What are the laws of of association ? What is the utility of the association of ideas in life.

भूमिका (Introduction)

प्रायः हम नित्यप्रति यह अनुभव करते हैं कि अगर हम किसी वस्तु अथवा विचार का प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण (Recall) करते हैं तो हमें अन्य वस्तुओं अथवा विचारों का स्वतः स्मरण हो जाता है । जब हमें गरीब लोगों की याद आ जाती है तो स्वतः अमीर लोगों का भी स्मरण हो जाता है, जब हम ठिगने आदमी के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे होते हैं तो हमें लम्बे आदमी की याद आ जाती है । इसी प्रकार दुःख के साथ सुख की, नर के साथ नारी की, कला के साथ माला या काला सफेद की, कलम के साथ दवात की एवं पेट के साथ सेठ, पेट्ठू पंडित व भोजन की याद आ जाती है, आखिर ऐसा क्यों होता है ? हम तो पेट की याद कर रहे थे फिर हमें सेठ, पेट्ठू पंडित या भोजन की क्यों याद आ गई । इसका सीधा सा उत्तर हैं 'विचारों का साहचर्य' (Association of Ideas) के कारण । अब हम इस प्रश्न में विचारों के साहचर्य के सम्बन्ध में अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त करने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिए साहचर्य का स्वरूप (Nature of Association), साहचर्य के नियम (Laws of Association), साहचर्य के प्रकार (Kinds of Association) तथा विचारों में साहचर्य की उपयोगिता (Utility of Association) प्रस्तुत करेंगे।

साहचर्य के स्वरूप
(Nature of Association)

विचारों या अनुभवों के पारस्परिक सम्बन्धों को साहचर्य कहते हैं।

हम जानते हैं कि मनुष्य जो भी अनुभव अर्जित करता है वे सब मानसिक संस्कार (Mental Disposition) के रूप में हमारे मस्तिष्क में सुरक्षित रहते हैं। जब हम दो या दो से अधिक विचारों अथवा वस्तुओं का अनुभव इस प्रकार अर्जित करते हैं कि इनमें आपस में सम्बन्ध हो जाता है तो ये अनुभव एक दूसरे से सम्बन्धित अवस्था में मानसिक संस्कार के रूप मे मस्तिष्क में निहित रहते हैं। इन्हीं विचारों तथा अनुभवों के पारस्परिक सम्बन्धों को साहचर्य (Ideas of Association) कहते हैं। विचारों के साहचर्य की परिभाषा देते हुये बी० एन० झा ने ठीक ही लिखा है, **"विचारों का साहचर्य एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके द्वारा कुछ विशिष्ट सम्बन्ध के कारण एक विचार दूसरे से सम्बन्धित हैं।"**

"The association of ideas is a well known principle by which one idea tends to be connected with another owing to certain specific relationship." **—B. N. Jha.**

साहचर्य के नियम
(Laws of Association)

विचारों के साहचर्य के कुछ नियम हैं जिन्हें हम साहचर्य के नियम (Laws of Association) कहते हैं। इन नियमों के द्वारा ही साहचर्य नियन्त्रित होता है। साहचर्य के नियमों को निम्नलिखित दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।—

(१) साहचर्य के मुख्य नियम (Primary Laws of Association)

(२) साहचर्य के गौण नियम (Secondary Laws of Association)

अब हम इन दोनों भागों के अन्तर्गत आने वाले नियमों को निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

साहचर्य के नियम
(Laws of Association)

- साहचर्य के मुख्य नियम (Primary Laws of Association)
- साहचर्य के गौण नियम (Secondary Laws of Association)

साहचर्य के मुख्य नियम (Primary Laws of Association):

- सहचारिता का नियम (Law of Contiguity)
- समानता का नियम (Law of Similarity)
- वैपरीत्य का नियम (Law of Contrast)

साहचर्य के गौण नियम (Secondary Laws of Association):

- प्राथमिकता का नियम (Law of Primacy)
- नवीनता का नियम (Law of Recency)
- पुनरावृत्ति का नियम (Law of Frequency)
- प्रबलता का नियम (Law of Vividness)
- मनः स्थिति का नियम (Law of Mood)

नीचे हम इन नियमों पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं :—

साहचर्य के मुख्य नियम
(Primary Laws of Association)

साहचर्य के मुख्य नियम निम्नलिखित हैं :—

(१) सहचारिता का नियम (Law of Contiguity)—जब दो या दो से अधिक वस्तुओं का ज्ञान व्यक्ति एक साथ करता है तो उनके संस्कार उसके मस्तिष्क में, एक दूसरे से सम्बन्धित होकर संरक्षित हो जाते हैं। फलस्वरूप जब एक वस्तु की प्रक्रिया मनुष्य के चेतन मन में आती है तो दूसरी वस्तु का स्मरण स्वतः हो जाता है। इस प्रकार एक साथ अनुभव की हुई बातों का एक का स्मरण से दूसरी का स्मरण हो जाना सहचारिता के नियम का कारण है। सहचारिता दो प्रकार की हुआ करती हैं—स्थानगत सहचारिता (Spatial Association) एवं कलागत सहचारिता (Temporal Association)। अगर किसी अलमारी में कलम एवं दावात एक साथ रक्खी जाती है तो कलम का स्मरण होने से दावात का स्मरण स्वतः हो जायगा। यह स्थानगत सहचारिता के कारण हुआ। सीता का स्मरण होने पर राम का स्मण हो आना कालगत सहचारिता का उदारहण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। सली के शब्दों में कहने का तात्पर्य यह है, **"वे अनुभव जो या तो सहचारी में या अनुक्रम में साथ-साथ घटते हैं एक दूसरे को स्मरण कराते हैं।"**

"Presentation which occur together whether simultaneously or in the close succession tend afterwards to revive or suggest one another."

—**Sully.**

(२) **समानता का नियम (Law of Similarity)**—किन्हीं दो या दो से अधिक वस्तुओं में यदि पूर्ण अथवा आंशिक समानता होती है तो एक वस्तु का स्मरण होने पर उससे सम्बन्धित दूसरी वस्तु स्वयं स्मरण हो जाती है। यह समानता निमय के अनुसार होती है। समानता के नियम के अनेक रूप हो सकते हैं, जैसे ध्वनि समानता (Similarity in Sound), अर्थ समानता (Similarity in Meaning) आदि। लाला शब्द का स्मरण हो जाने पर माला, साला आदि शब्दों का स्मरण हो आना ध्वनि समानता का उदाहरण है एवं नारी शब्द का स्मरण होने पर स्त्री शब्द का स्मरण होना अर्थ समानता का उदाहरण है। इस प्रकार ड्रमण्ड एवं मैलोन के शब्दों में, **"किसी मानसिक अवस्था का घटित होना जो कि समान भूतकालीन स्थिति के समान है, उन पुरानी स्थिति का पुनरीवर्तन करता है।"**

"The occurrence of any past state of Mind which resembles a past state tends to bring about the occurrence of that past state."

—**Drumond & Melloen.**

(३) **वैपरीत्य का नियम (Law of Contrast)**—जो विचार अथवा वस्तु एक दूसरे से विरोधी हुआ करते हैं, वे एक दूसरे का स्मरण करा देता है, जैसे उजली अंधेरी रात का स्मरण करा देती है, दुःख-सुख का स्मरण करा देता है, मोटी वस्तु पतली वस्तु की याद करा देती है आदि। यह सब वैपरीत्य के नियम के अनुसार होता है। किसी मनोवैज्ञानिक ने ठीक ही कहा है, **"एक प्रत्यक्ष अथवा विचार की प्रवृत्ति अपने विरोधी का सुझाव करने की होती है।"**

"A presentation or an idea tends to suggest its contrary or opposite."

—**An Eminent Psychologist.**

(४) **क्रमिक रुचि का नियम (Law of Continuity of Interest)**—व्यक्ति के मस्तिष्क में जो अनुभव रुचि के आधार पर मानसिक संस्कारों के रूप में संरक्षित होते हैं उनमें पारस्परिक घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। फलस्वरूप अगर किसी बालक की रुचि पढ़ने में है तो शिक्षालय शब्द को सुनते ही उसे पढ़ने की याद आ जायगी। इसी प्रकार यदि एक विद्यार्थी की रुचि 'फुटबाल'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खेलने में है और दूसरे विद्यार्थी की रुचि 'वॉली-वाल' खेलने में है तो 'खेल' शब्द सुनने से पहले विद्यार्थी को तो 'फुटबाल' शब्द का स्मरण हो जायेगा और दूसरे विद्यार्थी को 'बॉल-बाल' शब्द का स्मरण हो जायेगा। यह सब क्रमिक रुचि के नियम के अनुसार हुआ करता है।

साहचर्य के गौण नियम

(Secondary Laws of Association)

मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित साहचर्य के गौण नियमों पर विशेष बल दिया है—

(१) प्राथमिकता का नियम (Law of Primacy)—जो संस्कार सबसे पहले मस्तिष्क में संरक्षित होते हैं वे बहुत ही स्थाई हुआ करते हैं। इसके साथ-साथ ये संस्कार बहुत ही सरलता से पुनः जागृत हो जाते हैं। इसीलिए प्रायः कहा जाता है कि जो संस्कार बचपन में पड़ जाते हैं वे जीवन पर्यन्त बने रहते हैं। इसी प्रकार यदि कोई विद्यार्थी अपनी योग्यता का अच्छा प्रभाव प्रथम दिन किसी शिक्षक पर डालता है तो शिक्षक उसे कभी नहीं भूलता।

(२) नवीनता का नियम (Low of Recency)—जो अनुभव व्यक्ति हाल में ही अर्जित करता है उनको वह बहुधा याद किया करता है या वे उसे स्वतः स्मरण हो आते हैं। यही कारण है कि यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा देने के पूर्व पाठ को दोहरा लेता है तो उसकी उसे परीक्षा भवन में याद आती है।

(३) पुनरावृत्ति का नियम (Law of Frequency)—जो अनुभव हम बार-बार किया करते हैं वे हमारे मस्तिष्क में प्रबलता से धारित हो जाते हैं। फलस्वरूप इसका स्मरण भी सरलता से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए जो बालक प्रतिदिन सुबह उठकर ईश्वर की प्रार्थना किया करता है वह 'ईश्वर' शब्द को सुनकर शीघ्र ही प्रार्थना का स्मरण करेगा। इसी प्रकार अन्य संस्कार जो बारम्बार अनुभव किये जाते हैं शीघ्र ही स्मरण किये जाते हैं।

(४) प्रबलता का नियम (Law of Vividness)—जो अनुभव प्रबल भावनाओं सहित व्यक्ति के मस्तिष्क में मानसिक संस्कार के रूप में धारित हो जाते हैं वे बहुत ही स्थाई होते हैं एवं सरलता से पुनर्जागृत हो जाते हैं। उदाहरण के लिए यदि कोई बालक हाई स्कूल की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करता है तो जब भी वह 'हाई स्कूल' शब्द को सुनेगा तो उसे 'प्रथम स्थान' शब्द की याद आयेगी। इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति रेल की दुर्घटना में मरे सैकड़ों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्तियों को रक्त रंजित अवस्था में देखता है तो उसे उन व्यक्तियों को हमेशा याद आएगी।

(५) मनःस्थिति का नियम (Law of Mood)—व्यक्ति अपनी मनः स्थिति के अनुकूल अनुभवों को स्मरण करता है। यदि उसके मन में कोई विचार आता है तो वह अपनी मनः स्थिति के अनुकूल उससे सम्बन्धित विचारों का स्मरण करता है। यही कारण है कि जो बात आज किसी व्यक्ति को हँसा लेती है कल वही बात व्यक्ति की मनः स्थिति में परिवर्तन होने के कारण नही हँसा पाती है। इस प्रकार व्यक्ति की मनः स्थिति का बहुत ही महत्व है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने तो साहचर्य के गौण नियमों में मनः स्थिति के नियमों को सबसे महत्वपूर्ण बतलाया है।

साहचर्य के प्रकार

(Kinds of Association)

साहचर्य निम्नलिखत दो प्रकार के होते हैं :—

(१) स्वतन्त्र-साहचर्य (Free-Association)—जब कोई प्रयोगकर्ता (Experimenter) अपने प्रयोज्य (Subject) को–कोई–शब्द–उत्तेजक (Stimulus) के रूप में देता है और उसे आदेश देता है कि वह अपने मन में आये हुये किसी भी शब्द के द्वारा प्रक्रिया (Response) कर सकता है तो इसे स्वतन्त्र साहचर्य (Free-Association) कहते हैं। उदाहरण के लिए प्रयोगकर्ता प्रयोज्य को 'नदी' शब्द देता है तो प्रयोज्य जो मन आये उसी 'शब्द' द्वारा स्वतन्त्रता-पूर्वक प्रतिक्रिया कर सकता है। इस प्रकार स्वतन्त्रतापूर्वक उत्तेजक के प्रति प्रतिक्रिया करना स्वतन्त्र-साहचर्य है।

(२) नियन्त्रित-साहचर्य (Controlled or Constrained Association)—जब प्रयोगकर्ता अपने प्रयोज्य को कोई शब्द उत्तेजक (Stimulus) के रूप में देते हुये यह आदेश देता है कि तुम्हें किसी विशेष शब्द जैसे उत्तेजक का विरोधी, विशेषण, संज्ञा आदि के द्वारा प्रतिक्रिया करना है तो इसे नियन्त्रित साहचर्य (Controlled or Constrained Association) कहते हैं। उदाहरण के लिए जब प्रयोगकर्ता 'काला' शब्द के प्रति उसके विरोधी शब्द द्वारा प्रतिक्रिया करने का आदेश देता है तो प्रयोज्य सफेद शब्द द्वारा प्रतिक्रिया करता है। नियन्त्रित साहचर्य दो प्रकार का होता है, पूर्ण नियन्त्रित साहचर्य (Completely Contolled Association) एवं आंशिक नियन्त्रित साहचर्य (Partly Controlled Association)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचारों के साहचर्य की उपयोगिता
(Utility of Association of Ideas)

विचारों के साहचर्य की जीवन में निम्नलिखित उपयोगिता है :—

(१) साहचर्य के ही कारण जब हम एक वस्तु अथवा विचार का अनुभव करते हैं तो हमें दूसरी वस्तु अथवा विचार का स्वतः पुनः स्मरण (Recall) हो जाता है। इस दृष्टिकोण से हमारी स्मृति बहुत कुछ साहचर्यों पर आधारित है।

(२) साहचर्य परीक्षा के द्वारा हम यह जान सकते हैं कि किस व्यक्ति का किस व्यवसाय के प्रति झुकाव है।

(३) साहचर्य के द्वारा हम अपराधियों का पता लगाने में समर्थ हो जाते हैं।

(४) साहचर्य परीक्षा द्वारा हम इस बात का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं कि अमुक व्यक्ति किस वातावरण के बीच रहता है।

(५) साहचर्य परीक्षा द्वारा हम बता सकते हैं कि किन चीजों को वह पसन्द करता है एवं किन चीजों से वह घृणा करता है।

(६) साहचर्य परीक्षा के द्वारा संवेगात्मक ग्रन्थियों (Emotional Complexes) का पता लगाया जा सकता है।

(७) साहचर्य परीक्षा के द्वारा इस बात का पता लगा सकता है कि किसी व्यक्ति के माता-पिता व अन्य लोग उसके प्रति किस तरह का व्यवहार करते हैं।

(८) साहचर्य के द्वारा व्यक्तित्व के प्ररूपों (Types of Personality) का पता लगाया जा सकता है।

(९) साहचर्य परीक्षा द्वारा मानसिक रोगियों के रोग के कारण का पता लगाया जा सकता है।

(१०) साहचर्य परीक्षा की सहायता से हम किसी बात को स्थाई रूप से स्मरण रख सकते हैं।

उपसंहार (Conclusion)

इस प्रकार हम विचारों के पारस्परिक सम्बन्धों को साहचर्य (Association) कहते हैं। साहचर्य के नियमों को मनोवैज्ञानिकों ने दो भागों में विभाजित किया है—(१) साहचर्य के मुख्य नियम (Primary Laws of Association) एवं (२) साहचर्य के गौण नियम (Secondary Laws of Association)। **साहचर्य के मुख्य नियम**—(१) सहचारिता का नियम, (२) समानता का नियम,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्तियों को रक्त रंजित अवस्था में देखता है तो उसे उन व्यक्तियों को हमेशा याद आएगो।

(५) मनःस्थिति का नियम (Law of Mood)—व्यक्ति अपनी मनः स्थिति के अनुकूल अनुभवों को स्मरण करता है। यदि उसके मन में कोई विचार आता है तो वह अपनी मनः स्थिति के अनुकूल उससे सम्बन्धित विचारों का स्मरण करता है। यही कारण है कि जो बात आज किसी व्यक्ति को हँसा लेती है कल वही बात व्यक्ति की मनः स्थिति में परिवर्तन होने के कारण नही हँसा पाती है। इस प्रकार व्यक्ति की मनः स्थिति का बहुत ही महत्व है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों ने तो साहचर्य के गौण नियमों में मनः स्थिति के नियमों को सबसे महत्वपूर्ण बतलाया है।

साहचर्य के प्रकार

(Kinds of Association)

साहचर्य निम्नलिखत दो प्रकार के होते हैं :—

(१) स्वतन्त्र-साहचर्य (Free-Association)—जब कोई प्रयोगकर्ता (Experimenter) अपने प्रयोज्य (Subject) को–कोई–शब्द–उत्तेजक (Stimulus) के रूप में देता है और उसे आदेश देता है कि वह अपने मन में आये हुये किसी भी शब्द के द्वारा प्रक्रिया (Response) कर सकता है तो इसे स्वतन्त्र साहचर्य (Free-Association) कहते हैं। उदाहरण के लिए प्रयोगकर्ता प्रयोज्य को 'नदी' शब्द देता है तो प्रयोज्य जो मन आये उसी 'शब्द' द्वारा स्वतन्त्रता-पूर्वक प्रतिक्रिया कर सकता है। इस प्रकार स्वतन्त्रतापूर्वक उत्तेजक के प्रति प्रतिक्रिया करना स्वतन्त्र-साहचर्य है।

(२) नियन्त्रित-साहचर्य (Controlled or Constrained Association)—जब प्रयोगकर्ता अपने प्रयोज्य को कोई शब्द उत्तेजक (Stimulus) के रूप में देते हुये यह आदेश देता है कि तुम्हें किसी विशेष शब्द जैसे उत्तेजक का विरोधी, विशेषण, संज्ञा आदि के द्वारा प्रतिक्रिया करना है तो इसे नियन्त्रित साहचर्य (Controlled or Constrained Association) कहते हैं। उदाहरण के लिए जब प्रयोगकर्ता 'काला' शब्द के प्रति उसके विरोधी शब्द द्वारा प्रतिक्रिया करने का आदेश देता है तो प्रयोज्य सफेद शब्द द्वारा प्रतिक्रिया करता है। नियन्त्रित साहचर्य दो प्रकार का होता है, पूर्ण नियन्त्रित साहचर्य (Completely Contolled Association) एवं आंशिक नियन्त्रित साहचर्य (Partly Controlled Association)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचारों के साहचर्य की उपयोगिता
(Utility of Association of Ideas)

विचारों के साहचर्य की जीवन में निम्नलिखित उपयोगिता है :—

(१) साहचर्य के ही कारण जब हम एक वस्तु अथवा विचार का अनुभव करते हैं तो हमें दूसरी वस्तु अथवा विचार का स्वतः पुनः स्मरण (Recall) हो जाता है। इस दृष्टिकोण से हमारी स्मृति बहुत कुछ साहचर्यों पर आधारित है।

(२) साहचर्य परीक्षा के द्वारा हम यह जान सकते हैं कि किस व्यक्ति का किस व्यवसाय के प्रति झुकाव है।

(३) साहचर्य के द्वारा हम अपराधियों का पता लगाने में समर्थ हो जाते हैं।

(४) साहचर्य परीक्षा द्वारा हम इस बात का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं कि अमुक व्यक्ति किस वातावरण के बीच रहता है।

(५) साहचर्य परीक्षा द्वारा हम बता सकते हैं कि किन चीजों को वह पसन्द करता है एवं किन चीजों से वह घृणा करता है।

(६) साहचर्य परीक्षा के द्वारा संवेगात्मक ग्रन्थियों (Emotional Complexes) का पता लगाया जा सकता है।

(७) साहचर्य परीक्षा के द्वारा इस बात का पता लगा सकता है कि किसी व्यक्ति के माता-पिता व अन्य लोग उसके प्रति किस तरह का व्यवहार करते हैं।

(८) साहचर्य के द्वारा व्यक्तित्व के प्ररूपों (Types of Personality) का पता लगाया जा सकता है।

(९) साहचर्य परीक्षा द्वारा मानसिक रोगियों के रोग के कारण का पता लगाया जा सकता है।

(१०) साहचर्य परीक्षा की सहायता से हम किसी बात को स्थाई रूप से स्मरण रख सकते हैं।

उपसंहार (Conclusion)

इस प्रकार हम विचारों के पारस्परिक सम्बन्धों को साहचर्य (Association कहते हैं। साहचर्य के नियमों को मनोवैज्ञानिकों ने दो भागों में विभाजित किया है—(१) साहचर्य के मुख्य नियम (Primary Laws of Association) एवं (२) साहचर्य के गौण नियम (Secondary Laws of Association)। साहचर्य के मुख्य नियम— (१) सहचारिता का नियम, (२) समानता का नियम,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) वैपरीत्य का नियम एवं (४) कृत्रिम रुचि का नियम। **सहचारिता के गौण नियम**—(१) प्राथमिकता का नियम, (२) नवीनता का नियम, (३) पुनरावृत्ति का नियम, (४) प्रबलता का नियम एवं (५) मनः स्थिति का नियम। साहचर्य दो प्रकार के होते हैं, (१) स्वतन्त्र-साहचर्य (Free-Association) एवं (२) नियन्त्रित साहचर्य (Controlled or Constrained-Association) जहाँ तक साहचर्यों की उपयोगिता का सम्बन्ध है हम साहचर्य परीक्षण द्वारा अनेक लाभ उठाने में समर्थ हो सकते हैं।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२५
प्रतिमा
[Image]

प्रश्न संख्या—२५

प्रतिमा के अर्थ और विशेषताओं की विवेचना कीजिए। प्रतिमा एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर बताइये। प्रतिमा के विभिन्न प्रकार स्पष्ट कीजिये।

Discuss the meaning and characteristics of image. Distinguish between image and perception. Clarify the various types of images.

भूमिका (Introduction)

मनुष्य के अभियोजनात्मक व्यवहार (Adjustable Behaviour) में प्रतिमा (Image) का अति महत्वपूर्ण स्थान होता है। दैनिक जीवन की कितनी ही वस्तुएं तथा परिस्थितियां जो हमारे समक्ष नहीं हैं और जिनसे हमें बहुत स्नेह है, प्रतिमा के रूप में हमारे समक्ष चली आती हैं। जर्मन के प्रसिद्ध कवि गेटे प्रायः कहा करते थे जब कभी वे अपनी आखों को मूंद कर गुलाब के फूल के सम्बन्ध में चिन्तन करने लगते थे तब उन्हें ऐसा प्रतीत होता था मानों वे गुलाब के फूल की प्रस्फुटित होने वाली पंखुड़ियों का साक्षात्कार कर रहे हों। यह गुलाब का फूल गेटे के सामने दृष्टि-प्रतिमा (Visual Image) के रूप में आया। प्रसिद्ध संगीतज्ञ बोथोवेन (Beethoven) ने बहरे होने के उपरान्त अनेक मधुर गानों की रचना की। जब वह मधुर गानों के सम्बन्ध में चिन्तन करता था तो उसके सामने मधुर गाने स्वर-प्रतिमाओं (Auditory Images) के रूप में आ जाते थे। इस प्रकार स्पष्ट है कि मानव जीवन का प्रतिमा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। अब हम इस प्रश्न में प्रतिमा के सम्बन्ध में अच्छी जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रतिमा का स्वरूप (Nature of Image)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिमा की विशेषताएँ (Characteristics of Image), प्रतिमा एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर (Difference between Image and Perception) और प्रतिमा के प्रकार (Types of Image) प्रस्तुत करेंगे ।

प्रतिमा का स्वरूप

(Nature of Image)

मौलिक उत्तेजना के अभाव में पूर्ण प्रत्यक्षीकरण का पूर्ण या आंशिक रूप से पुनः स्मरण करना प्रतिमा है ।

जिस उत्तेजना का हम एक या अनेक बार प्रत्यक्षीकरण (Perception) कर लेते हैं, यदि उसी उत्तेजना के अभाव में हम उसे मानसिक चित्र के रूप में प्रत्याह्वान या पुनःस्मरण करते है तो उस मानसिक चित्र के प्रत्याह्वान पुनः स्मरण (Recall) को प्रतिमा (Image) कहते हैं। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति आँगन में खिलौने से खेलता हुआ सुन्दर बालक देखता है । कुछ दिन के पश्चात् वह उसी खेलते हुए सुन्दर बालक को मानसिक चित्र के रूप में प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण करता है जबकि इस समय वह बालक उसके सामने नहीं है । यहाँ पर खेलते हुए बालक की मुद्रा का मानसिक चित्र 'प्रतिमा' का उदाहरण है । यहाँ प्रश्न उठता है कि क्या उद्दीपक की जिन-जिन बातों का व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण करता है वे समस्त बातें प्रतिमा में उपस्थित रहती हैं अथवा कुछ बातें । उत्तर में हमें यही कहना होगा कि प्रतिमा में इतनी अधिक अस्थिरता रहती है कि वह तुरन्त मस्तिष्क से भाग सकती है । फलस्वरूप उद्दीपक की जिन-जिन बातों का व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण करता है प्रतिमा में यह आवश्यक नहीं कि वे समस्त बातें उपस्थित बनी रहें । उदाहरण के लिए यदि एक व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण किये हुए खेल के मैदान का मानसिक चित्र के रूप में प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण करता है तो यह आवश्यक नहीं है कि उसके समस्त दृश्य प्रतिमा में आ जायेंगे । इसके साथ यह भी सम्भव हो सकता है कि कुछ ऐसे मैदान सम्बन्धी नवीन दृश्य जो कि उसने मैदान में नहीं देखे हैं प्रतिमा में उपस्थित हो जायें । इसीलिए तो प्रतिमा को **'रचनात्मक प्रकृति'** (Creative Nature) का माना है । पुनः यह प्रश्न उठता है कि प्रतिमा में कुछ नई बातें क्यों आ जाती हैं ? इसका कारण यह है कि प्रतिमा व्यक्ति की रुचि एवं उसके ध्यान पर आधारित होती है, फलस्वरूप उसमें कुछ नवीन बातें आ जाती हैं । उपरोक्त बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि **प्रतिमा वह नवीन स्मृति है जिसमें मौलिक उत्तेजना के अभाव में पूर्व प्रत्यक्षीकरण का पूर्ण अथवा आंशिक रूप में प्रत्याह्वान अथवा पुनःस्मरण होता है एवं इसकी रचनात्मक प्रकृति होती है ।**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिमा की विशेषतायें
(Characteristics of Image)

(१) विस्तृत विवरण का अभाव (Lack of Details)—प्रतिमा में पूर्व अनुभूति का पूरा विवरण नहीं आता ; यदि कोई व्यक्ति किसी पूर्व अनुभूति की प्रतिमा मस्तिष्क में ला रहा हो तो वह उसकी बहुत सी बातें भूल जायगा । उदाहरण के लिए अगर एक विद्यार्थी कक्षालय की प्रतिमा अपने मस्तिष्क में ला रहा होता हो तो यह सम्भव है कि केवल शिक्षक की प्रतिमा मन में उपस्थित हो और कक्षालय के विद्यार्थी, मेज, कुर्सियां आदि वह भूल जाय ।

(२) स्थिरता का अभाव (Lack of Stability)—प्रतिमा में बहुत अस्थिरता रहा करती है । यह तुरन्त हमारे मस्तिष्क से भाग जाती हैं । अगर एक प्रतिमा हमारे मस्तिष्क में आई तो उसके स्थान पर शीघ्र ही दूसरी प्रतिमा आ जाती है । इस प्रकार कोई प्रतिमा अधिक देर तक नहीं ठहरती । इस प्रकार की प्रतिमाओं में होने वाले परिवर्तन साहचर्य के नियमों (Laws of Association) के होते हैं ।

(३) स्पष्टता का अभाव (Lack of Clearness)—जिस प्रकार प्रत्यक्ष में स्पष्टता रहती है उसी प्रकार प्रतिमा में नहीं । प्रतिमा में पूर्वानुभूति-घटना अथवा परिस्थिति का स्वरूप पूर्णरूपेण स्पष्ट नहीं होता बल्कि प्रायः उसकी धुंधली छाया अथवा हल्की झांकी दिखलाई पड़ती है ।

(४) गहनता का अभाव (Lack of Intensity)—मौलिक प्रत्यक्षीकरण की तरह प्रतिमा में गहनता का सर्वथा अभाव रहता है । उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति पूर्वानुभूति बिजली की चमक की प्रतिमा का अनुभव करता है तो इस प्रतिमा में बिजली की चमक में इतनी गहनता नहीं होती जितनी कि उसने अनुभव की थी ।

(५) सजीवता का अभाव (Lack of Lifeness)—प्रतिमा में सजीवता एवं यथार्थता का पूर्ण अभाव रहता है क्योंकि वह केवल सजीव तथा यथार्थ अनुभव की दूरस्थ प्रतिछाया या प्रतिलिपि मात्र-सी अनुभव होती है ।

(६) नवीन ज्ञान के विकास का अभाव (Lack of Development of New-knowledge)—प्रतिमा में नवीन ज्ञान के विकास का सर्वथा अभाव रहता है । क्योंकि प्रतिमा प्रत्यक्ष के समान एक मौलिक अनुभव न होकर एक अनुकरणात्मक अनुभव होता है । अतः इसमें नवीन ज्ञान के विकास के बजाय स्मरण की प्रधानता रहती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिमा एवं प्रत्यक्षीकरण में अन्तर

(Difference between Image and Perception)

प्रतिमा एवं प्रत्यक्षीकरण में निम्नलिखित अन्तर हैं—

(१) प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजक (Stimulus) की उपस्थिति अनिवार्य है परन्तु प्रतिमा में उत्तेजक की उपस्थित होना आवश्यक नहीं।

(२) प्रत्यक्षीकरण एक तीव्र एवं प्रबल प्रक्रिया है परन्तु प्रतिमा में तीव्रता एवं प्रबलता कम पाई जाती है।

(३) प्रत्यक्षीकरण में उत्तेजना की उपस्थिति रहने के कारण उसके आधार का स्थानीयकरण (Localization) करना सुविधाजनक है, परन्तु प्रतिमा में उत्तेजना का अभाव रहने के कारण उसका स्थानीयकरण करना सम्भव नहीं है।

(४) प्रत्यक्षीकरण अधिक मात्रा में सजीव एवं स्पष्ट होता है परन्तु प्रतिमा में सजीवता एवं स्पष्टता का अभाव रहता है।

(५) प्रत्यक्षीकरण में गति (Movement) का प्रभाव पड़ता है परन्तु प्रतिमा में इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

(६) प्रत्यक्षीकरण स्थिर (Stable) एवं निश्चित (Definite) मानसिक प्रक्रिया है एवं प्रतिमा अस्थिर एवं अनिश्चित मानसिक क्रिया है।

(७) प्रत्यक्षीकरण में शारीरिक अभियोजना (Bodily Adjustment) की आवश्यकता होती है परन्तु प्रतिमा में इस प्रकार के शारीरिक अभियोजना की आवश्यकता नहीं होती है।

(८) प्रत्यक्षीकरण की क्रिया ज्ञानेन्द्रियों के उत्तेजित होने से प्रारम्भ होती है परन्तु प्रतिमा की क्रिया तो वृहद मस्तिष्क (Cerebrum) में स्थित स्नायु केन्द्रों के उत्तेजित होने से ही प्रारम्भ हो जाती है। हमें यह बात और समझ लेना चाहिए कि प्रत्यक्षीकरण एवं प्रतिमा में जो भेद होता है वह गुणात्मक (Qualitative) न होकर मात्रात्मक (Quantitative) होता।

प्रतिमा के प्रकार

(Types of Images)

[अ] ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर

(On the Basis of Sense-organs)

ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर प्रतिमाओं को अग्रलिखित ५ भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) दृष्टि-प्रतिमा (Visual-Image)—जब कोई व्यक्ति किसी प्राणी अथवा वस्तु के चेहरे की प्रतिमा अपने मस्तिष्क में लाता है तो उसे श्रवण दृष्टि प्रतिमा कहते हैं। कलाकारों, बालकों, एवं स्त्रियों की दृष्टि प्रतिमा बड़ी प्रबल होती है।

(२) श्रवण प्रतिमा (Auditory-Image)—जब कोई व्यक्ति किसी मनुष्य या वस्तु के स्वर की प्रतिमा अपने मस्तिष्क में लाता है तो उसे श्रवण-प्रतिमा कहते हैं। उदाहरण के लिए किसी मित्र की आवाज की प्रतिमा का अनुभव करना श्रवण-प्रतिमा है।

(३) घ्राण-प्रतिमा (Olfactile-Image)—किसी वस्तु की सुगन्ध अथवा दुर्गन्ध की प्रतिमा को मन में लाना घ्राण-प्रतिमा है। उदाहरण के लिए इत्र की प्रतिमा का मन में आना घ्राण-प्रतिमा है।

(४) स्पर्श-प्रतिमा (Tactual-Image)—किसी वस्तु के छूने को प्रतिमा का मस्तिष्क में आना स्पर्श-प्रतिमा है जैसे मुलायम बाल के छूने की प्रतिमा।

(५) स्वाद अथवा रस-प्रतिमा (Gustatory-Image)—किसी पदार्थ के स्वाद की प्रतिमा का अनुभव करना स्वाद अथवा रस-प्रतिमा है। उदाहरण के लिए मीठे आम के स्वाद की प्रतिमा स्वाद अथवा रस-प्रतिमा है।

[ब] सादृश्य अथवा विभिन्नता के आधार पर

(On the Bases of Similarity or Difference of Perception)

प्रत्यक्षीकरण के सादृश्य तथा विभिन्नता के आधार पर प्रतिमा के निम्न प्रकार होते हैं।

(१) स्मृति-प्रतिमा (Memory-Image)—स्मृति-प्रतिमा की प्रमुख विशेषता यह है कि इसका अनुभव प्रायः समय (Time) एवं स्थान (Place) के प्रसंग में हुआ करता है। दूसरे शब्दों में स्मृति-प्रतिमा में यह बताना आसान होता है कि इसका पूर्व अनुभव कब एवं कहाँ पर हुआ था। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति कुतुबमीनार की प्रतिमा का अनुभव करता है तो उसे दिल्ली एवं जिस समय दिल्ली गया था उसका पुनः स्मरण (Recall) हो जाता है।

(२) अनु-प्रतिमा (After-Image)—जब किसी व्यक्ति को किसी भौतिक उत्तेजक (Stimulus) के हट जाने के पश्चात शीघ्र ही उस मौलिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तेजना का अनुभव होता है तो उसे अनु-प्रतिमा (After-Image) कहते हैं। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति थोड़ी देर तक गाना सुनता रहता है। तत्पश्चात् जब गाना बन्द कर दिया जाता है तो उसे ऐसा अनुभव होता है कि उस गाने की ध्वनि उसके कानों में भी गूंज रही है। यह उसके कानों में गूंजती हुई ध्वनि अनु-प्रतिमा (After-Image) का स्वरूप है। हमें इस बात को जान लेना चाहिये कि हम अनु-संवेदना (After-Image) को अनु-प्रतिमा नहीं कह सकते हैं क्योंकि अनु-संवेदना का निरूपण बाह्य संसार में एवं अनु-प्रतिमा का व्यक्ति के मन में होता है। अनुसंवेदना का अनुभव केवल उत्तेजक की दिशा में होता है परन्तु अनु-प्रतिमा का तो अनुभव किसी दिशा में हो सकता है।

(४) प्रत्यक्ष प्रतिमा (Edidetic Image)—जब हम किसी प्रतिमा (Image) का अनुभव अपने मन में न कर बाह्य विश्व में करते हैं, तो इस प्रकार की प्रतिमा को प्रत्यक्ष अथवा दर्शन-प्रतिमा (Edidetic Image) कहते है। यह प्रतिमा प्रत्यक्षीकरण के समान अत्यन्त प्रबल एवं स्पष्ट होती है। अनुभवकर्ता को ऐसा प्रतीत होता है मानो वह पूर्व अनुभव की हुई घटनाओं का साक्षात् दर्शन कर रहा होता है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति जब कुर्सी पर बैठ जाता है तो उसके सामने स्थित टेबुल पर पुस्तक की प्रतिमा आ जाती है। प्रयोगों द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया है कि प्रौढ़ों की अपेक्षा बालकों एवं किशोरों को प्रत्यक्ष-प्रतिमा का अधिक अनुभव होता है।

(४) काल्पनिक प्रतिमा (Imagination Image)—जब विभिन्न स्मृति प्रतिमाओं के संयोग से एक नवीन प्रतिमा का अनुभव किया जाता है तो उसे काल्पनिक प्रतिमा (Imagination Image) कहते हैं। इन्द्र, वरुण, स्वर्ग, नरक, अमूर्त प्रत्ययों की प्रतिमाएं, काल्पनिक प्रतिमाएँ ही है। इसी प्रकार जीवन में व्यक्ति के सामने अन्य काल्पनिक प्रतिमायें होती रहती हैं।

उपरोक्त प्रतिमाओं के अलावा गाल्टन (Galton) ने गति प्रतिमा (Motor Image) को भी बतलाया है जिसमें कि व्यक्तिगत (Motor or movement) का अनुभव करता है।

उपसंहार (Conclusion)

सारांश यह है कि जब हम पूर्व प्रत्यक्षीकरण (Perception) की हुई उत्तेजनाओं का मानसिक चित्र के रूप में प्रत्याह्वान या पुनःस्मरण (Recall) करते तो इस मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) को प्रतिमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Image) कहते हैं। प्रतिमा की विशेषतायें—(१) विस्तृत विवरण का अभाव, (२) स्थिरता का अभाव, (३) स्पष्टता का अभाव तथा (४) गहनता का अभाव। प्रतिमा एवं प्रत्यक्षीकरण में जो अन्तर है वह गुणात्मक (Qualitative) न होकर मात्रात्मक (Quantitative) अन्तर है। प्रतिमा के प्रकार—प्रतिमा के प्रकारों को दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है—ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर एवं प्रत्यक्षीकरण के सदृश्य अथवा विभिन्नता के आधार पर। ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर प्रतिमाएँ पांच प्रकार की होती हैं—(१) दृष्टि-प्रतिमा, (२) श्रवण-प्रतिमा, (३) घ्राण-प्रतिमा, (४) स्पर्श प्रतिमा एवं (५) स्वाद अथवा रस-प्रतिमा। प्रत्यक्षीकरण के सदृश्य अथवा विभिन्नता के आधार पर प्रतिमाएँ ४ प्रकार की होती हैं—(१) स्मृति-प्रतिमा, (२) अनु-प्रतिमा, (३) प्रत्यक्ष-प्रतिमा एवं (४) काल्पनिक प्रतिमा। इन प्रतिमाओं के अतिरिक्त गाल्टन नामक विद्वान् ने गति-प्रतिमा को भी स्थान दिया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६

कल्पना

[Imagination]

प्रश्न संख्या—२६

कल्पना किसे कहते हैं ? कल्पना और प्रतिमा में क्या अन्तर है ? कल्पना का वर्गीकरण करते हुए यह बताइए कि इसकी जीवन में क्या उपयोगिता है ?

What do you mean by imagination ? What is the difference between imagination and image. Classify imagination and explain its importance in life ?

भूमिका (Introduction)

आदि काल से लेकर आज तक मनुष्य ने अनेक अभियोजात्मक व्यवहार (Adjustment behaviour) के परिणामस्वरूप अपनी संस्कृति (Culture) तथा सभ्यता (Civilization) में जो प्रगति की है उसमें उसकी विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं (Mental Process) में से कल्पना (Imagination) का अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है। कुछ विद्वानों का मत है कि कल्पना मानसिक प्रक्रिया केवल मनुष्यों में पाई जाती है किन्तु यह तथ्य अभी तक विवादग्रस्त है। फिर भी यह तो निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य में जो कल्पना मानसिक प्रक्रिया पाई जाती है वह पशुओं से अधिक उच्च स्तर पर व्यापक स्वरूप की है। जहाँ कल्पना संवेदना, प्रत्यक्षी, ध्यान, स्मृति आदि मानसिक क्रियाओं पर आधारित है वहाँ वह स्वयं चिन्तन, तर्क आदि का आधार भी है। अब हम इस प्रश्न में कल्पना के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए कल्पना का अर्थ (Meaning of Imagination), कल्पना और प्रतिमा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में अन्तर (Difference between Imagination and Image), कल्पना का वर्गीकरण (Classification of Imagination) तथा कल्पना की उपयोगिता (Utility of Imagination) प्रस्तुत करेंगे।

कल्पना का स्वरूप
(Nature of Imagination)

[अ] कल्पना का अर्थ (Meaning of Imagination)

कल्पना वह मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है जिसमें हम अतीत काल के अनुभवों के आधार पर किसी नवीन रचना का निर्माण करते हैं। दूसरे शब्दों में अतीत के अनुभवों के पुनः संगठन की मानसिक प्रक्रिया को कल्पना कहते हैं। वुडवर्थ (Woodworth) ने इसीलिए कल्पना को **'मानसिक हस्त व्यापार'** (Mental Manipulation) की संज्ञा से सुशोभित किया है। उनका कथन है कि जिस प्रकार हम अपनी पुरानी चीजों को नवीन रूप से सजाते हैं उसी तरह कल्पना में भी हम अपने गत अनुभवों को मस्तिष्क में नवीन स्वरूप प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए हमने अतीत-काल में किसी कमरे को अनेक बार देखा। अगर हम उसी कमरे के उसी स्वरूप को मानसिक चित्र के रूप में प्रत्याह्वान या पुनः स्मरण (Recall) करते हैं तो यह प्रतिमा (Image) का स्वरूप है परन्तु यदि हम उसी कमरे को अपने मस्तिष्क में नवीन प्रकार से सजा हुआ अनुभव करते हैं तो यह कल्पना (Imagination) का स्वरूप है। इसीलिए कल्पना को हम **'रचनात्मक अथवा सृजनात्मक स्मृति'** (Creative Memory) भी कहते हैं। इस कल्पना अथवा सृजनात्मक स्मृति में अनेक प्रकार की प्रतिमाओं का इस प्रकार समन्वय होता है कि यह हमेशा नवीन प्रतीत होती है। हम सृजनात्मक स्मृति अथवा कल्पना के अनेक उदाहरण दे सकते हैं जैसे 'मत्स्य नारी,' 'नराश्व,' 'स्वर्ण पर्वत' आदि। इन उदाहरणों से पता चलता है कि विभिन्न प्रतिमाओं को इस प्रकार समन्वित किया है कि उनका नवीन रूप हो गया है क्योंकि 'मत्स्य नारी' 'मछली' एवं 'नारी' की प्रतिमाओं का नराश्व 'नर' एवं 'अश्व' की प्रतिमाओं का एवं 'स्वर्ण पर्वत 'स्वर्ण' एवं 'पर्वत' की प्रतिमाओं का समन्वित नवीन रूप है। भारतीय विभिन्न चित्रकारियाँ, महाकाव्य, खण्डकाव्य एवं उपन्यास आदि सब कल्पनाओं से ही भरे पड़े हैं। स्वप्न (Dream) एवं दिवास्वप्न (Day-Dream) भी कल्पना के स्वरूप हैं। उपरोक्त शब्दों से यह निष्कर्ष निकलता है कि **कल्पना एक मानसिक प्रक्रिया है, यह सदा अतीत-काल के अनुभवों पर आधारित होती है, इसमें**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतीत-काल के अनुभवों के आधार पर नवीन रचना का निर्माण होता है। फलस्वरूप यह रचनात्मक स्वरूप की हुआ करती है।

[ब] कल्पना की परिभाषा (Definition of Imagination)

(१) एंजिल—"कल्पना वस्तुओं की चेतना है जो इन्द्रियों के सम्मुख उपस्थित नहीं है। अधिक साधारण रूप में यह कह सकते हैं कि कल्पना पिछली ऐन्द्रिय उत्तेजनाओं का विचारात्मक पुनर्जागरण है।"

"Imagination is the consciousness of objects not present to the sense. Stated in the more usual way, imagination consists in the ideational revival of previous sensory excitations."

—Angell.

(२) मैकडूगल—"कल्पना दूरस्थ वस्तुओं के सम्बन्ध में विचारना है।"

"Imagination is the thinking of remote objects."

—McDougall.

(३) बौज—"कल्पना वास्तविक ऐन्द्रिय उत्तेजना की अनुपस्थिति में ज्ञानात्मक अनुभव है, जो कि प्रायः पूर्व प्रत्यक्ष से सम्बन्धित होती है।"

"Imagination may be defined as cognitive experience in the absence of actual sensory stimulation, often related to some previous percept."

—G. D. Boas, General Psychology, Page. 344.

(४) वुडवर्थ—"कल्पना मानसिक हस्त व्यापार है। जब व्यक्ति पिछले यथार्थ निरीक्षित तथ्यों का स्मरण करता है एवं फिर इन तथ्यों को नवीन नमूने में पुनः व्यवस्थित करता है तो वह कल्पना प्रदर्शित करता है।"

"Imagination is mental manipulation. When the individual recalls facts previously observed in reality and then proceeds to arrange these facts into a new pattern he is said to show imagination."

—Woodworth.

(५) बोरिंग एवं अन्य विद्वान्—"कल्पना की सामग्रियाँ स्मृतियाँ हैं। अयथार्थ यथार्थ से उत्पन्न किया जाता है।"

"The materials of imagination are recollection. The unreal is created from the real."

—Boring and Others.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिमा एवं कल्पना में भेद
(Difference between Image and Imagination)

यों तो उपरोक्त शब्दों से प्रतिमा (Image) एवं कल्पना (Imagination) में अन्तर भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है परन्तु ये दोनों मानसिक प्रक्रियायें इतनी अधिक मिलती-जुलती हैं कि कभी-कभी हम दोनों को एक मान बैठते हैं। फलस्वरूप अगर इन दोनों में पुनः अन्तर प्रदर्शित किया जाय तो यह अनुचित न होगा। प्रतिमा एवं कल्पना दोनों का आधार प्रत्यक्षीकरण होता है। दोनों मानसिक प्रक्रियायें हैं। दोनों का सम्वन्ध भूतकाल के अनुभवों से होता है। फिर दोनों में क्या अन्तर है ?

(१) दोनों में सबसे मुख्य अन्तर यह है कि प्रतिमा में केवल अतीत ही अनुभवों की पुनर्जाग्रति होती है एवं कल्पना में अतीत अनुभवों के आधार पर मनुष्य नवीन संस्कार की रचना करता है।

(२) कल्पनाओं का आधार प्रतिमायें हुआ करती हैं। परन्तु प्रतिमाओं का आधार कल्पनायें नहीं होती हैं।

(३) प्रतिमा का सम्वन्ध केवल भूतकाल से रहता है। परन्तु कल्पना का सम्वन्ध भूत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों से रहता है। इस प्रकार प्रतिमा एवं कल्पना में समानता होते हुये असमानता भी है।

कल्पना का वर्गीकरण
(Classification of Imagination)

भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से कल्पना का वर्गीकरण किया है। कुछ विद्वानों ने कल्पना के अर्थ को विस्तृत रूप में प्रयोग करते हुए स्मृति को भी कल्पना माना है क्योंकि इन दोनों का निर्माण पूर्वानुभूत 'प्रत्ययों' से होता है। ये दोनों शुद्ध मानसिक प्रक्रियायें (Mental Process) हैं। स्मृति में पूर्वानुभव वैसा ही होता है जैसा कि यह वास्तव में था, कल्पना में कुछ उसमें नवीनता आ जाती है। इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुये मैकडूगल (McDougall) एवं ड्रेवर (Drever) ने कल्पना का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया है।

[अ] मैकडूगल द्वारा कल्पना का वर्गीकरण
(Classification of Imagination by McDougall)

मैकडूगल महोदय ने कल्पना का जो वर्गीकरण किया है उसको हम निम्न प्रकार से तालिका द्वारा प्रस्तुत करते हैं :—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कल्पना
(Imagination)

- पुनरुत्पादनात्मक कल्पना (Reproductive Imagination)
- उत्पादनात्मक कल्पना (Productive Imagination)
  - रचनात्मक कल्पना (Constructive Imagination)
  - सर्जनात्मक कल्पना (Creative Imagination)

(१) **पुनरुत्पादनात्मक कल्पना**—पुनरुत्पादनात्मक कल्पना (Reproductive Imagination) वह कल्पना है जिसमें अतीत काल के अनुभव प्रतिमाओं (Images) के रूप में उपस्थित होते हैं। इसी का ही दूसरा नाम स्मृति (Memory) है।

(२) **उत्पादनात्नक कल्पना**—जब हम गत अनुभवों को ही आधार बनाकर उनमें कुछ नवीनता उत्पन्न कर देते हैं उसे उत्पादनात्मक कल्पना (Productive Imagination) कहते हैं। उत्पादनात्मक कल्पना दो प्रकार की होती हैं—(१) रचनात्मक कल्पना (Constructive Imagination) एवं (२) सर्जनात्मक कल्पना (Creative Imagination)। रचनात्मक कल्पना वह कल्पना है जिसका प्रयोग भौतिक पदार्थों के बनाने में किया जाता है जैसे पुल बनाने के लिए इन्जीनियर का कल्पना करना रचनात्मक कल्पना है। जिस कल्पना का अभौतिक तत्वों से नवीन बातों को बनाने का प्रयोग किया जाता है उसे सृजनात्मक कल्पना कहते हैं। उदाहरण के लिए कविता बनाने के लिए उसका ढाँचा पहले से निर्मित करना पड़ता है।

[ब] ड्रेवर द्वारा कल्पना का वर्गीकरण
(Classification of Imgination by Drever)

ड्रेवर महोदय ने जो कल्पना का वर्गीकरण किया है उसे अगले पृष्ठ पर तालिक द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानसिक प्रत्यक्ष
(Ideal Representation)

- पुनरुत्पादनात्मक कल्पना (Reproductive Imagination)
- उत्पादनात्मक कल्पना (Productive Imagination)
  - आदानात्मक कल्पना (Receptive Imagination)
  - सर्जनात्मक कल्पना (Creative Imogination)
    - कार्य-साधक कल्पना (Pragmatic Imagination)
      - विचारात्मक (Theoretical)
      - क्रियात्मक (Practical)
    - सरस कल्पना (Aesthetic Imagination)
      - कलात्मक (Artistic)
      - मनतरंग (Phantastic)

[अ] पुनरुत्पादनात्मक एवं उत्पादनात्मक कल्पना (Reproductive and Productive Imagination)

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि ड्रेवर महोदय ने पहिले मानसिक प्रत्यक्ष (Ideal Representation) को दो भागों में विभाजित किया है—(१) पुनरुत्पादनात्मक कल्पना अथवा स्मृति (Productive Imagination or Memory) एवं (२) उत्पादनात्मक कल्पना अथवा कल्पना Productive Imagination or Imagination)। इन दोनों प्रकार की कल्पनाओं पर हम मैकडूगल द्वारा किए कल्पना के वर्गीकरण पर प्रकाश डाल चुके हैं। उत्पादनात्मक कल्पना अथवा कल्पना को वह दो भागों में विभाजित करता है—

(१) आदानात्मक कल्पना (Receptive Imagination)

(२) सर्जनात्मक कल्पना (Creative Imagination)

अब हम दोनों पर प्रकाश डालेंगे—

[ब] आदानात्मक कल्पना (Receptive Imagination)

आदानात्मक कल्पना वह कल्पना है जो दूसरे के कथनानुसार हम स्वयं करने लगते हैं। प्रायः हम बहुत सी बातों की, जिनसे हम पूर्णतः अनभिज्ञ हैं, कल्पना करने लगते हैं। उदाहरण के लिए एक शिक्षक बालकों को ताजमहल के सम्बन्ध में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बताना चाहता है। परन्तु बालक उसे कैसे समझेंगे जबकि उन्होंने उसे कभी नहीं देखा है। फलस्वरूप वह सीधे ताजमहल के सम्बन्ध में न बताकर बड़ी-बड़ी इमारतों का वर्णन करता है। तत्पश्चात् अगर संभव हो सकता है तो वह बालकों को संगममर दिखाकर उस पर प्रकाश डालता है अथवा यह बतलाता है कि अमुक मन्दिर में जो तुम लोगों ने संगमरमर का फर्श देखा है उसी प्रकार के संगमरमर से ताजमहल बना हुआ है। इसके उपरान्त शिक्षक ताजमहल का स्वरूप समझने के लिए बालकों से कहता है कि अमुक बड़ी इमारत संगमरमर की हो जाय तो वह कैसी दिखलाई देगी ? और यदि इमारत और बड़ी हो जाये तो बस समझ लीजिए कि वह भी एक ताजमहल के समान है। इस तरह समस्त बालक ताजमहल की कल्पना करने में समर्थ हो जायेंगे।" इसी तरह हम नित्य प्रति कई बातों को सुनकर उनकी कल्पना करने लगते हैं। आदानात्मक कल्पना के ही सहारे आज हम घर बैठे दुनियां की कल्पना करने में समर्थ हो गए हैं।

[स] सर्जनात्मक कल्पना (Creative Imagination)

सृजनात्मक कल्पना वह कल्पता है जिसमें हम नवीन बातों की सृजन करते हैं। ड्रेवर महोदय ने सृजनात्मक कल्पना (Creative Imagnination) को दो भागों में विभाजित किया है—(१) कार्य साधक कल्पना (Pragmatic Imagination) एवं (२) सरल कल्पना (Aesthetic Imagination)। कार्य-साधक कल्पना वह कल्पना है जिसके द्वारा कोई उपयोगी कार्य सिद्ध होता है। उदाहरण के लिये पुल निर्माण करने के लिए एक इंजीनियर उसका नक्शा बनाता है, एक वैज्ञानिक जीवन में काम आने वाले सिद्धान्त की कल्पना करता है। ये दोनों ही कार्य-साधक कल्पनायें (Pragmatic Imagintion); हैं। सरल कल्पना वह कल्पना है जिसमें सौन्दर्य की अनुभूति की जाती है। कवि का कविता बनाना, चित्रकार का चित्र सीखना ये दोनों ही उदाहरण सरस कल्पना (Aesthetic (Imagination) के हैं। कार्य-साधक कल्पना एवं सरस कल्पना को अधिक स्पष्ट करने के लिए दोनों में अन्तर करना वांछनीय है।

(१) कार्य-साधक कल्पना का आधार भौतिक एवं सरस कल्पना का आधार अभौतिक होता है।

(२) कार्य-साधक कल्पना में व्यक्ति का मस्तिष्क पूर्ण स्वतन्त्र नहीं होता है क्योंकि यह यथार्थता पर आधारित होती है। दूसरी ओर सरस कल्पना में व्यक्ति का मस्तिष्क बहुत स्वतन्त्र होता है क्योंकि वह यथार्थता पर पूर्ण आधारित नहीं होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) कार्य-शाधक कल्पना जब पूर्ण हो जाती है तभी व्यक्ति को आनन्द आता है। दूसरी ओर सरस कल्पना तो आनन्द से प्रारम्भ होती है और जैसे-जैसे यह कल्पना चलती है वैसे-वैसे व्यक्ति को आनन्द अधिक मिलता है।

[द] कार्य-साधक कल्पना के प्रकार
(Kinds of Pragmatic Imagination)

ड्रेवर महोदय ने कार्य-साधक कल्पना (Theoretical Imagination) को दो भागों में विभाजित किया है—(१) विचारात्मक कल्पना (Theoretical Imagination) एवं (२) क्रियात्मक कल्पना (Practical Imagination)। विचारात्मक कल्पना के अन्तर्गत उच्चकोटि के सिद्धान्त, विचार, वाद आदि आते हैं। न्यूटन का 'गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सिद्धान्त' (Law of Gravitation) प्रतिपादित करना विचारात्मक कल्पना का उदाहरण है। जिन कल्पनाओं का सम्बन्ध क्रियात्मक बातों से होता है उन कल्पनाओं को क्रियात्मक कल्पना कहते हैं। एक कारीगर को घर के बनाने की कल्पना करना क्रियात्मक कल्पना है।

[य] सरस कल्पना के प्रकार (Kinds of Aesthetic Imagination)

ड्रेवर महोदय ने सरस कल्पना (Aesthetic Imagination) के भी दो विभाग किये हैं—(१) कलात्मक कल्पना (Artistic Imagination) एवं मनतरंगी कल्पना (Phantastic Imagination)। कला सम्बन्धी कल्पना वह कल्पना है जिसके द्वारा ऐसी बातों का सृजन किया जाता है जो मानव-जीवन के लिए लाभप्रद होती हैं। नाटक, कहानी, उपन्यास, कविता, चित्र आदि सब इसी कल्पना के उदाहरण हैं। मनतरंगी कल्पना वह कल्पना है जिसमें ऐसी बातों का सृजन किया जाता है जो न तो व्यक्ति के लिए उपयोगी हों और न समाज के लिए। इनमें मस्तिष्क शेखचिल्ली की तरह हवाई किलों का निर्माण करता है।

इस प्रकार ड्रेवर महोदय ने इस प्रकार की कल्पनायें बतलाई हैं—

(१) पुनरुत्पादनात्मक, (२) उत्पादनात्मक, (३) आदानात्मक, (४) सृजनात्मक, (५) कार्य-साधक, (६) सरस, (७) विचारात्मक, (८) क्रियात्मक, (६) कल्पनात्मक एवं (१२) मनतरंगी।

कल्पना की उपयोगिता
(Utility of Imagination)

कल्पना की जीवन में निम्नलिखित उपयोगिता है—

(१) कल्पना ज्ञानार्जन करने में सहयोग प्रदान करती है। कल्पना द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हम विभिन्न स्मृतियों के आधार पर नवीन ज्ञान की रचना कर लेते हैं।

(२) कल्पना द्वारा हम दूसरे के सुख-दुख से परिचित होकर उनके कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं।

(३) कल्पना का महत्व नवीन आविष्कारों में भी बहुत है। कल्पना के ही द्वारा वैज्ञानिक एवं इञ्जीनियर नवीन खोज करने में सफल होते हैं। रेल, टेलीविजन, हवाई जहाज, राकेट आदि का निर्माण कल्पना के द्वारा ही हुआ है।

(४) कल्पना के द्वारा बहुत से बालक आनन्द प्राप्त करते हैं। दिवा स्वप्न के द्वारा किशोर अपनी इच्छाओं की तृप्ति करते हैं।

(५) कला के निर्माण में कल्पना का प्रमुख स्थान है। कलाकार कल्पना का सहारा लेकर संसार के सामने अपनी कला प्रदान करते हैं।

(६) कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि स्वास्थ्य की दृष्टि से कल्पना बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। यदि बालक अच्छी कल्पना करता है तो उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है एवं यदि बुरी कल्पना करता है तो उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है।

(७) कल्पना द्वारा व्यक्ति परिस्थितियों के साथ अभियोजन करने में समर्थ हो जाता है जो कि जीवन के लिए नितान्त आवश्यक है।

(८) कल्पना के द्वारा व्यक्ति अपनी इच्छाओं की तृप्ति कर लेने में समर्थ हो जाता है।

(९) कल्पना नाना प्रकार की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक योजनाओं के निर्माण में सहायता प्रदान करती है।

(१०) कल्पना का महत्व प्रस्तुत करते हुये एक विद्वान् ने लिखा है, **"सौन्दर्यात्मक कल्पना उच्चकोटि के विचारों, धार्मिक स्थायी भावों के विकास के लिए एवं 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के बोध के लिए परमावश्यक है।"**

"Aesthetic Imagination is invitable in the development of higher ideals, religious sentiments and in the realization of truth, beauty and goodness."

—A Schlar.o

उपसंहार (Conclusion)

उपरोक्त शब्दों का तात्पर्य यह है कि कल्पना (Imagination) वह मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) है जिसमें हम पूर्व अनुभवों (Past Experience) के आधार पर नवीन रचना का निर्माण करते हैं। प्रतिमा (Image) एवं कल्पना (Imagination) में मुख्य अन्तर यह है कि प्रतिमा में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केवल पूर्व अनुभवों की पुनर्जागृति मात्र होती है एवं कल्पना के आधार पर मनुष्य नवीन वस्तुओं अथवा विचारों का निर्माण करता है। कल्पना का मैकडूगल (McDougall) एवं ड्रेवर (Drever) ने जो अलग-अलग वर्गीकरण किया है उससे निष्कर्ष निकलता है कि मुख्य रूप से कल्पनायें १० प्रकार की होती हैं—(१) पुनरुत्पादनात्मक, (२) उत्पादनात्मक, (३) आदानात्मक, (४) सृजनात्मक, (५) कार्य-साधक, (६) सरस, (७) विचारात्मक, (८) क्रियात्मक, (९) कलात्मक एवं (१०) मनतरंगी। अन्त में कल्पना का महत्व प्रस्तुत करते हुए हम कह सकते हैं इसके अभाव में मानव उन्नति कर ही नहीं सकता था।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२७

चिन्तन एवं प्रत्यय

[Thinking and Concept]

प्रश्न संख्या—२७

चिन्तन के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। चिन्तन में भाषा का स्थान निर्धारित कीजिए। रचनात्मक चिन्तन की विभिन्न अवस्थायें कौन-कौन सी हैं ? प्रत्यय के विकास का विवेचन कीजिए।

Throw light on the nature of thinking. Determine the place of language in the thinking. What are the various stages of creative thinking ? Discuss development of concept.

भूमिका (Introduction)

मनुष्य के अभियोजनात्मक व्यवहार (Adjustment behaviour) के दो स्वरूप हैं—प्रथम वावतावरण से अभियोजन करना और दूसरे वातावरण को नियन्त्रित तथा परिवर्तित करना। अभियोजनात्मक व्यवहार के इन दोनों स्वरूपों में जो मानसिक प्रक्रियायें यथा संवेदना, प्रत्यक्षीकरण, ध्यान, स्मरण, विस्मरण, कल्पना, चिन्तन, तर्क आदि होती हैं उनमें से चिन्तन प्रक्रिया (Thinking) का सबसे अधिक महत्व होता है। चिन्तन प्रक्रिया के कारण ही मनुष्य समस्त प्राणियों में उच्चकोटि का प्राणी माना जाता है। वास्तव में चिन्तन प्रक्रिया मनुष्य की समस्त मानसिक प्रक्रियाओं में सबसे जटिल प्रक्रिया है क्योंकि इसमें समस्त मानसिक प्रक्रियाओं की विशेषतायें किसी न किसी रूप में निहित रहती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि चिन्तन व्यक्ति की सबसे उच्च मानसिक प्रक्रिया है। अब हम इस प्रश्न में चिन्तन प्रक्रिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

को समझने के लिए पहले चिन्तन का स्वरूप (Nature of Thinking), चिन्तन के तत्व या अंग (Factors of Thinking) तथा चिन्तन में भाषा का स्थान (Place of Language in Thinking) स्पष्ट करेंगे, तत्पश्चात् रचनात्मक चिन्तन (Creative Thinking) पर प्रकाश डालेंगे और अन्त में प्रत्यय का स्वरूप (Nature of Concept) तथा प्रत्यय निर्माण (Formation of Concept) के सम्बन्ध में विचार करेंगे।

चिन्तन का स्वरूप
(Nature of Thinking)

[अ] चिन्तन का अर्थ (Meaning of Thinking)

वातावरण से अभियोजन करने में मनुष्य के सामने कुछ समस्यायें उपस्थित होती रहती हैं। वह **विचार** (Thinking) करना प्रारम्भ कर देता है और ज्यों ही उसे समस्या का समाधान मिल जाता है त्यों ही वह विचार बन्द कर देता है। हमें यह और समझ लेना चाहिए कि हमारे सामने जितनी भी परिस्थितियाँ उपस्थित होती हैं वे सभी हमारे सामने समस्यायें उपस्थित नहीं करती हैं। ऐसा क्यों ? इसका कारण यह है कि बहुत सी परिस्थितियों के प्रति हम **'अभ्यासात्मक क्रियाओं'** (Habitual Activities) के द्वारा सरलतापूर्वक अभियोजन (Adjustment) कर लेते हैं। उदाहरण के लिए व्यक्ति प्रतिदिन भोजन करने के उपरान्त कपड़ा पहनकर अपने काम को चला जाता है। इसके लिए उसे विचार नहीं करना पड़ता है बल्कि ये तो अभ्यासात्मक क्रियायें ही होती हैं। तो आखिर कौन सी परिस्थितियाँ समस्या उपस्थित करती हैं। व्यक्ति के सामने वे परिस्थितियाँ समस्या उपस्थित करती हैं जिनके प्रति वह अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर सफलतापूर्वक अभियोजन करने में असमर्थ होता है। जब व्यक्ति इन्हीं समस्याओं का समाधान करना प्रारम्भ कर देता है तो विचार प्रक्रिया (Thinking Process) प्रारम्भ हो जाती हैं। उपरोक्त शब्दों का यह निष्कर्ष है कि **चिन्तन अथवा विचार** (Thinking) **वह मानसिक प्रक्रिया** (Mental Process) **है जिसके द्वारा व्यक्ति किसी समस्या का समाधान करता है। दूसरे शब्दों में किसी समस्या का समाधान करने वाली मानसिक प्रक्रिया को चिन्तन अथवा विचार** (Thinking) **कहते हैं।**

[ब] चिन्तन की परिभाषा (Definition of Thinking)

(१) वारेन (Warren)—"चिन्तन किसी व्यक्ति के सम्मुख उपस्थित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समस्या के समाधान के लिए आविर्भूत होने वाली समस्या निर्णायक प्रवृत्ति से प्रभावित कुछ अंशों में प्रयत्न एवं भूल से सयुक्त प्रतीकात्मक स्वरूप की प्रत्ययात्मक प्रक्रिया है।"

"Thinking is an ideational activity' symbolic in character, initiated by a problem or task the individual is facing involving some trial and error but under direct influence of his problem set and ultimately leading to a conclusion of solution of the problem."

—**Warren.**

(२) कौलिन्स एवं ड्रेवर (Collins and Drever)—"चिन्तन को जीव शरीर के वातावरण के प्रति चैतन्य समायोजक कहा जाता है। इस रूप में विचार स्पष्ट समस्त मानसिक स्तर पर हो सकता है जैसे प्रत्यक्षानुभव, प्रतिमानुभव एवं प्रत्ययानुभव।"

"Thinking may be deseribed as the conscious adjustment of an organism to a situation describe in this way. Thinking may obviously take place at all levels of mental life perceptual, ideational and conceptional."

—**Collins and Drever.**

(३) डीवी (Dewey)—"चिन्तन किसी विश्वास या अनुमानित प्रकार के ज्ञान का, उसके आधारों तथा उसके निष्कर्षों के प्रकाश में सक्रिय, संलग्नपूर्ण एवं सावधानीपूर्वक विचार करना है।"

"Thinking is active, presistant and careful consideration of any belief or supposed form of knowledge in the light of the grounds that support it and the further conclusion in which it tends"

—**Dewey.**

(४) बी० एन० झा (B. N. Jha)—"चिन्तन एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें कि मस्तिष्क विचारों की गति का नियन्त्रण एवं नियमन एक सप्रयोजक ढंग से करता है।"

"The latter (thinking) is an active process in which the mind controls and regulates the movement of idea in a purposive way."

—**B. N. Jha.**

(५) वुडवर्थ (Woodworth)—"चिन्तन करना एक कठिनाई के निराकरण का ढंग है।"

"Thinking is one way of overcoming an obstacle."

—**Woodworth.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चिन्तन के तत्व (अङ्ग)
(Factors of Thinking)

[अ] चिन्तन के तत्व अथवा अंग (Factors of Thinking)

चिन्तन का विश्लेषण करने पर हमें उसकी कुछ अवस्थायें ज्ञात होती हैं जिन्हें हम चिन्तन के तत्व या अंग कहते हैं। ये तत्व या अंग निम्नलिखित हैं—

(१) समस्या का उपस्थित होना—चिन्तन नामक मानसिक प्रक्रिया का सबसे पहला तत्व है—समस्या का उपस्थित होना। दूसरे शब्दों में विचार प्रक्रिया को प्रारम्भ करने के लिए सर्वप्रथम व्यक्ति के सम्मुख वातावरण से अभियोजन करने के लिए कोई समस्या उपस्थित होती है।

(२) समस्या के समाधान करने के लिए विविध प्रकार के मार्ग ढूँढ़ना—जब व्यक्ति के सम्मुख कोई समस्या उपस्थित होती है तो वह उसके समाधान के लिए यहाँ-वहाँ मार्ग ढूँढ़ना प्रारम्भ कर देता है। वह जानने का प्रयास करता कि उसका समाधान करने के लिए कितने मार्ग सम्भव हो सकते हैं।

(३) दृष्टिगत मार्गों के एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करना—जब व्यक्ति को समस्या समाधान के अनेक सम्भव मार्ग दृष्टिगत होते हैं तो वह इन समस्त मार्गों को एक ही लक्ष्य की ओर निर्देशित करने का प्रयास करता है।

(४) प्रयत्न एवं भूल विधि का प्रयोग करना—व्यक्ति को समस्या समाधान करने के लिए 'प्रयत्न एवं भूल' (Trial and Error) की विधि को अपनाना पड़ता है। व्यक्ति समस्या का समाधान करने के लिए अनेक प्रयत्न एवं भूलें करता है। वह समस्या का समाधान करने के लिए अनेक तरह के सम्भव साधनों को ढूँढ़ता है।

(५) व्यक्ति का सक्रिय होना—समस्या का समाधान करने के लिये व्यक्ति को विशेष रूप से सक्रिय होना पड़ता है। उसके शरीर के अंग-प्रत्यंगों में हरकतें होने लगती हैं। कदाचित् इसीलिए किसी विद्वान् ने कहा है **"हम केवल मस्तिष्क से ही चिन्तन नहीं करते हैं वरन् शरीर से भी चिन्तन करते हैं।" (We think not only with our mind but with our body also).**

(६) मन-ही-मन बातचीत करना—जब कोई व्यक्ति समस्या का समाधान कर रहा होता है तो वह मन-ही-मन कुछ बातचीत करता रहता है। इस प्रकार विचार के लिए **'आन्तरिक संभाषण' (Inner speech)** भी आवश्यक तत्व है।

[ब] वुडवर्थ के अनुसार चिन्तन के तत्व
(Factors of Thinking According to Woodworth)

(१) किसी उद्देश्य की तरफ उन्मुख होना
(Orientation towards a goal)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) उद्देश्य प्राप्ति के लिए इधर-उधर रास्ता ढूँढ़ना (Seeking this way or that for realizing the goal)

(३) पूर्व निरीक्षित किए हुए तत्वों का पुनः स्मरण करना (Recall of previously observed facts)

(४) स्मृति तथ्यों को नवीन नमूने में बाँधना (Grouping these recalled facts in new patterns)

(५) आन्तरिक अश्रम्य वाक्-गतियाँ एवं मुद्राएँ (Inner speech movements and gestures)

चिन्तन में भाषा का स्थान

(Place of Language in Thinking)

चिन्तन में भाषा का निम्न स्थान है—

(१) भाषा चिन्तन का माध्यम है—व्यक्ति भाषा के द्वारा ही विचार करता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने तो विचार (Thinking) को 'आन्तरिक संभाषण' (Inner-speech) अथवा मौन-भाषा (Silent-speech) के नाम से पुकारा है। बोरिंग एवं अन्य विद्वानों के शब्दों में "भाषा, क्योंकि यह चिह्न प्रयोग करती है चिन्तन का सर्वोत्तम माध्यम है। साधारणतया शब्द ही चिह्न होते हैं जिनका कि कुछ अर्थ होता है एवं विचार में संकेत की तरह कार्य करते हैं।"

"Language, because it uses symbols, is the best medium for thinking ordinarily, the symbols are words which, of course, have meaning readily act as signs." **—Boring and others.**

(२) भाषा चिन्तन की अभिव्यक्ति है—व्यक्ति अपने समस्त विचारों को भाषा के द्वारा ही अभिव्यक्त करता है। जब उसके विचार भाषा में लिखे होते हैं तो उनका कभी भी उपयोग किया जा सकता है। हम जब एक दूसरे से मिलते हैं तो भाषा के द्वारा ही एक दूसरे के विचार अभिव्यक्त होते हैं। इस प्रकार भाषा विचारों की अभिव्यक्ति हैं।

(३) भाषा विचारों के स्मरण में सहायता देती है—हम जब विचार करते हैं तो भाषा का प्रयोग करते हैं। फलस्वरूप हमारे विचार जो अस्पष्ट होते हैं भाषा रूप में मानसिक संस्कार का रूप धारण कर लेते हैं। परिणामस्वरूप जब हमको विचारों का स्मरण करना होता है तो वे भाषा के रूप में मस्तिष्क में अंकित होने के कारण अच्छी तरह से स्मरण कर लिये जाते हैं। इस प्रकार भाषा द्वारा विचारों का स्मरण अच्छी तरह से हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) भाषा चिन्तन की बचत का साधन है :—भाषा के द्वारा विचार की बचत हो जाती है। दूसरे शब्दों में भाषा का प्रयोग करने से विचार करने की कम आवश्यकता पड़ती है। हम अपने लम्बे-चौड़े विचार को थोड़ी सी भाषा में व्यक्त कर देते हैं एवं अवसर पर उस विचार को भाषा के रूप में थोड़े समय में प्राप्त कर लेते हैं।

(५) चिन्तन एवं भाषा का विकास एक साथ होता है :—हमें एक बात और जान लेना चाहिए कि विचार एवं भाषा का विकास साथ-साथ होता है। जैसे-जैसे विचार का विकास होता है वैसे-वैसे ही भाषा का भी विकास होता जाता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक डा० जे० एन० सिन्हा ने ठीक ही लिखा है :—

"Development of thought is greatly aided by development of language. And development of language is greatly aided by devolopment of thought."
—J. N. Sinha

रचनात्मक चिन्तन
(Creative Thinking)

[अ] रचनात्मक चिन्तन का अर्थ
(Meaning of Creative Thinking)

सामान्य तौर से चिन्तन के अग्रलिखित प्रकार (Kinds) होते हैं—(१) मानसिक कल्पना (Mental Imagination), (२) नियमित विचार (Regular Thinking), (३) प्रत्यात्मक चिन्तन (Conceptual Thinking), (४) कल्पना (Imagination), (५) दिवस्वप्न (Day-Dream), (६) रात्रि-स्वप्न (Night-Dream), (७) तर्क (Reasoning) तथा (८) रचनात्मक चिन्तन (Creative Thinking)। इनमें से रचनात्मक चिन्तन सबसे उच्चकोटि का चिन्तन माना जाता है क्योंकि इसमें चिन्तन करने वाले व्यक्ति को अपने विचारों में सबसे अधिक नियन्त्रण रखना पड़ता है और जैसा नाम से स्पष्ट है—इस प्रकार के चिन्तन का उद्देश्य मानव जीवन को सुखी बनाने के लिए किसी न किसी प्रकार की रचना करना होता है। वैज्ञानिक, इंजीनियर, गणितज्ञ, कवि, कलाकार इत्यादि का चिन्तन रचनात्मक चिन्तन के अन्तर्गत आता है जो अपने चिन्तन के आधार में मनुष्य को सुखी बनाने के लिए नए विचार, नियम, आविष्कार आदि प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार **रचनात्मक चिन्तन का तात्पर्य उस चिन्तन से होता है जो मानव हित के**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उद्देश्य को लेकर नवीन रचना के लिए किया जाता है।

[ब] रचनात्मक चिन्तन की अवस्थायें
(Stages of Creative Thinking)

रचनात्मक चिन्तन का विश्लेषण करने के उपरान्त मनोवैज्ञानिकों ने इसकी निम्नलिखित चार अवस्थायें बतलाई हैं—

(१) तथ्य-संग्रह या तैयारी (Collection of Facts or Preparation)—रचनात्मक चिन्तन की सबसे पहिली अवस्था है समस्या से सम्बन्धित तथ्यों का संग्रह करना है। तथ्य-संग्रह का तात्पर्य यह नहीं है कि समस्या से सम्बन्धित जो भी तथ्य हमारे सामने आये सबका हम संग्रह कर लें बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि हमारे सामने जो भी तथ्य आवें उनमें आवश्यक और अनावश्यक तथ्यों को समस्या-समाधान के लिये संग्रहित कर लें। उदाहरण के लिये एक चित्रकार एक सुन्दर चित्र के बनाने के सबन्ध में सोच रहा है। वह चित्र के उपादान, आकार, रंग, रंग-कूंची, कागज, पृष्ठभूमि (Background) इत्यादि के सम्बन्ध में सोचता है। वह चित्र बनाने के सम्बन्ध में उसी प्रकार के अन्य चित्रों की विशेषता का अवलोकन करता है, इन चित्रों की विशेषताओं के आधार पर उसे अपने चित्र में किन-किन विशेषताओं को प्रेरित करना है यह निश्चय करता है आदि। इस प्रकार के चिन्तन को तथ्य-संग्रह या तैयारी अवस्था कहते हैं।

(२) गर्भीकरण की अवस्था (Stage of Incubation)—गर्भीकरण की अवस्था में व्यक्ति संग्रहित तथ्यों के आधार पर समस्या के समाधान के सम्बन्ध में सोचना प्रारम्भ कर देता है किन्तु वह यह नहीं सोच पाता है कि कौन सी राह उसकी समस्या के समाधान के लिये उपयुक्त है। ऐसी दशा में वह सोचने का कार्य को छोड़कर कोई दूसरे आसान कार्य में लग जाता है या विश्राम करने लगता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह अनिश्चित की अवस्था ही गर्भीकरण की अवस्था (Stage of Incubation) कहलाती है। तो क्या इस अवस्था में चिन्तन की क्रिया सचमुच रुक जाती है ? नहीं ? वास्तव में इस अवस्था में चिन्तन की क्रिया चेतन मन (Conscious Mind) से अचेतन मन (Unconscious Mind) में चली जाती है। इसलिए कभी-कभी सोई अवस्था में, स्वप्नों (Dream) और दिवा-स्वपनों (Day dream) में या टहलते हुये एकाएक व्यक्ति को समस्या का समाधान मिल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता है। किन्तु बहुत से मनोवैज्ञानिकों को गर्भीकरण की अवस्था की यह व्याख्या स्वीकार नहीं है। उन्होंने इसकी अग्रलिखित व्याख्याओं पर अपनी आस्था प्रकट की है—प्रथम यह अवस्था सीखने के पठार (Plateau of Learning) के रूप में मानी गई है। जिस प्रकार किसी क्रिया को सीखते समय पठार (Plateau) की अवधि में आदत का पुनर्गठन होता है उसी प्रकार गर्भीकरण की अवस्था में सूक्ष्म-प्रतीकों (Symbol) के द्वारा विचार पुनः एक संगठित स्वरूप धारण कर लेते हैं। द्वितीय व्याख्या, जो कि विश्राम सिद्धान्त (Theory of Relaxation) पर आधारित है, के अनुसार तथ्य-संग्रह की अवस्था में समस्या पर अनवरत चिन्तन के परिणामस्वरूप बहुत से विघ्न (Interferences) तथा अवरोध (Inhibition) उत्पन्न हो जाते हैं। किन्तु गर्भीकरण की अवस्था में उसे सोने या विश्राम का समय मिल जाता है जिससे ये विघ्न तथा अवरोध समाप्त हो जाते हैं और वह समस्या पर नये ढंग से विचार करने के लिये उद्यत हो जाता है। वास्तव में गर्भीकरण की ये तीनों व्याख्यायें आंशिक रूप में सही हैं। अतः हमें किसी एक व्याख्या के आधार पर निर्भर नहीं रहना चाहिए।

(३) स्फुरण की अवस्था (Stage of Illumination or Inspiration)—इस अवस्था में व्यक्ति को सहसा समस्या का समाधान मिलने की आशा हो जाती है। जहाँ वह गर्भीकरण की अवस्था में समस्या के प्रति अंधेरे (Dark) में था वहाँ अब वह स्फुरण की अवस्था में समस्या के प्रति प्रकाश (Light) प्रतीत करता है। वैलस महोदय ने स्फुरण की अग्रलिखित तीन अवस्थायें बतलाई हैं—(१) स्फुरण आकस्मिक (Sudden) रूप से होता है, (२) इसमें उल्लास (Elation) संवेग का अनुभव होने लगता है तथा (३) चिन्तन करने वाले को समस्या के समाधान की आशा हो जाती है। उदाहरण के लिये एक नाटककार अपने नाटक की रूपरेखा तैयार करने में हास्य-अभिनेता का स्थान निर्धारित करने के लिये बहुत देर बाद उसे एकाएक नाटक में हास्य-अभिनेता का स्थान निर्धारित करने के लिये एक रास्ता मिल गया और उसने अपने नाटक में हास्य अभिनेता का स्थान निर्धारित करना प्रारम्भ कर दिया। नाटककार की यह अवस्था ही स्फुरण की अवस्था है जिसे हम सूझ (Insight) की अवस्था भी कह सकते है।

(४) अप्रमापन की अवस्था (Stage of Verification)—इस अवस्था में चिन्तन करने वाला व्यक्ति समस्या के प्रति जो समाधान प्राप्त करता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है उसकी सत्यता (Validity) तथा विश्वसनीयता (Realibiltty) प्रमाणित करता है। प्राय: वैज्ञानिक तथा मनोवैज्ञानिक समाधन का प्रमाण (Verification) नियन्त्रित निरीक्षण (Observation) के आधार पर करते हैं। किन्तु नाटककार, कवि आदि समस्या का समाधान का प्रमापन अपने अचानक स्फुरित विचारों में कई प्रकार का संशोधन तथा परिमार्जन करते हैं। इस प्रकार स्फुरण की अवस्था में जो अचानक समस्या का समाधान या स्फुरित विचारों में कई प्रकार का संशोधन तथा परिमार्जन कर सकते हैं। इस प्रकार स्फुरण की अवस्था में जो अचानक समस्या का समाधान या स्फुरित विचार प्राप्त होते हैं उनको प्रमापन को अवस्था में अधिक चिन्तन और प्रमापन के बाद प्रमाणिक रूप प्रदान किया जाता है और इस प्रकार रचनात्मक चिन्तन की क्रिया अन्तिम रूप प्राप्त कर लेती है।

प्रत्यय का स्वरूप
(Nature of Concept)

जाति अथवा समूह के विचार को प्रत्यय कहते हैं

व्यक्ति जो विचार करता है वह जब भाषा का रूप ग्रहण कर लेता है तो निर्णय (Judgment) कहलाने लगता है। निर्णय प्रत्ययों का संश्लिष्ट रूप होता है। इस दृष्टिकोण से विचार के लिये प्रत्यय (Concept) बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। जैसा कि वुडवर्थ ने कहा है, **"प्रत्यय विचार में एक महत्वपूर्ण अंग है** (**An important tool of thinking is the concept**) जितनी भी भाववाचक एवं जातिवाचक संज्ञायें होती हैं वे सब प्रत्यय हुआ करती हैं। जब कोई व्यक्ति बिल्ली शब्द का उच्चारण करता है तो इस शब्द से किसी विशेष बिल्ली का बोध नहीं होता है वरन् बिल्ली जाति का बोध होता है। इसी जाति अथवा समूह के विचार को प्रत्यय (Concept) कहते हैं। दूसरे शब्दों में विभिन्न विचार वस्तुओं की परिस्थितियों अथवा घटनाओं के सामान्य विचार को प्रत्यय कहते हैं। हेमरटन के अनुसार **"प्रत्यय घटनाओं वस्तुओं एवं व्यक्तियों के जगत में सामान्य विशेषताओं और सम्बन्ध की प्रक्रिया है।"**

"It (concept) is the process of discrimination of the common features and relations in the world of events, things and persons."

—Hammertian

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यय की अन्य परिभाषायें

"Concepts are condeusation of past experiences. They bring together single in an idea what has been learned adout properties of many different things."

—**Munn.**

"General ideas are called concepts. Concepts represent the common qualities of many different things perceived and recalled."

—**J. N. Sinha.**

"Concepts are product of reasoning, and once developed, play an important role in further thinking."

—**Munn.**

प्रत्यय-निर्माण
(Formation of Concept)

प्रत्यय-निर्माण के निम्नलिखित चरण (स्तर) होते हैं—

(१) निरीक्षण (Observation)—किसी वस्तु के प्रत्यय के निर्माण के लिए सबसे पहले उसी तरह अनेक वस्तुओं का निरीक्षण करना पड़ता है। उदाहरण के लिए 'बिल्ली' के प्रत्यय निर्माण के लिये सर्वप्रथम हमें अनेक बिल्लियों का निरीक्षण करना पड़ता है।

(२) विश्लेषण (Analysis)—जब व्यक्ति एक ही तरह की अनेक वस्तुओं का निरीक्षण कर लेता है तब वह प्रत्येक व्यक्ति के अलग-अलग गुणों की जांच करता है। विश्लेषण से हमें बिल्लियों के गुणों की जांच करनी पड़ती है।

(३) तुलना (Comparison)—जब व्यक्ति अनेक वस्तुओं के गुणों की जांच कर लेता है तब वह उन वस्तुओं के गुणों की समानताओं एवं विषमताओं पर ध्यान केन्द्रित करता है। कौलिन्स एवं ड्रेवर के शब्दों में **"तुलना वस्तुओं को विचार में साथ-साथ रखना है और विभिन्न रूपों अथवा गुणों में उनकी तुलना है।"**

"It is placing objects side by side in thoughts and comparing them in respect of different aspects or qualities."

—**Collins & Drewer.**

(४) प्रत्याहार (Abstraction)—इस चरण में हमें उन विशेषताओं का विचार करना पड़ता है जो कि वस्तुओं की विशेषताओं से अलग हों। उदाहरण के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लिये हम कह सकते हैं कि सफेदी का विचार प्रत्याहार (Abstraction) है क्योंकि हम इसका वस्तुओं से अलग विचार कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में सफेद वस्तुओं जैसे दूध, दही, रबड़ आदि से प्रथक होकर हम सफेदी का विचार कर सकते हैं। मन के कथनानुसार, "प्रत्याहार विभिन्न वस्तुओं में समानता का निरीक्षण है।"

"Abstraction is observing the similarity of otherwise different things." —Munn.

(५) सामान्यीकरण (Generalization)—इस चरण में एक ही प्रकार की विभिन्न वस्तुओं की समानताओं को देखकर एक सामान्य विचार प्रस्तुत करना पड़ता है। उदाहरण के लिए हम विभिन्न मनुष्यों को मरते हुए देखते हैं और यदि हम यह कह दें कि 'मनुष्य जाति मरणशील है' तो यह मनुष्य जाति की मरणशीलता के गुण का सामान्यीकरण (Generalization) होगा। मन ने सामान्यीकरण का अर्थ प्रस्तुत करते हुए ठीक ही लिखा है, "विभिन्न अनुभवों से एक सिद्धान्त निकालना सामान्यीकरण है।"

"Deriving a principle from varied experiences in this way is generalizing." —Munn.

(६) नामकरण (Naming)—प्रत्यय निर्माण का अन्तिम चरण है—मामकरण (Naming)। इस चरण में एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं के सामान्य गुण के आधार पर हम वस्तुओं को नाम प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिये अनेक बिल्लियों में एक सामान्य गुण देखकर हम सम्पूर्ण बिल्ली जाति को बिल्ली का नाम दे देते हैं।

उपसंहार (Conclusion)

इस प्रकार हमने देखा कि चिन्तन (Thinking) वह मानसिक प्रक्रिया है जिसमें किसी समस्या का समाधान किया जाता है। विचार के मुख्य तत्व हैं—(१) समस्या का उपस्थित होना, (२) समस्या का समाधान करने के लिए विविध प्रकार के मार्ग ढूंढ़ना, (३) दृष्टिगत मार्गों को एक लक्ष्य की ओर निर्देशित करना, (४) प्रत्यय एवं भूल-विधि का प्रयोग करना, (५) व्यक्ति का सक्रिय होना एवं (६) मन-ही-मन में बातचीत करना। विचार में भाषा के स्थान को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—(१) भाषा विचार का माध्यम है, (२) भाषा विचार की अभिव्यक्ति है, (३) भाषा स्मरण में सहायता देती है, (४) भाषा विचार की बचत का साधन है एवं (५) विचार तथा भाषा का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विकास एक साथ-साथ होता है है। रचनात्मक चिन्तन का अर्थ उस चिन्तन से होता है जो मानव हित को लेकर नवीन रचना के लिये किया जाता है—**रचनात्मक चिन्तन की अवस्थायें**—(१) तथ्य-संग्रह या तैयारी की अवस्था, (२) गर्भीकरण की अवस्था, (३) स्फुरण की अवस्था तथा (४) प्रमापन की अवस्था। जाति अथवा समूह के विचार को प्रत्यक्ष (Concept) कहते हैं। **प्रत्यय निर्माण के चरण अथवा स्तर हैं**—(१) निरीक्षण, (२) विश्लेषण, (३) तुलना, (४) प्रत्याहार, (५) सामान्यीकरण एवं (६) नामकरण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२८

तर्क

[Reasoning]

प्रश्न संख्या—२८

तर्क क्या है ? तर्क के कौन-कौन स्तर हैं ? तर्क के विभिन्न प्रकारों और प्रेरकों की विवेचना कीजिये ।

What is reasoning ? What are the various steps of reasoning ? Discuss the various kinds and motives of reasoning.

भूमिका (Introduction)

मनुष्केन अभियोजनात्मक व्यवहार में चिन्तन के विभिन्न रूप यथा मानसिक कल्पना, नियमित विचार, प्रत्यात्मक चिन्तन, कल्पना, दिवा-स्वप्न, रात्रि-स्वप्न, रचनात्मक चिन्तन, तर्क आदि देखने को मिलते हैं। इनमें से रचनात्मक चिन्तन तथा तर्क का मनुष्य की समस्याओं के समाधान में सबसे अधिक हाथ होता है। वास्तव में तर्क रचनात्मक चिन्तन से प्रथम नहीं होता है बल्कि वह रचनात्मक चिन्तन के लिए अति आवश्यक होता है क्योंकि रचनात्मक चिन्तन में हम समस्या का समाधान करने में तर्क का सबसे अधिक सहारा लेते हैं। इस स्थिति में तर्क प्रभावित चिन्तन (Reflective Thinking) का रूप ग्रहण कर लेता है। यों तो सभी मनुष्यों में यह प्रक्रिया विशेष रूप से पाई जाती है। प्रायः ये मनुष्य दार्शनिक, वैज्ञानिक, बैरिस्टर लेखक आदि होते हैं। अब हम इस प्रश्न में तर्क प्रक्रिया की जानकारी प्राप्त करने के लिए तर्क का स्वरूप (Nature of Reasoning), तर्क के स्तर या चरण (Steps of Reasoning), तर्क के प्रकार (Kinds of Reasoning) तथा तर्क प्रक्रिया प्रेरक (Motives of Reasoning) प्रस्तुत करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तर्क का स्वरूप
(Nature of Reasoning)

समस्या का समाधान करने वाली उच्च विचारात्मक प्रक्रिया को तर्क कहते हैं।

जब मनुष्य के सामने कोई कठिन समस्या उपस्थित होती है तो वह उस समस्या का समाधान करने के लिए चिन्तन (Thinking) करना प्रारम्भ कर देता है । उदाहरण के लिए जब एक व्यक्ति ऐसे चौराहे में आ जाय जिसको कि उसने कभी नहीं देखा हो तो उसके सामने स्वाभाविक रूप से यह समस्या खड़ी हो जाती है कि आखिर हम किस रास्ते से आगे बढ़ें कि हम निश्चित स्थान पर पहुँच जांय । वह यह सोचना प्रारम्भ कर देता है कि जिस स्थान को हमें जाना है वह पूर्व दिशा की ओर पड़ता है, अतः हमको उस रास्ते से जाना चाहिए जो पूर्व की ओर पड़ता है, इस प्रकार की विचारात्मक प्रक्रिया को तर्क (Reasoning) कहते हैं। तर्क में पूर्व अनुभवों के आधार पर नवीन कल्पना की सृष्टि की जाती है । वुडवर्थ महोदय का कथन है, **"तर्क को मानसिक अनुसंधान (Mental exploration) एवं कल्पना को मानसिक प्रहस्तन (Mental exploration) कहा जा सकता है ।"** तर्क की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए मन (Munn) ने लिखा है, **"तर्क अतीत के अनुभवों को इस प्रकार मिलाना है कि समस्या का समाधान हो जाय जो केवल पिछले हलों की पुनरावृत्ति से हल नहीं हो सके ।"**

"Reasoning is combining of past experiences in order to solve a problem which cannot be solved by mere reproduction of earlier solutions." —Munn.

तर्क के स्तर अथवा चरण
(Steps of Reasoning)

तर्क प्रक्रिया स्तर के निम्नलिखित हैं :—

(१) सामग्री का संग्रह करना (Gathering the date)—तर्क प्रक्रिया का सबसे प्रथम स्तर है—सामग्री का संग्रह करना । इस स्तर के अनुसार सबसे पहले व्यक्ति को समस्या का समाधान करने के लिए स्मृति (Memory) एवं निरीक्षण (Observation) के द्वारा समस्या से सम्बन्धित कुछ आवश्यक तथ्यों का संग्रह करना पड़ता है । डा० जे० एन० सिन्हा ने ठीक ही लिखा है—

"The first step in reasoning is to seek the data from observation or memory both bearing on the problem."

—J. N. Sinha.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) सामग्री का पारस्परिक संयोग करना (Combining the data)—इस स्तर में स्मृति एवं निरीक्षण द्वारा प्राप्त तथ्यों को परस्पर संयुक्त किया जाता है, तत्पश्चात् इस बात का निरीक्षण किया जाता है कि इन तथ्यों में पारस्परिक क्या सम्बन्ध है। इस स्तर पर हमें जो तथ्य अनावश्यक प्रतीत होते हैं उन्हें छोड़ देते हैं एवं समस्या का समाधान करने के लिए महत्वपूर्ण तथ्यों को चुन लेते हैं।

(३) संयुक्त सामग्री की गर्भित बातों को देखना (Seeing the implication of the combined data)—इस स्तर पर संयुक्त सामग्री की गर्भित बातों को समझते हुये नियम निर्धारण करना पड़ता है। जिसकी बुद्धि जितनी अच्छी होगी वह उतना ही उपयुक्त नियम निर्धारण करने में समर्थ हो सकता है क्योंकि बुद्धिमान् व्यक्ति संयुक्त सामग्री के सम्बन्धों को अच्छी तरह से पहचान लेता है और इस पहचान प्रक्रिया के द्वारा नियम निर्धारित कर देता है।

(४) प्राप्त निष्कर्ष की परीक्षा करना (Testing the conclusion)–तर्क प्रतिक्रिया का अन्तिम स्तर है प्राप्त निष्कर्ष की परीक्षा करना। इस स्तर पर जो हम नियम निर्धारित कर चुके हैं उनका नवीन निरीक्षण द्वारा परीक्षण करते हैं कि ये नियम सत्य हैं अथवा नहीं। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जे० एन० सिन्हा का विचार है, "तर्क में मुख्य बात सामग्री का मानसिक अनुसंधान और नवीन की प्राप्ति है। मनोविज्ञान मुख्यतः अनुमान की प्राप्ति करने वाली अनुसंधान प्रक्रिया का अनुशीलन करता है। तर्कशास्त्र मुख्यतः अकेले अनुमान का अनुशीलन करता है।"

"Reasoning mainly consists in mental exploration of the data and finding out a new relationship among them. Psychology mainly deals with the exploratory process which leads to inference. Logic mainly deals with the inference alone." —**J. N. Sinha.**

तर्क के प्रकार

(Kinds of Reasoning)

निम्नलिखित तीन प्रकार का होता है—

(१) आगमन तर्क (Inductive Reasoning)—आगमन तर्क वह तर्क है जिसमें नाना प्रकार के दृष्टान्तों द्वारा किसी सामान्य नियम पर पहुँचा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जाता है। आगमन तर्क को तीन स्तरों से गुजरना पड़ता है—(१) निरीक्षण (Observation)—सोहन मर गया, मोहन मर गया, सोहन-मोहन के समस्त भाई मर गए—(२) प्रयोग (Experiment) ये समस्त भाई मनुष्य थे। सोहन मनुष्य था मर गया, मोहन भी मनुष्य था और मर गया, मोहन-सोहन के समस्त भाई मनुष्य थे और मर गये। (३) नियम (Generalization)—"मरणशील अथवा मरणधर्मी है।"

(२) उपमान तर्क (Analogical Reasoning)—इस प्रकार की तर्क क्रिया में एक तथ्य की दूसरे तथ्य से तुलना कर एक की दूसरे से उपमा दी जाती है। उदाहरण के लिए 'आल्हा,' एवं 'हल्दीघाटी' ये दोनों वीर रस के काव्य हैं। जब हम इनमें एक की उपमा दूसरे से देते हैं तो हम इन दोनों काव्यों में तुलना करते हुये यह विचार करते हैं कि जिस प्रकार 'आल्हा' के गाने से हममें जोश उत्पन्न हो जाता है। उसी प्रकार 'हल्दी घाटी' के पढ़ने से भी हममें जोश आ जाता है, इस प्रकार जब हम देखते हैं कि दोनों वीर रस को उत्पन्न करने वाले काव्य हैं तो हम एक की उपमा (Analogy) दूसरे से देते हये कह सकते हैं कि 'हल्दीघाटी' आल्हा के समान एक काव्य है क्योंकि इसके पढ़ने से भी आल्हा के समान जोश उत्पन्न हो जाता है।

(३) निगमन तर्क (Deductive Reasoning) :—निगमन तर्क वह तर्क है जिसमें हम सिद्धान्त अथवा नियम को किसी विशेष परिस्थिति में लागू कर उसकी सत्यता सिद्ध करते हैं। निगमन प्रक्रिया तीन स्तरों से होकर गुजरती है—(१) समस्या (Problem)—हमें किसी समस्या अथवा परिस्थिति का समाधान करना है। (२) नियम (Generalization)—इस समस्या पर कौन सा नियम लागू कर सकते है। (३) अनुमान (Inference)—इस नियम से हम अनुमान लगाते हैं।

तर्क प्रक्रिया के प्रेरक
(Motives of Reasoning)

वुडवर्थ के अनुसार तर्क प्रक्रिया के प्रेरक निम्नलिखित हैं :—

(१) व्यावहारिक समस्या का हल (Solution of a Practical problem)—जब किसी व्यक्ति के सामने कोई व्यावहारिक समस्या आ जाती है तो उसका समाधान अथवा हल करने के लिये उसे तर्क प्रक्रिया का आश्रय लेना पड़ता है। उदाहरण के लिये किसी निश्चित स्थान पर पहुँचने के लिये हम चलते-जलते बीच में रास्ता भूल जांय तो हमें एक नवीन समस्या अथवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिस्थिति से सामना करना पड़ता है। तब हम समस्या का हल करने के लिए अर्थात् उचित मार्ग जानने के लिए तर्क करना प्रारम्भ कर देते हैं। हम अपने पूर्व अनुभवों के तथ्यों का पुनः स्मरण (Recall) करते हैं, जो तथ्य आवश्यक होते हैं उनको चुन लेते हैं तत्पश्चात् इन तथ्यों को तब तक नवीन नमूने में रखे रहते हैं जब तक कि समस्या का समाधान न मिल जाय अर्थात् जब तक हमें निश्चित मार्ग न प्राप्त हो जाय।

(२) योक्तिकीकरण या अपने कार्य का औचित्य सिद्ध करना (Rationalisation or self-justification)—हम अपने के किये हुये कार्य का औचित्य सिद्ध करने के लिए तर्क करना प्रारम्भ कर देते हैं। दूसरे शब्दों में मान लीजिये कोई व्यक्ति तर्क द्वारा कोई बात कह चुका है और वह चाहता है कि मेरी यह बात जमी रहे तो वह बात को अनेकों तर्क द्वारा प्रमाणित सिद्ध करने का प्रयास करता है। इस प्रकार के अनेक उदाहरण हम दैनिक जीवन मे प्राप्त कर सकते हैं।

(३) व्याख्या (Explanation) :—जब हम किसी बात की उचित व्याख्या करने का प्रयास करते हैं तो हमें कभी-कभी तर्क का आश्रय लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए जब हम किसी ज्योमित की साध्य की व्याख्या कर रहे होते हैं तो हमें नाना प्रकार से तर्क करना पड़ता है।

(४) सिद्धान्त का लागू करना (उपनयन) (Application of a principle) :—जब हम किसी पूर्व निश्चित सिद्धान्त को किसी परिस्थिति अथवा समस्या को हल करने के लिए लागू करना चाहते हैं तो हमें तर्क करना पड़ता है। इस प्रकार सिद्धान्त को लागू होते हुये अनुभव करने को प्रेरणावश हम तर्क करते हैं। सिद्धान्त को लागू करने से ही बहुत से व्यक्ति भविष्यवाणी करने में सफल हो जाते हैं।

(५) शंका (Doubt) :—जब हमें किसी विचार अथवा सिद्धान्त की सच्चाई पर किसी प्रकार की शंका (Doubt) होती है तो हम उसे दूर करने के लिये तर्क करना प्रारम्भ कर देते हैं। प्रायः विश्व के जितने भी महान् दार्शनिक हुये हैं वे सब शंका से प्रेरित होकर तर्क करते रहे हैं।

(६) सत्यापन (Verification) :—जब हम किसी विचार या उपकल्पना (Hypothesis) को सही सिद्ध करना चाहते हैं तो हम तर्क का आश्रय लेते हैं। इस प्रकार सत्यापन की इच्छा तर्क का प्रेरक (Motive) है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपसंहार (Conclusion)

सारांश यह है कि समस्या को समाधान करने वाली उच्च विचारात्मक प्रक्रिया को तर्क कहते हैं। तर्क प्रक्रिया के विभिन्न स्तर ये हैं—(१) सामग्री का संग्रह करना, (२) सामग्री का पारस्परिक संयोग करना, (३) संयुक्त सामग्री की गर्भित बातों को देखना एवं (४) प्राप्त निष्कर्ष की परीक्षा करना। तर्क के प्रकार (१) आगमन तर्क, (२) उपमान तर्क एवं (३) निगमन तर्क। तर्क प्रक्रिया के मुख्य प्रेरक—(१) व्यावहारिक समस्या का हल, (२) यौक्तिकीकरण या अपने कार्य का औचित्य सिद्ध करना, (३) व्याख्या, (४) सिद्धान्त का लागू करना (उपनयन), (५) शंका एवं (६) सत्यापन।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२६

सीखना : स्वरूप, प्रकार, तत्व और नियम

[Learning : Nature, Kinds, Factors and Laws]

प्रश्न संख्या—२६

सीखना क्या है ? सीखने और परिपक्वता में अन्तर बताइए। सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने वाले कौन-कौन से तत्व हैं ? सीखने के प्रकार और नियम स्पष्ट कीजिए। मनुष्य तथा पशु के सीखने में अन्तर बताइए।

What is learning ? Distinguish learning and maturation. What are the factors of efficient learning ? Clarify the kinds and laws of learning. Differentiate between human and animal learning.

भूमिका (Introduction)

मनोविज्ञान व्यक्ति के अभियोगात्मक व्यवहार (Adjustment Behaviour) का अध्ययन करता है। प्रत्येक व्यक्ति जब से शिशु के रूप में इस व्यापक विश्व में प्रवेश करता है तब से किसी न किसी रूप में अपने वातावरण से अभियोजन (Adjustment) करना प्रारम्भ कर देता है। जैसे-जैसे वह बड़ा होता है वैसे-वैसे उसका वातावरण भी विस्तृत होता जाता है और तदनुकूल अभियोजन के स्वरूप में परिवर्तन होता जाता है। वातावरण से अभियोजन करने के लिए उसे अपने भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा नैतिक वातावरण की तमाम चीजों जैसे भाषा, उठने-बैठने के तरीके, रहन-सहन, रीति-रिवांज परम्परायें कार्य करने के तरीके आदि को सीखना पड़ता है। यदि वह इन बातों को कुशलतापूर्वक नहीं सीखता है तो उसे अपने वातावरण से अभियोजन करने में अति कठिनाई होती है और वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असफल सिद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होने लगता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यक्ति के अभियोजन में सीखने की क्रिया (Learning Process) का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अब प्रश्न उठता है कि सीखना क्या है? सीखने का परिपक्वता से क्या सम्बन्ध है? सीखने के कौन कौन से नियम तथा प्रभावित करने वाले तत्व हैं आदि। इन सभी बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिए इस प्रश्न में हम सीखने का स्वरूप (Nature of Learning), सीखना और परिपक्वता में अन्तर (Difference between Learning and Maturation), सीखने के प्रकार (Kinds of Learning), सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने वाले तत्व (Factors of Efficient Learning), सीखने के नियम (Laws of Learning) तथा मनुष्य और पशु के सीखने में अन्तर (Difference between Human and Animal Learning) प्रस्तुत करेंगे।

सीखने का स्वरूप

(Nature of Learning)

[अ] सीखने का अर्थ (Meaning of Learning)

व्यक्ति अपनी या जन्मजात प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर जो क्रिया करता है उसके परिणामस्वरूप वह स्वभावत: किसी नवीन परिस्थिति के सम्पर्क में आता है और जब वह अपनी इन प्रवृत्तियों की सन्तुष्टि इस नवीन परिस्थिति के द्वारा अपनी पुरानी अनुभूति के आधार पर या स्वाभाविक आधार पर करने में समर्थ नहीं हो पाता है तो वह इस परिस्थिति के साथ समायोजन करने के लिये प्रयास करने लगता है। इस प्रयास के परिणामस्वरूप वह क्रमश: गलत व्यवहार छोड़ने लगता है और सफलीभूत व्यवहार को अपनाने लगता है। इस प्रकार उसके स्वाभाविक व्यवहार या पुरानी अनुभूति में क्रमशः प्रगतिशील परिवर्तन (Progressive Change) या परिमार्जन (Modification) होता है। मनोविज्ञान के अन्तर्गत इस प्रकार से स्वाभाविक व्यवहार या पुरानी अनुभूति में होने वाले प्रगतिशील परिवर्तन या परिमार्जन को सीखना (Learning) कहते हैं। उदाहरण के लिये यदि किसी छोटे बच्चे के सामने दीपक रक्खा होता है तो वह स्वाभाविक रूप से दीप-शिखा को छूने के लिए हाथ बढ़ाता है किन्तु उसका हाथ दीप-शिखा से जल जाता है, उसे तकलीफ अनुभव होने लगती है और वह तुरन्त अपना हाथ दीप-शिखा से हटा लेता है। जब पुन: वह सामने रखे हुए दीपक को देखता है तो अबकी बार दीप-शिखा छूने का स्वाविक व्यवहार नहीं करता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है। बल्कि यदि उसके पास में दीपक लाया जाय तो वह दूर भागने लगता है। इस प्रकार उसके स्वाभाविक व्यवहार में जो परिवर्तन हुआ इस क्रिया को सीखना कहते हैं। उक्त शब्दों के आधार पर हम कह सकते है कि **सीखने का तात्पर्य उस मानसिक प्राक्रिया से है जिसमें व्यक्ति के स्वाभाविक व्यवहार या पूर्ण अनुभूति तथा व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन या परिमार्जन होता है।**

[स] सीखने की क्रिया का विश्लेषण

(Analysis of Learning Process)

यदि हम सीखने की क्रिया का विश्लेषण करें तो उसमें हमें निम्नलिखित विशेषतायें मिलती हैं—

(१) अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये क्रिया करना।

(२) नवीन परिस्थिति का उत्पन्न हो जाना।

(३) नवीन परिस्थिति के साथ समायोजन करने के लिये स्वाभाविक प्रतिक्रिया करने लगना।

(४) स्वाभाविक व्यवहार या पुरानी अनुभूति के अध्ययन पर नवीन परिस्थिति के साथ समायोजन करने में असफलता।

(५) समायोजन के लिए नवीन रास्ते या मार्गों की खोज करना।

(६) सफलता के लिए नवीन मार्गों के खोजने के परिणामस्वरूप व्यक्ति के स्वाभाविक व्यवहार तथा पूर्व अनुभव तथा व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन या परिमार्जन का होना।

(७) सफलीभूत प्रयास की पुनरावृत्ति।

(८) सफलीभूत प्रयास की पुनरावृत्ति के परिणामस्वरूप प्रगतिशील परिवर्तित या परिमार्जित अनुभूति तथा व्यवहार में स्थायित्व आना। इसी स्थाई रूप को ही सीखना। (Learning) कहा जाता है।

[स] सीखने की परिभाषा (Definition of Learning)

(१) **मेक्गो :**— "मापने की दृष्टि से, सीखना व्यवहार से सापेक्षतया स्थाई परिवर्तन है जो अभ्यास के परिणामस्वरूप होता है। प्रायः यह परिवर्तन एक दिशा में विशेष होता है जिससे व्यक्ति की वर्तमान प्रेरणात्मक अवस्थाओं की सन्तुष्टि होती है।"

"Learning, as we measure it, is relatively permanent change in behaviours as a function of practice. In most cases, this change has a direction which satisfies the current motivational conditions of the individual." —Mcgeoch.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) गिलफोर्ड—"हम इस शब्द की परिभाषा विस्तृत रूप में यह कहकर कर सकते हैं कि सीखना व्यवहार के फलस्वरूप व्यवहार में कोई भी परिवर्तन है।"

"We may define the term very broadiy in saying that learning is any change in behaviour, resulting form behaviour.' —Guilford

(३) गेट्स एवं अन्य विद्वान् :—"अनुभव एवं प्रशिक्षा के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन होना ही सीखना है।"

"Learning is modification of behaviour through experience and training." —Gates and others

(४) कौलविन :—"सीखना अनुभव के कारण हमारे पहले से बने वनाये (मौलिक) व्यवहार का परिवर्तन है।"

"Learning is the modification of our ready-made (original) behaviour due to experience. —Colvin

(५) जी० डी० बौज:—"सीखना एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न आदतें, ज्ञान एवं दृष्टिकोण अर्जित करता है जोकि सामान्य जीवन की माँगों को पूरा करने के लिये आवश्यक है।"

"Learning is the process by which the individual acquires various habits, knowledge and attitudes that are necessary to neet the demand of iife in general." —G. Boaz.

(६) चार्ल्स स्किनर:—"व्यवहार के अर्जन में उन्नति की प्रक्रिया को सीखना कहते हैं।"

"Learning is a process of progressing behaviour adoption." —Charles E. Skinner

(७) वुडवर्थ :—सीखना एक क्रिया है जो वाद वाली क्रिया पर तुलना में अधिक स्थाई प्रभाव डालती है।"

Learning, then, is an activity that produces a relatively permanent effect on latter activity. —Woodworth

सीखना एवं परिपक्वता में अन्तर
(Difference between Learning and Maturation)

[अ] परिपक्वता का अर्थ (Meaning of Maturation)

परिपक्वता (Maturation) वह जन्मजात प्रक्रिया है जो दिन प्रतिदिन प्राणी के साथ स्वतः चला करती है जैसे कि शैशवावस्था से बाल्यावस्था में प्रवेश करत्ता एवं बाल्यावस्था से किशोरावस्था में प्रवेश करता है। परिपक्वता का अर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रस्तुत करते हुए वोरिग एवं अन्य विद्वानों ने लिखा है, "हम परिपक्वता शब्द का अर्थ उन्नति और विकास के अर्थ में करेंगे जो कि बिना सीखे व्यवहार होने के पहले अथवा किसी सीखे हुए विशिष्ट व्यवहार के होने के पूर्व आवश्यक है।"

"We shall use the term maturation to mean the growth and development that is necessary either before any unlearned behaviour can occur, or before the learning of any particular behaviour can take place."

[ब] सीखना एवं परिपक्वता का सम्बन्ध

सीखना (Learning) एवं परिपक्वता (Maturation) में इतना घनिष्ट सम्बन्ध है कि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने दोनों को 'विकास' (Devleop-ment or Growth) शब्द से सम्बोधित किया है। ऐसा क्यों? हमने देखा कि सीखने से व्यक्ति के व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन होता है। इसी तरह परिपक्वता से भी व्यक्ति के व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन होता है। परिपक्वता के अभाव में सीखना असम्भव है और सीखने के अभाव में परिपक्वता निरर्थक एवं निस्सार। इस प्रकार सीखना एवं परिपक्वता में घनिष्ट सम्बन्ध है फिर क्यों न मनोवैज्ञानिक इन्हें 'विकास' शब्द से सम्बन्धित करे?

[स] सीखने एवं परिपक्वता में अन्तर :—
(Difference between Learning and Maturation)

ऊपर हमने देखा कि सीखना एवं परिपक्वता में इतना अधिक घनिष्ट सम्बन्ध है कि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने दोनों को 'विकास' कहा है परन्तु तात्पर्य यह नहीं होता है कि दोनों एक हैं बल्कि इनमें निम्नलिखित अन्तर हैं :—

(१) सीखने की प्रक्रिया अनुभवों के द्वारा अर्जित की जाती है एवं परिपक्वता की प्रक्रिया जन्मजात (Inborn) हुआ करती है।

(२) सीखना व्यक्तिगत प्रक्रियाओं (Individual responses) को विकसित करती है एवं परिपक्वता प्रजातीय प्रक्रियाओं (Racial responses) को विकसित करती है।

(३) सीखने की प्रक्रिया में अभ्यास के द्वारा स्थिरता एवं प्रतिपन्नता (Accuracy) आती है एवं परिपक्वता जन्मजात प्रक्रिया के कारण अभ्यास से अप्रभावित रहती है।

(४) जितना अधिक अनुकूल वातावरण होगा उतनी ही सीखने की प्रक्रिया सुचारु रूप से चलती है एवं जितना ही प्रतिकूल वातावरण होगा उतनी ही ये मन्द

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गति से चलती है। परिपक्वता की प्रतिक्रिया में चाहे अनुकूल वातावरण हो चाहे प्रतिकूल ये सुचारु रूप में चलती रहती है।

(५) सीखने की क्रिया द्वारा जो प्रतिक्रियायें विकसित होती हैं वे शारीरिक एवं मानसिक दोनों होती हैं परन्तु परिपक्वता की प्रक्रिया से तो केवल शारीरिक प्रतिक्रियायें ही विकसित होती हैं।

(६) सीखने की क्रिया के लिये प्रेरणा (Motivation) की नितान्त आवश्यकता है परन्तु परिपक्वता को प्रक्रिया जन्मजात एवं स्वाभाविक है। फलस्वरूप इसके लिए प्रेरणा की आवश्यकता का कोई प्रश्न भी नहीं उठता है।

(७) सीखने की प्रक्रिया जन्मजात से लेकर अन्त समय तक चलती रहती हैं एवं परिपक्वता की प्रक्रिया निश्चित समय तक चलती है।

(८) प्राय: सीखना चेतनायुक्त प्रक्रिया हुआ करती है परन्तु परिपक्वता की प्रक्रिया में चेतना का कोई स्थान नहीं है।

(९) सीखना चेतना युक्त प्रक्रिया तो है साथ ही साथ वाह्य भी है जब कि परिपक्वता आन्तरिक प्रक्रिया है।

सीखने के प्रकार
(Kinds of Learning)

सीखने के मुख्य रूप से दो प्रकार होते हैं। ये दोनों प्रकार निम्नलिखित हैं—

(१) क्रियात्मक शिक्षण (Motor Learning):—जिस शिक्षण में शारीरिक क्रियाओं की प्रमुखता होती है उसे क्रियात्मक शिक्षण कहते हैं। इस प्रकार के शिक्षक में हाथ, पैर आदि के अंगों का विशेष रूप से प्रयोग होता है। इसलिये क्रियात्मक शिक्षण को कर्मेन्द्रिय प्रधान (Motor Organs) शिक्षण कहते हैं। टाइप सीखना, मेज कुर्सी वनाना, साइकिल मोटर चलाना वत्यादि क्रियात्मक शिक्षण के उदाहरण हैं।

(२) विचारात्मक शिक्षण (Ideational Learning) :—विचारात्मक शिक्षण का तात्पर्य उस शिक्षण से है जिसमें माससिक क्रियाओं की प्रधानता होती है। विचारात्मक शिक्षण में आँख, कान आदि ज्ञानेन्द्रियों (Sense Organs) की प्रधानता रहती है इसलिये इसे ज्ञानेन्द्रिय प्रधान शिक्षण कहते हैं। ज्ञानेन्द्रियों के साथ-साथ विचारात्मक शिक्षण में मस्तिष्क (Brain) भी रहता है। इसके अतिरिक्त इसमें भाषा का भी प्रयोग होता है। इतिहास, भूगोल आदि पढ़ना, हिसाब के प्रश्न हल करना, कविता सीखना आदि विचारात्मक शिक्षण के उदाहरण हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने वाले तत्व
(Factors of Efficient Learning)

सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने वाले तत्वों का तात्पर्य उन परिस्थिति और अवस्थाओं से है जो कि शिक्षण की क्रिया को मजबूत बनाती हैं और जिनके न होने पर शिक्षण की क्रिया कमजोर होती है या बिलकुल नहीं होती है। सीखने की क्रिया पर इस प्रकार का प्रकार का प्रभाव डालने वाले तत्व निम्नलिखित हैं—

(१) प्रेरणा (Motivation) :—शिक्षण का सीखने की क्रिया को सुदृढ़ या कमजोर बनाने में सबसे अधिक प्रभाव प्रेरणा का पड़ता है। शिक्षण प्रक्रिया पर प्रेरणा का प्रभाव जानने के लिये वहुत से मनोवैज्ञानिकों ने भूख, प्यास, पुरस्कार, दण्ड, प्रशंसा, निन्दा, प्रतियोगिता आदि प्रेरणाओं का शिक्षण प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का प्रयोगात्मक रूप से अध्ययन किया। इन अध्ययनों में उन्होंने देखा कि इन प्रेरणाओं के कारण प्रयोज्यों (Subjects) की सीखने की क्रिया तेजी (Speedily) तथा मजवूती (Efficiently) से हुई और इन प्रेरणाओं के अभाव में प्रयोज्यों के सीखने में रुचि नहीं थी जिसके कारण सीखने की क्रिया बिलकुल नहीं हुई या कमजोर हुई। नीचे हम कुछ प्रमुख प्रेरणाओं का सीखने की क्रिया पर प्रस्तुत कर रहे हैं—

(i) भूख का अभाव (Influence of Hunger)—कुछ मनोवैज्ञानिकों ने भूख प्रेरणा का शिक्षण प्रक्रिया में पड़ने वाले प्रभाव को जानने के लिये एक प्रयोग किया। उन्होंने चूहों को तीन ग्रुपों में विभाजित कर उन्हें भूल भुलइया (Meze-learning) में जाने की क्रिया को सीखने का अवसर दिया। प्रयोग का निष्कर्ष इस प्रकार है—

ग्रुप संख्या	चालक	उद्दीपन	भूल भुलइंया में उचित पथ से जाना सीखने में सफलता या असफलता
प्रथम		भोजन की उपस्थिति	सफलता
द्वितीय	भूख	भोजन का अभाव	असफलता
तृतीय	भूख का अभाव	भोजन की उपस्थिति	असफलता

प्रयोग की उक्त तालिका से स्पष्ट है कि सीखने की क्रिया या प्रेरणा का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रभाव पड़ता है। पहले ग्रुप के समाने प्रेरणा (भूख-चालक) थी इसलिए उसमें सीखने की क्रिया हुई, दूसरे एवं तीसरे ग्रुप के सामने प्रेरणा का अभाव था, प्रथम ग्रुप के सामने भोजन उद्दीपन का अभाव था और दूसरे ग्रुप में भूख चालक का अभाव था। इसलिये उनमें सीखने की क्रिया नहीं हुई। इस प्रयोग से यह निष्कर्ष निकला कि सीखने की क्रिया पर प्रेरणा का प्रभाव पड़ता है।

(ii) पुरस्कार का प्रभाव (Influence of Reward)—शिक्षण प्रक्रिया पर पुरस्कार (Reward) का प्रभाव का अध्ययन करने के लिये मनोवैज्ञानिकों ने एक ही आयु (Age) तथा बुद्धि (Inaelltgence) के १६ बच्चों पर एक प्रयोग किया। उन्होंने इन बच्चों को तीन ग्रुपों में बाँट लिया और भूल भुलैइया में पहुँचने की क्रिया को सीखने के लिए पुरस्कार द्वारा प्रेरित किया। प्रथम ग्रुप को भूल भुलैइया में उचित पथ से जाने पर किसी भी प्रकार का पुरस्कार नहीं दिया गया, द्वितीय ग्रुप को कुछ पैसे दिये गये (Money Reward) तथा तृतीय ग्रुप को शावास, वाह-वाह आदि के द्वारा प्रोत्साहन दिया गया (Psychological-Reward)। मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रयोग में यह देखा कि जिस ग्रुप को पैसे का पुरस्कार प्राप्त हुआ उसने भूल भुलैइया में पहुँचना सबसे शीघ्र ही सीख लिया, जिस ग्रुप को मनोवैज्ञानिक पुरस्कार प्राप्त हुआ उसके सीखने गति धीमी रही और जिस ग्रुप को किसी भी प्रकार का पुरस्कार नहीं मिला उसके सीखने की गति बहुत ही धीमी थी। इस प्रयोग के आधार पर मनोवैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला कि सीखने की क्रिया पर पुरस्कार (Reward) तथा पुरस्कार के स्वरूप (Narure of Reward) दोनों का प्रभाव पड़ता है।

(iii) प्रशंसा और निन्दा (Praise and Blame):— शिक्षण की क्रिया पर प्रशंसा और निन्दा का प्रभाव समझने के लिये जो प्रयोग किये गये उनसे पता चलता है कि प्रयत्न (Trial) के प्रारम्भ में प्राय: प्रशंसा तथा निन्दा का व्यक्तियों के कार्य पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है किन्तु बाद के प्रयत्नों में देखा गया कि जिन व्यक्तियों के कार्यों के सीखने में प्रशंसा की गई उनके सीखने की क्रिया में क्रमशः उन्नति हुई किन्तु जिन व्यक्तियों की निन्दा की गई उनके सीखने की क्रिया में अवनति हुई। इस प्रकार श्पष्ट है कि जहा प्रशसा प्रेरणा का सीखने की क्रिया में अच्छा प्रभाव पड़ता है वहाँ निन्दा का सीखने की क्रिया पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

(iv) स्पर्धा एवं सम्मान (Rivalry and Recognition)—स्पर्धा तथा सम्मान से प्रेरित होकर व्यक्ति की सीखने की क्रिया की गति पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यह स्वाभाविक है कि जब किसी कार्य को करने में दूसरों से

फा०—२२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होड़ लग जाती है और इस कार्य के पूरा हो जाने पर समाज से सम्मान प्राप्त होने की आशा होती है तो व्यक्ति उस कार्य को करने में भरपूर चेष्टा करता है। इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों ने जो प्रयोग किया उसके आधार पर अग्रलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—(१) स्पर्धा से प्रेरित व्यक्तियों के सीखने की गति स्पर्धारहित व्यक्तियों के सीखने की गति से तीव्र होती है (२) स्पर्धा से प्रेरित व्यक्तियों के सीखने के कार्य स्पर्धारहित व्यक्ति के सीखने के कार्यों से अधिक यथार्थ (Accurate) तथा निश्चित (Definite) होते हैं। (३) स्पर्धा से प्रेरित व्यक्ति स्पर्धारहित व्यक्ति की अपेक्षा निश्चित समय के अन्दर अधिक समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हो जाते हैं।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि सीखने की क्रिया पर प्रेरणा का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। यदि हम यह कहें कि प्रेरणा के अभाव में शिक्षण-क्रिया सम्भव नहीं है तो कुछ हद तक अतिशयोक्ति न होगा।

(२) फल का ज्ञान (Knowledge of Result) :—सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने में फल का ज्ञान का भी महत्वपूर्ण स्थान है। फल का ज्ञान होने से व्यक्ति को प्रोत्साहन मिलता है और वह फल की प्राप्ति के लिये खूब जोर लगाकर कोई कार्य सीखने की चेष्टा करता है जिससे सीखने की क्रिया द्रुति गति से चलता है।

(३) विषय-सामग्री का स्वरूप (Nature of Subject-matter)—सीखने वाली विषय-सामग्री का स्वरूप भी सीखने की क्रिया को प्रभावित करता है। यदि विषय-सामग्री कठिन होती है तो शिक्षण को क्रिया में कठिनाई होती है, थार्नडाइक ने जो अपने प्रयोज्यों (Subjects) के लिये विषय-सामग्री रक्खी थी उसे सीखने में उन्हें अधिक प्रयास करने पड़ते थे जिससे वे उस विषय-सामग्री को देर में सीख पाते थे। अर्थहीन विषय-सामग्री (Meaningless Materials) की अपेक्षा अर्थयुक्त विषय-सामग्री सीखने में कठिनता होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सीखने की क्रिया पर सीखी जाने वाली विषय-सामग्री का बहुत प्रभाव पड़ता है।

(४) अभ्यास (Practice) :—सीखने की क्रिया पर अभ्यास का भी प्रभाव पड़ता है। अभ्यास के द्वारा अर्थात् किसी कार्य को बार-बार करने से कार्य करने की गति में क्रमशः प्रगति होती है। प्रत्येक प्रयत्न (Trial) के बाद अशुद्धियों (Errors) की संख्या कम होती जाती है, कार्य की गति में प्रगति होती जाती है और कार्य के समय में भी कमी होती जाती है। इस प्रकार सीखने की क्रिया अभ्यास (Practice) द्वारा प्रभावित होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) शिक्षा-विधि (Method of Teaching):—सीखने की क्रिया पर शिक्षाविधि का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। सामान्यतौर से अंश विधि (Part Method) की अपेक्षा पूर्ण विधि (Whole Method), निरन्तर विधि (Unspaced Method) की अपेक्षा सान्तर विधि (Spaced Method) और निष्क्रिय विधि (Passive Method) की अपेक्षा सक्रिय विधि (Active Method) सीखने की क्रिया में अधिक प्रभावशाली होती है। किन्तु सीखने की क्रिया में कौन विधि अधिक उपयुक्त होगी यह बहुत कुछ विषय-सामग्री पर भी आधारित होता है। इस प्रकार शिक्षण को प्रभावशाली बनाने में शिक्षण विधि का महत्वपूर्ण स्थान है।

(६) रुचि (Interest) :—सीखने की क्रिया पर व्यक्ति की रुचि का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। जिस चीज में व्यक्ति की रुचि होती है उस चीज को वह अधिक ध्यान लगाकर सीखता है परिणामस्वरूप वह उसे शीघ्र ही सीख लेता है। किन्तु इसके विपरीत अरुचिपूर्ण विषय-सामग्री सीखने में व्यक्ति अति कठिनाई अनुभव करता है। अतः स्पष्ट है कि सीखने को क्रिया की उन्नति बहुत कुछ रुचि पर आधारित होती है।

(७) बुद्धि (Intelligence) :—सीखने की क्रिया बहुत कुछ बुद्धि या बुद्धि स्तर पर भी आधारित होती है। जो व्यक्ति अधिक बुद्धिमान होते हैं वे किसी विषय को शीघ्र सीख लेते हैं। वह इसीलिये कि बुद्धिमान व्यक्ति विषय-सामग्री के तथ्यों एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों को शीघ्र समझ लेते हैं, फलस्वरूप उन्हें सीखने में आसानी होती है। इसके विपरीत कम बुद्धि के लोगों को कभी-कभी आसान विषय-सामग्री सीखने में समान कष्ट का अनुभव होता है।

(८) परिपक्वता (Maturation) :—सीखने की क्रिया पर परिपक्वता का बहुत प्रभाव पड़ता है। इसलिये एक छोटे बच्चे की अपेक्षा एक प्रौढ़ व्यक्ति विषय-सामग्री को शीघ्र और अच्छी तरह से सीख जाता है। अतः सीखने की क्रिया और परिपक्वता में घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस पर हम पहले ही प्रकाश डाल चुके हैं।

सीखने के नियम
(Laws of Learning)

[अ] थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित सीखने के नियम
(Laws of Learning Propounded by Thorndike)

(१) प्रभाव अथवा परिणाम का नियम (Law of Effect)—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थार्नडाइक का विचार है कि जिस प्रतिक्रिया के करने पर प्राणी पर अच्छा प्रभाव पड़ता है अर्थात् जिनसे उसको सन्तोष अथवा सुख प्राप्त होता है उसे वह सीख लेता है और जिसका उस पर बुरा प्रभाव पड़ता है अर्थात् जिनसे उसको असन्तोष अथवा दुख प्राप्त होता है उसे वह छोड़ देता है। इस नियम को प्रभाव अथवा परिणाम का नियम (Law of Effect) कहते हैं। इस नियम को हम पुरस्कार एवं दण्ड (Reward and Punishment) अथवा सुख एवं दुःख (Pleasure and Pain) का नियम भी कह सकते हैं। इस नियम का समर्थन करते हुए मार्गन एवं गिलीलैण्ड ने ठीक ही लिखा है, "वे कार्य जो हमें सन्तोष देते हैं पक्के हो जाते हैं एवं वे कार्य जिनके परिणाम हमें असन्तोष देते हैं इतनी सरलता से पक्के नहीं होते।"

"Those acts which give us satisfaction become fixed and those acts whose results give us annoyance are not so easily fixed."

—Morgan and Gilliland

(२) अभ्यास का नियम (Law of Exercise) :—थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित अभ्यास के नियम (Law of Exercise) का अर्थ यह है कि जिस प्रतिक्रिया को हम बार-बार करेंगे अर्थात् जिसकी पुनरावृत्ति करेंगे वह प्रतिक्रिया हम शीघ्र ही सीख लेते हैं एवं जिस प्रतिक्रिया की पुनरावृत्ति नहीं करेंगे उसे हम नहीं सीख सकते हैं। इस नियम को कार्यान्वित होते हुए हम प्रत्येक दिन अनुभव करते हैं। हम जिन कार्यों का अभ्यास करते रहते हैं वे कार्य हम केवल सीख ही नहीं जाते वरन् बहुत ही समय तक याद बने रहते हैं। परन्तु सीखने के लिए केवल अभ्यास की ही आवश्यकता नहीं है वरन् अभिरुचि एवं प्रेरणा का होना भी नितान्त आवश्यक है। अतः इस नियम को पूर्ण सत्य नहीं कहा जा सकता है।

अभ्यास के नियम के सम्बन्ध में डा० जे० एन० सिनहा ने भी ठीक ही लिखा है, "अन्य बातों के समान होते हुए जब कभी एक परिस्थिति एवं एक प्रतिक्रिया के बीच के परिवर्तनीय सम्बन्ध का अभ्यास किया जाता है तो वह अधिक दृढ़ हो जाता है। यह उपयोग (अभ्यास) का नियम कहलाता है।"

"Other things being equal whatever a modifiable connection between a situation and a respouse is exercised it becomes stronger. This is called the law of use."

—Dr. J. N. Sinha

(३) तत्परता का नियम (Law of Readiness) :—थार्नडाइक के अन्तिम नियम अर्थात् तत्परता का नियम (Law of Readiness)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का अभिप्राय यह है जिन कार्यों को सीखने के लिए हम तैयार रहते हैं वे कार्य तो सीख लेते हैं परन्तु जिन कार्यों को सीखने के लिए हम तैयार नहीं होते हैं वे कार्य कभी नहीं सीख पाते हैं । इस नियम के उदाहरण का हम दैनिक जीवन में सर्वदा अनुभव करते हैं बालक जिस पाठ के लिए तैयार रहता है वह पाठ उसे शीघ्र ही याद हो जाता है । इसी प्रकार अन्य कार्य भी अगर तैयार होकर किये जाते हैं तो वे शीघ्र ही धारण किये जाते हैं । वास्तव में तैयारी के अभाव में अभ्यास (Use) एवं प्रभाव का कोई महत्व नहीं है । इस नियम की दैहिक (Physiological) दृष्टिकोण से व्याख्या करते हुये डा० जे एन० सिन्हा ने लिखा है, "अतः किसी प्रतिक्रिया का सीखना बोध एवं कर्म स्नायु कोशाओं की तत्पारता पर निर्भर है ।"

"Therefore, learning a reaction depends upon the readiness of the sensory and motor neurons." —**Dr. J. N. Sinha.**

[ब] सीखने के कुछ अन्य नियम (Some other Laws of Learning)

(४) पुनरावृत्ति का नियम (Low of Frequency)—यह नियम थार्नडाईक द्वारा प्रतिपादित अभ्यास के नियम (Law of use) का ही स्वरूप है । इसके अनुसार जिन क्रियाओं की व्यक्ति पुनरावृत्ति करता है वे क्रियायें वह शीघ्र ही सीख जाता है जैसा कि गेट्स महोदय ने कहा, "अन्य बातों के समान होते हुये जितनी ही अधिक बार सम्बन्ध का अभ्यास होगा, सम्बन्ध उतना ही अधिक पुष्ट होगा ।"

"Other things being equal the more frequently a connection has been exercised the stronger the connection." —**Gates.**

(५) नवीनता का नियम (Law of Recency)—नवीनता के नियम के अनुसार अभ्यास जितना ही ताजा एवं नवीन होगा व्यक्ति उतना ही अधिक सीख लेगा । इस सम्बन्ध में गेट्स ने भी ठीक ही कहा है, "अन्य बातों के समान होने पर अभ्यास जितना ही नवीन होगा, परिस्थिति एवं प्रतिक्रिया के बीच सम्बन्ध उतना ही प्रबल होगा ।"

"Other things being equal, the more recent the exercise the stronger the connection between the situation and response."—**Gates**

(६) अनुपयोग का नियम (Law of Disuse)—अनुपयोग के सिद्धान्त के अनुसार यदि व्यक्ति सीखे हुये कार्य का अभ्यास नहीं करता है तो वह क्षीण हो जाता है। इसी कारण प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य निरर्थक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बातों को जिनका कि वह प्रयोग नहीं करता है शीघ्र ही भूल जाता है। परन्तु सार्थक बातों को बहुत समय तक किए रहता है। गेट्स के शब्दों में, "जब परिस्थिति एवं प्रतिक्रिया के बीच परिवर्तनीय सम्बन्ध का दीर्घकाल तक अभ्यास नहीं होता है तो सम्बन्ध निर्बल पड़ जाता है।

"When a modifiable connection between a situation and a rsponse is not exercised during a length of time, the strength of the connection is decreased." —Gates.

(७) प्राथमिकता का नियम (Law of Primacy)—इस नियम के अनुसार व्यक्ति जिन अनुभवों एवं कार्यों को सबसे पहिले करता है वे मन पर अपनी गहरी छाप छोड़ जाते हैं। यही कारण है कि विद्यार्थी स्कूल में प्रवेश होने के दिन का अनुभव बहुत दिनों तक नहीं भूलता है। पति-पत्नी के एक दूसरे से प्रथम दिन के मिलन में किए हुये अनुभव जीवन पर्यन्त नहीं भूलते हैं। इस प्रकार मन के शब्दों में, "अन्य बातों के समान होने पर किसी शृंखला के प्रारम्भिक अनुभव एवं प्रारम्भिक कार्य लाभ में रहते हैं।"

"Other things being equal first experience and first acts in a series tend to be favoured." —Munn.

मनुष्य एवं पशु के सीखने में अन्तर

(Difference between Human Learning and Animal Learning)

पशुओं की अपेक्षा मनुष्यों की सीखने की श्रेष्ठता-वुडवर्थ के अनुसार निम्न बातों पर अवलम्बित है—

(१) "मनुष्य एक अच्छा निरीक्षक है, वह पदार्थों, लोगों एवं परिस्थितियों की उन विशेषताओं का निरीक्षण करता है जो पशु के दायरे के बाहर होती हैं।"

"Man is a better observer, he observes many characteristics of things, people and situations that lie beyond the animal's scope." —Woodworth.

(२) "मनुष्य किसी समस्या को सुलझाने में अधिक विचार, व्यवस्था और संयम से काम लेता है।"

"Man uses more deliberation, management, and control in attacking." —Woodworth.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) "मनुष्य सीखने में नामों, संख्याओं एवं सामान्य भाषा का बहुत प्रमुख करता है।"

"Man makes use of names, numbers and in general of language in learning." —**Woodworth.**

(४) अंशतः भाषा की सहायता से मनुष्य समस्याओं के बारे में सोचने में तत्र भी समर्थ होता है जब सामग्री उसके सामने उपस्थित नहीं होती।"

"Partly by aid of language, man is able to think about problems even when the materials are not bofere him." —**Woodworth**

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में सीखने की क्रिया का तात्पर्य उस मानसिक प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति के स्वाभाविक व्यवहार या पूर्व अनुभव तथा व्यवहार में प्रगतिशील परिवर्तन या परिमार्जन होता है। यद्यपि सीखने एवं परिपक्वता दोनों में घनिष्ठ सम्बन्ध है किन्तु सीखने की प्रक्रिया सदैव चलती रहती है और परिपक्वता की प्रक्रिया एक निश्चित काल तक ही चलती है। **सीखने के प्रकार**—(१) क्रियात्मक शिक्षण तथा (२) विचारात्मक शिक्षण। **सीखने की क्रिया को सुदृढ़ बनाने वाले तत्व**—(१) प्रेरणा, (२) फल का ज्ञान, (३) विषय सामग्री का स्वरूप, (४) अभ्यास, (५) शिक्षण विधि, (६) रुचि, (७) बुद्धि तथा (८) परिपक्वता। **सीखने के नियम**—[अ] थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित नियम—(१) प्रभाव अथवा परिणाम का नियम, (२) अभ्यास का नियम तथा (३) तत्परता का नियम। [ब] सीखने के कुछ सामान्य नियम—(४) पुनरावृत्ति का नियम, (५) नवीनता का नियम, (६) अनुपयोग का सिद्धान्त तथा (७) प्राथमिकता का सिद्धान्त। जहाँ तक मनुष्य एवं पशु के सीखने में अन्तर का प्रश्न है वहाँ यही कहा जा सकता है कि बुद्धियुक्त प्राणी (**Rational Animal**) होने के नाते मनुष्य के सीखने की क्रिया पशुओं के सीखंते की क्रिया से श्रेष्ठ तथा व्यापक होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३०

सीखने के सिद्धान्त

[Theories of Learning]

प्रश्न संख्या—३०

सीखने के विभिन्न सिद्धान्तों (या विधियों) की विवेचना कीजिए।
Discuss the various theories (or Methods) of learning.

भूमिका (Introduction)

प्राणी की अभियोजनात्मक क्रियाओं में सीखने की क्रिया का अपना विशिष्ट स्थान है। सीखने की क्रिया के सम्बन्ध में हमारे सम्मुख यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है कि पशु तथा मनुष्य कैसे सीखते हैं और वे क्यों सीखते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने में कदाचित् मनोवैज्ञानिकों ने सबसे अधिक खोज की है। मनोवैज्ञानिकों ने सीखने की प्रणाली या क्रिया (Way of Learning) का अध्ययन करने के लिए पशुओं और मनुष्यों पर अनेक प्रयोग किये। मनोवैज्ञानिकों के वे विचार व मत जो ये बताते हैं कि पशु तथा मनुष्य कैसे सीखते हैं सीखने के सिद्धान्त (Theories of Learning) कहे जाते हैं। इस प्रश्न में हम इन सिद्धान्तों को अच्छी तरह समझने के लिए इनके अर्थ, इन पर किये हुये प्रयोग, इनकी आलोचना तथा इनका महत्व प्रस्तुत करेंगे।

सीखने के सिद्धान्त

(Theories of Learning)

सीखने के प्रमुख सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :—

(१) सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त (Theory of Conditioning।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त (Trial and Error Theory)।

(३) अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त (Insight Theory)।

(४) अनुकरण का सिद्धान्त (Imitation Theory)।

(५) निषेधात्मक समायोजन का सिद्धान्त (Negative Adaptation Theory)।

(६) निरीक्षण एवं तर्क का सिद्धान्त (Observation and Reasoning Theory)

सम्बन्ध प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त–पावलव, वाटसन, बेकटेरेव आदि
(Theory of Conditioning—Pavlov, Watson, Bechterev etc.)

[अ] सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के सिद्धान्त का प्रतिपादन
(Propounding the Theory of Conditioning)

सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के सिद्धान्त को प्रस्तुत करने का श्रेय पावलव (Pavlov), वाटसन (Watson), बेकटेरेव (Bechterev), रैजरन (Razran), क्रास्नोगोस्की (Krasnogoroski) आदि मनोवैज्ञानिकों को प्राप्त हुआ। इन सभी मनोवैज्ञानिकों का मत है कि सीखने की क्रिया सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा होती है। व्यक्ति विभिन्न प्रकार की वस्तुओं, परिस्थितियों और घटनाओं से डरना, रोना, प्रसन्न या अप्रसन्न होना आदि सम्बद्धता (Conditioning) के द्वारा ही सीखता है। शिशुओं का माता की आवाज सुनकर और दूध की बोतल देखकर खुश होना, बच्चों को चूहों, बिल्ली आदि को देखकर डरना, जानवरो को डाटने पर एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना और पुचकारने पर रुक जाना, व्यक्ति का समाज में आदर, निरादर, दण्ड पुरस्कार आदि से प्रसन्न या अप्रसन्न होना आदि बातों का सीखना सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा होता है। सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के द्वारा सीखने की क्रिया का वास्तविक अर्थ क्या है ?

[ब] सम्बन्ध प्रत्यावर्तन के सिद्धान्त का अर्थ
(Meaning of the Theory of Conditioning)

पावलव, वाट्सन आदि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार स्वाभाविक उत्तेजना (Natural or Unconditional Stimulus) को अस्वाभाविक उत्तेजना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Substitute or conditioned Stimulus) से सम्बंध स्थापित हो जाने और अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति स्वाभाविक उत्तेजना की तरह प्रतिक्रिया (Reaction) करने लगने के परिणामस्वरूप प्राणी के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन (Change) तथा परिमार्जन (modification) को सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा सीखना (Learning by Conditioning) कहते हैं। उदाहरण के लिए माता का दूध पीने से (स्वाभाविक उत्तेजना) बच्चे की भूख मिट जाती है और वह चुप हो जाता है। (स्वाभाविक प्रतिक्रिया) किन्तु प्रायः यह देखा जाता है कि जब बच्चा भूख से रो रहा होता है तब यदि उसकी माँ यह कह देती है कि मैं आ रही हूँ (अस्वाभाविक उत्तेजना) तो बच्चा शान्त हो जाता है (स्वाभाविक प्रतिक्रिया) यहाँ बच्चा माता के दूध पिलाने की क्रिया (स्वाभाविक उत्तेजना) का माता की आवाज (अस्वाभाविक उत्तेजना, के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। इसलिए वह केवल आवाज (अस्वाभाविक उत्तेजना) को सुनकर ही चुप हो जाता है (स्वाभाविक प्रतिक्रिया) इस प्रकार की क्रिया प्रतीक्षा (Expectation) के परिणाम-स्वरूप होती है। प्रतीक्षा के कारण बच्चा माता के दूध पिलाने के साथ उसका माता की आवाज के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेता है परिणामस्वरूप वह अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ स्वभाविक प्रतिक्रिया करने लगता है। सम्बन्ध प्रत्यावर्तन स्थापित होने की उक्त क्रिया को हम निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट कर सकते हैं।

सम्बन्ध प्रत्यावर्तन के पूर्व की स्थिति
(Before Conditioning)

अस्वाभाविक उत्तेजना (Conditioned Stimulus)	प्रतिक्रिया (Response)
माता की आवाज ————————	सुनना आदि
अस्वाभाविक उत्तेजना (Unconditioned Stimulus)	स्वाभाविक प्रतिक्रिया (Unconditioned Response)
माता का दूध पिलाना ————————	शान्त हो जाना

संबंध प्रत्यावर्तन स्थापित होने के बाद की स्थिति
(After Conditioning)

अस्वाभाविक उत्तेजना (Conditioned Stimulus)	प्रतिक्रिया (Response)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

माता की आवाज ———————————— स्वाभाविक प्रतिक्रिया (Unconditioned Response)

स्वाभाविक उत्तेजना (Unconditioned Stimulus)
माता का दूध पिलाना ————————→ शान्त हो जाना

पावलव, वाटसन, वेक्टेरेव, रैजरन इत्यादि मनोवैज्ञानिकों ने सम्बन्ध प्रत्यावर्तन द्वारा सीखने के सिद्धान्त की पुष्टि प्रयोगों के द्वारा की। नीचे हम उदाहरणस्वरूप पावलव के एक प्रयोग पर प्रकाश डालेंगे।

[स] पावलव का कुत्ता पर प्रयोग
(Experiment of Pavlov on a Dog)

यों तो मनोवैज्ञानिक एवं शारीरिक विज्ञानवेत्ता पावलव (Pavlov) ने सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन सीखने पर अनेक परीक्षण किये परन्तु हम यहाँ पर केवल उसका कुत्ते पर प्रसिद्ध प्रयोग प्रस्तुत करेंगे। उसके प्रयोग का चित्र निम्न है :—

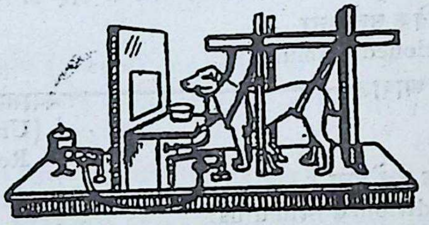

चित्र संख्या २६—पावलव के सम्बन्ध प्रत्यावर्तन शिक्षण के प्रयोग का दृश्य

यह तो हम भली-भाँति जानते हैं कि खाना को देखकर कुत्ते के मुँह से लार टपकना एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया है, पर पावलव ने प्रयोग में क्या देखा ? पावलव ने अपने प्रयोग में सर्वप्रथम कुत्ते को घंटी बजाने (अस्वाभाविक उत्तेजना) के बाद शीघ्र ही भोजन (स्वाभाविक उत्तेजना) दिया। फलस्वरूप उसके (कुत्ते) मुँह से घंटी बजाने पर लार टपकने लगी (स्वाभाविक प्रतिकिया)। तत्पश्चात् उसने यह कार्य प्रणाली कई बार की तो भी कुत्ते के मुँह से लार टपकने लगती। यहाँ पर घन्टी की आवाज का सम्बन्ध खाने से स्थापित हो गया। यों तो खाना स्वाभाविक उत्तेजना है एवं लार टपकना स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। परन्तु इस प्रयोग में स्वाभाविक प्रतिक्रिया (लार टपकना) का सम्बन्ध अस्वाभाविक उत्तेजना (घन्टी की आवाज)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से स्थापित हो गया है। इसे ही सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन-शिक्षण (Conditioning Learning) कहते हैं। ध्वनि सुनकर लार टपकना सीखना सम्बन्ध प्रत्यावर्तन (Conditioned reflex or response learning) है और इस प्रकार के सीखने को सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से देखना सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त (Theory of Conditioning) कहते हैं। पावलव के इस सम्बन्ध प्रत्यावर्तन के प्रयोग को निम्न प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—

सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के पहले की स्थिति
(Before Conditioning)

अस्वाभाविक उत्तेजना (Conditioned Stimulus) — प्रतिक्रिया (Response)

घन्टी की आवाज ——————→ कान का उत्तेजित होना

स्वाभाविक उत्तेजना (Unconditioned Stimulus) — स्वाभाविक प्रतिक्रिया (Unconditioned Response)

भोजन ——————→ लार टपकना

सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन स्थापित हो जाने के बाद की स्थिति

अस्वाभाविक उत्तेजना (Conditioned Stimulus) — प्रतिक्रिया (Response)

घन्टी की आवाज ——————→ स्वाभाविक प्रतिक्रिया (Unconditioned Response)

स्वाभाविक उत्तेजना (Unconditioned Stimulus)

भोजन ——————→ लार टपकना

[द] सम्बन्ध प्रत्यावर्तन के स्वरूप का विश्लेषण
(Analysis of the Nature of Conditioning Learning)

उपर्युक्त शब्दों में हमने सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के अर्थ और उस पर एक प्रयोग की चर्चा की थी। अब हम यह अच्छी तरह समझने के लिये कि सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन कैसे स्थापित होता है सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के स्वरूप पर विचार करेंगे। सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के स्वरूप का विश्लेषण करने पर हमारे समक्ष निम्नलिखित बातें आती हैं :—

(१) अस्वाभाविक उत्तेजना को स्वाभाविक उत्तेजना के साथ उपस्थित करना (Presentation of Conditioned Stimulus with Natural Stimulus) :—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के सीखने की क्रिया में सबसे पहले अस्वाभाविक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उत्तेजना (Conditioned Stimulus) के साथ स्वाभाविक उत्तेजना (Natural Stimulus) का उपस्थिति करना जरूरी है। इन दोनों प्रकार की उत्तेजनाओं को साथ-साथ बार-बार प्रस्तुत करने से प्रयोज्य (Subject) के मस्तिष्क में दोनों उत्तेजनाओं के प्रति साहचर्य (Association) स्थापित हो जाता है। इसलिए प्रयोज्य स्वाभाविक उत्तेजना की तरह अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति प्रतिक्रिया (Response) करने लगता है।

(२) दोनों प्रकार के उत्तेजनाओं के प्रस्तुत करने में समय का नजदीकी होना (Approximity of Time between the Presentation of the Conditioned or substitute Stimulus and Natural Stimulus)—अस्वाभाविक उत्तेजना को प्रस्तुत करने के उपरान्त तुरन्त ही स्वाभाविक उत्तेजना प्रस्तुत कर देना चाहिए। पावमल महोदय अपने प्रयोग में घन्टी बजने (अस्वाभाविक उत्तेजना) के बाद दो से लेकर सात सेकेण्ड के अन्तर में कुत्ते को भोजन (स्वाभाविक उत्तेजना) दे देते थे। ऐसा करने से दोनों उत्तेजनाओं में साहचर्य स्थापित हो जाता है। यदि दोनों उत्तेजनाओं के प्रस्तुत करने के बीच का समय अधिक हो गया तो दोनों में साहचर्य स्थापित न हो सकेगा जिस पर कि सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन की क्रिया आधारित है।

(३) पुनरावृत्ति (Repetition)—उपर्युक्त दोनों बातों के साथ-साथ अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ स्वाभाविक उत्तेजना का बार-बार प्रस्तुत करना अति आवश्यक है क्योंकि पुनरावत्ति से ही साहचर्य दृढ़ (Strong) हो जाता है और इस प्रकार सीखने की क्रिया पूर्णता को प्राप्त कर लेती है।

(४) आदत का निर्माण (Formation of Habit)—अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ-साथ स्वाभाविक उत्तेजना प्रस्तुत करने पर प्रयोज्य में जो दृढ़ साहचर्य स्थापित हो जाता है यही उसमें आदत का निर्माण है। इस आदत के परिणामस्वरूप ही प्रयोज्य अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति स्वाभाविक उत्तेजना की तरह प्रतिक्रिया करने लगता है।

(५) सम्बन्ध प्रत्यावर्तन का विच्छेद (Extinction or Elemination or Reconditioning of Conditioned Response)—यदि दो चार बार अस्वाभाविक उत्तेजना को प्रस्तुत करने पर स्वाभाविक उत्तेजना को प्रस्तुत नहीं किया जाता है तो प्रयोज्य अस्वभाविक उत्तेजना के प्रति स्वाभाविक उत्तेजना की तरह प्रक्रिया करने की आदत छोड़ देता है। पावलव के कुत्ते के सामने घन्टी बजती (अस्वाभाविक उत्तेजना) थी किन्तु भोजन (स्वाभाविक उत्ते-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जना) नहीं दिया जाता था तो उसकी घन्टी बजते ही लार वहाने की आदत समाप्त हो गई।

इस प्रकार सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के द्वारा सीखने में उपर्युक्त लिखित सभी अंगों का समावेश होता है जिनके अभाव में इस प्रकार की सीखने की क्रिया हो ही नहीं सकती है।

[य] सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा सीखने पर प्रभाव डालने वाले तत्व (Factors influencing Conditioning Learning)

सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के द्वारा सीखने की क्रिया कुछ तत्वों या कारणों पर आधारित होती है जिनसे प्रभावित होकर प्रयोज्य में सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा कार्य करने की आदत पड़ जाती है। ये तत्व या कारण निम्नलिखित हैं :—

(१) प्रेरणा (Motivation)—किसी पशु या व्यक्ति में सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा कार्य की आदत पड़ने में प्रेरणा का सवसे प्रमुख स्थान है क्योंकि प्राणी अपनी आवश्यकता से प्रेरित होकर अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। पावलव ने जिस कुत्ते पर प्रयोग किया वह भूखा था। घन्टी वजते ही उसे शीघ्र भोजन मिलता था जिससे वह अपनी भूख मिटा लेता था। इसलिए वह घन्टी की आवाज से ही लार लपकाने की क्रिया करने लगता था। यदि वह भूख की अवस्था में नहीं होता तो भोजन देकर और वाद में घन्टी की आवाज सुनकर लार टपकाने की क्रिया को न सीख पाता इस प्रकार सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के निर्माण में प्रेरणा का वहुत प्रभाव पड़ता है।

(२) आशा अथवा प्रतीक्षा (Expectation)—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा सीखने की क्रिया में प्रभाव डालने वाला दूसरा तत्व है :—आशा या प्रतीक्षा। पावलव के कुत्ते को यह आशा रहती थी कि घन्टी बजने (अस्वाभविक उत्तेजना) के बाद उसे भोजन मिलेगा। इसलिए वह घन्टी सुनते ही लार टपकाने की क्रिया प्रारम्भ कर देता था अर्थात् वह स्वाभाविक उत्तेजना (भोजन) के समान अस्वाभाविक उत्तेजना (घंटी) के प्रति स्वाभाविक व्यवहार करने लगता था। इस प्रकार आशा या प्रतीक्षा के कारण अस्वाभाविक उत्तेजना का सम्बन्ध स्वाभाविक उत्तेजना से हो जाता है अर्थात् सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन की स्थापना हो जाती है।

(३) समय की नजदीकता (Aprpoximity of Time)—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा सीखने की क्रिया पर प्रभाव डालने वाला तीसरा महत्वपूर्ण तत्व है-समय की नजदीकता। सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन की क्रिया के लिये अस्वाभाविक उत्तेजना के वाद २ सेकेण्ड से १० सेकेन्ड के अन्दर ही स्वाभाविक उत्तेजना सीखने वाले के सम्मुख प्रस्तुत कर देना चाहिए नहीं तो दोनों प्रकार की उत्तेजनाओं में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्बन्ध स्थापित न हो सकेगा ।

(४) **पुनरावृत्ति (Repetition)**:—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन पर प्रभाव डालने वाला चौथा तत्व है—पुनरावृत्ति । अस्विाभाविक उत्तेजना को स्वाभाविक उत्तेजना के साथ एक बार नहीं बल्कि बार-बार एक ही साथ (Simultaneously) उपस्थिति करने से प्रयोज्य अस्वाभाविक उत्तेजना का स्वाभाविक उत्तेजना के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है जिसके परिणामस्वरूप वह अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति स्वाभाविक उत्तेजना की तरह स्वाभाविक प्रतिक्रिया करना, सीख लेता है । इस प्रकार सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के लिए पुनरावृत्ति की अति आवश्यकता है ।

(५) **बाधक उत्तेजनाओं की अनुपस्थिति (Absence of Distracting stimulus)**—जिस समय सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के द्वारा सीखने की क्रिया चल रही हो उस समय यह आवश्यक है कि प्रयोगशाला में सभी प्रकार की बाधक उत्तेजनाओं की अनुपस्थिति रहे । इसीलिए पावलव ने अपनी प्रयोगशाला को ध्वनि-(Sound-Proof) बनवाया था । जिसके कारण प्रयोगशाला में घन्टी के अतिरिक्त किसी प्रकार की आवाज न सुनाई देती थी । यदि ऐसा नहीं किया जाता तो कदाचित् घन्टी की आवाज किसी अन्य अस्वाभाविक उत्तेजना से स्वाभाविक उत्तेजना का सम्बन्ध स्थापित हो जाता ।

[र] सम्बन्ध-प्रत्यावर्पन सिद्धान्त का आलोचना
(Criticism of the Theory of Conditioning Learning)

सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के सिद्धान्त में निम्नलिखित दो (Defects) पाये जाते हैं—

(१) **सीखने की क्रिया को यन्त्रवत् बना देना**—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन सिद्धान्त में सबसे पहला दोष यह है कि यह सिद्धान्त सीखने की क्रिया को यन्त्रवत् (Mechanical) बना देता है । अस्वाभाविक उत्तेजना (Unnatural Stimulus or conditioned Stimulus) को स्वाभाविक उत्तेजना (Natural Stimulus or Unconditioned Stimulus) के साथ बार-बार दोहराने से सम्बन्ध प्रत्यावर्तन स्थापित होने की क्रिया यन्त्रवत् होती है । किन्तु वास्तविकता यह है कि सीखने की क्रिया में सीखने वाले की बुद्धि, रुचि, आवश्यकता, मनोवृत्ति आदि का महत्वपूर्ण स्थान होता है । किन्तु यह सिद्धान्त इन सभी की उपेक्षा कर सीखने की क्रिया को यन्त्रवत् मानता है । इस सिद्धान्त के अनुसार जटिल क्रिया का सीखना "सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रतिक्रिया की केलल एक लम्बी श्रृंखलामात्र" (A long chain of Conditioned Reflexes) है। अत: स्पष्ट है कि सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त सीखने वाले प्राणी की उपेक्षा करता है।

(२) सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा सीखना अस्थाई होता है—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा प्राणी जो सीखने की क्रिया करता है वह अस्थाई होती है। सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन जितनी जल्द स्थापित किया जा सकता है उतनी ही जल्द उसे समाप्त भी किया जा सकता है। जब भी अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ स्वाभाविक उत्तेजना को उपस्थिति करना वन्द कर दिया जाता है, प्राणी या प्रयोज्य (Subject) अस्वाभाविक उत्तेजना के साथ स्वाभाविक उत्तेजना के समान प्रतिक्रिया करना वन्द देता है। किन्तु हमारे जीवन में ऐसी वहुत सी चीजें होती हैं जिन्हें हम जीवन भर भी नहीं भूल पाते। इस प्रकार यह सिद्धान्त केवल अस्थाई क्रियाओं के सीखने की व्याख्या करता है, किन्तु स्थाई क्रियाओं के सीखने की क्रियाओं की व्याख्या करना इस सिद्धान्त के आधार पर मुश्किल है।

(३) सभी प्रकार की सीखने की क्रियाओं की व्याख्या न कर पाना—सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त पशुओं एवं वच्चों की कुछ ही साधारण सीखने की क्रियाओं की व्याख्या कर पाता है। किन्तु जटिल प्रकार की क्रियाओं की व्याख्या करना इस सिद्धान्त की सीमा से परे है। विज्ञान, कविता, संगीत तथा कला सीखने, साइकिल व मोटर चलाना सीखने, टाइप करना, सीखने, कोई जटिलयन्त्र का संचलना करना सीखने इत्यादि क्रियाओं की व्याख्या सम्बन्ध-प्रत्यावतंन के सिद्धान्त के द्वारा नहीं की जा सकती है। भला संगीत व कविता सीखने में हम यह कहें कि अमुक उत्तेजना स्वाभाविक है, अमुक उत्तेजना अस्वाभाविक है जिसमें सम्वन्ध स्थापित होने से व्यवित स्वाभाविक उत्तेजना के समान अस्वाभाविक उत्तेजना के प्रति स्वाभाविक प्रतिक्रिया करता है, कितना मुश्किल है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सम्वन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त केवल साधारण क्रियाओं की व्याख्या कर पाता है किन्तु जटिल क्रियाओं की व्याख्या इस सिद्धान्त के आधार पर नहीं हो सकती। इस अपर्याप्तता पर प्रकाश डालते हुए शरीर-वैज्ञानिक फ्रैंज (Frang) ने लिखा है, **"अति साधारण शारीरिक क्रियाओं के अतिरिक्त और सभी सीखी गयी क्रियाओं के लिए यह एक असन्तोषजनक व्याख्या है और सरलतम सीखने की क्रियाओं की व्याख्या के लिए भी यह अत्यन्त अपर्याप्त है।"**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Except for the simplest physiological activities, it is unsatisfactory interpretation and the concept must be greatly stretched to explain even the simplest form of learning by man." **Frang.**

[र] सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के सिद्धान्त का महत्व
(Importance of Theory of Conditioning Learning)

सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन के उक्त दोषों के आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि सीखने की क्रिया में इसका कोई महत्व या उपयोगिता नहीं है। वास्तव में यह सिद्धान्त पशुओं और बच्चों के सीखने की अनेक क्रियाओं की समुचित व्याख्या करता है। यद यह कहा जाय कि व्यक्ति के सीखने की शुरूआत सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन द्वारा होती है तो अनुचित न होगा। इस सिद्धान्त को अनेक मनोवैज्ञानिकों ने **आदत निर्माण (Habit-Formation)** के सिद्धान्त के रूप में स्वीकार किया है। सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन की क्रिया द्वारा बुरी आदतों और अनावश्यक **भय (Phobia)** को दूर किया जा सकता है। **सामाजिक एवं असामान्य मनोविज्ञान (Social and Abnormal Psychology)** के अनेक विद्वानों ने इस सिद्धान्त के आधार पर अनेक विषयों की व्याख्या की है। सामाजिक मनोविज्ञान के विद्वानों का विचार है कि **समूह-निर्माण (Group-formation)** में सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का अति महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी प्रकार व्यत्ति के **असामान्य व्यवहार (Abnormal Behaviour)** की व्याख्या करने में इस सिद्धान्त ने बड़ी सहायता की है। वास्तव में प्रयोगात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत सम्बन्ध-प्रयात्वर्तन को एक **पद्धति (Technique)** के रूप में अति महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है और यह **पशु मनोविज्ञान (Animal Psychology)** के क्षेत्र में एक अति महत्वपूर्ण पद्धति समझी जाती है! इस प्रकार सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त दोषरहित न होने पर भी अति महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है।

प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त—थार्नडाइक, बेन मार्गन आदि
(Trial and Error Theory of Learning-Thorndike Bain, Morgen etc,)

[अ] प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त का प्रतिपादन
(Propounding the Trial and Error Theory of Learning)

प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त को प्रतिपादन करने का श्रेय **थार्नडाइक**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Thorndike), अलेक्जेंडर बेन (Alexander Bain), लॉयल मार्गन (Loyal Morgan) इत्यादि मनोवैज्ञानिकों को प्राप्त हुआ। अलेक्जेंडर बेन, प्रथ नेसर्वम प्रयत्न और भूल का प्रयोग अपने 'रचनात्मक बुद्धि के सिद्धान्त' (Theory of Constructive Intellect) में किया और उन्होंने बताया कि प्राणी सीखने में प्रयत्न और भूल का सहारा लेता है। मार्गन महोदय ने यह बतलाया कि पशु बुद्धि और तर्क द्वारा नहीं बल्कि प्रयत्न और भूल से सीखता है। मार्गन के विचारों से प्रभावित होकर थार्नडाइक ने १८९८ ई० में कुछ 'समस्या समाधान सम्बन्धी प्रयोगों' (Problem Solving Experiments) का निर्माण किया और चूहे बिल्ली आदि पशुओं पर प्रयोगशाला की नियन्त्रित परिस्थितियों (Controlled Conditions) में प्रयोग किये। प्रयोग के परिणामों के आधार पर उन्होंने प्रयत्न एवं भूल द्वारा सीखने का जोरदार शब्दों में समर्थन किया किन्तु उन्होंने अपने सिद्धान्त का नाम प्रयत्न और आकस्मिक सफलता (Trial and Accidental Success) रक्खा। बाद में यह सिद्धान्त थार्नडाइक के प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त (Thorndike's Theory of Trial and Error of Learning) के नाम से विख्यात हुआ।

[ब] प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त का अर्थ
(Meaning of Trial and Error-Theory of Learning)

थार्नडाइक महोदय का कथन है कि जब किसी पशु के समक्ष नवीन परिस्थिति उपत्न्न होती है यो उससे अभियोजन करने के लिए वह स्वाभाविक प्रतिक्रिया (Natural Response) करने लगता है। ये स्वाभाविक प्रतिक्रियायें प्रायः गलत (Error) होती हैं, किन्तु प्रतिक्रियायें करते-करते किसी प्रतिक्रिया में अचानक (Accidently) सफलता मिल जाती है। सफलता मिलने पर पशु सफली भूत प्रयास (Succesful Attempt) की पुनरावृत्ति करने लगता है जिसके परिणामस्वरूप क्रमशः गलतियां दूर होती जाती हैं (Gradually Errors Are Removed) और वह कम समय में उस कार्य को करना सीख जाता है। इस प्रकार की सीखने की क्रिया को ही प्रयत्न और भूल द्वारा सीखना (Learning by Trial and Error) कहते हैं। "दूसरे शब्दों में जब कोई प्राणी या पशु कोई नवीन परिस्थिति से समायोजन करने के लिए अनेक स्वाभाविक प्रतिक्रियायें, जो प्रायः गलत (Error) होती हैं, करते-करते अचानक सफल प्रतिक्रियां का प्रयास (Trial) कर जाता है और जिनकी पुनरावृत्ति करने में क्रमशः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गलतियाँ दूर होती जाती हैं और अन्त में वह उपयुक्त समय में कार्य करना सीख जाता है तो इस प्रकार की सीखने की क्रिया को प्रयत्न और भूल द्वारा सीखना कहते हैं।" स्पष्ट है कि इस प्रकार के सीखने की क्रिया में पहले पशु गलतियाँ (Errors) करता है और बार-बार के प्रयत्नों से वह सही कार्य करना सीख जाता है। इसीलिए इस सिद्धान्त को प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त (Trial and Error Theory of Learning) कहते हैं। अपने सिद्धान्त के प्रतिपादन तथा पुष्टि करने में थार्नडाइक ने चूहों, विल्लियों आदि पर अनेक प्रयोग किये। आगे उदाहरण के लिए हम एक प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं।

[स] उलझन बक्स की समस्या पर प्रयोग
(Experiment on Puzzle-box Problem

इस सिद्धान्त के प्रवर्तक थार्नडाइक (Thorndike) महोदय बिल्ली पर एक प्रयोग करते हैं। सर्व प्रथम वह एक उलझन-बक्स (puzzle Box) निर्मित करते हैं और उसके अन्दर एक भूखी बिल्ली को बन्द कर देते हैं। इस उलझन-बक्स का दरवाजा इसके अन्दर लगे हुए बटन को दबाने से खुल जाता है। उलझन-बक्स के बाहर एक मछली का टुकड़ा रख दिया जाता है। इस उलझन-बक्स का, जो एक पिंजड़े की भाँति बनी हैं, चित्र नीचे दिया जा रहा है। जैसे ही प्रयोग प्रारम्भ होता है भूखी बिल्ली वाहर रक्खे हुए मछली के टुकड़े को प्राप्त करने के लिए कभी

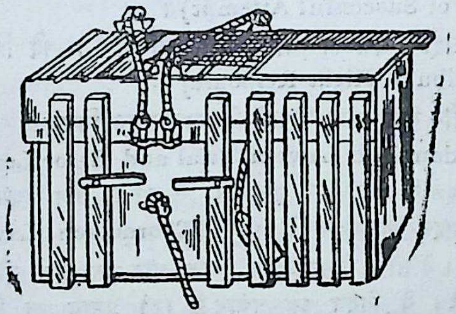

चित्र संख्या २७—थार्नडाइक का उलझन-बक्स

यहाँ-वहाँ उछलती है और कभी उलझन-बक्स का दरवाजा खोलने का प्रयत्न करती है। इस प्रकार वह अनेक बार प्रयत्न (Trial) करती है अनेक बार भूल (Error) करती है। अकस्मात बिल्ली का पंजा बटन के ऊपर पड़ जाता है, फलस्वरूप बटन में दबाव पड़ने के कारण उलझन-बाक्स का दरवाजा खुल जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बिल्ली शीघ्र ही बाहर आकर मछली के टुकड़े को खाने लगती है। इस प्रकार की कार्य प्रणाली बहुत दिन चलती रहती है। एक बार प्रयोग करने के बाद क्रमशः जब दूसरा प्रयोग किया जाता है तो बिल्ली पहले के प्रयोग से कम प्रयत्न करने पर भी दरवाजा खोल देती है और अन्त में वह एक ही प्रयत्न से दरवाजा खोलना सीख जाती है।

[ब] प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने की क्रिया का विश्लेषण

(Analysis of the Trial and Error Learning Process)

प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने की क्रिया का विश्लेषण करने पर थार्नडाइक ने उसमें निम्नलिखित विशेषताएँ बतलाई हैं—

(१) नवीन परिस्थिति या समस्या का उपस्थिति होना (Presentation of a New Situation or Problem)।

(२) नवीन परिस्थिति के साथ अभियोजन के लिये स्वाभाविक प्रतिक्रियाएँ करना (Natural Responses to Adjust with new Situation)।

(३) अचानक सफलता प्राप्त होना (Accidently the Subject gets Success)।

(४) क्रमशः गलतियाँ कम होना और सफलीभूत प्रयासों की पुनरावृत्ति करना (Gradual Elimination of wrong Responses and Repetition of Successful Attempt)।

(५) सही प्रयास का स्थायी होना या सीखने की क्रिया का स्थायी होना (Fixation of Right Response)

[य] प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने के आधारभूत नियम

(Fundamental Laws of Trial and Error Learning)

थार्नडाइक ने प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने के तीन नियम प्रतिपादित किये जिन्हें हम थार्नडाइक के सीखने के नियम (Thorndike's Laws of Learning), कहते हैं। ये तीनों नियम प्रत्येक प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने की क्रिया में निहित रहते हैं। ये नियम इस प्रकार हैं (१) प्रभाव का नियम (Law of Effect), (२) अभ्यास का नियम (Law of Exercise) तथा (३) तत्परता का नियम (Law of Readiness) ‡ अब हम देखेंगे कि किस प्रकार थार्नडाइक द्वारा उलझन-बक्स की समस्या पर किए गये प्रयोग में अर्थात् प्रयत्न और

---

‡ थार्नडाइक के नियमों पर हम पिछले प्रश्न पर प्रकाश डाल चुके हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भूल द्वारा सीखने में ये तीनों नियम निहित हैं—

(१) प्रभाव का नियम (Law of Effect):—इस नियम के अनुसार जिस प्रतिक्रिया में प्राणी को सन्तुष्टि या सफलता प्राप्त होती है उस प्रतिक्रिया की वह पुनरावृत्ति करता है और जिससे उसे असफलता मिलती हैं उसे वह छोड़ देता है। उलझन-बक्स की समस्या में हमने देखा था कि किस प्रकार बिल्ली का पंजा उलझन-बक्स के बटन पर अचानक पड़ जाने से उसे अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाती है। फलस्वरूप वह उस प्रतिक्रिया को दोहराने लगी और अन्य गलत प्रतिक्रियायें, जिनमें उसे सफलता नहीं मिलती थी उनको वह छोड़तीं चली गई।

(२) अभ्यास का नियम (Law of Exercise):—इस नियम के अनुसार सीखने की क्रिया अभ्यास के द्वारा होती है। बिल्ली एक ही बार में उलझन-बक्स खोलना नहीं सीख पाई बल्कि कई बार के अभ्यास के बाद वह सीख सकी। अतः जिस प्रयास में व्यक्ति को सफलता मिलती है उस प्रयास को कई बार पुनरावृत्ति करने से सीखने की क्रिया होती है न कि एक दो बार।

(३) तत्परता का नियम (Law of Readiness) :—थार्नडाइक के इस नियम के अनुसार सीखने की क्रिया तभी हो सकती है जब व्यक्ति सीखने के लिए तत्पर (Ready) हो। यदि वह सीखने के लिए तत्पर नहीं होता है तो सीखने की क्रिया का प्रारम्भ नहीं हो सकता है। उलझन-बक्स की समस्या में बिल्ली भूखी थी इसलिए वह उलझल-बक्स से बाहर निकलकर मछली खाने के लिए अग्रसर होती है। इसीलिए वह उलझन-बक्स को खोलना सीख गई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रयत्न एवं भूल का सिद्धान्त सीखने की क्रिया में प्रभाव, अभ्यास तथा तत्परता पर जोर देता है।

[र] प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त की अलोचना

(Criticism of the Trial and Error Theory of Learning)

थार्नडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रत्यन और भूल के सिद्धांत के बिरूद्ध निम्नलिखित आपत्तियाँ उठाई जा सकती हैं।

(१) सीखने की क्रिया में बुद्धि अथवा सूझ के स्थान की उपेक्षा:—प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त में सबसे बड़ा दोष यह है कि यह सिद्धान्त सीखने की क्रियायें बुद्धि (Intelligence) या सूझ (Insight or understanding) को स्थान नहीं देता है और वह यह बताता है कि सीखने की क्रिया अन्धा-धुन्ध क्रियाओं (Blind Efforts) के द्वारा ही हो जाती है। किन्तु यह विचार बिलकुल गलत है। वास्तविकता यह है कि सीखने वाली कोई भी क्रिया क्यों न हो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सबमें सूझ या परिस्थिति को समझने (Insight or understanding of Situation) की झलक मिलती है। उलझन-बक्स की समस्या के समाधान में बिल्ली पहले छड़ को दांत से काटती थी किन्तु जब उसने ऐसा करने में अपने आप को असमर्थ समझा तो उसने पंजे से छड़ को तोड़ना प्रारम्भ कर दिया। उसने इन दोनों क्रियाओं में सूझ से काम लिया। इसी प्रकार प्रयत्न और भूल द्वारा सीखने के अन्य उदाहरणों में सूझ को कार्य (Role) समझा जा सकता है। अतः प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त में सूझ का स्थान न देना सिद्धान्त को दोषपूर्ण बना देता है।

(२) सीखने की क्रिया को अभ्यास तक सीमित कर देना :—यह सिद्धान्त सीखने की क्रिया में अभ्यास को ही एक मात्र आधार मानता है। यह सीखने वाले की रुचि, आवश्यकता, मनोवृत्ति इत्यादि की उपेक्षा करता है। किन्तु वास्तविक तथ्य यह है कि सीखने की क्रिया में व्यक्ति की रुचि, आवश्यकता, मनोवृत्ति आदि बहुत कार्य करती हैं। इसीलिए जिस कार्य को सीखने के लिए बिना रुचि के किसी व्यक्ति को बाध्य किया जाता है वह उसे सीख नहीं पाता है। इस प्रकार सीखने की क्रिया की केवल अभ्यास के आधार पर व्याख्या नहीं की जा सकती है।

(३) सभी प्रकार की सीखने की क्रियाओं की व्याख्या करने में असमर्थता—प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त, जिसके अनुसार प्रत्येक सीखने की क्रिया अभ्यास पर आधारित होती है सभी प्रकार की सीखने की क्रियाओं की व्याख्या नहीं करता है। ऐसी बहुत सी क्रियायें होती है जो एक ही प्रयास में सीख ली जाती है। कोई व्यक्ति किसी नवीन घर की एक ही प्रयास में सीढ़ियों पर चढ़ने के सीखने की क्रिया सीख जाता है। इसके लिए उसे अभ्यास की जरूरत नहीं पड़ती हैं। बहुत से संवेगात्मक अनुभवों (Emotional Experiences) एक ही बार में सीख लिए जाते हैं। एक ही बार में व्यक्ति किसी से प्रेम, घृणा या अविश्वास करना सीख जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त सभी प्रकार की सीखने की क्रियाओं की व्याख्या करने में असमर्थ है।

(४) पशु या मानव क्यों सीखता है यह सिद्धान्त यह नहीं बताता—प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त केवल यह वर्णन करता है कि पशु या मानव किस प्रकार सीखता है। किन्तु यह सिद्धान्त यह नहीं बताता कि वह क्यों सीखता है। दूसरे शब्दों में यह सिद्धान्त सीखने की क्रिया का केवल वर्णन मात्र करता है, किन्तु यह सीखने की क्रिया की व्याख्या नहीं करता है। अतः यह सिद्धान्त वर्णनात्मक (Descriptive) है न कि व्याख्यात्मक (Explanatory)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ल] प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त का महत्व
(Importance of Trial and Error Theory of Learning)

प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त में उपर्युक्त दोषों के होते हुए भी यह सिद्धान्त अति महत्वपूर्ण है। यह निर्विवाद सत्य है कि सीखने की क्रिया में अभ्यास (Exercise) का पर्याप्त हाथ रहता है। पशुओं और बालकों के सीखने की क्रिया विशेष रूप से अभ्यास पर ही आधारित होती है। इस प्रकार सीखने की क्रिया में प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त का बहुत महत्व है।

अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त—कोहलर, कौफ्का आदि
(Insight Theory--Kohaler, Koffka etc.)

[अ] अन्तर्दृष्टि या सूझ के सिद्धान्त का प्रतिपादन
(Propounding Insight Theory of Learning)

अन्तर्दृष्टि या सूझ के सिद्धान्त का प्रतिपादन कोहलर (Kohler), कोफ्का (Koffka), वर्दीमर (Wertheimer), लिण्डले (Lindly), अलपर्ट (Alpart) आदि गोस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों (Gestalt Psychologists) ने किया। इन मनोवैज्ञानिकों में से इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करने में कोहलर का नाम उल्लेखनीय है। इन मनोवैज्ञानिकों का कथन है कि प्राणी अपनी सूझ, परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण तथा प्रेरणा (Understanding, Perception of situation and Motivation) के कारण सीखता है। उनका कहना है कि सीखना चाहे क्रियात्मक (Motor learning) हो चाहे विचारात्मक (Ideational learning) सबमें सूझ की आवश्यकता होती है। साइकिल व मोटर चलाना, टाइप करना, मशीन चलाना, संगीत, चित्रकारी, साहित्य-रचना, डाक्टरी, इन्जीनियरिंग-आदि समस्त क्रियाओं का सीखना अन्तर्दृष्टि या सूझ पर आधारित होता है।

[अ] अन्तदृष्टि या सूझ के सिद्धान्त का अर्थ
(Meaning of the Insight Theory)

अन्तर्दृष्टि या सूझ के सिद्धान्त के प्रमुख प्रवर्तक कोहलर के अनेक प्रयोगों के आधार पर यह देखा कि पशु अथवा मनुष्य प्रयत्न या भूल (Trial and Error) द्वारा नहीं सीखता है, बल्कि वह अन्तर्दृष्टि या सूझ (insight) से सीखता है। जब प्राणी या व्यक्ति के सामने कोई नवीन परिस्थिति आती है तो वह परिस्थिति का अवलोकन (Perception of Situation) करता है, वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिस्थिति के स्वरूप (Nature of Task) को अच्छी तरह समझने की कोशिश करता है, और वह उद्देश्य की पूर्ति को सामने रखकर व्यवहार करता है। उसकी सीखने की क्रिया तब तक चालू बनी रहती है जब तक कि उसकी पूर्ति न कर लें। इस प्रकार से सीखने की क्रिया को **अन्तदृष्टि या सूझ द्वारा सीखना (Learning by Insight)** कहते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि अन्तर्दृष्टि द्वारा सीखने में प्राणी का **व्यवहार ध्येय-निर्देशित (Goal Directed)** होता है न कि वह **अन्धा-धुन्ध व्यवहार (Blind Effort)** करता है उक्त शब्दों के आधार पर हम कह सकते हैं कि "**जब किसी नवीन परिस्थिति या समस्या के उत्पन्न होने पर प्राणी या व्यक्ति उस परिस्थिति या समस्या का अवलोकन कर और उसके स्वरूप को समझकर अपने पूर्व निर्धारित उद्देश्य की पूर्ति के लिए समझ सोच कर सीखने की क्रिया तब तक जारी रखता है जब तक कि उसकी पूर्ति न करले तो इस प्रकार के सीखने की क्रिया को अन्यर्दृष्टि या सूझ द्वारा सीखना कहते हैं।**" चूंकि इस प्रकार के सीखने की क्रिया अर्न्तदृष्टि या सूझ (Insight) पर आधारित रहती है इसीलिए इस सिद्धान्त को अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त (Insight Theory) कहते हैं। कोहलर, कोफ्का, वर्दीमर, डंकर, अलपर्ट, लिएडले आदि विद्वानों ने अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिये अनेक प्रयोग भी किये हैं। आगे हम कोहलर द्वारा चिम्पांजी या वनमानुष पर किया हुआ प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं।

[स] कोहलर का प्रयोग (Experiment of Kohler)

कोहलर महोदय ने अर्न्तदृष्टि या सूझ के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने के लिए बनमानुषों पर बहुत से प्रयोग किये जिनमें से चिम्पांजी (Chimpanzee) नामक बनमानुष पर किया हुआ प्रयोग यहाँ पर प्रस्तुत किया जा रहा है जिसका चित्र हम अगले पृष्ठ पर दे रहे हैं। भूखे चिम्पांजी को एक ऐसे कमरे में बन्द कर दिया जाता है जिसकी छत पर पका हुआ केला लटका होता है और फर्श पर तीन-चार खाली सन्दूक रक्खे होते हैं। जैसे ही चिम्पांजी लटका हुआ केला देखता है वैसे ही वह उसको पकड़ने का दो-चार बार प्रयास करता है, परन्तु ऊँचाई अधिक होने के कारण वह केला पाने में असफल रहता है। कुछ देर बाद वह फर्श पर पड़े हुए खाली सन्दूकों को अच्छी तरह देखता है, इसके साथ-साथ वह परिस्थिति के विभिन्न अंगों में सम्बन्ध स्थापित करता है। फलस्वरूप वह वास्तविक परिस्थिति समझ जाता है और समस्त सन्दूकों को क्रम से नीचे-ऊपर रखकर उन पर चढ़ जाता है और छत पर लटका हुआ केला प्राप्त कर लेता है। यह उसकी अर्न्तदृष्टि या सूझ ही थी जिसके द्वारा वह केला प्राप्त करना सीख गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चित्र संख्या २८—कोहलर के अन्तर्दृष्टि या सूझ से सीखने के प्रयोग का दृश्य

[स] अन्तर्दृष्टि या सूझ द्वारा सीखने की क्रिया का विश्लेषण

(Analysis of the Learning by Insight)

यर्कस (**Yerks**) महोदय ने सूझ द्वारा सीखने की क्रिया का विश्लेषण कर उसमें निम्नलिखित विशेषतायें बतलाई हैं :—

(१) समस्यात्मक परिस्थिति की छानबीन करना—सबसे पहले व्यक्ति उपस्थिति परिस्थिति या समस्या के समस्त पहलुओं का निरीक्षण करता है और उनके पारस्परिक सम्बन्ध को समझने का प्रयत्न करता है।

(२) हिचकिचाहट, विश्राम एवं एकाग्रचित होकर ध्यान देना—द्वितीय स्तर पर व्यक्ति हिचकिचाहट, करता है, विश्राम लेता है एवं चित को एकाग्र कर परिस्थिति या समस्या पर ध्यान देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) उपर्युक्त प्रतिक्रिया करने की चेष्टा करना—इस स्तर में व्यक्ति परिस्थिति के प्रति उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की चेष्ट करता है ।

(४) पहली प्रतिक्रिया उपयुक्त सिद्ध न होने पर दूसरी प्रतिक्रियायें करना—यदि व्यक्ति की पहली प्रतिक्रिया उपयुक्त सिद्ध नहीं होती है तो वह दूसरे प्रकार की प्रतिक्रियायें करता है ।

(५) लक्ष्य की ओर निरन्तर ध्यान देना जिससे उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की प्रेरण मिलना—सूझ से सीखने में व्यक्ति अपने लक्ष्य पर निरन्तर ध्यान रखता है । ऐसा करने से उसे उपयुक्त प्रतिक्रिया करने की प्रेरणा मिलती है ।

(६) एकाएक उपयुक्त प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करना—उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए प्रयास करते-करते एकाएक व्यक्ति को उपयुक्त प्रतिक्रिया सूझ पड़ती है जिसकी वह अभिव्यक्ति करता है ।

(७) उपयुक्त प्रतिक्रिया की पुनरावृत्ति करना—एक बार जब व्यक्ति उपयुक्त प्रतिक्रिया कर लेता है तो वह उसकी बार-बार पुनरावृत्ति करता है ।

(८) समस्या या परिस्थिति के आवश्यक पहलुओं पर ध्यान देने एवं अनावश्यक पहलुओं को त्याग देने की योग्यता आना—सीखने के अन्तिम स्तर पर व्यक्ति में ऐसी योग्यता आ जाती है कि वह समस्या अथवा परिस्थिति के आवश्यक पहलुओं पर ध्यान देता है और अनावश्यक पहलुओं को छोड़ देता है।

[य] अन्तर्दृष्टि या सूझ के सिद्धान्त की आलोचना
(Criticism of the Insight Theory)

यद्यपि अन्तर्दृष्टि या सूझ द्वारा सीखने का सिद्धान्त मनुष्य के सीखने की क्रिया की व्याख्या अन्य सिद्धान्तों की अपेक्षा अधिक युक्ति सङ्गत तरीके से करता है किन्तु यह सिद्धान्त भी दोषरहित नहीं है। यदि हम सीखने की क्रिया का सूक्ष्म निरीक्षण करें तो हमें इस सिद्धान्त में निम्नलिखित दोष प्राप्त होते हैं—

(१) अभ्यास के प्रभाव की उपेक्षा—सूक्ष्म-सिद्धान्त के विरुद्ध सबसे पहली आपत्ति यह है यह सीखने की क्रिया में अभ्यास (**Exercise**) को स्थान नहीं देता है । वास्तव में सीखने की क्रिया पर अभ्यास का महत्वपूर्ण स्थान होता है । यद्यपि परिस्थिति के विभिन्न अङ्गों को समझना सूझ द्वारा हीं सम्भव होता है किन्तु किसी भी क्रिया में निपुणता (Efficiency) प्राप्त करने के लिए अभ्यास की अति आवश्यकता होती है । मोटर चलाने में स्टेरिंग, गेर, ऐक्सीलेटर, क्लिप, ब्रेक इत्यादि के सम्बन्ध को समझने पर भी मोटर चलाने में अभ्यास होने के लिए अभ्यास करना पड़ता है। इस प्रकार सीखने की क्रिया में अभ्यास की उपेक्षा नहीं की जा सकती है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) सूझ की क्रिया को अचानक मानना:—सूझ के सिद्धान्त पर दूसरी आपत्ति की जाती है कि यह सूझ की क्रिया को अचानक (Sudden) मानता है। किन्तु सीखने की क्रिया का सूक्ष्म-अवलोकन करने पर यह बात गलत लगती है। अलपर्ट (Alpert) तथा डंकर (Dunker) ने यह स्वयं कहा है कि सूझ की क्रिया अचानक न होकर क्रमिक (Gradual) होती है। जैसे-जैसे व्यक्ति के प्रयत्न बढ़ते जाते हैं वैसे-वैसे उसमें परिस्थिति के विभिन्न अङ्गों के सम्बन्धों को समझने की क्रिया का विकास होता जाता है। इस प्रकार सीखने की क्रिया में व्यक्ति गलतियों से लाभ उठाता है।

[र] अन्तर्दृष्टि या सूझ के सिद्धान्त का महत्व (Importance of Insight Theory)

सूझ के सिद्धान्त पर उपयुक्त आपत्तियों के होते हुए यह स्वीकार करना ही होगा कि भले ही यह पशुओं के सीखने की क्रिया की समुचित व्याख्या न करें किन्तु मनुष्य के सीखने की क्रिया सूझ द्वारा ही होती है। मनुष्य किसी नवीन परिस्थिति से समायोजन करने या किसी समस्या को सुलझाने में सूझ से काम लेता है। सीखने की क्रिया में वह अपनी बुद्धि, पूर्व ज्ञान, रुचि, मनोवृत्ति इत्यादि मानसिक प्रवृत्तियों का प्रयोग करता है। इंजीनियरिंग, विज्ञान, कला इत्यादि ऐसे विषय हैं जो अभ्यास द्वारा नहीं सीखे जा सकते बल्कि इनको सीखने के लिए अन्तर्दृष्टि या सूझ की अति आवश्यकता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि मनुष्य के सीखने की क्रिया में सूझ का महत्वपूर्ण स्थान है।

अनुकरण का सिद्धान्त
(Imitation-Theory)

[ब] अनुकरण के सिद्धान्त का अर्थ (Meaning of Imitation)

अनुकरण की परिभाषा करते हुए मैकडूगल ने लिखा है "अनुकरण केवल एक मनुष्य द्वारा उन क्रियाओं को, जो दूसरों के शरीर सम्बन्धी व्यवहार से सम्बंधित हैं, की नकल करने में लागू होता है।" (Imitation is applicable only to copying by one individual the actions, the Bodily movement of others.) दूसरे शब्दो में जैसा दूसरे लोग करते हों वैसा करने लगना अनुकरण है। जब व्यक्ति दूसरे का अनुकरण करके सीखता है तो उसे अनुकरण-सिद्धान्त (Imitation Theory) कहते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] अनुकरण-सिद्धान्त का महत्व

(Importance of Imitation-Theory)

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक परीक्षणों द्वारा यह निष्कर्ष निकाला कि पशु एवं बालक अनुकरण से ही सीखते हैं। इसीलिये यदि बालकों को अच्छा वातावरण रखा जाय तो वे अच्छी बातों को अनुकरण द्वारा सीख जायेंगे। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक बोलटन ने तो यहाँ तक लिखा है—

"Only the imitative individual is capable of learning and the most imitative is the most educatble." —Bolton.

निषेधात्मक समायोजन-सिद्धान्त

(Negative Adaptation-Theory)

[अ] निषेधात्मक समायोजन सिद्धान्त का अर्थ

(Meaning of Negative Adaptation-Theory)

निषेधात्मक समायोजन के अनुसार जब प्राणी उत्तेजकों के प्रति अभ्यस्त हो जाता है तो वह व्यर्थ की प्रतिक्रियाओं का निराकरण कर देता है और जो प्रतिक्रियायें उसके लिये लाभप्रद होती हैं वह उन्हीं को करता है। इस प्रकार से सीखने के सम्बन्ध में श्री पेखिम एवं श्रीमती पेखिम ने एक मकड़ी का परीक्षण किया। उन्होंने अपने परीक्षण में यह देखा कि जब ध्वनिकारक काँटा बजाया जाता है तो मकड़ी भय के कारण अपने जाल में गिर पड़ती है परन्तु जब इसी प्रकार की क्रिया बार-बार की जाती है तो कुछ समय बाद मकड़ी जाल से नहीं गिरती है क्योंकि वह यह सीख जाती है कि काँटे से उत्पन्न ध्वनि से किसी प्रकार का भय नहीं है। इस प्रकार मकड़ी ध्वनि से निषेधात्मक समायोजन कर लेती है।

[ब] निषेधात्माक समायोजन सिद्धान्त का महत्व

(Importance of Negative Adaptation Theory)

प्रायः पालतू जानवर निषेधात्मक समायोजन से ही सीखते हैं। हम नित्यप्रति देखते हैं कि नगर के बैल, मोटरों एवं रेलगाड़ियों की ध्वनि से निषेधात्मक समायोजन कर लेते हैं। दूसरे शब्दों में वे मोटरों एवं रेलगाड़ियों से डरना बन्द कर देते हैं। इस प्रकार पशुओं के सीखने में निषेधात्मक समायोजन का बहुत ही महत्व है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

निरीक्षण एवं तर्क-सिद्धान्त

(Observation and Reasoning-Theory)

[अ] निरीक्षण एवं तर्क-सिद्धान्त का अर्थ

(Meaning of Observation and Reasoning Theory)

जब कोई व्यक्ति किसी चीज का निरीक्षण करके, तर्क करके सोच समझ करके बुद्धिमतापूर्वक सीखता है तो इस सिद्धांत को निरीक्षण एवं तर्क सिद्धांत (Observation and Reasoning-Theory) कहते हैं। इस विधि में व्यक्ति न कोई कार्य सहसा सम्पादित करता है और न प्रयत्न एवं भूल विधि का आश्रय लेता है बल्कि उच्चकोटि की विचारात्मक प्रक्रिया अर्थात् तर्क-वितर्क द्वारा कोई कार्य करता है। मेलोन महोदय ने इस सिद्धान्त अथवा विधि को युक्ति व बौद्धिक विधि (Rational or Intelligent Method) के नाम से सम्बोधित किया है।

[ब] निरीक्षण एवं तर्क-सिद्धान्त का महत्व

(Importance of Observation and Reasoning Theory)

निरीक्षण एवं तर्क सिद्धान्त ही एक ऐसा सिद्धान्त है जिसके द्वारा केवल मनुष्य ही लाभान्वित होता है। पशु इस प्रकार से सीखने से वंचित रहते हैं। इस दृष्टिकोण से इसे उच्चकोटि का सिद्धान्त कहा जाय तो अनुचित न होगा। ड्रमण्ड एवं मैलन का विचार है, "जैसे बच्चे विकसित होते हैं हम उन्हें प्रयत्न एवं भूल की विधि (सिद्धांत) से बौद्धिक विधि की ओर प्रगति करते देखते हैं।"

"As children grow, we see them from the Trial and Error method to Rational method."

—**Drumond and Mallone.**

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने सीखने या शिक्षण के विभिन्न सिद्धान्तों या विधियों यथा—(१) सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन-सिद्धान्त, (२) प्रयत्न और भूल-सिद्धान्त, (३) अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त, (४) अनुकरण का सिद्धान्त, (५) निषेधात्मक समायोजन का सिद्धान्त तथा (६) निरीक्षण एवं तर्क के सिद्धान्त पर प्रकाश डाला। इन सिद्धान्तों में कोई भी ऐसा सिद्धान्त नहीं है जो सभी प्रकार के सीखने की क्रियाओं की पूर्ण व्याख्या करे। वास्तव में ये सभी सिद्धान्त सीखने की क्रिया की आंशिक व्याख्या करते हैं। इन सिद्धान्तों में अन्तिम तीन सिद्धान्त ऐसे हैं जिनकी अधिकांश विशेषतायें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथम तीन सिद्धान्तों में पाई जाती हैं। सम्बन्ध-प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त केवल सरल सीखने की प्रक्रियाओं की व्याख्या कर पाता है तथा जटिल प्रकार की व्याख्या इस सिद्धान्त के आधार पर करना सम्भव नहीं है। प्रयत्न और भूल का सिद्धान्त सूझ या बुद्धि की उपेक्षा कर सीखने की क्रिया का अभ्यास के आधार पर व्याख्या करता है और दूसरी ओर अन्तर्दृष्टि या सूझ का सिद्धान्त अभ्यास की उपेक्षा कर केवल सूझ के आधार पर सीखने की क्रिया की व्याख्या करता है। किन्तु अगर सीखने की क्रिया का सूक्ष्म रूप से निरीक्षण किया जाय तो यह भली-भाँति स्पष्ट होता है कि सीखने की क्रिया अभ्यास तथा सूझ दोनों के द्वारा होती है। किसी भी विषय को समझने के लिए सूझ की आवश्यकता है किन्तु उस पर विशिष्टता (Mastery) प्राप्त करने के लिये अभ्यास की आवश्यकता है। यदि हम दोनों सिद्धान्तों का अच्छी तरह अध्ययन करें तो हमें पता चलता है कि वास्तव में इन दोनों सिद्धान्तों में कोई मौलिक अन्तर (Fundamental Difference) नहीं है। थार्नडाइक द्वारा सीखने में प्रभाव के नियम (Law of Effect) को स्वीकार करने का अभिप्राय यह है कि वह सीखने की क्रिया में बुद्धि, अभिरुचि, सूझ (Insight) आदि मानसिक गुणों को स्थान देता है क्योंकि प्रभाव या परिणाम का समझना सूझ या बुद्धि द्वारा सम्भव हो सकता है। अलपर्ट डंकर आदि कुछ गेस्टाल्टवादियों द्वारा सूझ की क्रिया को क्रमिक (Gradual) मानने का तात्पर्य यह होता है कि वे सीखने की क्रिया में सूझ के साथ-साथ प्रयत्न या प्रयास (Effort) के प्रभाव को मन्जूर करते हैं। इस प्रकार दोनों सिद्धान्तों में कोई मौलिक अन्तर नहीं है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDP

३१
सीखने की वक्ररेखायें—प्रारम्भिक तेजी पठार और दैहिक सीमा

(Learning Curves-Initial Spurt, Plateau and Physiological Limit)

प्रश्न-संख्या—३१

सीखने की बक्ररेखाओं से आप क्या समझते हैं ? सीखने की प्रक्रिया में प्रारम्भिक तेजी, पठार और शारीरिक सीमा क्या है ?

What do you understand by learning curves ? What are the initial spurt, plateau and physiological limit in learning process ?

भूमिका (Introduction)

जब हम किसी कौशल (Skill) को सीखना प्रारम्भ करते हैं तो शीघ्र ही उस पर प्रवीणता प्राप्त नहीं कर लेते हैं। वल्कि धीरे-धीरे उसमें उन्नति करते हैं। सीखने की क्रिया की गति में प्रगति प्रारम्भ से लेकर अन्त तक एक सी नहीं होती है। कभी वह तीव्र हो जाती है तो कभी बिल्कुल रुक जाती है। यदि हम ग्राफ पेपर पर सीखने की उन्नति और अवनति को अंकित करें तो इनमें जो रेखा बनेगी उसे सीखने की वक्ररेखा (Learning Curve) कहते हैं। दूसरे शब्दों में सीखने की उन्नति और अवनति को प्रदर्शित करने वाली रेखा को सीखने की वक्र रेखा कहते हैं। सीखने की वक्ररेखायें एक ही सी नहीं होती हैं बल्कि उनमें सीखने की क्रिया के स्वरूप के आधार पर विभिन्नता पाई जाती है। यह समझने के लिये इस प्रश्न में सबसे पहले सीखने की वक्ररेखाओं के प्रकार (Kinds of Learning Curves) प्रस्तुत करेंगे । इसके उपरान्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीखने की क्रिया में होने वाली प्रगति के स्वरूप को समझने के लिए प्रारम्भिक तेजी (Initial Spurt), सीखने के पठार (Plateau of Learning) तथा शारीरिक सीमा (Physiological Limit) पर प्रकाश डालेंगे।

सीखने की वक्ररेखाओं के प्रकार
(Kinds of Learning Curves)

[अ] मनोवैज्ञानिकों द्वारा तीन प्रकार की सीखने की वक्ररेखाओं का उल्लेख

कुछ मनोविज्ञानिकों ने सीखने की क्रिया पर अनेक अध्ययन किये जिनके आधार पर उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि सीखने की सभी वक्ररेखायें (Learning Curves) समान नहीं होती हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वक्ररेखाओं में जो असमानतायें पाई जाती है वे इन दो बातों पर निर्भर हैं—(१) जो कौशल सीखा जा रहा है, उसका स्वरूप तथा (२) परिस्थिति, जिसमें कौशल सीखा जा रहा है। इस आधार पर मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न वक्ररेखाओं को तीन प्रकारों में विभाजित किया है जो निम्नलिखित हैं :—

(१) सकारात्मक तीव्रगति की वक्ररेखा (Positive Acelerated Curve)।

(२) नकारात्मक तीव्रगति की वक्ररेखा (Negative Accelerated Curve)।

(३) S शक्ल की वक्ररेखा (S Shaped Curve)

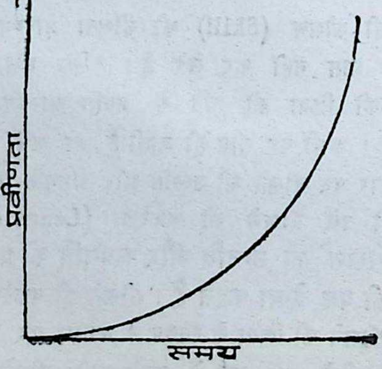

चित्र संख्या ३२—सीखने के पठार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] उक्त तीन प्रकार की सीखने के वक्ररेखाओं का चित्र सहित स्पष्टीकरण

(१) सकारात्मक तीव्रगति की वक्ररेखा (Positive Accelerated curve)—जैसा कि नाम से स्पष्ट है इस प्रकार की वक्ररेखा में प्रारम्भ में सीखने की क्रिया तीव्रगति से होती है। इसके बाद सीखने की गति में क्रमशः मन्दी पड़ने लगती है। सीखने की इस प्रकार की गति प्रायः उन कौशलों में पाई जाती है जिसमें प्रारम्भ में उत्साह अधिक होता है किन्तु ज्यों-ज्यों अभ्यास बढ़ता जाता है उत्साह मंद पड़ता जाता है। सकारात्मक तीव्रगति की वक्ररेखा का चित्र पिछले पृष्ठ पर दिए हुए आकार का होता है।

(२) नकारात्मक तीव्रगति वक्ररेखा (Negative Accelerated curve)—इस प्रकार की वक्ररेखा में अभ्यास काल के प्रारम्भ में तो सीखने की गति मन्द होती है किन्तु बाद में क्रमशः तीव्र होती जाती है। नीचे दी हुई इस प्रकार की रेखा से यह भली भाँति स्पष्ट हो जाता है।

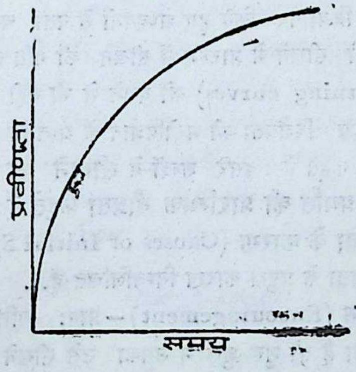

चित्र संख्या ३०—नकारात्मक तीव्रगति व रेखा

(३) S शक्ल की वक्ररेखा (S-shaped curve)—S शक्ल की वक्ररेखा में प्रारम्भ काल में सीखने की गति मन्द होती है किन्तु इसके बाद सीखने की गति तीव्र हो जाती है और कुछ समय तक यह तीव्रता बनी रहती है। इसके बाद क्रमशः गति मन्द होने लगती है इस प्रकार की गति के कारण इस वक्ररेखा की शक्ल रोमन लिपि के 'S' अक्षर के समान होती है। इसलिए इसे S शक्ल की वक्ररेखा कहते हैं। इस वक्ररेखा का चित्र अगले पृष्ठ पर दिया हुआ है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

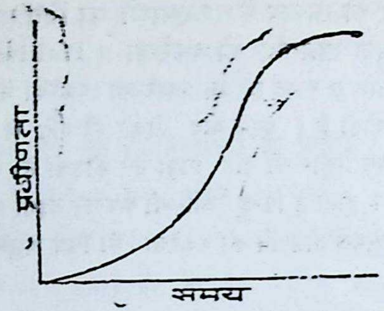

चित्र संख्या ३१—S शक्ल की वक्ररेखा

प्रारम्भिक तीव्रता
(Initial Spurt)

[अ] प्रारम्भिक तीव्रता का अर्थ (Meaning of Initial Spurt)

सीखने की क्रिया पर किये हुए अध्ययनों से पता चलता है कि प्रायः किसी भी कौशल या बात को सीखने में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है। सीखने की वक्ररेखाओं (Learning curves) को देखने से भी यही तथ्य स्पष्ट होता है। सीखने की क्रिया की इस विशेषता को मनोविज्ञान के अन्तर्गत प्रारम्भिक तीव्रता को (Initial Spurt) कहते हैं। दूसरे शब्दों में **सीखने की क्रिया में प्रारम्भ में तेजी से होने वाली प्रगति को प्रारम्भिक तीव्रता कहते हैं।**

[ब] प्रारम्भिक तीव्रता के कारण (Causes of Initial Spurt)

प्रारम्भिक तीव्रता के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं...

(१) प्रोत्साहन (Encouragement)—प्रायः व्यक्ति जब भी कोई कौशल सीखना प्रारम्भ करता है तो शुरू-शुरू में उसका उसे सीखने के लिए उत्साह बढ़ा होता है। उत्साह के कारण जो कुछ भी वह सीखता है उसके प्रति उसकी रुचि रहती है रुचि के कारण वह प्रारम्भ में सीखने में ध्यान भी खूब देता है। किन्तु स्वभावतः कुछ समय बाद उसका बढ़ा हुआ उत्साह ठण्डा हो जाता है। फलस्वरूप सीखने की गति भी मन्द होती जाती है।

(२) जिज्ञासा (Curiosity)—प्रारम्भिक तीव्रता का दूसरा प्रमुख कारण है व्यक्ति की कौशल के प्रति तीव्र जिज्ञासा का होना। जिस कौशल को व्यक्ति सीखना चाहता है उसके सम्बन्ध में वह पूर्ण अपरिचित होता है किन्तु उसको जानने की उसमें जिज्ञासा बनी रहती है इसलिए प्रारम्भ में वह उस कौशल को तीव्रगति से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीखता है किंतु बाद में जैसे-जैसे वह उससे परिचित होता जाता है वैसे-वैसे उसके प्रति उसकी जिज्ञासा कम होती जाती है। परिणामस्वरूप बाद में सीखने में गति में मन्दी आती जाती है।

सीखने के पठार
(Plateau of Learning)

[अ] सीखने के पठार का अर्थ
(Meaning of the Plateau of Learning)

जब हम किसी कौशल (Skill) को सीखते हैं तो पहिले तो सीखने की क्रिया द्रुति गति से चलती है किन्तु कुछ समय बाद सीखने की क्रिया रुक जाती है। कई दिनों के अभ्यास करने पर भी सीखने की गति में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। सीखने की क्रिया की इस अवस्था को जिसमें सीखने की क्रिया रुकी रहती है, 'सीखने का पठार' (Plateau of Learning) कहते हैं। कुछ दिनों के बाद पुनः सीखने की क्रिया में प्रगति होने लगती है परन्तु यह स्थिति कुछ समय तक ही रहती है और पुनः सींखने की क्रिया अवरुद्ध हो जाती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी कौशल को सीखने में एक से अधिक बार पठार की स्थिति आ सकती है। इस तथ्य को इस प्रकार समझाया जा सकता है। मान लीजिये कोई व्यक्ति टाइप राइटर सीखता है। कुछ दिनों तक तो सीखने की क्रिया में पर्याप्त उन्नति होती है किन्तु कुछ समय पश्चात् अभ्यासों की अनेक पुनरावृत्ति के बावजूद भी सीखने की क्रिया कुछ समय तक रुकी रहती है। इसी स्थिति को

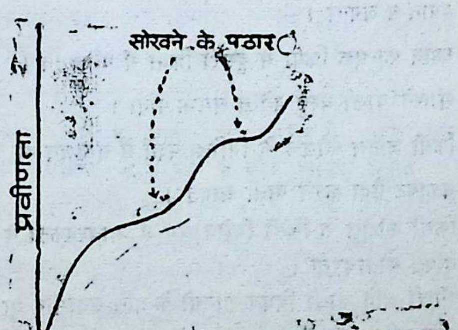

चित्र संख्या—३२ सीखने का पठार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सीखने के पठार की अवस्था कहते हैं। कुछ दिनों बाद देखा जाता है कि व्यक्ति की टाइपराइटर सीखने की गति में वृद्धि होने लगती है और यह स्थिति कुछ समय तक बनी रहती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी भी कौशल को सीखने में एक से अधिक बार सीखने के पठार आते रहते हैं। ग्राफ-पेपर पर सीखने के पठार को अंकित करने पर जो वक्ररेखा बनती है उसमें उसके बीच में समतल भाग पाये जाते हैं। यह तथ्य पिछले पृष्ठ पर दिये हुए चित्र से भली-भाँति स्पष्ट होता है। ये समतल भाग ही सीखने के पठार के द्योतक होते हैं। इस प्रकार संक्षेप में हम कह सकते हैं **कि सीखने के पठार का तात्पर्य सीखने की गति की उस अवस्था से है जिसमें कुछ समय के लिए सीखने की क्रिया में प्रगति रुक जाती है।**

[ब] सीखने के पठार के कारण

(Causes of plateau of Learning)

सीखने के पठार अर्थात् कुछ समय के लिए सीखने की प्रगति के रुक जाने के निम्नलिखित कारण हैं—

(१) शारीरिक क्षमता का कम हो जाना।
(२) रुचि एवं उत्साह की कमी।
(३) समझने की कमी।
(४) प्रभावहीन विधियों का सीखने में प्रयोग करना।
(५) सीखने वाली किसी विधि का स्थायी रूप से न अपना पाना।
(६) ध्यान न लगना।
(७) ध्यान का एक क्रिया से दूसरी क्रिया में परिवर्तन।
(८) सीखने वाली वस्तु को न समझ पाना।
(९) किसी जटिल कौशल के विभिन्न पक्षों में सन्तुलन का न होना।
(१०) थकावट पैदा करने वाली आदतें।
(११) किसी कौशल के किसी विशेष अंग में आवश्यकता से अधिक जोर देना।
(१२) दूषित वातावरण।
(१३) सीखी जाने वाली विषय-सामग्री के प्रति उदासीन या निराश हो जाना।
(१४) बुद्धि लब्धि (I. Q.) का कम होना।
(१५) सीखने की पर्याप्त मात्रा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] सीखने के पठारों का निराकरण
(Elimination of the plateaus of Learning)

जहाँ तक सीखने के पठार के निराकरण का प्रश्न है वहाँ यह कहा जा सकता है कि सीखने की क्रियाओं में पठारों का उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। अतः सीखने के पठार की अवस्था की अवधि में कमी अवश्य की जा सकती है किन्तु सीखने के पठारों का बिल्कुल निराकरण करना सम्भव नहीं हैं। कुछ विद्वानों का विचार है कि सीखने के पठार का तात्पर्य सीखने की क्रिया का रुक जाना नहीं है वल्कि सीखने की यह वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति सीखने की क्रिया में उन्नति करने की तैयारी करता है। इन्हीं विद्वानों का यह भी विचार है कि हमें पठार की स्थिति समाप्त करने में शीघ्रता नहीं करना चाहिये क्योंकि ऐसा करने से सीखने की क्रिया में उन्नति के वजाय अवनति भी हो सकती है।

शारीरिक सीमा (physiological Limit)

[अ] शारीरिक सीमा का अर्थ
(Meaning of physiological Limit)

यह ठीक है कि किसी कौशल को सीखने में प्रारम्भ में सीखने की गति तीव्र होती है और यह भी ठीक है कि सीखने की क्रिया में बीच-बीच में ऐसी अवस्थायें आती हैं जिनमें सीखने की गति लगभग रुक जाती है और पुनः प्रारम्भ हो जाती है। किन्तु क्या किसी कौशल को सीखने में हमेशा सीखने के पठार तथा सीखने की उन्नति होती रहती है। क्या टाइप करने, कम्पोजिंग करने, दौड़ने, बोलने आदि सभी में अभ्यास करने पर क्रमशः उन्नति होती रहती है? उत्तर है: नहीं। वास्तव में किसी कौशल के सीखने में प्रगति बिलकुल वन्द हो जाती है। इस अवस्था को ही शारीरिक सीमा (physiological Limit) कहते हैं। इस सीमा को प्राप्त करने के बाद हमारे शरीर में इतनी शक्ति नहीं रहती कि वह आगे किसी कौशल के सीखने में और अधिक प्रगति करे। हम देखते हैं कि किस प्रकार व्यक्ति की टाइप करने में प्रगति होते-होते अन्त में बिलकुल रुक जाती है। इसी प्रकार कम्पोजिंग की गति में प्रगति होते-होते एक ऐसी अवस्था आ जाती है जिसमें कम्पोजीटर के लाख प्रयास करने पर भी कम्पोजिंग की गति में थोड़ी भी प्रगति नहीं होती है। इसी प्रकार सभी कौशलों को सीखने में एक स्थिति ऐसी अवश्य आ जाती है जिसमें सीखने की गति में थोड़ी भी प्रगति नहीं होती है। दूसरे शब्दों में सीखने में शारीरिक सीमा का आना एक निश्चित तथ्य है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रकार शारीरिक सीमा का तात्पर्य सीखने की क्रिया में आने वाली उस अन्तिम अवस्था से है जिसमें सीखने की प्रगति पूर्णतया रुक जाती है।

[ब] शारीरिक सीमा में व्यक्तिगत विभिन्नता
(Individual Difference in Physiological Limit)

किसी कौशल को सीखने में सभी व्यक्तियों की शारीरिक सीमा एक सी नहीं होती है बल्कि यह भिन्न-भिन्न होती है। किसी व्यक्ति की टाइप करने की शारीरिक सीमा ४० शब्द तक होती है तो किसी व्यक्ति की ५० शब्द की। कुछ ऐसे भी व्यक्ति हो सकते हैं जिनकी शारीरिक सीमा ६० शब्द तक की हो। इसी प्रकार कुछ कम्पोजीटर एक दिन में सामान्य तौर से चार-पेज कम्पोज कर लेते हैं तो कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो ५ व ६ पेज एक दिन में कम्पोज कर डालने के अभ्यस्त हो जाते हैं। कुछ व्यक्तियों के कम्पोजिंग करने की शारीरिक सीमा ७ व ८ पेज तक भी सुनी गई है। इसी प्रकार अन्य कौशलों के सीखने में विभिन्न व्यक्तियों की सीखने की शारीरिक सीमा में अन्तर होता है। आयु के आधार पर भी शारीरिक सीमा में अन्तर पाया जाता है। सामान्य रूप से बालक की अपेक्षा प्रौढ़ व्यक्ति की शारीरिक सीमा अधिक होती है। आयु के साथ शारीरिक सीमा में भी परिवर्तन होता जाता है। एक व्यक्ति की बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था में शारीरिक सीमा अलग-अलग होती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शारीरिक सीमा में व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Difference) पाई जाती है।

उपसंहार (Conclusion)

उक्त शब्दों में हमने देखा कि आमतौर पर सीखने की वक्ररेखायें तीन प्रकार की होती हैं:—(१) साकारात्मक तीव्र गति की वक्ररेखा, (४) नकारात्मक तीव्र गति की वक्ररेखा तथा (३) 'S' शक्ल की वक्ररेखा। **प्रारम्भिक तीव्रता**-सीखने की क्रिया में प्रारम्भ में तेजी से होने वाली प्रगति को प्रारम्भिक तीव्रता कहते हैं। इसके प्रोत्साहन तथा जिज्ञासा के दो प्रमुख कारण होते हैं। **सीखने के पठार**—सीखने के पठार का तात्पर्य सीखने की गति की उस अवस्था से है जिसमें कुछ समय के लिए सीखने की क्रिया में प्रगति रुक जाती है। सीखने के पठारों के अनेक कारण हो सकते हैं। इनका पूर्णरूपेण निराकरण नहीं किया जा सकता है। **शारीरिक सीमा**—शारीरिक सीमा का तात्पर्य सीखने की क्रिया में आने वाली उस अन्तिम अवस्था से हैं जिसमें सीखने की प्रगति पूर्णतया रुक जाती है। सीखने की क्रिया में विभिन्न व्यक्तियों की शारीरिक सीमा अलग-अलग होती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३२

शिक्षण का स्थानान्तरण

(Transfer of Training)

प्रश्न-संख्या—३२

शिक्षण के स्थानान्तरण से आप क्या समझते हो। शिक्षण के स्थानान्तरण के प्रकार, सिद्धान्त तथा सहायक दशाओं पर प्रकाश डालिए।

What do you understaand by transfer of training? throw light on its kinds, theories and conditions of transfer of training.

भूमिका (Introduction)

प्रायः ग्रामीण लोग शिक्षण के स्थान्नातरण (Transfer of Tradining) की क्रिया के ज्ञान के अभाव में यह कह दिया करते हैं कि हम अपने लड़कों वच्चों को पढ़ाकर क्या करेंगे उनसे तो हमें दुकान अथवा कृषि का कार्य कराना है। कभी-कभी तो पढ़े लिखे लोग भी अपने बच्चों का पहले से कोई व्यवसाय निश्चित कर कुछ विषयों का अध्ययन व्यर्थ बतलाने लगते हैं। किन्तु यह उनकी गलत धारणा है। वास्तव में कोई भी ज्ञान चाहे उसका स्वरूप कोई भी हो विभिन्न परिस्थितियों से समायोजन करने में प्रायः सहायता देता है। यह सब शिक्षण के स्थानान्तरण की प्रक्रिया के द्वारा ही होता है। अतः शिक्षण के स्थानान्तरण का जीवन में अत्यधिक महत्व है। ऐसी दशा में इस क्रिया को समझना आवश्यक हो जाता है। इस प्रश्न में शिक्षण के स्थानान्तरण की प्रक्रिया को समझने के लिए शिक्षण के स्थानान्तरण का स्वरूप (Nature of Transfer of Training), शिक्षण के स्थानान्तरण के प्रकार (Kinds of Transfer of Training), शिक्षण के स्थानान्तरण के सिद्धान्त (Theories of Transfer of Training) तथा शिक्षण के स्थानान्तरण की सहायक दशायें (Favourable Conditions of Transfer of Training) प्रस्तुत करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शिक्षण के स्थानांतरण का अर्थ

(Meaning of Transfer of Training)

एक विषय अथवा परिस्थित के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का अन्य विषयों अथवा परिस्थितियों में उपयोगी होना शिक्षण का स्थानान्तरण कहलाता है :—

प्रायः अध्यापक लोग अपने शिष्यों से यह कहा करते हैं कि 'तुम सब लोगों को अमुक-अमुक विषय का भली-भाँति अध्ययन कर लेना चाहिये ताकि जब तुम भविष्य में नागरिक जीवन में प्रवेश करो तो तुम्हारा यह अध्ययन अमुक-अमुक क्षेत्र में काम दें।' इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि एक विषय का ज्ञान दूसरे विषयों अथवा परिस्थितियों में सहायक होता है। मनोविज्ञान में इस विचार को शिक्षण का स्थानान्तरण (Transfer of Training) कहते हैं। इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुये डॉ० **सरयूप्रसाद चौबे** ने शिक्षण के स्थानान्तरण की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए लिखा है **"यह सिद्धान्त कि एक विषय के अध्ययन से प्राप्त संस्कार उसी विषय तक सीमित नहीं रहते, वरन् अन्य विषयों तथा परिस्थितियों में भी उपयोगी सिद्ध होते हैं, शिक्षण के स्थानान्तरण के नाम से प्रसिद्ध है।"** इसी प्रकार स्थानान्तरण के सम्बन्ध में **हरबर्ट सोरन्सन** (Herbert Sorenson) ने भी लिखा है—

"A person learns through transfer of the extent that the abilities acquired in one situation help in another.

—Herbert Sorenson; Psychology in Education P. 468.

शिक्षण के स्थानांतरण के प्रकार

(Kinds of Transfer of Training)

शिक्षण के स्थानान्तरण के प्रकार निम्न दो हैं—

[१] धनात्मक शिक्षण का स्थानान्तरण (Positive Transfer of Training)

यदि एक विषय अथवा परिस्थिति का अध्ययन दूसरे विषय अथवा परिस्थिति के अध्ययन में सहायता पहुँचाता है तो इस प्रकार के शिक्षण के स्थानान्तरण को धनात्मक शिक्षा का स्थानान्तरण (Positive Transfer of Training) कहते हैं। उदाहरण के लिए साइकिल चलाने वाले व्यक्ति को मोटर साइकिल चलाने में सुविधा होती है। यह धनात्मक शिक्षण का स्थानान्तरण है।

[२] निषेधात्मक शिक्षण का स्थानान्तरण (Negative Transfer of Training)

जब किसी विषय अथवा परिस्थिति का अध्ययन किसी दूसरे विषय अथवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिस्थिति के अध्ययन में बाधक सिद्ध होता है तो इस प्रकार के शिक्षणं के स्थानां-तरण को निषेधात्मक शिक्षण का स्थानान्तरण (Negative Transfer of Training)—कहते हैं। उदाहरण के लिए एक टेनिस का खिलाड़ी जब क्रिकेट खेलता है तो उसे कठिनाई अनुभव होती है। इस प्रकार के स्थानान्तरण को निषेधात्मक शिक्षा का स्थानान्तरण (Negative Transfer of Training) कहते हैं। निषेधात्मक स्थानान्तरण की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए बोंरिग, लैंग-फील्ड एवं वील्ड ने ठीक ही लिखा है :—

"When learning one task makes learning a second task harder, we speak of negative transfer."

—Boring, Langfield and Weld.

शिक्षण के स्थानान्तरण के सिद्धान्त
(Theories of Transfer of Training)

शिक्षण के स्थानांतरण के विभिन्न सिद्धांत—(स्थानान्तरण कैसे होता है ?) निम्नलिखित हैं :—

(१) नियमित विनय का सिद्धान्त (Theory of Formal Discipline)
(२) समान अंशों का सिद्धान्त (Theory of Identical Elements)
(३) सामान्यीकरण का सिद्धान्त (Theory of Generalization)
(४) सामान्य एवं विशिष्ट अंश का सिद्धान्त (Theory of G and S. Factor)

(१) नियमित विनय का सिद्धान्त-शक्ति मनोविज्ञान पर आधारित

(Theory of Formal Discipline—based on Faculty Psychology)

अभ्यास के द्वारा मस्तिष्क की शक्तियों को वलिष्ट बनाकर उसको किसी भी परिस्थिति में प्रयोग करना।

नियमित विनय का सिद्धांत शक्ति मनोविज्ञान (Faculty Psychology) पर आधारित है। 'शक्ति मनोविज्ञान' के समर्थकों का विचार है कि व्यक्ति का मस्तिष्क विभिन्न शक्तियों (Faculties) जैसे स्मृति, कल्पना, तर्क, निरीक्षण आदि का योग मात्र है। नियमित विनय के सिद्धान्त के अनुसार अभ्यास के द्वारा हम इन शक्तियों को इतना अधिक बलिष्ट बना सकते हैं कि हम इनको किसी भी परिस्थिति में कुशलला से प्रयोग कर सकते हैं। मान लीजिए किसी को अपनी स्मृति शक्ति को बढ़ाना है तो उसे स्मृति के स्वरूपों (Forms) का अध्ययन करना चाहिए।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस दृष्टिकोण से यह सिद्धान्त स्वरूप (Form) पर अधिक जोर देता है न कि विषय से सम्बन्धित सामग्री पर। मस्तिष्क की शक्तियों को बलिष्ट बनाने के लिये ग्लेजब्रुक नामक विद्वान ने अपने विचार प्रकट करते हुए लिखा है, **"स्मृति नीति शास्त्र एवं विशेष रूप से भाषा तथा इतिहास के अध्ययन से बलिष्ट होती है, रुचि भाषा के उच्च स्तर के अध्ययन विशेष रूप से इंग्लिश साहित्य के अध्ययन से बलिष्ट होती है, कल्पना भाषा के प्रशिक्षण विशेष रूप से लैटिन तथा ग्रीक काव्य के अध्ययन से शक्तिशाली होती है, एवं निरीक्षण प्रयोग-शाला में विज्ञान के कार्यों को करने से।"**

"Memory is trained by moral studies but best by language and history, taste is trained by more advanced studies of language and still better by English literature, imagination by all higher teaching, but chiefly by Greck and Latin poetry observation by science work in laboratory," —**Glasobrack.**

[२] समान अंशों का सिद्धान्त—थार्नडाइक

(Theory of Identical Elements-Thorndike)

एक विषय को स्मरण करने के पश्चात् उसी प्रकार के दूसरे विषय का स्मरण करने में शिक्षण का बहुत मात्रा में स्थानांतरण होता है।

समान अंशों के सिद्धान्त (Theory of Identical Elements) के प्रतिपादक **थार्नडाइक (Thorndike)** महोदय का विचार है एक विषय का अध्ययन दूसरे विषय के अध्ययन में तभी सहायक सिद्ध हो सकता है जब कि इन दोनों में पारस्परिक कुछ मात्रा में समानता हो। इसके विपरीत यदि दो विषयों में समान अंशों का अभाव है तो एक विषय के अध्ययन से दूसरे विषय के अध्ययन में किसी प्रकार की सहायता नहीं पहुँच सकती है। उदाहरण के लिये मनोविज्ञान का अध्ययन करने के पश्चात् यदि हम शिक्षा मनोविज्ञान का अध्ययन करते हैं तो हमें बहुत ही सुविधा होती है। थार्नडाइक के सिद्धान्त के अनुसार इसका कारण यह है कि दो विषयों में समान अंश पाये जाते हैं। **थार्नडाइक** के सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए हर्बर्ट सोरसन्स ने ठीक ही लिखा है :—

"According to the theory of identical elements.........there is transfer from one situation to another to the extent that there are elements or components common to the two situations."

—Herbert Sorenson Psychology in Education P. 478-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[३] सामान्यीकरण का सिद्धान्त—जड़

(Theory of Generalization Judd)

जिस सीमा तक कोई व्यक्ति अपने अनुभवों के द्वारा कोई सामान्य सिद्धान्त निकाल लेता है, उसी सीमा तक संस्कारों का स्थानांतरण होता है।

सामान्यीकरण के सिद्धान्त (Theory of Generalization) के प्रतिपादक सी० एच० जड (C. H. Judd) महोदय हैं इस सिद्धान्त के अनुसार यदि कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति से अपने अध्ययन अथवा अनुभव के द्वारा कोई सामान्य सिद्धाप्त निकाल लेता है जो कि दूसरी परिस्थिति में काम आ सके तो शिक्षण का स्थानान्तरण होता है। उदाहरण के लिए जो शिक्षक बाल व्यवहार के मनोविज्ञान को, सीखने के सिद्धान्तों को एवं व्यक्तिगत विभिन्नता के मनोविज्ञान को जानता है वह कक्षा भवन की परिस्थिति में एवं सफलतापूर्वक पढ़ाने में अपनी इस योग्यता को काम में ला सकता है। अपने सिद्धान्त को स्पष्ट करने के लिये जड (Judd) महोदय ने एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए स्वयं लिखते हैं :—

"A teacher who has a broad outlook on any field of knowledge will make a single piece of information carry to the student not only a bare kernel of truth but a whole network of suggestions by which the central truth connects with the rest of the world,"

—C. H. Judd.

[४] सामान्य एव विशिष्ट अंश का सिद्धान्त—स्पीयरमैन

(Theory of 'G' & 'S' Factor-Spearman)

[स्थानांतरण विशेष योग्यता में न होकर सामान्य योग्यता में होता है]

सामान्य एवं विशिष्ट अंश के सिद्धान्त (Theory of "G" (General) and "S" Special Factor) जिसे द्वितात्विक सिद्धान्त (Two Factor Theory) कहते हैं, का प्रतिपादन करते हुए स्पीयरमैन (Spearman) नामक मनोवैज्ञानिक ने कहा है कि प्रत्येक विषय को सीखने के लिये बालक को सामान्य एवं विशिष्ट योग्यता की आवश्यकता पड़ती है इसके साथ-साथ प्रत्येक विषय के अध्ययन के परिणामस्वरूप व्यक्ति की सामान्य योग्यता (General Ability) एवं विशिष्ट योग्यता (Special Ability) में वृद्धि होती है। स्पीयरमैन का विचार है कि स्थानान्तरण विशेष योग्यता में न होकर सामान्य योग्यता में ही होता है। स्पीयरमैन के सिद्धान्त के अनुसार गणित, इतिहास, विज्ञान आदि में विशिष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(S) अंश की अपेक्षा सामान्य (G) अंश की अधिक आवश्यकता पड़ती है परिणाम-स्वरूप इन विषयों का स्थानान्तरण की दृष्टि से अधिक महत्व है। स्पीयरमैन ने ठीक ही लिखा है :—

"There is not transfer in special ability but there is some in the general ability." —Spearman.

शिक्षण के स्थानान्तरण के हेतु (सहायक)
(Conditions of Transfer of Training)

(१) सामान्यीकरण (Generalizations)—हम जितना अधिक पूर्व अनुभवों से सामान्य सिद्धान्त (General Principle) निकालने में समर्थ होते हैं उतना ही अधिक हमारे शिक्षण का स्थानान्तरण होता है।

(२) समझना (Understanding)—हम जिन विषयों अथवा विचारों को अच्छी तरह समझ लेते हैं उन विषयों अथवा विचारों का दूसरी परिस्थिति में अधिक स्थानान्तरण होता है। चूंकि समझने से समानता, का ज्ञान हो जाता है परिणामस्वरूप थार्नडाइक के समान अंशो के सिद्धान्त (Theory of Identical Elements) के अनुसार शिक्षण का स्थानान्तरण भी अधिक होता है। वुडवर्थ ने लिखा है :—

The amount of transfer is proportional to the identities and similarities between the two states." —Woodworth.

(३) सप्रयत्नशीलता (Deliberation)—यदि हम नवीन परिस्थितियों को, पूर्व अनुभवों को ध्यान में रखते हुए प्रयासपूर्वक समझने एवं पूर्व सीखी हुई विधियों को प्रयोग करते हैं तो शिक्षण अथवा संस्कारों का स्थानान्तरण होता है।

(४) स्थानान्तरण होने वाले विषय के प्रति मनोवृत्ति (Attitude towards the Subject of Transfer)—यदि स्थानान्तरण की अवस्था पर व्यक्ति अथवा बालक की विषय के प्रति अनुकूल मनोवृत्ति होती है तो यह धनात्मक स्थानान्तरण (Positive Transfer) में सहायता पहुँचाती है।

(५) शिक्षण पद्धति (Teaching Method)—यदि शिक्षण पद्धति अच्छी है तो स्थानान्तरण अधिक होता है अन्यथा नहीं। यदि कोई शिक्षक बालकों को यह बतलाते हुए पढ़ाता है कि अमुक-अमुक ज्ञान को तुम दैनिक जीवन में अमुक-अमुक अवसर पर प्रयोग में ला सकते हो तो ज्ञान का स्थानान्तरण अवश्य होगा।

(६) विषय-सामग्री पर अधिकार की मात्रा (The Degree of Mastery of the Material)—यदि कोई बालक किसी विषय का दूसरे अथवा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अध्ययन करके उस पर अधिकार कर लेना चाहिये। आर० डब्लू ब्रुस (R. W. Bruce) नामक मनोवैज्ञानिक ने प्रयोग करते हुये यह सिद्ध किया है कि धनात्मक स्थानान्तरण सर्वदा पूर्व सीखी हुई सामग्री के संगठन के अनुपात में हुआ करता है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में एक विषय या परिस्थिति के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान का अन्य विषयों या परिस्थितियों में उपयोगी सिद्ध होना शिक्षण का स्थानान्तरण है। **शिक्षण स्थानान्तरण के प्रकार**—(१) धनात्मक तथा (२) निषेधात्मक शिक्षण का स्थानान्तरण। **शिक्षण के स्थानान्तरण के सिद्धान्त**—(१) नियमित विनय का सिद्धान्त, (२) सामान्य अंशो का सिद्धान्त, (३) सामान्यीकरण का सिद्धान्त तथा (४) सामान्य एवं विशिष्ट अंश का सिद्धान्त। **शिक्षण के स्थानान्तरण की सहायक दशायें**—(१) सामान्यीकरण; (२) समझना, (३) सप्रयत्नशीलता, (४) स्थानान्तरण होने वाले विषय के प्रति मनोवृत्ति तथा (५) शिक्षण पद्धति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३३
ऐच्छिक एवं अनैच्छिक क्रियायें-आदत
[Voluntary and Involuntary Actions-Habit]

प्रश्न-संख्या—३३

ऐच्छिक एवं अनैच्छिक क्रियायें कौन-कौन सी हैं ? आदत जन्य क्रियाओं या आदत पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।

What are the voluntary and involuntary actions? Throw light, in brief, on habitual actions or habit.

भूमिका (Introduction)

व्यक्ति अपने वातावरण से अभियोजन (Adjustment) करने के लिए अनेक प्रकार की क्रियायें (Actions or Activities) करता है। इन क्रियाओं को मुख्यतः दो भागों में बांट सकते हैं—(१) ऐच्छिक क्रियायें (Voluntary Actions) तथा (२) अनैच्छिक क्रियायें (Involuntary Actions)। **ऐच्छिक क्रियायें**—ऐच्छिक क्रियाओं का तात्पर्य उन कियाओं से है जो व्यक्ति अपने किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए जानबूझ कर या इच्छापूर्वक करता है। इन क्रियाओं में व्यक्ति की इक्छाशक्ति या संकल्पशक्ति का विशेष स्थान रहता है। ये क्रियायें व्यक्ति जीवन में अर्जित (Acquired) करता या सीखता (Learns) है। **अनैच्छिक क्रियायें**—अनैच्छिक क्रियाओं का तात्पर्य उन क्रियाओ से है जो अचेतन (Unconscious) रूप से व्यक्ति द्वारा सम्पन्न हो जाती हैं। ये क्रियायें स्वतः संचालित हो जाती हैं। व्यक्ति को इनको करने के लिए अपनी बुद्धि या समझ (Intelligence or Understanding) का प्रयोग नहीं करना पड़ता है। अब हम इस प्रश्न में पहले यह समझने के लिये कि ऐच्छिक एवं अनैच्छिक क्रियायें कौन-कौन सी ही होती हैं, क्रियाओं के प्रकार (Kinds of Actions) प्रस्तुत करेंगे और इसके बाद आदत-जन्य क्रियाओं या आदत (Habitual Actions or Habit) पर प्रकाश डालेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

क्रियाओं के प्रकार
(Kinds of Actions)

व्यक्ति की विभिन्न क्रियाओं को हम निम्नलिखित तालिका द्वारा प्रस्तुत कर सकते हैं—

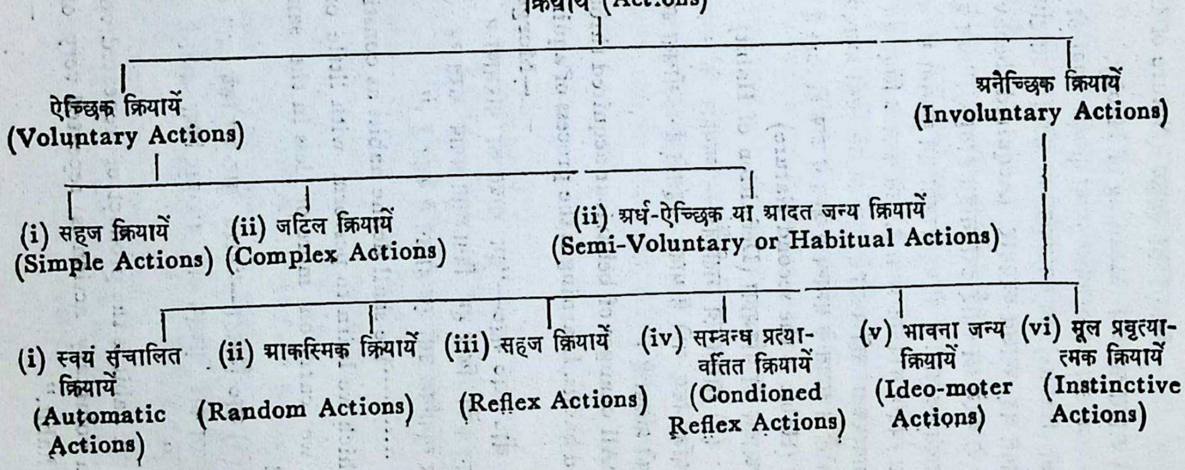

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदत का स्वरूप (Nature of Habit)

[अ] आदत का अर्थ (Meaning of Habit)

जब हम विचारात्मक अथवा ऐच्छिक कार्यों को बारम्बार करते हैं तो वे आदतों (Habits) का रूप ग्रहण कर लेतें हैं। इस दृष्टिकोण से हम कह सकते हैं **"आदत वह अर्जित व्यवहार (Acquired behaviour) हैं जिसमें किसी कार्य के करने का स्थाई ढंग निहित होता है।"** जब हमारी किसी कार्य को करने की आदत पड़ जाती है तो वह सरलता एवं कुशलता से सम्पादित हो जाता है, वह हमारा स्वतन्त्र कार्य बन जाता है, उसे करने के लिए हमें प्रयत्न, चेतना एवं इच्छा की आवश्यकता नहीं पड़ती है एवं हम उसे उसी प्रकार से कई बार करते हैं। इस दृष्टिकोण से आदत के सम्बन्ध में जेम्स ने ठीक ही कहा हैं **"आदत दूसरा स्वभाव है।"** (Habit is the second Nature)

[ब] आदत की परिभाषा (Definition of Habit)

(१) मार्गन एवं गिलीलैंड—"व्यवहार के समस्त परिवर्तन जो अनुभव द्वारा अर्जित किए जाते हैं आदत कहलाते हैं। सीखना इन्हीं परिवर्तनों में अर्जित करने की प्रक्रिया है।"

"All changes of behaviour acquired through experience are called habits. Learning is the process of aquiring these chamges."

—Morgan and Giltiland.

बी० एन० झा०—"हम आदत की परिभाषा में केवल उन क्रियाओं को सम्मिलित करेंगे जिन्हें हम विना ध्यान लगाये करते रह सकते हैं और जिन्हें हम हर वार न्यूनाधिक उसी एक ही ढंग से कहते हैं।"

"........We shall define habits as constituting only those scts which we learn to perform with little or no thought and which we carry on more or less in the same manner every time."

—B. N. Jha.

(३) डा० सिनहा—"आदत वार-बार किये जाने वाले ऐच्छिक कार्यों का फल है। जब कोई ऐच्छिक कार्य वार-बार किया जाता है तो वह आदत में बदल जाता है।"

"A habit is the product of repeated voluntary actions, when a voluntary action is repeated very offten it is turned into a habit."

—Dr. J. N. Sinha.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदत की विशेषतायें (Characteristics of Habit)

(१) सरलता एवं सुविधा (Ease and facility)—जिन कार्यों के करने की हमें आदत पड़ जाती है वे बहुत सरलता एवं सुविधा (Ease and facility) से सम्पन्न किये जाते हैं। उदाहरण के लिए किसी मनुष्य को साइकिल चलाने की आदत पड़ जाती है तो उसे चलाने में परेशानी नहीं उठानी पड़ती है वल्कि उसे सरलता एवं सुविधा रहती है।

(२) एकरूपता (Uniformity)—हमें जिन कार्यों को करने की आदत पड़ जाती है वे बार-बार उसी प्रकार किये जाने लगते हैं। उदाहरण के लिए यदि हमें अच्छा लिखने की आदत वन गई है तो हम सर्वदा अच्छा ही लिखा करेंगे। इस प्रकार आदतजन्य कार्यों में एकरूपता (Uniformity) निहित रहती है।

(३) रोचकता (Interest)—दरअसल हमें जो कार्य अच्छे लगते हैं वे हम बार-बार करते हैं। फलस्वरूप वे आदत में परिवर्तित हो जाते हैं। इस आदतजन्य कार्यों को करने में हमें वहुत आनन्द आता है। विद्यार्थियों को जब स्कूल जाने की आदत वन जाती है तो उन्हें स्कूल जाने में वहुत अच्छा लगता है। इस प्रकार आदत में रोचकता (Interest) निहित रहती है।

(४) शीघ्रता (Promptness)—जिन कार्यों के करने की हमें आदत वन जाती है वे कार्य हम वहुत जल्दी सम्पन्न कर लेते हैं। उदाहरण के लिए जिस व्यक्ति को क्रिकेट खेलने की आदत पड़ जाती है उसे वह खेलने में बहुत शीघ्रता करता है।

(५) यथार्थ अथवा प्रतिपन्नता (Accuracy)—आदतजन्य कार्य न केवल शीघ्र सम्पन्न किए जाते हैं वरन् ये ठीक-ठीक भी किये जाते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी ने परीक्षा देने के लिए अच्छी तरह अभ्यास कर लिया है तो वह परीक्षा भवन में प्रश्न-पत्र का ठीक-ठीक उत्तर देता है।

(६) ध्यान का अभाव (Absence of Attention)—आदत जन्य कार्यों को करने में हमें ध्यान नहीं देना पड़ता है बल्कि ये तो हम स्वाभाविक रूप से बिना सोचे-समझे करते हैं। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति को टाइप राइटर चलाने की आदत पड़ जाती है तो उसे ऊँगलियों का स्थान बदलने के लिए ध्यान नहीं देना पड़ता है वल्कि उसका ध्यान तो जो लिखना है उसी पर केन्द्रित रहता हैं। इस प्रकार जिन कार्यों को करने की हमें आदत पड़ जाती है वे हमारे विना ध्यान के (Absence of Attention) सम्पन्न हो जाते हैं।

(७) परिवर्तन में विरोध (Resistance to Modification)—जब हम अपनी किसी आदत में परिवर्तन करना चाहते हैं अथवा उसे तोड़ना चाहते हैं तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐसा करने में हमें बहुत परेशानी उठानी पड़ती है। उदाहरण के लिए यदि हमें ८ बजे दिन को जगाने की आदत पड़ गई है और हम नित्यप्रति ४ बजे उठने की कोशिश करें ऐसा करने में हमें बहुत मुश्किल पड़ती है। इस प्रकार आदत परिवर्तन में विरोध (Resistance to Modification) होता है।

आदतों के प्रकार (Kinds of Habits)

आदतों का—निम्न तीन प्रकार से वर्गीकरण

[अ] अस्वकीय एवं परकीय आदतें :—(१) स्वकीय आदतें उन आदतों को कहा जाता है जो वालक ने स्वयं डाल ली हैं। (२) परकीय आदतें वे आदतें हैं जो दूसरे के द्वारा वालकों में डाल दी जाती हैं।

[व] सहज एवं शैक्षणिक आदतें :—(१) जिन आदतों को हम वातावरण के सम्पर्क में आने के परिणामस्वरूप बिना किसी प्रयास के डाल लेते हैं वे आदतें सहज आदतें कहलाती हैं। (२) जिन आदतों को हम शिक्षा द्वारा प्रयास करके डालते हैं वे शैक्षणिक आदतें कहलाती हैं।

[स] अच्छी एवं जटिल अथवा बुरी आदतें :—(१) जो आदतें व्यक्तिगत एवं सामाजिक हित कर सकती है इन्हें अच्छी आदते कहते हैं। (२) जटिल अथवा बुरी आदते वे आदतें हैं जो व्यक्ति को नुकसान प्रदान करने वाली होती हैं एवं सामाजिक दृष्टिकोण से अवांछनीय मानी जाती हैं। ये जटिल अथवा बुरी आदतें निम्नलिखित हैं—

(१) झूठ बोलना, (२) चोरी करना, (३) काम न करना, (४) स्कूल से भाग जाना, (५) डींग मारना, (६) देर में उठना, (७) व्यर्थ की बात करना, (८) गाली देना, (९) पराई निन्दा करना, (१०) झगड़ा मोल लेना, (११) धूम्र पान करना, (१२) चुगली करना, (१३) दूसरों को सताना, (१४) बिना उद्देश्य के घूमना, (१५) अकारण क्रोधित होना, (१६) यौन सम्बन्धी बुरी आदतें, (१७) दांतों से नाखून काटना, (१८) ईर्ष्या करना, (१९) दीवाल पर लिखना, (२०) नशीली वस्तुओं का सेवन करना, (२१) मां बाप एवं शिक्षक का कहना न मानना, (२२) हठ करना आदि।

बुरी आदतों के कारण (Causes of Bad Habits)

बुरी आदतों के कारण निम्नलिखित हैं:—

(१) पैतृक दोष, (२) घर का गन्दा वातावरण, (३) माता-पिता की अयोग्यता, (४) शिक्षकों की लापरवाही, (५) माता पिता का दो आंखों से देखना,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) कड़ा दण्ड, (७) बड़े लोगों का दुश्चरित्र होना, (८) बुरे साथियों का संग-साथ, (५) बालक की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति न करना, (१०) चलचित्र का प्रभाव, (११) दूषित साहित्य, (१२) भावना ग्रंथियों का पड़ना, (१३) कल्पना की अधिकता, (१४) अकेले में रहना, (१५) अच्छे निर्देश न मिल सकना, (१६) बड़ों का अनुकरण करना, (१७) शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक विकास अच्छी तरह से न हो पाना, (१८) आदर्शों की कमी, (१९) अनुशासन की शिक्षा का अभाव, (२०) रचनात्मक कार्यों का अभाव।

आदत निर्माण के नियम (Laws of Habit-Formation)

अच्छी आदत डालने के-जेम्स ने निम्नलिखित चार नियम बताये हैं:—

(१) संकल्प की दृढ़ता (Firmness of Determination) :—जेम्स (James) द्वारा प्रतिपादित आदत निर्माण करने का प्रथम नियम है कि जिस कार्य को करने की आदत डालना चाहते हो उसको पूरा करने का हम दृढ़ संकल्प कर लें। उदाहरण के लिये यदि हम नित्यप्रति ४ बजे उठने की आदत डालना चाहते हैं तो सबसे पहले हमें इस बात का संकल्प अथवा प्रतिज्ञा कर लेना चाहिये कि चाहे जो कुछ भी हो हम प्रातः काल ४ बजे उठकर पढ़ने अवश्य लगेंगे। इस प्रकार जेम्स के शब्दों में "नई आदत को इतनी दृढ़ एवं निश्चित क्रियात्मकता से आरम्भ करो जितनी सम्भव हो सके।"

(२) क्रियात्मकता (Activity):—जैसे ही हम किसी कार्य को करने का दृढ़ संकल्प अथवा प्रतिज्ञा करें वैसे ही हमें कार्य रूप में परिणित कर देना चाहिए। कदाचित् इसीलिए किसी कवि ने कहा है "काल करे सो आज कर आज करे सो अब।" यदि व्यक्ति अपने संकल्प को कार्य रूप में परिणित नहीं करता है तो उसका प्रभाव जाता रहता है। अतः यदि हम नित्यप्रति ४ बजे उठने का संकल्प करते हैं तो जैसे ही सुबह ४ बजे वैसे ही उठने का प्रयास करना चाहिए जैसा कि जेम्स महोदय ने कहा है, **"संकल्प को क्रियान्वित करने के लिये प्रथम अवसर पर झपटो।"**

"Seize the very first opportunity to act on your resolution."

—James

(३) संलग्नता (Persistence) :—जिस कार्य को करने के संकल्प को एक बार कार्य रूप में परिणित करें उसे सर्वदा जारी रखना चाहिये। ऐसा नहीं कि एक दिन तो हम प्रातःकाल ४ बजे उठ बैठे और दूसरे दिन प्रातःकाल ४ बजे प्रगाढ़ निन्दा में लवलीन रहें। इस प्रकार जेम्स के शब्दों में **"अब तक नवीन आदत जीवन में दृढ़ता से जम न जाये उसमें अपवाद न आने दो।"**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Never suffer (allow) an exception to occur till the new habit is securely rooted in your life." —James

(४) अभ्यास (Exercise):—जिस कार्य को करने की आदत डालना हो उसका नित्य प्रति अभ्यास करना चाहिये क्योंकि अभ्यास करने से आदत दृढ़ एवं स्थाई बन जायेगी। ठीक ही कहा है, "करत करत अभ्यास से जड़मति होत सुजान।" इसी प्रकार यह भी कहा गया है, अभ्यास मनुष्य को दक्ष (कुशल) बनाता है।" (Practice makes a man Perfect) जेम्स का विचार है—

"Keep the faculty of effort alive in you by a little gratuitous (free) exerciee every day.'; —James

बुरी आदतों के तोड़ने के नियम
(Rules of Breaking the Bad Habits)

(१) नवीन प्रणाली को शीघ्र ही शुरू करना (Atonce to begin the new system) :—जब व्यक्ति कोई बुरी आदत छोड़ने की नवीन प्रणाली को अपनाने का विचार करे तो उसे चाहिये कि इसे शीघ्र ही शुरू कर दे। ऐंजिल के शब्दों में, "नई प्रणाली शीघ्र ही शुरू कर देना चाहिए, सुविधाजनक अवसर की प्रतिक्षा मत कीजिये। यदि परिणाम शरीर के लिये खतरनाक होने की सम्भावना नहीं है, तो आदत को पूर्णरूपेण छोड़ दीजिए, धीरे-धीरे करके नहीं।"

(२) किसी दूसरी आदत का स्थानापन्न करना (Substitution of other Habit): —यदि हम में कोई खराब आदत पड़ गई है तो दूसरी आदत डालकर उसका स्थानामन्न कर देना चाहिए। जैसा कि ऐंजिल ने कहा है, "केवल बुरी आदत को तोड़ने का प्रयास मत कीजिए। यदि सम्भव हो सके तो किसी दूसरी आदत को उसका स्थानापन्न कर दीजिए।" जैसा कि यदि किसी आदमी की मादक द्रव्यों को पीने की आदत बन गई हो तो इसके स्थान पर उसे गर्म दूध या चाय के पीने की आदत डालना चाहिए। फलस्वरूप मादक द्रव्यों के पीने की आदत अपने आप छूट जायगी।

(३) वातावरण परिवर्तन विधि (Changing Environment Method) :—दरअसल में हममें जो बुरी आदतें पड़ जाती हैं उनका कारण हमारा दूषित वातावरण है और यदि हमें अच्छे वातावरण में रक्खा जाय तो बुरी आदतों के पड़ने की सम्भावना कम करती है। अगर किसी व्यक्ति में कोई बुरी आदत पड़ गई है तो उसे ऐसे वातावरण में रखना चाहिए जिसमें कि उस आदत के पड़ने की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कम संभावना हो। उदाहरण के लिए किसी बालक को जिसमें धूम्रपान की आदत पड़ गई है, ऐसे वातावरण में रखा जाय जहाँ पर कोई धूम्रपान न करता हो तो धूम्रपान की आदत जाती रहेगी।

(४) थकावट विधि (Fatigue Method)—यह विधि भी बुरी आदतों को तोड़ने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। इस विधि में बालक अथवा व्यक्ति से वही कार्य निरन्तर करने को कहा जाता है जिसके करने की उसे आदत पड़ गई है। परिणामस्वरूप वह करते-करते थक जायगा और अपनी आदत को छोड़ देगा। उदाहरण के लिए यदि एक बालक अपना सिर खुजलाता रहा है और यदि उसे कोई यह निर्देश दे दे कि तुम नित्य प्रति १० बजे से लेकर ४ बजे तक अपना सिर खुजलाया करो। इसका परिणाम यह होगा कि बालक को खुजलाते-खुजलाते थकावट अनुभव होने लगेगी और फलस्वरूप वह खुजलाना बन्द कर देगा। धीरे-धीरे ऐसी अवस्था आयेगी कि उसमें खुजलाने की आदत जाती रहेगी।

(५) आत्म निर्देश विधि (Auto-Suggestion Method)—इस विधि में बालक स्वयं अपने आपको निर्देश देता है कि अमुक आदत से हमें यह नुकसान होता है अतः हमें इसको छोड़ देना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि कोई बालक धूम्रपान करता है और यदि वह अपनी इस आदत को छोड़ना चाहता है तो उसे चाहिये कि वह अपने को निर्देश दे कि धूम्रपान बहुत बुरी चीज है, इससे हमारे पैसे तो जाते ही हैं साथ-साथ हमारे फेफड़े भी खराब हो जाते हैं, फलस्वरूप हमें धूम्रपान करना छोड़ देना चाहिये। इस प्रकार जब बालक अपने आपको निर्देश देता है तो उसकी धूम्रपान करने की आदत चली जाती है। इस प्रकार आत्म-निर्देश-विधि (Auto-Suggestion Method) बहुत ही लाभप्रद सिद्ध होती है।

(६) क्रमिक त्याग विधि (Regular Giving-up Method)—क्रमिक त्याग विधि वह है जिसमें व्यक्ति अपनी आदत को एकदम न तोड़कर धीरे-धीरे तोड़ता है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति दिन भर में २ डिब्बी सिगरेट पीता है। यदि धीरे-धीरे कम मात्रा में सिगरेट पीने का प्रयास करता रहता है तो एक समय ऐसा आता है कि वह सिगरेट का पीना बिल्कुल त्याग देता है।

(७) अभावात्मक अभ्यास विधि (Negative Practice Method)—इस विधि के प्रतिपादक डनलप (Dunlop) महोदय कहे जाते हैं। 'अभावात्मक अभ्यास विधि' (Negative Practice Method) के अनुसार व्यक्ति को उसी कार्य को बराबर अभ्यास के लिए कहा जाता है जिसको कि वह छोड़ना चाहता है। उदाहरण के लिए एक किसी व्यक्ति को झूठ बोलने की आदत बन गई है तो उस व्यक्ति से यह कहा जाय कि तुम झूठ बोलने का अभ्यास करो। इसका परिणाम यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होगा कि उस व्यक्ति की भूठ बोलने की आदत जाती रहेगी। वह कैसे ? इसका मनोवैज्ञानिक कारण है। पहले तो वह बिना ध्यान दिए हुए असावधानी से भूठ बोला करता था। परन्तु जब वह ध्यान देकर सावधानी पूर्वक भूठ बोलना प्रारम्भ कर देता है तो उसका ध्यान इसी ओर बना रहता है परिणामस्वरूप वह भूठ बोलने से सावधान हो गया एवं इस असावधानी के कारण भूठ बोलने पर नियन्त्रण कर उसने भूठ बोलना बिल्कुल बन्द कर दिया। इस प्रकार अभावात्मक अभ्यास के द्वारा उसकी भूठ बोलने की आदत जाती रही।

(८) बुरी आदत का परिष्कार (Eradication of Bad Habit)—यदि हम बुरी आदत को छोड़ना चाहते हों तो उसका परिष्कार कर देना बहुत ही उपयुक्त सिद्ध होता है। उदाहरण के लिए यदि किसी विद्यार्थी को परनिन्दा करने की बुरी आदत पड़ गई हो तो उसे चाहिए कि वह निन्दा करने के बजाय आलोचना करना प्रारम्भ कर दे। इसका परिणाम यह होगा कि व्यक्ति की परनिन्दा करने की बुरी आदत जाती रहेगी।

(९) अप्रत्यक्ष उपचार विधि (Indirect Treatment Method)—बहुत-सी बुरी आदतें अप्रत्यक्ष उपचार विधि द्वारा तोड़ी जा सकती है। इस विधि में शिक्षक या अन्य बड़े लोग विद्यार्थी अथवा व्यक्ति के सम्मुख महान आदर्श प्रस्तुत करते हैं एवं उन्हें उच्चकोटि के आदर्शों के प्रति झुकाते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बालक पर अप्रत्यक्ष रूप से आदर्शों एवं उद्देश्यों का प्रभाव पड़ता है एवं बालक बुरी आदत को त्याग देता है।

(१०) पुरस्कार एवं दंड विधि (Reward and Punishment Method)—पुरस्कार एवं दण्ड (Reward and Punishment) विधि का भी आदतों के निराकरण करने में बहुत महत्व है। यदि किसी बालक में कोई बुरी आदत पड़ गई हो तो उसे यह कहना चाहिए कि यदि वह ऐसा कार्य करेगा तो उसे दण्ड दिया जायगा एवं यदि वह ऐसा कार्य नहीं करेगा तो उसको पारितोषिक प्रदान किया जायगा। यदि बालक कहने मात्र में अपनी बुरी आदत न त्यागे तो दण्ड एवं पुरस्कार विधि को कार्य रूप में परिणित कर देना चाहिए परन्तु यह सर्वदा ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ तक बने दण्ड कम देना चाहिए एवं पुरस्कार अधिक।

जीवन में अच्छी आदतों की उपयोगिता
(Utility of Good Habits in Life)

व्यक्ति के जीवन में अच्छी आदतों से निम्नलिखित लाभ हैं—

(१) जब हममें किसी कार्य को करने का आदत बन जाती है तो वह कठिन होते हुए भी सरल प्रतीत होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) जब हम सीखी हुई बातों को आदत का रूप दे देते हैं तो वे बहुत काल तक स्थिर बनी रहती हैं।

(३) आदत के ही कारण व्यक्ति अच्छे और दोनों प्रकार के वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेता है। यही कारण है कि गरीब लोगों को अपनी गरीबी में ही आनन्द प्राप्त होता है।

(४) आदत अथवा अभ्यास से जीवनशक्ति (Energy) की बहुत बचत हो जाती है। हममें जिन कार्यों को करने की आदत बन जाती है उनमें हमको ध्यान नहीं देना पड़ता है। फलस्वरूप हम इनको करते हुए अन्य कार्य भी कर सकते हैं। प्रायः देखा जाता है कि स्कूल की लड़कियाँ सूटर बुनती रहती हैं और अध्यापकों के प्रवचन सुनती रहती हैं। यह आदतों का ही प्रताप है।

(५) आदतों के निर्माण से मनुष्य का नियमित जीवन बीतने लगता है। यही कारण है कि बहुत से विद्यार्थी नित्य प्रति सुबह उठकर अध्ययन प्रारम्भ कर देते हैं।

(६) आदतों के कारण ही व्यक्ति की किसी कार्य को करने में रुचि हो जाती है। यही कारण है जब बालक की पाठशाला जाकर नित्य प्रति अध्ययन करने की आदत बन जाती है तो उसकी इस कार्य को करने में रुचि बनी रहती है।

(७) आदतों के पड़ने के कारण व्यक्ति किसी कार्य को शीघ्र ही कार्यान्वित करने में कुशल हो जाता है। उदाहरण के लिए आदत के ही कारण व्यक्ति जल्दी-जल्दी टाइप करने में समर्थ हो जाता है।

(८) आदतों के कारण व्यक्ति में क्षमता एवं सहनशीलता आ जाती है। डाक्टरों को रोगियों को देखने की आदत बन जाती है फलस्वरूप वे रक्त से सने हुए रोगी को भी देखने से नहीं घबराते हैं।

(९) आदतों के पड़ने के कारण व्यक्ति भूलें भी कम करने लगता है यही कारण है कि व्यक्ति ज्योंही वह किसी स्थान को छोड़ता है त्योंही जूता का साथ ग्रहण कर लेता है।

(१०) आदतों के पड़ने के ही कारण बालक का शारीरिक, संवेगात्मक एवं मानसिक विकास अच्छी तरह से होता है।

(११) आदतों का महत्व चरित्र निर्माण में भी बहुत है। जिन लोगों में अच्छी आदतें पड़ जाती हैं उनका चरित्र भी अच्छा होता है। किसी विद्वान् ने तो यहाँ तक कहा है "चरित्र आदतों का संगठन है।"

"Character is the bundle of nabits."

—An Eminent Scholar.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में व्यक्ति की क्रियायें दो प्रकार की होती हैं—(१) ऐच्छिक क्रियायें तथा (२) अनैच्छिक क्रियायें। आदत वह अर्जित व्यवहार (Acquired behaviour) है जिसमें किसी कार्य को करने का स्थायी ढंग निहित होता है। **आदतों की मुख्य विशेषतायें**—(१) सरलता एवं सुविधा (२) एकरूपता (३) रोचकता (४) शीघ्रता (५) यथार्थता अथवा प्रतिपन्नता (६) ध्यान का अभाव एवं (७) परिवर्तन में विरोध। आदतों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जाता है परन्तु हमें यह समझ लेना चाहिए कि कुछ आदतें अच्छी होती हैं एवं कुछ बुरी। **आदत निर्माण के नियम**—(१) संकल्प की दृढ़ता (२) क्रियात्मकता (३) संलग्नता एवं (४) अभ्यास। **बुरी आदतों को तोड़ने के नियम**—(१) नवीन प्रणाली को शीघ्र ही शुरू करना (२) किसी दूसरी आदत का स्थानापन्न करना (३) वातावरण परिवर्तन (४) थकावट विधि (५) आत्म-निर्देश-विधि (६) क्रमिक त्याग विधि (७) अभावात्मक अभ्यास विधि (८) बुरी आदतों का परिष्कार (९) अप्रत्यक्ष उपचार विधि एवं (१०) पुरस्कार एवं दण्ड विधि। हमें आदतों के सम्बन्ध में इतना और जान लेना चाहिए कि हम इनके पूरे गुलाम न हो जायें। इसी भावना से प्रेरित होकर महान् शिक्षाशास्त्री रूसो (Rousseau) ने लिखा है कि "मैं इमाइल को केवल किसी चीज की आदत निर्माण न करने की शिक्षा देता हूँ" (The only habit I would teach him (Emile) is the habit of forming none) हमको चाहिये कि हम बुरी आदतों को न डालकर केवल अच्छी आदतों को डालें। आदतों का महत्व प्रस्तुत करते हुए विद्वानों ने लिखा है—

"Habit is the enormous fly wheel of society its most conservative agent."

—**James.**

"Personality is clothed in habits. Habits are the very garment of soul."

—**Kipper.**

"Habit is not only second nature it is ten times nature."

—**Duke of Welington.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३४

थकान के लक्षण, कारण एवं निवारण

[Symptoms, Causes and Cure of Fatigue]

प्रश्न संख्या—३४

थकान का स्वरूप प्रस्तुत करते हुए उसके प्रकार, लक्षण एवं कारणों को स्पष्ट कीजिए। थकान दूर करने के कौन-कौन से उपाय हैं?

Discuss the nature, kinds, symptoms and causes of fatigue. What are the important measures for reducing fatigue ?

भूमिका (Introduction)

प्राय: लोगों को यह धारणा रहती है कि जब किसी व्यक्ति की किसी कार्य को करने में रुचि (Interest) नहीं रहती है तो उसका उस कार्य को करने में ध्यान (Attention) केन्द्रित नहीं होता है। परन्तु मनोवैज्ञानिक परीक्षणों से यह पता लगता है कि ध्यान न लगने का कारण केवल रुचि ही नहीं वरन् थकान (Fatigue) भी है। इस प्रश्न में हम थकान के सम्बन्ध में अच्छी तरह से जानकारी प्राप्त करने के लिए थकान का स्वरूप (Nature of Fatigue), थकान के प्रकार एवं उसके लक्षण (Kinds and Symptoms of Fatigue), थकान के कारण (Cause of Fatigue) एवं थकान दूर करने के उपाय (Measures for Reducing Fatigue) प्रस्तुत करेंगे।

थकान का स्वरूप (Nature of Fatigue)

कार्य करने के कारण कार्य करने की योग्यता अथवा कुशलता में कमी आ जाना थकान है।

प्राय: भिन्न-भिन्न विद्वानों ने थकान का अलग-अलग अर्थ प्रस्तुत किया है। **फ्रीमैन (Freeman)** नामक मनोवैज्ञानिक का कथन है कि थकान व्यक्ति की ऐसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अवस्था है जिसमें उसके तन्तु प्रतिक्रिया करना बन्द कर देते हैं एवं उसके मन में पूर्णतः शिथिलता आ जातीं है। स्टार्च (Starch) महोदय का कथन है कि रुचि एवं इच्छा कम होने की अवस्था को थकान कहते हैं। ड्रिल (Drill) महोदय का विचार है कि थकान व्यक्ति की वह अवस्था है जिसमें कि उसका शारीरिक सामंजस्य (Bodily Adjustment) नहीं रह जाता है। थकान को समझने के लिए हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति के पास कार्य करने की योग्यता अथवा कुशलता (Efficiency) सीमित मात्रा में होती है। जब व्यक्ति कार्य करता है तो उसके प्रत्येक प्रयास (Trial) में उसकी कुशलता में कमी आती जाती है। जितनी कुशलता व्यक्ति में होती है उसके अनुसार वह अच्छी तरह से काम करता चला जाता है परन्तु ज्योंही कार्य करते-करते उसकी कुशलता में कमी आ जाती है त्योंही वह थकान का अनुभव करना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार थकान की परिभाषा को बोरिंग एवं अन्य विद्वानों के शब्दों में प्रस्तुत करते हुये हम कह सकते हैं, **"लगातार कार्य करते-करते कुशलता में कमी आ जाना थकान है।"**

"Fatigue is best defined as reduction in efficiency resulting from continuous work." **—Boring and Others.**

थकान की कुछ अन्य परिभाषायें :—

"Fatigue usually implies dissatisfaction and that physical conditions varying within ordinary limits have an insignificant effect upon the efficiency of the worker........"

—Committee on Work in Industry of the National Research Council.

"Fatigue means diminished productivity, efficiency or ability to carry on work because of previous expenditure of energy in doing work." **—James Drever.**

"Fatigue is primarily a matter of chemical changes in the muscle itself or the potential energy available for the muscular contraction." **—J. Tiffin.**

"Fatigue is a state in which the organs are exhausted and repuire rest." **—An Eminent Scholar.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थकान के प्रकार एवं उसके लक्षण
(Kinds and Symptoms of Fatigue)

[१] शारीरिक थकान (Bodily Fatigue)

(अ) शारीरिक थकान का अर्थ (Meaning of Bodily Fatigue)— लगातार कार्य करते-करते जब शरीर के कुछ या सम्पूर्ण अवयव कुशलता (Efficiency) की कमी के कारण कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं तो व्यक्ति की इस अवस्था की थकान को शारीरिक थकान (Bodily Fatigue) कहते हैं। उदाहरण के लिए व्यक्ति जब बहुत समय तक खुदाई करता है तो एक समय ऐसा आता है जब कि उसके अवयव कार्य करने में असमर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार की थकान को शारीरिक थकान कहते हैं।

(ब) शारीरिक थकान के लक्षण (Symptoms of Bodily Fatigue)

(१) यदि व्यक्ति का कोई विशेष अवयव कार्य करते-करते थक जाता है तो उससे फिर कार्य नहीं हो पाता है।

(२) थकान होने से व्यक्ति को बारम्बार जम्हाइयाँ आने लगती हैं।

(३) व्यक्ति का शरीर संतुलित दशा में नहीं रहता है।

(४) व्यक्ति के चेहरे में फीकापन आ जाता है।

(५) व्यक्ति को शक्ति अथवा कुशलता का अभाव प्रतीत होने लगता है।

(६) व्यक्ति की आँखें बार-बार मुँदने लगती हैं।

(७) खड़े होने एवं बैठने का आसन बिगड़ने लगता है।

(८) व्यक्ति को शरीर का भारीपन अनुभव होने लगता है।

(९) व्यक्ति कार्य करने के प्रति उदासीनता प्रदर्शित करने लगता है।

(१०) व्यक्ति जिस काम को करने लगता है उस पर उसका ध्यान केन्द्रित नहीं होता है। जिस हथियार से व्यक्ति कोई कार्य करता है वह इधर-उधर पड़ने लगता है।

[२] मानसिक थकान (Mental Fatigue)

(अ) मानसिक थकान का अर्थ (Meaning of Mental Fatigue)— जब कोई व्यक्ति लगातार कोई मानसिक कार्य करता है तो उसकी कुशलता (Efficiency) में कमी आ जाती है परिणामस्वरूप उसका मस्तिष्क कार्य करने में असमर्थता प्रकट करता है। उदाहरण के लिए जब कोई व्यक्ति बहुत रात्रि तक पढ़ता है तो थकान का अनुभव होने लगता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ब) मानसिक थकान के लक्षण (Symptoms of Mental Fatigue)

(१) व्यक्ति जिस मानसिक कार्य को सम्पादित कर रहा होता है उस कार्य के करने के प्रति अरुचि प्रकट करने लगता है।

(२) व्यक्ति विषय को ठीक-ठीक समझने में असमर्थ हो जाता है।

(३) व्यक्ति को मस्तिष्क का भारीपन अनुभव होने लगता है।

(४) कभी-कभी व्यक्ति साधारण सी बात में क्रोधित हो पड़ता है।

(५) व्यक्ति का ध्यान यहाँ-वहाँ बँट जाने लगता है।

(६) व्यक्ति अधिक गल्तियाँ करने लगता है।

(७) व्यक्ति की कलम अथवा पुस्तक इधर-उधर होने लगती है।

(८) शारीरिक थकान की भाँति मानसिक थकान में भी व्यक्ति को जम्हाई आने लगती है।

(९) व्यक्ति के चेहरे की नशों में परिवर्तन अनुभव होने लगता है।

(१०) व्यक्ति की विषय परिवर्तन करने की भी तीव्र इच्छा हो जाती है।

थकान के कारण (Causes of Fatigue)

[अ] थकान का शारीरिक कारण "कार्बोनिक अम्ल"

(Physio-Chemical Cause of Fatigue-"Carbonic Acid)

(क) शारीरिक थकान का शारीरिक रासायनिक कारण—जब व्यक्ति कार्य करता है तो उसकी मांसपेशियों में गति होती रहती है। इस गति के परिणाम-स्वरूप उसकी मांसपेशियों में कुछ रासायनिक परिवर्तन होने लगते हैं। दूसरे शब्दों में गति के पूर्व मांसपेशियों की प्रतिक्रिया क्षारीय रहती है, परन्तु ज्योंही ये गति करना आरम्भ कर देती हैं तो धीरे-धीरे उसकी प्रतिक्रिया अम्लीय (Acid) हो जाती है। इन परिवर्तनों के कारण व्यक्ति के शरीर में शक्ति एवं गर्मी कार्य के रूप में दिखाई पड़ती है। इस शक्ति एवं गर्मी के उत्पन्न हो जाने के कारण **कार्बोनिक अम्ल** (Corbonic Acid) उत्पन्न हो जाता है। यह कार्बोनिक अम्ल रुधिर में मिलकर शरीर में थकान (Fatigue) उत्पन्न कर देता है। इस प्रकार वह शारीरिक थकान उत्पन्न होने का **शारीरिक-रासायनिक** (Physio-chemical) कारण है।

(ख) मानसिक थकान का शारीरिक रासायनिक कारण—जिस प्रकार शारीरिक थकान रासायनिक क्रिया (Physio-Chemical Activity) के कारण उत्पन्न होती है उसी प्रकार मनःशारीरिक (Psycho-Physical) प्राणी अर्थात् व्यक्ति की मानसिक थकान (Mental Fatigue) भी शारीरिक रासा-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

-यनिक क्रिया के कारण उत्पन्न होती है। वह कैसे ? हम जानते हैं कि व्यक्ति की समस्त मानसिक क्रियाओं (Mental activities) का केन्द्र बृहत् मस्तिष्क (Cerebrum) होता है। जिस प्रकार शारीरिक कार्य करते-करते मांसपेशियों में परिवर्तन होने लगते हैं उसी प्रकार मानसिक कार्य करते-करते बृहत् मस्तिक में स्थिर कारटेक्स (भूरे रंग का एक पदार्थ) में भी परिवर्तन होने लगते हैं। इस दृष्टि-कोण से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि जब व्यक्ति के मस्तिष्क में कार्बोनिक अम्ल (Carbonic Acid) उत्पन्न हो जाता है तो उसे मानसिक थकान (Mental Fatigue) अनुभव होने लगती है।

[ब] थकान के सामान्य कारण (General Causes of Fatigue)

(१) रुचिपूर्ण कार्य का अभाव (Lack of Interesting Work)—जब व्यक्ति को कोई ऐसा कार्य करना पड़ता है जिसमें उसकी रुचि नहीं होती है तो उसे उस कार्य के करने में शीघ्र ही थकान अनुभव होने लगती है।

(२) भौतिक वातावरण (Physical Environment)—यदि किसी स्थान के वातावरण में गर्मी अथवा सर्दी की अधिकता, स्वच्छ हवा का अभाव, प्रकाश का अभाव, शोरगुल का अधिक होना, गन्दगी होना, निश्चित समय का अभाव आदि बातों में कुछ या सम्पूर्ण बातें होती हैं तो व्यक्ति को उस वातावरण में कार्य करने से शीघ्र थकान का अनुभव आरम्भ हो जाता है।

(३) कुशलता के अनुसार काम न मिलना (Lack of the Work according to Efficiency)—यदि किसी व्यक्ति को उसकी कुशलता (Efficiency) से अधिक कुशलता वाला कार्य मिल जाता है तो थोड़ी देर कार्य करने में ही उसको थकावट का अनुभव होने लगता है।

(४) खड़े अथवा बैठने का आसन अनुपयुक्त होना (Unsuitable Exposure of Standing and Sitting)—जब काम करने वाले व्यक्ति का खड़े होने अथवा बैठने का आसन अनुपयुक्त होता है तो उसे थकान अनुभव होने लगती है। उदाहरण के लिए जब किसी बालक को ऐसी टेबुल प्रयोग करनी पड़ती है जिसमें कि उसे बहुत झुकना पड़ता है तो उसे शीघ्र ही थकान अनुभव होने लगेगी।

(५) हथियारों अथवा सामग्रियों का बुरा प्रबन्ध (Bad Management of Tools and Appartus)—जब हथियारों अथवा सामाग्रियों का बुरा प्रबन्ध होता है तो व्यक्ति को शीघ्र ही थकावट आ जाती है। उदाहरण के लिए यदि किसी बालक को पढ़ाने के लिए पुस्तकों को यहाँ-वहाँ लेने जाना पड़ता है तो उसमें थकान आना स्वाभाविक हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

थकान दूर करने के उपाय

(Measures for Reducing Fatigue)

(१) कार्य अवधि का कम करना (Decreasing of Working Duration)— थकान दूर करने का सबसे प्रथम उपाय यह है कि कार्य अवधि को घटा दिया जाय । बहुत सी फैक्टरियों में जिनमें कार्य अवधि घटा दी गई है उनमें उत्पादन अधिक अच्छा हुआ है एवं इसके साथ-साथ उत्पादन अधिक मात्रा में भी हुआ है ।

(२) शुद्ध वायु सेवन करना (Use of Fresh Air)—थकान के कारणों को स्पष्ट करते हुये हमने कहा था कि कार्बोनिक अम्ल (Carbonic Acid) के रुधिर एवं कारटेक्स में मिल जाने के कारण क्रमशः शारीरिक एवं मानसिक थकान उत्पन्न होती है । यदि शुद्ध वायु का सेवन किया जाय तो उसका ओषजन (Oxygen) रुधिर में प्रवेश हो जाता है एवं फेफड़ों के द्वारा वायु में मिलकर कार्बोनिक अम्ल बाहर निकल आता है । फलस्वरूप व्यक्ति की थकान दूर हो जाती है ।

(३) पौष्टिक भोजन (Nutritive Food)—यदि व्यक्ति पौष्टिक भोजन का सेवन करता है तो उसे थकान का अनुभव बहुत देर में होता है । इसके साथ-साथ यदि थके हुए मनुष्य को पौष्टिक भोजन दिया जाता है तो उसकी थकान शीघ्र ही दूर हो जाती है । थकान दूर करने के लिए घी, शक्कर युक्त पदार्थ, समय से मिलने वाला भोजन आदि बहुत लाभदायक होते हैं । शक्कर युक्त पदार्थों के सेवन करने से 'ग्लाइकोजन' (Glycogen) की मात्रा में अधिकता हो जाती है जिससे व्यक्ति की थकान दूर हो जाती है ।

(४) बीच-बीच में विश्राम देना (Interval)—यदि किसी कार्य को करने में उसके कार्य-काल के बीच-बीच में कार्यकर्त्ताओं को थोड़ा-थोड़ा विश्राम दिया जाता रहे तो उन्हें थकान का अनुभव करने की कम सम्भावना रहती है ।

(५) कार्य-परिवर्तन (Changing of Work)—कार्य-परिवर्तन भी थकान दूर करने का एक अच्छा उपाय है । जैसा कि हम प्रायः देखा करते हैं कि जब हम बहुत समय तक पढ़ते रहते हैं तो हमारा मन दूसरा कार्य जैसे—समाचार-पत्र पढ़ना अथवा संगीत पर बैठना-करने को हो जाता है । मानसिक कार्य को करने के बाद शारीरिक कार्य एवं शारीरिक कार्य को करने के बाद मानसिक कार्य करने से थकान का अनुभव बहुत कम होता है । कार्य परिवर्तन का महत्व प्रस्तुत करते हुए नैपोलियन ने तो यहाँ तक कहा था "कार्य परिवर्तन करना आराम सदृश्य है ।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) आदत निर्माण करना (Forming the Habit)—यदि हम बहुत से कार्यों के करने की आदत (Habit) बना लें तो हमें उन कार्यों के करने में थकान का अनुभव बहुत कम होता है। अतः आदत निर्माण भी थकान दूर करने का एक अच्छा उपाय है।

(७) रुचि उत्पन्न करना (To Create Interest)—यदि व्यक्ति को किसी कार्य को करने की रुचि (Interest) होती है तो उसे उस कार्य को करने में थकान का कम अनुभव होता है। थार्नडाइक (Thorndike) महोदय ने थकान के सम्बन्ध में विभिन्न प्रयोगों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि रुचि के होने पर व्यक्ति १२ घंटे किसी कार्य को आसानी से कर सकता है। हक्सले (Huxley) नामक मनोवैज्ञानिक का विचार है कि रुचिपूर्वक कार्य करने से १६ घंटे भी कार्य आसानी से किया जा सकता है।

(८) निद्रा तथा आराम करना (Sleeping and Rest)—निद्रा एवं आराम का भी थकान दूर करने में बहुत अधिक महत्व है क्योंकि इसमें 'टौक्सिन्स' (Toxings) दूर हो जाता है। थकान व्यक्ति को ताजगी द्वारा स्फूर्ति अनुभव करने लगता है।

(९) शीघ्र कार्य सम्पादित करना (To do work atonce)—व्यक्ति को चाहिए कि वह कोई कार्य करने का निश्चय करे तो जितनी जल्दी सम्भव हो सके कर डालना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से उसे थकान का अनुभव कम होने की सम्भावना रहती है। इस सम्बन्ध में यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जो कार्य-क्षमता के अनुकूल हो उसी को करना चाहिए नहीं तो थकान एवं निराशा दोनों हाथ लगने की सम्भावना रहती है।

(१०) स्वास्थ्यवर्द्धक एवं मनोरंजनपूर्ण वातावरण (Healthy and Recreational Environment)—थकान दूर करने का अथवा थकान न अनुभव करने का दूसरा उपाय है—स्वास्थ्यवर्द्धक एवं मनोरंजनपूर्ण वातावरण की व्यवस्था। इसके लिए प्रबन्धकों को चाहिए कि वे आवश्यक प्रकाश, शुद्ध वायु, शांत वातावरण, खड़े होने अथवा बैठने का उपयुक्त स्थान, मूत्रालय, शौचालय, पौषालय एवं मनोरंजन के लिए रेडियो आदि की व्यवस्था करें।

उपसंहार (Conclusion)

सारांश यह है कि कार्य करने के कारण कार्य करने की योग्यता अथवा कुशलता में कमी आ जाना थकान है। थकान दो प्रकार की होती है—शारीरिक एवं मानसिक। थकान उत्पन्न होने के कारणों को हम दो भागों में विभाजित कर सकते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैं, प्रथम–भौतिक कारण, और द्वितीय सामान्य कारण। भौतिक कारण के अनुसार जब व्यक्ति के शरीर में कार्बोनिक अम्ल उत्पन्न हो जाता है तो वह थकान अनुभव करने लगता है। सामान्य कारण के अन्तर्गत अनेक कारण हैं। जैसे रुचिपूर्ण कार्य का अभाव, भौतिक वातावरण, कुशलता के अनुसार कार्य न मिलना, खड़े होने अथवा बैठने का आसन अनुपयुक्त होना एवं हथियारों अथवा सामग्रियों का दुरुपयोग। थकान नापने की तीन विधियाँ है आक्सीजन का खर्च, माँसपेशीय तनाव एवं चर्म अवरोध। थकान दूर करने के मुख्य उपाय हैं—(१) कार्य अवधि को कम करना, (२) शुद्ध वायु सेवन करना, (३) पौष्टिक भोजन, (४) बीच-बीच में विश्राम देना, (५) कार्य परिवर्तन, (६) आदत निर्माण करना, (७) रुचि उत्पन्न करना, (८) निद्रा अथवा आराम करना, (९) शीघ्र कार्य सम्पादित करना एवं (१०) स्वास्थ्यवर्धक तथा मनोरंजनपूर्ण वातावरण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३५

सवेग, भाव एव स्थाईभाव

[Emotion, Feeling and Sentiment]

प्रश्न-संख्या—३५

संवेग के स्वरूप, विशेषतायें एवम् प्रकारों की विवेचना कीजिए। संवेग, भाव तथा स्थाई भाव से किस प्रकार भिन्न है।

Discuss the nature, characteristics and kinds of emotion. How does emotion differ from feeling and sentiment ?

भूमिका (Introduction)

यदि हम व्यक्ति के अभियोजनात्मक व्यवहार का ध्यानपूर्वक अवलोकन करें तो हमें यह प्रतीत होता है कि उसका व्यवहार अनेक प्रकार का होता है। मनोवैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि व्यक्ति का व्यवहार तीन तरह का होता है ज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (Affective) एवं क्रियात्मक (Conatize)। परन्तु इसका यह अर्थ न लगा लेना चाहिए कि इन तीनों प्रकार के व्यवहारों का एक दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। वास्तविकता तो यह है कि ये तीनों प्रकार के व्यवहार एक दूसरे पर आश्रित हैं। यहाँ पर हमारा सम्बन्ध केवल भावात्मक व्यवहार से है। भावात्मक व्यवहार का सम्बन्ध संवेग (Emotion) भाव (Feeling) तथा स्थाईभाव (Sentiment) इन तीनों से है। अतः इनको समझने के लिए पहिले हम संवेग का स्वरूप (Nature of Emotion), संवेग की विशेषतायें (Characteristics of Emotion), संवेग में शारीरिक परिवर्तन (Bodily changes in Emotion), तथा संवेग के प्रकार (Kinds of Emotion) प्रस्तुत करेंगे और उसके पश्चात् भाव एवं संवेग में अन्तर (Difference between Feeling and Emotion) तथा संवेग एवं स्थाई भाव में अन्तर (Difference between Emotion and Sentiment) स्पष्ट करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवेग का स्वरूप

(Nature of Emotion)

[अ] संवेग का अर्थ (Meaning of Emotion)

संवेग शब्द आंग्ल भाषा के 'इमोशन' (Emotion) शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। 'इमोशन' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'एमोवेयर' (Emovere) नामक शब्द से हुई है जिसका अर्थ है शरीर को हिला देना। इस प्रकार संवेग शरीर को हिलाने या उत्तेजित करने वाली प्रक्रिया है। इससे स्पष्ट है कि संवेग एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार की क्रियायें संम्मिलित है। इस आधार को सामने रखते हुये मनोवैज्ञानिकों ने विभिन्न प्रकार की परिभाषायें प्रस्तुत की हैं। कुछ मनोवैज्ञानिकों का कथन है संवेग एक **चेतन अनुभव** (Conscious Experience) है जिसमें अनेक प्रकार की शारीरिक क्रियायें सम्मिलित रहती हैं। इस परिभाषा में शारीरिक क्रियाओं की अपेक्षा चेतन अनुभव को अधिक महत्व दिया है। कुछ मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि **शारीरिक क्रियाओं की चेतन अनुभूति** (Conscious awareness of the bodily activities) को संवेग कहते हैं। इस परिभाषा में चेतन अनुभूति की अपेक्षा शारीरिक क्रियाओं को अधिक महत्व दिया गया है। जेम्स एवं लेंगे (James and Lange) इसी मत के समर्थक हैं। कुछ अन्य मनोवैज्ञानिकों ने इन दोनों मतों को समन्वित कर संवेग की परिभाषा दी है जैसे कि वुडवर्थ ने लिखा है, **संवेग प्राणी की उत्तेजित अथवा तीव्र अवस्था है** (Emotion is a moved or stirred up state of the organism)। इस परिभाषा की व्याख्या करते हुये उन्होंने स्वयं लिखा है कि संवेग के समय की प्राणी की यह उत्तेजित अथवा तीव्र अवस्था उसको कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। कार्यशीलता के कारण विभिन्न प्रकार के शारीरिक परिवर्तन होते हैं। इस प्रकार इस परिभाषा में प्राणी की मानसिक अवस्था चेतन अनुभव एवं संवेग में होने वाले **आन्तरिक एवं बाह्य परिवर्तन** (Internal and external bodily changes) दोनों को महत्व प्रदान किया गया है। इस प्रकार वुडवर्थ की दी गई संवेग की परिभाषा उचित प्रतीत होती है। संवेग को और अच्छी तरह समझने के लिये यदि उसकी कुछ **मान्यताओं** (Criteria) को प्रस्तुत किया जाय तो अधिक आसानी होगी। सबसे पहले व्यक्ति में संवेग की उत्पत्ति के लिये मनोवैज्ञानिक परिस्थिति का उपस्थिति होना आवश्यक है। मनोवैज्ञानिक परिस्थिति का तात्पर्य ऐसी उत्तेजना के उपस्थिति होने से है जिसके प्रति व्यक्ति प्रक्रिया करने लगता है। उदाहरण के लिये यदि मार्ग में जाते हुये मनुष्य पर कोई जंगली जानवर आक्रमण करता है तो वह व्यक्ति किंकर्तव्य-विमूढ़ हो जाता है एवं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसे भय का अनुभव होने लगता है तथा उसमें आन्तरिक एवं वाह्य शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं। उसके हृदय की गति तीव्र हो जाती है, उसका सम्पूर्ण शरीर कांपने लगता है ऐसी हालत में वह संवेगात्मक व्यवहार (Emotional Behaviour) करने लगता है अर्थात् कहीं छिप जाता है। उपर्युक्त शब्दों के आधार पर संक्षेप में हम कह सकते हैं कि संवेग का तात्पर्य उस मनःशारीरिक (Psycho-physical) प्रक्रिया से है जिसमें एक व्यक्ति किसी मनोवैज्ञानिक या संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण कर उत्तेजित हो उठता है और उस उत्तेजित अवस्था का चेतन अनुभव करते ही उसमें आन्तरिक एवं वाह्य शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं और वह संवेगात्मक व्यवहार करने लगता है। यदि हम संवेग के स्वरूप का विश्लेषण करें तो हमें उसमें निम्नलिखित विशेषतायें या तत्व क्रमशः प्राप्त होते हैं :—

(१) किसी मनोवैज्ञानिक या संवेगात्मक परिस्थिति का उपस्थिति होना।

(२) व्यक्ति द्वारा उसका प्रत्यक्षीकरण करना।

(३) व्यक्ति का उत्तेजित होना।

(४) उत्तेजित अवस्था का चेतन अनुभव करना।

(५) व्हक्ति में अन्तरिक एवं वाह्य शारीरिक परिवर्तन होना।

(६) व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार होने लगना।

[ब] संवेग की परिभाषा (Definition of Emotion)

(१) पी० टी० यंग—संवेग सम्पूर्ण जीव का वह मूलतः मनोवैज्ञानिक तीव्र उद्वेग है जिसमें कि चेतन, अनुभूति, व्यवहार एव जाठरिक क्रियायें सन्निहित रहती हैं।

"Emotion is an acute disturbance of the individual as a whole, psychological in origin, involving behaviour, conscious experience & visceral functioning." —**P. T. Young**

(२) वुडवर्थ—"संवेग जीव शरीर की उत्तेजित अथवा तीव्र अवस्था है। यह अनुभूति को उस रूप में उत्तेजित अवस्था है जिसमें कि वह व्यक्ति को स्वयं प्रतीत होती है। यह पैशिक और ग्रान्थिक क्रिया की गड़बड़ी है जैसा कि वाह्य निरीक्षक को प्रतीत होती है।"

"Emotion is a moved or stirred up state of the organism. It is a stirred up state of feeling. That is the way it appears to the individual himself. It is a distutrbed muscular and glandular activity that is the way it appears to an external observer." —**Woodworth**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संवेग की कुछ अन्य परिभाषायें

,,Emotion is a complex state of the organism involving bodily changes of a widespread character in breathing pulse glands etc and on the mental side, a state of excitement or prturbation marked by strong feeling and usually on impulse towards a definite form of behaviours. **—James Drever.**

"The emotions resemble the affective responses in that both represent general reaction attiudes of the organism and seem to have special biological significance for the organism."

—Boring. Langfield and Weld.

संवेग की विशेषतायें (Characteristics of Emotion)

संवेग के स्वरूप को अच्छी तरह समझ लेने के लिए यह निन्तात आवश्यक होगा कि हम इसकी विशेषताओं की जानकारी प्राप्त कर लें। संवेग की निम्नलिखित विशेषतायें हैं—

(१) संवेग की व्यापकता (Universality of Emotion)—इस व्यापक विश्व के समस्त प्राणियों में संवेग पाया जाता है। हाँ यह अवश्य है कि इसकी प्रवलता हर एक प्राणी में भिन्न-भिन्न होती है। जो व्यक्ति अशिक्षित एवं अस्थिर मन के होते हैं वे संवेग के प्रकाशन में बहुत तीव्र दिखलाई पड़ते हैं परन्तु चिन्तनशील व्यक्ति उनका प्रकाशन कभी-कभी करता है क्योंकि वह उस पर नियंत्रण रखता है। जैसे-जैसे मनुष्य प्रौढ़ हो जाता है। वैसे-वैसे संवेग की प्रवलता कम होती जाती है। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियाँ संवेग का प्रकाशन अधिक करती हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि यद्यपि संवेग सब में पाया जाता है परन्तु उसकी प्रवलता प्रत्येक में अलग-अलग होती है।

(२) वैयक्तिकता (Individuality)—संवेग की दूसरी विशेषता उसकी वैयक्तिकता हुआ करती है। उदाहरण के लिए एक बालक को रोता हुआ देखकर एक व्यक्ति का हृदय दया से इतना ज्यादा पिघल जाता है कि वह स्वयं रोने लगता है। दूसरे व्यक्ति को कुछ दया आ जाती है। तीसरा व्यक्ति उस पर कुछ ध्यान भी नहीं देता है। इस प्रकार संवेग के प्रकाशन में वैयक्तिता होती हैं। इस वैयक्तिकता का कारण प्रत्येक व्यक्ति की संवेगात्मक मनोदशा (Emotional Mood) का भिन्न-भिन्न होना है।

(३) संवेगों का स्थानान्तरण (Transfer of Emotional)—कभी-कभी संवेग स्थानान्तरित हो जाता है। अगर कोई व्यक्ति किसी पर क्रोधित हो रहा है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

और ऐसी अवस्था में दूसरा व्यक्ति उसे समझाना प्रारम्भ कर दे तो वह उस समझाने वाले व्यक्ति के प्रति क्रोध प्रकट कर सकता है। इस प्रकार संवेग में स्थानान्तरण की विशेषता होती है।

(४) संवेगात्मक सम्बन्ध की आवश्यकता (Need of Emotional Relations)—संवेग के लिए किसी वस्तु या व्यक्ति से संवेगात्मक सम्बन्ध का होना परमावश्यक है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति अपनी पत्नी से प्यार करता है। यदि वह अपनी पत्नी के पत्र में दुखद समाचार प्राप्त करता है तो वह संवेग का प्रकाशन करने लगता है क्योंकि पति-पत्नी में पारस्परिक संवेगात्मक सम्बन्ध है।

(५) सुख अथवा दुख के भाव का निहित होना (Inclusion of the feeling of pleasure or Pain)—संवेग में सर्वदा सुख अथवा दुःख का भाव सन्निहित रहता है। उदाहरण के लिये सब व्यक्ति भय (Fear) संवेग का अनुभव करता है तो उसमें दुःख का भाव निहित रहता है। इसी प्रकार यदि कोई वात्सल्य संवेग (Tender Emotion) की अनुभूति करता है तो उसमें सुख का अनुभव होता है।

(६) विचार प्रक्रिया का लोप (Loss of Thinking Process)—जब व्यक्ति संवेगात्मक व्यवहार करना प्रारम्भ करता है तो उसकी विचार करने की प्रक्रिया का प्रायः लोप हो जाता हैं। उदाहरण के लिए जब एक व्यक्ति किसी व्यक्ति पर क्रोध (Anger) प्रकट करता है तो यह अनुचित उचित पर ध्यान नहीं देता है। यहाँ तक कि कभी-कभी क्रोध प्रकट करने वाला व्यक्ति मारने-मरने तक को तैयार हो जाता है।

(७) मूलप्रवृत्तियों से सम्बन्ध (Relation With Instincts)—प्रसिद्ध प्रयोजनवादी मनोवैज्ञानिक मैकडूगल (McDougall) का विचार है कि प्रत्येक संवेग का एक विशेष मूल प्रवृत्ति से सम्बन्ध होता है। दूसरे शब्दों में संवेग की उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है उदाहरण के लिए जिज्ञासा (Curiosity) प्रवृत्ति से आश्चर्य संवेग की उत्पत्ति होती है।

(८) संवेग के समय क्रियात्मक प्रवृत्ति का होना (Creative Tendency in Emotion)—जब व्यक्ति संवेग का अनुभव करता है तो उसकी क्रियात्मक प्रवृत्ति होती है। दूसरे शब्दों में संवेग की अनुभूति के समय व्यक्ति कुछ करने की ओर उन्मुख रहता है। उदाहरण के लिए जब व्यक्ति किसी पर क्रोधित होता है तो उसकी भुजायें फड़कने लगती हैं और वह कुछ करने के लिए तत्पर हो जाता है।

(९) दृढ़ता का होना (Persistency)—प्रायः संवेगात्मक प्रवृत्ति बहुत समय तक बनी रहती है। उदाहरण के लिए जब हम किसी व्यक्ति के प्रति क्रोध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकट करते हैं तो हम देखते हैं। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से हमारी संवेगात्मक दशा का लोप हो जाता है परन्तु यह क्रोध संवेग संवेगात्मक मनोदशा (Mood) के रूप में हम में निहित रहता है और अवसर पड़ने पर हम पुनः उस व्यक्ति पर क्रोध प्रकट करने लगते हैं। इस प्रकार संवेगों में दृढ़ता (Persistency) का गुण उपस्थित रहता है।

(१०) शारीरिक परिवर्तन (Bodily Changes)—संवेगात्मक अनुभूति के समय व्यक्ति में नाना प्रकार के शारीरिक परिवर्तन (Bodily Changes) होने लगते हैं। इन शारीरिक परिवर्तनों का हम पृथक रूप से वर्णन कर रहे हैं।

संवेग में शारीरिक परिवर्तन

(Bodily Changes in Emotion)

जैसा कि हमने संवेग के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए बताया था कि संवेगावस्था में व्यक्ति में वाह्य एवं आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन होते हैं, किन्तु, हमारे सामने यह प्रश्न उठते हैं कि ये वाह्य एवं आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन कौन-कौन से हैं ? और उनका स्वरूप क्या है ? यह समझने के लिए अब हम क्रमशः वाह्य एवं आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन प्रस्तुत कर रहे हैं—

[अ] वाह्य शारीरिक परिवर्तन (External Bodily Changes)

संवेगावस्था में निम्नलिखित वाह्य शारीरिक परिवर्तन होते हैं—

(१) चेहरे की अभिव्यक्ति (Facial Expression) :—संवेगावस्था में जो वाह्यशारीरिक परिवर्तन होते हैं उनमें से मुखमुद्रा में होने वाला परिवर्तन सबसे स्पष्ट होता है। व्यक्ति के चेहरे को देखकर यह आसानी से बताया जा सकता है कि वह दुख, सुख, घृणा क्रोध आदि संवेगों में किस संवेग की अनुभूति कर रहा है। संवेगावस्था में चेहरे की मांसपेशियो में सिकुड़न या फैलाव आ जाता है। प्रायः जब कोई व्यक्ति दुख की अवस्था में होता है तो कहा जाता है दुख के कारण चेहरा लटक गया है। चेहरे का लटकने का तात्पर्य मुख की मांसपेशियों का सिकुड़ना है। इसी प्रकार सुख का संवेग अनुभव करने पर कहा जाता है कि चेहरा खिल उठा है। चेहरे के खिल उठने का तात्पर्य मुख की मांसपेशियों के फैलने से है। क्रोध से भौहें तन जाना भय से आंखें फैल जाना, शर्म के मारे आंखें नीची कर लेना इत्यादि विभिन्न संवेगों की स्थिति में चेहरे में होने वाले परिवर्तन को स्पष्ट करते हैं। यद्यपि संवेगावस्था में होने वाले वाह्य शारीरिक परिवर्तनों पर संस्कृति का भी प्रभाव पड़ता है किन्तु कुछ संवेगों की स्थिति में सभी संस्कृतियों में चेहरे की अभिव्यक्ति एक सी होती है। श्री ल्योनार्डो-द-विन्सी (Leonardo da Vinci) द्वारा निर्मित निम्नलिखित रेखाचित्र

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुःख सुख तथा दुख के विरोधी संवेग अच्छी तरह पहचाने जा सकते हैं—

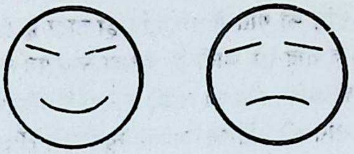

चित्र संख्या ३२-सुख और दुख संवेगों का प्रदर्शन

(२) स्वर अभिव्यक्ति (Vocal Expreesion) :--स्वर में भी प्राणी के संवेगों की अभिव्यक्ति होती है। विभिन्न संवेगों की अभिव्यक्ति में ध्वनि की उच्चता (Pitch) एवं नाद (Loudness) में अन्तर पाया जाता है। जब कोई व्यक्ति प्रसन्नता की अवस्था में होता है तो उसकी आवज मधुर (Sweet) तथा लयात्मक (Rhythmical) हो जाती है और जब वह क्रोधावस्था में होता है तो उसकी आवाज भारी एवं कर्कश हो जाती है। कभी-कभी भाषा द्वारा भी संवेगों की अभिव्यक्ति हो जाती है और उसी तरह के संवेगों की जाग्रति दूसरों में भी हो जाती है। एक पत्नी प्रेम की अनुभुति से प्रेरित होकर अपने पति से वात चीत करती है जिससे पति में भी प्रेम संवेग उत्पन्न हो जाता है। इसी प्रकार क्रोधावस्था में व्यक्ति दूसरों को गाली गलौज करने लगता है जिससे उसे भी दूसरों की गाली गलौज़ का भाजन बनना पड़ता है।

(३) आसनिक अभिव्यक्ति (Postural Expression)—संवेगावस्था में प्राणी के शरीर के आसन में भी कुछ परिवर्तन होते हैं। हाँ यह बात आवश्यक है कि किसी संवेग विशेष की अनुभूति में जो शरीर के आसन में परिवर्तन होते हैं उनमें व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Difference) अवश्य पाई जा सकती है। क्रोधावस्था में कुछ व्यक्ति गालियाँ देते है और कुछ व्यक्ति मारने के लिए हाथ प्रदर्शित कर जोर से गालियां भी देते जाते हैं। प्रेमानुभुति की अवस्था में कुछ समाजों में चुम्बन, आलिगन इत्यादि की क्रियायें होती हैं तो कुछ समाजों में उनकी विशेष संस्कृति के कारण प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए अन्य प्रकार की क्रियायें की जाती हैं। भयानुभुति की अवस्था में कुछ व्यक्ति भागते हैं और कुछ व्यक्ति जड़वत् खड़े हो जाते हैं। हर्षावस्था में कुछ व्यक्ति हाथ और सिर हिलाते हैं तो कुछ व्यक्ति सम्पूर्ण शरीर हिला डालते हैं। इस प्रकार संवेग की अभिव्यक्ति आसनिक अभिव्यक्ति के रूप में होती है।

[ब] आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन (Internal Bodily Changes)

संवेगावस्था में वाह्य शारीरिक परिवर्तनों के साथ-साथ आन्तरिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शारीरिक परिवर्तन भी पाये जाते हैं जो कि निम्नलिखित हैं—

(१) साँस की गति में परिवर्तन (Changes in Respiration)—प्रायः संवेगावस्था में सांस की गति में परिवर्तन हो जाता है। या दो सामान्य अवस्था की अपेक्षा सांस की गति तीव्र हो जाती है अथवा मन्द पड़ जाती है। भय या क्रोध की अवस्था में सांस की गति तीव्र हो जाती है। इसके विपरीत दुख की अवस्था में मन्दी पड़ जाती है। सांस की गति का मापन न्युमोग्राफ (Pneumograph) द्वारा किया जाता है।

(२) नाड़ी की गति में परिवर्तन (Changes in Pulse Rate)—संवेगावस्था में नाड़ी की गति में परिवर्तन होता है। नाड़ी की गति में परिवर्तन मापने के लिए स्फिगमाग्राफ (Sphygmograyh) यन्त्र का प्रयोग किया जाता है।

(३) हृदय की गति में परिवर्तन (Changes in the Heari Beat)—प्रातः संवेग की अवस्था में हृदय की गति तीव्र हो जाती है। किन्तु कभी-कभी कोई संवेग इतना प्रवल होता है कि हृदय की गति मन्द हो जाती है जैसे भय के संवेग में।

(४) रक्त संचार में परिवर्तन (Changes in the Circulation (of Blood--संवेग में रक्त संचार की गति एवं विस्तार में परिवर्तन हो जाता है। अतः अनेक संवेगों की अवस्था में स्वत संचार की गति एवं विस्तार में वृद्धि हो जाती है किन्तु कुछ संवेग जैसे भय की अवस्था में गति धीमी पड़ जाती है।

(५) रक्त चाप में परिवर्तन (Changes in Blood Pressure)----संवेग की अवस्था में रक्त-चाप में परिवर्तन हो जाता है। रक्त चाप के पविर्तन के सम्बन्ध में सर्व श्री लार्सन (Larson) तथा मार्स्टन (Morston) ने अध्ययन किए जिससे उक्त तथ्य की पुष्टि होती है।

(६) रक्त के रासायनिक तत्वों में परिवर्तन (Changes in Blood Chemicals)—कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बिल्ली, कुत्ते, मनुष्य इत्यादि पर संवेगावस्था में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया। उन्होंने अपने इस अध्ययन में रासायनिक तत्वों में परिवर्तन मापने वाले यन्त्रों का प्रयोग किया जिससे पता चला कि संवेग की अवस्था में रक्त के रासायनिक तत्वों में परिवर्तन हो जाते हैं।

(७) पाचन क्रिया में परिवर्तन (Changes in Digestive Function)--संवेगावस्था में पाचन-क्रिया में अत्यधिक परिवर्तन होते हैं। ये परिवर्तन अग्रलिखित तीन प्रकार के होते हैं--(१) या तो पाचन-क्रिया मन्द पड़ जाती है-इस स्थिति में व्यक्ति को कब्ज (Constipation) हो जाता है-(२) या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेज हो जाती है—इस स्थिति में पाचन क्रिया अत्यधिक तेज हो जाती है-(३) या बन्द हो जाती है-इस स्थिति में कब्ज की अत्यधिक शिकायत हो जाती है। इससे स्पष्ट है कि संवेग की अवस्था में पाचन क्रिया पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः खाने के समय व्यक्ति को दुख तथा क्रोध न करना चाहिये।

(८) रस-पाक में परिवर्तन (Metabolic Changes)--बहुत सी संवेगावस्थाओं में रस-पाक में परिवर्तन प्रारम्भ हो जाते हैं। अध्ययनों द्वारा भय एवं क्रोध की अवस्था में रस-पाक में परिवर्तन देखे गये हैं। किन्तु प्रेम की अवस्था में रस-पाक में कोई परिवर्तन नहीं स्पष्ट हुए हैं।

(६) ग्रन्थियों की क्रियाओं में परिवर्तन (Changes in the Activities of the Glands)---संवेग की अवस्था में अनेक ग्रन्थियों जैसे अश्रु ग्रन्थि (Tear Gland), लार ग्रन्थि (Salivary Glands), प्रस्वेद ग्रन्थि (Sweat Glands), इड्रीनल ग्रन्थि (Adrenal Gland) इत्यादि के स्राव में परिवर्तन पाये जाते हैं।

(१०) त्वक प्रतिक्रिया परिवर्तन (Changes in Galvanic Skin Response)---संवेगावस्था में त्वक-प्रतिक्रिया में परिवर्तन पाये जाते है। हाँ यह बात अवश्य है कि विशिष्ट संवेगों के साथ अब तक विशिष्ट शारीरिक परिवर्तनों का सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सका है। रोंगटों के खड़े हो जाने, पसीने की ग्रन्थियों में परिवर्तन होने, शरीर में रोमांच उत्पन्न होने इत्यादि परिवर्तनों द्वारा त्वक प्रतिक्रिया परिवर्तन व्यक्त होते हैं।

संवेगों के प्रकार
(Kinds of Emotion)

[अ] मैकडूगल (McDougall) का वर्गीकरण

(१) भय (Fear) (२) क्रोध (Anger) (३) वात्सल्य (Tender Emotion) (४) घृणा (Disgust) (५) करुणा व दुःख (Distress) (६) आश्चर्य (Wonder) (७) आत्महीनता (Negative Self-feeling) (८) आत्माभिमान (Postive self-feeling) (६) एकाकीपन (Loneliness) (१०) कामुकता (Lust) (११) भूख (Appetite) (१२) अधिकार भावना (Feeling of Ownership) (१३) कृति-भाव (Creativeness) एवं (१४) आमोद (Amusement)।

[ब] गेट्स (Gates) का वर्गीकरण

(१) क्रोध (Anger) (२) भय (Fear) (३) प्रेम (Love) (४) दया (Pity) (५) कामुकता (Sex)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] प्रोफेसर गिलफोर्ड (Guilford) का वर्गीकरण

संवेग (Emotion)

- प्राथमिक संवेग (Primary Emotions)
- द्वितीयक संवेग (Secondary Emotions)
- कृत्रिम संवेग (Pseudo Emotions)
  - स्वार्थी (Ego-centric)
  - परार्थी (Altruistic)
  - बौद्धिक (Intellectual)
  - सौन्दर्यात्मक (Aesthetic)
  - नैतिक (Moral)

(१) प्राथमिक संवेग (Primary Emotions)

ये संवेग बहुत ही शक्तिशाली होते हैं एवं परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण करने के उपरान्त शीघ्र ही उत्पन्न हो जाते हैं। क्रोध, डर आदि इसी प्रकार के संवेग हैं।

(२) द्वितीयक संवेग (Secondary Emotion)

इस प्रकार के संवेग ऐसे संवेग होते हैं जिनमें कि पहले से ही किसी घटना के सम्बन्ध में कल्पना कर ली जाया करती है। इन संवेगों की उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती है।

(३) कृत्रिम संवेग (Pseudo Emotions)

इस प्रकार के संवेगों की उत्पत्ति व्यक्ति के मस्तिष्क में होती है। उनका जन्म ड्रामा अथवा अन्य कलात्मक कार्यों से विशेष रूप से होता है ये संवेग निम्न-लिखित ५ प्रकार के होते हैं—

१. **आत्म केन्द्रित (Ego-Centric)**—अपने को सुरक्षित रखने की अनुभूति एवं भावना।

२. **परार्थी (Altruistic)**—अन्य लोगों के प्रति दया, प्रेम एवं घृणा के भाव की अनुभूति करना।

३. **बौद्धिक (Intellectual)**—किसी पुस्तक का अध्ययन कर मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करना।

४. **सौन्दर्यात्मक (Aesthetic)**—प्राकृतिक चित्र अथवा सुन्दरता को देख कर सन्तोष का अनुभव करना।

५. **नैतिक (Moral)**—धार्मिक बातों को सुनकर अथवा पढ़ कर सन्तोष प्राप्त करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भाव एवं संवेग में अन्तर

(Difference between Feeling and Emotion)

[अ] भाव का अर्थ (Meaning of Feeling)

प्रायः भाव का कई अर्थों से प्रयोग किया जाता है। उदाहरण के लिए साहित्य में उल्लास, प्रसन्नता, हर्ष असन्तोष, चिन्ता, आशा, आश्चर्य, करुण, मोह आदि शब्दों के द्वारा भावों को प्रकट किया जाता है। परन्तु मनोवैज्ञानिकों में भावों का अनेक अर्थों में प्रयोग नहीं होता है। मनोवैज्ञानिक अर्थ के अनुसार सुखद (Pleasant) एवं दुखद (Unpleasant) या रुचिकर एवं अरुचिकर चेतन-अनुभूतियों को भाव (Feelling) कहा जाता है। हम दैनिक जीवन में यह अनुभव करते हैं कि कुछ क्रियायें या उत्तेजनायें हमें अच्छी लगती है और कुछ बुरी। जो वस्तुयें या उत्तेजनायें अच्छी लगती हैं उन्हें हम पसन्द करते हैं। इसके विपरीत जो हमें अच्छी नहीं लगती हैं उन्हें हम पसन्द नहीं करते हैं। इस तरह हम वह मानसिक प्रक्रिया (Mental Process) हैं जिसके द्वारा कोई क्रिया अथवा उत्तेजना अच्छी, या बुरी सुखद या दुखद रुचिकर या अभिरुचिकर लगती है। उपरोक्त शब्दों से स्पष्ट होता है कि भाव दो प्रकार के होते हैं सुखद या दुखद अथवा रुचिकर एवं अरुचिकर। मानव जीवन में इन्हीं दोनों अर्थात् सुखद एवं दुखद भावों की निरन्तर अनुभूति होती रहती है।

[ब] भाव और संवेग में अन्तर

(Difference between Feelling and Emotion)

भाव एवं संवेग दोनों का सम्बन्ध मन के एक ही पहलू अर्थात् भावात्मक अवस्था (Affective State) से है। दूसरे शब्दों में दोनों भावात्मक या रागात्मक प्रक्रियायें (Affective Processes) है। जिस प्रकार भाव में सुखद या दुखद अनुभूति होती है उसी प्रकार सभी संवेगों में सुख या दुख को अनुभूति होती है। इन दोनों में इतनी समानता होते हुए भी दोनों में निम्नलिखित अन्तर है।

(१) भाव सरल रागात्मक मानसिक प्रक्रिया है किन्तु संवेग जटिल रागात्मक मानसिक प्रक्रिया है। भाव में जो सुख या दुख की अनुभूति होती है उसे अन्य प्रकार की मानसिक इकाइयों (Mental Elements) में विभाजित नहीं किया जा सकता। किन्तु प्रेम, हर्ष, क्रोध, चिन्ता, भय, आदि रागात्मक मानसिक प्रक्रियाओं को अन्य मानसिक इकाइयों जैसे भाव, प्रतिमा, संवेदना आदि में विभाजित किया जा सकता है।

(२) भाव केवल दो प्रकार के यथा सुखद और दुखद होते हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किन्तु संवेग अनेक प्रकार यथा प्रेम, हर्ष, क्रोध, भय, चिन्ता, सुख-के होते हैं।

(३) भाव आत्मगत (Subjective) होता है किन्तु संवेग विधेयात्मक (Objective) होता है। किसी वस्तु के प्रति किसी व्यक्ति को सुख का भाव हो सकता है किसी व्यक्ति को दुख का भाव हो सकता है। किन्तु शून्य जंगल में अचानक भयानक आवाज होने से प्रत्येक को भय हो सकता है।

(४) सुख या दुख के भाव की अनुभूति करने में व्यक्ति उसकी शारीरिक क्रियाओं के रूप में अभिव्यक्ति नहीं करता है जिसे कोई दूसरा व्यक्ति समझ सके। किन्तु संवेग की अनुभूति में व्यक्ति उसकी अभिव्यक्ति शारीरिक परिवर्तनों के रूप में करता है जिसे दूसरे व्यक्ति समझ सकते हैं।

(५) भाव की अपेक्षा संवेग का क्षेत्र बड़ा होता है। प्रत्येक संवेग में भाव का निहित होना अनिवार्य है किन्तु प्रत्येक भाव में संवेग नहीं पाया जाता है। हर्ष, प्रेम, क्रोध, घृणा इत्यादि रागात्मक अनुभूतियों को व्यक्ति सुखद या दुखद (Pleasant or Unpleasant) बना सकता है। किन्तु भय बिना संवेग के भी सम्भव है। किसी बात में एक व्यक्ति सुख अनुभव कर सकता हैं किन्तु आवश्यक नहीं कि वह संवेग का अनुभव करे।

(६) भाव सामान्य मानसिक अवस्था (Normal State of Mind) में होता है किन्तु संवेग असामान्य मानसिक अवस्था (Abnormal State of Mind) में होता है। व्यक्ति संवेग की अनुभूति के समय हतभ्रम हो जाता है। किन्तु किसी अनुभव के सुखद या दुखद बताने में व्यक्ति की ऐसी स्थिति नहीं होती है।

सवेग और स्थाई-भाव में अन्तर
(Difference between Emotion and Sentiment)

[अ] स्थाई-भाव का अर्थ (Meaning of Sentiment)

जब बालक इस संसार में प्रवेश करता है तो उसका सबसे पहले व्यवहार मूल-प्रवृत्यात्मक होता है। ये मूल-प्रवृत्तियां (Instincts) संवेगों (Emotions) को जन्म देती हैं। इन्हीं संवेगों से स्थाई-भावों (Sentiment) का निर्माण होता है। जब-जब एक या एक से अधिक संवेग किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति बारम्बार अनुभव किया जाता है तो उस अनुभव करने वाले व्यक्ति में उस वस्तु अथवा व्यक्ति के प्रति स्थाई-भाव उत्पन्न हो जाता है। उदाहरण के लिए एक मां जो कि बालक के सम्पर्क में रहती है वह अपने बालक के प्रति सुख-दुःख, आनन्द, वात्सल्य, करुणा आदि विभिन्न संवेगों का अनुभव करती है, परिणामस्वरूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसमें अपने बालक के प्रति प्रेम का स्थाई-भाव (Sentiment of love) उत्पन्न हो जाता है। इस दृष्टिकोण को सामने रखते हुए हम कह सकते हैं कि किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार के प्रति केन्द्रित विचारों, भावनाओं, अनुभूतियों एवं क्रियाओं का संगठित व्यवस्था को स्थाई-भाव (Sentiment) कहते हैं।

[व] संवेग एवं स्थाई रूप में अन्तर
(Difference between Emotion and Sentiment)

यद्यपि स्थाई-भाव का निर्माण संवेगानुभूति से ही होता है किन्तु फिर भी स्थाई-भाव एवं संवेग में निम्नलिखित अन्तर हैं—

(१) संवेग की अपेक्षा स्थाई-भाव का क्षेत्र व्यापक होता है। एक स्थाई भाव में अनेक संवेग होते हैं किन्तु किसी भी संवेग में स्थाई-भाव का होना आवश्यक नहीं।

(२) सवेग चंचल या अस्थाई होता है किन्तु स्थाई-भाव स्थाई तथा अपरिवर्तनशील होता है।

(३) संवेग किसी संवेगात्मक परिस्थिति के उत्पन्न होने पर संचालित होता है और परिस्थिति के हट जाने पर समाप्त भी हो जाता है किन्तु स्थाई भाव, व्यक्ति वस्तु या घटना के निकल जाने पर भी विद्यमान बना रहता है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में संवेग का तात्पर्य उस मनःशारीरिक प्रक्रिया से है जिसमें एक व्यक्ति किसी मनोवैज्ञानिक या संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण कर उत्तेजित हो उठता है और उस उत्तेजित अवस्था का चेतन अनुभव करते ही उसमें आन्तरिक एवं वाह्य शारीरिक परिवर्तन होने लगते हैं और वह सवेगात्मक व्यवहार करने लगता है। **संवेग की विशेषतायें**—(१) संवेग की व्यापकता, (२) वैयक्तिकता (३) संवेगों का स्थानान्तरण, (४) संवेगात्मक सम्बन्ध की आवश्यकता, (५) सुख अथवा दुख के भाव का निहित होना, (६) विचार प्रक्रिया का लोप, (७) मूल प्रवृत्तियों से सम्बन्ध, (८) संवेग के समय क्रियात्मक प्रवृत्ति का होना, (९) दृढ़ता का होना तथा (१०) शारीरिक परिवर्तन। **संवेग में शारीरिक परिवर्तन-[अ] वाह्य शारीरिक परिवर्तन**—(१) चेहरे की अभिव्यक्ति, (२) स्वर अभिव्यक्ति तथा (३) आसनिक अभिव्यक्ति। **[व] आन्तरिक शारीरिक परिवर्तन**---(१) सांस की गति में परिवर्तन, (२) नाड़ी की गति में परिवर्तन, (३) हृदय की गति में परिवर्तन, (४) रक्त संचार में परिवर्तन, (५) रक्त चाप में परिवर्तन, (६) रक्त के रासायनिक तत्वों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में परिवर्तन, (७) पाचन-क्रिया में परिवर्तन, (८) रस-पाक में परिवर्तन, (९) ग्रन्थियों की क्रियाओं में परिवर्तन तथा (१०) त्वक प्रतिक्रिया परिवतन । जहाँ तक संवेगों के प्रकार का प्रश्न है वहाँ यह कहा जा सकता है कि भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों को सामने रखते हुए विद्वानों ने संवेगों का वर्गीकरण किया है किन्तु वे संवेगों की संख्या के सम्बन्ध में एक दूसरे के विरोधी नहीं है । भाव वह मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई क्रिया अथवा उत्तेजना अच्छी या बुरी, सुखद, या दुखद, रुचिकर या अरुचिकर लगती है । भाव एवं संवेग में गुणात्मक अन्तर न होकर मात्रात्मक अन्तर है । किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा विचार के प्रति केन्द्रित विचारों, भावनाओं, अनुभूतियों एवं क्रियाओं को संगठित व्यवस्था को स्थाई-भाव कहते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३६
संवेग के सिद्धान्त
[Theories of Emotion]

प्रश्न-संख्या—३६

संवेग के विभिन्न सिद्धान्तों की विवेचना कीजिये।

Discuss the various theories of emotion.

भूमिका (Introduction)

संवेग प्राणी की एक मनःशारीरिक प्रक्रिया (Psycho-physical Process) है। यह मनः शारीरिक प्रक्रिया कैसे होती है अर्थात् व्यक्ति को संवेग का अनुभव कैसे होता है इसकी बहुत से विद्वानों ने व्याख्या करने की कोशिश की है। जो व्याख्या, मत या विचार यह बतलाते हैं कि प्राणी या व्यक्ति को संवेग का अनुभव कैसे होता है वे संवेग के सिद्धान्त (Theories of Emotion) कहलाते हैं। इन सिद्धान्तों में जो अन्तर पाया जाता है वह विशेष रूप से शारीरिक परिवर्तनों (Bodily-Changes) के विषय में है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर ये सिद्धान्त कौन-कौन से हैं? उनका क्या स्वरूप है? यह समझने के लिए ही हम इस प्रश्न में संवेग के विभिन्न सिद्धान्तों (Various Theories of Emotion) की विवेचना प्रस्तुत कर रहे हैं।

संवेग के विभिन्न सिद्धान्त
(Various Theories of Emotion)

संवेग के मुख्य सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

(१) सामन्य ज्ञान का सिद्धान्त (Common Sense Theory)

(२) जेम्स-लेंगे सिद्धान्त (James Lange Theory)

(३) कैनन-बार्ड सिद्धान्त (Cannon-Bard Theory)

(४) प्रेरणात्मक सिद्धान्त (Motivational Theory)

(५) सक्रियकरण सिद्धान्त (Activation Theory)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) सामान्य ज्ञान का सिद्धान्त

(Common Sense Theory)

इसके पूर्व कि हम संवेग के अन्य सिद्धान्तों को प्रस्तुत करें हमें यह समझ लेना उचित होगा कि संवेग का सामान्य ज्ञान सिद्धान्त या संवेग के सम्बन्ध में सामान्य विचारधारा क्या है। संवेग के सामान्य ज्ञान के सिद्धान्त के अनुसार सबसे पहले व्यक्ति अथवा प्राणी किसी मनोवैज्ञानिक अथवा संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण करता है उसके उपरान्त उसे संवेग की अनुभूति होती है और संवेगात्मक अनुभूति (Emotional Experience) होने पर व्यक्ति संवेगात्मक व्यवहार (Emotional Behaviour) करता है। इस प्रकार सामान्य सिद्धान्त के अनुसार संवेग का क्रम इस प्रकार है—

(१) मनोवैज्ञानिक अथवा संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण।
(२) संवेग की अनुभूति (दुख, क्रोध, प्रेम आदि)
(३) संवेगात्मक व्यवहार या विभिन्न शारीरिक परिवर्तन।

(२) जेम्स-लेंगे सिद्धान्त

(James-Lenge Theory)

[अ] जेम्सलेग सिद्धान्त का स्पष्टीकरण
(Clarification of James Langes Theory)

प्राणी को संवेग का अनुभव कैसे होता है इसकी सबमें पहले व्याख्या अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान् विलयम जेम्स (William James) तथा डेनमार्क निवासी डा० लेंगे (Dr. Lange) ने की। इन दोनों विद्वानों ने स्वतन्त्र रूप से अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया। किन्तु इन दोनों सिद्धान्तों में इतनी समानता है कि हम इन्हें एक सिद्धान्त "जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त" (James Lange Theory) के नाम से पुकारते हैं। जेम्स-लेंगे सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभव Emotional Experience) संवेगात्मक व्यवहार (Emotional Behaviour) पर निर्भर है। जेम्स एवं लेंगे के अनुसार सबसे पहले प्राणी या व्यक्ति को संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण होता है फिर वह संवेगात्मक परिस्थिति से अभियोजन करने के लिए व्यवहार करता है। संवेगात्मक व्यवहार का अनुभव करने पर उसे संवेग का अनुभव होता है। जेम्स-लेंगे का सिद्धान्त अग्रलिखित उदाहरण से स्पष्ट किया जा सकता है। मान लीजिए एक व्यक्ति रास्ते में एक सर्प देखता है। इस भयावह परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण के बाद व्यक्ति उससे अभियोजन करने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus; Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यवहार करता है वह सर्प को देखकर अपनी जान बचाने के लिए भाग खड़ा होता है। जब वह इस व्यवहार (भाग खड़ा होना) के सम्बन्ध में अनुभव करने लगता है तो उसे भय का संवेग होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभव संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर है अपने सिद्धान्त की पुष्टि करने के लिये जेम्स (James) महोदय ने लिखा है "हम दुःख का अनुभव करते हैं क्योंकि हम रोते हैं, हम क्रोधित होते हैं क्योंकि हम मारते हैं, हम डरते हैं क्योंकि हम काँपते हैं, ऐसी बात नहीं है कि हम रोते, मारते या काँपते हैं क्योंकि हम दुख क्रोध या का अनुभव करते हैं।‡ संक्षेप में जेम्स महोदय ने अपना सिद्धान्त प्रस्तुत करते हुये स्वयं लिखा है "मेरा सिद्धान्त यह है किसी उत्तेजनात्मक वस्तु को देखकर हमारे शरीर में परिवर्तन होते हैं और इन शारीरिक परिवर्तनों की जो अनुभूति होती है वही संवेग है।"

"My theory is that the bodily changes follow directly the per ception of the exciting fact, and that our feeling of the same changes as they occur is the emotion."

—William James Psychology Briefer Course P. 373

जेम्स तथा लेंगे ने अपने सिद्यान्त को दैहिक मनोविज्ञान (Physiological psychology) के आधार पर इस प्रकार व्याख्या की है। उनके अनुसार सबसे पहले व्यक्ति के सम्मुख जब संवेगात्मक परिस्थिति आती है तो उसका सम्बन्ध तत्सम्बन्धी ज्ञानेन्द्रिय (Sense organ) या ग्राहक (Receptor) से होता है। इस सम्बन्ध के कारण ज्ञानेन्द्रिय में स्नायु प्रवाह (Nerve Impulse) उत्पन्न होता है। यह स्नायु प्रवाह ज्ञानवाही नाड़ियों के द्वारा बृहन्मस्तिष्कीय वल्क (Cerebral Cortex) में पहुँचता है कि जिससे वहां परिस्थिति का प्रत्यक्षी—करण होता है। संवेगात्मक परिस्थिति के प्रत्यक्षीकरण के बाद स्नायु प्रवाह मांस-पेशियों (Muscles) तथा ग्रन्थियों (Glands) या प्रभावकों (Effestors) को उत्तेजित करता है जिससे वे सक्रिय हो जाते हैं और व्यक्ति संवेगात्मक व्यवहार (Emotional Experience) करने लगता है। इसके उपरान्त प्रभावकों की सक्रियता की सूचना स्नायु प्रवाह वृहन्मस्तिष्कीय वल्क को देता है जिससे व्यक्ति को संवेगात्मक व्यवहारों के ज्ञान से बृहन्मस्तिष्कीय वल्क में एक प्रकार की प्रतिक्रिया होती है जिस व्यक्ति को संवेग की अनुभूति

× "We feelsorry because we cry,angry because we strike, afraid because we tremble and not that we cry,strike or tremble because we are sorry,angry or fearful as the case may be."

—willim james psychology Briefer Course P. 373

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होती है, इसी प्रकार दैहिक मनोविज्ञान के आधार पर स्पष्ट हो जाता है कि संवेगात्मक अनुभूति संवेगात्मक व्यवहार पर आधारित है, जेम्स-लेंगे सिद्धान्त को चित्र संख्या ३४ में स्पष्ट किया गया है। यदि जेम्स लेंगे सिद्धान्त का विश्लेषण किया जाय तो उसमें निम्नलिखित तत्व प्राप्त होते हैं—

(१) किसी संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण।

(२) परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण करने पर उससे अभियोजन के लिये व्यवहार।

(३) परिस्थिति से अभियोजन के लिए किए गए संवेगात्मक व्यवहार की अनुभूति

(४) संवेगात्मक व्यवहारों की अनुभूति से संवेग का अनुभव करना।

[ब] जेम्स द्वारा अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिए प्रमाण प्रस्तुत करना।

(Presentation of Proofs by James to Establish his Theory)

प्रथम प्रमाण—अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिए जेम्स महोदय ने अभिनेताओं के अनुभवों को व्यक्त करते हुये कहा कि जब वे किसी विशेष अवसर पर अपने शरीर में परिवर्तन करते हैं तो उन्हें संवेगात्मक अनुभूति होती है और जब वे इसी आधार पर अभिनय करते हैं तो उनका अभिनय उत्तम भी होता है। जब वे क्रोध या भय का शारीरिक परिवर्तनों के द्वारा प्रकाशन करते हैं तो उन्हें समुचित क्रोध या भय के संवेग की अनुभूति होती है। अगर कोई अभिनेता संवेग का प्रकाशन शारीरिक परिवर्तन द्वारा न करे तो उसे संवेगात्मक अनुभूति ही असम्भव है। परन्तु यदि हम इस प्रमाण पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो हमें यह पूर्ण सत्य प्रतीत नहीं होता। जेम्स महोदय को कुछ अभिनेताओं ने यह बताया कि वास्तव में अभिनय एक प्रकार की कला होती है जो दर्शकों को भ्रम में डालती है। उन्होंने यह भी बताया कि वे अभिनय में विभिन्न प्रकार की शारीरिक क्रियाओं को करते हैं परन्तु उन्हें संवेगात्मक अनुभूति नहीं होती है। हमने दैनिक जीवन में भी यही देखा है कि बहुत से व्यक्ति अपने बालकों पर सचमुच क्रोधित नहीं होते हैं। परन्तु उन्हें सुधारने के लिये भूठे क्रोध का प्रकाशन क्रिया करते हैं। इस प्रकार जेम्स महोदय ने तो अभिनेताओं के द्वारा अपने सिद्धान्त की पुष्टि की है वह सत्यता की कसौटी में खरी नहीं उतरती है।

द्वितीय प्रमाण—अपने सिद्धान्त की पुष्टि के लिये जेम्स महोदय एक दूसरा प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि यदि हम लोग अंधेरे में अचानक कोई पदार्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखते हैं तो उसके देखने से ही हम लोगों के हृदय एवं साँस की गति रुक जाती है। इसके रुकने के पूर्व हम लोगों को भय के संवेग की कोई अनुभूति नहीं होती वरन् इसके बाद होती है।

तृतीय प्रमाण—एक अन्य प्रमाण को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा है कि मद्य अथवा अन्य उत्तेजक पदार्थों के सेवन से व्यक्ति में आमोद, साहस आदि के संवेग उत्पन्न हो जाते हैं।

चतुर्थ प्रमाण—अन्त में जेम्स महोदय ने एक अन्य महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कहा है कि कुछ शारीरिक उपद्रवों (Disturbances) के कारण भी कुछ संवेग उत्पन्न होते हैं। उदाहरण के लिए उनका कथन है, 'यकृत के रोग' अवसाद एवं चिड़चिड़ाहट उत्पन्न करते हैं, स्नायुविक रोग निराशा एवं भय उत्पन्न करते हैं।" जेम्स का विचार है कि वस्तु विहीन संवेग (Objectiveless Emotions) शारीरिक रुग्णावस्थाओं के कारण उत्पन्न होते हैं।

इस प्रकार जेम्स ने अपने सिद्धान्त की पुष्टि में जितने प्रमाण दिए हैं सबसे यही विदित होता है कि किसी वस्तु या उत्तेजक के प्रत्यक्षीकरण से विभिन्न शारीरिक परिवर्तन (Bodily Changes) होते हैं। इन शारीरिक परिवर्तनों के परिणाम-स्वरूप संवेगात्मक अनुभूति होती है।

[स] जेम्स लेंगे सिद्धान्त की आलोचना
(Criticism of James-Lange Theory)

जेम्स-लेंगे सिद्धान्त की बहुत से विद्वानों ने आलोचनाये की हैं। उन्होंने इस सिद्धान्त की परीक्षा के लिए नाना प्रकार के प्रयोग भी किए हैं। अब हम आगे जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त की प्रमुख आलचनायें प्रस्तुत करेंगे।

प्रथम आलोचना—शेरिंगटन (Sherrington) नामक प्रसिद्ध दैहिक-शास्त्री ने इस सिद्धान्त की परीक्षा के लिए एक कुत्ते पर प्रयोग किया। जब वह कुत्ते को प्रयोगशाला में लाया तो उसने देखा कि कुत्ता सभी प्रकार के संवेगो का प्रकाशन करने में समर्थ है। तत्पश्चात् उसने आपरेशन द्वारा उसका मस्तिष्क निकाल दिया। फलस्वरूप वह सभी प्रकार की संवेदनाओं से वंचित हो गया। परन्तु संवेदनाओं के अभाव में भी कुत्ते के संवेगात्मक व्यवहार में कोई परिवर्तन न हुआ। शेरिंगटन ने यह देखा कि कुत्ता पहले की तरह अब भी भय, क्रोध, हर्ष आदि संवेगात्मक व्यवहारों को प्रकट करने में समर्थ है। इससे उसने यह सिद्ध किया कि संवेगात्मक व्यवहार का शारीरिक क्रियाओ की संवेदानाओं से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। दूसरे शब्दों में संवेगात्मक व्यवहार शारीरिक परिवर्तन पर निर्भर नहीं है।

द्वितीय आलोचना—जेम्स-लेंगे सिद्धान्त की परीक्षा करने के लिए शेरिंगटन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की भांति अमरीका के शरीरशास्त्री कैनन (Cannon) ने भी एक प्रयोग बिल्ली पर किया। उसने आपरेशन द्वारा बिल्ली के स्वतन्त्र स्नायुमण्डल ((Autonomic Nervous System) की माध्यमिक अथवा सहानुभूति स्नायुओं (Sympathetic Nerves) को काट कर निकाल दिया, फलस्वरूप उसमें संवेग में होने वाले अन्तरावयव परिवर्तन होना असम्भव हो गया परन्तु कैनन महोदय ने देखा कि अंतरावयव परिवर्तन के अभाव में भी बिल्ली पहले की तरह क्रोध का वाह्य संवेगात्मक व्यवहार प्रदर्शित कर रही है। वह गुर्राती, कानों को पीछे की ओर खींचती, दांत दिखाती आदि संवेगात्मक व्यवहार प्रदर्शित कर रही है।

तृतीय आलोचना—जेम्स-लेंगे-सिद्धान्त के विरुद्ध, एक चालीस वर्ष की बुद्धिमती महिला की परीक्षा करने पर, एक प्रमाण और मिला। यह महिला घोड़े से गिर गई थी, फलस्वरूप उसकी गर्दन टूट गयी थी साथ-ही-साथ गर्दन के स्थल पर उसकी सुषुम्ना (Spinal Cord) भी टूट गई थी। उसके मस्तिष्क में धड़ तथा हाथ पैरों के मध्य समस्त ज्ञानवाही एवं कार्यवाही स्नायु (Sensory and motor nerves) टूट चुके थे। स्वतन्त्र स्नायु मण्डल का माध्यमिक अथवा सहानुभूति भाग का मस्तिष्क से पूर्णतया विच्छेद हो गया था। फलस्वरूप वह महिला धड़ एवं हाथ पैरों से आने वाली संवेदनाओं से वंचित हो गई थी। ऐसी हालत में जेम्स-लेंगे सिद्धान्त के अनुसार उसे संवेगों की अनुभूति नहीं होना चाहिए, परन्तु वह महिला भय क्रोध, हर्ष घृणा आदि संवेगों को प्रदर्शित कर रही है। अतः यहाँ पर यह निष्कर्ष निकलताहै कि शारीरिक परिवर्तनों एवं आंगिक संवेदनाओ के अभाव में भी संवेगात्मक व्यवहार होता रहता है।

चतुर्थ आलोचना—कुछ संवेगों में शारीरिक परिवर्तन एक ही से होते हैं परन्तु संवेगात्मक अनुभूति अलग-अलग होती है। उदाहरण के लिए भय एवं क्रोध में एक ही से शारीरिक परिवर्तन होते हैं परन्तु दोनों की अनुभूति अलग-अलग होती है। इससे यह स्पष्ट होते है कि केवल शारीरिक परिवर्तनों (Bodily Changes) के आधार पर संवेगों की व्याख्या नहीं की जा सकती है।

पाँचवीं आलोचना—कभी-कभी संवेगों की अनुभूति इतनी शीव्रता के साथ कर ली जाती है कि हम उनकी शारीरिक परिवर्तनों के आधार पर व्याख्या नहीं कर सकते हैं। जैसे ही कोई संवेगात्मक परिस्थिति सामने आती है कि संवेग की अनुभूति हो जाती है एवं शारीरिक परिवर्तन संवेगात्मक अनुभूति के उपरात प्रारम्भ होते हैं।

छठवी आलोचना—जब इंजेक्शन द्वारा ऐड्रीनिन (Adrenin) को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किसी व्यक्ति के खून में पहुँचाया जाता है तो व्यक्ति के अन्दर नाना प्रकार के शारीरिक परिवर्तन होते हैं परन्तु उसे किसी प्रकार के संवेग की अनुभूति नहीं होती है। इसमें यह सिद्ध होता है कि शारीरिक परिवर्तनों की अनुभूति ही संवेग नहीं है वरन् यह शारीरिक परिवर्तनों के बजाय कोई दूसरी अनुभूति है।

[द] जेम्स-लेंगे सिद्धान्त के सम्बन्ध में निष्कर्ष
(Conclusion about James Lange-Theory)

उपरोक्त समस्त परोक्षणों एवं तर्कों से यह स्पष्ट होता है कि जेम्स-लेंगे का सिद्धान्त पूर्णतया सत्य नहीं है। हाँ यह अवश्य है कि प्रायः संवेगों में कुछ शारीरिक परिवर्तन होते हैं परन्तु इस सिद्धान्त के अनुसार शारीरिक परिवर्तनों की अनुभूति संवेग है अथवा शारीरिक परिवर्तन के अभाव में संवेगात्मक अनुभूति नहीं हो सकती, सर्वथा अनुचित प्रतीत होता है।

(३) कैनन-बार्ड सिद्धान्त
(Cannon-Bard Theory)

[अ] कैनन-बार्ड सिद्धान्त का स्पष्टीकरण
(Clarification of Cannon-Bard Theory)

कैनन (Cannon) तथा बार्ड (Bard) नामक देहिकशास्त्रियों (Physiologists) ने संवेग का एक सिद्धान्त प्रस्तुत किया जिसे प्रायः **'हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त' (Hypothalamic Theory)** के नाम से पुकारा जाता है। इसे **'केन्द्रीय सिद्धान्त' (Central Theory)** भी कहा जाता है। हमने जेम्स-लेंगे सिद्धान्त का स्पष्टीकरण करते हुये बताया था कि यह सिद्धान्त संवेगात्मक अनुभव को संवेगात्मक व्यवहार पर आश्रित बताता है। कैनन-बार्ड सिद्धान्त इस मत का विरोध करता है। **कैननबार्ड सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक व्यवहार और संवेगात्मक अनुभूति दोनों की उत्पत्ति एक साथ स्वतन्त्र रूप से होती है और दोनों की उत्पत्ति हाइपोथैलेमस (Hypothalamus) द्वारा होती है।** वह कैसे ? सबसे पहले व्यक्ति के सम्मुख कोई संवेगात्मक परिस्थिति उपस्थित होती है जिसका सम्पर्क तत्सम्बन्धी ज्ञानेन्द्रियाँ ग्राहक से होता है जिससे उसमें स्नायु प्रवाह उत्पन्न हो जाता है। यह स्नायु प्रवाह ज्ञानवाही नाड़ियों द्वारा वृहन्मस्तिष्कीय वल्क (Cerebral Cortex) में पहुँचने के पूर्व हाइपोथैलेमस में पहुँचता है जिससे वह क्रियाशील हो जाता है। हाइपोथैलेमस से स्नायु प्रवाह एक ही साथ दो ओर चलता है, एक वृहन्मस्तिष्कीय वल्क की ओर दूसरा मांसपेसियो तथा ग्रन्थियों या ग्राहकों (Receptors) की ओर। जो स्नायु प्रवाह वृहन्मस्तिष्कीय वल्क में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पहुँचते हैं उनसे संवेगात्मक अनुभूति होती है और जो ग्राहकों में पहुँचते हैं उनसे संवेगात्मक व्यवहारों (तरह-तरह के शारीरिक परिवर्तन) की उत्पत्ति होती है। इस प्रकार स्पष्ट हैं कि कैनन-बार्ड सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति तथा संवेगात्मक व्यवहार एक साथ स्वतन्त्ररूप से उत्पन्न होते हैं और इन दोनों की उत्पत्ति हाइपोथैलेमस के द्वारा होती है। जेम्स-लेंगे सिद्धान्त तथा कैनन बार्ड सिद्धान्त दोनों का स्पष्टीकरण नीचे के चित्र द्वारा किया जा सकता है—

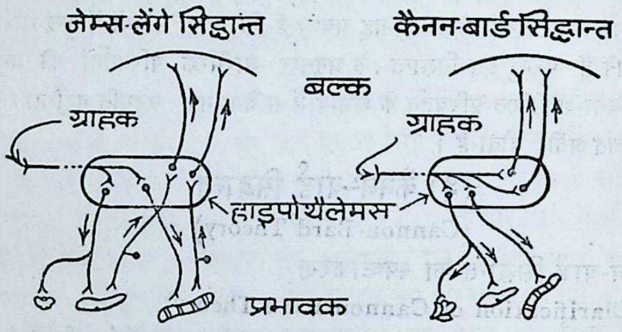

चित्र संख्या—३४ जेम्स-लेंगे तथा कैनन-बार्ड सिद्धान्त का चित्र

[ब] जेम्स-लेंगे सिद्धान्त की हाइपोथेलेमिक सिद्धान्त द्वारा त्रुटियाँ दूर होना
(Elimination of Errors of James-Lange Theory By Hypothalamic Theory)

उपरोक्त शब्दों से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि जेम्स-लेंगे सिद्धान्त की भाँति हाइपोथेलेमिक सिद्धान्त संवेगात्मक अनुभूति को शारीरिक परिवर्तन का परिणाम नहीं मानता है। यह सिद्धान्त संवेगात्मक अनुभूति एवं शारीरिक परिवर्तन दोनों को एक दूसरे से स्वतन्त्र मानता है।

यदि हम हाईपोथैलेमिक सिद्धान्त को स्वीकार कर लेते हैं तो जेम्स-लेंगे सिद्धान्त की बहुत सी त्रुटियाँ दूर हो जाती हैं। जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त के अनुसार यदि गर्दन के पास सुषुम्ना (Spinal Cord) कट जाती है तो आन्तरिक अवयवों से सम्बन्धित प्रक्रियायें रुक जाती हैं, फलस्वरूप संवेगात्मक व्यवहार की कोई सम्भावना नहीं रहती है, परन्तु हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त के अनुसार चूंकि इस प्रकार की परिस्थिति में हाइपोथैलेमस का कार्य होता रहता है परिणामस्वरूप जो आवेश हाइपोथैलेमस में उत्पन्न होता है वह वृहन्मस्तिष्कीय कारटेक्स से चला जाता हैं एवं व्यक्ति को संवेगात्मक अनुभूति होती रहती है। इस प्रकार हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जे जेम्स–लेंगे के सिद्धान्त की एक प्रधान त्रुटि दूर हो जाती है।

हाइपोथैमिक सिद्धान्त जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त की एक दूसरी प्रधान त्रुटि को भी दूर कर देता है। यदि एड्रिनिन (Adrenin) को इंजेक्शन द्वारा व्यक्ति के खून में पहुँचाया जाता है तो व्यक्ति के अन्दर अनेक अन्तरावयव परिवर्तन होते हैं परन्तु इन अन्तरावयव परिवर्तनों के होते हुए भी व्यक्ति को संवेगात्मक अनुभूति नहीं होती। इस तथ्य की व्याख्या जेम्स-लेंगे का सिद्धान्त नहीं कर सकता है। परन्तु हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त इसकी व्याख्या करने में पूर्ण समर्थ है। हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त के अनुसार व्यक्ति को हाइपोथैमिक से उत्पन्न आवेश के कारण संवेगात्मक अनुभूति होती है न कि जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त की तरह अन्तरावयव-परिवर्तनों के कारण। इस प्रकार हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त के अनुसार संवेगात्मक अनुभूति अन्तरावयव परिवर्तनों पर निर्भर न रहकर यह स्वतन्त्र उत्पन्न होती है।

[स] कैनन-बार्ड सिद्धान्त की आलोचना
(Criticism of Cannon-Bard Theory)

ऊपर हमने हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुए इनके द्वारा जेम्स-लेंगे के सिद्धान्त की प्रधान त्रुटियों को दूर करने का प्रयास किया। किन्तु इसका अर्थ यह न लगा लेना चाहिए कि हाइपोथैलेमिक सिद्धान्त में त्रुटियों का सर्वथा अभाव है। वास्तव में इस सिद्धान्त में भी अनेक त्रुटियाँ हैं। जो संवेगात्मक व्यवहार हाइपोथैलेमस को उत्तेजित करने से उत्पन्न होता है। वह स्वाभाविक रूप से उत्पन्न संवेगात्मक व्यवहार से क्षणिक होता है। साथ ही साथ उसमें अभियोजन (Adjustment) की क्षमता भी वहुत कम होती है। इससे यह भली भांति अनुमान लगाया जा सकता है कि हाइपोथेलेमस के अलावा भी स्नायु–मण्डल (Nervous System) में कुछ भाग होते है जिनका कि सम्बन्ध संवेगात्मक व्यवहार से होता है। वास्तव में वृहन्मस्तिष्कीय वल्क (Cerebral Cortex) के द्वारा व्यक्ति संवेगात्मक परिस्थिति में संवेगात्मक व्यवहार करके अपने को अभियोजन करने में सफल होता है। मन ने ठीक ही लिखा है।

"From the standpoint of adaptation to emotion provoking situation, the cerebral cortex is especially important.

—N. L. Munn

(४) प्रेरणात्मक सिद्धान्त
(Motivational Theory)

[अ] प्रेरणात्मक सिद्धान्त का अर्थ (Meaning of Motivational Theory)

प्रेरणात्मक सिद्धान्त को लीपर (Leeper) महोदय ने प्रस्तुत किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उन्होंने प्रयोगों द्वारा इस सिद्धान्त की पुष्टि भी की। इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक संवेग का एक विशिष्ट लक्ष्य हुआ करता है जो कि प्राणी के सवेगात्मक व्यवहार को संचालित तथा निर्देशित करता है। लीपर महोदय ने प्रयोगों के आधार पर यह सिद्ध किया कि संवेगावस्था में प्राणी में जो शारीरिक परिवर्तन (Bodily-changes) होते हैं वे उसे विभिन्न परिस्थितियों से अभियोजन (Adjus-tment) करने में सहायक होते हैं। हृदय गति, रक्त परिभ्रमण, श्वास गति, जाठरिक क्रियाओं इत्यादि में जो परिवर्तन होते हैं वे सभी प्राणी को आकस्मिक तथा संवेगात्मक परिस्थिति से अभियोजन करने में सहायक होते हैं। सहानुभूतिक मण्डल (Sympathetic System) के प्रभाव प्राणी को कठिन परिश्रम करने की प्रेरणा देते हैं सहानुभूतिक स्नायु-मण्डल की अन्य क्रियायें उसके शरीर को सुरक्छित रखती हैं।

[ब] प्रेरणात्मक सिद्धान्त की आलोचना
(Criticism of the Motivational)

यदि मनुष्य के दैनिक व्यवहार का पर्यवेक्षण किया जाय तो हमें स्पष्ट पता चलता है कि संवेगात्मक क्रियाओं का कुछ न कुछ लक्ष्य अवश्य होता है और वे प्राणी को अभियोजन करने में सहायता देती है। इस आधार पर प्रेरणात्मक सिद्धान्त कुछ हद तक अवश्य सत्य है किन्तु यह वात केवल सरल संवेगावस्था के लिये ही सत्य हैं। तीव्र संवेगावस्था में व्यक्ति का अभियोजन सुधरने के बजाय विगड़ भी सकता है। यदि कोई व्यक्ति अत्यधिक क्रोध की अवस्था में है तो उसके मन और शरीर का इतना संतुलन विगड़ सकता है कि वह दूसरों को या अपने को समाप्त कर दे या अन्य कोई नुकसान कर बैठे, इस प्रकार तीव्र संवेगास्वथा में मनुष्य की क्रियाय प्रायः अभियोजनात्मक नहीं होती। ई० मीरा (E. Mira) नामक मनोवैज्ञानिक ने भय संवेग की छः विकासात्मक अवस्थाओं को प्रस्तुत करते हुये प्रेरणात्मक सिद्धान्त का खण्डन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में मालूम किया कि विकास की विभिन्न अवस्थाओं के संवेग में विरोध (Inhibition) बढ़ता जाता है और उच्च नाड़ी केन्द्र की क्रियायें रुकती जाती हैं।

(५) सक्रियकरण सिद्धान्त
(Activation Theory)

[अ] सक्रियकरण सिद्धान्त में अन्य सिद्धान्त का समन्वय
(Synthesis of other Theories in Activation Theory)

यह एक अति नवीन सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त की सबसे बड़ी विशेषता यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है कि इस सिद्धान्त में उपर्युक्त समस्त सिद्धान्तों के महत्वपूर्ण पहलुओं को स्वीकार किया गया है। यह जेम्स लेंगे सिद्धान्त (James Lange Theory) के इस तथ्य को स्वीकार करता हैं कि संवेग के सिद्धान्त में शारीरिक परिवर्तन एवं आंगिक अभिव्यक्ति आवश्यक है। कैनन-बार्ड सिद्धान्त (Cannon Bard Theory) के हाइपोथेलेमस के महत्व को स्वीकार करता है। प्रेरणात्मक सिद्धान्त (Motivational Theory) के सहानुभूतिक स्नायु मण्डल के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार करता है और यह संवेग को अभियोजन में सहायक मानता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सक्रियकरण सिद्धान्त में अन्य समस्त सिद्धान्तों का समन्वय है।

[ब] सक्रियकरण के सिद्धान्त का स्पष्टीकरण (Clarfication of the Activation Theory)

मस्तिष्क तरंगों (Brain waves) पर किये गये अध्ययनों के आधार पर सक्रियकरण सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है। अतः यह संवेग में वृहन्मस्तिष्कीय वल्क (Cerebral Cortex) की क्रियाओं पर वल देता है। वह इस सिद्धान्त के अनुसार संवेगावस्था में प्राणी का कोई अंग विशेष नही वल्कि सम्पूर्ण प्राणी सक्रिय रहता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि संवेग मस्तिष्क या शरीर के किसी विशेष भाग पर आधारित नहीं होता है वल्कि मस्तिष्क और शरीर के विभिन्न भागों की क्रियाओं के समन्वय से ही संवेगात्मक व्यवहार को व्याख्या हो सकती है।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने संवेग के विभिन्न सिद्धान्तों यथा (१) सामान्य ज्ञान सिद्धात, (२) जेम्स-लेंगे सिद्धान्त, (३) कैनन–बार्ड सिद्धान्त, (४) प्रेरणात्मक सिद्धान्त संवेग की आंशिक व्याख्या करते हैं। ऐसी परिस्थिति में आवश्यकता इस वात की है कि सभी सिद्धान्तों में समन्वय स्थापित करते हुये एक नवीन सिद्धान्त का प्रतिपादित किया जाय जो संवेग की सर्वांगीण व्याख्या कर सके अर्थात् यह वता सके कि प्राणी या व्यक्ति को संवेग का अनुभव कैसे होता है। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सक्रियकरण के सिद्धान्त को एक समन्वयात्मक सिद्धान्त माना है जो संवेग की पूर्ण व्याख्या कर सकता हैं। किन्तु जब तक संवेग के सम्बंध में और अधिक अध्ययन नही होंगे तब तक अन्तिम रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३७
चेतना के स्तर
[Levels of Consciousness]

प्रश्न-संख्या—३७

चेतना से आप या समझते हो ? चेतना के विभिन्न स्तरों की विवेचना कीजिए।

What do you undrstaud by consciousness ? Discuss the uarious levels of consciousness.

भूमिका (ntroduction)

उन्नीसवीं शताब्दी तक मनोविज्ञान की चेतना (Consciousness) के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता था। फलस्वरूप उस समय चेतना के स्तरों (Levels of Consciousness) पर विचार करने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता था। किन्तु वीसवीं शताब्दी में मनोविश्लेषकों (Psychoanalysis) ने चेतना मात्र को ही मनोविज्ञान का विषय नहीं माना बल्कि उन्होंने चेतना को एक विस्तृत रूप प्रदान किया और उसके तीन स्तर यथा चेतना (Conscious) अर्धचेतना या उपचेतना (Sub-conscious) तथा अचेतन (Unconscious) बतलायें। तभी से मनोविज्ञान के अन्तर्गत चेतना के विभिन्न स्तरों का अध्ययन करना आवश्यक हो गया। चेतना के ये विभिन्न स्तर क्या हैं यह जानने के पूर्व हमें यह समझ लेना आवश्यक हो जाता है कि चेतना का अर्थ क्या है। अतः इस प्रश्न में पहले हम चेतना का स्वरूप (Nature of Consciousness) स्पष्ट करेंगे और इसके उपरान्त चेतना के स्तरों (Levels of Consciousness) पर प्रकाश डालेंगे।

चेतना का स्वरूप
(Nature of Consciousneses)

चेतना को परिभाषा की सीमा में बाँधना अति कठिन है। यह एक अन्तिम सत्य है जिसका हम केवल वर्णन कर सकते हैं। उसके स्वरूप को हम उसके तत्वों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

या विशेषताओं के द्वारा भली भाँति समझ सकते हैं। जेम्स (James) महोदय ने चेतना की निम्नलिखित विशेषतायें बतलाई हैं—

(१) चेतना सदैव व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क से सम्बन्धित होती है (Consciousness always belongs to an individual Mind) चेतना की सबसे पहिली विशेषता यह है कि यह सदैव किसी न किसी व्यक्ति या प्राणी के मन से सम्बन्धित होती है। दूसरे शब्दों में मानसिक क्रियायें किसी न किसी व्यक्ति विशेष के ही होती हैं। प्रत्येक व्यक्ति का अपना निजी मन होता है। जो भी विचार किसी व्यक्ति का मन करता है वह उसकी निजी सम्पत्ति होती हैं जिसे कोई भी व्यक्ति चुरा नहीं सकता है। मैकडूगल (McDougall) महोदय ने इस सम्बन्ध में लिखा है **"जो कुछ भी अनुभव या विचार होता है वह किसी विषय, या व्यक्ति या प्राणी के सम्बन्ध में होना चाहिए।"**

"All experiencing or thinking must be thinking of some one some subject, some person, some organism. —McDougall

(२) चेतना निरन्तर परिवर्तित होती रहती है (Consciousness is always Changing)—चेतना कोई स्थिर वस्तु न होकर निरन्तर परिवर्तित होती रहती है। हम एक क्षण में किसी वस्तु, व्यक्ति, क्रिया अथवा विचार के एक पहलू के सम्बन्ध में चेतन होते हैं तो दूसरे क्षण दूसरे पहलू के सम्बन्ध में चेतन होते हैं। जेम्स महोदय ने चेतना की तुलना एक नदी से की है। जिस प्रकार नदी का पानी प्रतिक्षण बदलता रहता है उसी प्रकार चेतना भी बदलती और परिवर्तित होती रहती है। जेम्स महोदय ने चेतना की इस विशेषता पर प्रकाश डालते हुए लिखा है "जो अवस्था एक बार लुप्त हो चुकी वह पुनः नहीं लौट सकती। पहली बार की अवस्था से उसका तादात्म्य (Identification) नहीं हो सकता।"

"No state once gone can reocur and be inentical what was before." —William James

(३) चेतना निरन्तर होती है (Consciousness is Continuous) जाग्रत जीवन में चेतना निरन्तर होती है। उसके बीच कोई अन्तर नहीं रहता है। यद्यपि सुषुप्तावस्था में समय के अन्तर (Time gaps) सम्भव हैं किन्तु प्रत्येक चेतना अपने मूल रूप में निरन्तर होती है।

चेतना चयनात्मक होती है (Consciousness is Selective)-व्यक्ति के पर्यावरण में जो उत्तेजनायें (Stimuli) उपस्थिति रहती है वे सभी उसकी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चेतना में नहीं आती है वल्कि प्रभावशाली उत्तेजनाओं को ही वह अपनी चेतना का विषय वनाता है। दूसरे शब्दों में चेतना अनेक उत्तेजनाओं में कुछ उत्तेजनाओं का चयन कर लेती है। यह व्यक्ति की अभिरुचि, मनोवृत्ति तथा आवश्यकता पर निर्भर होती है।

चेतना के स्तर

(Levels of Consciousness)

[अ] युंग के अनुसार चेतना के स्तर

(Levels of Consciousness according to Young)

युङ्ग महोदय द्वारा बतलाये हुए चेतना के स्तरों को निम्नलिखित चित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है---

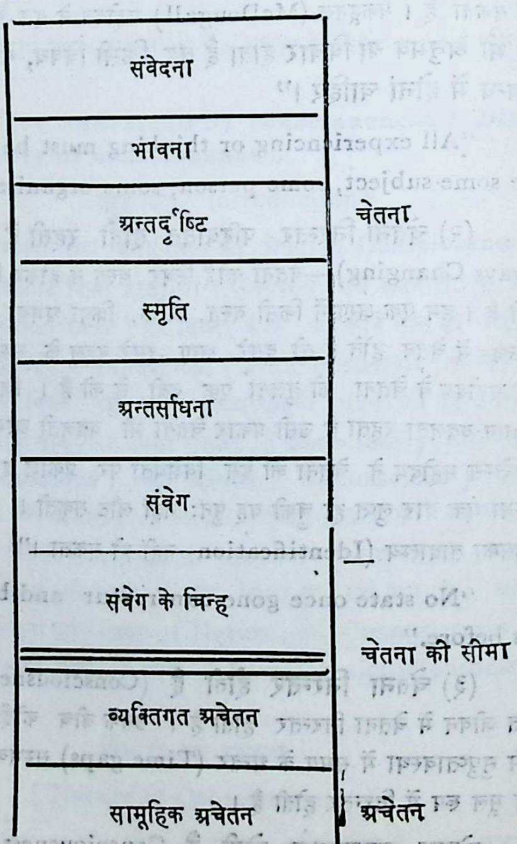

चित्र संख्या ३५-युंग के अनुसार चेतना के स्तर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उपर्युक्त चित्र से स्पष्ट है कि व्यक्ति का मन कई स्तरों से मिलकर बना है। इनमें से कुछ स्तरों का व्यक्ति को ज्ञान होता है और कुछ की नहीं।

[ब] चेतना के तीन प्रमुख स्तर (Three Chief Levels of Consciousness)

वर्तमान समय में सभी मनोवैज्ञानिक चेतना के तीन स्तर मानते हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

(१) चेतन मन (Conscious Mind)
(२) अर्धचेतन या उपचेतन मन (Sub-Conscious Mind)
(३) अचेतन मन (Unconscious Mind)

चेतन मन (Conscious Mind)

[अ] चेतन मन का अर्थ (Meaning of Conscious Mind)

चेतन मन चेतन का वह स्तर है जिसमें व्यक्ति को अपनी क्रियाओं का वर्तमान समय में ज्ञान रहता है। चेतन मन में विचार या भाव धारा के समान निरन्तर बहते रहते हैं जिन पर कभी हमारा नियन्त्रण रहता है और कभी नहीं। यह मन का ऊपरी और प्रथम स्तर है। फ्रायड महोदय का विचार है कि शिशु चेतन मन को लेकर उत्पन्न होता है जिसमें मूल प्रवृत्तियों की शक्ति का भंडार रहता है। चेतन के इस स्तर **'अवधान का केन्द्र'** (Focus of Consciousness) या **'चेतना का केन्द्र'** (Focus of Consciousness) कहते हैं। चेतना के केन्द्र एवं चेतन की सीमा दोनों मिलाकर **'चेतन का क्षेत्र'** (Field of Consiouness) बनता है। चेतन के केन्द्र तथा चेतन की सीमा का चित्र नीचे दिया गया है।

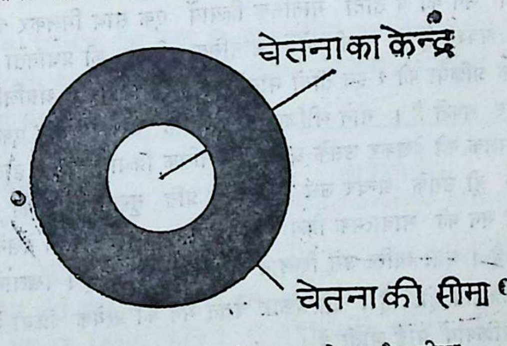

चित्र संख्या ३६—चेतना का केन्द्र और सीमा

चेतना का केन्द्र तथा सीमा की क्रियाओं में सदैव परिवर्तन होता रहता है। जो क्रियायें चेतना के केन्द्र में रहती हैं उनका व्याक्त को स्पष्ट रूप से ज्ञान होता है और जो क्रियायें चेतना की सीमा में रहती हैं उनका व्यक्ति को स्पष्ट ज्ञान नहीं होता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है । ∵ चेतना के केन्द्र तथा चेतना की सीमा में परिवर्तन होने के कारण चेतना के क्षेत्र में भी सदैव परिवर्तन होता रहता है । इस प्रकार स्पष्ट है कि चेतना का केन्द्र चेतना की सीमा तथा चेतना के क्षेत्र में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है ।

[ब] चेतन मन की विशेषतायें (Characteristics of Conscious Mind)

फ्रायड (Freud) महोदय ने चेतन मन की निम्नलिखित पाँच विशेषतायें बतलाई हैं—

(१) मन का यह भाग जागृत अवस्था में श्रृंखलावद्ध रहता है ।

(२) चेत्तन मन की क्रियाओं का संचालन तथा नियन्त्रण वास्तविकता के निसेम (Reality Principle) के अनुसार होते हैं । दूसरे शब्दों में चेतन मन की क्रियायें वातावरण द्वारा प्रभावित होती हैं ।

(३) अधिकांश समय तक इसका सम्वन्ध क्षणिक उत्तेजनाओं से न रह कर ज्ञान से रहता है ।

(४) कोई भी कार्य करने के पूर्व मन का यह भाग विचार कर लेता है ।

(५) मन के इस भाग की क्रियायें प्राय: तर्क द्वारा संचालित होती हैं ।

[स] चेतन मन के पत्त (Aspects of Conscious Mind)

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चेतन मन या चेतना में अग्रलिखित तीन प्रकार की क्रियायें पाई जाती हैं—(१) **ज्ञानात्मक** (Knowing or Cognition) (२) **भावात्मक** (Feeling or Effection), (३) **क्रियात्मक** (Willing or Conation) । मन की ये तीनों मानसिक क्रियायें एक साथ मिलकर कार्य करती हैं । हाँ यह वात अवश्य है कि कभी कोई मानसिक प्रक्रिया की प्रधानता होती है कभी कोई मानसिक प्रक्रिया की । इन तीनों मानसिक क्रियाओं को हम अग्रलिखित उदाहरण द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं । मान लीजिए एक व्यक्ति खेलता हुआ एक सुन्दर वालक देखता है । वालक को देखकर उसके अन्दर मानसिक क्रियायें उत्पन्न होती हैं । इसके उपरान्त शीघ्र ही उसके अन्दर उस वालक के प्रति सुख या दुख की अनुभूति होती है । वे चेतन मन की भावात्मक क्रियायें हैं । सुन्दर बालक को देखने से सुख की अनुभूति होती है । अत: व्यक्ति उसे खिलाने की इच्छा करता है । खिलाने की इच्छायें ही क्रियात्मक क्रियायें होती हैं । इस प्रकार चेतन मन की प्रत्येक क्रिया में तीन प्रकार की मानसिक प्रक्रियायें पाई जाती हैं ।

‡" The farther form the focus, the less clear the ideas, and it is impossible to say where consciousness leaves off."

—**Drummond and Mellove P. 11**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अर्धचेतन या अवचेतन मन
(Sub-Conscious mind)

[अ] अर्धचेतन या अवचेतन मन का स्वरूप
(Nature of Sub--conscious Mind)

अर्धचेतन या अवचेतन (Sub conscious) को कई नामों से पुकारा जाता है जैसे—Fore conscious, Co-conscious, Pre-conscious: Ulter-marginal consciousness"। **अर्धचेतन या अवचेतन मन चेतना का वह स्तर है जिसकी क्रियायें ध्यान की सीमा के परे होते हुए भी प्रयत्न करने पर ध्यान केन्द्र में लाई जा सकती हैं।** अर्धचेतन मन की क्रियायें न तो पूर्ण-रूपेण व्यक्त होती हैं और न अव्यक्त। प्रयत्न करने पर वे व्यक्त और अव्यक्त दोनों हो सकती हैं। अर्धचेतन स्तर की क्रियायें विना किसी 'प्रतिबन्ध' (Censor) के चेतन स्तर पर आ जाती हैं। जिस समय कोई व्यक्ति अपने कमरे में लिख रहा होता है उस समय कमरे की अनेक वस्तुयें जैसे पुस्तकें, पंखा, टेवुल आदि अर्धचेतन मन में रहती हैं। जैसे ही वह इन वस्तुओं की ओर ध्यान देता है वैसे ही वे वस्तुयें उसके मन के चेतन स्तर पर पहुँच जाती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि अर्धचेतन मन की क्रिया सरलता पूर्वक चेतन स्तर पर आ जाती है।

[ब] अर्धचेतन एवं अचेतन मन में अन्तर
(Difference between Sub-conscious and Unconscious Mind)

अर्धचेतन व अवचेतन मन चेतन मन तथा अचेतन मन के बीच की अवस्था है। ऊपर अर्धचेतन और चेतन मन का अन्तर स्पष्ट हो गया। आगे हम अर्धचेतन तथा अचेतन मन का अन्तर प्रस्तुत कर रहे हैं

अर्ध चेतन मन (Sub-conscious Mind)	अचेतन मन (Unconscious Mind)
(१) अर्धचेतन मन की क्रियाये न तो पूर्ण तथा व्यक्त होती हैं न पूर्ण तथा अव्यक्त।	(१) अचेतन मन की क्रियायें पूर्ण तथा अव्यक्त होती हैं।
(२) अर्ध चेतन मन की क्रियायें सीधे एवं सरलतापूर्वक चेतन मन में प्रवेश कर सकती हैं।	(२) जबकि अचेतन मन की क्रियायें अप्रत्यक्ष रूप से भेष वदल कर चेतन मन में प्रवेश करती हैं।
(३) अर्धचेतन मन की क्रियायों पर कोई प्रतिवन्धक काम नहीं करता है।	(३) किन्तु अचेतन मन की क्रियाओं पर प्रतिवन्धक का नियन्त्रण होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) अर्धचेतन मन की क्रियाओं को व्यक्ति स्वयं ज्ञात कर सकता है।	(४) अचेतन मन की क्रियाओं का ज्ञात करना मनोविश्लेषण पर ही निर्भर है।
(५) अर्धचेतन मन की क्रियायें एवं इच्छायें चेतन मन के ही समान होती हैं अर्थात् ये न तो नीति विरुद्ध होती है और न हानिकारक।	(५) किन्तु अचेतन मन की क्रियाओं की स्थिति बिलकुल विपरीत होती है। इसकी क्रियायें नीति तथा समाज विरुद्ध एवं वासनाजन्य होती हैं।
(६) अर्धचेतन मन की क्रियाओं का संचालन वास्तविकता के नियम के अनुसार होता है।	(६) किन्तु अचेतन मन की कियाओं का संचालन वासना के नियम के अनुसार होता है।

अचेतन मन
(Unconscious Mind)

[अ] अचेतन मन की फ्राइड द्वारा व्याख्या
(Interpretation of Unconscious Mind by Freud)

[अ] **अचेतन मन क्या है?** अचेतन मन की वैज्ञानिक धारणा को प्रस्तुत करने का श्रेय मनोविश्लेषण (Psycho-analysis) के महान विचारक सिग्माएड फ्रायड (Sigmund Freud) को प्राप्त हुआ उन्होंने अचेतन मन को जो व्याख्या की है वह प्राय: सभी मनोवैज्ञानिक किसी न किसी रूप में स्वीकार करते हैं। फ्रायड के अनुसार अचेतन मन, मन का सबसे निचला या मध्य भाग है। इसे **'चेतना की गहराई'** (Depth of consciousness) के नाम से पुकारा जाता है। यह मन का वह भाग है जिसके सम्बन्ध में व्यक्ति प्रयास भी करे तो भी उसे ज्ञान नहीं हो सकता है। फ्रायड का विचार है कि व्यक्ति अपने जीवन काल में जिन-जिन इच्छाओं (Desires) का दमन (Repression) कर देता है। वे इच्छायें चेतन मन का (Conscious Mind) से निकलकर अचेतन मन (Unconscions Mind) में प्रवेश कर वहीं संरक्षित रहती हैं और इन्हीं दमित इच्छाओं से चेतन मन का विकास भी होता है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर कौन सा कारण है जिसके कारण अचेतन मन की इच्छायें चेतन मन में प्रवेश नहीं कर पाती हैं? इस सम्बन्ध में फ्रायड का विचार है कि अचेतन मन एवं अवचेतन अथवा ईषद ज्ञात मन (Sub conscious or Bre-conscious) के मध्य में एक ऐसा द्वारपाल अथवा फ्रायड की भाषा में **'सेन्सर'** (Censor) रहता है जो अचेतन मन में पड़ी हुई दमित इच्छाओं को अवचेतन एवं चेतन मन में आने से रोक देता है। अब प्रश्न उठता है कि अचेतन मन की इच्छायें जब चेतन मन में नहीं आ पाती हैं तो फिर प्राणी के व्यवहार को परिचालित करने में अचेतन मन को क्यों स्थान दिया गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

है ? फ्रायड महोदय इसके उत्तर में यह कहते हैं कि हमारा अचेतन मन बहुत प्रबल होता है और जब वह सेन्सर के कारण अव्यक्त इच्छाओं को प्रकट करने में असमर्थ हो जाता है तो वह इन इच्छाओं का ऐसा स्वरूप प्रदान कर देता है जो व्यक्ति के अचेतन मन को स्वीकार हो। इस प्रकार हम देखते हैं कि व्यक्ति के व्यवहार को परिचालित करने में अचेतन मन का बहुत ही महत्व है। इस प्रकार एक प्रसिद्ध विद्वान् के शब्दों में अचेतन मन की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये हम कह सकते हैं कि **"हमारा अचेतन अथवा इदम् (फ्रायड ने इदम् को अचेतन मन के तुल्य माना है) हमारे दमित आवेगों, भूले हुए अनुभवों, इच्छाओं, चालकों, आवश्यकताओं, संवेगों एवं लालसाओं का भण्डार है जो कि सेन्सर अथवा नैतिक मन यह अहम् (Ego) जो कि चेतन मन के तुल्य होता है, की क्रिया तथा आदर्श का प्रतिफल है के कारण प्रकाशित होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं कर पाती हैं।"**

"Our unconscious or the Id is a storehouse of all our repressed impulses, forgotten experiences, desires, drives urges, emotions and wishes which could not find some way of expression because of the 'Censor' or super ego."

—An Eminent Educationist.

(ब) अचेतन मन का तीन उपायों द्वारा स्पष्टीकरण—फ्रायड महोदय अचेतन मन को अच्छी तरह स्पष्ट करने के लिए निम्नलिखित तीन उपमायें प्रस्तुत करते हैं—

(i ग्रीन रूम के समान—फ्रायड महोदय ने पहली उपमा के अन्तर्गत अचेतन मन को नाट्यशाला के ग्रीनरूम के सदृश्य माना है। जिस प्रकार नाटक के अभिनेता में नग्न तथा अर्द्धनग्न रूप में रहते हैं और यहां पर वस्त्र, शृंगार आदि की सामग्रियां अव्यवस्थित रूप में पड़ी रहती हैं उसी प्रकार अचेतन मन में हमारी दमित (Repressed) इच्छायें नग्न तथा अव्यवस्थित रूप में पड़ी रहती हैं। जिस प्रकार अभिनेता रंगमंच पर उतरने के लिए अपनी पोशाक, शृंगार, बोली इत्यादि को सुधार लेते हैं उसी प्रकार अचेतन मन की इच्छायें एवं वासनायें चेतन मन में पहुँचने के लिए नये नये वेश बदल कर मनोहर रूप धारण कर लेती हैं।

(ii) पहाड़ की दो चोटियों के सबसे निचले भाग के समान-दूसरी उपमा के अन्तर्गत फ्रायड ने अचेतन मन की तुलना पहाड़ की दो चोटियों के सबसे निचले भाग से की है। जिस प्रकार पहाड़ की चोटियों पर पूरे दिन प्रकाश रहता है उसी प्रकार चेतन मन (Conscious Mind) की अवस्था है। जिस प्रकार पहाड़ की चोटियों के मध्य भाग में केवल दोपहर को सूर्य का प्रकाश पहुँच पाता है उसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकार अर्धचेतन या अवचेतन मन (Sub-conscious Mind) की क्रियायें चेतन मन में पहुँच जाती हैं। जिस प्रकार पहाड़ की दो चोटियों के सबसे निचले भाग में सूर्य का प्रकाश कभी नहीं पहुँच पाता है और सदैव अन्धकार वना रहता है उसी प्रकार अचेतन मन (Unconscious Mind) की अवस्था है। अचेतन मन में सदैव अन्धकार वना रहता है और वहां मनुष्य के लिए पहुँचना कठिन है। चेतन अर्धचेतन तथा अचेतन मन की उपमा को निम्नलिखित चित्र द्वारा व्यक्त किया जा सकता है।

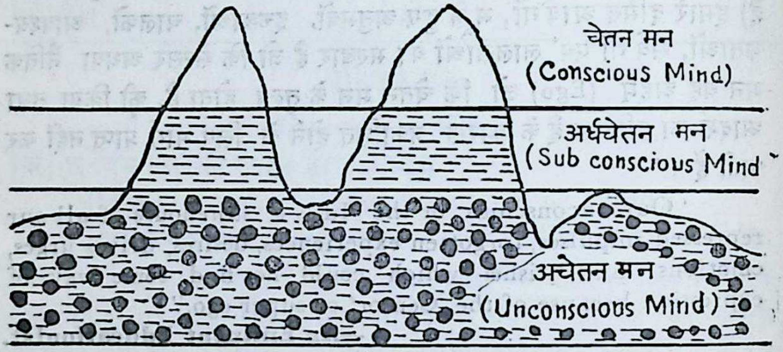

चित्र संख्या ३६ चेतना के स्तर

(iii) आइसवर्ग के पानी के अन्दर पाए जाने वाले भाग के समान—तीसरी उपमा के अन्तर्गत फ्रायड ने अचेतन मन को समुद्र में बहते हुए वर्फ के उस वड़े खण्ड के समान वतलाया है जो पानी के अन्तर रहता है। जिस प्रकार वर्फ का १/१० भाग पानी के वाहर एवं शेष ६/१० भाग पानी के भीतर रहता है उसी प्रकार हमारा चेतन मन वहुत छोटा होता है और अचेतन मन वहुत वड़ा होता है। आइसवर्ग का थोड़ा सा ही भाग ऊपर दिखलाई देता है किन्तु यह वड़े-वड़े जलयानों को विध्वन्स कर डालता है। ठीक इसी प्रकार अचेतन मन की थोड़ी सी ही क्रियायें अप्रत्यक्ष रूप से चेतन मन में दिखाई देती हैं किन्तु उनमें इतनी शक्ति छिपी होती हैं कि वे सुदृढ़ तथा वड़े से बड़े व्यक्तित्व को नष्ट कर सकती है।

(स) फ्रायड द्वारा मन का एक अन्य विभाजन—फ्रायड ने पहले चेतन, अर्धचेतन तथा अचेतन मन के ये तीन भाग था स्तर वतलाये जिनका हम ऊपर उल्लेख कर चुके हैं। आगे चलकर उसने अपनी धारणा में परिवर्तन कर मन को अन्य प्रकार से तीन भागों में विभाजित किला—अहम् '(Ego) (२) नैतिक मन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(Super Ego) तथा (३) इवम् (Id)। अहम् को उसने चेतन मन के समान बतलाया। नैतिक मन की तुलना उसके अन्त:करण से का जा सकती है। इदम् को उसने ठीक अचेतन मन के समान बतलाया। इदम् में वे सभी इच्छायें और भावनायें रहती हैं जिनका दमन् अहम् के द्वारा होता है। यह भाग 'लिबिडो या काम शक्ति' (Libido) का भण्डार है जो 'ऐन्द्रिक वासना तृप्ति सिद्धांत' (Pleasure Principle) के द्वारा शासित होता है। यहाँ पर पूर्वजों से प्राप्त जातीय-गुण विशेषतायें (Racial Characteristics) भी रहती हैं।

[ब] अचेतन मन की युंग द्वारा व्यवस्था

(Interpretation of Unconscious Mind by Jung)

युंग (Jung) महोदय ने अचेतन मन की व्याख्या फ्रायड से पृथक रूप से की। उन्होंने अचेतन मन को परम्परागत बतलाया और कहा कि यह अनेक परम्पराओं से प्राप्त संस्कार है। युंग के अनुसार अचेतन मन की क्रियायें पौराणिक कथाओं के समान हैं चाहे वे किसी भी धर्म से सम्बन्धित क्यों न हों। यदि हम युंग के मत के आधार पर महाभारत के युद्ध पर विचार करें तो पाण्डवों की सेना चेतन मन के, कौरवों की सेना अचेतन मन के तथा मार्ग प्रदर्शक कृष्ण नैतिक मन के समान हैं। इसी प्रकार पौराणिक कथाओं में पाए जाने वाले अन्य युद्ध चेतन और अचेतन मन का ही युद्ध है। युंग महोदय ने अचेतन मन के निम्नलिखित दो भाग बतलाये हैं—

(१) निजी या वैयक्तिक अचेतन मन (Personal or Individual Unconscious)—अचेतन मन का यह भाग उन इच्छाओं या कामनाओं का भंडार है जो सामाजिक एवं नैतिक बन्धनों के कारण दमित कर दी जाती हैं। यही दमित या दबी हुई इच्छायें व्यक्ति के वैयक्तिक अचेतन मन में स्वत: पहुँच कर अनेक प्रकार के व्यवहारों को प्रेरणा देती हैं। इस प्रकार निजी या वैयक्तिक मन व्यक्ति की जीवनी में दबी हुई इच्छाओं का भण्डार होता है।

(२) सामूहिक या जातिगत अचेतन मन (Collective or Racial Unconscious)—अचेतन मन का यह भाग हमारे पूर्वजों के संस्कारों का भण्डार है। एक व्यक्ति जितने गुणों एवं योग्यताओं को अपने समूह या जाति से प्राप्त करता है वे सब इस मन में एकत्र रहती हैं। ये जातिगत विशेषताएँ भाव बिम्बों के रूप होती हैं जिन्हें युंग 'Archetypes' या Primodal Images' के नाम से पुकारता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[स] अचेतन मन की विशेषतायें
(Characteristics of Unconscious Mind)

अचेतन मन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं :-

(१) अचेतन मन परिवर्तनशील होता है (Unconscious Mind is Dynamic in Nature)—अचेतन मन चेतना की ही स्तर है। जिस प्रकार चेतना निरन्तर परिवर्तनशील होती है उसी प्रकार अचेतन मन भी स्थिर न होकर निरन्तर परिवर्तित होता रहता है।

(२) अचेतन मन सदैव सक्रिय होता है (Unconscious Mind is always Active)—अचेतन मन निष्क्रिय न होकर सदैव सक्रिय होता है। यह सदैव व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहारों को प्रभावित करता रहता है। वास्तव में वह अचेतन मन ही है जो कि व्यक्ति को व्यवहार करने की प्रेरणा प्रदान करता है और उसे क्रियाशील होने की क्षमता प्रदान करता है।

(३) अचेतन मन व्यक्ति के व्यवहार को संचालित एवं नियंत्रित करता है (Unconscious Mind Directs and Controls the Bechaviour of Individual)—व्यक्ति अपनी बहुत सी इच्छाएँ, कामनाओं और वासनाओं को समाज में तुष्ट नहीं कर पाता है। अतः वे उसके अचेतन मन में चली जाती हैं और वहीं से व्यक्ति के व्यवहार को संचालित एवं नियन्त्रित करती है। इसीलिए प्रायः कहा जाता है कि अचेतन मन को समझे बिना हम व्यक्ति के व्यवहार को नहीं समझ सकते।

(४) अचेतन मन में विरोध नहीं पाया जाता है (There is no Contradiction in Unconscious Mind)—अचेतन मन व्यक्ति की समस्त दमित (Repressed) इच्छाओं, वासनाओं एवं कामनाओं को अपने में स्थान देता है। यहाँ पर कोई भी इच्छा या कामना नहीं है जिसे अचेतन मन स्वीकार न करता हो। इसके सम्मुख जो कुछ भी आता है वह सबको स्थान देता है। यहाँ पर जो भी कामनाएँ एवं इच्छाएँ होती हैं उनमें कोई संघर्ष नहीं होता है।

(५) अचेतन मन की आधार शिला शैशवावस्था है (The Infancy is the Foundation stone of the Unconscious Mind)—अचेतन मन की शुरुआति शैशवावस्था से प्रारम्भ होती है। शैशवावस्था में बालक अपनी मूल प्रवृत्तियों या जन्मजात प्रेरणों की तुष्टि के लिए वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है। इस प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप उसे जो अनुभव प्राप्त होते हैं वे अचेतन मन की आधारशिलाएँ हैं। धीरे धीरे जैसे जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे वैसे उसके अनुभवों में वृद्धि होती जाती है और ये सभी अनुभव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अचेतन मन में संचित होते जाते हैं। शैशवावस्था में बालक जो अनुभव प्राप्त करता है वही अनुभव उसे भावी अनुभवों को ग्रहण करने में अत्यधिक प्रेरणा प्रदान करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शैषवावस्था अचेतन मन की आधारशिला है।

(६) अचेतन मन एन्द्रिक वासना तृप्ति सिद्धान्त से संचालित होती हैं (Unconscious Mind is directed by Pleasure Principle)—अचेतन मन का वास्तविकता (Reality) से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। यह समाज की प्रथाओं, रीति रिवाजों, नैतिक नियमों की कोई परवाह नहीं करता है क्योंकि उनका इससे कोई सम्बन्ध ही नहीं होता। यह तो 'ऐन्द्रिक वासना तृप्ति सिद्धान्त' से संचालित होता है। इसका काम केवल मूलप्रवृत्तियों और पाशविक इच्छाओं की तुष्टि करना है।

(७) अचेतन मन एक अनुभवात्मक मानसिक शक्ति है (Unconscious Mind is a Positive Psychic force)—स्वप्नों के द्वारा यह सिद्ध होता है कि अचेतन मन एक अनुभवात्मक शक्ति है। जब हम निन्द्रावस्था में होते हैं तो हमारी चेतना क्रियायें मौन हो जाती हैं किन्तु इस अवस्था में भी अचेतन मन सक्रिय बना रहता है जिसके कारण हमें स्वप्न में ऐसी बहुत सी कल्पिक वस्तुयें दृष्टिगोचर होती हैं जिनका जागृत जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। निद्रावस्था में हमारा अचेतन मन चेतन मन के प्रतिबन्धों की शिथिलता के कारण अधिक सक्रिय हो सकता है। मन का यही भाग जर्थात् अचेतन मन हमारी अनुभूतियों से तारतम्य रखता है। अतः यह स्पष्ट है कि अचेतन मन एक अनुभवात्मक मानसिक शक्ति है।

(८) अचेतन मन में तर्क का कोई स्थान नहीं होता है (There is no Place for Reasoning in Unconscious Mind)—अचेतन मन में तर्क, बुद्धि और सूझ (Reasoning, Intelligence and Insight) का कोई स्थान नहीं होता है। इसकी क्रियायें न तो तर्क पर आधारित होती हैं और न तो उनको तर्क के द्वारा समझाया जा सकता है।

(९) अचेतन मन समय से प्रभावित नहीं होता है (Unconscious Mind is not affected by time)— अचेतन मन में क्रियाओं या समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। ये किसी भी समय किसी भी क्षण हो सकती है। इस प्रकार उनके होने पर समय का कोई बन्धन नहीं होता है।

(१०) अचेतन मन में शब्द नहीं होते हैं (Unconscious Mind has no words)---अचेतन मन में शब्द नहीं होते हैं बल्कि उसमें केवल मूर्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विचार एवं मूल प्रवृत्तियों से बनती उठती विचार प्रतिमायें रहती हैं। जिनकी अभिव्यक्ति हाव भाव या अनुभव क्रिया द्वारा होती है। यह तथ्य हमें स्वप्न देखने से पता चलता है।

[द] अचेतन मन के अस्तित्व के प्रमाण

(Proofs for existcnee of Unconscious Mind)

अचेतन मन के अस्तित्व के निम्नलिखित प्रमाण हैं :—

(१) निद्रावस्था में समस्याओं का हल (Solution of problems During Sleep):—प्रायः हमने देखा है कि जिन समस्याओं के सम्बन्ध में हम सोते समय चिन्तन करते हैं और उनका समाधान किये बगैर सो जाते हैं उन समस्याओं का निन्द्रावस्था में समाधान हो जाता है। जब हम जागते हैं तो हम उन समस्याओं का समाधान पा लेते हैं। हमें ऐसे अनेक कवियों, लेखकों, गणितज्ञों तथा वैज्ञानिकों के उदाहरण प्राप्त होते हैं जिनमें उन्होंने अपनी अनेक गम्भीर समस्याओं को निद्रावस्था में हल कर लिया। भारतीय गणितज्ञ श्री रामनुजम् ने गणित की अनेक कठिन समस्याओं को निद्रावस्था में सुलझा लिया था। सुप्रसिद्ध कवि कॉलरिज (Coleridge) ने कुबला खां (Kubla Khan) नामक कविता निद्रावस्था में ही बनाई थी। निद्रावस्था में समस्याओं को हल करना अचेतन मन का स्पष्ट प्रमाण है।

(२) निद्रावस्था में भी अवधान का चयन (Selective Attention even during Sleep)—प्रायः हम निद्रा की अवस्था में भी अवधान का चयन करते हैं। एक पत्नी अपने स्वामी की प्रतीक्षा करती हुई सो जाती है। पति के आने की थोड़ी सी आहट पाकर तुरन्त जाग जाती है। इसी प्रकार एक माता कितनी ही गहरी निद्रा में क्यों न सो रही हो किन्तु बालक के धीमे से ही रोने पर वह जग जाती है। इसके अचेतन मन के अस्तित्व का पता चलता है।

(३) एक निश्चित् समय पर जग जाना (Waking up at a fixed Time)—प्रायः हम सोने से पूर्व जिस समय जागने का निश्चय करते हैं उसी समय जग जाते हैं। परीक्षा के दिनों में कितना ही सोने वाला विद्यार्थी क्यों न हो किन्तु वह सुबह जिन समय उठने का दृढ़ संकल्प कर लेता है उसी समय उसकी नींद खुल जाती है। इसका कारण यह है कि हमारा अचेतन मन निद्रा की अवस्था में भी कार्य करता रहता है और हमारे उठने के दृढ़ निश्चय को ग्रहण कर हमें निश्चित समय में जगा देता।

(४) सम्मोहन (Hypnotism)—सबसे पहिले सम्मोहन के द्वारा ही अचेतन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन के अस्तित्व का पता लगा था। सम्मोहन का तात्पर्य विषयी (Subject) को ऐसी दशा में लाने की विधि से है जिस दशा में उसकी निर्देशिता (Suggestibility) इतनी अधिक बढ़ जाती है कि उससे जो कुछ भी कहा जाय वह करने को तैयार रहता है। इस विधि का सबसे पहिले प्रयोग फ्रान्स के मनोवैज्ञानिक जेनेट (Janet) तथा चारकोट (Charcot) ने किया था। सम्मोहन अवस्था में व्यक्ति को बाल्यावस्था से अब तक की बहुत सी भूली हुई बातों का पुनः स्मरण हो आता है जिनको कि वह सामान्य अवस्था पर आने पर याद नहीं कर पाता है। यह सब अचेतन मन के ही कारण होता है।

(५) सम्मोहनोत्तर निर्देश (Post-Hypnotic Suggestions)---सम्मोहन की अवस्था में विषयी (Subject) को सम्बोधितकर्ता थक कर निश्चित समय पर कोई कार्य करने का निर्देश देता है। सम्मोहन की अवस्था से जागने पर विषयी सम्मोहन की अवस्था की समस्त बातों को तो भूल जाता है किन्तु एक निश्चित समय में जो कार्य उसे करने को मिला है उसका वह पालन करता है। यदि विषयी से यह पूछा जाय कि उसने यह क्यों किया, तो वह उसका जवाब देने में असमर्थता प्रगट करता है। उसके इस व्यवहार से स्पष्ट होता है कि सम्मोहन की क्रिया अवस्था में उसका अचेतन मन सक्रिय था जिसने कार्य करने का निर्देश ग्रहण कर लिया है और जिसने जाग्रत अवस्था में विषयी को उसी के अनुसार कार्य करने के लिए बाध्य किया है।

(६) मानसिक रोग (Mental Diseases)—मनोविश्लेषकों एवं मानसिक चिकित्सकों ने मानसिक रोगों का पता लगाने में अचेतन मन के अस्तित्व को प्रमाणित किया। फ्रायड ने 'न्यू इन्ट्रोडक्टरी लेक्चर्स ऑन साइकोऐनालिसस' (New Introductory Lectures on Psycho analysis) में एक मानसिक रोगग्रस्त महिला का वर्णन किया है जो एक विचित्र व्यवहार किया करती थी। प्रायः वह सफेद मेज, पोस पर लाल रंग की रोशनाई उलट देती थी। तदुपरान्त नौकर को बुलाने के लिए घण्टी बजाती थी और मेज के एक विशेष कोने पर इस प्रकार खड़ी हो जाती थी कि जिससे मेजपोश के लाल निशान दूसरों को स्पष्ट दिखलाई दें। फ्रायड ने उक्त महिला के इस असामान्य व्यवहार का विश्लेषण कर यह पता लगाया कि इसका सम्बन्ध उसकी सुहागरात से था जिसकी हताशा को वह महिला अपने अचेतन मन में सजोए हुए थी और इस प्रकार का व्यवहार कर संतुष्ट करती थी। महिला को जब अपने व्यवहार का अचेतन कारण ज्ञात हो गया तो उसने यह व्यवहार समाप्त कर दिया। फ्रायड प्रायः अपने मानसिक रोगियों को ठीक करने की इसी विधि का प्रयोग करता था जिसमें वह रोगों के अचेतन कारणों को रोगियों की चेतना में ले आता था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(७) स्वप्न विश्लेषण (Dream Analysis)—स्वप्नों का विश्लेषण करने से पता चलता है कि हमारे अनेक स्वप्नों के निर्माण में अचेतन कारणों का बहुत बड़ा हाथ है। हमारी नित्यप्रति की दमित तथा निरुद्ध वासनायें एवं अभिलाषायें अचेतन मन में प्रविष्ट कर जाती हैं और वही विभिन्न प्रकार के स्वप्नों में अभिव्यक्त पाने का अवसर प्राप्त करती हैं। इस प्रकार स्वप्न विश्लेषण से अचेतन मन के अस्तित्व का स्पष्ट पता चलता है।

(८) स्वतन्त्र साहचर्य (Free Association)—हम मनोवैज्ञानिक प्रयोग शाला में स्वतन्त्र साहचर्य पर प्रयोग करते हैं। इस प्रयोग में विषयी (Subject) को कोई शब्द सुना दिया जाता है और कहा जाता है कि जो शब्द तुम्हारी जबान में आएँ उनका उच्चारण करते जाओ। विषयी शब्द सुनकर कुछ ऐसे शब्द उच्चारित करता है जिनके सम्बन्ध में यदि उससे पूछा जाय कि ये शब्द तुमने क्यों सुनाये, तो वह इसका कारण नहीं बता पाता। इससे पता चलता है कि ये शब्द उसके अचेतन मन से सम्बन्धित हैं इस प्रकार स्वतन्त्र साहचर्य द्वारा अचेतन मन के अस्तित्व का पता लगता है।

(९) स्वप्नचारिता (Somnambulism)—हमने कुछ ऐसे व्यक्तियों के उदाहरण सुने होंगे जो निद्रावस्था में उठकर कुछ कार्य करके सो जाते है। सुबह जब उनसे पूछा गया कि तुमने अमुक कार्य रात को किये थे तो वे कुछ भी नहीं बता पाते। कभी-कभी चलचित्र में भी ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जाते हैं जिससे हास्य अभिनेता निद्रा अवस्था में ही उठकर अनेक काम कर डालता है। इस प्रकार के कार्य अचेतन मन के द्वारा ही संचालित होते हैं।

(१०) सांकेतिक क्रियाओं की अभिव्यक्त (Expression of Symbolic Actions)—प्रायः बहुत से व्यक्ति अपने सामान्य जीवन में ऐसे व्यवहार जैसे कुर्सी में बैठे बैठे टाँगों को हिलाना, कंधों को ऊपर नीचे करना, गरदन हिलाना दांतों से नाखून काटना, उंगलियों को मोड़ना इत्यादि करते हैं जिनके सम्बन्ध में उन्हें यह चेतना नहीं होती कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं। इस प्रकार के व्यवहारों का कारण उनका अचेतन मन हुआ करता हैं। वे अपनी अतृप्त इच्छाओं को इस प्रकार के व्यवहार कर तुष्टि करते हैं।

(११) दैनिक जीवन की मनोवृत्तियाँ (Psycho Pathologies of Everyday life) = प्रायः आपने दैनिक जीवन में यह अनुभव किया होगा कि आप कुछ करना चाहते हो कुछ और हो जाता है, आप कुछ कहना चाहते हो कुछ और बोल जाते हो। फ्रायड महोदय ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'साइको' पैथोलाजी आफ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एवरी डे लाइफ (Psychnpathological of Every day Life) में ऐसे अनेक भूलों (Errors) तथा त्रुटियों (Slips) का रोचक वर्णन किया है ' उदाहरण के लिए एक डाक्टर ने एक पशु औषधि निर्माण करने वाली फर्म को लिखा कि मैंने तुम्हारी औषधियों को मनुष्यों पर परीक्षण करने पर ठीक पाया । यह उस डाक्टर की कलम की त्रुटि (Slip of Pen) की क्योंकि उसे मनुष्यों के स्थान पर पशुओं ने लिखना चाहिए था । वह विषयुक्त औषधि थीं और मनुष्यों पर जहर का प्रयोग करने का तात्पर्य कत्ल करना है । भला ऐसा भी कोई कातिल होगा जो अपने अपराध को स्वीकार करले । वास्तविकता यह है कि वह लिखना तो 'पशुओं' ही चाहता था लेकिन भूल से 'मनुष्यों' लिख गया । फ्रायड महोदय ने बाद में बताया कि यह भूल अकारण नहीं थी वल्कि इससे लिए उसका अचेतन मन उत्तरदायी था जिसमें डाक्टर का अपराध-भाव छिपा था । पुलिस द्वारा छानवीन करने पर पता चला कि उस डाक्टर ने सचमुच में एक व्यकित को विष दिया था । इसी प्रकार की अन्य अनेक दैनिक जीवन में सम्बन्ध रखने वाली भूलें जैसे कलम का वार-वार नीचे गिरना, प्रेमपत्र के स्थान पर द्वेष पत्र लिखने लगना, किसी चीज को वार-वार भूल जाना इत्यादि है जिनका कारण अचेतन मन है ।

(१२) स्मृति (Memory)—जव हम किसी चीज का स्मरण करते हैं तो उसके स्मृति चिन्ह (Memory Traces) अचेतन मस्तिष्क में बन जाते हैं। हमारे समस्त पूर्व अनुभव स्मृति चिन्हों के रूप में अचेतन मस्तिष्क में संचित रहते हैं । जव हम उनका पुनः स्मरण करते हैं तो ये संचित स्मृति चिन्ह हमें पूर्व अनुभव का ज्ञान कराते हैं। इससे स्पष्ट है कि अचेतन मन का अस्तित्व है ।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में चेतन की अग्रलिखित विशेषतायें हैं—(१) चेतना सदैव व्यक्ति विशेष के मस्तिष्क से सम्बन्धित होती है, (२) चेतना निरन्तर परिवर्तन होती रहती है, (३) चेतना निरन्तर होती है तथा (४ चेतना चयनात्मक होती है। चेतना के अग्रलिखित तीन प्रमुख स्तर हैं—(१) चेतन मन, (२) अर्द्ध चेतन या अवचेतन मन तथा (३) अचेतन मन । चेतन मन चेतन का वह स्तर है जिसमें व्यक्ति को अपनी क्रियाओं का वर्तमान समय में ज्ञान रहता है। अर्ध चेतन या अवचेतन मन चेतन का वह स्तर है जिसकी क्रियायें ध्यान की सीमा के परे होते हुये भी प्रयत्न करने पर ध्यान के केन्द्र में ये लाई जा सकती हैं। अचेतन मन चेतन का वह भाग है जिसका व्यक्ति को कोई ज्ञान नहीं होता है **अचेतन मनकी विशेषतायें**—अचेतन मन परिवर्तन शील होता है, (२) अचेतन मन सदैव सक्रिय होता है (३) अचेतन मन व्यक्ति के व्यवहार को संचालित एवं नियन्त्रित करता है, (४) अचेतन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन में विरोध नहीं पाया जाता है (५) अचेतन मन को आधारशिला शैशवावस्था में है (६) अचेतन मन ऐन्द्रिक वासना तृप्ति सिद्धान्त से सचालित होता है। (७) अचेतन मन एक अनुभवात्मक मानसिक शक्ति है, (८) अचेतन मन में तर्क का कोई स्थान नहीं होता है, (९) अचेतन मन समय से प्रभावित नहीं होता है, (१०) अचेतन मन में शव्द नहीं होते हैं। **अचेतन मन के अस्तित्व के प्रमाण**—(१] निद्रावस्था में समस्यओं का हल, (२) निद्रावस्था में भी अवधान का चयन, (३) एक निश्चित समय पर जग जाना, (४) सम्मोहन, (५) सम्मोहनोत्तर निर्देश, (६) मानसिक रोग, (७) स्वप्न-विश्लेषण, (८) स्वतन्त्र साहचर्य, (९) स्वप्नचारिता, (१०) सांकेतिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति, (११) दैनिक जीवन की मनोवृत्तियां तथा (१२) स्मृति।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३८

स्वप्न और दिवा-स्वप्न

(Dream and Day-dream)

प्रश्न-संख्या—३८

स्वप्न के स्वरूप, प्रकारों, कारणों तथा सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए दिवा-स्वप्न क्या है ? वह स्वप्न से किस प्रकार भिन्न है ?

Discuss the nature, kinds, causes and theories of dream. What is day-drean How does it differ from dream. ?

भूमिका (Introduction)

आदि काल से ही जिज्ञासु-मानव स्वप्नों की क्रियाओं के सम्बन्ध में जानकारी प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक रहा है। प्राचीन काल में लोगों का विश्वास था कि स्वप्नों का सम्बन्ध वास्तविक जगत से न होकर अलौकिक या दैवी जगत से है। अतः स्वप्नों को वे देवताओं या दानवों से अनुप्रेरित मानते थे। इसी प्रकार स्वप्न के सम्बन्ध में कुछ अन्य अवैज्ञानिक धारणायें प्रचलित थीं। किन्तु यूनान के प्रसिद्ध विद्वान् अरस्तू (Aristotle) ने सर्वप्रथम स्वप्नों को मनोवैज्ञानिक समस्या के रूप में देखा और उन्होंने यह बताया कि स्वप्न का सम्बन्ध किसी दैवीशक्ति से न होकर माननीय शक्तियों से है। अन्त में प्रसिद्ध मनोविश्लेषक सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) ने स्वप्न की सम्यक व्याख्या प्रस्तुत की जिससे आज हमें प्रश्न में पहले स्वप्न के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने के लिये स्वप्न का स्वरूप (Nature of Dream), स्वरूप के प्रकार (Kinds of Dream) स्वप्न के कारण (Causes of Dream) तथा स्वप्न के सिद्धान्त (Theories of Dream) प्रस्तुत करेंगे इसके उपरान्त दिवा-स्वप्न का स्वरूप (Nature of Day-dream) पर प्रकाश डालेंगे और अन्त में स्वप्न एवं दिवा-स्वप्न में अन्तर (Difference between Dream and Day-dream) को स्पष्ट करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वप्न का स्वरूप
(Nature of Dream)

(अ) स्वप्न का अर्थ (Meaning of Dream)

मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि स्वप्न एक निष्क्रिय रचनात्मक कल्पना है। वह कैसे ? जब व्यक्ति सो रहा होता है तो वह अनेक प्रकार के स्वप्न देखता है। जिन बातों को वह स्वप्न में देखता है वे उसे वास्तविक प्रतीत होती हैं। स्वप्न देखने के समय उसे इस बात का ज्ञान नहीं होता है कि वह स्वप्न देख रहा है। जब व्यक्ति स्वप्न देखता है तो उसका मस्तिष्क पूर्व निष्क्रिय होता है। दूसरे शब्दों में उसे स्वप्न देखने के लिए किसी प्रकार का प्रयास नहीं करना पड़ता है। व्यक्ति जो भी वस्तुयें स्वप्न में देखता है उसी प्रकार गत अनुभवों पर आश्रित होती हैं जिस प्रकार कल्पना की वस्तुओं का आधार पूर्व अनुभव हुआ करते हैं। स्वप्न में जो वस्तुयें देखी जाती हैं यद्यपि वे पूर्व अनुभव पर आधारित होती है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि जिस प्रकार किसी व्यक्ति ने उन वस्तुओं का पूर्व अनुभव किया है स्वप्न में भी वह उसी प्रकार देखे। प्रायः स्वप्न में तो व्यक्ति ऐसी घटनायें देखता है जिनको देखकर वह चमत्कृत हो रहा है। इस प्रकार हमने देखा कि स्वप्न देखने में हमारा मन निष्क्रिय रहता है, जो वस्तुयें हम देखते हैं पूर्व अनुभव पर आधारित होती हैं। जो वस्तुयें हम स्वप्न में देखते हैं आवश्यक नहीं कि हमने उनका उसी प्रकार पूर्व अनुभव किया हो बल्कि वे तो नवीन ढंग की होती हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि 'स्वप्न एक निष्क्रिय रचनात्मक कल्पना है।' (Dream is Passive Constructive Imagination) ब्रिजेज महोदय के अनुसार स्वप्न अनिर्देशित चिन्तन है जो कपोल-कल्पना तथा मुक्त साहचर्य के ही समान है" कल्पना के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए वुडवर्थ ने लिखा है, "वह स्वप्न दिवास्वप्न की अपेक्षा नियन्त्रण एवं आलोचना से मुक्त रहता है। दिन की सम्भावना, सभ्यता सौन्दर्य, हास्य अथवा किसी प्रकार की उत्तमता पृष्ठिभूमि न चली जाती है, औचित्य हवा में उड़ जाता है। भाषण के बीच में हा दृश्य बदल जाते हैं एवं अभिनेता जिसने एक व्यक्ति के रूप में प्रारम्भ किया है किसी अन्य में विलीन हो जाता है।"

"Even freer from control and criticism that the day-dream day time standards of probabilty, decorum, beuuty wit and excellence of any sort are in abeyance. Consistency is thrown to the winds, the

---

"The drem is a form undtrecied thinking analogous to reverie and free association." —Bridges

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

scenes being shifted in the middle of speech and a character who starts in as one person merging into somebody else."

—Woodworth

[ब] स्वप्न की विशेषतायें (Chara cteriscs of Dream)

(१) स्वप्न प्रायः छिनली निद्रा में दिखलाई पड़ते हैं। जागने के लगभग २-३ घंटे पूर्व से स्वप्न अधिक उत्पन्न होते हैं। इसलिये हम रात्री के अन्तिम पहर में अधिक स्वप्न देखते हैं।

(२) यद्यपि स्वप्न में सभी प्रकार के बिम्ब दिखलाई पड़ते हैं जिन्हें हम जाग्रति अवस्था में देखते हैं किन्तु दृष्टि और श्रवण बिम्ब अधिक दिखलाई पड़ती है।

(३) स्वप्नों की सामग्री प्रायः हमारे पूर्व अनुभवों पर आधारित होती है।

(४) सुखद स्वप्नों की अपेक्षा दुखद स्वप्न अधिक दिखलाई पड़ते हैं।

(५) कभी-कभी स्वप्न देखते-देखते व्यक्ति हँसने या रोने लगता है। यह स्वप्नों की वाह्य अभिव्यक्ति की क्रिया कही जा सकती है।

(६) जब हम जागने पर स्वप्न का वर्णन करते हैं तो उसके अर्थ में काफी परिवर्तन हो जाता है। वर्णन करने में व्यक्ति कुछ घटनाओं को जोड़ देता है और कुछ को छोड़ देता है।

(७) जिस गति से जाग्रति अवस्था में विचारों का साहचर्य चलता है उसी गति से स्वप्न में हमें वस्तुयें अथवा घटनायें उसी प्रकार स्पष्ट एवं निर्मल प्रतीत होती है जिस प्रकार प्रत्यक्षीकरण किये जाने वाली वस्तुयें।

(८) स्वप्न में हम जो भी घटनायें देखते हैं हमें उनकी वास्तविकता पर विश्वास रहता है।

(१०) हम स्वप्नावस्था में घटनाओं एवं वस्तुओं को बहारी वातावरण में देखते हैं।

(११) स्वप्न में हम जो दृश्य देखते हैं वे हास्यप्रद, अद्भुत, एवं असंगत होते हैं।

(१२) स्वप्न देखने के समय हमारा मन निष्क्रिय होता है दूसरे शब्दों में स्वप्न का सम्बन्ध हमारी इच्छाओं से नहीं होता है।

(१३) सुषुप्तावस्था में देखने के कारण हम बहुत से स्वप्नों को भूल जाते हैं।

(१४) स्वप्न में हमें जो भी घटनायें दिखाई देती हैं वे विमात्मक (Hallucinatary) स्वरूप की होती हैं।

(१५) प्रायः स्वप्न में देखी जाने वाली वस्तुयें नवीन ढंग की होती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वप्नों के प्रकार
(Kinds of Dreams)

हम जो स्वप्न देखते हैं वे कई प्रकार के होते हैं। इन्हें निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है:—

(१) चिन्ता-स्वप्न (Anxiety-Dreams)—कुछ स्वप्न ऐसे होते हैं जिनको देखने से व्यक्ति चिन्तित हो जाता है। प्रायः ऐसे स्वप्नों से व्यक्ति डर जाता है और बेचैनी के कारण उसकी नींद खुल जाती है। निद्रा हटने के बाद कुछ देर तक हृदय की धड़कन तेज रहती है और कभी-कभी पसीने से शरीर तर-बतर हो जाता है।

(२) पूर्व-सूचक स्वप्न (Premonitory Dreams)—कुछ स्वप्न ऐसे होते हैं जो थोड़ी देर बाद घटने वाली दुर्घटना की सूचना देते हैं। व्यक्ति स्वप्न में जो दुर्घटना देखता है वह जाग्रत होने पर वास्तविकता के रूप में दिखाई देती है। एक बार एक स्त्री अपने रोगी बालक की सेवा करते करते सो गई। उसने यह स्वप्न देखा कि मानव एक हरे वृक्ष को उखाड़ कर लिए जा रहा है। स्वप्न देखते ही जब स्त्री की आंख खुली तो थोड़ी देर बाद उसके बच्चे की मृत्यु हो गई। यह पूर्व-सूचक स्वप्न है।

(३) भविष्य-सूचक स्वप्न (Prophetic Dreams)—कुछ स्वप्न भविष्य की सूचना देते हैं। उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी का स्वप्न में यह देखना कि परीक्षा में अमुक-अमुक प्रश्न आये हुए हैं। इसी प्रकार एक विद्यार्थी का यह स्वप्न देखना कि वह परिक्षा में उत्तीर्ण हो गया है। ये स्वप्न आवश्यक नहीं कि वे सत्य निकलें।

(४) पूर्व-रोग सूचक स्वप्न (Prodromic Dreams)—कभी-कभी कुछ व्यक्ति स्वप्न में यह देखते हैं कि उनका सिर या पेट दर्द कर रहा है, या उन्हें जुखाम हो गया है। जाग्रत होने पर वे ऐसे ही रोग से अपने आप को पीड़ित पाते हैं।

(५) लकवे के स्वप्न (Paralytic Dreams)—प्रायः कुछ व्यक्ति ऐसे स्वप्न देखते हैं कि उनके शरीर का कोई अंग शून्य हो गया है। वे कुछ काम करने की कोशिश करते हैं किन्तु हाथ काम नहीं देते हैं। यहां तक कि कभी-कभी वे हिल डुल भी नहीं पाते हैं कभी उनका कोई भयानक जानवर पीछा करता है किन्तु वे भाग नहीं पाते हैं। प्रायः हृदय पर हाथ रखकर सो जाने से इस प्रकार के स्वप्न होते हैं।

(६) गति के स्वप्न (Kinesthetic Dreams)—कभी-कभी हमें गति के स्वप्न होते हैं। इन स्वप्नों में कभी हम अपने आप को हवा में उड़ते हुए, कभी नदी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में तैरते हुए, कभी पेड़ से नीचे कूदते हुए तो कभी उस पर उड़ कर चढ़ते हुए, कभी रेल के इंजन के साथ दौड़ते हुए देखते है। प्राय: इस प्रकार के स्वप्न प्रतीकात्मक होते हैं।

(७) भयानक स्वप्न (Night mares)--कुछ स्वप्न ऐसे होते हैं जो बड़े भयानक होते हैं। इनमें हम कभी यह देखते हैं कि एक राक्षस ने हमारा गला दवाकर हमें मार डाला, कभी हम चारो ओर सर्पों से घिरे हुए पाते हैं। कभी-कभी हम इस प्रकार के स्वप्नो को देखकर चिल्लाने लगते हैं। इस प्रकार के डरावने स्वप्नों का कभी कभी वहुत दिनों तक प्रभाव रहता है।

(८) मृत्यु के स्वप्न (Dreams of Death)—इस प्रकार के स्वप्नों में हम किसी परिचित व्यक्ति को मरा हुआ देखते हैं या मरे हुए व्यक्ति को जीवित देखते हैं। ये स्वप्न हमारी दवी हुई इच्छाओं का प्रदर्शन करते हैं।

(९) दण्ड के स्वप्न (Dreams of Punishment)—कुछ स्वप्न ऐसे भी होते हैं जिसमें कोई व्यक्ति यह देखता है कि उसे घोर शारीरिक पीड़ा दी जा रही है। इस प्रकार के स्वप्नों का कारण अचेतन मन में दण्ड भोग की इच्छा का होना है।

(१०) प्रतिरोध स्वप्न (Protest Dreams)—इस प्रकार के स्वप्न समाज की प्रथाओं एवं नियमों को प्रतिरोध स्वरूप होते हैं। जैसे स्वप्न में एक स्त्री अपने कपड़े उतार कर नग्न हो जाती है, कोई व्यक्ति किसी परिचित स्त्री के साथ यौन सम्बन्ध स्थापित करता है आदि। इस प्रकार के स्वप्नों में व्यक्ति अपनी समाज द्वारा दमित भावनाओं और इच्छाओं की संतुष्टि करता है।

(११) पुनरावर्तन स्वप्न (Re.current Dreams)—कुछ स्वप्न व्यक्ति को वार वार दिखाई देते हैं जैसे परीक्षा फल निकलने के पूर्व ही किसी विद्यार्थी का वार वार यह देखना कि उसका परीक्षा फल अखवार में निकल गया है और वह उत्तीर्ण हो गया है।

(१२) सामूहिक स्वप्न (Collective Dreams)—कई वार ऐसा भी हुआ है कि एक ही प्रकार का स्वप्न कई व्यक्तियों ने देखा है। इस प्रकार के स्वप्न सामूहिक स्वप्न कहलाते हैं।

स्वप्न के कारण (Causes of Dreams)

स्वप्न के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(१) आन्तरिक उत्तेजना (Internal Stimuli)—मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि वहुत से स्वप्न आन्तरिक उत्तेजनाओं (Internal Stimuli

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के कारण होते है। उदाहरण के लिए जब किसी व्यक्ति को सोते समय प्यास लगती है तो व्यक्ति नदियों एवं झरनों का स्वप्न देखने लगता है एवं जब किसी व्यक्ति की सांस तीव्र गति से चलती है तो वह आकाश में उड़ने का स्वप्न देखने लगता है।

(२) भौतिक उत्तेजनायें (Physical Stimuli)—हमारे बहुत से स्वप्न भौतिक उत्तेजनाओं के कारण होते हैं। उदाहरण के लिए कोई आदमी सो रहा हो और करवट बदलने से गिलास का कुछ पानी गिरकर उसके पैरों में गिर गया हो तो उसे पानी में चलने के स्वप्न देखने की सम्भावना रहती है। इसी प्रकार यदि सोते हुए आदमी के पास जलती हुई लालटेन रख दी जाय तो वह आग लगने का स्वप्न देख सकता है।

(३) सोने के पूर्व विचार एवं भाव (Ideas and Feelings before Sleeping)—सोने के पहले मनुष्य के जो विचार एवं भाव रहते हैं उन्हीं के आधार पर व्यक्ति को बहुत से स्वप्न देखने को मिलते हैं। उदाहरण के लिए कोई स्त्री सोने के पूव अपने पति के सम्बन्ध में कुछ विचार करती है तो सोने में वह अपने पति को स्वप्न में देखेगी। यदि कोई बालक सोने के पूर्व किसी पुस्तक को ध्यान से पढ़ता रहा हो तो उसे उस पुस्तक एवं उसमें लिखित विचारों का स्वप्न देखने को मिलने की सम्भावना रहती है।

(४) चरित्र एवं स्वभाव (Character and Nature)--व्यक्ति का जैसा चरित्र एवं स्वभाव होता है वह उसी प्रकार के स्वप्न देखने लगता है। जो व्यक्ति दब्बू एवं डरपोक होता है वह नाना प्रकार के डरावने स्वप्न देखता है। इस प्रकार व्यक्ति के चरित्र एवं स्वाभाव का स्वप्नों के प्रकाशन में बहुत प्रभाव पड़ता है।

(५) ध्यान एवं रुचि (Attention and Interest)---जिस व्यक्ति की जिन वस्तुओं के प्रति रुचि होती है वह उन वस्तुओं पर अपना ध्यान केन्द्रित कर देता है। परिणामस्वरूप उन वस्तुओं का संस्कार उसके मस्तिष्क में निहित हो जाता है। जब व्यक्ति सोता होता है तो इन्हीं वस्तुओं के स्वप्न देखना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार स्वप्न देखने में ध्यान (Attention) एवं रुचि (Interest) का महत्वपूर्ण स्थान होता है।

इस प्रकार हमने देखा कि स्वप्नों के अनेक कारण होते हैं। कुछ विद्वानों ने स्वप्न क्यों होते हैं यह बताने के लिये अपने सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं। आगे हम स्वप्न के कुछ प्रमुख सिद्धान्तों पर प्रकाश डालेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वप्न के प्रमुख सिद्धान्त
(Important Theories of Dream)

[१] स्नायुविक या दैहिक सिद्धान्त
(Neurological or Physiological Theory)

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक बिंज (Binze), मौरी (Mauri), राबर्ट (Robert), डेलेज (Delege) इत्यादि विद्वानों के अनुसार स्वप्न की अवस्था व्यक्ति की आंशिक जागृत अवस्था है। प्राणी के मस्तिष्क में कुछ विच्छिन्न स्नायु-कोष पाये जाते हैं जो कि उत्तेजना के प्रति प्रतिक्रिया (Response) करने में तत्पर रहते हैं। जब भी किसी बाह्य या आन्तरिक उत्तेजना से इन्द्रियां प्रभावित होती हैं तब स्नायु प्रवाह (Nerve Impulse) मस्तिष्क में पाये जाने वाले इन स्नायुकोषों की उत्तेजना करते हैं जिसके कारण मनुष्य को स्वप्न होते हैं। इस प्रकार यह सिद्धान्त स्वप्नों की दैहिक आधार पर व्याख्या करता है इसीलिए इस सिद्धान्त को देहिक सिद्धान्त (Physiological Theory) कहते हैं। स्पष्ट है कि यह सिद्धान्त ऊपर बताये हुये दो कारणों का समावेश करता है। जहां तक इस सिद्धान्त के आधार पर स्वप्नों की उपयोगत का सम्बन्ध है वहां इसके समर्थकों का विचार है कि स्वप्न निरर्थक होते हैं और स्वप्नद्रष्टा के लिए इनकी कोई उपयोगिता नहीं होती है। इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए इस सिद्धान्त के समर्थक बिंज (Binze) ने लिखा है "जिन सब तथ्यों को हम देखते हैं वे हमको स्वप्न को एक शारीरिक प्रक्रिया मानने को प्रेरित करते हैं जों कि सभी मामलों में व्यर्थ हैं और बहुत से मामलों में निश्चय ही विकृत हैं।"

"All the facts as we see them urge us to characterize the dream as a physical process in all cases useless and in many cases definitely morbid."

—**Binze.**

[२] भविष्यवाचक सिद्धान्त (Prophetic Theory)

इस सिद्धान्त के अनुसार स्वप्न भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्व-उद्‌घाटन करते हैं। इस दृष्टिकोण से स्वप्न हमें भविष्य के होने वाले खतरों की चेतावनी देते हैं जिनका कि हमें भविष्य में सामना करना होगा। यद्यपि इस सिद्धान्त पर मनुष्य बहुत समय से विश्वास करता चला आया है किन्तु वास्तविकता यह है कि यह सिद्धान्त भले ही एक-दो स्वप्नों की व्याख्या कर दे पर सभी प्रकार के स्वप्नों की व्यख्या इस सिद्धान्त के आधार पर नहीं की जा सकती है। जो एक दो स्वप्न भविष्य-सूचक हो भी जाते हैं वे केवल संयोगवश होते हैं। उनका कोई वैज्ञानिकि आधार नहीं है। इस प्रकार यह सिद्धान्त भले ही उपयोगी प्रतीत होता हो

फा ०—२६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

किन्तु यह सत्यता पर आधारित नहीं है।

[३] मनो-स्नायु सिद्धांत
(Psycho-Neurological Theory)

इस सिद्धान्त के प्रवर्तक हार्टन (Hartan) महोदय के अनुसार स्वप्न प्रयास एवं भूल का पूर्व प्रत्यक्षीकरण (Apperceptic Trial and Error) है। स्वप्नों के द्वारा किसी उत्तेजना के प्रत्यक्षीकरण एवं उसकी व्याख्या करने के लिए प्रयत्न किया जाता है। ये प्रयत्न विफल या आंशिक सफल हो सकते हैं जब स्वप्न में यह प्रयत्न सफल हो जाता है तो इसका तात्पर्य व्यक्ति का उठ जाना होता है।

[४] मानसिक या मनोवैज्ञानिक सिद्धांत
(Mental and Psychological Theory)

इस सिद्धान्त का प्रतिपादन डीलेग (Delage) महोदय ने किया। उन्होंने बताया कि असन्तुलन के पश्चात्-प्रभाव के परिणामस्वरूप स्वप्न की क्रिया होती है। दिन भर की ऐसी बहुत सी उलझी हुई समस्यायें एवं संघर्ष होते हैं जिनके कारण मानसिक उत्तेजनायें बन जाती हैं यही उत्तेजनायें स्वप्न देखने की कारण होती हैं। यह सिद्धान्त उपर्युक्त वर्णित तृतीय सिद्धान्त के समान है।

[५] मानसिक संघर्ष का सिद्धांत
(Mental Conflict Theory)

इस सिद्धान्त के प्रमुख प्रवर्तक राइवर्स (Rivers) महोदय का विचार है कि स्वप्न मानसिक संघर्षों (Mental Conflicts) की अभिव्यक्ति है। राइवर्स महोदय का कथन है कि प्रत्येक मानसिक संघर्ष के दो पहलू होते हैं। स्वप्न में इन दोनों पहलुओं का प्रदर्शन होता है। उदाहरण के लिए मान लीजिये कि एक व्यक्ति, स्वप्न में एक भयानक पशु को अपनी ओर दौड़ता हुआ देखता है उससे बचने के लिये वह भागने के लिए लाख प्रयत्न करता है किन्तु उसे ऐसा प्रतीत होता है मानों उसके पैर निर्बल तथा शून्य हो गये हैं। यह स्वप्न व्यक्ति की एक ओर तो बचने को इच्छा का प्रदर्शन करता है तो दूसरी ओर वासना द्वारा आनन्द उठाने की आकांक्षा का प्रदर्शन करता है। इस प्रकार के स्वप्न से स्पष्ट है कि व्यक्ति में उस स्वप्न द्वारा प्राप्त उद्देश्य की प्राप्ति तथा विश्राम की इच्छा में संघर्ष दिखलाई देता है।

[६] मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत
(Psycho-analytic Theory)

स्वप्न के उपर्युक्त सिद्धान्तों से मनोविश्लेषक सिद्धान्त कहीं अधिक उपयुक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तथा वैज्ञानिक है। सर्वप्रथम सिगमण्ड फ्रायड (Sigmund Freud) ने स्वप्न का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त प्रस्तुत किया। उसके उपरान्त युंग (Jung) तथा एडलर (Adler) ने भी स्वप्न का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त प्रस्तुत किये। तीनों मनोविश्लेषकों के स्वप्न के सिद्धान्त क्रमश: अग्रलिखित हैं :---

(१) इच्छा पूर्ति का सिद्धान्त--फ्रायड
(Wish fulfilment Theory--Freud)

(२) स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त युंग
(Auto--Symbolic Theory-Jung)

(३) जीवन शैली की अभिव्यक्ति का सिद्धान्त--एडलर
(Theory of the expression of Style of life-Adler)

इच्छा पूर्ति का सिद्धान्त—फ्रायड
(Wish fulfilment Theory-Freud)

[अ] सिद्धान्त की व्याख्या
(Interpretation of the Theory)

इच्छा पूर्ति के सिद्धान्त के प्रतिपादक फ्रायड (Freud) महोदय ने स्वप्नों की सबसे पहले वैज्ञानिक रूप से व्याख्या की है। फ्रायड के अनुसार स्वप्न सार्थक एवं उपयोगी होते हैं क्योंकि ये व्यक्ति की अवदमित इच्छाओं की पूर्ति करते हैं। अतः उनके सिद्धान्त को लोगों ने स्वप्न का इच्छा पूर्ति का सिद्धान्त (Wish fulfilment Theory of Dream) कहा है। फ्रायड का विचार है कि व्यक्ति की काम की इच्छा सबसे प्रमुख होती है। उसने इसे 'लिबिडो' के नाम से संबोधित किया है। उसका विचार है कि यह काम की इच्छा व्यक्ति को निरन्तर पूर्ति होने के लिए प्रेरित करती रहती है परन्तु सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन में नाना प्रकार के नियमों के कारण व्यक्ति अपनी किसी इच्छा की पूर्ति नहीं कर पाता है। इस प्रकार व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति (Sexual tendency) की परितुष्टि करना चाहता है एवं सामाजिक नियम और बन्धन उसे ऐसा नहीं करने देते हैं, फलस्वरूप व्यक्ति में मानसिक संघर्ष (Mental Conflict) होने लगता है! अन्त में वह काम प्रवृत्ति का दमन (Repression) कर देता है, परिणामस्वरूप यह चेतन मन (Conscious Mind) से अलग होकर अचेतन मन (Uncouscious Mind) में प्रेषित हो जाती हैं। जब व्यक्ति सो रहा होता है तो उसका चेतन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मन (Conscious Mind) दुर्बल हो जाता है, अतः उसका प्रतिरोध Resistance) भी बहुत कम हो जाता है। परिणाम यह होता है कि अचेतन मन में दमित हुई काम सम्बन्धी इच्छाओं का स्वप्नों के रूप में अभिव्यक्तिकरण होने लगता है। इस प्रकार फ्रायड के अनुसार स्वप्न में अचेतन मन में दमित हुई इच्छाओं की अभिव्यक्त होती है और इस प्रकार काम सम्बन्धी अवदमित इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है। प्रश्न यह उठता है कि व्यक्ति जिस रूप में काम सम्बन्धी इच्छाओं का अवदमन करता है क्या कारण है कि स्वप्न में उन अवदमित इच्छाओं की उसी निम्न रूप में अभिव्यक्त नहीं होती है? उसके उत्तर में फ्रायड (Freud) महोदय यह कहते हैं कि निद्रावस्था में **'स्वप्न--प्रतिबन्धक'** (Dream-Censor) के कारण कुछ न कुछ प्रतिरोध (Resistance) अवश्य बना रहता है। फलस्वरूप स्वप्नावस्था में भी व्यक्ति की काम सम्बन्धी अवदमित इच्छाओं (Repressed desires) की नग्नरूप में अभिव्यक्ति नहीं हो पाती हैं बल्कि ये इच्छायें स्वप्न क्रिया (Dream work) द्वारा अपने स्वरूप को बदलकर प्रतीकों के सहारे अभिव्यक्ति होती हैं। फ्रायड के सिद्धान्त को प्रस्तुत करते हुये वुडवर्थ ने ठीक ही कहा है :—

"The wish gratified in the dream is one that has been unsatisfied in the day time. The desires that are satisfied during the day do not demand satisfaction in dreams, but day desire that is aroused during the day without being able to reach its conclusion is likely to come to the surface in a dream."

—Woodworth

[ब] स्वप्न की कार्य-पद्धतियाँ (Mechanisms of Dream)

फ्रायड ने स्वप्न क्रिया के अन्तर्गत प्रमुख पांच कार्य पद्धतियों (Mechanisms) को उल्लेख किया है जो निम्नलिखित हैं—

(१) संक्षेपण या संक्षिप्तीकरण (Condensation)—स्वप्न में हमारी बहुत सी इच्छाओं, विचारों, भावनाओं, आवेगों या शब्दों का प्रदर्शन किसी एक क्रिया द्वारा ही होता है ये इच्छायें, विचार, भावनायें आदि विरोधी क्यों न हों। मान लीजिए की व्यक्ति बहुत सी वस्तुओं से डरता है तो स्वप्न में सभी प्रकार की वस्तुओं से डरों का प्रदर्शन वह एक ही प्रकार की वस्तु से डरना देखकर कर सकता है। इसी प्रकार व्यक्ति एक व्यापक घटना का प्रदर्शन स्वप्न में एक छोटी घटना देखकर कर सकता है। इस प्रकार स्वप्न में संक्षेपण या संक्षिप्तीकरण की क्रिया चलती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) विस्थापन की स्थानान्तीकरण (Displacement)--स्वप्न में हमारी वास्तविक इच्छायें या भावनायें विस्थापन या स्थानान्तीकरण की कार्य-पद्धति द्वारा संचालित होती हैं। इस कार्य पद्धति के परिणामस्वरूप स्वप्न दृष्टि की इच्छा की पूर्ति के लिए अनावश्यक वस्तुयें आवश्यक और आवश्यक वस्तुयें अनावश्यक दिखलाई पड़ती है और इस तरह एक वस्तु का मान मूल्य (Value) दूसरी वस्तु में स्थानान्तरित (Transfer) हो जाता है। इस कार्य-पद्धति के कारण स्वप्न में हमारी अव्यक्त इच्छायें (Latent Desires) कुछ का कुछ रूप ग्रहण कर लेती हैं जैसे प्रेमिका का पत्नी के रूप में दिखाई पड़ना या प्रेमी का पति के रूप में दिखलाई पड़ना। इस प्रकार स्पष्ट है कि विस्थापन कार्य-पद्धति के कारण स्वप्न में सच्चाई छिप जाती है।

(३) नाटकीयता (Dramatisation)—स्वप्न में नाटकीयता की भी कार्य-पद्धति चलती है। इस पद्धति के सक्रिय होने के कारण स्वप्न में इच्छायें विचार तथा घटनायें चित्र के रूप में दिखलाई देती हैं और इसीलिये स्वप्न में स्वप्नद्रष्टा को ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह नाटक या चलचित्र देख रहा हो। ये चित्र, दृश्य, श्रव्य तथा स्पर्श तीनों रूपों में प्रकट हो सकते हैं। जिस प्रकार एक अभिनेता या नाटक का पात्र अपने 'मेंकअप' के द्वारा अपनी वास्तविकता को छिपा लेता है उसी प्रकार नाटकीयता कार्य-पद्धति के कारण हमारी दमित इच्छायें अपनी वास्तविकता को छिपा लेती हैं।

(४) प्रतीकीकरण (Symbolization)—प्रतीकीकरण स्वप्न की एक मुख्य कार्य पद्धति है। फ्रायड के अनुसार यह दूसरी स्वतन्त्रता कार्य पद्धति (Second independent Mechanism) है। इस कार्य-पद्धति के द्वारा दमित इच्छायें अपने प्रदर्शन के लिए स्वप्न में ऐसी वस्तुओं को अपना प्रतीक मान लेती हैं जो समुदाय द्वारा स्वीकृत हों। इस कार्य-पद्धति को अग्रलिखित उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। एक युवती ने स्वप्न में यह देखा कि एक युवक अति भूरे रङ्ग के घोड़े पर वार-वार चढ़ने का प्रयास कर रहा है कई वार के प्रयास के वाद वह अन्त में घोड़े पर चढ़ने में सफल हो जाता है और उसे दौड़ा ले जाता है। इस स्वप्न में प्रतीकीकरण की कार्य पद्धति इस प्रकार हैं। जो युवक घोड़े पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था उसका वह प्रेमी था। वह युवती उस युवक को बहुत चाहती थी किन्तु यौन सम्बन्ध के लिए वार-वार प्रस्ताव रखने पर वह युवती नैतिकता के कारण उस पुरुष के प्रस्ताव को ठुकरा देती थी। स्वप्न में नैतिकता या नैतिक प्रतिबन्ध (Censor) शिथिल पड़ जाता है इसलिए उसने अपनी कामेच्छा की पूर्ति के लिये स्वप्न में यह देखा कि अन्त में युवक घोड़े पर चढ़ने में सफल हो जाता है इस स्वप्न में घोड़े पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चढ़ना यौन सम्बन्ध का प्रतीक है। इसी प्रकार रेल में चढ़ना, भागना, तैरना उड़ना आदि दमित इच्छाओं के प्रतीक हैं। फ्रायड का विचार है कि प्रायः एक ही प्रकार के प्रतीक पूरे समुदायों के व्यक्तियों में देखे जाते हैं। हाँ यह अवश्य है कि व्यक्ति के लिए कोई प्रतीक कोई अर्थ रखता है और दूसरे व्यक्ति को कोई अर्थ।

(४) **परवर्ती विस्तार** (Secondary Elaboration)—मनुष्य का यह स्वभाव है कि वह अपनी प्रत्येक बात में एक तारतम्य तथा सार्थकता खेलना चाहता है। इसलिये स्वप्न समाप्त होने पर जब वह जग जाता है तो वह अपने देखे हुए स्वप्न को जहाँ तहाँ घटा बढ़ा कर उसे सार्थक, तर्कयुक्त तथा संगत बना देता है। इन क्रिया को ही परवर्ती कहते हैं। इस क्रिया के कारण स्वप्न का वास्ताविक रूप सामने नहीं आ पाता है।

(स) फ्रायड के सिद्धान्त की आलोचना

(Criticism of the Theory of Dream of Freud)

इसमें कोई संदेह नहीं कि अब तक स्वप्न के सम्बन्ध में जो सिद्धान्त प्रतिपादित हुये हैं इनमें से फ्रायड का इच्छा पूर्ति का सिद्धान्त (Wish fulfilment Theory) सबसे महत्व पूर्ण है क्योंकि इसने स्वप्न की सबसे वृहत् तथा वास्तविक व्याख्या प्रस्तुत की है। इतना होने पर भी फ्रायड का सिद्धान्त आलोचना से परे नहीं कहा जा सकता है। यदि हम स्वप्न क्रिया पर सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करें तो फ्रायड के सिद्धान्त में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती है :—

(१) फ्रायड महोदय ने काम प्रवृत्ति अथवा इच्छा को आवश्यकता से अधिक महत्व प्रदान किया है। वास्तविकता यह है कि काम प्रवृत्ति के अतिरिक्त और भी प्रवृतियाँ हैं जिनकी कि स्वप्न में अभिव्यक्ति हो सकती है। एडलर (Adler) ने काम प्रवृत्ति के बजाय आत्म-स्थापना (Self-assertion) की प्रवृत्ति को स्वप्न का कारण बताया है। युंग (Jung) महोदय ने सामूहिक अथवा जातिगत अचेतन (Collective or Racial Unconscious) की जातीय विशेषतायें (Racial Characteristics) को स्वप्न का कारण बतलाया है।

(२) हम समस्त स्वप्नों की व्याख्या कर यह नहीं कह सकते हैं कि इन सबका कारण अवदमन की हुई इच्छायें हैं।

(३) वुडवर्थ के अनुसार "फ्रायड महोदय अचेतन मन को बहुत अधिक महत्व दे देते हैं। प्रायः अतृप्त इच्छायें इतनी अचेतन नहीं हुआ करती हैं जितनी की वह उनको वर्णित करता है। वे अस्वीकृत, असंज्ञान, अविश्लिष्ट अवश्य होती हैं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परन्तु इतना होते हुये भी वे चेतन होती हैं। स्वप्नों में प्रकट होने वाली इतनी अचेतन इच्छायें नहीं होती हैं, जितनी कि अतृप्ति इच्छा में होती हैं जो पूर्णतया चेतना हो सकती हैं।"

(४) फ्रायड महोदय ने कदाचित् यह विचार नहीं किया कि बहुत से स्वप्न केवल कल्पना के विचित्र खेल मात्र हुआ करते हैं और जरूरी नहीं कि उनमें किसी अतृप्त वासना का प्रकाशन होता हो।

(५) फ्रायड महोदय ने असाधारण, विक्षप्त एवं स्नायविक विकृति के रोगियों के स्वप्नों के अध्ययन के आधार पर अपना स्वप्न सम्बन्धी सिद्धान्त प्रतिपादित किया है परन्तु हम असाधारण व्यक्तियों के आधार पर साधारण व्यक्तियों के स्वप्नों का विश्लेषण नहीं कर सकते हैं। मैकडूगल के शब्दों में "**स्वप्नों का अर्थ समझने के लिए फ्रायड का सिद्धान्त कुछ स्वप्नों और विशेषतया कुछ स्नायु विकृति (Neurosis) के रोगियों के कुछ स्वप्नों को समझने में सहायक हो सकता है परन्तु प्रत्येक स्वप्न के अर्थ को इस सिद्धान्त के अनुसार समझाने का बलपूर्वक प्रयत्न करने के लिये पर्याप्त आधार नहीं है।**

"Freud's theory may hold good of some dreams, more specially of some dreams of some neurotics, but that there is no suffcient ground to prove that all dreams can adequately be explained by his theory." **—McDougall**

स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त—युंग
(Auto-Symbolic Theory-Jung)

[अ] सिद्धान्त की व्याख्या (Interpretation of Theory)

स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त के प्रतिपादित युंग महोदय का मत है कि स्वप्न एक साधारण मानसिक क्रिया है जिसमें मनुष्य को सामान्य जीवन शक्ति (**General life energy**) विभिन्न प्रतीकों के रूप में अभिव्यक्त होती है। इस सम्बन्ध में युंग का यह भी कथन है कि यह आवश्यक नहीं कि स्वप्न के लिए इच्छाओं का दमन (**Repression**) आवश्यक है बल्कि उसके अनुसार दमन के अभाव में भी स्वप्न सम्भव है। व्यक्ति अपने सामूहिक या जातीय अचेतन मन (**Collective or Racial unconscious mind**) में जो भी प्रजातीय संस्कार (**Racial Characteristics**) अर्जित करता है उनकी प्रतीकों के रूप में स्वप्न में अभिव्यक्ति होती है। युंग के अनुसार हमारे अचेतन मन का यह स्वभाव है कि वह किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना के सम्बन्ध में सीधे न सोचकर परोक्ष रूप से सोचता है। इसीलिए स्वप्न में जिन घटनाओं का प्रदर्शन होता है वह सीधे न दिखलाई देकर प्रतीक के रूप में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिखलाई देती हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि युंग स्वप्न के स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त पर विश्वास करता है।

[ब] फ्रायड एवं युंग के सिद्धान्त में अन्तर

(Difference between the Theory of Freud and Jung)

फ्रायड तथा युंग के स्वप्न सम्बन्धी विचारों में निम्नलिखित अंतर हैं—

(१) जहाँ फ्रायड स्वप्न का कारण काम प्रवृत्ति (Sex) को मानता है वहाँ युंग का विचार है कि मनुष्य में एक सामान्य जीवन शक्ति होती है इसी की अभिव्यक्ति स्वप्न में होती है।

(२) यद्यपि युंग भी फ्रायड के समान स्वप्नों में अचेतन मन (Unconscious Mind) के महत्व को स्वीकार करता है किन्तु जहाँ फ्रायड व्यक्तिगत अचेतन मन (Pesonal conscious) को मानता है वहाँ युंग इसे गौण बताकर सामूहिक या जातिगत अचेतन मन (Collective or Racial Unconscious) पर जोर देता है।

(३) फ्रायड के अनुसार स्वप्न के लिए काम-प्रवृत्ति का दमन (Repression) आवश्यक है किन्तु युंग के अनुसार स्वप्न बिना दमन के भी हो सकते हैं। युंग का कथन है कि व्यक्ति के सामूहिक या जातिगत अचेतन मन में भी जो विशेषतायें संचित रहती हैं उन्हीं के संस्कारों (Archetypes) की ही सहज रूप में स्वप्न में अभिव्यक्ति होती है।

(४) फ्रायड के अनुसार स्वप्न का सम्बन्ध भूतकाल के अनुभवों से विशेषतः बाल्यकाल के काम-सम्बन्धी अनुभवों से होता है किन्तु युंग के अनुसार स्वप्नों का सम्बन्ध वर्तमान से है। स्वप्न वर्तमान समस्याओं की ओर व्यक्ति की अचेतन मनोवृत्ति के परिचायक होते हैं।

जीवन-शैली की अभिव्यक्ति का सिद्धान्त-एडलर

(Theory of the Expression of Style of life-Adler)

[अ] सिद्धान्त की व्याख्या (Interpretation of the Theory)

एडलर महोदय के अनुसार स्वप्न का मूल कारण मनुष्य की आत्म-स्थापन (Self-Assertion) की प्रवृत्ति है। यह आत्म-स्थापन की प्रवृत्ति ही मनुष्य की अपनी जीवन-शैली (Style of Life) का निर्माण करती है। इसका निर्माण बाल्यकाल के प्रारम्भिक वर्षों में ही हो जाता है। स्वप्न में व्यक्ति की इसी जीवन शैली की अभिव्यक्ति (Expression) होती है। एडलर का कथन है कि अपनी जीवन-शैली के आधार पर व्यक्ति वास्तविक जीवन में जो कार्य करता होता है स्वप्न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उसी का आभास (Rehearsal) मात्र होता है। इस प्रकार एडलर के अनुसार स्वप्न व्यक्ति की जीवन-शैली की अभिव्यक्ति है।

[ब] फ्रायड और एडलर के सिद्धान्त में अन्तर

(Difference between the Theory of Freud and Adler)

(१) स्वप्न के लिए जहाँ मानसिक संघर्ष (Mental conflict) तथा दमन (Repression) का प्रश्न है वहाँ फ्रायड, एडलर आदि सभी मनोविश्लेषक एक मत हैं किन्तु किस प्रवृत्ति का दमन होता है इसमें वे एक मत नहीं हैं। फ्रायड के अनुसार काम प्रवृत्ति (Sex) का दमन स्वप्नों का कारण है। एडलर के अनुसार आत्म-स्थापन (Self-Assertion) का अतृप्त रह जाना स्वप्नों का कारण है।

(२) फ्रायड के अनुसार स्वप्नों का सम्वन्ध भूतकाल के अनुभवों से है। एडलर के अनुसार स्वप्नों का सम्वन्ध भविष्य से है। एडलर का कहना है कि व्यक्ति को अपने वास्तविक जीवन में जो कार्य करने होते हैं स्वप्न उन्हीं कार्यों के अभ्यास (Rehearsal) मात्र हैं।

फ्रायड के सिद्धान्त के समान युंग तथा एडलर के सिद्धान्त भी एकांकी हैं। इनकी स्वप्नों की व्याख्या फ्रायड से कही कम सफल सिद्ध हुई।

स्वप्नों के सिद्धान्त के सम्बन्ध में निष्कर्ष

उपर्युक्त शब्दों में हमने स्वप्नों के प्रमुख सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। ये सभी सिद्धान्त एकांकी हैं और इनमें आंशिक सत्यता पाई जाती हैं। हमारे लिए यह अति कठिन है कि हम इन सभी सिद्धान्तों का समन्वय कर एक सामान्य सिद्धान्त बना लें। किन्तु इतना आवश्य है कि हम स्वप्न की व्याख्या के सवन्ध में सामान्य दृष्टिकोण अपना सकते हैं और स्वप्न की व्याख्या करने में सभी सिद्धान्तों पर दृष्टिपात कर सकते हैं। वुडवर्थ महोदय ने इन सभी सिद्धान्तों की अपर्याप्तता पर विचार करते हुए लिखा है "वास्तव में कोई भी व्याख्या स्वप्न को नहीं समझाती। जहां तक मेरे मत का प्रश्न है मुझे किसी भी व्याख्या की प्रामाणिकता के विषय में गंभीर सदेह हैं जो कुछ एक स्वप्न में विदित होता है वह निश्चित् ही उससे कहीं अधिक है जो किसी भी व्याख्या में स्थान पाता है।"

"No interpretation really conveys the dream. Speaking for myself, I have great doubts of the validity of any dream interpretation. What underlies a given dream is certainly much more than it finds a place in any interpretation."

—R. S. Woodworth

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दिवा-स्वप्न का स्वरूप (Nature of Day-Dream)

[अ] दिवा-स्वप्न का अर्थ (Meaning of Day Dream)

स्वप्न (Dream) की भांति दिवास्वप्न (Day-Dream) को भी 'निष्क्रिय रचनात्मक कल्पना' (Passive Constructive Imagination) कहा जाता है क्योंकि दिवा-स्वप्न में मनुष्य के मन को किसी प्रकार का प्रयास नहीं करना पड़ता है। विना प्रयास के ही नाना प्रकार के विचार व्यक्ति के मानस पटल में लाने का कार्य विचारों का साहचर्य (Ideas of Association) द्वारा सम्पादित होता है। जिनकी पूर्ति नहीं हो पाती है, फलस्वरूप व्यक्ति इन इच्छाओं का दमन कर देता है और ये अपना अस्तित्व रखते हुए अचेतन मन में वास करने लगती हैं। इन अवदमित एवं अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए व्यक्ति बिना प्रयास किये हुए दिवा-स्वप्न देखना प्रारम्भ कर देता है, पहले मानस पटल पर एक विचार आता है फिर साहचर्य के द्वारा नाना प्रकार के विचारों का ताँता लगा रहता है। एक मजदूर दिन भर मजदूरी करता है और फिर भी वह अपनी एवं अपने बाल-बच्चों की क्षुधा पूर्ति नहीं कर पाता हैं। जब वह किसी शान्तिपूर्ण जगह में बैठा होता है तो उसके मन में यह विचार आता है, "मैं अमुक राज्य का राजा हूँ, मेरी रानी बहुत ही सुन्दर और गुणवती है, मेरी आज्ञा का पालन सम्पूर्ण प्रजा करती है, मेरे पाँच कुँवर हैं जिनमें से दो उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त करने के लिए विलायत गए हैं एवं तीन मेरे राज्य रत्न बने हुए हैं...आदि ।...इस प्रकार कुछ समय के लिए व्यक्ति दिवा-स्वप्न में अपनी अवदमित एवं अतृप्त इच्छाओं को नवीन ढंग से दिवा-स्वप्न में तृप्त कर लेता है। दिवा-स्वप्न की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये वुडवर्थ ने लिखा है **"एक दिवा-स्वप्न भविष्य की ओर देखता है मानो सम्भावित क्रिया कि योजना बना रहा हो, केवल वह एक गम्भीर योजना नहीं है, आवश्यक रूप से एक ऐसी योजना नहीं है जो कि यथार्थ जीवन में काम कर सके किन्तु वह केवल कल्पना का एक खेल है।"**

"A day dream typically looks towards the future as if planning for possible action only it is not a serious plan, nor necessarily a plan which could work in real life but is merely a play of imagination." **—WoodWorth**

[ब] दिवा-स्वप्न में नायक के दो स्वरूप
(Two forms of Hero in day-Dream)

वुडवर्थ के शब्दों में **"दिवा-स्वप्नों में प्रायः एक नायक होता है एवं वह स्वप्नदृष्टा नायक होता है। कभी वह विजेत नायक होता है और कभी पीड़ित**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नायक होता है।† आगे हम नायक के इन दोनों स्वरूपों के लक्षण प्रस्तुत कर रहे हैं—

(१) (विजयी नायक (Conquering Hero)—जब कोई स्वप्नदृष्टा विजयी के नायक के रूप में होता है तो वह नाना प्रकार की कठिनाइयों का अतिक्रमरण करते हुए अपने शत्रुओं का संहार कर उन पर आधिपत्य जमा देता है। इस प्रकार वह अपने सामने अन्य लोगों को तुच्छ समझता है। उदाहरण के लिए एक भिखारी विजयी नायक के रूप में अपने को महान सम्राट होने का विचार कर सकता है और वह अपने को सम्राट के रूप में समझ कर अन्य लोगों को छोटा समझने लगता है। इस प्रकार विजित नायक को प्रभुता अथवा उच्चता की भ्रान्ति (Delusion of Grandeur) हो जाया करती है।

(२) विजित नायक (Conquered Hero)—विजित नायक के रूप में नायक अपने को नाना प्रकार की विपत्तियों से घिरा हुआ समझता है। वह स्वयं अपने को अपमानित, दुखी, असफल एवं हीन अवस्था में देखता है परन्तु विजित नायक भी किसी-न-किसी तरह से आत्म-स्थापन (Self-assertion) की प्रवृत्ति को सन्तुष्ट कर लेता है। उदाहरण के लिए किसी बालक को अपने माता-पिता की प्रतिदिन डाँट सहना पड़ती है। परिणामस्वरूप वह अपने को एक महान शहीद अथवा त्यागी होने का विचार कर सकता है। दूसरे शब्दों में वह यह विचार कर सकता कि वह देश के लिए अपने प्राण त्याग कर रहा है। इस प्रकार बालक आत्म-स्थापन (Self-Assertion) की प्रवृत्ति को दिवा-स्वप्नों में सताये जाने की भ्रान्ति (Delusion of Persecution) के द्वारा तृप्त कर लेता है। डा० सिन्हा ने ठीक ही कहा है—

"Thus the instinct of self-assertion is satisfied in this kind of day-dream also.The suffering hero of day dream may be accompanied by delusions of persecution in insanity."

—J. N. Sinha

स्वप्न और दिवास्वप्न में अन्तर

(Difference between Dream and Day-dream)

स्वप्न एवं दिवास्वप्न में निम्नलिखित अन्तर हैं—

(१) स्वप्नों की उत्पत्ति निद्रा की अवस्था में होती है जब कि दिवास्प्नों की उत्पत्ति जाग्रति अवस्था में होती है।

†Day-dreams usually have a hero and that hero is usally the dreamer's self. Sometimes one is that conquering hero and sometimes the suffering hero." —Woodworth

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) स्वप्नों में व्यक्ति का वास्तविकता से थोड़ा भी सम्बन्ध नहीं रहता है जबकि दिवास्वप्नों में उसका थोड़ा सम्बन्ध वास्तविकता से बना रहता है।

(३) दिवा-स्वप्नों की अपेक्षा स्वप्नों में अचेतन मन में आ जाने वाली अतृप्त इच्छाओं का प्रदर्शन अधिक कुशलता पूर्वक होता है।

(४) स्वप्नों की क्रियाओं पर प्रतिबन्धक (Censor) का बहुत ही कम नियन्त्रण रहता है जब कि दिवा-स्वप्नों की क्रियाओ पर उसका अधिक नियन्त्रण रहता है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में स्वप्न एक निष्क्रिय मानसिक कल्पना है। **स्वप्न के प्रकार**—(१) चिन्ता-स्वप्न, (२) पूर्व-सूचक स्वप्न, (३) भविष्य-सूचक स्वप्न, (४) पूर्व-रोग सूचक स्वप्न, (५) लकवे के स्वप्न, (६) गति के स्वप्न, (७) भनायक स्वप्न, (८) मृत्यु के स्वप्न, (९) दण्ड के स्वप्न, (१०) प्रतिरोध के स्वप्न, (११) पुनरावर्तक स्वप्न तथा (१२) सामूहिक स्वप्न। **स्वप्न के कारण**—(१) आन्तरिक उत्तेजनाएँ, (२) भौतिक उत्तेजनाएँ, (३) सोने के पूर्व विचार एवं भाव, (४) चरित्र एवं स्वभाव तथा (५) ध्यान एवं रुचि। **स्वप्न के सिद्धान्त**—स्नायविक या दैहिक सिद्धान्त, (२) भविष्य वाचक सिद्धान्त, (३) मनो स्नायु सिद्धान्त, (४) मानसिक या मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त तथा (५) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (i) इच्छा पूर्ति का सिद्धान्त—फ्रायड, (ii) स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त, (iii) जीवन शैली की अभिव्यक्ति का सिद्धान्त—एडलर। ये सभी सिद्धान्त एकांकी हैं। इनमें से कोई भी सिद्धान्त सभी वस्प्नों की व्याख्या नहीं कर सकता है। ऐसी दशा में हमें स्वप्नों की व्याख्या के लिये समस्त सिद्धान्तों पर ध्यान देना चाहिये। स्वप्न की भाँति दिवा-स्वप्न भी एक निष्क्रिय रचनात्मक कल्पना है किन्तु यह निद्रा की अवस्था की बजाय जाग्रति अवस्था में की जाती है। यद्यपि स्वप्न एवं दिवा-स्वप्न दोनों के द्वारा अतृप्त मानसिक क्रियाओं तथा संघर्षों का प्रदर्शन होता है किन्तु दोनों में कुछ मौलिक अन्तर है।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३९

बुद्धि का स्वरूप और सिद्धान्त

(Nature and Theorie of Intelligence)

प्रश्न-संख्या—३९

बुद्धि का क्या स्वरूप है ? बुद्धि के सिद्धातों पर प्रकाश डालते हुए बतलाइये कि आप बुद्धि के संबंध में किस निष्कर्ष पर पहुँचे। बुद्धि और ज्ञान में अन्तर भी बतलाइए।

What is the nature of intelligence? Explain different theories of Intelligence and give your conclusion. Also differentiate between intellgence and knowledge.

भूमिका (Introduction)

बुद्धि क्या है ? (What is Intelligence ?) इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए प्राचीन काल से ही प्रयास होता आया है। परन्तु उसके स्वरूप के सम्बन्ध में सर्वदा से मत-मतान्तर रहे हैं। वर्तमान काल मे बुद्धि के सम्बन्ध में जो सामान्य अवधारणा बनी है, व्यावहारिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत उसी को स्वीकार करते हुये बुद्धि सम्बन्धी ज्ञान को व्यावहारिक जीवन में प्रयोग किया जाता है। इस प्रश्न में हम बुद्धि को अच्छी तरह समझने के लिये बुद्धि का स्वरूप (Nature of Intelligence) तथा बुद्धि के सिद्धान्त (Theories of the Intelligence) पर प्रकाश डालेंगे।

बुद्धि का स्वरूप
(Nature of Intelligence)

फ्रीमैन द्वारा, विभिन्न विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की हुई बुद्धि को परिभाषाओं का चार वर्गों में विभाजन—

बुद्धि क्या है ? इस सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिक एक मत नहीं है। बुद्धि पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लगभग उतनी ही परिभाषायें प्रस्तुत हुई हैं जितनी की इनके सीखने वालों की संख्या है। फिर भी बुद्धि के स्वरूप को समझने के लिए एफ० एस० फ्रीमैन (F. S. Freeman) ने बुद्धि की परिभाषाओं को निम्न ४ वर्गों में विभाजित किया हैं :—

[१] प्रथम वर्ग—वातावरण के प्रति अभियोजन की योग्यता

प्रथम वर्ग की वे परिभाषायें हैं जो बुद्धि को वातावरण या नवीन परिस्थितियों के प्रति अभियोजन की योग्यता मानती हैं। इस प्रकार की कुछ परिभाषायें निम्नलिखित है :—

(१) स्टर्न —"नवीन परिस्थितियों में अपने विचारों को अभियोजित करने की एक सामान्य क्षमता बुद्धि है।"

"Intelligence is a general capacity of the individual consciously to adjust his thinking to new requirement."

—Stern.

(२) क्रूज—"बुद्धि नवीन एवं विभिन्न परिस्थितियों में अच्छी तरह से अभियोजित करने की योग्यता है।"

"Intelligence is the ability to adjust adequately to new and diffierent situations."

— Cruz.

(३) बर्ट—"सापेक्षतया नवीन परिस्थितियों में अभियोजित करने की योग्यता को बुद्धि कहते हैं"

"Intelligence is the capacity to adapt to relatively new situations."

—Burt

[२] द्वितीय वर्ग—सीखने की योग्यता

कुछ विद्वान् बुद्धि को किसी न किसी रूप में सीखने की योग्यता (Ability to Learn) बतलाते हैं इस प्रकार की कुछ परिभाषायें इस प्रकार हैं :—

(४) बकिंघम—"सीखने की योग्यता बुद्धि है।"

"Intelligence is the ability to learn. --Buckingham

(५) मैकडूगल—-बुद्धि जन्मजात प्रवृत्ति को अतीत के अनुभव के प्रकाश में सुधारने की योग्यता है।"

"Intelligence is the capacity to improve upon native tendency in the light of previous experience. Mc Dougall.

[३] तृतीय वर्ग— अमूर्त चिन्तन की योग्यता

कुछ विद्वान् बुद्धि को अमूर्त चिन्तन (Abstract Tninking) की योग्यता मानते हैं। विनेट (Binet) की बुद्धि की अवधारणा इसी प्रकार की है। आगे हम बिने तथा टरमन द्वारा दी गई परिभाषा प्रस्तुत कर रहे हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) **बिने**—"किसी समस्या को समझना, उसके विषय में तर्क करना तथा किसी निश्चित् निर्णय पर पहुँचना बुद्धि की आवश्यक क्रियायें हैं।"

"To judge well, to comprehend well, to reason well, these are the essential activities of intelligence." **Binet.**

(७) **टरमन**—"एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान है जिसमें कि वह अमूर्त चिन्तन करने योग्य है।"

"An individual is intelligent in proportion as he is able to carry on abstract thinking **—Terman.**

[४] चतुर्थ वर्ग--उपर्युक्त तीनों वर्गों की परिभाषाओं का समन्वय तथा विस्तृत रूप प्रदान करने वाली परिभाषायें—

उपर्युक्त तीनों वर्ग की परिभाषायें एकांगी प्रतीत होती हैं, क्योंकि वे बुद्धि के समस्त तत्वों का समावेश नहीं कर पाती हैं। उपर्युक्त समस्त परिभाषाओं को समन्वित तथा विस्तृत रूप प्रदान करते हुए अभी हाल में कुछ मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं जो बुद्धि को किसी न किसी रूप में सामान्य योग्यता या मानसिक योग्यताओं का समन्वय बताती हैं। इस प्रकार की परिभाषायें वेक्सलर, रेक्सनाइट तथा स्टोडर्ड ने प्रस्तुत की हैं जो निम्नलिखित हैं :—

(८) **वेक्सलर**—"बुद्धि व्यक्ति की सम्पूर्ण शक्तियों का योग या सार्वभौमिक योग्यता है जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है, तर्कपूर्ण ढंग से सोचता है तथा प्रभावपूर्ण ढंग से वातावरण के साथ सम्पर्क स्थापित करता है।"

"Intelligence is the aggregate or global capacity of the individual to act purposefully, to think rationaly and deal effectively with his environment.' **—Weeksler.**

(९) **रेक्सनाइट**—"बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा हम किसी उद्देश्य की पूर्ति या किसी समस्या का समाधान करने के लिये सम्बन्धित वस्तुओं एवं विचारों को सोचते हैं।"

"Intelligence is the ability, when we have aim of question in mind to discover the relevent qualities and relations of the object or ideas that are before us, and to evoke other relevent ideas.' **—Rex Knight.**

(१०) **स्टोडर्ड**—"बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जिसके द्वारा इस प्रकार की क्रियाओं को क्रियान्वित किया जाता है जिसमें-(१) कठिनाई, (२) जटिलता (३) अमूर्तता, (४) मितव्ययिता, (५) सोद्देश्यता, (६) सामाजिक महत्ता एव (७) मौलिकता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होती है तथा इन क्रियाओं का सम्पादन उन स्थितियों में भी जारी रखखा जाता है जिनमें व्यक्ति के केन्द्रीयकरण एवं संवेगात्मक प्रभावों का निरोध अपेक्षित होता है।"

"Intelligence is the ability to undertake activities that are characterised by (1) difficulty, (2) complexity, (3) abstract ness, (4) economy, (5) adaptiveness to a goal, (6) social value and (7) the emergence of originals and to maintain such activities under conditions that demand a concentration of energy and resistance to emotional forces."

उपर्युक्त शब्दों में हमने बुद्धि की परिभाषाओं को चार वर्गों में विभाजित किया। इन चार वर्गों में चतुर्थ वर्ग की परिभाषाये अति उपयुक्त प्रतीत होती हैं क्योंकि इनमें अन्य तीनों वर्गों की परिभाषाओं का समन्वय करते हुए बुद्धि को विस्तृत रूप से समझने का प्रयास किया गया है। इसके आधार पर संक्षेप में हम कह सकते हैं कि बुद्धि वह सामान्य योग्यता तथा विभिन्न मानसिक योग्यताओं का समन्वय है जो कि व्यक्ति को व्यावहारिक जीवन में सफल होने में सहायक सिद्ध होता है। वुडवर्थ (Woodworth) ने बुद्धि के चार प्रमुख तत्व बतलाये हैं जो बहुत कुछ बुद्धि की व्याख्या करने में समर्थ प्रतीत होते हैं वे तत्व निम्नलिखित हैं :—

(१) अतीत अनुभवों का प्रयोग (Use of Past Experience)

(२) नवीन परिस्थिति से समायोजन (Adaptation to a Novel Situation)

(३) परिस्थिति को समझना (Seeing the Point)

(४) कार्यों को विशाल दृष्टिकोण से देखना (Viewing Actions from a Broader Point of View)

बुद्धि के सिद्धान्त

(Theories of Intelligence)

बुद्धि को समझने के लिये विद्वानों ने बहुत से सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं जो निम्नलिखित हैं :—

(१) अद्वैत सिद्धान्त (Monarchic Theory)

(२) सीमित शक्ति का सिद्धान्त (Oligarchic Theory)

(३) दो खण्ड का सिद्धान्त (Two Factor Theory)

(४) बहुशक्ति सिद्धांत (Multi-factors of Anarchic Theory)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(५) बहु-मानसिक योग्यताओं का सिद्धान्त (Many Mental Abilities Theory)

(६) क्रमिक महत्व का सिद्धान्त (Hierarchical Theory)

(१) अद्वैत सिद्धान्त—डा० जानसन—अद्वैत सिद्धान्त (Monarchic Theory) के प्रवर्तक डा० जानसन (Johnson) का कथन है कि बुद्धि केवल एक ही है और उसका राज्य सर्वत्र फैला हुआ है। दूसरे शब्दों में विज्ञान, कला, वाणिज्य आदि समस्त क्षेत्रों में एक ही बुद्धि व्याप्त है परन्तु यह सिद्धांत दोषपूर्ण माना जाता है। हम नहीं कह सकते हैं कि एक व्यक्ति कला में निपुण हो और वाणिज्य में भी। इस प्रकार यह अद्वैत अथवा अखण्ड सिद्धांत सर्वमान्य नहीं है।

(२) सीमित शक्ति सिद्धान्त बिनेट—सीमित शक्ति सिद्धान्त (Oligarchic Theory) के प्रवर्तक बिनेट (Binet) महोदय माने जाते हैं। इनका विचार है कि बुद्धि में कुछ सीमित शक्तियाँ जैसे प्रत्यक्षीकरण, स्मृति, कल्पना, ध्यान आदि निहित रहती हैं। बुद्धि की ये शक्तियाँ एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न होती हैं। वर्तमान काल में बिनेट ने जो भी बुद्धि की शक्तियां बतलाई हैं वे पूर्ण स्वतंत्र नहीं है।

(३) दो खण्ड का सिद्धान्त-स्पीयरमैन—दो खण्ड अथवा द्वैय शक्ति के सिद्धांत (Two Factor Theory) का प्रतिपादन प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्पीयरमैन (Spearman) ने किया। उनका विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति के बुद्धि के दो प्रकार के खण्ड अथवा तत्व (Two Factors) होते हैं जो निम्नलिखित हैं :—

(१) सामान्य तत्व (General or 'G' Factor)—सामान्य अर्थात् 'जी' (G) तत्व वह तत्व है जो समस्त प्रकार की मानसिक क्रियाओं में सन्निहित रहता है। इसके निम्न लक्षण हैं—(१) यह प्रत्येक व्यक्ति को जन्म से ही प्राप्त होता है। (२) यह तत्व व्यक्ति में सर्वदा एक ही समान रहता है। (३) समस्त क्रियाओं में इस तत्व की अलग-अलग आवश्यकता है। (४) प्रत्येक व्यक्ति की सामान्य योग्यता में अन्तर पाया जाता है। (५) जिस व्यक्ति में सामान्य तत्व की अधिकता होती है वह अन्य व्यक्तियों से अधिक सफलताप्राप्त करता है।

(२) विशिष्ट तत्व (Specific or 'S' Factors)—विशिष्ट अर्थात् 'एस' (S) तत्व वह तत्व है जो विशेष प्रकार की क्रिया में प्राप्त किया होता है। इसके निम्न लक्षण हैं—(१) विशिष्ट तत्व जन्मजात न होकर अर्जित होता है। (२) भिन्न भिन्न प्रकार की क्रियाओं के लिये भिन्न-भिन्न प्रकार के विशिष्ट तत्त्व निश्चित होते हैं। (३) भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के विशिष्ट तत्व होते हैं। जिस व्यक्ति का जो विशिष्ट तत्व अच्छा होता है यह उसी विषय में सबसे अच्छा होता है।

(३) बहुशक्ति अथवा बहुतत्व सिद्धांत-थान डाईक—प्रसिद्ध मनो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वैज्ञानिक थार्नडाइक (Thorndie) महोदय ने बहुशक्ति अथवा बहुतत्व सिद्धांत (Multifactors of Anarchic Theory) का प्रतिपादन करते हुए कहा है कि बुद्धि में उतनी ही शक्तियाँ अथवा तत्व (Factors) निहित हैं जितनी कि व्यक्ति की क्रियायें होती हैं। उन्होंने विभिन्न प्रकार के कार्यों के अनुसार बुद्धि को तीन विस्तृत भागों में बाँटा हैं—(१) सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence) (२) मूर्त बुद्धि (Concrete Intelligence) एवं (३) अमूर्त बुद्धि (Abstract Intelligence)। थार्नडाइक का विचार है कि सरल बौद्धिक क्रियाओं के द्वारा मानसिक संगठन (Mental Organisasion) का निर्माण होता है।

[४] बहुयोग्यता सिद्धांत—केलीं एवं थर्स्टन

(अ) केली (Kelley) केली महोदय का विचार है कि बुद्धि का निर्माण निम्नलिखित योग्यताओं (Abilities) से होता है—

(१) वाचिक योग्यता (Verbal Ability)

(३) सांख्यिक योग्यता (Numerical Ability)

(३) स्थानिक सम्बन्धों के साथ सफल व्यवहार करने की क्षमता (Ability to Deal with Spatial Relations)

(४) क्रियात्मक योग्यता (Moter Activity)

(५) संगीतात्मक मेधा (Musical Talent)

(६) यांत्रिक योग्यता (Mechanical Ability)

(७) सामाजिक बुद्धि (Social Intelligence)

(८) रुचि (Interest)

(९) शारीरिक बल (Physical Strength)

(ब) थर्स्टन (Thurstone)—अमेरिका के सुप्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थर्स्टर्न ने विश्वविद्यालय के छात्रों पर विभिन्न प्रकार के ५६ मनोवैज्ञानिक परीक्षण करने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला कि बुद्धि निम्नलिखित ७ प्राथमिक मानसिक योग्यताओं (Primary Mental Abilities) का समूह है—

(१) सांख्यिक योग्यता (Number Ability) or 'N')

(२) शाब्दिक योग्यता (Verbal Ability or 'V')

(३) आन्तरिक्षिक योग्यता (Spatial Ability or 'S')

(४) शब्द प्रवाह योग्यता (Word Fluency Ability or 'W')

(५) तार्किक योग्यता (Reasoning Ability or 'R')

(६) स्मृति संबंधी योग्यता (Momery Ability or 'M')

[७] प्रत्यक्ष संबंधी योग्यता (Perceptual Ability or 'P')

अर्थात् Intelligence = N + V + S + W + R + M + P

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) क्रमिक महत्व का सिद्धांत—वर्ट तथा वर्नन—वर्ट (Burt) तथा वर्नन (Vernon) ने बुद्धि का एक नवीन सिद्धान्त प्रतिपादित करते हुए मानसिक योग्यताओं (Mental Abilities) को क्रमिक महत्व प्रदान किया। उन्होंने सबसे प्रथम स्तर या महत्व सामान्य मानसिक योग्यता (General Mental Ability) को दिया। इसे दो भागों में विभाजित किया—(१) क्रियात्मक यान्त्रिक-आन्तरिक शारीरिक (Practical Mechanical-Spatial physical or K : m) तथा (२) शाब्दिक-सांख्यिक- शैक्षणिक (Verbal number-Educational-or V:ed)। आगे तीसरे स्तर पर इन दोनों वर्गों या समूहों को अनेक मानसिक योग्यताओं में विभक्त किया गया। इसके उपरान्त अन्तिम स्तर में विशिष्ट मानसिक योग्यताओं को रखा गया जिनका विभिन्न ज्ञानात्मक क्रियाओं से अलग-अलग सम्बन्ध है। वर्ट या वर्नन के इस सिद्धान्त को क्रमिक महत्व का सिद्धान्त (Hierarchical Theory) कहा। नीचे हम इस सिद्धान्त को चित्र द्वारा प्रस्तुत कर रहे हैं।

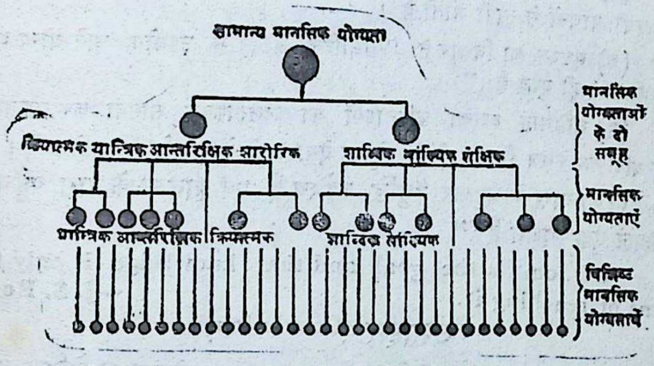

चित्र सं० ३८--मानसिक योग्यताओं का क्रामिक महत्व

उपर्युक्त सिद्धान्तों के प्रतिपादन के बावजूद भी अभी तक कोई ऐसा सिद्धांत प्रतिपादित नहीं हुआ है जिस पर सभी मनोवैज्ञानिक एक मत हों फिर भी अब तक के प्रयासों के परिणामस्वरूप जो निष्कर्ष निकला है, उससे पता चलता है कि बुद्धि के अन्तर्गत सामान्य मानसिक योग्यता, अन्य मानसिक योग्यतायें सभी का समावेश है अर्थात् बुद्धि के अनेक पहलू हैं जिनसे सम्बन्धित बुद्धि के मापन में परीक्षण पद (Test-items) अवश्य होना चाहिये।

बुद्धि और ज्ञान में अन्तर

(Difference between Intelligence and Knowledge)

बुद्धि एवं ज्ञान में अग्रलिखित अन्तर है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) बुद्धि जन्मजात एवं स्वाभाविक शक्ति है एवं ज्ञान वातावरण द्वारा अर्जित किया जाता है।

(२) बुद्धि स्थिर प्रकृति की होती है परन्तु ज्ञान को अर्जित करने से मनमानी बुद्धि हो सकती हैं।

(३) एक व्यक्ति बुद्धिमान होते हुए यह आवश्यक नहीं है कि वह विद्वान् हो। इसी तरह एक व्यक्ति विद्वान् होते हुए यह आवश्यक नहीं कि वह बुद्धिमान हो।

(४) यदि व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो उसका ज्ञान समाप्त हो जाता है परन्तु ज्ञान को भूलने से बुद्धि समाप्त नहीं होती है।

(५) अधिक बुद्धि से अधिक ज्ञान का विकास हो सकता है परन्तु अधिक ज्ञान से बुद्धि का विकास होना असम्भव है।

(६) बहुत सी बातों का जान लेना ज्ञान (**Knowledge**) है एवं उनका जीवन में उपयोग करना बुद्धि (**Intelligence**) है।

(७) वेलार्ड का कथन है "बुद्धि वह मानसिक योग्यता है जो कि ज्ञान, रुचि आदत रूपी साधनों से नापी जाती है।

(८) एडम्स का विचार है "सांसारिक जीवन में उपयोग लाने योग्य ज्ञान अथवा विचार ही बुद्धि है।"

(९) बुद्धिमान व्यक्ति कठिनाइयों का सरलतापूर्वक सामना कर सकता है परन्तु यदि वह केवल विद्वान ही है तो वह ऐसा करने में असमर्थ सिद्ध होता है।

(१०) रास के अनुसार "बुद्धि उद्देश्य है एवं ज्ञान उसके पास पहुँचाने का केवल एक साधन है"।

"Wisdom is the goal and that knowledge is only the means of reaching it.

—J. S. Ross.

उपसंहार (Conclusion)

कहने का अभिप्राय यह हैं कि बुद्धि वह मानसिक योग्यता या विभिन्न मानसिक योग्यताओं का समन्वय है जो कि मनुष्य के व्यावहारिक जीवन में सफल होने में सहायक सिद्ध होता है। अभी तक बुद्धि को समझने के लिये मनोवैज्ञानिकों ने जो सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं उनमें प्रमुख अग्रलिखित हैं—(१) अद्वैत सिद्धान्त, (२) सीमित शक्ति का सिद्धान्त, (३) दो खन्ड का सिद्धान्त, (४) बहुशक्ति का सिद्धान्त, (५) बहुमानसिक योग्यताओं का सिद्धान्त तथा (६) क्रमिक महत्व का सिद्धान्त। इन सिद्धान्तों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि बुद्धि के अन्तर्गत सामान्य मानसिक योग्यता, अन्य मानसिक योग्यतायें तथा विशिष्ट मानसिक योग्यतायें सभी का समावेश है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४०
बुद्धि परीक्षण
(Intelligence Tests)

प्रश्न-संख्या—४०

विभिन्न परीक्षण के बुद्धि परीक्षणों की विवेचना कीजिये। व्यक्तिगत एवं सामूहिक बुद्धि परीक्षण में अन्तर स्पष्ट कीजिये। बुद्धि परीक्षणों की क्या उपयोगिता है ?

Discuss the various kinds of intelligence tests Clarify the difference between individual and group intelligence tests. What is the utility of intelligence tests. ?

भूमिका (Introducation)

इसके पूर्व की हम विभिन्न प्रकार के बुद्धि परीक्षणों (Intelligence Tests) की विवेचना करें हमें संक्षेप में बुद्धि परीक्षण के इतिहास पर प्रकाश डाल देना आवश्यक प्रतीत होता है। प्राचीन काल में विद्या या ज्ञान (Knowledge) के आधार पर बुद्धि परीक्षा की जाती थी। जिस व्यक्ति में जितना अधिक ज्ञान होता था उसे उतना ही अधिक बुद्धिमान समझा जाता था। मध्यकाल में व्यक्ति की शारीरिक बनावट के आधार पर बुद्धि की परीक्षा की जाती थी। इस सम्बन्ध में लैवेटर (Lavator), स्पुरज्हीम (Spurgheim), गाल (Gall) आदि विद्वानों के प्रयत्न उल्लेखनीय हैं। भारतीय साहित्य में भी इस आधार पर बुद्धि परीक्षण के कुछ उदाहरण प्राप्त होते हैं जैसे क्वचित दन्तिर्भवेत्-मूर्खः अर्थात् बड़े-बड़े दाँतों वाले लोग कदाचित् मूर्ख होते हैं (One with big projecting teeth is rarely a fool)। प्राचीन काल तथा मध्यकाल में जिन आधारों पर बुद्धि परीक्षण किये जाते थे इन्हें वर्तमान समय में अस्वीकार किया जाता है। वर्तमान काल में बुद्धि को एक स्वाभाविक एवं जन्मजात शक्ति मानकर उसकी परीक्षा की जाती है। १८७९ में वुन्ट (Woundt) ने मनोविज्ञान की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रथम प्रयोगशाला स्थापित की तभी से वैज्ञानिक आधार पर बुद्धि परीक्षणों का निर्माण प्रारम्भ हुआ। गाल्टन, एविंग, हॉस, कैटिल, पीयरसन, आदि विद्वानों ने अनेक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया किन्तु इन विद्वानों के परीक्षण इतनी साधारण मानसिक क्रियाओं का मापन करती थीं कि उन्हें बुद्धि परीक्षण नहीं कहा जा सकता है। किन्तु इस सम्बंध में फ्रांस के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक एलफ्रेड बिनेट (Alfred Binet) ने सबसे पहला और ठोस कदम उठाया और उन्होंने १९०५ में साइमन की सहायता से संसार की सर्वप्रथम बुद्धि परीक्षा प्रस्तुत की। जिसे बिनेट साइमन मानदण्ड (Binet Siman Scale) कहा जाता है। १९०८ के उपरांत इस मानदण्ड का अनुवाद तथा संशोधन अमेरिका तथा योरुप में हुआ। इनमें से सबसे प्रसिद्ध संशोधन सन् १९१६ में एल० एम० टरमैन (L. M. Terman) की अध्यक्षता में स्टेनफोर्ड विश्व-विद्यालय में हुआ जिसका नाम ((Stanford Revision of the Binet Siman Intelligence Scale) रक्खा जिसमें सबसे पहले बुद्धि-लब्धि (Intelligent Quotent) की अवधारणा रक्खी गई। इसके उपरान्त १९३७ में मैरिल (Merril) की सहायता से टरमैन ने इसका संशोधन किया जिसे 'Terman Merril Scale' कहते हैं। इसके उपरान्त बिनेट की बुद्धि परीक्षण का अन्य देशों में अनुवाद तथा संशोधन हुआ। भारत में भी इस ओर अनेक प्रयास हुए। इसके अतिरिक्त बिनेट के बुद्धि परीक्षण को ध्यान में रखते हुये अन्य विभिन्न प्रकार की बुद्धि परीक्षणों का निर्माण हुआ जिनका विभिन्न क्षेत्रों में बहुतायत से प्रयोग किया जाता है। यह है बुद्धि परीक्षण का संक्षिप्त इतिहास। अब हम पहले बुद्धि परीक्षण के विभिन्न प्रकार (Kinds of Intelligence Tests) प्रस्तुत करते हुये उन पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे, तत्पश्चात् वैयक्तिक तथा सामूहिक बुद्धि परीक्षण में अन्तर (Difference between individual and Group Intelligent Tests) स्पष्ट करेंगे और अन्त में बुद्धि परीक्षण की उपयोगिता (Utility of intelligence Tests) पर प्रकाश डालेंगे।

बुद्धि परीक्षणों के प्रकार
(Kinds of Intelligence Tests)

बुद्धि परीक्षणों को हम निम्नलिखित दो भागों तथा उप-भागों में विभाजित कर सकते हैं—

[अ] 'वैयक्तिक बुद्धि' परीक्षण (Individual Intelligence Tests)

(१) शाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण
(Verbal Individual Intellignece Tests)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) अशाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण
(Performance Individual Intelligence Tests)
[च] सामूहिक बुद्धि परीक्षण (Group Intelligence Tests)
(१) शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण
(Verbal Group Intelligence Tests)
(२) अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण
(Non-Verbal Group Intelligence Tests)

वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण
(Individual Intelligence Tests)

[अ] वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण का अर्थ
(Meaning of individual Intelligence Tests)

वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण का तात्पर्य उस परीक्षण से है जो व्यक्ति की बुद्धि परीक्षा करता है। दूसरे शब्दों में वैयक्तिक परीक्षण एक साथ बहुत से लोगों की बुद्धि परीक्षा न कर केवल एक व्यक्ति की बुद्धि का मापन करता है। वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण दो प्रकार के होते हैं—(१) शाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Individual Intelligence Tests)—इन परीक्षणों में व्यक्ति की बुद्धि की परीक्षा करने में भाषा या शब्दों का प्रयोग किया जाता है। अतः इन परीक्षणों का प्रयोग केवल उन्हीं व्यक्तियों पर किया जा सकता है जिन्हें भाषा सम्बन्धी ज्ञान हो और जो पढ़े लिखे हों। (२) आशाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण (Nor-Verbal Individual Intelligence Tests)—ये परीक्षण उन व्यक्तियों के लिए हैं जिन्हें भाषा सम्बन्धी ज्ञान नहीं है, जो गैर पढ़े लिखे, गूँगे, बहरे या अन्धे हैं। इन परीक्षणों में भाषा या शब्दों के स्थान पर मूर्त वस्तुओं, चित्रों व्यूहों, ज्योमित, आकृतियों आदि का प्रयोग किया जाता है जिनके साथ व्यक्ति को हाथ से क्रियायें करनी पड़ती हैं इसलिए इन परीक्षणों को क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण (Performance Intelligence Tests) कहते हैं

[ब] दोनों प्रकार के वैयक्तिक बुद्धि परीक्षणों को प्रस्तुत करना
(Presentation of Both Kinds of Individual intelligence Tests)

अब हम उपर्युक्त वर्णित दोनों प्रकार के वैयक्तिक परीक्षणों पर अलग-अलग प्रकाश डालेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

शाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण
(Verbal Individual Group Tests)

[अ] बिने-साइमन बुद्धि परीक्षण प्रणाली-मानसिक आयु का अर्थ

यद्यपि बुद्धि परीक्षणों का एक वृहत् इतिहास है परन्तु आधुनिक युग में बिनें साइमन बुद्धि परीक्षण प्रणाली (Binet-Simon Intelligence Testing Method) एवं टरमैन बुद्धि परीक्षण प्रणाली (Terman Intelligence Testing Method) को विशेष तौर से प्रयोग किया जा रहा है। अतः हम पहले बिने-साइमन बुद्धि प्रणाली प्रस्तुत कर रहे हैं। बिने महोदय ने मानसिक आयु (Mental Age) के आधार पर बुद्धि परीक्षण किया। मानसिक आयु क्या है? मानसिक आयु को निर्धारित करने के लिए बिने महोदय ने प्रश्नावलियों का निर्माण किया। इसके लिए उन्होंने एक ही अवस्था के १००० बालकों की परीक्षा ली। जिन-जिन प्रश्नों को ६० प्रतिशत बालकों ने ठीक-ठीक हल कर दिया उन प्रश्नों में से ६-७ प्रश्नों को निकाल कर एक प्रश्नावली का निर्माण कर लिया। इसी तरह बिने महोदय ने ३ वर्ष से लेकर १५ साल के बालकों के लिए अलग-अलग प्रश्नावलियों का निर्माण किया। जो बालक जिस उम्र के निर्धारित समस्त प्रश्नों का सही उत्तर दे देता है उसकी मानसिक आयु (Mental Age) उतनी ही निश्चित् की जाती है। उदाहरण के लिए य.द एक ५ वर्ष का बालक ५ वर्ष के बालकों के लिए निर्धारित समस्त प्रश्नों का सही-सही उत्तर दे देता है तो उसकी मानसिक आयु ५ वर्ष की ही कहलायेगी और इस दृष्टिकोण से बालक साधारण बुद्धि का बालक कहा जायगा। यदि केवल ४ वर्ष के निर्धारित प्रश्नों का उत्तर दे पाता है तो उसकी मानसिक उम्र ४ वर्ष की ही होती है और इस दृष्टिकोण से यह बालक मन्द बुद्धि का समझा जायगा। यदि बालक ७ वर्ष के निर्धारित प्रश्नों का उत्तर देता है तो उसकी मानसिक उम्र (Mental Age) ७ वर्ष की मानी जायगी और इस दृष्टिकोण से वह बालक तीव्र बुद्धि का माना जायेगा।

[ब] टरमैन की बुद्धि परीक्षण प्रणाली बिने-साइमन परीक्षण प्रणाली का संशोधन एवं बुद्धि लब्धि निर्धारित करना

[क] बिने-साइमन परीक्षण विधि का संशोधन—बर्ट (Burt) के उपरात बिने-साइमन प्ररिक्षण प्रणाली का द्वितीय संशोधन टरमैन (Terman) ने किया है। यह संशोधन स्टेनफोर्ड रिवीजन एण्ड एक्सटेन्शन (Stanford Revision and Extension) के नाम से प्रसिद्ध है। बर्ट (Burt) महोदय ने तो बिने के ५४ प्रश्नों के वजाय ६५ प्रश्न अपनी प्रश्नावली में निर्धारित किये थे लेकिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टरमैन महोदय ने बिने के ५४ एवं वर्ट के ६५ प्रश्नों के वजाय अपनी प्रश्नावली में ९० प्रश्न निर्धारित किये, जिनमें १९ प्रश्न बिने के भी सम्मिलित थे। टरमैन के कुछ प्रश्नों के नमुने नीचे दिये जा रहे हैं।

तीन वर्ष की अवस्था के बालकों के लिए

(१) तुम्हारी आँख कहाँ है, तुम्हारी नाक कहाँ है आदि।

(२) तुम्हारा क्या नाम है ?

(३) तुम लड़की हो अथवा लड़का ?

(४) चित्र में तुम क्या देखते हो ?

(५) बालक को कलम, चाकू, पैसा आदि दिखाकर—"यह क्या है ?"

पाँच वर्ष की अवस्था के बालकों के लिये

(१) एक प्रकार की दो सन्दूकों में विभिन्न वस्तुयें भरकर पूछो, "दोनों सन्दूकों में किस सन्दूक का भारी वजन है ?

(२) लाल, हरा, नीला रंग दिखाकर पूछो, "इसका कौन सा रङ्ग है ?"

(३) कुर्सी क्या है ? घोड़ा क्या है—परिभाषा वताओ।

(४) तीन आज्ञाओं का पालन करना—इसे मेज पर रख दो, दरवाजा बन्द कर दो, मेरे पास वे सन्दूकें लाओ।

सात वर्ष की अवस्था के बालकों के लिए

(१) हाथ में कितनी उँगलियाँ हैं ? दूसरे हाथ में कितनी हैं ? दोनों में मिलाकर कितनी हैं ?

(२) यह चित्र किसके वारे में हैं ?

(३) जो कुछ मैं कहता हूँ उसे दोहराओं—३, १, ७, ५, ६, १, २, ८, ३, ४, ६, ८, १, ७, ६, ।

(४) एक मक्खी एवं तितली में क्या अन्तर है ?

[ख] बुद्धि लब्धि निर्धारित करना—मनोविज्ञान के क्षेत्र में बुद्धि को मापने के लिए बुद्धि लब्धि (I. Q.) आविष्कार करना टरमैन (Terman) की सबसे महत्वपूर्ण देन है। बुद्धि लब्धि क्या है (What is Intelligence Quotient)? वालक की शारीरिक आयु (Chronological Age) एवं मानसिक आयु (Mental Age) के अनुपातिक स्वरूप को बुद्धि लब्धि कहते हैं। बुद्धि लब्धि को निकालने के लिए मानसिक आयु में शारीरिक आयु का भाग दे देते हैं एवं दशमलव की परेशानी से बचने के लिए १०० से गुणा कर देते हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी बालक की मानसिक आयु १५ वर्ष है एवं उसकी शारीरिक अथवा मानसिक आयु १२ वर्ष है तो उसकी बुद्धि लब्धि होती है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुद्धि लब्धि निकालने का फारमूला—

$$\frac{\text{Intelligent Quotient}}{\text{or (I. Q.)}} = \frac{\text{Mental Age}}{\text{Chronological Age}} \times 100$$

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{१५}{१२} \times १०० = १२५$$

इस प्रकार बालक की बुद्धिलब्धि १२५ हुई। इससे पता चलता है कि बालक प्रखर बुद्धि का है।

मान लीजिये कि बालक की मानसिक आयु ६ वर्ष है एवं उसकी वास्तविक आयु ८ वर्ष है तो बुद्धि-लब्धि होगी :—

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{६}{८} \times १०० = ७५$$

इस प्रकार बालक की बुद्धि-लब्धि ७५ हुई जिससे पता लगता है कि बालक मन्द बुद्धि का है।

बुद्धि लब्धि का वर्गीकरण

बुद्धि लब्धि (I. Q.)	बुद्धि (Intelligence)
२०० या इससे अधिक	अप्रतिभाशाली (Supreme Genious)
१४० से २०० तक	प्रतिभाशाली (Gnnious)
१२० से १४० तक	अत्युत्कृष्ट (Very Superior)
११० से १२० तक	उत्कृष्ट (Superior)
९० से ११० तक	सामान्य (Normal)
८० से ९० तक	मन्द बुद्धि (Dull)
७० से ८० तक	निर्बल बुद्धि (Border-line)
७० से नीचे	हीन बुद्धि (Feeble minded)
५० से ७० तक	मूर्ख (Moron)
२० से ५० तक	मूढ़ (Imbecile)
२० के नीचे	जड़ (Idiot)

अशाब्दिक या क्रियात्मक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण (Non-Verbal or Performance Individual Intelligence Tests)

प्रमुख अशाब्दिक या क्रियात्मक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण निम्नलिखित हैं :—

(१) चित्रांकन परीक्षा (Picture Drawing Tests)—इस परीक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में बालकों को कागज एवं पेन्सिल देकर कहा जाता है कि "मनुष्य का चित्र खींचो।" परीक्षा में बालकों को जोअंक प्रदान किये जाते हैं वे चित्र की पूर्णता एवं संगति के आधार पर दिये जाते है, सुन्दरता के आधार पर नहीं। चित्रांकन परीक्षा (Picture Drawing Tests) ४ साल से १० साल तक की आयु के बालको के लिये उपयुक्त होती है।

(२) चित्र पूर्ति परीक्षा (Picture Completing Test)—इस परीक्षा में बालकों के सामने एक चित्र प्रस्तुत किया जाता है जिसमें से अनेक वर्गाकार टुकड़े काट कर निकाल दिये जाते हैं। तत्पश्चात् बालकों से कहा जाता है कि तुम इन वर्गाकार टुकड़ों को चित्र पर रख दो कि यह चित्र पूरा हो जाय। जो बालक चित्र की पूर्ति शीघ्र एवं उचित ढंग से कर देते हैं उनको तीव्र बुद्धि का बालक समझा जाता है।

(३) वस्तु संयोजन—(Object Assembly)—इस परीक्षा का प्रयोग "वैक्सलर ने अपने वैक्सलर वैलेब्यू की बुद्धि परीक्षा' (Wacksler Bellevae Intelligence Scale) में किया। इससे छोटी मानवाकृति पार्श्व चित्र (Picture Profile) और हाथ के अलग-अलग तीन आकार पटल होते हैं जिनके कटे खण्डों को मिलाकर पूरा आकार बनाना पड़ता है।

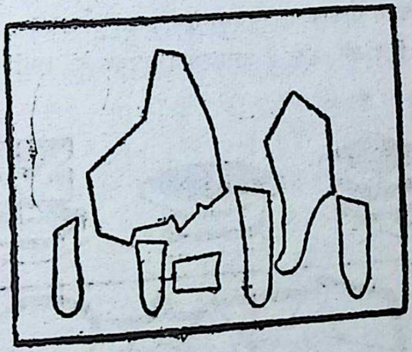

चित्र संख्या—३६ वस्तु संयोजन

(४) भूल भुलैया परीक्षा (Mage Tests)—भूल भुलैया परीक्षा में बालकों को कागज पर बना एक ऐसा चित्र दिया जाता है जिसमें अनेक राहें बनी होती हैं। जो बालक किसी अन्धी गली में भटके बिना पेन्सिल द्वारा छोटे से छोटा एवं जल्दी से जल्दी मार्ग ढूंढ़ लेता है उसे बुद्धिमान समझा जाता है। सबसे पहले इसका प्रयोग पोर्टियस महोदय ने किया था। परीक्षा का चित्र अगले पृष्ठ में दिया गया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

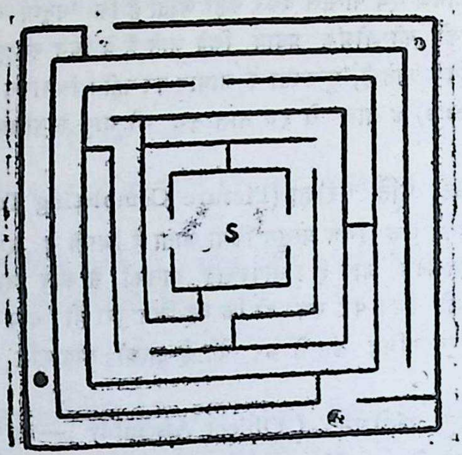

चित्र संख्या—४० भूल-भुलैया-परीक्षण

(५) आकृति फलक परीक्षा (Form Board Test)—आकृति फलक परीक्षण (Form Board Test) के आविष्कार करने का श्रेय सेग्यून (Seguin) महोदय को प्राप्त हुआ है। इस परीक्षा में बालक के समाने एक ऐसे तख्ते को प्रस्तुत किया जाता है जिसमें गोलाकार, अर्धगोलाकर, चतुर्भुजाकार, त्रिकोणाकार, आदि अनेक शकलों के छिद्र बने होते हैं तात्पश्चात् वुडवर्थ के शब्दों में, 'विभिन्न आकार

चित्र संख्या—४१ आकृति फलक परीक्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के टुकड़े तख्ते के बने उनके अनुरूप छिद्रों में रखने पड़ते हैं। समय पर ले लिया जाता है एवं त्रुटियों को गिन लिया जाता है। एक त्रुटि एक टुकड़े को गलत छिद्र में रखने से होती है।" जो बालक टुकड़ों को ठीक-ठीक तख्ते के छिद्रों में रख देता है वह बुद्धिमान समझा जाता है। परीक्षा का चित्र पिछले पृष्ठ पर दिया हुआ है।

अन्त में इन परीक्षाओं के सम्बन्ध में वुडवर्थ के शब्दों में यह जान लेना चाहिये कि "ये परीक्षायें, मौखिक प्रश्नोत्तरों का कम तथा ठोस पदार्थों का अधिक प्रयोग करती हैं। ये विशेषतया उस दशा में लाभदायक होती हैं जबकि व्यक्ति परीक्षाओं में प्रयुक्त भाषा से भली-भाँति परिचित नहीं होता।"

These tests make little use of oral questions and answers and more use of concrete materials. They are specially useful when the subject is not well aquainted with the language used in the tests." —Woodworth.

सामूहिक बुद्धि परीक्षण
(Group Intelligence Tests)

[अ] सामूहिक बुद्धि परीक्षण का अर्थ
(Meaning of Group Intelligence Tests)

सामूहिक बुद्धि परीक्षण का तात्पर्य उस परीक्षण से है जिनके द्वारा एक समय में अनेक व्यक्तियों या व्यक्ति समूह की बुद्धि की परीक्षा की जा सकती है। सामूहिक परीक्षाओं का जन्म प्रथम महायुद्ध [१९१७-१८] के समय हुआ जबकि अमेरिका (U. S. A.) को लाखों की संख्या में लड़ाई में काम आने वाले कुशल सैनिकों एवं अफसरों की आवश्यकता थी। * इसके लिये टरमैन, थार्नडाइक, लाक्सीले, पिन्टर आदि मनोवैज्ञानिकों ने दो प्रकार के सामूहिक परीक्षणों का निर्माण किया— [१] आर्मी अल्फा परीक्षण (Army Alpha Test)—जो कि अँग्रेजी पढ़े लिखे लोगों के लिये था तथा [२] आर्मी बीटा परीक्षण (Army Beta Test)—जोकि विदेशी तथा गैर पढ़े लिखे सैनिकों के लिये था। इन परीक्षणों द्वारा ६।। लाख योग्य एवं बुद्धिमान सैनिकों और अफसरों की थोड़े समय में परीक्षा की गई। इस योजना में जिस उद्देश्य की पूर्ति हुई उस पर प्रकाश डालते हुए बेलार्ड (Ballard) ने लिखा

"Individual testing was born in France, group testing way born in America and its mother was necessity"—the stern necessity of war.' —Blluard.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

योग्य व्यक्ति को है "इस योजना में मूर्खों को निकालना बैल एवं गधे को एक ही साथ न जोतना और योग्य पद में रखना सम्भव हो गया। इसके बाद अन्य सामूहिक परीक्षणों का निर्माण हुआ। इन सामूहिक परीक्षणों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है—[१] शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण (Verbal Group Intelligence Tests) [२] अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण (Non-Verbal Group Intelligence Tests) जैसा कि नाम से स्पष्ट है कि प्रथम प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग पढ़े-लिखे तथा भाषा का सम्बन्धी जानकारी वाले व्यक्तियों के लिये प्रयोग किया जाता है तथा द्वितीय प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग गैर पढ़े तथा भाषा से अनभिज्ञ लोगों पर किया जाता है।

[ब] दोनों प्रकार के सामूहिक बुद्धि परीक्षणों को प्रस्तुत करना
(Presentation of Both Kinds of Group Intelligence Tests)

अब हम दोनों प्रकार के सामूहिक बुद्धि परीक्षणों पर संक्षेप में प्रकाश डाल रहे हैं।

शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण
(Verbal Group Intelligence Tests)

अब तक जो शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण निर्मित हुये हैं उनमें से अग्रलिखित प्रमुख हैं— प्रथम महायुद्ध के समय आर्मी अल्फा परीक्षण (Army Alpha Tests) तैयार किया गया, द्वितीय महायुद्ध के समय नौ सेना सामान्य वर्गीकरण परीक्षण (Navy General Classification Test or N. G. C. T.) तथा सैन्य सामान्य वर्गीकरण परीक्षण (Army General Classification) निर्मित किए गये॥ कोलम्बिया विश्वविद्यालय में थार्नडाइक ने D. A. V. D. नामक परीक्षण तैयार किया, 'टरमैन मैक नीमर परीक्षण (Terman Mc Nemar Test) भी एक प्रसिद्ध परीक्षण है, नेशनल इन्स्टीट्यूट आफ इण्डस्ट्रियल साइकालाजी लन्दन की तरफ से भी अनेक परीक्षण तैयार किए गए। भारत में भी अनेक शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया गया। मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की तरफ से १२, १३ तथा १४ वर्ष के बालकों के लिये क्रमशः B. P. T. 12 B. P. T. 7 तथा B. P. T. 8 बुद्धि परीक्षणों का निर्माण किया गया। डा० जालोटा (Dr. Jalota) ने एक उल्लेखनीय शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण निर्माण किया। इस प्रकार देश तथा विदेश में अनेक शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण तैयार किए गये। नीचे हम इन परीक्षणों में जिन परीक्षण पदों (Tests-Items) का प्रयोग हुआ है उनके कुछ नमूने प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) **समानता और भिन्नता** (Similarities and Differences)—निम्नलिखित ५ शब्दों में ४ तो किसी माने में समान हैं और एक औरों से भिन्न है। जो भिन्न शब्द है उसके नीचे रेखा खींचिए—

मन्दिर चिकित्सालय, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च

(२) **सादृश्य** (Anology)—निम्नलिखित परीक्षण पदों में कोष्टक के बाहर ३ तथा कोष्टक के भीतर ६ शब्द हैं। कोष्टक के भीतर प्रथम दो शब्दों में जो एक प्रकार का सम्वन्ध तीसरे शब्द के कोष्टक के भीतर के ६ शब्दों में से कोष्टक के बाहर किसी एक शब्द से है। उस शब्द के नीचे रेखा खींचिये—

चारपाई, विस्तर, सिर, (कोट, पैन्ट, घड़ी, साफा, हाथ, पैर)

(३) **विलोम** (Opposites)—नीचे लिखे कोष्टक के अन्दर के शब्दों में से उस शब्द के नीचे रेखा खींचिए जो कोष्टक के बाहर वाले शब्द का विलोम हो—

शिक्षित (विकास, उन्नति, वैभव अशिक्षित)

अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण
(Non-Verbal Group Intelligence Tests)

अन्य प्रकार के बुद्धि परीक्षणों की भाँति अनेक अशाब्दिक या क्रियात्मक सामूहिक बुद्धि परीक्षण भी निर्मित किये गये जिनमें से निम्नलिखित परीक्षण उल्लेखनीय हैं—आर्मी बीटा परीक्षण (Army Beta Tests), **शिकागो अशाब्दिक परीक्षण** (Chicago Non-Verbal Examination), **पिगन का शाब्दिक परीक्षण** (Pigeon's Non-Verbal Tests), **नेशनल इन्स्टीट्यूट आफ इण्डस्ट्रियल साइकालाजी लन्दन द्वारा निर्मित** N. 11. P. 70/23 परीक्षण, रेवन महोदय का प्रोग्रेसिव मैट्रिसेज परीक्षण (Progressive Matrices Tests), **कैटल का कल्चर फ्री परीक्षण** (Culture Free Tests) इत्यादि। इन परीक्षणों का निर्माण करने में भारत में भी दिन प्रतिदिन रुचि बढ़ रही है नीचे हम अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षणों में प्रयुक्त परीक्षण-पदों के नमूने प्रस्तुत कर रहे हैं।

(१) **समानता** (Similarity)—नीचे दी गई वाँई ओर की तीन आकृतियों में एक माने में समानता हैं। दाहिनी ओर की दी हुई छः आकृतियों में से जो वाँई ओर की तीनों आकृतियों के समान हो उसके नीचे रेखा खींचिए।

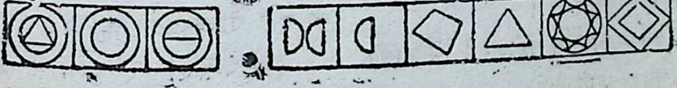

चित्र सं०–४२ समानता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) **विभिन्नता (Difference)**—नीचे दी हुई आकृतियों में एक को छोड़कर सभी कुछ न कुछ बातों में एक दूसरे से मिलती हैं। जो आकृति अन्य आकृतियों से भिन्न है उसके नीचे एक रेखा खींचिये।

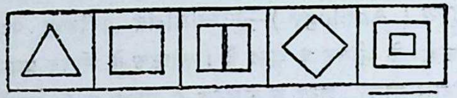

चित्र संख्या–४३ विभिन्नता

(३) **आकृति क्रम (Series)**—नीचे बाईं ओर दी हुई आकृतियों किसी क्रम से रक्खी हुई हैं इस क्रम को समझिये एवं दाहिनी ओर की आकृतियों में जो आकृति बाईं ओर दिए गए रिक्त खाने के लिए उपयुक्त हो उसे रेखांकित कीजिये—

चित्र संख्या—४४ आकृति क्रम

व्यक्तिगत एवं सामूहिक बुद्धि परीक्षण में अन्तर
(Difference between Individual and Group Intelligence Tests)

व्यक्तिगत परीक्षण (Individual Tets	सामूहिक परीक्षण (Group Tests)
(१) इस परीक्षण में समय बहुत लगता है।	(१) यह परीक्षा बहुधा ६०-७० मिनट में पूरी हो जाती है।
(२) इसमें विशेषज्ञ की आवश्यकता पड़ती है।	(२) यह परीक्षा साधारण ज्ञान वाला आदमी भी ले सकता है।
(३) यह छोटे बालकों के लिये अधिक उपयुक्त सिद्ध होती है।	(३) यह बड़े बालकों के लिये उपयुक्त सिद्ध होती है।
(४) वैयक्तिक परीक्षण में धन अधिक खर्च होता है।	(४) इसमें धन अधिक खर्च करने की कोई आवश्यकता नहीं है।
(५) व्यक्तिगत परीक्षणों में बालक प्रायः घवड़ा जाते हैं।	(५) सामूहिक परीक्षणों में बालक खुशी से हाथ बटाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) व्यक्तिगत परीक्षण में बालक एवं परीक्षक का व्यक्तिगत सम्पर्क हो जाता है।	(६) सामूहिक परीक्षण में प्रायः इस बात का अभाव रहता है।
(७) व्यक्तिगत परीक्षणों में भाषा ज्ञान एवं व्यावहारिकता का विशेष प्रभाव पड़ता है।	(७) सामूहिक परीक्षण में ऐसा नहीं होने पाता है।
(८) व्यक्तिगत परीक्षण के प्रश्नों का निर्माण करने में बहुत कठिनाई पड़ती है।	(८) सामूहिक परीक्षण में प्रश्नों का निर्माण सरलता से हो जाता है।
(९) व्यक्तिगत परीक्षण से सामूहिक बुद्धि का पता नहीं लग सकता है।	(९) सामूहिक परीक्षण के द्वारा सामूहिक बुद्धि का अनुमान सरलता से लगाया जाता है।
(१०) व्यक्तिगत परीक्षण में प्रमाणिकता (Validity) एवं विश्वसनीयता (Reliability) अधिक पाई जाती है।	(१०) प्रायः सामूहिक परीक्षणों में इस बातों का अभाव रहने की सम्भावना होती है।

कहने का तात्पर्य यह है कि यद्यपि सामूहिक परीक्षण में ऐसी बहुत सी अच्छाइयाँ हैं जिनका व्यक्तिगत परीक्षा में अभाव है परन्तु जहाँ तक प्रमाणिकता एवं विश्वसनीयता का प्रश्न है इस दृष्टिकोण से व्यक्तिगत परीक्षायें अधिक उपयुक्त होती है। रॉस ने ठीक ही कहा है—

"It is possible to apply these (Group) tests and get preliminary results. at least, in a quite short time; but we are warned that the only safe and sure method is that of individual tests." —J. S. Ross.

बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता

(Utility of Intelligence Tests)

बुद्धि परीक्षणों की उपयोगिता निम्नलिखित है—

(१) बालकों के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करना।

(२) कक्षाओं के विभाजन करने में सरलता।

(३) शिक्षकों के कार्यों की जाँच।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) पाठ्यक्रम का निर्माण करना ।
(५) बालकों की भविष्य की उन्नति का अनुमान ।
(६) कक्षा में प्रवेश करने का महत्व ।
(७) वार्षिक परीक्षा में सहायक ।
(८) बालक को अपनी प्रगति का अनुमान ।
(९) छात्रवृत्ति देने का निर्णय करना ।
(१०) व्यावसायिक शिक्षा में सहायक ।
(११) व्यक्तिगत भेदों को मालूम कर लेना ।
(१२) अपराधी बालकों की समस्या का समाधान ।
(१३) मानसिक रोगों के उपचार में सहायक ।
(१४) किसी छात्र को उन्नति प्रदान करने का निर्णय ।
(१५) बालकों की सफलता के कारण जानना ।
(१६) शिक्षण पद्धति का निर्धारण ।
(१७) अनुशासन की समस्या का समाधान ।
(१८) विशिष्ट योग्यता की माप में सहायक ।
(१९) किसी देश अथवा जाति के बौद्धिक स्तर को मालूम करना ।
(२०) सरकारी या गैर सरकारी सेवाओं के लिये कर्मचारियों के चुनाव में सहायता ।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में बुद्धि परीक्षणों को दो भागों में विभाजित किया जाता है—[अ] **वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण**—ये दो प्रकार के होते हैं—[१] शाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण तथा [२] अशाब्दिक वैयक्तिक बुद्धि परीक्षण और **[ब] सामूहिक बुद्धि परीक्षण**—ये परीक्षण भी दो प्रकार के होते हैं—(१) शाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण तथा [२] अशाब्दिक सामूहिक बुद्धि परीक्षण । वैयक्तिक एवं सामूहिक बुद्धि परीक्षण में प्रमुख अन्तर यह है कि जहाँ वैयक्तिक बुद्धि परक्षण एक समय में एक व्यक्ति की बुद्धि की परीक्षा कर पाता है वहाँ सामूहिक बुद्धि परीक्षण एक समय में अनेक व्यक्तियों या व्यक्ति-समूह की बुद्धि की परीक्षा करता है । वर्तमान समय में जैसे-जैसे विभिन्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान का महत्व बढ़ता जाता है वैसे-वैसे बुद्धि परीक्षणों का भी विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग बढ़ता जाता है । बुद्धि परीक्षणों का महत्व प्रस्तुत करते हुए एक प्रसिद्ध विद्वान् ने लिखा है, **"बुद्धि परीक्षण मानवीय संगठन के बहुत से क्षेत्रों में शक्ति प्रदान करता है मनोवैज्ञानिक**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्तित्व के लक्षणों जैसे स्वभाव, सुझाव' क्षमता, दयालुता, कोमल हृदयता, संवेगात्मकता इत्यादि का मूल्यांकन करने के लिए परीक्षाओं को निर्माण करने में संग्लन हैं।"

"Intelligence testing has given imputes in many fields of organization. Psychologists are busy in constructing tests to appraise personality traits such as temperament, suggestibility, kindness, tender heartedness and emotionality."

—An Eminent Scholar.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४१

विशेष योग्यता, अभिरुचि तथा रुचि परीक्षण

(Special Abilities, Aptitudes and Interest Tests)

प्रश्न-संख्या—४१

विशेष मानसिक योग्यता, अभिरुचि तथा रुचि परीक्षण पर प्रकाश डालिए।

Throw light on special abilities, aptitudes and interest tests.

भूमिका (Introduction)

हम देखते हैं कि कुछ बालक यान्त्रिक कार्यों को करने में कुशल होते हैं तो कुछ क्लर्की का काम अधिक ध्यानपूर्वक करते हैं। इसी प्रकार कुछ बालक साहित्य के अध्ययन में अधिक रुचि लेते हैं तो कुछ विज्ञान के अध्ययन में। आखिर ऐसा क्यों? इसका सीधा-सा उत्तर है उनमें तत्सम्बन्धीय विशेष योग्यता, अभिरुचि तथा रुचि का निहित होना। वर्तमान समय में विभिन्न प्रकार के निर्देशनों तथा शैक्षणिक व्यावसायिक तथा वैयक्तिक क्षेत्र में विद्यार्थियों की विशेष योग्यता, अभिरुचि तथा रुचि समझना अति आवश्यक समझा जाता है। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए विशेष योग्यता, अभिरुचि तथा रुचि के परीक्षणों का निर्माण किया गया। इन परीक्षणों को अच्छी तरह समझने के लिए पहले हम विशेष योग्यता तथा अभिरुचि का अर्थ और सम्बन्ध (Meaning of Special Abiltiy And Aptitudes and Their Relationships) प्रस्तुत करेंगे। तत्पश्चात् प्रमुख विशेष योग्यता और अभिरुचि परीक्षणों (Important Special Abilities and Aptitudes Tests) पर प्रकाश डालेंगे और अन्त में प्रमुख रुचि परीक्षणों (Important Interest Tests) स्पष्ट करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विशेष योग्यता तथा अभिरुचि का अर्थ एवं उनका सम्बन्ध
(Meaning of Special Ability and Aptitude and Their Relationship)

[अ] विशेष योग्यता तथा अभिरुचि का अर्थ
(Meaning of Special Ability and Aptitude)

(१) **विशेष योग्यता (Special Ability)**—व्यक्ति के मूल्यकांन में वुद्धि परीक्षण का सवसे वड़ा स्थान है। बुद्धि को चाहे हम बड़ी 'सामान्य योग्यता' (General Ability) माने चाहे प्राथमिक मानसिक योग्यताओं (Primary Mental Abilities) का एक समूह, परन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि हम प्रायः उसे बुद्धि कह देते हैं। परन्तु हमारे व्यक्तित्व के अन्तर्गत इसके अतिरिक्त अनेक विशेष मानसिक योग्यतायें (Special Mental Abilities) होती हैं जिनका मूल्यांकन आवश्यक हो जाता है। विशेष योग्यता का अभिप्राय किसी विशेष प्रकार के कार्य करने की वर्तमान क्षमता से है, जैसे यान्त्रिक योग्यता (Mechanical Ability), कलात्मक योग्यता (Artistic Ability), संगीतात्मक योग्यता (Muscial Ability) इत्यादि। इन विशेष योग्यताओं में जन्मजात-क्षमता प्रशिक्षण एवं अन्य अनुभवों के प्रभाव सम्मिलित होते हैं। जिस व्यक्ति में जो विशेष योग्यता होती है वह उसी प्रकार के काम करने में सवसे कुशल होता है।

(२) **अभिरुचि (Aptitude)**—फ्रीमैन के शब्दों में "एक अभिरुचि प्रशिक्षण द्वारा कुछ विशेष ज्ञान, योग्यता या प्रतिक्रियाओं का समूह जैसे भाषा बोलने की योग्यता, संगीतज्ञ बनना, यान्त्रिक कार्य करना इत्यादि अर्जित करने की व्यक्ति की योग्यता की ओर संकेत करने वाली दशा या विशेषताओं का समूह है।"

"An aptitude is a condition or set of characteristics indicative of an individual's ability to acquire with training some specific knowledge, skill or set of responses, such as the ability to speak a languge, to become a musician, to do mechanical work etc."
—**Frank. S. Freeman.**

[ब] विशेष योग्यता तथा अभिरुचि में सम्बन्ध
(Relationship between Special Ability Aptitude)

अभिरुचि की उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट होता है कि अभिरुचियों के मूल में एक या एक से अधिक विशेष योग्यतायें निहित रहती हैं, परन्तु अभिरुचि को हम विशेष योग्यता नहीं कह सकते, क्योंकि इसमें इनके अतिरिक्त दो बातें और निहित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रहती हैं—(१) रुचि और (२) भविष्य में उनके सम्बधित कार्यों में सफलता प्राप्त होने की संभावना। उदाहरण के लिये किसी व्यक्ति में यान्त्रिक अभिरुचि निहित है तो वह यंत्र सम्बन्धी कार्यों को करने में तो रुचि लेता ही है परन्तु उससे यह भी आशा की जाती है कि वह भविष्य में कुशल इंजीनियर होगा। कहने का अभिप्राय यह है कि विशेष योग्यता अभिरुचि का मूल हैं, परन्तु विशेष योग्यता का सम्बन्ध वर्तमान से होता है और अभिरुचि का सम्बन्ध वर्तमान के साथ-साथ भविष्य से भी होता है। उदाहरण के लिए सांख्यिक योग्यता हमारी वर्तमान की द्योतक हैं जब कि हमारी गणित की अभिरुचि इस बात की द्योतक है कि हम भविष्य में गणितज्ञ हो सकते हैं। संक्षेप में योग्यता और अभिरुचि में गुण का भेद नहीं बल्कि मात्रा का भेद है। इसी लिये परीक्षण की दृष्टि से मानसिक योग्यता तथा अभिरुचि का समान अर्थ लगाया जाता है और जो परीक्षण विशेष योग्यता के मापन के होते हैं वही अभिरुचि के मापन भी होते हैं।

प्रमुख विशेष योग्यता और अभिरुचि-परीक्षण

(Important Special Abilities and Aptitudes Tests)

प्राय: भिन्न-भिन्न मनुष्यों की भिन्न-भिन्न विशेष योग्यतायें व अभिरुचियाँ होती हैं। उनकी इन विशेष योग्यताओं व अभिरुचियों के मापन के लिए जो परीक्षण तैयार हैं उन पर हम प्रकाश डालेंगे।

[१] गत्यात्मक योग्यता परीक्षण (Moter Dexterity Tests)

इन परीक्षणों से उँगली और हाथ से काम करने की योग्यताओं का मापन किया जाता है। इस प्रकार ये प्रमुख परीक्षण निम्नलिखित हैं—

(१) ओकोनर चिमटी दक्षता परीक्षण (O'Coner Tweezer Dexterity Test)—इस परीक्षण में लकड़ी के एक पटल में एक ओर दस-दस लाइनों

चित्र संख्या ४५-ओकोनर चिमटी दक्षता परीक्षण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

में २०० छिद्र होते हैं और दूसरी ओर १०० से २—३ अधिक पिनें रक्खी होती हैं। परीक्षार्थी को चिमटी से इन पिनों को जल्दी-जल्दी उठाकर छेद में डालना होता है। इस प्रकार के तीन प्रयास करने पड़ते हैं। इन प्रयासों में जो समय लगता है उनका औसत समय निकाल लिया जाता है। जितना कम औसत समय आता है उतनी ही अधिक परीक्षार्थी में गत्यात्मक योग्यता समझी जाती है।

(ii) **स्टेडीनेस टेस्टर (Steadiness Tester)** :—इस परीक्षण द्वारा हाथ और उँगली की स्थिरता की परीक्षा की जाती है। इसमें एक पटल में अनेक छिद्र होते हैं जो क्रम से छोटे होते जाते हैं। इन छिद्रों में एक स्टाइलस को क्रम से डालना तथा निकालना पड़ता है परन्तु इनमें एक शर्त अवश्य रहती है कि परीक्षण काल में स्टाइलस पटल में न छूने पावे। स्टाइलस के पटल से छू जाने से घंटी बज उठती है। लगातार तीन बार असफलता मिलने पर परीक्षा समाप्त हो जाती है। इस परीक्षण में जो अच्छा फल प्राप्त करते हैं उनसे यह आशा की जाती है कि वे हाथ के बारीक कामों में अधिक सफल होंगे—जैसे घड़ी निर्माण करना।

उपर्युक्त परीक्षणों के अतिरिक्त (iii) **बेनेट हस्त औजार योग्यता परीक्षण (Bennet Hand Tool Dextersty Test)** तथा (Vi) **परड्यू पेग बोर्ड परीक्षण (Purdue Peg Board Test)** गत्यात्मक योग्यया मापन के अन्य परीक्षण भी हैं।

[२] यान्त्रिक अभिरुचि परीक्षण (Mechanical Aptitude Tests)

इन परीक्षणों में प्रायः मूर्त वस्तुओं, उपकरणों तथा यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है जिनके उपयोग करने से परीक्षार्थी की योग्यता का पता चलता है।

(i) **स्टेन्क्विस्ट सामान्य या यान्त्रिक एकत्रीकरण परीक्षण (Stenquist Mechanical Assembly Test)**—इन परीक्षण में परीक्षार्थी को कुछ साधारण यान्त्रिक वस्तुयें दी जाती हैं जिनके हिस्से पृथक-पृथक रक्खे होते हैं। परीक्षार्थी को क्रम से इन समस्त वस्तुओं की उनके हिस्सों द्वारा पूरा करने को कहा जाता है। इसमें प्रयोग की जाने वाली प्रमुख वस्तुयें इस प्रकार हैं—ताला, कपड़ा दवाने वाला क्लिप, जंजीर, चूहादानी, साइकिल की घण्टी इत्यादि।

(ii) **मिनेसोटा यान्त्रिक एकीकरण परीक्षण (Minnesota Mechanical Assembly Test)** :—यह परीक्षण स्टेन्क्विस्ट परीक्षण का ही संशो-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घित रूप है। इसकी परीक्षण सामग्री भी लगभग वही है। नीचे हम इस परीक्षण के बाक्स का एक नमूना प्रस्तुत कर रहे हैं—

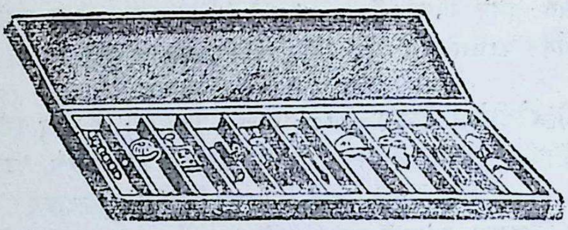

चित्र संख्या ४६ मिनेसोटा यान्त्रिक एकत्रीकरण परीक्षण का एक बाक्स

उपर्युक्त परीक्षणों के अतिरिक्त (iii) **बेनेट यांत्रिक समझ परीक्षण** Bennett Test of Mechanical Comprehension) तथा **मैकक्वेरी यान्त्रिक योग्यता परीक्षण** (Mecquerie Test for Mechanical Ability) इसी प्रकार के यान्त्रिक परीक्षण हैं।

[३] आन्तरिक्षिक योग्यता परीक्षण (Spatial Ability Tests)

इन परीक्षण द्वारा परीक्षार्थी की वस्तुओं के आकार प्रकार के समझने की योग्यता का पता चलता है।

(i) मिनेसोटा आन्तरिक्षिक सम्बन्ध परीक्षण (Minnesota Spatial Relations Test)-यह परीक्षण ४ उप-परीक्षणों में बँटा हुआ है।

(ii) मिनेसोटा कागज आकार पटल (Minnesota Paper Form Board)-इस परीक्षण के अन्तर्गत १४ परीक्षण पद (Test iteme) हैं: इन पदों में ज्योमित्त सम्बन्ध आकृतियों के विभिन्न भागों को मिलाकर पूरी आकृति बनानी होती है। इन दोनों परीक्षणों का व्यावसायिक निर्देशन में अधिक महत्व है।

(iii) नेशनल इन्स्टीट्यूट आफ इन्डस्ट्रियल साइकालाजी लन्दन (National Institute of Industrial Psychology) का N I I P Form Relations Test) भी एक महत्वपूर्ण परीक्षण आन्तरिक्षिक योग्यता का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षण है। यह परीक्षण ८ उप परीक्षणों (Sub-Tests) में विभक्त है। भारत-वर्ष में मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद और इसकी विभिन्न शाखाओं में निर्देशन कार्य के लिए इस परीक्षण का अत्यधिक सफल प्रयोग हो रहा है। माध्यमिक विद्यालयों की विभिन्न कक्षाओं (८ १० और १२ कक्षा) के लिए इस परीक्षण के पृथक-पृथक मानक (Norms) भी बनाये गये हैं।

(iv) आन्तरिक्षिक योग्यता का एक परीक्षण (Space Test B. P. S. T.)—मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की तरफ से भी बनाया गया है जो निर्देशन कार्य में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।

[४] लिपिक अभिरुचि परीक्षण (Clerical Aptitude Tests)

इन परीक्षणों के अन्तर्गत प्रत्यक्ष ज्ञान की गति, शीघ्र सुन्दर तथा शुद्ध लिखने-पढ़ने, शब्द भण्डार, अंकगणित प्रश्न करने, गलतियों को ज्ञात करने इत्यादि की होती हैं। नीचे हम इस प्रकार के परीक्षण प्रस्तुत कर रहे हैं—

(i) मिनेसोटा लिपिक परीक्षण (Minnesota Clerical Test)—यह परीक्षण दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में दिये संख्याओं के जोड़ों में से उन पर सही का निशान लगाना पड़ता है जिनमें कि दोनों संख्यायें हुआ करती हैं हैं और द्वितीय भाग में दिए हुए नाम के जोड़ों में से उनमें सही के निशान लगाना पड़ता है जो कि एक से होते हैं।

(ii) सामान्य लिपिक परीक्षण (General Clerical Test)—इस परीक्षण में उपर्युक्त योग्यताओं के परीक्षण हेतु विभिन्न प्रकार के ६ उप परीक्षणों का समावेश है।

(iii) साइकालाजीकल कारपोरेशन सामान्य लिपिक परीक्षण (The Psychological Corporation General Clerical Test) तथा **(iv) डिट्रोइट लिपिक अभिरुचि परीक्षण (The Detroit Clerical Aptitude Exmination)** इस प्रकार के अन्य प्रसिद्ध परीक्षण हैं।

[५] कलात्मक अभिरुचि परीक्षण (Artistic AptitudeTests)

इन परीक्षणों के अन्तर्गत कलात्मक सौन्दर्य परखने, तथा चित्र-कला के विवेचन की क्षमता, एवं संगीत की रुचियों का पता लगाया जाता है। ये परीक्षण निम्न-लिखित हैं—

(i) मियर कला निर्णय परीक्षण (Meier Art Judgment Test)—यह एक अति प्रसिद्ध कलात्मक परीक्षण है जिसमें चित्रों के १०० जोड़े परीक्षण सामग्री के रूप में होते हैं। प्रत्येक जोड़े का एक चित्र मौलिक तथा दूसरा परिवर्तित रूप कला की दृष्टि से कम अच्छा समझा जाता है।

इस कलात्मक परीक्षण के अतिरिक्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ii) मैंक एडोरी कला परीक्षण (Mc Adory Art Tests)

(iii) सीशोर संगीत क्षमता परीक्षण (Seashore Measures of musical talent)

(vi) ड्रेक संगीतात्मक स्मृति परीक्षण (The Drake Memory Tests) इत्यादि प्रमुख कलात्मक परीक्षण हैं।

अन्य अभिरुचि परीक्षण (Other Aptitude Tests)

उपर्युक्त अभिरुचि परीक्षणों के अतिरिक्त कुछ अन्य व्यवसाय तथा अन्य बातों से सम्बन्धित अभिरुचि परीक्षण हैं जो निम्नलिखित हैं—

(१) ग्रैफिक कलात्मक अभिरुचि परीक्षण (Graphic Art Aptitude Tests)

(२) चिकित्सा अभिरुचि परीक्षण (Medical Aptitude Tests)

(३) कानून अभिरुचि परीक्षण (Law Aptitude Tests)

(४) शिक्षण अभिरुचि परीक्षण (Teaching Aptitude Tests)

(५) साइंस तथा इंजीनियरिंग अभिरुचि परीक्षण (Science and Engineering Aptitude Tests)

(६) शास्त्रीय या शैक्षणिक परीक्षण(Scholaric Tests)

(७) व्यापार अभिरुचि परीक्षण (Trade Aptitude Tests)

(८) विशिष्ट एकेडेमिक विशेष परीक्षण (Specific Academic Subjects Aptitude Tests)

(९) पढ़ने की तत्परता सम्बन्धी परीक्षण (Tests of Reading Readiness)

(१०) शारीरिक क्षमता के परीक्षण (Tests for Physical Capacities)

कुछ अभिरुचि परीक्षण मालाएं (Some Batteries of Aptitude Tests)

उपर्युक्त विशेष योग्यताओं तथा अभिरुचि परीक्षणों के अतिरिक्त इन परीक्षणों की मालायें भी बनाई गई हैं जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—

(१) भेदात्मक अभिरुचि परीक्षण (Differential Aptitude Tests) इस अभिरुचि परीक्षण माला में निम्न सात परीक्षणों का समावेश है। (१) सांख्यिक योग्यता (Number Ability) (२) शाब्दिक तर्क (Verbal Reasoning) (३) आंतरिक्षिक सम्बन्ध (Space Relation) (४) सूक्ष्म तर्क (Abstract Reasoning) (५) यांत्रिक तर्क (Mechanical Reasoning) (६) लिपिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्बन्धी गति तथा शुद्धता (Clerical Speed and Accuracy) तथा (७) भाषा व्यवहार (Language Usage)।

(२) सामान्य अभिरुचि परीक्षण माला (General Aptitude Test Battery) :--इस प्रसिद्ध परीक्षण माला में १० मानसिक योग्यताओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिये १५ अभिरुचि परीक्षणों का समावेश है।

(३) फ्लैनेगन अभिरुचि वर्गीकरण परीक्षण (Flangen Aptitude classification Tests) तथा।

(४) गिल्फोर्ड जिम्मरमैन वर्गीकरण अभिरुचि सर्वेक्षण (Guilford Zimmerman Aptitude Survey)---अन्य दो परीक्षण मालायें हैं जो विशेष योग्यताओं तथा अभिरुचियों के परीक्षण में प्रयोग की जाती है।

प्रमुख रुचि परीक्षण

(Important Interest Tests)

[अ] स्ट्रौंग व्यवसायिक रुचि पत्र

(The Strong Vocational Interest Blank)

इस रुचि परीक्षण के दो रूप हैं-एक पुरुषों के लिए एवं द्वितीय स्त्रियों के लिये। प्रत्येक रूप में ४०० परीक्षण-पद (Test items) सम्मिलित होते हैं। २६३ परीक्षण पद ऐसे हैं जो परीक्षण के दोनों रूपों में होते हैं। यह परीक्षण १६२७ में प्रकाशित हुआ था। यह परीक्षण अनेक भागों में विभक्त है। इसके प्रथम भाग में कुछ व्यवसाय दिये हैं, शेष अन्य भागों में क्रमशः शिक्षालय के पाठ्य-विषय, मनोविनोद की क्रियायें (जैसे खेल-कूद, पत्र-पत्रिकायें इत्यादि), विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों की विशेषतायें, या व्यावसायिक क्रियाएँ इत्यादि हैं। अन्तिम भागों में परीक्षार्थी को दी हुई क्रियाओं का श्रेणीकरण (Rating) करना पड़ता है, जोड़ों में दिए हुए परीक्षण पदों की पारस्परिक तुलना करनी पड़ती है एवं अपनी मानसिक योग्यताओं तथा व्यक्तित्व से सम्बन्धित विशेषताओं का श्रेणीकरण (Rating) करना पड़ता है। इसी परीक्षण में समय का कोई निश्चय नहीं होता है। इसके पद परीक्षण को हल करने के समय परीक्षार्थी को उसके सम्बन्ध में अपनी पसन्द (Like), नापसन्द (Dislike) या उदासीनता (Indifference) व्यक्त करनी होती है। सामान्यतया सन्तुलित व्यक्तित्व एवं तीव्र बुद्धि वाले लोग इस शिक्षण को आधे घण्टे में पूरा कर लेते हैं परन्तु अन्य लोगों को १ से २ घण्टे तक लग जाते हैं। शब्दों की दुरूहता के कारण केवल यह परीक्षण कालेज के विद्यार्थियों तथा शिक्षित प्रौढ़ों के लिए उपयुक्त सिद्ध होता है। स्ट्रौंग महोदय ने विभिन्न व्यवसायों में सफल व्यक्तियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

की रुचियों का अध्ययन कर उनके लिए रुचि का ढाँचा निर्मित किया है जिससे पता लगता है कि विभिन्न व्यवसायों में सफल व्यक्तियों की रुचियां सामान्य लोगों से कितनी मात्रा में भिन्न हैं। पृथक-पृथक व्यवसायों के लिए पृथक-पृथक कुञ्जियाँ होती हैं। ४७ पुरुषों के व्यवसायों के लिए और २७ स्त्रियों के व्यवसायों के लिए कुञ्जियाँ मौजूद हैं। व्यवसायों की दृष्टि से रुचिपत्र के उत्तरों को पृथक-पृथक महत्व प्रदान किया जाता है। वास्तव में व्यवसायिक निर्देशन में स्ट्रौंग का यह परीक्षण बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हुआ है।

[ब] क्यूडर का व्यावसायिक पसन्द लेखा (Cuder Preference Vocational Record)

व्यक्ति की रुचियों का वर्णात्मक चित्र प्रस्तुत करने के लिए क्यूडर महोदय ने अपना यह परीक्षण निर्मित किया। इसमें १६८ पद-समूह Item Group) निहित हैं एवं प्रत्येक पद समूह के अन्तर्गत पृथक-पृथक व्यवसायों के सूचक तीन पद होते हैं। इन पदों में से परीक्षार्थी को अपनी सबसे अधिक पसन्द के तथा सबसे कम पसन्द के पदों को बतलाना पड़ता है। ये परीक्षण पद विभिन्न प्रकार की क्रियाओं से सम्बन्धित होते हैं। जाँचने में यह परीक्षण अपेक्षाकृत सरल होता है। यह स्कूल के विद्यार्थियों के लिए सबसे उपयुक्त सिद्ध होता है। क्यूडर महोदय ने अपने इस परीक्षण में निम्नलिखित १० प्रकार की व्यावसायिक रुचियाँ बतलाई हैं :---

(१) वाह्य कार्यों में रुचि (Outdoor Interest)
(२) यान्त्रिक रुचि (Mechanical Interest)
(३) गणनात्मक रुचि (Computational Interest)
(४) वैज्ञानिक रुचि (Scientific Interest)
(५) प्रभावात्मक रुचि (Persuasive Interest)
(६) कलात्मक रुचि (Artistic Interest)
(७) साहित्यिक रुचि (Literary Interest)
(८) संगीतात्मक रुचि (Musical Interest)
(९) समाज सेवा सम्बन्धी रुचि (Social Service Interest)
(१०) लिपिक सम्बन्ध रुचि (Clerical Interest)

परीक्षण में जो प्रतांक प्राते हैं उन्हें पार्श्वचित्र [Profile] द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जिस तरह के व्यवसायों से सम्बन्धित क्षेत्र में परीक्षार्थी को अधिक फलांक (Scores) प्राप्त होते हैं उसी प्रकार की उसकी व्यावसायिक रुचि मानी जाती है। अगले पृष्ठ में हम उदाहरणस्वरूप एक व्यावसायिक रुचि का पार्श्वचित्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यवसायिक रुचि का पार्श्व चित्र

नामः...............मोहन
कक्षा...............१०

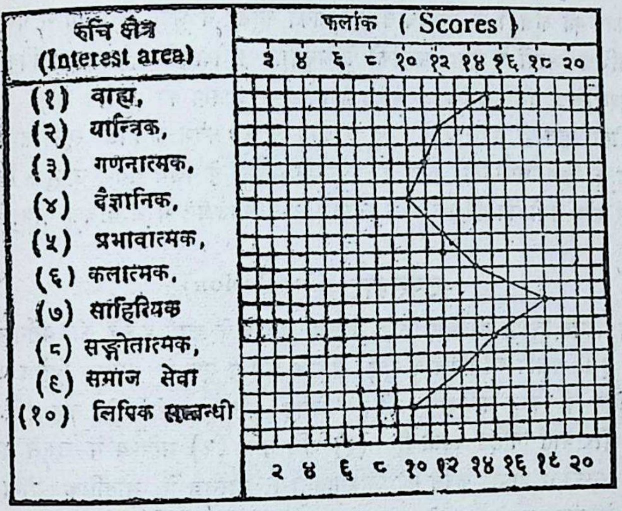

चित्र संख्या ४७—व्यावसायिक रुचि का पार्श्व चित्र

उक्त पार्श्व चित्र से यह भली भांति स्पष्ट हो जाता है कि मोहन की सबसे अधिक रुचि साहित्य [फलांक १७] की ओर है। इसके उपरांत उसकी रुचि वाह्य कार्यों (फलांक १५) के प्रति है। मोहन की सबसे कम रुचि विज्ञान (फलांक १०) के प्रति है। अतः इस पार्श्व-चित्र से यह ज्ञात होता है कि मोहन साहित्य से सम्बन्धित व्यवसाय में अधिक सफल होगा।

[स] मनो विज्ञानशाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की व्यावसायिक रुचि पत्री (Bureau of Psychology, Utter Predesh, Allahabad Vocational Interest Blank)

इस रुचि परीक्षण में कुल मिलाकर ८० परीक्षण-पद (Test-Items) होते हैं जो कि दस भागों में विभाजित हैं ३, ८, ६ तथा १० भाग में से प्रत्येक में केवल ५ परीक्षण-पद तथा बाकी में से प्रत्येक में १० परीक्षण-पद होते हैं। इन परीक्षण पदों में कुछ व्यावसायिक क्रियायें दी होती हैं। हर एक परीक्षण-पद के सामने २, १, ० अंकित रहते हैं जिनका तात्पर्य क्रमशः बहुत पसन्द, साधारण पसन्द तथा नापसन्द है। परीक्षार्थी इन तीनों में से किसी भी एक के चारो तरफ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गोला खींच कर अपनी बहुत पसन्द, साधारण पसन्द या नापसन्द को व्यक्त करता है। यदि परीक्षार्थी को कोई परीक्षण पद वहुत पसन्द हैं तो वह २ के चारों ओर, साधारण पसंद है तो १ के चारों ओर और नापसन्द है तो ० के चारों ओर गोला खींचता है। इस परीक्षण में समय का बन्धन नहीं होता। इन रुचि पत्री के १० भाग उन्ही १० प्रकार की रुचियों से सम्बधिन्त हैं जिसको क्यूडर ने अपने परीक्षण में प्रस्तुत किया है। विभिन्न भागों में प्राप्त फलांकों के अनुसार परीक्षार्थी की व्यावसायिक रुचि का एक **पार्श्वचित्र** निर्मित किया जाता है। इस परीक्षण का प्रयोग तथा जाँचने की विधि दोनों वहुत ही सरल हैं। यह परीक्षण उत्तर प्रदेश के हाई स्कूल तथा इण्टरमीडियेट के विद्यार्थियों की रुचि का अध्ययन करने के लिये सबसे उपयुक्त सिद्ध होता है। इस रुचि पत्री का शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन में अत्यधिक मात्रा में प्रयोग होता है।

उपसंहार (Conclusion)

इस प्रकार विशेष योग्यता किसी विशेष प्रकार के कार्य करने की वर्तमान क्षमता का नाम है। यद्यपि अभिरुचि के मूल में एक अथवा एक से अधिक विशेष योग्यतायें निहित होती हैं किन्तु अभिरुचि को हम विशेष योग्यता भी नहीं कह सकते क्योंकि इसमें ये और बातें निहित रहती हैं—(१) रुचि तथा (२) भविष्य में उससे सम्बन्धित कार्यों में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना। वास्तव में मानसिक योग्यता तथा अभिरुचि में गुण का भेद न होकर मात्रा का भेद है और इसी कारण परीक्षण की दृष्टि से विशेष योग्यता तथा अभिरुचि का एक अर्थ लगाया जाता है और इसीलिए विशेष योयता तथा अभिरुचि परीक्षण एक हैं। शैक्षणिक तथा व्यावसायिक निर्देशन में (१) गत्यात्मक योग्यता परीक्षण, (२) यान्त्रिक अभिरुचि परीक्षण, (३) आन्तरिक अभिरुचि परीक्षण (४) लिपिक अभिरुचि परीक्षण तथा (५) कलात्मक अभिरुचि परीक्षण विशेष रूप से प्रयोग किये जाते हैं। इन तथा अन्य विशेष योग्यता तथा अभिरुचि परीक्षणों को मिलाकर कुछ अभिरुचि परीक्षण मालायें भी बनाई गई जिनमें से प्रमुख निम्नलिखित हैं—(१) भेदात्मक अभिरुचि परीक्षण, (२) सामान्य अभिरुचि परीक्षण, (३) फ्लेनेगन अभिरुचि वर्गीकरण परीक्षण तथा (४) गिलफोर्ड जिम्मरमैन अभिरुचि परीक्षण। प्रायः प्रयोग होने वाले रुचि परीक्षण इस प्रकार हैं---(१) स्ट्रौंग का व्यावयायिक पसन्द लेखा तथा (२) क्यूडर का व्यावसायिक पसन्द लेखा तथा (३) मनोविज्ञानशाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की व्यावसायिक रुचि पत्री।

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४२

व्यक्तित्व का स्वरूप

[Nature of Personality]

प्रश्न-संख्या—४२

व्यक्तित्व का क्या अभिप्राय है ? इसके कौन-कौन से प्रमुख तत्व हैं ? ये कौन-कौन से तत्व हैं जों व्यक्तित्व पर प्रभाव डलते हैं ?

What is personality ? What are its main factors or traits ? What are the Facors affecting personality ?

भूमिका (Introduction)

प्रायः हम नित्य प्रति ऐसे वाक्यों को सुना करते हैं जिनमें व्यक्तित्व (Personality) शब्द की प्रधानता प्रतीत होती हैं कभी कोई कहता है 'अमुक व्यक्ति का व्यक्तित्व अच्छा नहीं है' अथवा अमुक व्यक्ति के व्यक्तित्व का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । स्वाभाविक रूप से अब यह प्रश्न होता है कि आखिर व्यक्तित्व क्या है ? इसका उत्तर देने के लिए व्यक्तित्व का स्वरूप (Nature of Personality), व्यक्तित्व के तत्व अथवा गुण (Factors or ratits of Personality) तथा संगठित व्यक्तित्व की विशेषतायें (Characteristics of Integrated Personality) प्रस्तुत करेंगे ।

व्यक्तित्व का स्वरूप
(Nature of Personality)

[अ] व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Personality)

(क) शाब्दिक अर्थ (Etymological Meaning)—इसके पहले कि हम व्यक्तित्व का वास्तविक अर्थ जाने हमें व्यक्तित्व का शाब्दिक अर्थ समझ लेना परमावश्यक है । 'व्यक्तित्व' शब्द 'परस्नैल्टी' (Personality) नामक अंग्रेजी शब्द

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

का हिन्दी रूपान्तर है। **परस्नैल्टी (Personality)** शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के **परसोना (Petsona)** शब्द से हुई है जिसका अर्थ वह 'वेश-भूषा' है जिसे नाटक करते समय अभिनेता लोग पहनते हैं। जब व्यक्ति सम्राट की पोशाक धारणकर रंग-मंच पर पहुँच जाता है तो उसका व्यक्तित्व उसकी सामन्य दशा से भिन्न हो जाता है। हम 'परसोना' (Persona) शब्द से 'परस्नैलिटी' (Personality) शब्द की उत्पत्ति इस दृष्टिकोण से मानते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तित्व की वाह्य गुणों के द्वारा माप की जाती है।

(ख) सैद्धान्तिक अर्थ (Theoretical Meaning) :—भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से व्यक्तित्व का भिन्न-भिन्न अर्थ लगाया जाता है। आगे हम व्यक्तित्व के सम्बन्ध में प्रमुख दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे है—**[१] सामान्य दृष्टिकोण (Layman point of view)** :---सामान्य दृष्टि से व्यक्तित्व का तात्पर्य व्यक्ति के उन प्रभावक गुणों से होता है जो दूसरों पर विजय पाने में सहायक होते हैं। दूसरे शब्दों में 'व्यक्तित्व वह उद्दीपन मूल्य है जो कि एक दूसरे के लिये रखता है।"* **[२] दार्शनिक दृष्टिकोण (Philosophical point of view)** दार्शनिक दृष्टिकोण से "व्यक्तित्व पूर्णता का एक आदर्श है। यह आत्म ज्ञान है।"** **[३] समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण (Sociological point of view)** :---समाजशास्त्र के अन्तर्गत व्यक्तित्व को सामाजिक पृष्ठभूमि का प्रतिबिम्ब समझा जाता है। इस दृष्टि से "व्यक्तित्व उन समस्त गुणों का संगठन है जो कि समाज में व्यक्ति का कार्य तथा पद निश्चित करता है। इस प्रकार व्यक्तित्व को सामाजिक प्रभावकता के रूप में माना जा सकता है।"*** **[४] मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण (Psychoanalytical point of view)** :---मनोविश्लेषण के जन्म दाता फ्रायड के अनुसार व्यक्त्वि के तीन अङ्ग होते हैं [१] इड (Id), [२] अहं (ego) तथा [३] नैतिक मन (Super ego); इड वह अचेतन मन है जिसमें मूल प्रवृत्तियाँ एवं प्राकृतिक इच्छायें रहती हैं जो अनैतिक होती हैं तथा शीघ्र ही तृप्ति चाहती हैं।

"*Personality is the stimulus value which one indiviual has for another."

**"Personality is ideal of perfection. It is self-realization."

***"Personality is the integration of all traits which determine the role and status of the person in society. Personality might be, therefore, as social effectiveness."

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अहं चेतना, इच्छा-शक्ति, बुद्धि तर्क आदि है जिसका सम्बन्ध इड तथा नैतिक मन दोनों से होता है। नैतिक मन का सम्बन्ध व्यक्ति के आदर्शों से होता है। यह अहं को उसके दोषों के लिये ताड़ना दिया करता है (५) मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण (Psychological Point of view):—मनोवैज्ञानिक दृष्टि से व्यक्तित्व का सम्बन्ध वंशानुक्रम तथा पर्यावरण दोनों से होता है। यहाँ पर हमारा सम्बन्ध इसी दृष्टिकोण से है अत. आगे हम कुछ विस्तार पूर्वक व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अर्थ प्रस्तुत करेंगे।

(ग) मनोवैज्ञानिक अर्थ (Psychological meaning):—इस अर्थ के अनुसार व्यक्ति में जितनी विशेषतायें अथवा विलक्षणतायें होती हैं उन सब का समन्वय अथवा संगठित (Integrated) रूप व्यक्तित्व (Personality) है अथवा व्यक्ति के व्यक्तित्व में उसके आन्तरिक एवं वाह्य पहलुओं का समन्वय अथवा संगठन रहता है। यहां पर प्रश्न उठता है कि व्यक्ति की विलक्षणताएँ अथवा विशेषताएँ व उसके आन्तरिक एवं वाह्य पहलू क्या हैं? व्यक्ति जब 'बालक के रूप में इस व्यापक संसार में प्रवेश करता है तो उसके साथ उसका अविकसित शरीर एवं मस्तिष्क अथवा कुछ गुण जैसे मूल प्रवृत्तियाँ आदि निहित रहती हैं जो कि जन्मजात विलक्षणतायें कहलाती है। धीरे धीरे जीवित प्राणी होने के नाते व्यक्ति का स्वाभाविक रूप से विकास होता रहता है। इस विकास काल में व्यक्ति अपनी जन्मजात (Inborn) विलक्षणताओं के आधार पर वातावरण से प्रतिक्रिया करता रहता है। फलस्वरूप कुछ विलक्षणतायें जैसे नाना प्रकार की कुशलतायें अथवा योग्यतायें, चरित्र; रुचियां, आदतें, दृष्टिकोण, आदि अर्जित कर लेता है। जैसे-जैसे व्यक्ति का विकास होता है वैसे-वैसे वातावरण से अभियोजित करने के लिए उसको इन जन्मजात एवं अर्जित विलक्षणताओं में संगठित रूप से परिवर्तन एवं परिमार्जन होता रहता है। अत: यहां दूसरा निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तित्व गत्यात्मक संगठन (Dynamic Organization) होता है। व्यक्ति का आन्तरिक एवं वाह्य पहलू क्या है? कुछ विलक्षणतायें अर्थात् व्यक्ति का शरीर, उसके मुख की मुद्रा, उसकी वेश-भूषा एवं तड़क भड़क आदि वाह्य पहलू के अन्तरर्गत आती हैं अथवा जो विलक्षणताएँ व्यक्ति के शरीर से सम्बन्धित होती हैं वे वाह्य पहलू का प्रतिनिधित्व करती हैं, शेष विलक्षणताएँ अर्थात् व्यक्ति की बुद्धि, योग्यताएँ, आदतें, रुचियां उसके दृष्टिकोण, उसका चरित्र आदि आन्तरिक पहलू के अन्तर्गत आती हैं अथवा जो विलक्षणताएँ व्यक्ति के मस्तिष्क से सम्बन्धित रहती हैं वे आन्तरिक पहलू का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन आन्तरिक एवं वाह्य पहलू के संगठन के कारण ही व्यक्ति को **मनःशारीरिक (Psycho-Physical)** प्राणी कहते हैं। उपरोक्त शब्दो से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह निष्कर्ष निकलता है कि व्यक्तित्व व्यक्ति की जन्मजात (Inborn) एवं अर्जित (Acquired) विलक्षणताओं अथवा आन्तरिक एवं बाह्य पहलुओं का गत्यात्मक समन्वय अथवा संगठन है।

[व] व्यक्तित्व की परिभाषा (Definition of Personality)

(१) म्यूरहेड :—"व्यक्तित्व में सम्पूर्ण व्यक्ति का समावेश होता है। व्यक्तित्व व्यक्ति के गठन, रुचि के प्रकारों, अभिवृत्तियों व्यवहार, क्षमताओं, योग्यताओं और प्रवणताओं का सब से निराला संगठन हैं।"

"Personality is the whole individual considered as a whole. It may be defined as the most characteristic integration of an individual's structures modes of interest, attitudes, behaviour, capacities, abilities and attitudes." **—Muirhead.**

(२) मन—"व्यक्तित्व एक व्यक्ति के व्यवहार के तरीकों, रुचियों, दृष्टिकोणों, क्षमताओं, योग्यताओं तथा अभिरुचियों का सबसे विशिष्ट सङ्गठन है।"

Personality may be defined as the most characteristic integration of an individual's structures, modes of behaviour, interests, attitudes, capacities, abilities and aptitudes. **—Munn.**

(३) बीसन्ज और बीसन्ज—"व्यक्तित्व मनुष्य की आदतों, दृष्टिकोणों और लक्षणों का सङ्गठन है और प्राणिशास्त्रीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों के संयुक्त कार्य से उत्पन्न होता है।"

"Personality is the organization of a person's habits, attitudes and traits and arises from the interplay of biological, social and cultural factors." **—Biesanj and Biesnj.**

(४) मार्टन प्रिंस—"व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त जन्म-जात संस्थानों, आवेगों, प्रवृत्तियों, झुकावों एवं मूल प्रवृत्तियों और अनुभव के द्वारा अर्जित संस्कार एवं प्रवृत्तियों का योग है।"

"Personality is the sum total of all the biological innate dispositions, impulses, tendencies, aptitudes and instincts of the individual and the dispositions and tendencies acquired by experiences." **Mortan prince.**

(५) आलपोर्ट—"व्यक्तित्व व्यक्ति के मनः शारीरिक तन्त्र का वह गत्यात्मक सङ्गठन है जो उसके वातावरण से अपूर्व अभियोजन को निर्धारित करता है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

"Personality is the dynamic organisation within the individual of those psycho physical systems that determine his unique adjustment to his environment," —**Allport.**

व्यक्तित्व के गुण अथवा तत्व

(Factors or Traits of Personality)

व्यक्तित्व की परिभाषा प्रस्तुत करते हुए हमने बतलाया था कि व्यक्तित्व व्यक्ति के समस्त गुणों का गत्यात्मक सङ्गठन है अब यह प्रश्न उठता है कि वे समस्त गुण कौन-कौन से हैं जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है ? वे गुण अथवा तत्व निम्नलिखित हैं---

(१) शारीरिक गुण (Physical Traits)
(२) मानसिक गुण (Mental Traits)
  (अ) ज्ञान (Knowing) अथवा बुद्धि (Intelligence)
  (ब) इच्छा (Feeling) अथवा स्वभाव (Temperament)
  (स) क्रिया (Willing) अथवा चरित्र (Character)
(३) मानसिक गुण (Social Traits) अथवा सामाजिकता (Sociability)
(४) उपरोक्त तीनो गुणों में दृढ़ता या सशक्तता (Forcefulness or persistence)

(१) शारीरिक गुण (Physical Traits)—शारीरिक गुणों के अन्तर्गत व्यक्ति के शरीर की लम्बाई, चौड़ाई, वजन, गठन, आवाज, चेहरे की अभिव्यक्तियाँ, रंग, पोशाक आदि बातें सम्मिलित होती हैं । इन समस्त शारीरिक गुणों अथवा तत्वों का व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है । प्रायः जिन व्यक्तियों में उच्चकोटि के शारीरिक गुण पाये जाते हैं वे समाज को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित करने में शीघ्र सफल हो जाते हैं ।

(३) मानसिक गुण (Mental Traits)– मनोवैज्ञानिकों ने मन को तीन भागों में विभाजित किया है--ज्ञान (Knowing), इच्छा (Feeling) एवं क्रिया (Willing)। ज्ञान का स्वरूप बुद्धि (Intelligence) है, इच्छा बढ़कर उद्वेग (Emotion) बन जाती है, इसी उद्वेग से स्वभाव (Temperament) निर्मित होता है एवं क्रिया का स्वरूप चरित्र (Character) है । इस प्रकार मन के तीनों गुणों-ज्ञान-इच्छा-क्रिया के ही द्वारा बुद्धि, स्वभाव एवं चरित्र का निर्माण होता है, फलस्वरूप हम इन्हीं तीनों पर सक्षेप में प्रकाश डालेंगे । (अ) बुद्धि (Intelligence)—व्यक्ति के व्यक्तित्व का बुद्धि एक प्रधान गुण होता है। प्रायः व्यक्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सामान्य बुद्धि के होते हैं फलस्वरूप प्राय: उनका व्यक्तित्व भी सामान्य होता है। जो व्यक्ति मन्द बुद्धि के होते है उनका व्यक्तित्व निम्न कोटि का होता है दूसरी ओर जो व्यक्ति उत्कृष्टि बुद्धि के होते हैं प्राय: वे समाज को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित कर लेते हैं। (ब) स्वभाव (Temperament) :—मनोवैज्ञानिकों ने स्वभाव के आधार पर चार प्रकार के व्यक्ति बतलायें हैं-आशावादी (Elated), निराशावादी (Depressed), चिड़चिड़े (Irritable) एवं अस्थिर (Unstable)। विद्वानों का विचार है कि अन्तरासर्गी ग्रंथियों (Endocrine Clands) से जो न्यासर्ग (Hormones) निकलता है उसके कारण व्यक्तियों के स्वभाव में अन्तर हो जाता है। वास्तव में संवेगशीलता (Emotionality) व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण तत्व अथवा गुण है। (स) चरित्र (Character) :—पीछे हम चरित्र पर प्रकाश डालते हुए बता आये हैं कि चरित्र व्यक्तित्व का एक प्रधान गुण है। जिन व्यक्तियों का अच्छा चरित्र नहीं होता है उनका व्यक्तित्व भी आकर्षण रहित होता है। चरित्रहीन मोटे-ताजे व्यक्ति समाज के लिए एक प्रकार से भार स्वरूप होते हैं। गाँधी जी एक दुबले पतले शरीर वाले व्यक्ति थे परन्तु उनका चरित्र इतना ऊँचा था कि आज विश्व में उनकी पूजा होती है।

सामाजिकता (Sociability)—व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास सामाजिक वातावरण के मध्य होता है। अत: सामाजिकता व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण गुण है। समाज में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो समाज से भागते हैं, कुछ बहुत ही मिलनसार होते हैं, कुछ आक्रामक स्वभाव के होते हैं। इस प्रकार विभिन्न व्यक्तियों में सामाजिकता की अलग अलग मात्रा होती है।

(४) सशक्ता या दृढ़ता (Forcefulness or Persistence) :—ऊपर जो हमने तीन गुण प्रस्तुत किये हैं अगर इन तीनों गुणों में सशक्तता या दृढ़ता का अभाव हो तो व्यक्ति को सफलता मिलना नितान्त दुर्लभ है। दूसरी ओर जिन व्यक्तियों के इन तीनों गुणों में दृढ़ता चतुर्थ गुण होता है तो वे व्यक्ति चाहे जिस काम में जम जायें उसे पूरा करके ही मानते हैं। सुभाषचन्द्र बोस, स्वामी विवेकानन्द, शिवाजी, महाराणा प्रताप, मुहम्मद गोरी, नैपोलियन आदि इसी गुण के ही कारण अपने-अपने क्षेत्र में विजयी हुये। इसी प्रकार सशक्तता या दृढ़ता व्यक्तित्व का बहुत ही महत्वपूर्ण गुण है।

व्यक्तित्व पर प्रभाव डालने वाले तत्व
(Factors Affecting Personality)

व्यक्तित्व पर प्रभाव डालने वाले तत्व-निम्नलिखित हैं–

(अ) वंशानुक्रम (Heredity)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ब) वातावरण (Environment)
(१) भौतिक वातावरण (Physical Environment)
(२) सामाजिक वातावरण (Social Environment)
(३) साँस्कृतिक वातावरण (Cultural Environment)

वंशानुक्रम का प्रभाव (Influence of Heredity)

व्यक्ति के विकास में वंशानुक्रम से प्राप्त-निम्न अंगों अथवा तत्वों का प्रभाव पड़ता है---

[१] प्रणाली विहीन ग्रन्थियाँ (Endocrine or Ductless Glands)

प्रणाली विहीन ग्रन्थियाँ निम्नलिखित हैं, जिनका व्यक्तित्व के विकास में प्रभाव पड़ता है---

(१) गल-ग्रन्थि (Thyroid Gland)—गलग्रन्थि ग्रीवा के मूल में श्वांसप्रणाली के सामने स्थित होती है। जब यह ग्रन्थि अधिक क्रियाशील होती है तो व्यक्ति बेचैन, चिन्तित एवं उत्तेजित रहता है। इसके विपरीत अगर यह ग्रन्थि आवश्यकता से कम क्रियाशील होती है तो व्यक्ति में खिन्नता, थकावट, मानसिक दुर्बलता आदि गुण उत्पन्न हो जाते हैं। इस प्रकार इस ग्रन्थि का व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

(२) उप-गल ग्रन्थि (Parathyroid Gland)---उप-गल ग्रन्थि गल ग्रन्थि के समीप होता है जब यह ग्रन्थि आवश्यकता से अधिक क्रियाशील होती है। तो व्यक्ति शान्त एवं मंद स्वभाव का होता है। परन्तु जब यह कम क्रियाशील हो जाती है तो व्यक्ति अधिक उत्तेजित हो जाता है।

(३) पोष ग्रन्थि (Pituitary Gland)---यह ग्रन्थि मस्तिष्क में स्थित होती है। यह अन्य प्रणालीविहीन ग्रन्थियों के कार्यों पर नियन्त्रण रखती है। यदि यह ग्रन्थि व्यक्ति के बाल्यकाल में ही सक्रिय हो जाती तो वह लम्बा हो जाता है। उसका स्वभाव आक्रामक (Aggressive) एवं झगड़ालू हो जाता है। इसके साथ-उसके यौन-अंग (Sex-organs) उसकी आयु से पहले विकसित हो जाते हैं। अगर यह ग्रन्थि कम सक्रिय रहती है तो उसका शारीरिक एवं यौन विकास उचित रूप से नहीं हो पाता है। साथ ही साथ वह डरपोक एवं कायर हो जाता है इस प्रकार व्यक्तित्व के निर्माण में इस ग्रन्थि का बहुत प्रभाव पड़ता है।

(४) उपवृक्क ग्रन्थि (Adernal Gland)---इस ग्रन्थि के बाह्य एवं आन्तरिक दो भाग होते हैं। अगर इस ग्रन्थि का बाह्य भाग आवश्यकता से कम सक्रिय रहता है तो व्यक्ति चिड़चिड़ा, उदास एवं कमजोर हो जाया करता है। वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिस्थिति से सामंजस्य स्थापित करने में असमर्थ हो जाता है। परन्तु यदि वह भाग अधिक सक्रिय रहता है तो व्यक्ति में उपरोक्त दोष नहीं आने पाते। अगर इस ग्रन्थि का आन्तरिक भाग आवश्यकता से कम क्रियाशील रहता है तो वह संवेगात्मक परिस्थितियों (Emotional Situations) से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है परन्तु जब यह भाग अधिक क्रियाशील हो जाता है तो वह बहुत ही सक्रिय एवं उत्तेजित हो जाता है।

(४) यौन अथवा प्रजनन ग्रन्थियां (Sex-Clands)—यौन अथवा प्रजनन ग्रन्थियों व्यक्ति की यौन सम्वंधी विशेषताओं को निश्चित करती हैं। वुडवर्थ का कथन है कि "पुरुष हार्मोन्स (Male Hormones) पुरुषत्व की दिशा में विकास करते हैं, स्त्री-हार्मोन्स (Female-Hormones) स्त्रीत्व की दिशा में। यौन ग्रन्थियों के हार्मोन्स के अभाव में किसी भी लिंग का व्यक्ति प्रमुख स्त्री-पुरुष लक्षणों से रहित तटस्थ नमूने के रूप में विकसित होता है।"

"The male harmones steers development in the direction of masculinity, the feminine hormones in the birection of femininity. Lacking the gonadal hormones, the individual of either sex-develops into rather a neutral specimen without strong sex characteristics." **—Woodworth.**

[२] शारीरिक रचना तथा स्वास्थ्य
(Bodily Construction and Health)

प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में उनकी शारीरिक रचना एवं स्वास्थ्य का वहुत प्रभाव पड़ता है। यदि किसी व्यक्ति की शरीर रचना सुन्दर एवं आकर्षक है एवं उसका स्वास्थ्य भी अच्छा है तो उसमें श्रेष्ठ भाव (Feeling) एवं आत्म-विश्वास (Self-confidence) के महान गुण उदय हो जायेंगे। इसके विपरीत जिन व्यक्तियों की शरीर रचना कुरूप एवं भद्दी होती है, साथ ही साथ स्वास्थ्य भी खराब होता है तो उनमें हीनता की भावना ग्रन्थि (Complex of Inferiority) के विकास की सम्भावना रहती है।

[३] स्नायु मण्डल (Nervous System)

प्रत्येक व्यक्ति को स्नायु मण्डल (Nervous System) जन्म से प्राप्त हो जाता है। जिस व्यक्ति का जितना अधिक स्नायु मण्डल सुव्यवस्थित रूप से विकसित हो जायगा उस व्यक्ति का व्यक्तित्व उतना ही अच्छा होगा क्योंकि स्नायु मण्डल के विकसित होने से समस्त मानसिक क्रियायें (Mental Processes) सुचारु रूप से चलती हैं। इसके विपरीत जिन व्यक्तियों का स्नायुमण्डल ठीक से विकसित नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हो पाता है वे न तो ज्ञानार्जन ही कर पाते हैं और न वातावरण से अभियोजन (Adjustment) ही ठीक से कर पाते हैं। दूसरे शब्दों में जिन व्यक्तियों के स्नायु मण्डल का विकास नहीं हो पाता है उनका व्यक्तित्व विकास (Personality Development) अच्छा नहीं होता है।

[४] मूल प्रवृत्तियाँ अथवा प्रेरक (Instincts or Motives)

बालक जब जन्म लेता है तो उसमें कुछ मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts) अथवा प्रेरक (Motives) निहित रहते हैं, जो कि उसके व्यवहार को परिचालित करते हैं। परिणामस्वरूप समाज के बीच उसके व्यक्तित्व का क्रमशः विकास हो जाता है।

[५] कुछ अन्य शक्तियाँ (Some Other Powers)

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त बालक को वंशानुक्रम (Heredity) से निम्न सामग्रियाँ अथवा शक्तियाँ प्राप्त होती हैं—(१) बुद्धि (Intelligence), (२) प्रतिक्षेत्र क्रियायें (Reflex Actions), (३) संवेग (Emotion), (४) क्षमता (Capacity), (५) आंतरिक भाव (Temperament), (६) सामान्य स्वाभाविक प्रवृतियाँ (General Innate Tendencies)। इन्हीं समस्त शक्तियों के आधार पर बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है। इस प्रकार आगवर्न एवं निमकाफ के शब्दों में "वंशानुक्रम शिशुपात्रों को उस मञ्च पर प्रस्तुत करता है जिसको भौतिक वातावरण, समाज एवं संस्कृति ने नियुक्ति किया है। अब नाटकीय कार्य का प्रारम्भ होता है, एवं नवागन्तुक शिशु को क्रमशः सामाजिक व्यक्ति में परिवर्तित किया जाता है।"

"Biological heredity ushers infants on the stage which physical environment, the group, and culture have set. The dramatic actions now begin and new born boby is gradually transformed into social person." —**Ogburn and Nimkoff.**

भौतिक वातावरण का प्रभाव

(Influence of Physical Environment)

व्यक्ति के व्यक्तित्व पर भौतिक अथवा भौगोलिक वातावरण का प्रभाव—

व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में भौतिक वातावरण (Physical Fnvironment) का भी बहुत प्रभाव पड़ता है। जिस जगह की प्रकृति सम्पन्न एवं जलवायु ठंडी होती है वहाँ के लोग सुन्दर, स्वस्थ, परिश्रमी एवं बुद्धिमान होते हैं, इसके विपरीत जहाँ पर आवश्यकता से अधिक गर्मी पड़ती है वहाँ के लोग अस्वस्थ, आलसी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काले एवं बुद्धिहीन होते हैं। इस तरह से आगबर्न एवं निमकॉफ के शब्दों में "व्यक्तित्व के विकास में भौतिक अथवा प्राकृतिक वातावरण को नहीं छोड़ा जा सकता है"

"Natural environment cannot be left out on account as an influence upon personality." **—Ogburn and Nimkoff.**

सामाजिक वातावरण का प्रभाव
(Influence of Social Environment)

व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले सामाजिक वातावरणीय कारण निम्नलिखित हैं—

(१) माता-पिता का प्रभाव (Influence of Parents)—असह पीड़ा के उपरान्त जब मां अपने नवागन्तुक शिशु को प्राप्त कर लेती है तो वह न केवल अपनी पीड़ा को ही भूल जाती है वरन् अपने शिशु के सुख के लिए आंखों की पलकें बिछाने का प्रयास करती है। बालक की जो-जो आवश्यकतायें (Needs) होती हैं उन्हें उसके माता-पिता दोनों तन-मन धन से पूरा करने का प्रयास करते हैं। बालक के माता-पिता का जैसा स्वभाव, चरित्र, व्यवहार एवं पारस्परिक सम्बन्ध होता है उसी प्रकार बालक के व्यक्तित्व का विकास होता है।

(२) पारिवारिक सम्बन्ध (Family Relationship)—माता-पिता के अतिरिक्त बालक पर अन्य पारिवारिक सदस्यों का भी विशेष प्रभाव पड़ता है। यदि परिवार के समस्त सदस्य परिश्रमी, चरित्रवान्, बुद्धिमान एवं मिलजुल कर रहने वाले होते हैं तो बालक के व्यक्तित्व में वांछित गुणों का विकास होता है और यदि इन गुणों का अभाव होता है तो बालक के व्यक्तित्व में नाना प्रकार के अवगुण विकसित हो जाते हैं।

(३) पड़ोसी (Neighbours)—बालक जब कुछ बड़ा हो जाता है तो उसका पड़ोसियों से भी सम्पर्क हो जाता है। अगर पड़ोसी अच्छे होते हैं तो बालक के व्यक्तित्व में भी अच्छे ही गुण विकसित हो जाते हैं अन्यथा नहीं।

(४) इकलौता बच्चा (The Only Son)—प्रायः यह देखा जाता है कि यदि कोई बालक अपने माता-पिता की एक मात्र सन्तान है तो उसको अपने माता-पिता का अनाप-शनाप लाड़-प्यार प्राप्त होता है। परिणामस्वरूप बालक परावलम्वी हठी एवं असामाजिक हो जाता है। अतः प्रत्येक माता-पिता का कर्तव्य है कि वे अपनी एक मात्र सन्तान का लालन-पालन संतुलित ढंग से करें।

(५) बालक का अपने गिरोह में कार्य (The Role of the Child in the Gang) शिशु जब बाल्यावस्था (Childhood) में प्रवेश करता है तो वह खेलने के लिए अनेक साथी बना लेता है। इस तरह अनेक साथियों का जो एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गिरोह बनता है उसमें जो बालक स्वस्थ एवं साहसी प्रकृति का होता है वह उस गिरोह के समस्त बालकों का नेतृत्व करने लगता है एवं अन्य सब उसके अनुगामी बन जाते हैं। परिणामस्वरूप जब नेतृत्व करने वाला बालक बड़ा हो जाता है तो उसमें आत्म-विश्वास, अदम्य साहस, नेतृत्व, आत्म-निर्भरता आदि सामाजिक गुणों की अभिवृद्धि हो जाती है।

(६) शिक्षालय (School)—जिस प्रकार बालक के व्यक्तित्व के निर्माण में उसके परिवार का विशेष महत्व है उसी प्रकार शिक्षालय (School) भी बालक के व्यक्तित्व के विकास का महत्वपूर्ण कारक है। यदि शिक्षालय का वातावरण, अन्य विद्यार्थी एवं शिक्षक अच्छे होते हैं तो बालक में वांछित, सामाजिक एवं नैतिक गुणों की अभिवृद्धि होती है।

(७) पुस्तकें एवं तस्वीरें (Books and Pictures)—बालक पुस्तकों एवं तस्वीरों द्वारा ज्ञानार्जन करते हैं। परिणामस्वरूप इनका उनके व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यदि बालक को अच्छी पुस्तकें पढ़ने को मिलती हैं एवं अच्छे चित्र देखने को मिलते हैं तो उनके व्यक्तित्व में अच्छे गुणों की अभिवृद्धि हो जाती है।

(८) क्लब एवं चलचित्र (Club and Cinema)—बालक के व्यक्तित्व को प्रभावित करने में क्लबों एवं चलचित्रों का भी विशेष महत्व है क्योंकि उनके द्वारा वे केवल मनोरंजन ही प्राप्त नहीं करते हैं वरन् अपना शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास भी करते हैं।

(९) मेला (Fair)—जब बालक छोटा होता है तो वह अपने माता-पिता के साथ मेला देखने जाता है। मेले में उसे नाना प्रकार की अच्छी-अच्छी चीजें देखने को मिलती हैं जिससे कि बालक को अनेक वस्तुओं से परिचित होने का अवसर मिलता है।

(१०) मन्दिर एवं चर्च (Temple and Church)—बालको के व्यक्तित्व के विकास में मन्दिर एवं चर्च भी बहुत प्रभाव डालते हैं। बालक जब किशोरावस्था में प्रवेश करता है तो वह मन्दिर अथवा चर्च में जाकर पूजा करता है एवं नाना प्रकार के प्रवचन सुनता है जिससे कि उसके व्यक्तित्व का वांछित दिशा की ओर विकास होता है।

(११) जीवन लक्ष्य का प्रभाव (Influence of Life-Goal)—ज्यों ज्यों बालक का जीवन क्षेत्र बढ़ता जाता है त्यों-त्यों उस पर नाना प्रकार की वस्तुयें प्रभाव डालने लगती हैं और जब वह प्रौढ़ावस्था को प्राप्त कर लेता है तो वह अनेक स्थानों को जाता है, नाना प्रकार की संस्कृतियों में पले हुये व्यक्तियों से मिलता है परिणामस्वरूप उसका मानसिक एवं सामाजिक विकास हो जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१२) आर्थिक व्यवस्था (Economical Condition)—बालक के परिवार की जैसी आर्थिक व्यवस्था होती हैं वैसा ही उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। प्रायः गरीव परिवार के वालकों में हीनत्व एवं असुरक्षित भाव विकसित हो जाते हैं। परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व का विकास उचित रूप से नहीं हो पाता है। इसके विपरीत धनी परिवार के वालकों को खाने-पीने के लिये पौष्टिक भोजन मिलता है, पढ़ने के लिये अच्छा अवसर मिलता है फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व का अच्छा विकास होता है। हाँ यह वात अवश्य है कि यदि इन वालकों को उचित मार्गोपदेशन (Guidence) न मिले तो इनके भी व्यक्तित्व का विकास उचित रूप से न हो सकेगा। इसी प्रकार यदि गरीव लोगों के वालकों को उचित मार्गोपदेशन मिल जाय तो वे भी अपने व्यक्तित्व का उचित विकास कर सकते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि बालक के व्यक्तित्व का विकास सामाजिक वातावरण में हो उचित रूप से होता है। जार्ज मीड के शब्दों में, "अहं जो कि अपने आप ही कर्म बन जाता है आवश्यक रूप से एक सामाजिक ढाँचा है और यह सामाजिक ढाँचा सामाजिक अनुभव पर खड़ा है।"

"The self, as that which can be object to itself, is essentially a social structure and it arises in social experience."

—George Medd.

सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव
(Influence of Cultural Environment)

संस्कृति व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्वरूप निश्चित करती है

बालक जिस प्रकार की संस्कृति में पला होता है उसका व्यक्तित्व उसी प्रकार का हो जाता है। यह समझने के लिये हम संस्कृति को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं भौतिक संस्कृति अथवा सभ्यता एवं अभौतिक संस्कृति या संस्कृति (Material Culture or Culture)। भौतिक संस्कृति के अन्तर्गत मान लीजिये जिस देश में घड़ियों का आविष्कार हो जाता है तो वहाँ के लोग नियमानुसार अपना जीवन विताने लगते है। इस प्रकार अभौतिक संस्कृति जिसके अन्तर्गत उन रीतियाँ (Folkways), रूढ़ियाँ (Mores), प्रथायें (Customs')' सस्थायें (Institutions) सम्मिलित हैं, का भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिये जिस संस्कृति में पति-सेवा का महत्वपूर्ण स्थान है वहाँ की स्त्रियाँ पति की आज्ञा का पालन करना एवं सेवा करना आवश्यक कर्त्तव्य समझती हैं। इस प्रकार आगवर्न एवं निमकाफ के शब्दों में "सामूहिक जीवन सामान्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्बन्धों को निश्चित करता है, दूसरी तरफ संस्कृति विशिष्ट मूर्त गुणों को निश्चित करती है ।।"

"Grouplife consists of a set of general relationship, culture on the contrary consists of concrete specific traits."

—**Ogburn and Nimkoff.**

उपसहार (Conclusion)

सारांश यह है कि व्यक्तित्व व्यक्ति की जन्मजात (Inborn) एवं अर्जित (Acquired) दोनों प्रकार की विलक्षणताओं अथवा आन्तरिक (Internal) एवं वाह्य (External) दोनों पहलुओं का गत्यात्मक (Dynamic) समन्वय अथवा संगठन (Integration) है। व्यक्तित्व के प्रमुख तत्व हैं—(१) शारीरिक (२) मानसिक तत्व-ज्ञान इच्छा क्रिया (३) सामाजिक तत्व एवं (४) सशक्तता अथवा दृढ़ता। व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले वंशानुक्रम (Heredity) एवं वातावरण (Environment) मुख्य तत्व हैं। व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए बोरिंग लैंग फील्ड एवं वील्ड ने लिखा हैं, "व्यक्तित्व का नाटक शैशवावस्था से एकान्त वृद्धावस्था तक एक ही समान व्यापक ढंग से दृष्टिगत होता है। आवश्यकताओं, निराशाओं और संघर्षों से निपटने का प्रयत्न करने पर शिक्षण प्रक्रियाओं का उदय होता है उन्हीं से मनुष्य अपने व्यक्तित्व के लक्षण अर्जित करता है।"

"The dream of personality has the same broad pattern from the nursing infant to the lonely senile person. It consists of making adjustment to needs, frustrations and conflicts which give rise to learning processes by which the individual acquires the characteristics of his personality."

—**Boring Langfield and Weld.**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४३

व्यक्तित्व-प्रकार एवं व्यक्तित्व की मापन-विधियां

[Types and Methods of Assessment of Personalty]

प्रश्न-संख्या—४३

व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से है ? व्यक्तित्व मापन की प्रमुख विधियों की विवेचना कीजिए ।

What are the various types of person ality ? Describe the important methods of assess ment of personality.

भूमिका (Introduction)

हम देखते हैं कि विश्व में कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसे हम कह सकें कि वह अमुक व्यक्ति से पूर्ण रूपेण मिलता जुलता है । दूसरे शब्दों में व्यक्ति-व्यक्ति में भेद होता है । परन्तु यह भेद होते हुए भी व्यक्तियों के स्वभाव में समानता निहित होती है । विभिन्नता में स्थिति इस समानता को मनोवैज्ञानिक भाषा में **प्ररूप अथवा टाइप (Type)** कहते हैं । इसी आधार पर विश्व के अनेक विचारकों ने अनेक प्रकार के व्यक्तित्व बतलाये हैं । यूनान के प्रसिद्ध विद्वान् अरस्तू (**Aristotle**) ने विश्व के समस्त व्यक्तियों को ४ प्ररूपों (**Types**) में बांटा है (१) मैलेन्कालिक (**Melancholic**) (२) सैंगोइन (**Sanguine**), (३) कोलरिक (**Choleric**) एवं (४) फ्लेगमैटिक (**Phelegmatic**) । इसी प्रकार भारतीय आचार्यों एवं मनोवैज्ञानिकों ने तीन प्रकार के प्ररूप बतलाये हैं–(१) राजसी (२) सात्विक एवं (३) तामसी । अब हम वर्तमान काल में जो मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के प्रकार (**Kinds of Personality**) एवं व्यक्तित्व मापन की विधियां (**Methods of Assessment of Petsonalitiy**) प्रस्तुत की हैं उनका अब वर्णन करेंगे ।

व्यक्तित्व के प्रकार

(Kinds of Personality)

व्यक्तित्व के प्रमुख प्रकार—निम्नलिखित हैं:—

(१) क्रिया प्रधान व्यक्तित्व (**Man of Action**)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) भाव प्रधान व्यक्तिगत (Man of Feeling)

(२) विचार प्रधान व्यक्तित्व (Man of Thought)

क्रिया प्रधान व्यक्तित्व (Man of Action)

मैंनेजर, कलाकार, सैनिक, पहलवान खिलाड़ी आदि

जिन व्यक्तियों का क्रिया-प्रधान व्यक्तित्व होता है उनकी रचनात्मक कार्य करने की अधिक प्रवृत्ति होती है। प्रायः ऐसे व्यक्ति पढ़ने में तो विशेष कुशल नहीं होते हैं परन्तु वे हाथ से नाना प्रकार के महत्वपूर्ण एवं व्यवस्था सम्बन्धी कार्यों को करने में दक्ष होते हैं। कलाकार, मैंनेजर, पहलवान, सैनिक, खिलाड़ी, इंजीनियर आदि का क्रिया प्रधान व्यक्तित्व हुआ करता है।

भाव प्रधान व्यक्तित्व (Man of Feeling)

भाव प्रधान व्यक्तित्व निम्न प्रकार होते हैं

(१) प्रफुल्ल (Elated)—कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो हमेशा प्रसन्न रहते हैं इनकी प्रकृति आशावादी (Optimistic) हुआ करती है। ये व्यर्थ में किसी बात पर विचार करना पसन्द नहीं करते हैं।

(२) चिड़चिड़े (Irritable)—चिड़चिड़े स्वभाव वाले व्यक्ति थोड़ी सी बात पर गुस्सा हो जाते हैं और थोड़ी सी बात पर दुखी भी। प्रायः ऐसे व्यक्ति थोड़ी सी बात पर झगड़ा करने में उतारू हो जाते हैं।

(३) अस्थिर (Unstable)—प्रायः जो अस्थिर स्वभाव के व्यक्ति होते हैं उनका मिजाज परखना मुश्किल हो जाता है क्योंकि वे थोड़ी देर में तो प्रसन्न हो जाते हैं और थोड़ी देर में दुखी, कभी यह विचार करते हैं तो कभी वह, कभी यह योजना बनाते हैं तो कभी वह। इस प्रकार ऐसे व्यक्ति अपने को नियन्त्रित नहीं कर पाते हैं।

(४) उदास (Depressed)—उदास व्यक्ति वे व्यक्ति हैं जो सर्वदा दुःख में रहा करते हैं। प्रायः वह निराशावादी (Pessimistic) प्रकृति के हुआ करते हैं। वे थोड़ी सी बात पर घण्टों सोचा करते हैं।

विचार प्रधान व्यक्तित्व (Man of Thinking)

विचार-प्रधान व्यक्तियों का अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अग्रलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया है—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[१] वारनर द्वारा वर्गीकरण-शारीरिक दृष्टि से

(१) स्वस्थ, (Normal), (२) अविकसित (Physically Undeveloped), (३) अपरिपुष्ट (With Low Nutrition), (४) स्नायविक (Nervous) (५) अंगरहित (Crippled) (६) सुस्त एवं पिछड़ा हुआ (Dull and Backward), (७) चालाक (Mentally Exceptional) (८) मन्द बुद्धि (Mentally Feeble) (९) मृगीग्रस्त (With Histroy of Fits) एवं (१०) स्नायु रोगी (With abnormal Nerve Signs)

[२] थार्नडाइक (Thorndike) द्वारा वर्गीकरण-विचार एवं कल्पना की दृष्टि से

(१) सूक्ष्म विचारक (Abstract Thinkers) (२) प्रत्यय विचारक (Idea Thinkers) एवं (३) स्थूल विचारक (Thing Thinkers)।

[३] टरमैन (Terman) का वर्गीकरण-बुद्धि लब्धि की दृष्टि से

(१) अति प्रतिभा शाली (Supreme Genious) (२) प्रतिभाशाली (Genious) (३) अत्युत्कृष्ट (Very Superior) (४) उत्कृष्ट (Supperior) (५) साधारण (Normal) (६) मन्द बुद्धि (Dull) (७) निर्वल बुद्धि (Boarder line) (८) हीन बुद्धि (Feeble-minded) (९) मूर्ख (Moron) (१०) मूढ़ (Imbecile) एवं (११) जड़ (Idiot)।

[४] स्पैन्गर (Spenger) द्वारा वर्गीकरण मूल्यों की दृष्टि से

(१) ज्ञानात्मक (Cognitive) (२) सौन्दर्यात्मक (Aesthetic) (३) आर्थिक (Economic) (४) धार्मिक (Religious) (५) राजनैतिक (Political) एवं (६) सामाजिक (Social)।

[५] क्रैश्मर (Kretschmer) द्वारा वर्गीकरण-शारीरिक रचना की दृष्टि से

क्रेश्मर महोदय ने अपनी पुस्तक 'Physique and Character' में शारीरिक रचना दृष्टि से व्यवितत्व के अग्रलिखित चार प्रकार वतलाए हैं—(१) पिक्निक (Pyknic)—छोटा, मोटा, चिकना, आराम प्रिय, सामाजिक उत्माद-विषाद युक्त (२) ऐथेलैटिक (Athletic)—सुडौल, तन्दुरुस्त, व्यवहार में कुशल सामाजिक, क्रियाशील, (३) ऐस्थेनिक (Asthenic)—दुवले पतले, लम्बे, अन्तर्मुखी, स्वप्न देखने वाले, भावुक, एकान्त प्रिय, अनुत्साही, (४) डिस्लैस्टिक (Dysplastic)—मिश्रित गुण वाले।

[६] शैल्डन (Sheldon) शारीरिक रचना तथा स्वाभाव की दृष्टि से

शैल्डन ने अपनी पुस्तक 'The Varieties of Temperament' में शारीरिक रचना तथा स्वभाव की दृष्टि से व्यतितत्व के अग्रलिखित प्रकार वताये हैं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[अ] शारीरिक दृष्टि से—एन्डोमेर्फिक (Endomorphic)—पेट बड़ा, पाचन क्रिया सम्बन्धी अंतड़ियाँ न्यूनाधिक विकसित, पिकनिक प्रकार का व्यक्तित्व-(२) मेसोमार्फिक (Mesomorphic)—हड्डियाँ तथा मांसपेशियाँ अधिक विकसित ऐथलेटिक प्रकार का व्यक्तित्व। (३) एक्टोमार्फिक (Ectomorphic)—हड्डियाँ लम्बी, कोमल, कमज़ोर शरीर, ऐस्थेनिक प्रकार का व्यक्तित्व।

[ब] स्वभाव की दृष्टि से—शारीरिक रचना के उपर्युक्त वर्गीकरण से सम्बन्धित शैल्डन ने स्वभाव के अनुसार अग्रलिखित तीन प्रकार के व्यक्तित्व बतलाये—(१) विसेरोटोनिक (Viscerotonic)-आराम पसंद, भोजन प्रिय, प्यार पाने का इच्छुक। (२) सोमेटोटोनिक (Somatotonic)—स्पष्टभाषी, कर्मठ, प्रतियोगी, शक्तिशाली, साहसी, अधिकार-प्रिय, जोर से बोलने वाला। (३) सेरीब्रोटोनिक (Cerebrotonic)-संकोचशील, संयमी, संवेदनशील, एकान्तप्रिय, धीरे-धीरे बोलने वाला, अच्छी नींद न आना।

[७] युंग (Jung) का वर्गीकरण—सामाजिकता की दृष्टि से तालिका द्वारा स्पष्टीकरण

सामाजिक गुण (Sociability)

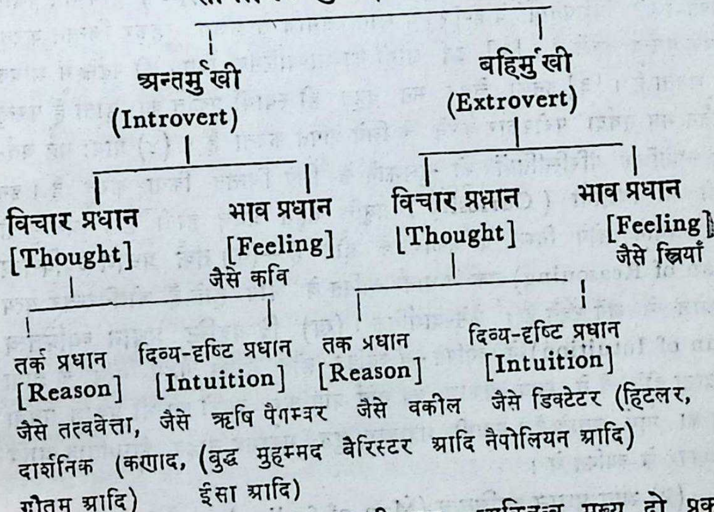

उपरोक्त तालिका का स्पष्टीकरण—व्यक्तित्व मुख्य दो प्रकार के होते हैं—

(१) अन्तर्मुखी व्यक्तित्व (Introvert Personality)

(२) बहिर्मुखी व्यक्तित्व (Extrovert Personality)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
(Introvert Personality)

[अ] अन्तर्मुखी व्यक्तितत्व का अर्थ
(Meaning of Introvert Personality)—

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व उन व्यक्तित्वों का होता है जो सर्वदा अपने आप में ही खोए रहते हैं। दूसरे शब्दों में ये आत्म केन्द्रित (Self-centred) होते हैं। इनकी निम्न विशेषताएँ होती हैं-(१) ये लज्जाशील होते हैं। ये समाज के मध्य में रहना पसन्द नहीं करते हैं, (३) इनको हँसी-मजाक करना पसन्द नहीं होता है, (४) ये दूसरों को प्रसन्न रखने का प्रयास नहीं करते हैं, एवं (५) प्रायः ये व्यावहारिक जीवन में कम कुशल होते हैं।

[त] अन्तर्मुखी व्यक्तितत्व के प्रकार
(Meaning of Extrovert Personality)

(१) **विचार प्रधान व्यक्तित्व (Thinking Type)**—विचार प्रधान व्यक्तियों की विशेषतायें ये हैं-[१] ये लोग समाज से अलग रहकर चिन्तन करना अधिक पसन्द करते हैं। [२] इन लागों का आध्यात्मिक विषय को पढ़ने में अधिक मन लगता है। [३] इनका चेतन मन बहुत ही स्वार्थी प्रकृति का होता है परन्तु अचेतन मन सर्वदा परोपकार करने के लिये प्रेषित करता है। (४) प्रायः यह वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों को सुलझाने के लिये चिन्तन किया करते है। इन लोगों की जिज्ञासा (Curiosity) प्रवृत्ति वहुत प्रवल होती है। अन्तर्मुखी विचार प्रधान लोग निम्न दो प्रकार के होते हैं—(क) **तर्क प्रधान व्यक्तितत्व (Man of Reasoning)**-तर्क प्रधान व्यक्ति वे लोग होते हैं जो निरन्तर सत्य की खोज में लगे रहते हैं। जैसे-दार्शनिक। (ख) **दिव्यदृष्टि प्रधान व्यक्तितत्व (Man of Intuition)**-ये व्यक्ति वे व्यक्ति होते हैं जो परम सत्य के ज्ञाता एवं द्रष्टा होते हैं ये स्वयं प्रकाश का मार्ग प्राप्त कर दूसरों को भी प्रकाश अथवा मुक्ति का मार्ग वताते हैं। स्वामी महावीर, बुद्ध, मुहम्मद साहब, ईशामसीह आदि इसी प्रकार के व्यक्ति थे।

(२) **भाव प्रधान व्यक्तितत्व (Man of feeling)**--अन्तर्मुखी भाव प्रधान व्यक्तियो की निम्न विशेशतायें हैं—(१) ये व्यक्ति निराशावादी एवं अस्थिर होते हैं, (२) प्रायः इन्हें संसार में दुःख ही दुख प्रतीत होता है, (३) प्रायः ये व्यवहार में कम कुशल होते हैं। परिणामस्वरूप इन्हें जीवन पर्यन्त तकलीफों का सामना करना पड़ता है, (४) ये अपने पारिवारिक जीवन से असन्तुष्ट रहते हैं, (५) प्रायः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ये झक्की स्वभाव के होते हैं। अन्तमुखीभावप्रधान व्यक्ति दो प्रकार के होते हैं। [क] तर्क प्रधान व्यक्ति [Man Reasoning] इस प्रकार के व्यक्तियों के अन्तर्गत उन व्यक्तियों को रक्खा जाता है जो तार्किक दृष्टिकोण से अपने विचारों का प्रदर्शन करते हैं। [ख] दिव्य दृष्टि प्रधान व्यक्ति [Man of Intuition]–इस प्रकार के व्यक्तियों के अन्तर्गत महान पुरुष होते हैं जो स्वयं सत्य को पहचान कर संसार को सत्य का मार्ग प्रदर्शित करते हैं।

बहिर्मुखी व्यक्तित्व
(Extrovert Personality)

[ब] बहिर्मुखी व्यक्तितत्व का अर्थ
(Meaning of Extrovert Personality)

बहिर्मुखी व्यक्तितत्व उन व्यक्तियों का होता है जो हमेशा समाज के कार्यों में प्रत्यक्ष रूप से भाग लेने का प्रयास करते हैं। इन की निम्न विशेषताएँ हैं—(१)व्यावहारिक जीवन में कुशल होते हैं, (२) ये हमेशा साथियों के बीच में रहने का प्रयास करते हैं, (३) ये आशावादी प्राकृति के होते हैं, (४) ये हमेशा अपने द्वारा दूसरों को खुश करने का प्रयास करते हैं, तथा (५) प्राय: ये अपनी वेश-भूषा, चाल-ढाल एवं योग्यता से दूसरों के ऊपर रुआव जमाना अपना मुख्य धर्म समझते हैं।

[ब] बहिर्मुखी व्यक्तितत्व के प्रकार
(Kinds of Extrovert Personality)

(१) **विचार प्रधान व्यक्तितत्व** (Man of Reasoning) :—इन व्यक्तियों की निम्न विशेषताएं होती हैं :-(१) इनका चेतन मन स्वार्थरहित होता है परन्तु अचेतन मन वहुत ही स्वार्थी होता है, (२) प्राय: ये लोग व्यवहार कुशल होते हैं फलस्वरूप जीवन पर्यन्त सुखमय जीवन विताने का अवसर प्राप्त कर लेते हैं, (३) इन लोगों की प्रवन्धक एवं शिक्षक के पद में आसीन होने की तीव्र इच्छा होती है, (४) ये व्यक्ति इसी संसार को ही अपना सब कुछ समझते हैं, (५) ये लोग वातावरण में शीघ्र ही अभि-योजन (Adjustment) कर लेते हैं,। **बहिर्मुखी** विचार प्रधान व्यक्ति निम्न दो प्रकार के होते हैं (क) तर्क **प्रधान** व्यक्ति (Man of Reasoning) :—ये इस प्रकार के व्यक्ति हैं जो तार्किक ढंग से अपना जीवन यापन करते हैं। डाक्टर, वकील, वैरिस्टर, आदि इस प्रकार के व्यक्ति होते हैं। (ख) **दिव्य दृष्टि प्रधान व्यक्ति** (Man of Feeling) :—इन व्यक्तियों के अन्तर्गत वे व्यक्ति आते हैं जो तर्क करना व्यर्थ समझते हैं। प्राय: ये अपनी नीति को वताने में समर्थ होते हैं। ये नाना प्रकार के अच्छे-अच्छे कार्य करते हैं। नैपोलियन, हिटलर आदि इसी कोटि के व्यक्ति थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) **भाव प्रधान व्यक्ति (Man of Feeling)** :—इनकी निम्न विशेषताएं होती हैं :—(१) इस प्रकार के व्यक्ति कल्पना प्रधान अधिक होते हैं, (२) इनका चेतन मन स्वार्थ से परे होता है परन्तु अचेतन मन बहुत ही स्वार्थी होता है, (३) ये अपने किसी विचार का निर्णय भावों के आधार पर देते हैं, (४) ये परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं जो दया, क्रोध एवं करुणा के भण्डार होते हैं। प्रायः किशोर बालक नए-नए कवि एवं साहित्यकार इसी प्रकार के होते हैं।

व्यक्तित्व के प्रकारों के सम्बन्ध में निष्कर्ष [Conclusion about the Types of Personality]

ऊपर हमने जो विभिन्न लोगों द्वारा दिए गए व्यक्तित्व के प्रकार स्पष्ट किए हैं इनसे हमें यह न समझ लेना चाहिए कि विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के एक बीच अमिट रेखा खिंची हुई है वरन् हमें यह न समझना चाहिये कि एक व्यक्ति जो अन्तर्मुखी प्रवृत्ति का है वह कुछ दिन के उपरान्त परिस्थितियों के अनुकूल होने पर बहिर्मुखी प्रवृत्ति का हो सकता है। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक युंग [Jung] ने अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी व्यक्तियों के अलावा यह बतलाया है कि प्रायः व्यक्ति उभयमुखी (Ambivert) अर्थात् अन्तर्मुखी एवं बहिर्मुखी के बीच होते हैं। अन्त में हमें रास के विचारों से सहमत होना वांछनीय प्रतीत होता है। उन्होंने लिखा है—**"यह संभव है कि हम अपनी प्रारम्भिक जीवन ऐसी प्रवृत्ति से प्रारम्भ करें कि वह किसी एक अथवा दूसरी दिशा की ओर बढ़ने लगे किन्तु जीवन की परिस्थितियाँ विशेष रूप से प्रारम्भकाल में हमारी ऐसी मूल प्रवृति को सरलता से मोड़ सकती है। अच्छी शिक्षा का उद्देश्य यह होगा कि यह दो में किसी एक प्रकार के अति विकास को रोकने का उद्देश्य रखें।"**

"It is probable that we begin our lives with a tendency in the one direction or the other but the circumstances of life, particularly in early years, may easily modify our original nature in this respect. A wise education will aim at preventing extreme development of either type."

—J. S. Ross

व्यक्तित्व के मापन की विधियां

(Methods of Assessment of Personality)

[१] व्यक्ति इतिहास विधि (Case-History Method)

व्यक्तित्व मापन की व्यक्ति इतिहास पद्धति वह पद्धति है जिसमें के व्यक्ति तत्पश्चात् उसके माता-पिता भाई-बन्धु, मित्र, सम्बन्धी. पड़ोसी आदि से उसके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अतीत जीवन के सम्बन्ध में नाना प्रकार के प्रश्न पूछ कर इतिहास निर्मित किया जाता है। जिस इतिहास को देखकर यह पता लगाया जाता है कि आखिर व्यक्ति की कौन-कौन आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो सकी है, वह अपने वातावरण से अभियोजन करने में असमर्थ है अथवा नहीं, उसने अमुक व्यवहार किन-किन कारणों से किया है आदि। प्रायः इस पद्धति द्वारा अपराधी वालकों या व्यक्तियों के व्यक्तिगत्व को समझने का प्रयास किया जाता है।

[२] साक्षात्कार विधि (Interview Method)

प्रायः जब वालकों को किसी पद में नियुक्त किया जाता है तो इसके पहले साक्षात्कार विधि द्वारा उनके व्यक्तित्व का पता लगाया जाता है। इसमें मनोवैज्ञानिक एवं जिस क्षेत्र में वालकों की नियुक्ति होती है उनमें दक्षता-प्राप्त लोग वालकों के सामान्य ज्ञान (General Knowledge) सम्बन्धी प्रश्न पूछ कर उनके व्यक्तित्व का अध्ययन करते हैं।

[३] प्रश्नावली विधि (Questionaire Method)

इस विधि को क्रियान्वित करने के पूर्व व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों से सम्बन्धित कुछ प्रश्न तैयार कर लिये जाते हैं और इस विधि का उपयोग होता है तो वालकों को इनका उत्तर 'हाँ' (Yes) अथवा 'न' (No) में देना पड़ता है। प्रायः इस पद्धति को सामूहिक रूप से प्रयोग किया जाता है। वालकों को छपे हुये प्रश्नों की एक सूची दे दी जाती है और वालक इन समस्त प्रश्नों का उत्तर 'हाँ' या 'न' में लिखते हैं। उदाहरण के लिये यदि हमें यह जानना है कि कौन वालक अन्तर्मुखी प्रकृति का है और कौन वालक वहिर्मुखी प्रकृति का। तो यह जानने के लिये वालकों से निम्न प्रश्नों का उत्तर देने के लिये कहा जा सकता है :—

(१) क्या आप शीघ्र ही घबड़ा जाते हैं ?

(२) क्या आप अपने विषय में अधिक चिन्तित रहते हैं ?

(३) क्या आप आसानी से मित्र बना सकते हैं ?

(४) क्या आप दूसरों से बात-चीत करना पसन्द करते हैं ?

यदि व्यक्ति प्रथम दो प्रश्नों का स्वीकारात्मक उत्तर देता है तो वह अन्तर्मुखी प्रकृति का व्यक्ति माना जायगा और यदि अन्तिम दो प्रश्नों का स्वीकारात्मक उत्तर देता है तो वह वहिर्मुखी प्रकृति का माना जाता है।

[४] परिस्थिति परीक्षण पद्धति (Situation Tests Method)

इस पद्धति में यह देखा जाता है कि विशेष परिस्थिति में कोई व्यक्ति अथवा वालक किस तरह व्यवहार करता है। उदाहरण के लिए हार्टशोर्न (Hartshorne) एवं में (May) महोदयों ने वालकों की ईमानदारी की परीक्षा की जो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस प्रकार है—सर्व प्रथम एक कमरे में एक सन्दूक रख दिया गया। तत्पश्चात् वालकों से कहा गया कि तुम सब लोग कमरे में जाकर सन्दूक में कुछ पैसे रख आओ और ये पैसे गरीबों को दान कर दिये जायेंगे। जब परीक्षण प्रारम्भ हुआ तो देखा गया कि कुछ वच्चे तो पैसे रख आते हैं परन्तु कुछ ऐसे भी वच्चे थे जिन्होंने रखने के वजाय सन्दूक से कुछ पैसे निकाल लिये।

[५] व्यावहारिक परीक्षण विधि (Peformance Tests Method)

मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार की व्यावहारिक परीक्षण विधियाँ प्रस्तुत की हैं। यहाँ पर उदाहरण के रूप में हम एक व्यावहारिक परीक्षण विधि प्रस्तुत कर रहे हैं। बहुत से वालकों के व्यक्तित्व की परीक्षा लेने के लिये उन्हें एक संग्रहालय में ले जाया जाता है और उनसे परीक्षक लोग यह कहते हैं कि आप सब लोग स्वतन्त्रता पूर्वक इन संग्रहीत वस्तुओं को देख सकते हैं। परीक्षक देखते हैं कि कुछ वालक ऐसे हैं जो एक वस्तु को देखकर तुरन्त दूसरी वस्तु को देखना प्रारम्भ कर सकते हैं ये वालक वहिर्मुखी (Extrovert) प्रकृति के होते हैं। इनके साथ-साथ परीक्षक यह भी देखता है कि कुछ वालक ऐसे हैं जो एक ही वस्तु को देर तक ध्यानपूर्वक देखते रहते हैं, फिर वे दूसरी वस्तु को देखने का प्रयास करते हैं। इस दृष्टिकोण से ये वालक अन्तर्मुखी (Introvert) प्रकृति के समझे जाते हैं।

[६] मूल्यांकन विधि (Rating Method)

मूल्यांकन विधि में वालक के व्यक्तित्व के लक्षणों को जानने के लिये उसके सम्पर्क में रहने वाले व्यक्तियों से यह आग्रह किया जाता है कि वे वालक के व्यक्तित्व के अमुक लक्षण पर अपने विचार प्रकट करें। परीक्षणकर्ता वालक के जिस गुण की परीक्षा करना चाहता है उसे अनेक भागों में विभाजित कर लेता है, और मतदाता किसी भाग में निशान लगा देते हैं, उदाहरण के लिये यदि वालक की इमानदारी की परीक्षा करना है तो हम इस गुण को निम्न भागों में विभाजित कर लेते हैं।

१	२	३	४	५
पूर्ण ईमानदार	साधारण ईमानदार	औसतन ईमानदार	कुछ ईमानदार	ईमानदार

उपर्युक्त ५ भागों में जिस भाग के सबसे अधिक मत प्राप्त होते हैं वालक को उसी तरह का समझा जाता है।

व्यक्तित्व परिसूची (Personality Inventory)

व्यक्तित्व परिसूची में व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित विभिन्न परीक्षण-पद (Test Items) दिये होते हैं जिनके सम्मुख परीक्षार्थियों को 'हाँ' या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परीक्षण-पद (Test items) दिये होते हैं जिनके सम्मुख परीक्षार्थियों को 'हाँ' या 'नहीं' लिख कर या लिखे हुए 'हाँ' या 'नहीं' में 'सही' का निशान लगाकर अपने सम्वन्ध में सूचना देनी पड़ती है। इसलिए इस विधि को स्वयं द्वारा प्रस्तुत आख्या विधि (Self Reporting Method) कहते हैं। इस विधि का प्रयोग सामूहिक रूप से किया जाता है। फलस्वरूप थोड़े समय में वहुत से व्यक्तियों के व्यक्तित्व की परीक्षा हो जाती है। इसमें साक्षात्कारकर्ता तथा निर्णायकों की कोई आवश्यकता नहीं होती, साथ ही साथ व्यय भी वहुत कम होता है। इसमें सबसे बड़ा दोष यह होता है कि परीक्षार्थी परीक्षण पदों को ठीक से न समझ पाये या जान बूझ कर गलत उत्तर ही दे दें। इस तरह इस विधि में गलत सूचना मिलने की सम्भावना बनी रहती है।

[८] आत्म-प्रथा विधि (Autobiography Method)

इस विधि में परीक्षक किसी वालक अथवा व्यक्ति की परीक्षा लेने के लिए एक शीर्षक चुनता है और फिर वह वालक से कहता है कि आप इस शीर्षक को ध्यान में रखते हुए अपने जीवन से सम्बन्धित एक निवन्ध लिखिये। जब निवन्ध पूरा हो जाता है तो परीक्षक उसे अच्छी तरह से समझ कर वालक अथवा व्यक्ति के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करता है।

[९] स्वतन्त्र सम्पर्क विधि (Free Contract Method)

इस विधि के अनुसार परीक्षक वालक से मिल-जुल कर बातचीत करता है और वालक से वारम्बार कहता है कि तुम स्वतन्त्रता पूर्वक अपने विचार प्रकट कर सकते हो। वालक परीक्षक को अपना मित्र अथवा हितू समझ कर अपने दिल की बातों को खोल-खोल कर रखते लगता है। हाँ यदि वह किसी बुरी बात को छिपाने का प्रयास भी करता है तो परीक्षक महोदय उसे शीघ्र ही समझ जाते हैं।

[१०] निरीक्षण विधि (Observation Method)

इस विधि में परीक्षक व्यक्ति या वालक का विभिन्न वातावरण में व्यवहार या आचरण का अध्ययन करता है। जिस समय परीक्षक निरीक्षण कर रहा होता है उस समय वालक यह नहीं जान पाते कि उनका कोई निरीक्षण कर रहा है। इस विधि में सबसे बड़ा दोष यह है कि यह वस्तु-निष्ठ (Objective) न होकर आत्म-निष्ठ (Subjective) होती है।

[११] सोशियोग्राम पद्धति (Sociogram Method)

सोशियोग्राम पद्धति के प्रवर्तक ज० एल० मोरैनी महोदय हैं। इस विधि में वालकों को किसी सामाजिक अवसर में अपने सब समस्त साथियों के साथ किसी स्थान में आने के लिये आग्रह किया जाता है। जब समस्त वालक आ जाते हैं तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह देखा जाता हैं कि अमुक बालक का अपने समूह में क्या स्थान है। जो तथ्य एकत्रित होते हैं उनके आधार पर एक सोशियोग्राम (Sociogram) निर्मित किया जाता है जिसका निरीक्षण कर बालकों के व्यक्तित्व को समझा जाता है।

(१५) शारीरिक परीक्षण विधि (Physiological Tests Method)

इस विधि में विभिन्न यन्त्रों (Instruments) की सहायता से व्यक्तित्व के शारीरिक लक्षणों का अध्ययन किया जाता है जैसा कि हम नीचे प्रकट कर रहे हैं:—

(१) प्लैन्थीसोमोग्राफ (Plenthysomograph)—इस यन्त्र के द्वारा रक्त का दबाव समझा जाता है।

(२) इलेक्ट्रो-कार्डियोग्राफ (Electro-Cardiograph)—इस यन्त्र से व्यक्ति के हृदय की गति को मापा जाता है।

(३) स्फ़ मोग्राफ (Sphygmograph)—इस यन्त्र की सहायता से नाड़ी की गति का पता लगाया जाता है।

(४) न्यूमोग्राफ (Pneumograph)—इस यन्त्र की सहायता से साँस लेने की क्रिया का अध्ययन किया जाता।

(४) साइकों-गैलवनो-मीटर (Psycpo-Galvanometre)—इस यन्त्र की सहायता से हम रासायनिक परिवर्तनों का अध्ययन करते हैं।

[१३] मनोविश्लेषण विधियाँ (Psycho-analytic Methods)

यों तो मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रकार की मनोविश्लेषण विधियों का निर्माण किया है परन्तु इनमें से दो प्रमुख विधियाँ हैं— (१) **स्वतन्त्र साहचर्य विधि** (Free Association method) एवं (१) **स्वप्न विश्लेषण विधि** (Dream Analysis method)। इन दोनों विधियों के द्वारा अचेतन मन में छिपी हुई दमित इच्छाओं का पता लगा कर व्यक्ति के व्यक्तितत्व के सम्वन्ध में निष्कर्ष निकाला जाता है।

[१४] प्रक्षेपण विधियाँ (Projective Techniques)

प्रक्षेपण विधियाँ फ्रायड (Freud) द्वारा कथित सुरक्षा प्रक्रियायों (Defence Mechanisms) में से प्रक्षेपण (Projection) प्रक्रिया पर आधारित हैं। प्रक्षेपण अचेतन मन की वह सुरक्षा प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति अपनी अनुभूतियों, विचारों, आकांक्षाओं तथा संवेगों को दूसरों पर आरोपित करता है। इस दृष्टि से फ्रीमैन (Freeman) के शब्दों में **"प्रक्षेपण परीक्षण का तात्पर्य उस विधि से है जिसमें परीक्षार्थी के समक्ष ऐसी उत्तेजक परिस्थिति प्रस्तुत की जाती है जिसमें वह अपना व्यक्तिगत आवश्यकताओं, विशेष प्रत्यक्षीकरणों तथा**

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्याख्याओं को आरोपित करने का अवसर प्राप्त करें।"* इन विधियों द्वारा व्यक्तित्व सम्बन्धी उन पहलुओं का पता चल जाता है जिनसे कि परीक्षार्थी स्वयं अनभिज्ञ होता है। इन विधियों का मानसिक चिकित्सा तथा व्यक्तित्व सम्बन्धी परामर्श में व्यक्ति के संवेगात्मक तथा मानसिक रोगों के निदान (Diagnosis) में अत्यधिक महत्व है। कुछ प्रमुख प्रक्षेपण विधियाँ निम्नलिखित हैं जिनका व्यक्तित्व के मूल्यांकन में अत्यधिक प्रयोग किया जाता है—

(i) कथा संस्कार परीक्षण (Thematic Apperception Test or TAT)

(ii) रोर्शा इंक ब्लाट परीक्षण (Rorscnach Ink Blot Test)

(iii) चिल्ड्रेन एपरसेप्सन टेस्ट (Children Apperception Test or CAT)

(iv) शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test)

(v) वाक्यपूर्ति तथा कहानी पूर्ति परीक्षण (Sentence Completion and Story Completion Tests)

अब हम इन प्रक्षेपण विधियों पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।

[i] कथा संस्कार परीक्षण (Thematic Apperception Test or TAT)

परीक्षण सामग्री—इस विधि के निर्माण का श्रेय मार्गन (Morgan) तथा मरे (Murray) को प्राप्त हुआ जिन्होंने १६३५ ई० में इस विधि को प्रकाशित कराया। इस विधि में कुल मिलाकर ३० चित्र है–१० पुरुषों के लिए, १० स्त्रियों के लिये तथा १० दोनों के लिए। इस तरह जब किसीं व्यक्ति पर इसका प्रयोग किया जाता है तो २० चित्रों को काम में लाया जाता है जिनमें से एक रिक्त कार्ड भी रहता है। प्रायः २० की जगह १० कार्ड ही प्रयोग किये जाते हैं जिनमें एक रिक्त कार्ड सम्मिलित रहता।

परीक्षण विधि—लिंग के अनुसार कार्ड चयन करने के उपरान्त परीक्षार्थी को यह आदेश दिया जाता है कि "चित्र को देखकर बताइये कि पहले क्या घटना हो गई, इस समय क्या हो रहा है, चित्र में जो लोग हैं उनमें क्याविचार या भाव उठ रहे हैं एवं कहानी का अन्त क्या होना।" जब परीक्षार्थी उक्त आदेश समझ लेता है तो एक एक करके उसके सम्मुख कार्ड उपस्थिति किये जाते हैं और वह प्रत्येक की कहानी बनाता है

"*A Projective Test, then, is one that provides the Subject with a stimulus situation giving him an opportunty to impose upon it his own private needs and his particular perceptions and interpretations." —Frank S. Freeman

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्याख्या—इस परीक्षण में परीक्षार्थी कार्ड में दिये हुए पात्रों से तादात्म्य (**Identification**) स्थापित कर अपने भावों, विचारों, संवेगों, संघर्षों इत्यादि को अनजान में अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक कहानी का विश्लेषण कर अन्त में परीक्षार्थी के संवेगात्मक तथा सामाजिक समायोजन (**Emotional and Social Adjustment**), पारस्परिक सम्बन्धों (**Inter-Personal Relationships**) इत्यादि के सम्बन्ध में निष्कर्ष निकाला जाता है। हम इस परीक्षण में प्रयुक्त चित्र का एक नमूना प्रस्तुत कर रहे हैं:—

चित्र संख्या ४८–कथा–संस्कार परीक्षण में प्रयुक्त चित्र का एक नमूना

उक्त परीक्षण व्यक्तिगत निर्देशन (**Personal Guidance**), मानसिक चिकित्सा (**Psycho-therapy**) इत्यादि में रोग का निदान करने के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध होता है। मनोविज्ञानशाला, उत्तर प्रदेश इलाहाबाद ने इसे भारतीय संस्कृति के अनुकूल बना लिया है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[२] रोर्शा इन्क ब्लाट परीक्षण (Rorschach Ink Blot Test)

परीक्षण सामग्री—टी० ए० टी० परीक्षण की भांति रोर्शा इन्क ब्लाट परीक्षण भी बहुत प्रसिद्ध परिक्षण विधि है जिसका निर्माण स्विटजरलैंड के मनोविकृत चिकित्सक हरमैन रोर्शा (**Herman Rorschach**) ने १९२१ ई० में किया। इस परीक्षण में १० कार्ड होते हैं जिनमें स्याही के धब्बे चित्रित होते हैं। इन १० कार्डों में ५ कार्डों के धब्बे काले भूरे होते हैं, दो कार्डों में काले भूरे के अलावा लाल रंग के भी धब्बे होते हैं एवं वाकी तीन में अनेक रंग के काले धब्बे होते हैं। नीचे हम इस परीक्षण का नमूना प्रस्तुत कर रहे हैं।

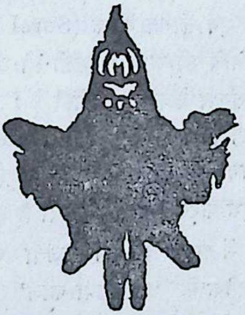

चित्र सं०—४६ रोर्शा इन्क ब्लाट से मिलता-जुलता एक कार्ड

परीक्षण विधि—परीक्षण का प्रयोग करने के पूर्व परीक्षार्थी को यह आदेश दिया जाता है कि "चित्र देख कर बताओ कि यह किसके समान प्रतीत होता है, यह क्या हो सकता है" आदेश देने के उपरान्त एक-एक करके ये कार्ड परीक्षार्थी के समक्ष प्रस्तुत किये जाते हैं और परीक्षार्थी धब्बों में आकृतियाँ देखकर वताता जाता है। परीक्षक प्रत्येक कार्ड के उत्तरों और उनके प्रतिक्रिया काल, परीक्षार्थी किस तरह कार्ड को घुमाता है तथा परीक्षण काल में होने वाले परीक्षार्थी के व्यवहारों एवं भावों इत्यादि को अंकित करता जाता है। अन्त में परीक्षार्थी द्वारा दिये गये उत्तरों के विषय में पूछताछ (**Enquiry**) की जाती है।

व्याख्या—इस परीक्षण में निम्नलिखित ४ वातों के आधार पर अंक प्रदान किये जाते हैं—(१) स्याही के धब्बों का क्षेत्र, (२) स्याही के धब्बों की विशेषतायें (रंग आकार आदि), (३) विषय—पेड़, पौधे, मनुष्य आदि तथा (४) मौलिकता।

इस परीक्षण द्वारा सामाजिकता (**Sociability**), संवेगात्मकता (**Emotionality**), अहं की दृढ़ता (**Ego-strength**), समायोजन (**Adjustment**) इत्यादि व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का पता लगाया जाता है। इस दृष्टि से यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्तित्व निर्देशन (Personal Guidance) के लिए सर्वथा उपयुक्त परीक्षण है। इसके द्वारा बुद्धि का भी पता चल जाता हैं।

[iii] चिल्ड्रन एपरसेप्सन टेस्ट
(Children Apperception Test or CAT)

टी० ए० टी० (TAT) परीक्षण बालकों के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं होता है। फलस्वरूप डा० अर्नर्स्ट क्रिस (Dr. Ernst Kris) ने इसी के समान एक दूसरी विधि जिसे चिल्ड्रन एपरसेप्सन टेस्ट अथवा बाल संस्करण परीक्षण (Children Apperception Test or CAT) विधि का आविष्कार किया। बाद में ल्योपोल्ड बैलक (Leopold Bellak) एवं सोरल बैलक (Sorel Bellak) ने इसको विकसित कर क्रियान्वित किया। इस विधि की कार्य प्रणाली तो टी० ए० टी० (TAT) विधि के समान है परन्तु चित्रों की संख्या केवल १० होती है।

[iv] शब्द साहचर्य परीक्षण (Word Association Test)

इस परीक्षक में लगभग ५० या १०० उद्दीपक (Stimulus Words) होते हैं जिनको कि परिक्षण एक एक करके बोलता जाता है और परीक्षार्थी इन शब्दों को सुनकर तुरन्त जो शब्द मन में आता है उसे बोलता जाता है। परीक्षक परीक्षार्थी द्वारा बोले हुए शब्दों तथा प्रत्येक के 'प्रतिक्रिया काल' (Reaction Time) को लिखता जाता है। अन्त में परीक्षार्थी द्वारा दिए गये उत्तरों की व्याख्या कर उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है। जुंग (Jung), केन्ट-रोजनॉफ (Kent Rosanaff), गिल (Gill), रैपेपोर्ट (Rapaport) इत्यादि द्वारा बनाई हुई शब्द सूचियां बहुत ही प्रसिद्ध हैं।

[v] वाक्य पूर्ति तथा कहानी-पूर्तिपरीक्षण
(Sentence Completion and Story Completion Tests)

इन परीक्षणों में परीक्षण-पद के रूप में अधूरे वाक्य तथा अधूरी कहानियों को परीक्षार्थी के सन्मुख प्रस्तुत किया जाता है। परीक्षार्थी इन अधूरे वाक्यों तथा कहानियों को मन में आये हुए शब्दों तथा विचारों द्वारा पूरा करता है। रोडे (Rohde), पैनी (Payne) तथा हिल्ड्रेथ (Hildreath) के इस प्रकार के परीक्षण बहुत प्रसिद्ध हैं।

कुछ अन्य प्रक्षेपण विधियां (Some other Projective Tehchnique)

[अ] चित्र विधि (Pictorial Techniques)—जिनमें टी० ए० टी० के अतिरिक्त रीजैन्जविग चित्र-कुण्ठा परीक्षण (Rosenzweing Picture Frustration Test) तथा जौन्डी परीक्षण (Syondl Test) सम्मिलित हैं।

[ब] रेखा चित्र तथा चित्रकला विधियां [Drawing and Painting

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Techniques]---जिनमें से 'मनुष्य का चित्र बनाओ परीक्षण' [Draw a man Test] अंगुली-चित्रण [Finger Painting] तथा घर, पेड़, व्यक्ति परीक्षण [House Tree, Person,, Test] उल्लेखनीय हैं ।

[स] खेल तथा अभिनय विधियाँ] Play and Dramatic Techniques]---जिसके अन्तर्गत 'चित्र कला बनाओ परीक्षण' (Make Picture Story Tete] लौवैन्फैल्ड का संसार परीक्षा [Lowenfeld World Test] मन-अभिनय [Psycho-drama] इत्यादि सम्मिलित हैं ।

उपसंहार (Conclusion)

उपर्युक्त शब्दों में हमने व्यक्तितत्व के प्रकार [Kinds of Personaliey] एवं व्यक्तितत्व की मापने की विधियां [Methods of Measuring Personality] प्रस्तुत की । जहाँ तक व्यक्तितत्व के प्रकारों से हमारा सम्बन्ध है वहाँ हमें यह समझ लेना चहिए कि प्रायः अन्तर्मुखी [Introvert] एवं बहुर्मुखी [Extrovert] प्रवृत्ति के मध्य के अर्थात् उभयमुखी [Ambivert] प्रवृत्ति के बीच के अधिक लोग होते हैं । जहाँ तक हमारा सम्बन्ध व्यक्तितत्व को मापने की विधियों से है वहाँ पर हम संक्षेप में कह सकते हैं कि व्यक्तितत्व मापने की १२ मुख्य विधियाँ हैं जो इस प्रकार हैं--(१) व्यक्ति इतिहास, (२) साक्षात्कार, (३) प्रश्नावली, (४) परिस्थिति परीक्षण, (५) व्यावहारिक परीक्षा, (६) मूल्यांकन, (७) व्यक्तितत्व-परिसूची, (८) आत्म-कथा, (९) स्वतन्त्र सम्पर्क, (१०) निरीक्षण, (११) शोशियोंग्राम, (१२) शारीरिक परीक्षा, (१३) मनोविश्लेषण एवं (१४) प्रक्षेपण विधि ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४४
व्यक्तित्व का सगठन और विघटन
[Integration and Disintegration of Personality]

प्रश्न-सख्या—४४

व्यक्तित्व के संगठन और विघटन से आप क्या समझते हो? व्यक्तित्व के विघटन के विभिन्न प्रकार तथा कारण कौन-कौन से हैं? व्यक्तित्व के विघटन के उपचार की विधियों पर प्रकाश डालिए।

What do you understand by integration and disintegration of personality? What are the various kinds and Forms of the disintegration of personality? Throu light on the methods of cures of the disintegration of personality.

भूमिका (Inroduction)

प्रत्येक व्यक्ति का अपना एक विशिष्ट व्यक्तित्व होता है। इस व्यक्तित्व के आधार पर ही वह वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया कर उससे समायोजन [Adjustment] स्थापित करता है। जो व्यक्ति जितना अधिक अपने वातावरण से समायोजन स्थापित कर लेता है उसे जीवन में उतनी ही अधिक सफलता मिलती है। कोई व्यक्ति अपने वातावरण से कितना समायोजन कर सकता है यह उसके व्यक्तित्व के संगठन [Integration of Personality] पर आधारित होता है किन्तु इसके विपरीति जिन व्यक्तियों के व्यक्तित्व का विघटन [Disintegration of Personality] हो जाता है। वे अपने वातावरण से समायोजन स्थापित करने में असमर्थ हो जाते हैं। इस प्रकार जहाँ जीवन की सफलता के लिए व्यक्तित्व का संगठन आवश्यक है वहाँ ये भी आवश्यक है कि व्यक्तित्व का विघटन न होने पावे और यदि हो भी गया तो उसका निवारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करना अति आवश्यक हो जाता है। मनोविज्ञान व्यक्ति के अभियोजनात्मक व्यवहार (Adjustment Behaviour) का अध्ययन करता है। ऐसी दशा में व्यक्तित्व के संगठन और विघटन के सम्बन्ध में अध्ययन किए बिना हमारा मनोविज्ञान का अध्ययन अधूरा रह जायगा। अतः इस प्रश्न में पहिले हम व्यक्तित्व के संगठन (Integration of Personality) पर प्रकाश डालेंगे, इसके पश्चात् व्यक्तित्व के विघटन का अर्थ (Meaning of the Disintegration Personality) व्यक्तित्व के विघटन के प्रकार (Kinds of the Disintegration of Personality) एवं व्यक्तित्व के विघटन के कारण (Causes of Disintegration of Personality) प्रस्तुत करेंगे और अन्त में व्यक्तित्व के विघटन की उपचार की विधियां (Methods of Cures of Disinaegration of Personality) बतायेंगे।

व्यक्तित्व का सगठन

(Intergation of Personality)

[अ] व्यक्तित्व के संगठन का अर्थ

(Meaning of the Integration of Personality)

हम देखते हैं कि व्यक्तित्व बुद्धि, संवेग, इच्छा, संकल्प, शरीर आदि इनमें से किसी को नहीं कहा जा सकता। अपितु व्यक्तित्व के अन्तर्गत तो उक्त समस्त मनो-शारीरिक गुणों (Psycho-Physical Traits) का समावेश होता हैं। किन्तु मानव व्यक्तित्व के लिए केवल इन मनोदैहिक गुणों का समावेश होना पर्याप्त नहीं है बल्कि इन समस्त गुणों में एक व्यवस्था या तारतम्यता का होना अति आवश्यक हैं। व्यक्तित्व के इसी व्यवस्थित तथा तारतम्य स्वरूप को व्यक्तित्व का संगठन या संकलित व्यक्तित्व (Integrated Personality) कहते हैं। संकलित व्यक्तित्व सर्वदा लचीला, दृढ़ तथा संगठित होता है। मैकडूगल (McDougall) ने संगठित व्यक्तित्व को बुद्धि (Intelligence) तथा चरित्र का संगठन कहा है। वास्तव में संकलित व्यक्तित्व सदैव किसी भी सीमा का अतिक्रमण नहीं करता हैं बल्कि वह हमेशा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से समायोजित रहता है। इस प्रकार व्यक्ति के समस्त मनोशारीरिक गुणों अर्थात् पहलुओं के संगठन या संकलन को व्यक्तित्व का संगठन कहते हैं। वुडवर्थ (Woodworth) के अनुसार **"एक संगठित व्यक्तित्व वह है जिसमें अनेक लक्षण, रुचियाँ और इच्छायें एक प्रभावशाली समन्वित एकता में जोड़े गए हैं।**

"An integrated personality is one in which the several traits, interests and desires are combined in an effective harmonious unity."

—Woodvorth

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[ब] व्यक्तित्व के संगठन की विशेषतायें
(Characteristics of the Integration of Personality)

व्यक्तित्व के संगठन अर्थात् संगठित व्यक्तित्व (Integration Personality)की निम्नलिखित विशेषतायें हैं:—

(१) **सामाजिकता (Sociability)**—हम देखते हैं कि व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास समाज के मध्य होता है। फलस्वरूप हमारी उसके प्रति जागरूकता का होना परमावश्यक है तभी हमारे व्यक्तित्व का विकास सार्थक होता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व (Personality) में सामाजिकता (Sociability) की विशेषता का होना परमावश्यक है।

(२) **आत्म-चेतना (Self-consciousness)**—व्यक्ति के व्यक्तित्व की दूसरी विशेषता है आत्म-चेतना (Self consciousness)। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह जानना चाहिए कि हम क्या हैं, हमारा समाज में कौन सा पद (Status) है, हम दूसरे से किन-किन बातों में भिन्न हैं आदि।

(३) **लक्ष्य संचालित (Goal-directed)**—प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास इस तरह से होना चाहिए कि वह किसी निश्चित लक्ष्य द्वारा संचालित हो क्योंकि लक्ष्य के अभाव में व्यक्ति यह अनुभव नहीं कर सकता है कि आखिर हमें क्या करना चाहिए। इस प्रकार व्यक्ति को लक्ष्य द्वारा संचालित (Goal-directed) होना चाहिए।

(४) **अभियोजनशीलता (Adjustability)**—हम उसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को अच्छा कहेंगे जिसमें वातावरण से अभियोजन (Adjustment) करने का गुण है। व्यक्तित्व में ये विशेषता होनी चाहिए कि व्यक्ति के सामने कैसी भी परिस्थितियाँ क्यों न आवें परन्तु वह इस योग्य हो जाये कि इन परिस्थितियों का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सके।

(५) **सन्तोष उच्च आकांक्षा तथा सोद्देश्यता (Satisfaction, Ambition and Purposeful life)**---संगठित व्यक्तित्व के लिए यह अति आवश्यक हो जाता है कि उसमें सन्तोष, आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा तथा जीवन का उद्देश्य ये बातें हों। बिना इनके व्यक्तित्व का विकास किसी निश्चित दिशा की ओर नहीं हो पाता है। अतः विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में इन गुणों की वृद्धि आवश्यक है। इसके लिए उद्देश्यपूर्ण शिक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, कार्यक्षमता में अनवरत बुद्धि इत्यादि की आवश्यकता है।

(६) **संकल्प-शक्ति की प्रबलता (Strong-will)**--मानव को अनवरत प्राकृतिक तथा सामाजिक वातावरण से संघर्ष करता है। ऐसी स्थिति में उसने कभी-कभी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह अपना आत्म-संयम खो वैठता है। आत्म-सयम खो जाने से उसका चरित्र तथा व्यक्तित्व दोनों विघठित हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों का यह अति आवश्यक कर्तव्य है कि वें वालकों में संकल्प शक्ति को विकसित करें ताकि वे अपना और समाज का कल्याण करने में समर्थ हों।

(७) शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य (Physical and Mental Health):—मनुष्य मनःशारीरिक (Psycho-Physical) प्राणी है। ऐसी स्थिति में उसका व्यक्तित्व तभी संगठित तथा सुदृढ़ समझा जा सकता है जबकि उसका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य दोनों अच्छे हों। अतः माता-पिता तथा शिक्षकों को वालकों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

(८) संगठितता (Integratibility) व्यक्तित्व की अन्तिम विशेषता यह है कि उसके जितने भी तत्व हों वे संगठित अवस्था में होना चाहिए। दूसरे शब्दों में व्यक्ति का व्यक्तित्व इस प्रकार का होना चाहिये कि उसमें शारीरिक, संवेगात्मक, मानसिक, सामाजिक एवं नैतिक सभी प्रकार के तत्व संगठित रूप से कार्य कर रहे हों। व्यक्ति के व्यवहार का परिचालन आत्म-सम्मान के स्थाई भाव (Self-regarding Sentiment) द्वारा होना परमावश्यक है तभी उसके व्यक्तित्व में संगठितता विद्यमान रहेगी। इन्हीं समस्त गुणों के कारण वुडवर्थ ने व्यक्तित्व की परिभाषा प्रस्तुत करते हुये लिखा है, "व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण है।"

"Personality is the total quality of an individual's behaviour," —Woodworth

व्यक्तित्व के विघटन का अर्थ

(Meaning of the Disintegration of Personality)

व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों या पहलुओं में एक व्यवस्था, तारतम्यता या एक सगठन के अभाव की दशा को व्यक्तित्व का विघटन कहते है।

व्यक्तित्व का विघटन व्यक्तित्व के संगठन से ठीक विपरीत शब्द है। हमने व्यक्तित्व के संगठन पर प्रकाश डलते हुये स्पष्ट किया था कि व्यक्तित्व के समस्त मनोशारीरिक गुणों यथा, वुद्धि, संवेग, संकल्प, इच्छा, चरित्र, स्थाईभाव, शरीर आदि के गुणों के संगठन को व्यक्तित्व का संगठन कहते हैं। किन्तु जब इन गुणों के संगठन या एकता का अभाव हो जाता है तो व्यक्तित्व संगठित न रहकर विघटित हो जाता है। दूसरे शब्दों में जब व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं में कोई व्यवस्था या तारतम्यता नहीं रहती है तो ऐसा व्यक्तित्व विघटित व्यक्तित्व (Disintegrated Personality) कहलाता है। जिस व्यक्ति के व्यक्तित्व का विघटन हो जाता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्तित्व के विघटन के प्रकार

(Kinds of Disintegration of Personality)

[अ] व्यक्तित्व के विघटन के विभिन्न प्रकारों को तालिका द्वारा प्रस्तुत करना

व्यक्तित्व के विघटन के प्रकार (Kinds of Disintegration of Personality)

- साधारण समायोजन दोष [Minor maladjustment]
  - हठी होना [Obstinate]
  - आक्रामकता [Aggression]
  - अति संवेदनशीलता [Hypersensitivity]
  - चिड़चिड़ा होना [Irritation]
- मनोदैहिक रोग [Psychosomatic illness]
- मनस्ताप [Psychoneurosis]
  - स्नायु दौर्बल्य (Neurasthenia)
  - मनोदौर्बल्य (Psychosthenia)
    - कल्पना ग्रह [Obsession]
    - हठ प्रवृत्ति [Compulsion]
    - भीतियाँ [Phobias]
    - शरीरोन्माद [Hysteria]
    - चिंता रोग [Anxiety Neurosis]
    - क्षतिकर्म वाध्यता [Manias]
- मनोविकृत [Psychosis]
  - स्थिर भ्रम [Paronoia]
  - असामयिक मनोह्रास [Dementia Praecox]
  - उत्साह–विषाद चक्र मनोदशा [Manic Depressive Psychosis
- बहुविधि व्यक्तित्व [Multiple Personality]
- मनोरुग्ण व्यक्तित्व [Psychopathic Personality]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह अपने समाज की संस्कृति तथा सभ्यता के अनुकूल अपने को समायोजित नहीं कर पाता है और वह प्रायः ऐसे काम करने लगता है जो स्वयं और समाज को नुकसान पहुँचाने वाले हों। दूसरे शब्दों में वह असामान्य व्यवहार (Abnormal Behaviour) करने लगता है। कभी-कभी तो व्यक्तित्व इतना गम्भीर रूप धारण कर लेता है कि व्यक्ति पागल व्यक्ति (Mad Man) कहा जाने लगता है। व्यक्तित्व का संगठन न था व्यक्तित्व का विघटन दोनों एक दूसरे के विरोधी शब्द होते हुए दोनों सापेक्ष (Relative) शब्द है यद्यपि हम दोनों के बीच एक विभाजक रेखा नहीं खींच सकते किन्तु फिर भी औसत रूप से समायोजित व्यक्ति के व्यवहार के आधार पर दोनों में अन्तर कर सकते हैं।

[ब] तालिका में दिए हुए व्यक्तित्व के विघटन के विभिन्न प्रकारों का स्पष्टीकरण

पिछले पृष्ठ पर दी हुई तालिका से स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व के विघटन निम्नलिखित ६ प्रकार पाये जाते हैं।

(१) **साधारण समायोजन दोष** (Minor mal-abjustment)
(२) **मनोदैहिक रोग** (Psychosomatic illness)
(३) **मनस्ताप** (Psychoncurosis)
(४) **मनोविकृति** (Psychosis)
(५) **बहुविधि व्यक्तित्व** (Multiple Personality)
(६) **मनोरुग्ण व्यक्तित्व** (Psychopathic Personalities)

अब हम इन ६ प्रकार की मानसिक अवस्थाओं पर संक्षेप में प्रकाश डालेंगे।

[१] साधारण समायोजन दोष (Minor Mal-adjustment)

साधारण समायोजन दोष साधारण कोटि के मानसिक अस्वास्थ्य होते हैं जो कि जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में बाधाओं का निराकरण न कर पाने के फलस्वरूप व्यक्ति में उत्पन्न हो जाते हैं। साधारण समायोजन दोष थोड़ी बहुत मात्रा में बहुत से लोगों में पाये जाते हैं। यदि इन पर प्रारम्भिक अवस्था में ध्यान दे दिया जाता है तो वे गम्भीररूप धारण नहीं कर पाते हैं। इनसे मुक्त रहने तथा इनको कम करने के लिए परिवार तथा विद्यालय क्षेत्र में मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान (Mental Science) का प्रचार अति आवश्यक है। कुछ प्रमुख साधारण समायोजन दोष इस प्रकार हैं—(१) चिड़चिड़ा होना (Irritative) (२) हठी होना, (३) अक्रामकता (Aggression) तथा (४) अतिसंवेदनशीलता (Appersensitivity)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

[२] मनोदैहिक रोग (Psychosomatic Illness)

मनोदैहिक विकार वे हैं जो दैहिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के कारणों की पारस्परिक क्रिया-प्रतिक्रिया के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होते हैं। कुछ मनोदैहिक रोग इस प्रकार हैं--दमा, स्थाई सिरदर्द, स्थाई कब्ज, आमाशय के व्रूण, जोड़ों में दर्द, ऊँचा रक्तचाप। एलर्जी (Allergies) इत्यादि मनोचिकित्सों का विचार है कि जब प्रबल इच्छाओं के दमन (Repression) के लिए व्यक्ति विवश हो जाता है तो उसमें संवेगात्मक प्रक्रियायें उत्पन्न हो जाती हैं जो अनेक दैहिक परिवर्तन (Bodily Changes) उत्पन्न करती हैं जैसे रक्त के रासायनिक तत्वों में परिवर्तन, अन्तःस्रावी तत्वों का असंतुलन, स्वाँस क्रिया तथा रक्त संचार की क्रिया में परिवर्तन इत्यादि। यही परिवर्तन उक्त मनोदैहिक विकारों को जन्म देते हैं।

[३] मनस्ताप (Psychoneurosis)

यद्यपि समायोजन दोषों के गम्भीर हो जाने पर मनस्ताप का जन्म होता है परन्तु इसके अन्तर्गत आने वाले मानसिक रोगी इतने गम्भीर नहीं होते कि मानसिक चिकित्सालय में दीर्घकाल तक रहना पड़े। वास्तव में ये व्यक्तितत्व के केवल आंशिक दोप होते हैं जिनमें यथार्थता से सम्बन्ध विच्छेद नहीं हो पाता। मनस्ताप से संबंधित रोग़ दो प्रकार के होते हैं--(१) स्नायु दौर्बल्य (Neurasthania) तथा (२) मनो-दौर्बल्य (Psychosthania)। स्नायु दौर्बल्व में बिना किसी कारण के व्यक्ति थकान अनुभव करता है, उसका दिल धड़कने लगता है, उसके विभिन्न अंगों में दर्द होने लगता है, उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है और सर्वदा जपने स्वास्थ्य के सम्बन्व में चिन्तित रहता है। मनो-दौर्बल्य के अन्तर्गत निम्निलिखिति मानसिक विकारों का समावेश होता है–

(१) कल्पना गृह (Obsession)-इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति के मन में सर्वदा अनेक आधारहीन तथा असंगत विचार, विश्वास एवं कल्पनाएँ बरबस आती रहती हैं और वह कोशिश करने के बावजूद भी उनसे छुटकारा नहीं पाता है।

(२) हठ नवृत्ति (Compulsion)-इस रोग में व्यक्ति कुछ बरबस, अनावश्यक आधारहीन कार्यो को करता है। यद्यपि वह इन कार्यों की निरर्थकता को स्वयं जानता है परन्तु उसे विवशता के कारण ऐसे कार्य करने पड़ते हैं। वह अपनी विवशता से सर्वदा दुख भी अनुभव करता है।

(३) भीति (Phobia)-इस रोग में व्यक्ति कुछ विशेष प्रकार की वस्तुओं, दृश्यों तथा विचारों से अकारण भय सा अनुभव करता है जैसे खुली जगह से डरना, भीड़ से डरना, किसी विशेष जानवर या व्यक्ति से डरना इत्यादि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) **शरीरोन्माद** (Hysteria)–इस रोग से व्यक्ति के अहम् (Ego) द्वारा दमित कामवासनायें (Sexual Desires) शारीरिक दोषों के रूप में व्यक्त होती है, जैसे रोना, हँसना, शरीर का कोई भाग या सम्पूर्ण शरीर सुन्न हो जाना, मांसपेशियों का जकड़ना, हाथ पैर पटकना इत्यादि ।

(५) **चिन्ता रोग** (Anxiety Neurosis)–इस रोग से पड़ित व्यक्ति अकारण भविष्य की चिन्तायें किया करता है जैसे कुछ दिन बाद उसकी पत्नी की मृत्यु हो जायगी, उसके ऊपर मुसीबत का पहाड़ टूटने वाला है, वह एक साल बाद बन्दूक से मारा जायगा । इस प्रकार की कल्पनाओं को मन में लाकर चिन्ता करने लगना ।

(६) **क्षति कर्म बाध्यता** (Mania)--इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति अपने वश में न होकर अकारण ऐसे काम कर बैठता है जिससे दूसरे लोगों को हानि पहुँचती है- जैसे अकारण किसी व्यक्ति को पीट देना, कतल कर देना, दूसरे के घरों में आग लगाना इत्यादि । कुछ साल पूर्व कानपुर में जो कनपटीमार का तहलका मचा हुआ था कदाचित वह क्षति कर्म बाध्यता का ही रोगी था ।

[४] मनोविकृति (Psychosis)

मनोविकृति के अन्तर्गत उन मानसिक रोगों का समावेश होता है जो बहुत ही गम्भीर होते हैं तथा इनके उपचार के लिए व्यक्ति को दीर्घकाल तक मानसिक चिकित्सालय में रहना पड़ता है । इस कोटि के रोगियों का यथार्थ से पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है । इन रोगों से पीड़ित व्यक्तियों को अनेक प्रकार के भ्रम (Delusions) तथा भ्रान्तियाँ (Hallucinations) होती रहती हैं जिनको कि वह सत्य समझ बैठता है । मनोविकृति के अन्तर्गत निम्नलिखित ३ प्रकार के मानसिक रोग आते हैं ।

(१) **स्थिर भ्रम** (Paranoia)-इस रोग से ग्रस्त किसी व्यक्ति को पीड़ा भ्रम (Delusions of persecution) होता है तो किसी को ऐश्वर्य भ्रम (Delusion of Prosperity) अर्थात् कोई व्यक्ति अपने को पीड़ित समझ बैठता है तो कोई महान ।

(२) **उत्साह-विषाद चक्र मनोदशा** (Manic-Depressive Psychosis)– इस रोग से पीड़ित व्यक्ति कभी तो सीमातीत प्रशन्न होता है तो कभी सीमातीत उदास । इन दोनों अवस्थाओं को क्रमशः उत्साहावस्था (Manic Phase) तथा विषादावस्था (Depressive Phase) कहते हैं ।

(३) **असामयिक मनोह्रास** (Dementia Praecox)—इस रोग को ब्लुलर नामक मनो-चिकित्सक से 'स्क्रीजोफ्रेनियाँ (Schizophrenia) नाम से सम्बोधित किया जिसका अर्थ है मनोविच्छेद (Mental Disociation) । यह सबसे बड़ा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मानसिक रोग है जो १५ वर्ष से ३० वर्ष की अवस्था में सबसे अधिक होता है। इसमें सुखद तथा दुखद दोनों प्रकार की क्रियायें साथ-साथ चलती रहती हैं।

[५] बहुविधि व्यक्तित्व (Multiple Personality)

(अ) बहुविधि व्यक्तित्व का अर्थ (Meaning of Multiple Personality)

हमें ऐसे कई उदाहरण प्राप्त हुए हैं जिसमें व्यक्ति का व्यक्तित्व, बहुविधि व्यक्तित्व (Multiple Personality) के रूप में परिणित हो गया। बहुविधि व्यक्तित्व तात्पर्य उस विघटित व्यक्तित्व से है जिसमें एक व्यक्ति का व्यक्तित्व दो या अधिक भिन्न और परस्पर विरोधी व्यक्तित्व में विभाजित हो जाता है। प्रायः इस अवस्था में व्यक्ति का एक व्यक्तित्व खुश दिल होता है तो दूसरा झगड़ालू होता है। एक शान्त होता है तो दूसरा अशान्त। प्रायः वर्तमान व्यक्तित्व को अपने अन्य व्यक्तित्व की बातों की याद नहीं रहती है। हाँ यदि याद आती भी है तो वह उसको दूसरा व्यक्तित्व समझता है। जो व्यक्तित्व अधिक समय तक रहता है वह मुख्य अवस्था (Primary State) और जो कम समय तक रहता है उसे गौण अवस्था (Secondary) कहते हैं। साधारणतया गौण अवस्था में मुख्य अवस्था की बातें याद बनी रहती हैं किन्तु मुख्य अवस्था में गौण अवस्था की बातें याद नहीं रहती हैं। इस प्रकार बहुविधि व्यक्तित्व की अवस्था में व्यक्ति का व्यक्तित्व दो या दो से अधिक व्यक्तित्वों में विच्छिन्न हो जाता है और वे स्वतन्त्र होकर काम करने लगते हैं।

[ब] बहुविधि व्यक्तित्व के उदाहरण (Examples of Multiple Personality)

बहुविधि व्यक्तित्व को और अच्छी तरह समझने के लिए नीचे हम इसके कुछ उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं—

(१) डोरिस का उदाहरण (Example of Doris):—डोरिस (Doris) एक शान्त गम्भीर, परिश्रमी और आज्ञाकारी लड़की थी। किन्तु वह कभी-कभी अत्यधिक लापरवाह और शरारती हो जाती थी। ऐसी अवस्था में हो जाने पर वह अपने गम्भीर स्वभाव से घृणा करने लगती थी और उसे दूसरा समझकर उसके सम्बन्ध में घृणास्पद बातें करने लगती थी। जब वह गम्भीर दशा में होती थी तो उसे शरारती और लापरवाह व्यक्तित्व की याद नहीं रहती थी। इस प्रकार डोरिस के दो व्यक्तित्व थे अर्थात् वह बहुविधि व्यक्तित्व से पीड़ित थी। इसका कारण यह था कि जब वह तीन वर्ष की थी तो उसके पिता ने शराब के नशे में उसे फर्श पर फेंक दिया था। परिणामस्वरूप उसमें दोहरा व्यक्तित्व विकसित हो गया था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(९) ब्यूचैम्प का उदाहरण (Example of Beauchamp)

बहुविधि व्यक्तित्व का दूसरा उदाहरण ब्यूचैम्प (Beauchamp) नामक युवती का है। ब्यूचैम्प को प्रारम्भिक जीवन में अनेक विपदाओं का सामना करना पड़ा जिसके परिणामस्वरूप उसमें एक अत्यन्त धार्मिक, त्यागमय तथा नैतिक व्यक्तित्व का विकास हो गया। किन्तु उसका व्यक्तित्व इसी व्यक्तित्व तक सीमित नहीं था बल्कि उसमें कभी-कभी अति शरारती व्यक्तित्व विकसित हो जाता था। जब ब्यूचैम्प (Beauchamp) के इन दो व्यक्तियों का उपचार करने के लिए उसकी मानसिक चिकित्सा कराई गई तो उसमें एक तीसरा व्यक्तित्व विकसित हो गया। यह व्यक्तित्व स्वार्थी तथा अक्रामक था। इस प्रकार ब्यूचेम्प का एक व्यक्तित्व तीन व्यक्तित्व, तीन व्यक्तियों में परिणित हो गया। इन व्यक्तित्वों में प्रथम मुख्य था और द्वितीय तृतीय गौण थे। अतः प्रथम अवस्था में इसे दूसरी और तीसरी अवस्था की बातें याद न रहती थीं किन्तु दूसरी और तीसरी अवस्था में अन्य अवस्था की बातें याद बनी रहती थीं। मानसिक चिकित्सकों ने सम्मोहन, निर्देश आदि विधियों के द्वारा ब्यूचेम्प के तीनों व्यक्तित्वों को मिला कर एक व्यक्तित्व बनाने का प्रयास किया।

[६] मनोरुग्ण या आचारोन्मादित व्यक्तित्व
(Psychopathic Personalities)

इस प्रकार के व्यक्तित्व विघटन के अन्तर्गत समस्त समाज के विरोधी कार्य तथा अपराध सम्मिलित होते हैं जिन्हें आचार दोष कहा जाता है। जैसे-चोरी करना धोखा देना किसी को मारना इत्यादि।

व्यक्तित्व के विघटन के कारण
(Causes of Disintegration of Personality)

व्यतित्व विघटन के निम्नलिखित मनोवैज्ञानिक, शारीरिक, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक तथा नैतिक कारण होते हैं—

(१) मानसिक संघर्ष (Mental Conflict)
(२) दमन (Repression)
(३) असन्तोष (Frustration)
(४) दुर्बल बुद्धित्व (Feeble-mlndedness)
(५) भावना ग्रन्थियाँ (Complexes)
(६) संवेगात्मक अस्थिरता (Emotional Unstability)
(७) चिन्ता (Anxiety)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(८) शारीरिक दोष और रोग (Bodily Defects and Diseases)
(९) अशिक्षा (Illiteracy)
(१०) बुरा पड़ोस (Bad Neighbourhood)
(११) पाप की भावना (Feeling of Sin)
(१२) निर्धनता (Poverty)
(१३) वेकारी (Unempolyment)
(१४) वंशानुक्रमिक दोष (Hereditary Defects)
(१५) माता-पिता का अमनोवैज्ञानिक व्यवहार (Unpsychological Behaviour of Parents)
(१६) दोषपूर्ण पारिवारिक सम्बन्ध (Defective Family Relationship)
(१७) अत्यधिक दिवा-स्वप्न देखना (Excessive Day-dreaming)
(१८) संकल्प शक्ति की कमजोरी (Weakness of will)
(२०) शिक्षालय की परिस्थितियों से दोषपूर्ण समायोजन (Mal-adjustment in School)

व्यक्तित्व के विघटन के उपचार की विधियाँ
(Methods of Cureso f Disintegration of Personatliy)

[अ] व्यक्तित्व के विघटन के उपचार की साधारण विधियाँ

यदि व्यक्तित्व का विघटन अति गम्भीर न हो तो इसके उपचार के लिए साधारण विधियों से काम चल जाता है। साधारण समायोजन दोष (Minor Maladjustment), मनस्ताप (Psychoneurosis), मनोरुग्ण व्यक्तित्व (Psychopathic Personalites), बहुविधि व्यक्तित्व (Multiple Personality) इत्यादि का उपचार मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान (Mental Hygiene) से सम्बन्धित विधियों से किया जा सकता है। ये विधियाँ निम्नलिखित हैं—

(१) सुझाव (Suggestion) – व्यक्ति की संवेगात्मक कठिनाइयों को सुलझाने के लिए सुझाव प्रदान करना सबसे सरल उपचारात्मक विधि है। व्यक्ति के अन्तर्द्वन्द्व (Conflict) की व्याख्या में सुझाव प्रदान करने से उसमें आत्म-निर्णय करने की क्षमता आने की सम्भावना रहती है। सुझावों द्वारा व्यक्ति अपनी समस्याओं के प्रति यथार्थवादी दृष्टिकोण को अपनाने में समर्थ हो जाता है।

(२) युक्तिपूर्ण तर्क (Rational Persuation)—युक्तिपूर्ण तर्क द्वारा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

व्यक्ति को इस योग्य बनाने का प्रयास किया जाता है कि वह अपनी समस्याओं के सम्बन्ध में अन्तदृष्टि अपना सके और फिर उनको सूचारु पूर्वक सुलझा सके ।

(३) **स्थापन क्रियाओं द्वारा शोधन** (Sublimation Through Substitute Activities)—स्थापन्न क्रियाओं द्वारा शोधन का तात्पर्य उस विधि से है जिसमें व्यक्ति को अनुपयुक्त कार्यों के स्थान पर ऐसे कार्यों में लगाया जाता है जो जीवन के लिए वाँछित हों । उदाहरण के लिए कामुकता से वशी भूत होकर व्यक्ति ऐसे कार्य करता है जो सामाजिक दृष्टि से बुरे समझे जाते हैं । ऐसी स्थिति में उसे कविता, संगीत, गायन, चित्रकला इत्यादि से सम्बन्धित क्रियाओं में व्यस्त किया जा सकता है । ऐसा करने में एक तो उसे कामुकता परिपूर्ण कार्यों को करने का अवसर न मिलेगा दूसरे उसकी इस पाशविक प्रवृत्ति का उन्नयन व परिष्कार होगा ।

(४) **पुर्नशिक्षण** (Re-education)—पुर्नशिक्षण का तात्पर्य व्यक्ति को अपनी गलतियों तथा उनके दुष्परिणामों से अवगत कराते हुए उसे जीवन के आदर्शों नियमों, मान्यताओं, दृष्टिकोणों इत्यादि में परिवर्तन करने में सहायता प्रदान करना है ताकि वह वातावरण के प्रति अपने को अभियोजित कर सके ।

(५) **अनादेशात्मक चिकित्सा** (Non-Directive Therapy)—इस विधि में चिकित्सक को बहुत कम बोलना पड़ता है । जिस व्यक्ति का उपचार हो रहा होता है उसी को अधिक बोलना पड़ता है । इस प्रकार बोलकर वह अपने भावों के उद्गार को व्यक्त करता है जो कि संवेगात्मक विकास में उसे सहायक होता है ।

(६) **सामूहिक चिकित्सा** (Group Therapy)—कभी-कभी एक समय में अधिक व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान करने का अवसर पड़ जाता है । ऐसी स्थितियों में सामूहिक चिकित्सा बहुत लाभप्रद सिद्ध होती है ।

(७) **मनोविश्लेषण** (Psycho-analysis)—फ्रायड (Freud) महोदय ने मनोविश्लेषण का विचार प्रस्तुत किया और उनके आधार पर गम्भीर संवेगात्मक समस्याओं तथा मानसिक रोगों के उपचार में प्रयोग करने की दो विधियाँ बतलाई (१) मुक्त साहचार्य (Free Association) तथा (२) स्वप्न विश्लेषण (Day Analysis) जिनमें व्यक्ति को ऐसे अवसर प्रदान किये जाते हैं कि वह अपनी दमित इच्छाओं (Repressed Desires) को व्यक्त कर सके । मुक्त सहचार्य विधि में सबसे पहले रोगी को एक शान्त कमरे में आराम कुर्सी पर लिटा दिया जाता है । तत्पश्चात् उससे कहा जाता है कि अपनी आँखों को बन्द कर लो और जो विचार तुम्हारे मन में आयें उन्हें बिना हिचकिचाहट से व्यक्त करते जाओ । इस क्रिया में व्यक्ति अपने अ चेतन मन की दमित इच्चाओं को भावों तथा विचारों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप में अवाध रूप से प्रकट करता जाता है जिनके द्वारा उसकी संवेगात्मक समस्याओं के मूल कारणों का पता चल जाता है। स्वप्न विश्लेषण विधि में व्यक्ति जो स्वप्न देखे हैं उन्हें व्यक्त करने को कहा जाता है। स्वप्नों के सम्बन्ध में गम्भीरता पूर्वक विचार करने पर व्यक्ति की संवेगात्मक समस्याओं के मूल कारणों का पता चल जाता है। तत्पश्चात् अन्य उपचारात्मक विधियां प्रयोग की जाती हैं।

(८) **खेल द्वारा चिकित्सा** (Play Therapy)—इस विधि के द्वारा बालकों को खेलने के लिए अवसर प्रदान किए जाते हैं। उनमें उन्हें अपने संवेगों (Emotions) को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त होता है और इस प्रक्रिया में उनकी भावना ग्रन्थियां (Complexes) सुलझ जाती है एवं वे मानसिक संघर्ष (Mental) Conflict) तथा चिन्ता (Anxiety) से मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं, उनकी पाशविक प्रवृत्तियों का रेचन (Catharsis) होता है तथा उनकी अतृप्त इच्छायें तृप्ति पा लेती हैं। शिशु निर्देशन केन्द्र (Child Guidance Clinic) में केवल एक अलग कक्ष होता है जिसमें अनेक खिलौने तथा अन्य खेल सामग्रियाँ रहती हैं।

(९) **वातावरण में परिवर्तन** (Change in the Environmet)—कभी-कभी किसी संवेगात्मक समस्या का कारण व्यक्ति का एक विशेष वातावरण होता है। ऐसो स्थिति में वातावरण परिवर्तन करके उसकी समस्या का समाधान किया जाता। उदाहरण के लिए यदि पारिवारिक वातावरण के कारण बालक किसी विकार से ग्रस्त हो गया हो तो उसे छात्रावास या आवासीय शिक्षालयों (Resident-ial School) में रखना श्रेयकर होता है।

(१०) **व्यावसायिक चिकित्सा** (Occuational Therapy)—इस विधि में व्यक्ति कुछ ऐसे कार्यों में लगाया जाता है जिनसे उनकी समस्याओं का समाधान करने में सहायता प्राप्त हो।

(ब) व्यक्तित्व के विघटन के उपचार की गम्भीर विधियाँ

जव व्यक्तित्व का विघटन अति गम्भीर रूप धारण कर लेता तो उसके उपचार के लिए गम्भीर विधियों का प्रयोग करना पड़ता है। मनोदैहिक रोग (Psy-chosomatic) तथा मनोविकृत (Psychosis) के रोगी को दीर्घकाल तक चिकित्सालय में रखना पड़ता है जहाँ कि मनोविकृति चिकित्सक (Psychiatrist) मनोविश्लेषक (Psychoanalyst) तथा स्नायु विषशेषज्ञ (Neurologis) परस्पर सलाह मशवरा कर रोग का निदान तथा उचार करते हैं। इस स्तर के व्यक्तित्व के विघटन का उपचार करने के लिए निम्नलिखित विधियां प्रमुख होती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१) **आघात चिकित्सा विधि** (Shock Therapy)—इस विधि के अन्तर्गत रोगी के मस्तिष्क पर बिजली का हल्का आघात पहुँचाया जाता है अथवा कुछ विशेष प्रकार की औषधियों जैसे इनसुलिन (Insulin) या मेस्ट्रजौल (Matrazol) को सुई द्वारा रोगी के रक्त में पहुँचाया जाता है।

(२) **रासायनिक विधि** (Chemo-Therapy) इस विधि में कुछ विशेष प्रकार की औषधियों का प्रयोग कर रोगी की चिन्ता तथा बेचैनी कम की जाती है वर्तमान समय में भारत में सर्वगन्धा (Rauwolfia) नामक बूटी इस दिशा में अत्यधिक लाभप्रद सिद्ध हो रही है।

(३) **निद्रा प्रेरक विधि** (Narco-Therapy)—इस विधि में रोगी को निद्रा की अवस्था में लाने के लिए सोडियम एमीटाल, सोडियम पैंटोथाल, स्कोपोलैमीन इत्यादि औषधियों का प्रयोग किया जाता है।

(४) **मनोशल्य चिकित्सा विधि** (Psycho-Surgery)—जब मानसिक रोग असाध्य हो जाता है और उक्त विधियों से लाभ की कोई आशा नहीं रहती तब इसका प्रयोग किया जाता है। इसमें रोगी के मस्तिष्क के सामने के भाग की चीड़ फाड़ (Operation) करके उसकी चिन्ता तथा बेचैनी दूर की जाती है।

उपसंहार (Conclusion)

संक्षेप में व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों या पहलुओं में एक संगठन या व्यवस्था होने की स्थिति को व्यक्तित्व का संगठन कहते हैं। **व्यक्तित्व के संगठन की विशेषतायें**—(१) सामाजिकता, (२) आत्म-चेतना, (३) लक्ष्य-संचालित, (४) अभियोजनशीलता (५) संतोष, उच्च आकांक्षा सोद्देश्यता (६) संकल्पशक्ति की प्रबलता, (७) शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य तथा (८) संगठितता। व्यक्ति के विभिन्न गुणों या पहलुओं में एक व्यवस्था, तारतम्यता या एक संगठन के अभाव की दशा को व्यक्तित्व का विघटन करते हैं। **व्यक्तित्व के विघटन के प्रकार**—(१) साधारण समायोजन दोष, (२) मनोदैहिक रोग, (३) मनस्ताप, (४) मनोविकृति, (५) बहुविधि व्यक्तित्व तथा (६) मनोरुग्णा व्यक्तित्व। व्यक्तित्व विघटन के अनेक शारीरिक मनोवैज्ञानिक, तथा सामाजिक कारण होते हैं। **व्यक्तित्व के विघटन के उपचार की विधियाँ**--[अ] साधारण विधियाँ--(१) सुझाव, (२) युक्ति पूर्ण तर्क, (३) स्थापन क्रियाओं द्वारा शोधन, (४) पुनर्शिक्षण, (५) अनादेशात्मक चिकित्सा, (६) सामूहिक चिकित्सा, (७) मनोविश्लेषण, (८) खेल द्वारा चिकित्सा (९) वातावरण में परिवर्तन तथा (१०) व्यावसायिक चिकित्सा। [ब] गम्भीर विधियाँ--(१) आघात चिकित्सा विधि, (२) रासायनिक विधि, (३) निद्रा प्रेरक विधि तथा (४) मनोशल्य चिकित्सा विधि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४५
संघर्ष
[Conflict]

प्रश्न संख्या—४५

संघर्ष क्या है ? संघर्ष के प्रकार और कारण कौन कौन से हैं ? संघर्ष की शान्ति के लिए कौन कौन सी मानसिक कार्य पद्धतियाँ होती हैं ?

What is conflict ? What are the kinds and causes of conflict ? What are mental mechanisms for resolution of conflict ?

भूमिका (Introduction)

जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति और वातावरण से अभियोजन (Adjustment) करने के लिए व्यक्ति को निरन्तर संघर्षों (Conflicts) जिन्हें हम प्राय: मानसिक संघर्ष (Mental Conflicts) कहते हैं, का सामना करना पड़ता है। जहाँ व्यक्तित्व के विकास के लिये संघर्ष आवश्यक है वहाँ संघर्ष व्यक्तित्व के विघटन का प्रमुख मनोवैज्ञानिक कारण है। अब प्रश्न उठता है कि आखिर संघर्ष या मानसिक संघर्ष क्या है ? हम देखते हैं कि व्यक्ति में अनेक जन्मजात और अर्जित प्रेरणायें या प्रेरक वृत्तियाँ निहित होती हैं। इन प्रेरणाओं की तृप्ति के लिए व्यक्ति वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करता है। प्राय: वातावरण के प्रति प्रतिक्रिया करने में अनेक बाधायें (Obstacles) उपस्थिति हो जाती हैं जिससे व्यक्ति के मन में एक प्रकार का तनाव (Tension) उत्पन्न हो जाता है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी व्यक्ति के मन में दो या दो से अधिक विरोधी प्रेरणायें एक ही समय में जाग्रति हो उठती हैं जिनकी एक समय में सन्तुष्टि करना असम्भव होता है जिससे व्यक्ति में एक प्रकार की व्याकुलता या तनान उत्पन्न हो जाता है। व्याकुलता या तनाव की इस स्थिति को मानसिक संघर्ष कहते हैं। दूसरे शब्दों में **प्रेरणाओं की संतुष्टि में बाधाओं के उपस्थिति होने या दो मा दो से अधिक विरोधी प्रेरणाओं के एक साथ उत्पन्न होने से व्यक्ति के मन में जो तनाव होता है उसे संघर्ष या मानसिक संघर्ष कहते हैं।*** संघर्ष के अर्थ

* "Conflict.........as a state of affairs in which two or more incompatible behaviour trends are evoked that cannot be statisfied fully at the same time."

—*Boring, Langfeld and Weld*

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

समझ लेने के बाद अब हम संघर्ष के प्रकार (Types of Conflict), संघर्ष के मूल कारण स्रोत (Couses or Sources of Conflict) तथा संघर्ष की शान्ति के लिए मानसिक-पद्धतियां (Mental Mechanisms for Resolution of Conflict) प्रस्तुत कर रहे हैं।

संघर्ष के प्रकार
(Types of Conflict)

संघर्ष के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं :–

[१] स्वीकार–स्वीकार्य संघर्ष (Approach-Approach-Conflict)

इस प्रकार के संघर्ष में दो ऐसी प्रेरणाओं में संघर्ष होता है जिन्हें व्यक्ति स्वीकार करता है एवं दोनों को ही पूरी करना चाहता है। किन्तु ये प्रेरणायें एक साथ पूरी नहीं की जा सकती हैं इसलिए दोनों में संघर्ष होता है। उदाहरणार्थ एक बालक एक रुचिपूर्ण पुस्तक पढ़ना चाहता है और फुटबाल खेलने के लिए बाहर जाना चाहता है किन्तु एक समय में ऐसा नहीं हो सकता है। इसलिए इन दोनों प्रेरणाओं में संघर्ष उत्पन्न हो जाता है।

[२] तिरस्कार-तिरस्कार संघर्ष (Avoidance-Avoidance Conflict)

इसमें दो ऐसी प्रेरणाओं का संघर्ष होता है जिन दोनों ही से व्यक्ति बचना चाहता है। उदाहरण के लिए एक नवयुवक न तो एक अरुचिपूर्ण कार्य करना चाहता है और न काम न करके कामचोर कहलाना चाहता है। इसी प्रकार एक सैनिक न तो युद्ध में लड़कर अपनी जान देना चाहता है और न युद्ध से भाग कर कायर कहलाना चाहता है। इस प्रकार के संघर्य में 'यहाँ खाई वहाँ खन्दक' की कहावत चरितार्थ होती है।

[३] स्वीकार-तिरस्कार संघर्ष (Approach-Avoidance Conflict)

इस प्रकार के संघर्य में दो ऐसी प्रेरणाओं में संघर्ण होता है जिनमें से एक को व्यक्ति पूरा करना चाहता है किन्तु दूसरी से भागना चाहता है। उदाहरण के लिये एक बालक फुटबाल खेलना चाहता है किन्तु कहीं चोट न लग जाय इससे वह डरता है।

[४] दोहरा-स्वीकार-तिरस्कार संघर्ष
(Double Approach-Avoidance Conflict)

इस प्रकार के संघर्ष में व्यक्ति किसी एक प्रेरणा की ओर निर्णय कर लेने के बावजूद भी निरन्तर इससे डाँवांडोल होता रहता है किन्तु वह अपना पूर्व निर्णय भी नहीं छोड़ना चाहता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संघर्ष के कारण या स्रोत
(Caues or Sources of Conflict)

संघर्ष के प्रमुख कारण या स्रोत निम्नलिखित हैं—

(१) वातावरण के भौतिक तत्व (Physical Factors of Environment):--जहाँ वातावरण के भीतर या प्राकृतिक तत्व व्यक्ति की आवश्यकताओं को पूर्ति में सहायक होते हैं वहाँ उसके अनेक तत्व जैसे अकाल, बाढ़, भूचाल, महामारी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि इत्यादि मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति मे बाधक सिद्ध होते हैं। जिससे व्यक्ति के मस्तिष्क के असंतोष तथा संघर्षों की उत्पत्ति होती है।

(२) सामाजिक तत्व (Social Factors):—सामाजिक संरचना (Social Structure) को सुदृढ़ रखने के लिए प्रत्येक समाज में कुछ अपने रीत-रिवाज, प्रथायें, नियम, कानून इत्यादि स्वतः उत्पन्न हो जाते हैं जो कि नैतिक मन (Super Ego) के रूप में मानव मस्तिष्क में निवास करते हैं। नैतिक मन इदम् (Id) से अहं (Ego) में आई हुई पाशविक इच्छाओं, भावनाओं इत्यादि की तृप्ति नहीं होने देता है। इसके अतिरिक्त जाति, प्रजाति, धर्म इत्यादि भेद के परिणामस्वरूप बहुत से लोग अनेक सामाजिक अधिकारों से वंचित रह जाते हैं। ये सब परिस्थितियाँ असन्तोष तथा मानसिक संघर्ष को जन्म देती हैं।

(३) व्यक्तिगत खराबियां या कमियाँ (Personal Dcfects or Limitation):—कुछ बालक शारीरिक, मानसिक या संवेगात्मक दोषों जैसे लंगड़ापन, बहरापन, अन्धापन, अत्यधिक लम्बा होना, मोटापन, बुद्धि की कमी, आत्महीनता भय इत्यादि के कारण अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में असफल रहते हैं। फलस्वरूप उनमें असन्तोष की उत्पत्ति होती है।

(४) आर्थिक तत्व (Economic Factors)—जिन लोगों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होती है वे अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति करने में असमर्थ रह जाते हैं। परिणामस्वरूप उनमें असन्तोष तथा मानसिक संघर्ष की उत्पत्ति होती है।

(५) विरोधी आवश्यकतायें या उद्देश्य (Incompatible Needs or Goals)—यदि व्यक्ति एक समय में दो विरोधी आवश्यकतायें अनुभव करता है तो उसमें असन्तोष या मानसिक संघर्ष का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। उदाहरणार्थ एक नवयुवती प्रेमपाश में बँधना चाहती है और मातृत्व के बोझ से भी बचना चाहती है। ऐसी दशा में उसमें असन्तोष का जन्म होना स्वाभाविक है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६) **व्यक्ति का नैतिक मापदण्ड** (Individual's Moral Standards) बहुत से व्यक्तियों को उसके नैतिक आदर्श के परिणामस्वरूप असन्तोष का सामना करना पड़ता है। उदाहरणार्ण एक नवयुवक किसी नवयुवती से प्रेम करना चाहता है किन्तु उसका नैतिक आदर्श उसे ऐसा करने में रोकता है। ऐसी स्थिति में उसमें असन्तोष पैदा होना स्वाभाविक है।

(७) **वर्तमान अवस्थितियाँ** (Present Conditions)—प्राय: वर्तमान अवस्थितियाँ जैसे घर में डाट फटकार पड़ना, छोटी-छोटी सी आवश्यकताओं की पूर्ति न हो पाना, वेकारी, निर्धनता, शिक्षा का अभाव, रहने का बुरा स्वान आदि के कारण बालकों में असन्तोष का जन्म हो जाता है। रोजेनवीग (Kosenweig) ने अभाव, लोप तथा बाधा को इनका बतलाया है।

संघर्ष को शान्ति करने वाली मानसिक कार्य–पद्धतियां (Mental Mechanisms for Resolution of Conflict)

व्यक्ति जब तर्क वितर्क, निर्णय, संकल्प आदि चेतन मन की क्रियाओं के आधार पर अपने जीवन के संघर्ष समाप्त करने में असमर्थ हो जाता है तो अचेतन स्तर की मानसिक क्रियाओं, जिन्हें हम मानसिक कार्य-पद्धतियां (Mental Mechanisms) कहते हैं, द्वारा अपने संघर्षों की शान्ति करता है। ये पद्धतियां निम्नलिखित हैं-

(१) **छतिपूर्ति** (Compensation)–जब कोई व्यक्ति किसी क्षेत्र में अपनी कमी की पूर्ति किसी अन्य क्षेत्र में विशिष्टता प्राप्त कर लेता है तो इस मानसिक प्रक्रिया को छतिपूर्ति कहते हैं। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति कार्य प्रेरणा में असफल हो जाता है तो वह खेलों में अधिक ध्यान देकर या साहित्यिक लेख लिख कर अपनी इच्छा की पूर्ति करता है। इससे उसमें हीनता की भावना (Feeling or Inferiority) विकसित नहीं हो पाती है।

(२) **शोधन** (Sublimation)–शोघन का तात्पर्य अचेतन मन की उस मानसिक प्रक्रिया से है जिसमें व्यक्ति की पाशविक आवश्यकतायें या इच्छाएँ समाज द्वारा स्वीकृत धाराओं की ओर प्रवाहित होती हैं। उदाहरणार्थ व्यक्ति की काम प्रवृत्ति साहित्य, धर्म और दर्शन की ओर रूपान्तरित हो जाती है।

(३) **प्रथक्कीकरण** (Withdraw)–कभी-कभी कुछ व्यक्ति दुखपूर्ण या तनाव करने वाली स्थितियों से अपने को अलग कर लेता है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति सर्वदा दोस्तों और पड़ोसियों द्वारा अपमानित किया जाता है तो वह दुनियां से दूर रहने के लिए अपने को कमरे में बन्द कर लेता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४) प्रत्यावर्तन (Regression)–कभी-क
दुखद अनुभूति से मुक्ति पाने के लिए अपने पुराने अ
जाता है अर्थात् वह अपने शैशवावस्था तथा बाल्या
रोना, चिल्लाना, रूठना, पैर फड़फड़ाना इत्यादि क

(५) दिवा-स्वप्न (Day-dreaming)–इ
दुखदाई परिस्थितियों से अपने को दूर हटा क
लगता है। उदाहरण के लिए प्रेम में निराश व्यक्ति
अद्वितीय सुन्दर स्त्री को दुलहिन के रूप में कल्पना
आनन्द अनुभव करता है। दिवास्वप्न में व्यक्ति
(Conquering Hero) तो कभी विजित नायक (
अनुभव करता है।

(६) आत्मीकरण (Identification)–इस
बालक किसी अभिनेता, नायक, महापुरुष या कवि के
करने लगता है इसके द्वारा (१) व्यक्ति के व्यक्तित्व में
का अनुकरण करके की जा सकती है। (२) दूसरों
सुसुप्त इच्छाओं और भावनाओं का अनुभव किया ज
की भावना से विमुक्त हुआ जा सकता है।

(७) आश्रित होना (Becoming Depend
व्यक्ति दूसरों पर आश्रित होकर अपने तनाव को हल्क
किसी महान पुरुष, शिक्षक या धार्मिक पुरुष के हाथ
हुए उसके उपदेशों, आदर्शों तथा आज्ञाओं का पालन
जिस व्यक्ति के आश्रित हो जाया जाता है वह व्यक्ति
होने वाले व्यक्ति का बहुत हित होता है।

(८) यौक्तीकरण (Rationalization)–यह
जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार के वास्तविक क
उसके अहं (Fgo) को मान्य हों। उदाहरणार्थ परीक्षा
यह स्वीकार नहीं करता कि उसने मन लगा
कि वह बीमार हो गया या इसलिए पास न
न आवे आंगन टेढ़ा' ये दोनों कहावतें इसी प्र की

Chil

"I dream a wo
social distinctions, poli
above all a world fu
a world for everybody no

CHILDREN'S
as presented to worl
U.N. Conference on Environ
Rio de Janei

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

फ्रीमैन (Freeman) के शब्दों में प्रक्षेपण
' है जिसमें एक व्यक्ति अपने विचारों, दृष्टि-
ोषताओं को अपने वातावरण के पदार्थों या
एक प्रकार से अपने दोषों को दूसरों के मत्थे
है। उदाहरणार्थ एक बढ़ई अच्छी कुर्सी नहीं
ने लगता है।

sal Formation)—यह एक अचेतन मन
दमन की ही इच्छाओं के विरोध में कुछ
निर्माण कर लेता है। व्यक्ति अचेतन मन में
ए अहम् के द्वारा काम प्रवृति से तीव्र घृणा

Conclusion)

में बाधाओं के उपस्थिति होने या दो या दो
उत्पन्न होने से व्यक्ति के मन में जो तनाव
संघर्ष के प्रकार—(१) स्वीकार-स्वीकार
था (४) दोहरा स्वीकार-तिरस्कार संघर्ष।
रण के भौतिक तत्व, (२) सामाजिक तत्व,
र्थिक तत्व, (५) विरोधी आवश्यकतायें या
ड तथा (७) वर्तमान अवस्थितियाँ। **संघर्ष**
तियाँ —(१) छतिपूर्ति, (२) शोधन, (३)
ास्वप्न, (६) आत्मीकरण, (७) आश्रित
१०) प्रक्षेपण तथा (११) विरोध निर्माण।

———

儿童国际 · 运动之声

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

BIBLOGRAPHY

I. Foriegn

Andrews—Methods of Psychology.

Allport—Personality.

Borging, and Langfeld and Weld—Outline of Psychology.

Bernine—Practical Psychology.

Gronbach—Essentials of Psychological Testing.

Cattle—Personality.

Dashiell—Fundamentals of General Psychology.

Ebbinghaus—Memory.

Freeman—Psychological Psychology.

Freud—New Introductory Eectures on Psycho-Analysis, Psycho-Pathology of Every day life.

Gorret—Great Experiments of Psychology.

Guilford—Fields of Psychology.

Hilgard—Theories of Learning.

Halson—Theoretical Foundation of Psychology.

Heidbreder—Seven Psychologies.

Jersild—Manual of Child Psychology.

Johnson—The Psychology of Thought of Judgment.

Klineberg—Social Psychology.

Keller—The Definition of Psyehology.

Koflka—Principles of Gestalt Psychology.

Kohler—Dynamics in Psychology.

McDougall—Character and Conduct.

Munn—Psychology.

Morgan & Stellar—Physiological Psychology.

Murphy Historical Introduction to Modern Psychology.

Pavlove—Lectures on conditioned Reflexes.

Ptagner—Psychology of Personality.

Terman and Merril—Measuring Intelligence.

Woodworth and Marquie—Psychology-

Woodworth—Contemporary Schools of Psychology.

II. Indian

के० एस० वर्मा–ऐन इट्रोडक्सन टू साइकालाजी

जे० एन० सिन्हा–ए मैनुअल आफ साइकालाजी, मनोविज्ञान

डी० एस० मधुकर–मनोविज्ञान

जायसवाल और गुप्त–सामान्य मनोविज्ञान

पद्मा अग्रवाल––विकृत मनोविज्ञान

रामबाबू गुप्त–शिक्षा मनोविज्ञान, समाजशास्त्र की रूपरेखा

रामनाथ शर्मा–सामान्य मनोविज्ञान की रूपरेखा

राधाकृष्ण टन्डन–मनोविज्ञान के मूल आधार

रामप्रसाद पान्डेय–सामान्य मनोविज्ञान

एस० एस० माथुर–सामान्य मनोविज्ञान

श्रीमती सुमन–सामान्य मनोविज्ञान

हंसराज भाटिया–सामान्य मनोविज्ञान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

२० भाद्र	२०३५	
०५८।६।४		
०५१।६।१३		

५५३२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकि क्याम्पस
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४४६३

महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
वाल्मीकि विद्यापीठ
पुस्तकालय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

—: पुस्तक की विशेषताएँ :—

विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं प्रशिक्षण संस्थाओं के विद्यालयों के लिये हमारी अद्वितीय पुस्तकें

शिक्षा के तात्विक सिद्धान्त

(Fundamental Principles of Education)

लेखक—राम बाबू गुप्त, एम० ए० (मनोविज्ञान एवं समाज-शास्त्र)

—: पुस्तक की विशेषताएँ :—

१—पुस्तक की भाषा सरल, रोचक, प्रभावपूर्ण तथा वैज्ञानिक है।

२—पुस्तक विषय का व्यवस्थित ज्ञान प्राप्त करने के तथा परीक्षा में प्रथम अंक प्राप्त करने में अत्यधिक सहायक होगी।

३—विद्यार्थियों की सुविधाओं को देखते हुए पुस्तक प्रश्नोत्तर रूप में लि है। साथ ही इसमें पाठ्य पुस्तक से प्राप्त होने वाली सुविधाओं का किया गया है।

४—प्रत्येक विषय पर प्रसिद्ध लेखकों के उदाहरण (Quotations) दिये

५—परिभाषित (Technical) शब्दों एवं उदाहरणों को हिन्दी तथा अंग्रे भाषाओं में दिया गया है।

६—उद्धरणों, प्वाइन्ट्स (Points) तथा पारिभाषिक शब्दों को मोटे त अक्षरों में प्रस्तुत किया गया है जिससे विषय को समझने एवं दो अत्यन्त सुविधा होगी।

७—शिक्षा मनोविज्ञान में सांख्यिकी (Statistics) तथा मनोवैज्ञानिक प्रय (Psychological Experiments) भी दिये गये हैं।

८—विषय के प्रति ध्यान केन्द्रित करने के लिए भूमिका तथा परीक्षा काल को दोहराने के लिए उपसंहार दिया गया है।

नोट :-पुस्तक कैसी है यह तो पूर्ण रूप से अध्ययन के बाद ही पाठकगण नि सकेंगे किन्तु यह हमारा पूर्ण विश्वास है कि पुस्तक को एक बार मात्र से ही पाठकगण उनसे प्रभावित हुये बगैर न रह सकेंगे। प्राप्त करने के लिए आप स्थानीय पुस्तक विक्रेताओं से मिलें अ लिखें और साथ ही २) एडवान्स भी मनीआर्डर द्वारा भेजें, साक्षात्कार के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष से अनुरोध करें।

—: प्रकाशक :—

न्यू पब्लिशिंग हाउस, चौक, कानपुर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu